दी॥ गरोतुलियनमः॥ अथतुलसीजीकापदलिषते रागगौ
री गुरमेरा ग्यांनी रिग्यांनी॥ अहोजिनिअबगतिकी
गतिजांनी॥ टेक॥ सारवसतसबहिरदेधारी॥ छाराबि
षेबिसरांनी॥ निरतिश्रुतिअतिअंतरिपीवस्यों॥ पी
तिमहतिलिपटांनी॥१॥ अंजनमंजनसबेबिसारेम
नमनसागहिआनी॥ आरतिसहितिआत्मांमांही
धमात्मभवांनी॥२॥ पांचपचीसोपगतलछूरे॥ त्रिगुन
मैंदीकांनी॥ कहतुरसीचौथापदमांही॥ नपायक
गलतानी॥३॥१॥ नाहिमेंगाजैरेंगाडगाइसचपांतरे॥
टेक॥ पतितउधारन॥ उनरतारन॥ नरकनिवारनरे
कलबिघटारनकलंकउतारन॥ कारिजसारनरे
॥१॥ सबसुषसूराहैनरहरा॥ निरमलनूरांरे॥ जाके
बाजैतूरासदाहजूरा॥ आनंदमूरारे॥२॥ अंतरजां
मीसबकास्वांमी॥ सबसिरनांमीरे॥ तारननिबनय
रमक्कबकीनिधिहैनिहंकांमीरे॥३॥ परमअकासा
हरनत्रासा॥ नेजनत्रासारे॥ तुरसीदासादेविसवा
सा॥ राषैंपासारे॥४॥२॥ असरन सरनगरीबनिवा
जा॥ सबसिधिसबहीसारनकाजा॥ टेक॥ अधम
उधारनतारनसिंधु॥ बंधनमोछिकरनतिरबंध
धा॥१॥ कलबिषहरनपरमसुषकारी॥ जनमंम
रनतैराषेटारी॥२॥ जनतुरसीताहिनिसिदि
निगाइ॥ सुषसागरमैंजैसमाइ॥३॥३॥ अब

मोहितारो साहिब मेरा॥ दीन उषी बूडत भव मांही क
रऊ महाइ सवेरा॥ टेक॥ माया अगम अपार अधिक
जल॥ त्रिस्नां तरंग अपारा॥ ग्राह अनंग काल के लाग
गहिया आंन हमारा॥ १॥ समता मीन रलो जम सिलि
मोहि मतावे नारी॥ मोह भवर मैं परया परबस कर
गहि काढि मुरारी॥ २॥ फिर है बीचि बिषम भव मां
ही॥ कहो कहा बल मेरा॥ जन तुरसी के और न को
ई॥ एक भरोसा तेरा॥ ३॥ ४॥ रे निति रांमजी को नाम
प्रांनी कहा न्रृत्यौ फिरै॥ टेक॥ चांम सा गिरा मही चित
लाई ये॥ सुनि बरती एन रांम बाद बिबाद बिसरि
भजि माधो॥ निसि दिन आवो जाम॥ १॥ मन ही जीति
मन के रथ्य रहरि॥ उलटि गही बिश्रांम॥ जन तुरसी
सुमिरत सुष सागर॥ सहिज सरे सब कांम॥ २॥ ५॥ हग
मग हरि करि नर कूर काइर॥ साहिमर नहरि केरो॥
मन॥ क्रम बचन सरहि सब कारिज॥ जनम सुफ
ल होइ तेरो॥ टेक॥ आंनंद सहित अरपित न प्रभु
कौं चित वर नो लिपटाइ॥ निरभै होइ निरंतर निस
दिन॥ सुमरि सुमरि सुष दाइ॥ १॥ पंच ततु गुन तीनि
की बाजी॥ या मैं रचि कारहिए॥ इह लोक न मरू
प मकल मव॥ उलटि अनै पद गहिए॥ २॥ रांम नां
म हिरदै जापि हित सों॥ बिसरि न जइए न्हाइ जन तु
रसी कहै काल नै छुटे सुष मैं स्रुति समाई॥ ३॥ ६

सोईजपिएजेजारत्यागिजुगतिस्यौंजिएमांही॥जाके
अपिजनममरन॥सकलमैलनसांही॥टेक॥दीनबंधु
पतितपावन॥प्रगटबिरदजाकौ॥नाशहिभ्रमकर्मअ
नेक॥गावतेंजसताकौ॥१॥कलंकहरनकृपाकरन
अधमउधारनसोई॥जिनिलिएसमाइसकलसंत
परमजोतिप्रकाशु॥जनतुरसीउसितास॥मेटिआं
नआसा॥३॥७॥भजनकरिभाईबिलंबनकीजै॥
तौलूपावैपदनृबांन॥टेक॥मनिषाजनमदुर्लभहै
रे॥तूमतिहोइअचेत॥मनक्रमबचनजोहरिभजै
तेरामिटिजाहिंकर्मअनेक॥१॥यहअवसरब
हुरयौंनहीये॥करिलेहरिहंचलसेव॥मनकीमेट
देबासना॥तौमिलहीनिरंजनदेव॥२॥अपनासा
हिबसुमिरिये॥जिनजाइजनमगमाइ॥जनतुरसी
हरिएकहै॥तूताहीस्यौंल्यौलाइ॥३॥८॥बहुरिक
बपायहैरे॥रैनरओसीकंचनदेह॥सोकितबादिरां
मबिनषोवै॥करिकरिअनंतसनेह॥टेक॥इनपंच
नकेउदिममातौ॥काहेकौंइतउतजाइ॥गएबहु
रिएहजुगतिनपैहै॥जेहैजनमसिराइ॥१॥चारिदि
साचौरासीभ्रमिकै॥पाईहैबडभागि॥सोइहहेहत
नकसुषमांही॥मतषोवैतूलागि॥२॥बारबारतौ
हिकंकुसंमकिहै॥सुमरिलेहकिननांव॥इहअव
सरयहदावबन्यौहै॥इहैमोक्षिसुभगांव॥३॥अ
बगतिपदआराधिअंघेडितौ॥बलटिअभिअंतरि

अपने
अगमं
हो २५

आइ ॥ जनतुरसी सुषमैं होइ बासा ॥ जन मम रनामिटि
जाइ ॥ ४ ॥ ६ ॥ रतनतनपायारे ॥ सो ले अरथिलगाइ
अरथिलगाये बिनां अज्ञानी ॥ कौडी बदले जाइ ॥ टे
क ॥ श्रवनकथासुनिआनंदबानी ॥ प्रेमप्रीतिलै
लाइ ॥ नैननिनिरषिनिसिदिन निरमलरूपअघा
इ ॥ १ ॥ कहा रसनरसनांकै बिनकहा जे निकै निकै
हि भाइ ॥ ज्यौंरीफै त्यौंही अब बौरे अपनौ रामरिझा
इ ॥ २ ॥ ज्यौं कूरम कूं जी सुत अंडनि ॥ सेवत ती बन
भाइ ॥ ऐसै सुमरि मनसा बाचा ॥ अपने ही उर ल्या
इ ॥ ३ ॥ तन मन प्रांन अरपि दै प्रभु कौं ॥ कारहौ
या हिलु भाइ ॥ अरपि बिनां किते पंडित मुनी ॥
कितक गए बिलाइ ॥ ४ ॥ जोग जुगति करि निर
ति स्रुति लै ॥ उलटि उरही बसाइ ॥ जनतुरसी म
जि रांम रांम रांम हो कु ॥ निसंक निसांन बजाइ ॥
५ ॥ १० ॥ ब कूरि कत पाई ये रे ॥ औसो कुल भदाव
तातैं बेगि बिलंब तजि बौरे ॥ भजि लै त्रिभुवन रा
व ॥ टेक ॥ छाडि सिथलता सावधान होइ ॥ दुष सु
ख धार बहाव ॥ सदा एक रस मनसा बाचा ॥ प्रभु के
चरन चित लाव ॥ १ ॥ भागि बडे मनिषा तन पायो
भ्रमि भ्रमि बहुतें गाव ॥ सो लै काच सटै मत षोवै ॥
करि करि बिषै न भाव ॥ यह अवलंब उर धारि अ
हौ निसि ॥ २ ॥ भरम कांम नां न साव ॥ निरति स्रुति
उलटि अभि अंतरि ॥ निज पद निरत लाव ॥ ३ ॥ ६

रागगाहिद दिपंचौरिप॥ पापद्वनिबिसरावै॥
रसी अरसप रसपद मांही॥ लैकैं ग्यांनमिल
॥धा॥१२॥ तेरोग्रमहि तूहै रे॥ और स्वारथी॥
घनेरे॥ टेक॥ कै तेरोग्रमहितूहै रांम॥ ड यमो
नेहैताकोनाम॥१॥ नाहितजिकाहे कोंइतउतजा
॥इतउतगपबनिदेनहीमाई॥२॥ त्यागिग्री लिवा
लीसंगाडी॥ इहिबाहिलैबहोजुगजाई॥३॥ ग्यान
होइ अबिनासी मेजिरे॥ पबिनसुरसब बिषै
तजिरे॥४॥ जनतुरसी कीट भृंगकी नाई॥ फेर
नपरमपदमांही॥५॥१२॥ मतकोउ परी संने
कीफांसी॥ कालबधिक मारैतकिगांसी॥ टेक॥
बसुमेरसुषमनकुनुराई॥ तहां ऐसी जांनौमेरेभ
॥१॥ कबकूइतकबकूउतऐचै॥ श्रुतिहिमंत्रक
रहिषैचै॥२॥ ग्यांनध्यांनसुधिरहनपावै॥ सो
तसोचंतअवधिबिहावै॥३॥ जनतुरसी जगअ
नहितहोई॥ जे सुरांमसुषीहोइसोई॥४॥१३॥
तांनमतांकबआवैगा॥ तबग्यांनीसुषपावैगा॥
टे॥ पांचौंइद्रीकाबलछूटै॥ मनकाउलटिसमा
वैगा॥१॥ मायामोहभरमकाबाहला॥ परदासबैबि
लावैगा॥२॥ चारबिचारमिटैजीयकेरा॥ आपा
परबिसरावैगा॥३॥ जनतुरसीसुषसागरमांही॥
मिलिकरिमंगलगावैगा॥४॥१४॥ गलतांनम
एतेग्यांनीजी॥ औरइतरअग्यांनी जी॥ टेक॥ राग

दोष रे षन रही कोऊ ॥ निरति स्तुति व हरांनी जी ॥ मन अ
तमपद मांहि समांना ॥ औपाल्ला गलिपांनी जी ॥ १ ॥ जनतु
रसीयह अकथ्य कथ्याहै ॥ बिरलै काऊ जांनी जी ॥
और बीचि रहीर है फूलि कैं ॥ अहंकारी अभिमानी जी
॥ २ ॥ १५ ॥ मन मेरे साची बात सुनाउं रे ॥ रज गुन ब्वादि
रंक होइ हरि जि ॥ तो पऊ चै निज गांऊ रे ॥ टेक ॥ ज
ब लग कांम क्रोध घट मांही ॥ तब लग सच न ही पाऊ
रे ॥ माया मोह तजि हूजी आसा ॥ तो आनंद पद दरस
उंरे ॥ १ ॥ पांचौं चूरि हूरि करि उबिध्या ॥ त्रिगुण
भाव मिटाउं रे ॥ तबतु रसी सुष सागर मांही ॥ हि
ल मिल पांन समाउं रे ॥ २ ॥ १६ ॥ मन रे जो तु ऐसी
बूझै रे ॥ तो तो हि ने रै ही निरमल पद ॥ नैंन बिनां
ही सूझै रे ॥ टेक ॥ तामस त्यागि जागि जगपति भजि
रंग न राची हूजे रे ॥ ऐसी करहु तौ सुभट सूर ह्वै ज
नम मरन जा इक जे रे ॥ १ ॥ सीरी सीरी सीर त्यागि
दै ॥ तप तऊं नी र न पी जे रे ॥ तातौ न सीरो सीरौ न ता
तौ ॥ सो सुषउर धरि लीजै रे ॥ २ ॥ सब संतन कौ सा
र सुमति गहि ॥ प्रेम मांहि न चित दीजै रे ॥ जनतु र
सी आनंद कंद भजि ॥ जा वत जग मै जी जै रे ॥ या दे
ही जुध रे काला हा ॥ ऐसै निज करि लीजे रे ॥ ३ ॥ १७ ॥
संतौ नाई सतगुर साच सुहावै रे ॥ जीव अबुधी
कपटन छाडै ॥ तौ कैसें हरस न पावै रे ॥ टेक ॥ जप
तप संजंम पूजा पाती ॥ बाहरि करि दिषलावै रे ॥ अ
ताके घृत पोरो हीनी कै ॥ काले की टीकी जैरे ॥ २ ॥

कपटनहरिसौंहित।हेआडनीउटिषावैरे॥१॥क
पाकरहुकैताई॥गीतासारसुनावैरे॥भीतरिनु
बूरीबाहरि॥पलगहिध्यांनलगावैरे॥२॥परह
रूवसौंलोभरुलालच॥हरिचरनौंचितलावै न
॥जनतुरसीसोइसाधुहरसाचा॥अमरलोकपद
वैरे॥३॥१८॥अरेभाईसुनिसतगुरकीबांनी
॥ताहिचीन्हिहमभएवैरागी॥परहरिकुलकी
नीलौंटिका॥पहलहीबहुतदिवसहमअट
।सुनिसुनिबातबिरांनीलो॥अबकछुसम
रीअंतरिगति॥आइकथाप्रमानीलो॥१॥
तैंगईभ्रगटभईसंमतारंभितासुरुचिमानीलो
लालचलोभमोहमायाकी॥मिटिगईअैंचातानी॥
॥२॥चंचलतैंमननिहचलहूवा॥निरतिष्ठुतिव
रांनीलो॥जनतुरसीसतगुरपरसादें॥लषीअच
लरजध्यांनीलो॥३॥१९॥संतोसोहैरांमहमारे॥
नादबिबिर्जितबिंदबिबिर्जित॥नहितस्यवारनपा
येटिका॥सकलबियापीसबतैंन्यारा॥सबकेसि
जनहारारे॥सबदुषषंडनसबभवभंजन।तेजपु
निरकारारे॥१॥सबसुषसागरसबसुषदाता॥
लसरोमनिसारारे॥सबगुनरहितअक। २
अबिनासी॥तरनबिरधनहिबारारे॥२॥ब्रह्मा
ध्यांमहादेवनारद॥सबहीकरैंबिचारारे॥पा
।आगमबतावैं॥नावैंलेहिएकतारारे॥३॥

आवै न जाइ मरै न ही जनमैं ॥ अब गति अलष अपारा रे
जन तुरसी औसा राम हमारा ॥ ताहि सुमिरौ बारंबार
रे ॥४॥२०॥ चेतन राम जपौ रे जिएरा ॥ है हिरदै अतिंत
हीनेरा ॥ टेक ॥ उठत बैठत स्वासनि सोई ॥ सोहं सोहं
जाप जु होई ॥ सो सोहं उलटि कै उचारौ ॥ नाभि हिरदै
थिर कै बिचारौ ॥२॥ बिन जिभ्या बिन ही कर मा
ला ॥ सुमरौ अपनौ दीनदयाला ॥३॥ यह गाइत्री जप
जु कहावै ॥ जपै सु जोगी नाम धरावै ॥४॥ जन तुरसी
धनि जिनि यह जप कीनां ॥ जपि जपि भय अजमैं ली
नां ॥५॥२१॥ संतो सुष मांही सुष नांही रे ॥ सकल
शास्त्र टेरि पुकारै ॥ करि करि ऊंची बांहा रे ॥ टेक
प्रपम दुष अंगीकार करावै ॥ ग्रहत जि बन कौं
जांही रे ॥ तहां थिर ह्वै होइ एराग दोष मल ॥ तप आ
गनि मैं जरांही रे ॥१॥ आसन बांधै निद्रा साधै ॥ छु
त्तृष सबै सहांही रे ॥ सीतउसन संभि करि हरि
सुमरै ॥ निहकांमी होइ मांही रे ॥२॥ सुध भोमिका
करै संतजन ॥ सुध दरपन की नांही रे ॥ तब चित
मैं चिद्रूप प्रकासै ॥ ज्यौं चंदा जल मांही रे ॥३॥ जन
तुरसी पेह सरी कथ्या है षोट की धौं नांही रे ॥ कूं
रमलौं उलटा उरआवै ॥ तौ आतम सुष मांही रे ।
॥४॥२२॥ संतो सो आतम सुष पावै रे ॥ जो बिषया
ए बिसरि बवन लौ उलटि अपूठा आवै रे ॥ टेक
रचै न ही संसार सुषनि मैं ॥ दुष देषि न दहलावै रे

संमांन आपनौं॥ निजस्वरूप निरता
।पानीपावकउ
८।
नमावै रे॥ ऐसैं इहतातीसीली माया॥ ताहि जुगति
करि सिरावै रे॥१॥ रहै समान सबहीन ऊपरै॥ रा
ग दोषनहीं ल्यावै रे॥ निरबैरी निरदुंदी कुरसी॥ सो
सति रूप समावै रे॥२॥ २३॥ दुष सुष कसक जो
लौं जीय आही॥ एई गडल गाडि रही रैनिदिन॥ क
सकौ करि हि जु मांही॥ टेक॥ इनही कौ उर ध्यान
कीयो करै॥ परपद कौं नहीं जांनै॥ नबप्रपद के।
ध्यान हि ठांनै॥ तब एअनंतही तांने ॥१॥ जे कदाचि
दुष सुष कौं त्यागै॥ तौ दुष सुष नहीं त्यागै॥ जुग जुग
त के बासित होइ रहै॥ धरि धारि देह जु आगै॥ २॥
एई बोट पहार होइ रहे है॥ दिनतैं दूरि हो दिना
ही॥ बडे बडे सूर पंडित पचि हारि॥ करि करि उ
पाय जु मांही॥३॥ जन लूरसी परहाइ है नागे॥ ज्यौं
पवना जलकाई॥ संपूरन मन लगै नाव स्यौं॥ तब
मल होइ सिराई॥४॥ २४॥ राम रंग औसारा॥ कोउ
जानैं जान सुजांना॥ जाकै हिरदै औरन आंना॥ टेक॥ रं
गहीं मैं रंग रमि रह्या॥ ता रंग हीन चीन्है कोइ॥ वा रं
ग कौं सोई चीन्हि है॥ जाकै धर परसी सन होइ॥१॥
जिहि रंग रंगि एरंग बधै॥ रंग कबहू छुटि न जाइ
रंग सरीषा होइ रहै॥ रंग जे कोउ परसै आइ॥२॥
आंन रंग सब पर हरै॥ रंग तन मन रहै समाइ॥ जे

नतुरसी रंग रांम की॥ भाई रमै सु रामदी होई॥ २५॥२४
उलटि अंमीरसपी जिए॥ आतम अंतरि आइ॥ टेक
कहा बिबिधि ब्याकरन पढेरे॥ का पढे बेद पुरांन
तन मन कौ भरम ना मिटे॥ बिन भजीए भगवांन रे॥१॥
का जप तप तीरथ कीरे॥ का पूजा ब्रत दांन॥ सब
पर हरि हरि नाव लै॥ तुसादि सुद्दष्टि गुर ग्यांन रे॥
२॥ इह है जोग इहै जुगति है॥ इहै भगति इहै भावे॥
पांच पचीसौ फेरि कै॥ परापरी पद ध्यावरे॥ ३॥ परा
परी पद परसि कै॥ भरम करम कटि जांहि॥ जनतु
रसी तन उधरै॥ मन मिलै परमसुष मांहि॥ ४॥२६॥
जुगति बिचारै जोग की॥ छुटि गयौ जंजाल॥ टेक
चंचल बुधि निहचल भई॥ भरम नाग ई बिलाइ॥
निहकर मी सौं मन लग्यो॥ आतम अंतरि आइरे॥१॥
कूरम कला बिचारि कै॥ लीए पंच पचीसो फेरि॥
आइ बसत पानै परी॥ बागी अनहद भेरि रे॥ २॥
नमसब अतिआनंद भयो रे॥ मिटी जुसंसै पास
जनतुरसी परम प्रकास मैं॥ मिलि आतम करै बिल
ास॥ ३॥ २७॥ राग सवांही गौरी॥ करिलै कृपा वक
का कौं कुपांनी॥ औसें उलट पलट कर ऊरे॥ तौ तु
म बडे बिनानी॥ टेक॥ औमांनै अमृत करि जा
नै॥ मान महा बिषमांनी॥ औसैं उलटि जु बिचारौ
आदि अंतिप्र वांनी॥ १॥ नाती सी री आदि अग्निए
इन्निदादे ब कृपांनी॥ ब्रह्मादिक रुद्रादिक केते॥ क

जांनी॥ औरन्न वधू बादिहीकहावत॥ बालेबेदजु
बांनी॥ टेक॥ आपा मांही आपा जानां॥ ज्यौं रबि चंदा
नी॥ निवावनी रलौं रहैत हांपि रिहोइ॥ पीति ब्रह्म
मैं बांनी॥१॥ वोदयोंहीयदहै पुनिवोंही॥ तामें स
मे नांनी॥ जोजुगतिस्यों ठलाटि पहिचांनै॥ देइ जगत
स्यों कांनी॥२॥ गहि गुरग्यानपंच कों धूनैं॥ ब्बग
कौंग रंआंनी॥ मति ईस बुधि समिकरि राषै॥ आ
दि अंतिइकतानी॥३॥ तन ही मैं त्रिभुवनपति पेषै
लेइ ततपहिचानी॥ जनतुरसी औसा जन जोगी
बकुरिन जनमैं आंनी॥४॥२॥ स्त्रुति को अरथ
इतौ ही आंही॥ पै को ऊ जांन ही मल जानै॥ अप
नानलहाही॥ टेक॥ बाचक ग्यानसी षिसुनिकै
सग॥ ब्रह्म होइ बैठे मांही॥ अंनअधिकारी कामी
क्रोधी॥ मारप रैगीताही॥१॥ जावतजीवदेहअ
ध्यासी॥ तावत [illegible]क्ति कराही॥ ज्ञात बिना छुटिन
ही बौरे॥ बनबसतीनसौं काही॥२॥ गहि गुरग्या
न अज्ञांन ही तूलै॥ ऊ लै आतम मांही॥ तब ज्यौं र
हे त्यौं ही ब्रह्म है रे॥ कतक रन रहाक बु नाही॥
॥३॥ ता हिकतक रैनैं न रह्या कोऊ॥ सुषपति की
सी नांइ॥ जनतुरसी यो जाग्रत ही रहिगया अप

ने सुध सरूप के मांही ॥ ४ ॥ ३ ॥ ल्यौ लागी वा ब्रह्म स्यौं
जाके रूप न रेष रे ॥ बिसरि गए बिषबंधन लौं ॥ बिषै
बासना बेष रे ॥ टेक ॥ कांम क्रोध ज्वाला कृती ॥ जरावती
जु मांहि रे ॥ सो पल टरि पांनी भई ॥ ते फिरि बकु रू
नां हि रे ॥ १ ॥ धनि वे जोगी धनि जती ॥ धनि वे ज्ञांनी सा
धरे ॥ जागत सोवत जन के लगी ॥ यह निज परम समा
धि रे ॥ २ ॥ जन तुरसी बाजी लंघि गए ॥ त्रिगुन परै जु
सोइ रे ॥ चतुरथ पद बासा कीया ॥ रहे जु धेसु होइ
रे ॥ ३ ॥ ४ ॥ ३ ॥ राग जंगली गौरी ॥ रमईया तुम बिन
रह्यौ न जाइ ॥ दयामया करि आंदरि मेरे ॥ बेगि न मि
लहु आइ ॥ टेक ॥ दीनदयौ दरसन बिन दिन दि
न ॥ अति गति रहै हो उदास ॥ करम कपाट खोलि
सब स्वांमी ॥ बेगि न करहु प्रकास ॥ १ ॥ जैसे है तै
से तुम प्रगटौ ॥ प्रगटि दरसन देहु ॥ बिन दरसन
मेरौ क्यौं मन मानै ॥ पलप लक्षी जै देह ॥ २ ॥ तन मन
मेरा तुम ही तांही ॥ काक कं बकुत बनाइ ॥ जन तु
रसी कौ मिलौ कृपा करि ॥ बेगि बिलंब न लाइ ॥
३ ॥ १ ॥ रमईया सो दरहम ही दिखाइ ॥ जि हि दर
पक्के संतजन ॥ सुधा में रहे समाइ ॥ टेक ॥ जहां व
पति बिपति संताप न कोई ॥ काल न परसै आइ ॥
बिछुरन मिलन न मिलन फिरि बिछुरन ॥ एक छुत
हां न आहि ॥ १ ॥ जहां एक रसन दीठु राजी ॥ घटत
बढत नहीं काइ ॥ तहां तेज अनंत स्वांति स्वाति सीत

२ स

ल॥आनंद सदा बिहाइ॥२॥जहां धरनि गिगन पव
न बिशि सहू नहीं जाइ॥ सो दर देकू दया
करि माधौ॥जन तुरसी बलिजाइ॥४॥३॥कैसैं नेह
लगाऊं राम स्यौं॥मन बिच रैन दिन कांम स्यौं॥टेक॥
बिषयां स्यौं प्रीति लगावै॥हरि का गुन कब हूं न गा
वै॥१॥सतगुर का सबद न मानै॥नहीं भगति राम
की जानै॥२॥तुरसी मन बड़ा बिकारी॥हरि बिन
हो सी दुष भारी॥३॥२॥सतगुर समझावै सुनि मन॥
नहीं जइए हरि तजि बिषबनां॥टेक॥तू जाइ जं
हां चित लावै॥ लावै तहां बकूतइ षपावै॥१॥यह दी
से रूप सुरंगा॥तामैं हिपरि पिरि मरहिं पतंगा॥२॥
यामैं सुष नाही भाई॥तूं समझि रांम गुन गाई॥जन
तुरसी इहै बिचारो॥सुष सागर रांम संभारो॥३॥
४॥ऐसैं रांम नाम जपिली जीए॥बिषयां का संग
न कीजीए॥टेक॥लै तन मन हरि जी कूं दीजीए॥१॥
जन तुरसी ऐसैं कीजीए॥भजि गोबिंद जुग जुग जी
जीए॥२॥५॥सोई दास बबेकी हो रांमा॥चित औ
रन आनै तुम बिनां॥टेक॥और रूप करि जानै॥
तुम ही सेती रुचि मानै॥१॥तीनों गुन तजै बिकारा
निरभै पद भजै संवारा॥२॥जन तुरसी पति स्यौं म
न लावै॥ लावै मिलि तहां समावै॥३॥६॥३८॥ अ
थ राग रामकली॥ अब तू आव रे आव मन उलटि
अपूठा॥भजि ले रांम नाम अमृत मीठा॥टेक॥य

ह सकल संसार सार ॥ आपव्यापी राह्मार ॥ दोजि
गीहोजि गाके माव ॥ सरम कौ नाही तहा नहीं बिस्रां
म कोई ॥ समझि देखि बिचारि मांही ॥ सुष की नि धि
रांम रटि लै आप ही मांही ॥ २ ॥ छाडि नरम बिकार
माया ॥ मोहनी सब जीव षाया ॥ ३ ब स्या जनना
दिक रि ॥ जिनि सेई या स्वांमी ॥ काल को डर दूरि
कीया ॥ अनै पुरी मैं बास दीया ॥ असा दीन दयाल
देव अंतर जांमी ॥ २ ॥ जाके नाहि न दूजी आंन ॥ अै
सो हरि सुष कौ निधांन ॥ परम प्रकाश पूरन नि
कटि है नरा ॥ जन तुरसी सोई संभारि लीजै ॥ से
वतां न ही बिलंब कीजे ॥ छूटे आवागवन प्रांनी
सकल दुष तेरा ॥ ३ ॥ १ ॥ सो जोगी जो मन को मारै ॥
मन कौ मारि मनो पर्चे जारै ॥ टेक ॥ ग्यान षड्ग सम
हि अब घू ॥ पांचौं विसन निवारि रे ॥ निरभै होइ नि
संक निसि दिन ॥ निरमल नाव उचारि रे ॥ १ ॥ सिव
नगरी मैं आसन धारै ॥ उलटि अगम बिचारै रे ॥ त्रि
बेणी तटि धरै ताली ॥ परम जोति निहारै रे ॥ २ ॥ का
ल कलपनां निकटि न आवै ॥ गलित होइ गुण गा
वै रे ॥ जन ॥ तुरसी असा जो निजोगी ॥ परम पद
पावै रे ॥ ३ ॥ २ ॥ है कोउ सूर सधीर संत जन ॥ मन की
ममिता षोवै रे ॥ उलटि आप मैं आसन मारै ॥ ना
व न दी मल धोवै रे ॥ टेक ॥ काल कांम कामक्रु
डा मोडै ॥ कुबिधा दूरि निवारै रे ॥ आमकै अस्थो

॥हरिजनजिकारिजसारैरे॥१॥अच
रिअचलहीचीन्है॥पदमांहिसमटि ५

अजलिआवैरे॥२॥३॥

तनोसिरनो
बघटिरामहिजांने॥१॥आसाविसनीतजकल
पनां॥बुरीभलीसबत्यागै॥रहैअडोलचलैनिस
बासुखि॥सोवैसदानितजागै॥२॥सतरजतमत
नौगुनपरहरि॥चौथैचितबितलावै॥कहितु
प रसीपूरनपदथै॥सुषमेजाइसमावै॥३॥६॥
सोबैरागीरामका॥मनसागहिआंने॥अबग
तिदेवनिरंजनां॥ताहिउलटिपिछांने॥टेक॥
अंतरिगतिआसनकरै॥निजततनिरतावै पा
चौंकौंप्रमोधिकै॥मिलिमंगलगावै॥१॥रजगु
नकासंगपरहरै॥तमहूंबिसरावै॥तीजामें
थिरहोइकैं॥चौथैचितलावै॥मगनहोइमन
कौंगहै॥सबकरमनिसावै॥जनतुरसीहरिप
दचीन्हिकैं॥पदमांहिसमावै॥३॥७॥रामनाम
जपिबांवरे॥बकबादनकरनां॥बकबादैबुधि
बलघटै॥छीजैमनपवनां॥टेक॥समझिमहा
पदध्यायलै॥जबलगतनतरूनां॥जबतनज

जरहोइगा तबयाकेसुमिरनां १ हमजुकहैसम
झायकै तुमसुनौजुसरवनां बिनहरिसुमिरन
नांमिटै नामनऋरुमरनां २ हृदेब्यांनगहिरा
खितहोइ हृदेध्यानजुधरनां जनतुरसीतनम
नसौं पिकैं निजनावउचरनां ३ ६ हरिभ
जिहरिभजिप्राणीया अबबिलमनकीजै आव
घटैजोबनखिसै पलपलतनछीजै टेक बा
रबारनहीबावरे मनिखातनपावै भजिभगव
तनबिलंबकरि सतगुरसमझावै १ जबलग
जुरानआवई तनकालनखाई तबलगसेवा
रामकी निहचैकरिभाई २ इहऔसरअब
केबन्यौ ताकहूसमझाई जनतुरसीहरिकों
भजौतनमनचितलाई ३ ७ कलिमें केव
लनावहै सोईउरिधारौ औरउपायअन
तपरे ताहिचितांहबिसारौ टेक आनउपा
इअनंतकरत कछुपईएनांही ररंकाररच
कै रटै तोसबसिधिमांहीं १ आनजुगतिमें
आनधरमको होअधिकारा अबकलिमैंम
धिरामनाम कोमोछितसारा २ बेदपुरान
सबहिनमिलि नाम हीदिढायौ कोटिपति
तपावनभ ज जिन्हसुमिरयौगायौ ३ सकल
मिरोवतिसकलपति सबहिनमैंसारा त्रिभु
वनमांहीबहिरसौ ताकोजैजैकारा औरबि

हन जद्रुहदारै॥ त्यौपापसमू
१ ।५॥ अनेकरनमन
दै रैन्ना॥ मनमरनौ॥ जनतुरसी ऐसैं ह
रिनामकूं॥ इकतारउचरनौ॥६॥ ऐ तौ दूतो ही अ
हिअरथ अनूप॥ काहेकूं पटिपटि ग्रंथ बहूं॥
परतगहै रैकूपाटेको॥ पंचै बिषयापदरै॥ बिष
बवनलौ सोइ॥ बङ्करि उरवल है नही॥ ऐसैं जु
डारौ सोइ॥ ७॥ भाइ है अंतर रांम बिचि॥ और जकथ
बिसतार॥ सो निजरक रिउ रतें उघारौ॥ षुलहि
मो बिके घार॥ ८॥ बहनपरीए बेदके बिसतारमे
मनलाइ॥ पढत गुनत सुनत सुनावत॥ अबधि
बीती जाइ॥ ९॥ भोगपर हरि जोग उरधरि॥ भजो
निरंजन देव॥ जनतुरसी सब साधु कहै॥ इहै सब
साची सेव॥ १०॥ ऐ॥ इहै मतसार सबकौ आहि॥
सकल साखबो निहम॥ नीकैं लीयौ आगाहि॥ टे
क॥ प्रतिलौंम मनकरि तनमहीं॥ चितहू आतम
मू॥ एकरस लागा रहै॥ अभिलाष तजि बांम॥ १
इहै जोग बैराग इहै॥ इहै जगति निहकांम॥ इहै
सकल सिद्धांत कौ फल॥ भजौ केवल रांम॥ २॥
होइ अकलंक कलंक सागो॥ ज्यौं निबाव जो नीर
जनतुरसी उरहो इरहौ यौं॥ आतमामैं पीयार॥ १०
मन मेरे मौंन मुद्रा गहो॥ रागदोष बिसारि जगके

जुगति माहीं रहौ ॥ टेक ॥ परसी एनकु संगकब हू
कालि मां सब ट है नि हंकाम होइ नितिहीं जुगि
धिमधि ॥ रामनाम रचि रहौ ॥ १ ॥ कोउनि दीकनं ब
दौ ॥ कोउंक बुकहौ ॥ दुष सुष की त्रास अपनै ॥ सी
सकपरिस हौ ॥ २ ॥ जो सिलाजु निरमन जुबनकी
औसैं होइन्ह बहौ ॥ जनतु रसीय सार सब कुटक
बचनकाहूं नकहौ ॥ ३ ॥ ११ ॥ बूंघन बोली एमुष बै
न ॥ कैक थाकेसु जसप्रभु को उचरी एये हअैन ॥
टेक ॥ गहे रहौ एबु धियहै ॥ कीए जुमनसा मेंन ॥ कि
नदे षोक हा थे सुन्यो ॥ याक वै रता मै चैन ॥ १ ॥ ता
तीतजिसी रीत जो ॥ गु निधारि जूराषों नैन ॥ पंचोप्र
तिलौ मीकरौ ॥ करि सांति हुबिधा दहन ॥ २ ॥ जनतु
रसीयह मूलसबनको ॥ आतमधरम अगहैन ॥
सौईनर घिरगहिर हौ ॥ कहांषो जत फिर हूकैंन
३ ॥ १२ ॥ हरि बिन कर्म ब्याधि न जाइ ॥ षट दरसन
जोगी जती ॥ सबधकेक रत उपाइ ॥ टेक ॥ एक जप
तपतीरथ करै ॥ एक वृत्यां बेसै जाइ ॥ एक जोग
जुगिकर हिपूजा ॥ एकटग ध्यान लगाइ ॥ १ ॥ एक
पढै गुनै सी षे सुनै ॥ इकर है मौन संमाइ ॥ इक बन
बनफिर हि निसि दिन ॥ अंग भसम लगाइ ॥ २ ॥ इ
क अनदी पर हरि पै पीवै ॥ इक रहै कंद ही षाइ ॥
इक सूकरि जिए पंजर ॥ तउं पिर वै आइ ॥ आदि अ

स्यौं॥जेरदेवनमेंलाइ॥जनतुरसीतिन
॥लीएचरनसेंरनसेंमाइ॥६॥१३॥
बंदेबंदगीचितलाइ॥परहरिमानअपमानजी
एके॥दीनहोइगुनगाइ॥टेक॥कामक्रोधकलेस
परहरि॥आपदाबिसराइ॥राजारामसंभारिनि
सिदिन॥उलटिअंदरिआइ॥१॥कहांइतउत
फिरैप्रानी॥फिरेकछुनसिराइ॥समझिचेति
चित्तायचितबित॥हरिचरनौचितलाइ॥२॥त
नमनआतमापांचौं॥पलटिप्रभुसौंलाइ॥जन
तुरसीकारिजसरैसब॥मिलैंत्रिभुवनराइ॥३॥
१४॥बंदेताहीकीकरिसेव॥जिनितेरीसेवाक
री॥ग्रभमांझभजिसोईदेव॥टेक॥जिनिपानी
तैंपैदाकीए॥मुषकरनासानैन॥नषसषसुंदर
संवारिदीए॥अंगअंगआछेअैन॥१॥उदरभीतरि
उदरबाहरि॥आदिअंतिनिरबाहि॥जिनितै
रौप्रतिपालकीनौं॥क्यौंनसंभारितादि॥२॥दुष
हरनदालिदुबिहंडन॥सुषकेदातासोइ॥त
रनतारनत्रिभुवनपति॥रहेसकलब्यापकहो
इ॥३॥अधमउधुनअसरनसरन॥अपनौंपा
वनदेनाव॥तुरसीततकालअतिरभौंतारे
असेसमरथरांम॥६॥१५॥नूरीनैननदेषी
ए॥सुनीएमनभा

तासौं तिल ... मरि हूं नर चौरे ॥१॥ निरति सुरति दोउ
संमि करि राषौ ॥ नाद बिंद की नाव समजौ रे ॥ ताप त्रिवे
णिनव सिंधपार होइ ॥ परमजोति मिलि कैं ग्रजौ रे ॥
२॥ निरभै होइ निरंतरि बिचरौ ॥ तिरगुन बाजी ।
ताहि तजौ रे ॥ जन तुरसी कहै चौथे चित लावौ ॥ ज्यौं
बहुरि न जग मैं जनमौ रे ॥३॥२७॥ त्रिगुन परे अ
रूप अबिनासी ॥ सांई मेरा सोई जी ॥ भावै मान अ
मान करौ कोऊ ॥ और न दूजा कोई जी ॥ टेक ॥ नाही
होइ म[illegible] जो मैं ताकौं ॥ अपने हीउर मांही जी ॥ ज
हां जहां है बहुतेरा ॥ नाही ता हां जु नांही जी ॥१॥ दहे
बलाइ बढि रही सकल घटि हूं बड हूं बड होई जी
ज हां यह तहां वह न प्रकासे ॥ वो हत हां यह नहीं
कोई जी ॥२॥ द्रिष्टि मुष्टि बाजी जु ब्रह्म बिचि हो
इ रही वो टपहारा जी ॥ यह बिसरजन भए वो हज
लप हुए ॥ और न ही ज पचारा जी ॥३॥ गहि गुर म्या
न जु आपा षोवै ॥ लेस हू रहै न कोई जी ॥ तारक के
निष्कै त्रिबिधि दुष ॥ भए फुला यज रोई जी ॥४॥
जन तुरसी यह अति त गत भ ॥ जिनि जिनि जगत
पवानी जी ॥ तिनकी अहंकार की पावक ॥ पलटि
होइ गई पांनी जी ॥५॥२८॥ तावत फोकट ग्यांन रे
जौलौं बिषै न त्यागे ॥ एकाग्र होइ रांम स्यौं ॥ चित्त चि
कटि न लागे ॥ टेक ॥ बेद पढे आकार न पढौ ॥ प
ढौ सुमिरत पुरांना ॥ सकल सास्त्र सोधि कैं ॥ सम

मंतनांनां॥१॥ क थोबदोकेतेकोउं॥जक्ककरोग
॥मनडं डीउलटें बिनां॥नदी होत सिराई॥२॥
कंनिदेष्या किंनधोंसकुन्या॥कुसरमधिधानां॥अ
डीको ग्यांनरे॥ऐसोसोजानां॥७॥चितदरपन
धनामयो॥मलमिट्योनभाई॥पदलैदीसुजक॥
त्यागीया॥तिनिषताजूथाई॥८॥अंतदकरनव
करनए॥अपनेबसिकोजे॥तबअधिकारजुगपांन
॥श्रुतिमांहिमुनीजे॥५॥जनतुरसीकदैबिचा
॥समझीमैभाई॥पदलैतालषुदाईए॥तौ
पीजलवदराई॥६॥२अ॥ऐसेजगपतिदीजा
औरजानिबीजगुचतुराई॥तादिनउरआनौ
को॥ज्यौदारमैंदहनदूधमैंघृत॥परमलपकु
निमांही॥यो घटिघटिचेतनअविनासी॥चीन्हि
लेकृक्योंनांही॥१०॥जैसेंदसमीरकोगहिलै॥नीरनने
राजाश्री॥ऐसेंउरमैंलषो॥आपनौ॥अलषनिरंजन
राई॥११॥पूरनपरहरिपबिमआवै प्रजाकेरिव
मावो॥तौनबसषउरअ घटचैंनहोइ॥आनंदमं
॥३॥इहै सारसुधर्मसबदिनकौ॥श्रुति
मिरतंमिलिगायौ॥जनतुरसीकहुहोइसुमिलै
जिनिधतिनिहिभेदयदपायौ॥१॥२४॥करीसा
सूरिवै॥कीयाबनबासा॥जोगीहूवामरथरी॥
तजिराजबिलासा॥१॥का॥सुषसंपैधनअतिघन
बलावकुनारी॥सकलछोदरसत्यागीया॥तउ
...सिमारी॥१॥छत्रसिंघासनराजपाट॥त्र

ध्यानबक्तेरा॥सबपरदरिकारिजकीया॥भजि
स्वांमिसबेरा॥२॥पूरागुरपूरामता॥पूरनपदपा
या॥जनममरनकाजैमिटा॥फिरिधरैनकाया
॥३॥अबिहरपदआराधिकै॥काटीजमपासी॥
जनतुरसीजोगीभरथरी॥हूवाअबिनासी॥४
॥२५॥अबगतिअगंमनिरंजनन्यारा॥अकलरूप
सतिसोई॥याकेब्रह्माबिस्नमहेस्वर॥पारन
पावैकोई॥टेक॥खरनरपीरअवलीया॥षट
दरसनबक्तेरा॥बिरलागतिजानैनिरगुनकी
इनगुनमैंकीयाबसेरा॥१॥सबगुनरहतसकल
सुषसागर॥निराकारनिजदेवा॥अबगतिबा
रपारकछूनांही॥ऐसाअलषअभेवा॥२॥आवै
नजायमरैनहीजनमैं॥सोसाहिबसतिपूरा॥
जनतुरसीउनचरिउलिगांना॥गोरषदासकबी
रा॥३॥२६॥बाबायाहगतिबुझैबिरलाकोई॥
जापरिक्रूपाकरहिंक्रपानिधि॥सुधिपावैजन
सोई॥टेक॥गृहिधरधरमधसैदरियामहिं॥जह
जायथिरहोई॥बिननेनौपूरनपदपेषै॥पाप
पुनिमलषोई॥१॥जलमैपैसिजगावैज्वाला॥ता
मैहोमैंलोई॥निरभैहोइनिरंतरिषेलै॥परसि
परमसुषसोई॥२॥उरमाहीआरामबिचारै॥
धुनिमैंध्यानसंजोई॥जनतुरसीऐसाजनजोगी
बकुरिनजनमैंसोई॥३॥२७॥पांनीपरचैपद॥
ध्यांयरे॥मनबहिपरैबहावनिमांही॥हमजुक

हैसमझाइरे।टेक॥ आसन साधि उपाधि दूरि करि
निद्रा नेहन साईरे। इह साधन साधि निति दिन स्यौं।
निरति श्रुति उलटाईरे॥१॥ इला द्वार अचई पवना
नल॥ पिंगल रेचक सु त्याईरे॥ सुषमन मधि संचार जु
गति स्यौं॥ दसवें द्वारि चढाईरे॥ [illegible] ॥२॥ बिन श्रव
नौ सुनि नाद अखंडित॥ बिन रसनां गुन गाईरे
बिन नैनौं निहारि जग जीवन॥ जगमग जोति ज
गाईरे॥३॥ ऐसी बिधि आराधि अजैपद॥ नैन
ही आपै काईरे॥ जनत्तुरसी सुषसागर मांही॥
पचैपांन समाईरे॥४॥२८॥ बाबा पचै पांन लगै
जु जाकौ॥ अचल होइ चित्त कौ बेलि लौ॥ चलि
न सकै चित ताकौ॥टेक॥ नांनां रंग उपजै नहीं क
बहीं॥ रुचै न रस उराकौ रे॥ श्रुति सदा संचर समलि
ल लौ॥ परसै सिंध सुधा कौ रे॥१॥ तिल तिल तप
ति मिटै या तन की॥ मल नासै मन साकौ रे॥ मन मैं
झांई परै न काइ॥ होइ सरूप हीरा कौ रे॥२॥ प
रम जोति परम तेज उदित हो॥ आप रगटै नूर ए
राकौ रे॥ परम अनाहद सुनि सचपावै॥ बिलसै
सुष सिरा कौ रे॥३॥ अमल ध्यान सुबासा होवै॥
न होन मैं डर का कौ रे॥ जनत्तुरसी पद माहिं समा
वै॥ पेषै घर तुरीया कौ रे॥४॥२९॥ बाबा पचै
जे जिनि प्रमानंद पाए॥ जिनकी जुगति अंगएल॥
बिन॥ आसा फंद न परे ए॥ [illegible] टेक॥ बि
चरै सदा उदास आस तजि॥ आपा पर बिसराए

मन कौ बसि कीए मन सा उरि लीए ॥ अनहद धुनि
लपटाए ॥ १ ॥ परम जोति पिंड मांहि प्रगटि रही ॥
वार पार नहीं काए ॥ परसि परसि आनंद सुष बि
लसै ॥ अंतरि ध्यान लगाए ॥ २ ॥ निरभै निडर निर
मल रूपी जन ॥ लोक लाज बिसराए ॥ तुरसीत
न तुरीया केरा ते ॥ मानौं मन्त गज आए ॥ ३ ॥ ३० ॥
बाबा पचे नहीं की यह सदनानी ॥ मन लग्यो उल
टि अनाहद धुनि सौ ॥ चित चपलता बिलांनी ॥
टेक ॥ उभिगयौ काम निजर होइ उर सौ ॥ फिरि
व्याप तिन ही गंनी ॥ कोप अगनि का यावन द
हती ॥ सो पलटि अरनई पांनी ॥ १ ॥ लोभ उला
टि संतोष समानौ ॥ मोह नग्यो भ्रमानी ॥ सोग रमै
फिरि बकुरि न आयौ ॥ दैगयो कित हकांनी ॥
२ ॥ पार समद सुक से ज्ञा पुट्या ॥ निकस्या निर
मल पांनी ॥ ता अघ्याद अमृत जल मांही ॥ मन स
फरी रूचि मांनी ॥ ३ ॥ नष सष निज आनंद सुष
उपनौ ॥ अनंत आपदा नसांनी ॥ जन तुरसीता आ
नंद सिंध मैं ॥ सुरति सलिल होइ समानी ॥ ४ ॥ ३१ ॥
हरि रस माते जे जाना ॥ ऐसे बिचराही ॥ जैसे सुक
पतवा पवन बसि ॥ कहूं आसा नांही ॥ टेक ॥ देह
गेह बिसरे फिरै ॥ मन सा बसि कीये ॥ नांक हूं र
चैन बिरंचि दीया ॥ आनंद ति नहीं ए ॥ १ ॥ नाइ षनासु
ष तें कहीं ॥ नांक हु मान अमानां ॥ लोहा कंचन मृ
तिका ॥ जिनकै तु समानां ॥ २ ॥ अरध उरध मधि (

क्रकी भावनानकोई॥अकिंचन आतम जनता॥हो
ईजु सोई॥७॥अपनेही शुद्धसरूपमें होइर
लताना॥जनतुरसी ब्रह्मसरूपवै॥जोगीजन॥
नी॥४॥३१॥बाबा पुरीन बसे प्रभुपदपद॥तौ॥
दयावन सुहेला॥तोकाहेकूं करैजु कोम॥कवि
जोगाको भेला॥टेक॥आदिब्राह्मण केहु चंडाल
लो सबको उपुरीनसांही॥अपने अपने पापप्र
निफल॥बिनमुगतैंनरहांहीं॥१॥कामी क्रोधी लोभी
मोही॥कुघरबसौकिकासी॥हरिकीनिजनिहक
मतगतिबिना॥कटैनजमकीपासी॥२॥कायाका
सीबुधिबानारसी॥गंगाहृयज्ञ्यान॥जीवतमरत
पमुक्तिपलैं॥बसीएजोती असथान॥३॥गंगागय
ग्रांनजलमांही॥जे असनानकरांही॥तुरसीते अ
नंदीजोगी॥कबहूं अग्निनजरांही॥४॥३२॥ ७१
।रागआसावरी॥सोई सत्य सतगुरकाचेला॥पूर
बतजिपश्चिमकरैमेला॥टेक॥नौसैनदीकूंपमें अ
नै॥बारहसोलाहसंमिकरिजांनै॥दक्षिनतजिऊ
तरकरैबासा॥तबपश्चिमसूरकरैप्रकासा॥१॥
गंगाउलटिभरकौलावै॥धरतीउलटिअसिमान
समावै॥२॥जनतुरसीयापदहिविचारै॥आपति
ऐसाओरहीतारै॥३॥३३॥१॥भाईरेसोसतगुरकीजा
नै॥मनबचक्रम अपनेउर अंतरि॥अलपहूं
अहंनआनै॥टेक॥मानबडाईधरैगिणाई॥दीन
होइहिलमांही॥हरिभिहरिभिहरिकागुनगावै

पलकु बिसरै नाही ॥१॥ जा सुष मैं यह जुग लपटांनां ॥ तां हि देषि न हितू लै नौ कु ना लाफेरि पछिम कौं ॥ त्रिबेणी संगि कू लै ॥२॥ तन मन आनमजीति जुगति स्यौं ॥ गहै सिंध सरनाई ॥ जन तुरसी पूरन सुष पावै ॥ जनम मरन मिटि जाई ॥३॥ ॥ सतगुर ऐसा भेद बतावै ॥ जाका नाग बडा सोई पावै ॥ टेक ॥ बारा मास पलटि घट माई ॥ अन सूति कै घरि रह्यौ समाई ॥१॥ पछिम कंवल मैं करि लेबासा ॥ तब प्रगटे जोति होइ प्रकासा ॥२॥ तहां अनाहद बाजै बाजा ॥ हरि कै नांय मगन मन राजा ॥३॥ जन तुरसी ऐसी गति पाई ॥ सतगुर आप दई समझाई ॥४॥ ॥३॥ नाव बिना सुष नाहीं भाई ॥ सतगुर साधक है समझाई ॥ टेक ॥ भावै अठसठि तीर्थ न्हावौ ॥ भावै नौ षंड म्हफिरि आवौ ॥ भावै जप तप संजम साधौ ॥ भावै सकल देव आराधौ ॥१॥ भावै च्यार्यौं बेद बषांनौ ॥ भावै नाना जगि प्रवानौ ॥ भावै पूजा करहु अपारा ॥ हरि बिन कूग सकल पसारा ॥२॥ भावै घर बन मैं करि बासा ॥ भावै सब तैं फिरहु उदासा ॥ भावै नगन रहौ गहि बांनौ ॥ भावै अनत जिकंद मषि पांनौ ॥३॥ केवल राम नमत तत सार ॥ सकल सिरोमनि सब तैं न्यारा ॥ जन तुरसी तातैं ल्यौ लावौ ॥ सबद षजाइ परम सुष पावौ ॥४॥ ॥४॥ जब लग जुग मैं जीजै ॥ राम ना...
म जपि लेह ॥ च्यारि बेद शास्त्र सब हिन कौ ... र ।

।मालास्वासउसासकीरै॥।
औरकपलौ आरांम॥नास्यों थिरिहोइहिरदैना
मजयि॥ त्यागिक्रोधअरू कांम॥१॥सतजुगत्रेता
द्वापरकलिजुग॥ च्यारिजुगांकेमांहि॥सारभूतसु
मिरनहिगायै॥सबसंतनमिलिआहि॥२॥ज्यौंचा
त्रिग घनचकोरचंदहि॥ज्यौंनिरधनधनप्रीति॥।
ऐसीप्रीतिउरधारिअंमंडितचरनकंवलहीची
ति॥३॥कूरम लौइन्द्रीआपबसिकरि॥उलटिअ
पूगआव॥जनतुरसीनिजनिरगुनभजियौ॥ब्र
ह्मरिअैसौडाव॥४॥५॥ऐसाकहिएनामतुम्ह
रा॥ सुमरतकटिजाहिकोटिबिकारा॥टेक॥राई
मानवैसांदरएता॥जारकावनस्मकरकेता॥जे। ।२।
सैंधगटसूरतमजाइ॥अैसैंनामलेतअघजाहि
बिलाई॥२॥तुरसीदासबिलंबनकीजे॥केवल
रामनामजापलीजै॥३॥६॥ऐसैरांमजपौरेभा
ई॥छाडीमायामोहबडाई॥टेक॥साधसंगतिमि
लिहरिगुनगावौ॥मनकीमनसामनहिसमा
वौ॥मरिभरिप्रेमपयालापीवौ॥मरहूनकब
हूजुगजुगजीवौ॥१॥कामक्रोधकामोहडामौ
रै॥जमसौतोरिरामस्यौंजोरै॥अहनिसिध्या
वौअलखबिनांनी॥तौ बुटैभरमआवाजांनी
॥२॥तुरसीदाससोईजनसारा॥भजैनिरंजनत
जैबिकारा॥उनमनितारीरहैलगाई॥आपात

जि हरि मांहि समाई ॥ ३ ॥ ७ ॥ गोबिंद गोबिंद गोबिं
द भजीए ॥ माया मोह भ्रम सब तजीए ॥ टेक ॥ बिंब
त साध की संगति करीये ॥ राम सुमिरि हरि तरीये
तिरीये ॥ १ ॥ निसबासुरि गोबिंद गुन गाइए ॥ अ
बिहद अजर अमर पद पाइए ॥ २ ॥ जनतुलसी
औसी गति गहिए ॥ तन मन सौंपि राम रस रहि
ए ॥ ३ ॥ ८ ॥ हरि बिमुषन का संग न कीजै ॥ तन म
न सौंपि राम रस पीजै ॥ टेक ॥ साच रूप कौ समि
करि ध्यावै ॥ आपन झूला औरन झूलावै ॥ १ ॥ इं
द्री स्वारथ पेले साच ॥ मानै नहीं साध की बात
॥ २ ॥ दया दीनता ग्यान न ध्यान ॥ निरभै होइ लुग
तै बिषयान ॥ ३ ॥ तुलसी इनका संग निवारि ॥
साचा साहिब लेहि बिचारि ॥ ४ ॥ ९ ॥ बिषया
नदी बहै अति गाढी ॥ ब्रह्म जीव बिचि होइ रही
आडी ॥ टेक ॥ जो रूप स्यौं नैन उलटावै ॥ तौ बैनन
की बाट बतावै ॥ बैनन कू बसि करि बैसे ध्याना ॥ तौ
बचन टोर आइ परै जु कानां ॥ १ ॥ पुनि नासा र
सनां कांमी इंद्री ॥ रहन न पावै नैक न रंद्री ॥ आप
ने आपने रस के लोभा ॥ तिन हकूं उपजावै छोभा
॥ २ ॥ भांति भांति जीवन बहकावै ॥ को कुमुक तिमच
जान न पावै ॥ घेरि घेरि राषै जु इहां ही ॥ लै जगु
के जगही के मांही ॥ ३ ॥ कोऊ हून न पावै पार ॥ क
रि करि थके बहुत उपचार ॥ जन तुलसी लंघि

बिष यानदीलंघैजनम्पानी॥नैकनप्रसैनाकौपानी॥
टेक॥रूपधारमैनैंननदेऊ॥श्रवनहूं श्रपनेबसि
करिलेऊ॥नासारसनांतुकरसत्यागै॥कबहूनफे॥
रिधरैतापागै॥१॥एपंचौरसबिरसजुजानै॥श्रति
तहिमिथ्याकरिमांनै॥मिथ्याजानिमिटावैरागा॥
कबहुनराखैतूतागा॥२॥श्रैसौएहबैरागउरधरई॥
ताजिहाजश्रारौहनकरई॥करिश्रारौहनउत
रैपारा गुरकेवटसमरथउपगारा॥३॥बिनबै
रागबंबेकबिनोदी॥किनहूपारगतिलहीजु
नाही॥जिनिपायौयहप्रमबिचारा॥तुरसीतेउ
नवैगएपारा॥४॥ ११॥कैसैंसुमरौनामतुम्हा
रा॥यहमनचंचलंचपलहमारा॥टेक॥यहमन
दहदिसकौउविधावै॥ध्याक्यौंघेरतनहूंथिर·
नश्रावै॥१॥ यहमनकांमीकुटिलबिकारी॥नां
नारंगउपजावैभारी॥२॥यहमनमातादसती॥न
श्राही॥जाइबिषैबनरहैजुनांही॥३॥यहमनमै
मंतहैबलबीरा॥मारैसुरनरमुनिजनपीरा॥४
मनकौमारिकरैचकचूरा॥कहतुरसीसोईजन
सूरा॥५॥१२॥धिगधिगरैनरनामबिसर्यौ॥
बादिहिजनमश्रमोलिकहारौ॥टेक॥नौनौदेह
सुषनमेंरातौ॥मायामोहरूवमदमातौ॥१॥
श्रबगतितजिश्रापदाबिसाही॥कंचनदेहउ

छनिमैंदाही ॥२॥ परमनांवपदलकनध्यायो ॥ निसि
दिनकीयो आपनोमनभायो ॥३॥ तुरसीदासकहैस
मझाइ ॥ हरिबिनमुकतिनहीरेभाई ॥ध॥१३॥ रे
नरनिसिदिनहरिगुनगाइ ॥ बैसो कहांकरे अपरा
धी ॥ तेरौजनमअमोलिकजाइ ॥ टेक ॥ पांचोपे
प रि[illegible]रि पच्चमांही ॥ मनमनसाउलटाइ ॥ निरतिसु
ति अभिअंतरिपीवस्यौं ॥ नषसमवरकुलपटाइ
॥१॥ पांचौंमारेतेहरितारे ॥ सूतेलीएजगाइ ॥ अ
रसपरसआपनसुषमांही ॥ जनतुरसीलीए।
मिलाइ ॥२॥ १४॥ दिनदशगायलेगोबिंदगुनां
अंतिकोऊ छिरिनारहै ॥ तूसमझिरमेरेमना ॥ टे
क ॥ बचकवैमंडलीकहादश ॥ करते भोगबिला
स ॥ तेकपरिमाटीमिले ॥ वकुतेसहीतनत्रेस ॥
आसिधिरकोउनजानीए ॥ बिनभजेपदअबिना
तां स ॥ १ ॥ रावरंकसुलाोनजबेरे ॥ केतेभानषवांन
राजनकेसंबूदहोते ॥ सुंदरसुभटसुजान ॥ सार
सुधिकबुनारही ॥ सहीनहीएपयांन ॥२॥ बिन
भंगरहैदेहसबनकी ॥ कास्योंकरीएनेह ॥ नेहकरि
करिअनंतलय ॥ मिलेमाटीषेह ॥ तातेतरकिदेतौ
रिबतगासौ ॥ रामजपिकिनलेह ॥३॥ जेउपजेते
तेबवे ॥ सबहीजुगएबिलाइ ॥ अजरअमरको
उनही ॥ बिनभजेरघुपतिराइ ॥ जनतुरसीयह
गतिजानिरहो ॥ हरिचरनसरसमाइ ॥ ध ॥ १५

फि

कौ है पीवके॥ फूटौ न हीयह हीया॥ अजहूं जी
कौ रसौ॥ मह बज्रय हजीया॥ टेक॥ बक्रत
दिन बिछुरे मए सजनी॥ सुहाय न धन धाम
तक पलक बीतत कलप जु मोहि॥ बिनदे
षै राम॥ १॥ धिग मेरौ जीवन जु जनम धिग॥ धि
मतिये ही॥ बिछुरे प्रेमसनेही प्रीतम देषे
मई के ही॥ २॥ सज्या सिंघ सिंगार सपस मि॥ २
मोहि माई॥ बिरह अग्नि दारन दौ लागी
न रही बुझाई॥ ३॥ वो ह दिन कबौ कब आइ
मोहि हसि नेहि हैं जु राम॥ जनतुरसी मेरे जनम
कौ सरहि सकल ई काम॥ ४॥ १४॥ अ
जन हरि रस पीवौ रे॥ पीबौ जु गिजु गि जीवौ
॥ टेक॥ निरति सुरति मन पवन फेरि कै उल
रही बौरे॥ आतम के असथां निबेसि करि॥
मरही बौरे॥ १॥ अरध उरध मधि मनसा बाव
धजु ही बौरे॥ ब्रह्म अग्नि प्रजारि अमि अंत
अंमी अचइ बौरे॥ २॥ पांचू पचीसौ त्यागि
डरमति सब॥ सुमति गहि बौरे॥ जनतुरसी
राम रसायन पीय कै॥ आनंद के बौरे॥ ३॥ १५
तू देषै सौ तू नांही॥ यह कहत मत है अबि
सी॥ अरथ इतो ही आंही॥ टेक॥ तू तौ दृष्टि
गोचर कही ए॥ सृष्टि मांऊन हि आवै॥ ऐसौ
सब साधन बांनत॥ अरु बेद हु बतावै॥ १॥

द्वैतौ चेतन पंच तत को ॥ पद त्याग परि बागा ॥ फारे
पहरै पहरै फारै ॥ तन का गुन न कै रागा ॥ २ ॥ इंद्री बि
षै भोग चित व न तजि ॥ उलटि भ्रम पूग आवै ॥ तौ
आपनौ सरूप सुध निरगुन ॥ निहचै निज करि
पावै ॥ ३ ॥ होइ जाति की जाति मिलै हो ॥ भरम बिजाति
मल रहै न कोई ॥ जन तुरसी परस त पूरा गूरु ॥ पल
टि ऐसी गति होइ ॥ ४ ॥ १८ ॥ पानी का पद जो रि
मि हाँ ॥ तन मन मैं पल न ही सबुरी ॥ तजे माया है
माया ॥ टेक ॥ भीतरि और बाहरि क बुझौ रै ॥ तब
लग सरै न काइ ॥ बाहरि भीतरि हो इ एक राजी ॥ तौ
पावै सब भाई ॥ १ ॥ जब लग भ्रम बिषै तन माही ॥ त
ब लग क्रूंगी सेवा ॥ भरम बिलाय बिषै भी त्यागे ॥
तब मानै गुरु देवा ॥ २ ॥ कहणी कहै क बुन ही बा
रे जो रहणी न ही आवै ॥ जै से कहै रहै पुनि ते सै
तौ सांई मनि भावै ॥ ३ ॥ तुरसी दास कहै समझाई
ऐसी करि रे भाई ॥ मैं तैं तु बधि निवारि राम जपि
तौ मिलि है हरि आई ॥ ४ ॥ १९ ॥ इह बैराग बदौ
नहीं भाई ॥ तन गरीब मन माहि बडाई ॥ टेक ॥ त
न जोगी मन दुनीयादार ॥ बुरी भली बिसरै न ल
गार ॥ मुषां ह साधक रनी कबु नाही ॥ निरति
सुरति सब माया माही ॥ १ ॥ तन बैरागी मन कथि
ना हि ॥ बाहरि हंस का ग घट माहि ॥ नर की जीव
नरक सौं प्यार ॥ मुकता हल तजै भषै बिकार ॥ २

रागी सो नव्ह बिसरावै॥ नरम कामस बहू रिनसावै॥ अनभै पद में रहै समा३॥ तुरसी दास बलि जा३॥ ३॥ २०॥ देषो रे गो बिदगति ऐसी॥ पंडै था रआग नि मल जैसी॥ एक कि रु रु कि नर खल टा आवै॥ पैली पा रन नपावै॥ पैलेपार बसै मे रामा ३॥ सुषसागर दुःखहरन गुसांई॥ १॥ इक पंडित गुनी पचिहारे॥ ब्रह्म तिष्ठ रुपकार न्यारे न्यारे॥ ब्रह्मादिरुषन्यारे नहीं होंहीं॥ तातें रहै अपान औ के होंही॥ २॥ पक जोग साधै निहंकारन॥ अजर रहे नके कारन॥ एक बैराग लिये नरम मांही राग दोष मल छाडै नांही॥ ३॥ निहकाम होइ त्यागै सब काम॥ निसदिन जपै राम को नाम॥ मन ही जर फेरि आप ३॥ तुरसी तिनकी से से व॥ ४॥ २१॥ का भयो मोनि गहे मनि बोलै॥ पल न है थि रि ह रि दिसि डोलै॥ टेक॥ का भयो नांगा रा अकेला॥ संगि संतावै पांचौं चेला॥ नाद मूंदि मन सामु कला ई॥ नाद बिना सच नाहि रे साई॥ १॥ का भयो जटा के गूदर बाये॥ नष सष अंग भभूति चढायो॥ का भयो रनि बनि फिरै उदासा॥ जब लग न हरि चरन निवासा॥ २॥ मन मन मांगि दिस बिचारै॥ पांचौं चेला संगि निवारै॥ जन तुरसी

सोईमुनिसारा॥ उनमनिलागिरहैनिरधारा॥३॥२
मायाषायासबसंसारा॥ जेउबरेतिनिरांमसंभार
टेक॥ छलबलसहितजीवबसिकीया॥ चुतुरछि
काराचुनिचुनिलीया॥ मीरमुलकराजाएनाम
रेधाइसकलबिषबांना॥१॥ कामक्रोधकागोला
बाहै॥ काचाकोटचोटसोंढावै॥ छुटिनसकैको
उनरषांनी॥ सबजीवमारिकीएधुकधांनी॥२
पंडितमुनीसूरसबहारे॥ सुरनरमुनिजनपीर
सिंघारे॥ महादेवकामेनाडिगाया॥ ऐसीअवर
बलतेरीमाया॥३॥ रचिरचिनांनाभेषबनावै
निसिदिनमोहिबोहोतदुषद्यावै॥ तुरसी
दासजनकरेपुकारा॥ राषिराषिसाईदुहिबा
रा॥४॥ २२॥ मायामनदूनुगांविपरी॥ छुटतना
हीअधिकघुरी॥ टेक॥ जोमायाकोमनविटका
वै॥ तोमायानहीछाडै॥ जोमायाअरीमहोइमन
सों॥ तोमननवांसिरआडै॥१॥ मायाबिनमनरहै
नपलमरि॥ मनमायानबिसारै॥ अतिगति
गांठिपरीअ भिअंतरि॥ कैसेंकोनिरवारै॥ औ
सेंहीमिलिरहेपरसपर॥ कहैभिनक्योंहोई
बडेबडेपंडितमुनिग्याता॥ षोजतथाकेसो
ई॥२॥ सोईसतसोईजोगीसूर॥ योयागांठि
निवारै॥ कहैतुरसीसोईगुरमेरा॥ आपतिरै

मोहितारै॥४॥२४॥ सोईजगतामैरैमनिलावै॥बा
रिजानांमीनरिल्यावै॥टेक॥बादरका सबतजै
मारा॥अंतरिसुमरैरांमपियारा॥१॥बिनजिह्व
का गुनगावै॥बिनकरैअनहदबैनबजावै
॥जनतुरसी सोई जनसाचा॥पांचौमेटिएकर
माता॥३॥२५॥सोई साधसिरिमोरहमारै॥ए
गहैसबदजिनिवारै॥टेक॥रहै अरीजसकल
न्यारा॥अंतरिसुमिरैरामपियारा॥१॥नाघरि
हैनबनमैंजाऊं॥उलटिआपमैंरहैसमाऊं॥२
तुरसीपतिस्योंमनलावै॥जावैआवैनहोसं
मावै॥३॥२६॥जुगियासोईबाबाजुगतिपि
छानै॥बाहरिजातानीतरिआनै॥टेक॥सिव
ग्रीमैंआसनलावै॥सबदअनाहदसींगीबा
॥१॥कंथाछिमाअखंडअधारी॥सहैजैमु
अगमबिचारी॥२॥निजसरूपउलटिरपु
चांनै॥प्रगटजोतितहांमनमांनै॥३॥पांचौ
एकरसभोगी॥कहतुरसीसोईजनजोगी
॥४॥२७॥आपापोजिअनंतकितजांहिं॥अन
हीपावैनाहीनांहिं॥टेक॥आपापोजिअनं
तकितजांहिं अनंतहींपावैनांहींतांहिं॥अ
नभरमतसबजुगपरच्यायाली॥किनकैन
याजैवा॥केउजपकेउतपकेउतीरथबरत
करआनकीसेवा॥१॥केउबेदपुरांनोबिलंबे॥
उषटकरमआचारा॥पावैनहीआपबिनपे

जे॥ निकट हिनाघट मा रा॥२॥ आपा अंतरिषो
जिनि रंतरि॥ मन पवना जुमिलाई॥ तुरसीदास
त्रास सब छूटै॥ पद मै ध्यांन समाई॥३॥ २६॥
ध्यांनी काहे कू इत उत जाहिं॥ इत उत पावै नादी
ताहिं॥ टेक॥ इत उत भरमत षलक मटंदर सन
हेरि हेरि हेरि हारे॥ उतर दषिन पूरब पछिम
फिरि फिरि ध्यांन पहारे॥१॥ काया कासी मैं अ
बिनासी॥ सो बिमुकति के दाता॥ ताहि सुमरि उ
लटि अभि अंतरि॥ मन क्रम मनसा बाचा॥२
तन मैं मन मन मैं धरि पवना॥ पवन फेरि बंद
लाई॥ अरध उरध मधि जोति जगमगै॥ न दोउ
न बिर माई॥३॥ नउ द्वार जरि जोग जुगति स्यों
चलि दसवै घरि जईए॥ जन तुरसी प्रभु प्रसि प्र
म पद॥ काल करम डषदहीए॥४॥ २७॥ अव
धू अबन रहूं ग्रिह बन मैं॥ गुर गमि पाचौं फे
रि अपूठा॥ रमर मौं यातन मैं॥ टेक॥ ग्रह छब
सि पजो गोबिंद पइए॥ तो सद गति सब लोई॥
बन मैं जीव बसै बहुतेरा॥ पार न पहूंच्या को
ई॥१॥ श्रवन नैन नासिका रसना॥ चिब ली
बाट चलाऊ॥ आतम कै अस्थांनि बैसि कारि॥
निज पद नेह लगाऊं॥२॥ आसा त्रिस्ना षंडि प
नगाहिं॥ मन मनसा गहि आनौ॥ अस्व रमारि
स्वर फेरि बसाऊ॥ प्रम हंस पद मानौ॥३॥ जन
तुरसी गुर कृपा ते॥ अमर पयाला पीऊ॥

सपरमसिलिरहौंरांमभै॥मिलिकैजुगिजु
ग॥ध॥रु०॥संतहोसोहै रामहंमारा॥जोधरै
दसअवतारा॥टेक॥दुषसुषरहतरहै सबदिन
॥पापपुनितैंन्यारा॥अडिग अचलअपअरणबि
रजित॥वारनपारअपारा॥१॥सबसुषपूरहैंतै
पूरा॥अबगतिअंतरजांमी॥आवैनजाइमरैन
जनमैं॥ऐसासमरथस्वांमी॥२॥कालकरम
कैकबुनाही॥नाहीरूपअरूपा॥सकलबि
पीसबतैंन्यारा॥ऐसातत अनूपा॥३॥अ
मअगाध॥सकलबिधिपूरन॥निराकारनि
देवा॥तुरसीऐसारामहमारा॥करौंएकरस
सेवा॥४॥रु०॥संतौहौ ऐसारांमहंमारा॥कोऊ
जाननहारा॥टेक॥ज्योंजलमैंप्रतिबिंबदी
ये॥दरपनमांही छाया॥दूधैघितकाष्टजोम
वको॥योंसब घटिरामराया॥१॥कोसैनाद
सपकुयमैं॥ज्योंतिलतेलसमान॥पिंडेजी
सीव ऐसैं सबमैं॥जानैजानसुजान॥२॥
रपारजाकौकबुनांही॥पूरिरह्योसबमा
॥गुणातीतअषिलअबिनासी॥उपजैबि
सैनांही॥३॥आदिअंतिमधिअषंडितजुगि
॥पूरनपरमानंदा॥तुरसीदासताससेवती
गयादुषदंदा॥४॥रु०॥बैंदेहाजरांहजू
॥कुमतिजानैसाहिबदूरि॥टेक॥हैहजुरि
जांनसबबिधि॥निरषिबारंबार॥पंच

तसकर बैगि बसि करि ॥ होइ जौ दीदार ॥१॥
नष सिष लौं ओजु दस मांही ॥ सकल ब्यापक सोई
उलटि देषि पिछांनि दिल मैं ॥ आप और न कोइ
॥२॥ सनमुषां होइ सुमरि सांई ब ॥ आन आसमि
टाइ ॥ तुरसीदास सकल स हित स्यों ॥ य रास यी रषु
दाइ ॥३॥ ३ ॥ बंदे बंदगी करि लेह ॥ इत उत अन
त चित न देह ॥ टेक ॥ नीवौ घारो नेम दिढ करि ॥ उ
लटि अंदर आव ॥ रिदा मधि सजि राम अपनो
गबिलंब न लाव ॥१॥ माही लागा जु रहु निति
जैसें चंद चकोर ॥ अपने अलाह राम स्यों इकता
र निस अरु भोर ॥२॥ जन तुरसी कहै जाइ बीतौ
बऊ कहा धौ बीर ॥ निवाव दीपक लौं जु देर
हौ ॥ आतमा मै षीर ॥३॥४॥ उलटि मटी मैं आ
सन मांडौ ॥ पांचौ चेला का संग छाडौ ॥ टेक ॥ ए
का एकी आरंभ लागौ ॥ नीद निवारि एक रसि ला
गौ ॥१॥ बिन जिभ्या हरि का गुन गावौ ॥ बिन कर
अनहद बैन बजावौ ॥२॥ जन तुरसी उनमन र
स पीवौ ॥ मरै न कबहू जुगि जुगि जीवौ ॥३
॥५॥ जा दिन कहा इहा ही है राम ॥ पई ए जो कुई ए
निहकाम ॥ टेक ॥ जे निहकाम भया तिनि पा
या ॥ सकामी न अ हत होग माया ॥१॥ ज्यों दा
रं मैं दहन दध मैं घीव ॥ यौं न घ संघ ब्यापक मैं
रे पीव ॥२॥ जिनि मंतका पाया स्वाव ॥ ते इत
उत कहन करै भरमाव ॥३॥ मनपवनातन मैं

होइ रहै ज्यौं निवाव कौ नीर ॥४॥ जन तु
रसी धनि धनि वे साध ॥ जिनि पाई यह गति अगा
ध ॥५॥ (२६) पांडे कहा जु ग्यान तुम्हारा ॥ भरम करम
कौं मनी कनक सुआ ॥ बुटत नाहि लगार ॥टेक॥ हौजि
गा का जि कुनी परमो धन ॥ करि विकरम रथ विचारा ॥
जाकरनी करमादिक वुटै ॥ सो मत रह्या नियारा ॥
॥१॥ कामी ताभाग वत बखांनै ॥ कछु न परीयो पांनै
तन मन माया माहि अलूझौ ॥ साच रहौ सब कांनै
॥२॥ संध्या तरपन असु अटकरमा ॥ लागि रहै यह
आसा ॥ इंदि आंसा सौं लागि अंध हौ ॥ कौन भया नि
जदासा ॥३॥ तुरसीदास कहै समझाई ॥ आन आस
तजि भाई ॥ मन क्रम भजि लै राम निरंजन ॥ तो मिलि
है हरि आई ॥४॥ (२७) पांडे कौन कथा वद सार ॥ जा
सुनि संत उतरिगए पार ॥टेक॥ अब यह कथा सु
नत सब कोऊ ॥ ज्यौं के त्यौं ही ब्यांही ॥ वद ब्यार तिन
पजनि को कूश्रौ रा ॥ जा सुनि बन कौं जाही ॥१॥ वि
षव बनली जु फीके लागे ॥ सब दादि विषये सा
ही ॥ सोई कथा सु मरन सोई साचा ॥ जामाही यो होई
॥२॥ हद परै बेहद मैं ॥ वहां जाइ मन लागे ॥ जनम
मरन को संसा बुटै ॥ सूती सु मृत जागे ॥३॥ जन तुर
सी सोई पंडित पूरा ॥ जो औसे समझावै ॥ जो समझै
॥ असमझ लै सन आवै ॥४॥ (२८)॥
जबलगा मन थि

रि नांही॥ निरगुन सरगुन एक बषानौं तू रचि
र सो मरम मांही॥ टेक॥ कहै सु नै कछु समझै
नांही॥ मन की दौर न छूटै॥ कनक कामनी कै ब
सि परीयो॥ तातै त्रिष्णां दिन दिन लूटै॥१॥ सब
गुन रहत अकल अबिनासी है पन सब तै न्या
रा॥ ताकौ सुमरि बांद्धि सब कुरमति यह निज
ग्यांन बिचारा॥२॥ कहै नीकौ हंम मांनत नाही॥
रहनी रहै तौ सारां॥ तुरसीदास कहै समझाई॥
तुम हरि भजि उतरौ पारां॥३॥३०॥ यह क्यौं सूद्र
यह क्यौं पांडे एक ही माटी के सब भांडे॥ टेक॥
एक ही चका एक ही गाय॥ एक कुलाल उपाव
नहारा॥१॥ एक ही ब्रह्म हि छि उपाई जुदे।
जुदे कही एक्यौं भाई॥२॥ एक ही ज्यौनि बाट स
ब आए॥ कहा ब्राह्मन कहा सूदर सबाए॥३॥
एक ही जननी जनकै जु सोई॥ एक उदर उपने सब
कोई॥४॥ उत्तम मधिम करणी कीन्ही तातै नए जुति
ना भिन्नी॥५॥ दे षौ औरकार नन ही कोई॥ औरमनि
षमात्र है सोई॥६॥ सब घट घ्यापक ब्रह्म बिचा
रै॥ सोई ब्राह्मन यौ बेद पुकारै॥७॥ निरदोषी नि
रबैरी होई॥ जन तुरसी ब्राह्मन कही ए सोई॥ टी
॥६०॥ संतो सो पंडित अधिकारी॥ धरम गहै अध
रम सब मागै॥ निसिदिन जपै मुरारी॥ टेक॥ का
म क्रोध तजि लोभ मद हि षंडै॥ त्रिष्णां तरंग न सावै

वैसें मि लौं मिनि करियांनी ॥ निजपदनै दल
॥२॥ म रम करम हिरदै न हिधारै॥ बाद बि बाद
बरनैं नहीं बरनकी सोभा ॥ अ बरनजस
बिसतारै॥ ३॥ पांच पचीस अनंत अचपर हरी त्रि
गुन दिसै न ध्यावै॥ कहै तुरसी चौथापद मांही॥ सन
मुष होइ समावै॥४॥ ६१॥ पर निंदा मुषतैं न कर हा
रे॥ पर निंदा बिषतें जु महाबिष॥ करि करि दोजिग
कांइ परौरे॥ टेक॥ मजो मिरंजन निरति सुरति ग
हि॥ सील संतोष उरमांऊ धरकौरे॥ यहै धरम अधर
मकौ मोचक॥ कथें बदे भवजल न तिरकौरे॥१॥ दोष
सत्र कर वतलौं बेहरै॥ हिरदै बैरी बसै अधिक बुरौ
रे॥ ताबु डकौ सपरस करि करि तुम॥ करणा सिधु
सुषकूं बिसरौरै॥ २॥ सब सौं समद्रिष्टी ह्वै बिच
रौ रे॥ राग दोष का हूं न करौरे॥ इहै सार सब ग्रंथन
कौ॥ सो अपनै उरमांऊ धरौरे॥ ३॥ नानां पंथ नाना
पंथन मैं॥ नाना मतन मैं मत हि परौरे॥ जन तुरसी
कहै मजौ एक ब्रह्म ही॥ आदि अति इहम घसेचरौ
॥ ४॥ ६२॥ अब धूआ तमतत जु एहा लेहु पद चौ
निमलताकौ रहै बिसर जन देह॥ टेक॥ प्रकासी
तिमर संसार है जु न्यारा मांही॥ पंचतत त्रि
॥१॥ जगमगा जौ
जेता॥ जनम मरन नहीं होवै एक
वरा॥ ताकै कलम षधो वै॥ २॥ वि

हानंद सत्य मिति अमिति कहु ॥ दरस हूं रिन नेरा
बिलसै सु महंस साधु जन ॥ ता सरोवर तीरा ॥ ३
सकल क्रिया पी सब तैं न्यारा ॥ सब कोई ज्ञ रजु
सोई ॥ सकल देवता कै तर हरी या ॥ ता ऊपरि न
हि कोई ॥ ४ ॥ अनहद तूर अखंडित बाजै ॥ तहां
जु ताका बासा ॥ उलटि आव उरमांहि सत्रू ॥ तु
रसी देषित मासा ॥ ५ ॥ । ध ३ ॥ इहां ही गंगा इहां
ही कासी ॥ इहां ही आपनाथ अबिनासी ॥ टेक
जो बहु लावैं उलटी ल्यावै ॥ पिंगुला हू फेरि कै
बहावै ॥ उभै प्रवाह सुषमनि मधि है ॥ गुरस्
साद ज्यों सी करि लेइ ॥ १ ॥ तीन कू का मेला करै
जहां ॥ पच्छिम देस प्रयाग है तहां ॥ जहां तें उठवत
है तत पवनां ॥ येक बहन करै पूरब तन गवं
नां ॥ २ ॥ या त्रिबेनी न्हावै कोइ ॥ कोटि जिगि
को फल लाहि जु होइ ॥ मन क्रम बचन सत्य है
सोइ ॥ या मैं न हीं संनेह जु कोइ ॥ ३ ॥ यह काया
कासी रे भाई ॥ मुक्तिपुरी करि संतनि गाई ॥ या बा
हरि जिनि बांधी प्रीति ॥ ते बहु परलोक की रीति ॥ ४
या ही मांझ पुरी सब जानौं ॥ या ही मैं ठसरख वानौं
या ही मैं तीरथ सब देव ॥ या मैं रहै सु पावै भेव ॥ ५
या ही मांझ आत्मा ध्यांन ॥ या ही मां ही ब्रह्म गियान
या ही मै ध्यावै जगदीस ॥ सो जोगेसुर नर का ईस
॥ ६ ॥ जन तुरसी यह उतम उपाइ ॥ घट ही मैं गुर दी

याबताइ॥सोकूरमलौंउलटाआवै॥सोईमलै
नेदयदपावै॥३॥ घघ॥ ११५॥रागसि०धौरो॥
सोईसूरसांवतसुभटसोई॥ निरतिमाहिश्रुतिकौं॥
उलटिआनै॥उनै मिलाइउरमांहिएकांनरकैरै॥तत
सुरपदकौंपहिचानै॥टेक॥मनमातंगमदगलित
ऊबटफिरै॥ घिरतनहिपेलौबकघेरिहारै॥ग्या
नआंकुसकरगहिजुउलटाधरै॥लैजुरिदका
रिदमांझधरै॥१॥ कामकोदलमलैनिपटकरि
निरदै॥क्रोधपावकपांनजुकैवै॥सुधाजलसी
बुलैस्वातिजैसेकरै॥ ज्योंबकोरिनफलकिअकु
रलेवै॥२॥ लोभ·अरुमोहमतसरजुमो मदमारि
को॥सकलअरिजीतिदुषद्वंदमिटावै॥तुरसी
आनंदपदसुमहिआवौपहरा॥ जाइअपनैघ
मुकौंऔसीसमनावावै॥३॥॥११६॥रागसोरठि॥
मनरेहरिमारिगगाहिभाई॥तौहिकहबारबार
समझाई॥टेक॥मनघघमजेहांतुराताबिषैअ
मृतकरिकरिषाता॥बिषअमृतकरिकरिषा
या॥अबतजिनत्रिभुवनराया॥५॥परहरिबि
षबवनकीबाटा॥लेघिजईएऔघटघाटा॥
तंघियेबिनयहगतिहोवै॥लबचौरासीफिरि
फिरिजोवै॥२॥हरिमारिगकीअधिकाई॥जेब
सुपङ्चैनाई॥छुटाजामनअरुमरनां॥बि
नामकीयाहरिचरनां॥३॥मनभजिलैरांमसं॥

नेही॥ ज्यौं बकरि न धरी ए देही॥ सुषसागर मैं हो ग
वासा॥ जुगि जुगि जन तुरसी दासा॥ ४॥ १॥ मन रे ह
रि सुमिरि है ऐसा॥ षडगधार अग्नि झलै सा॥ टेक
कायर कंपै अंति मारी॥ चलि सकै न एक लगारी॥
झुकि झुकि झुकि रहे वारा॥ इब सुषदरियाव मंझा
रा॥ जौं कब हूं जग नहिं टकावै॥ तौ जन्म जन्म मन ला
है॥ लालच लौ मन तूटै॥ तातैं पकरि पकरि जमलू
टै॥ २॥ माया मीठी लागै॥ तिनकौं कहा चलन जु आ
गौ॥ आगै चलि है जन सोई॥ जिनि अहंममत बुधि
षोई॥ ३॥ जिन छाडी तन मन की आसा॥ धरि रहे ह
रि सौं विसवासा॥ जन तुरसी पकचे पद माहीं॥
जे मैं सलिता सिंधु समाहीं॥ ३॥ २॥ मन रे मैं तैं नहीं
बिसारी॥ तब लगि आदि न संसारी॥ टेक॥ कहा भ
यौ बहु भेष जु कीए॥ छापा तिलक अरु माला॥ का
म क्रोध लोभ हृदै जे बिन होइ न तुर उजाला॥ १॥
जे बलौ उर कै सुरति है लालो॥ कान्ह्यो नीर जु-
न्हाये॥ मन वगौ रया धान रूप लौ॥ तौ का सतसं
गति आइ॥ २॥ तुरसी मैं ए रूप होइ रदै॥ राग॥
दोष मल त्यागि॥ तौ सीतल सद गति सुष पावै॥
साति होइ इब आगि॥ ३॥ ३॥ मन रे आव कहां
जाइ भाइ॥ घरि होइ भजि त्रिभुवन राइ॥ टे
क॥ जो ई जो ईत देषत यह बाजी॥ नैन निरूप
षुसाल॥ सोई इब मूल जानियह जीए मैं॥ बि

नाभजनगोपाला॥४॥बहुतकजीएइहकेयामाया
कोउनअबरनपाया॥उबमासोईत्राहित्राहिकरि
मरनिरामकीआया॥४॥जिनिजिनिजप्यारामअ
विनासी॥प्रेमप्रीतिमनलाई॥तुरसीयारंगतनऐते
ईते॥सुषमेरहेसमाई॥५॥ ६॥मनरेहरिभजिवि
लंमनकरनां॥जबलगतनहैयहतरनां॥टेक॥जब
जुराबुढापौआवै॥तबनांनारोगसतावै॥बलघ
टैबुधिहोइनासा॥उपजैबहुमदरघासा॥१॥ज
बनैनौंनीरवहाई॥श्रवनौंहूंसुन्योननाई॥मुष
सुधबचननआवै॥तबसुकृतकीयोनजावै॥२॥
जबघरहकेपेकाया॥कछुहोइनभजनउपाया॥
तातैंअबचेतिअज्ञानी॥समझावैसंतसुजांनी॥३॥
तुकरिउपायअबहूंहा॥परहरिदेनानानेहा॥ना
वनिरूपकिनलेही॥ज्योंसुफलहोइएहदेहा॥४॥
तूंषंडिमलककीआसा॥करिउलटिअनिअंत
रिबासा॥तुरसीनितिरटिहरिनांम॥निसिबासुरि
आवैजांम॥५॥ ६॥मनरेनियरैसुषबताऊं॥
बिघनतजैतौबेगिलंघाऊं॥टेक॥जबलगबि
षतजैनभाई॥तबलगमिल्यौनहिजाई॥बिषपर
हरिउलटिसंमावै॥तौनिहचैसबसुषपावै॥१॥त
जिकांमक्रोधकुटिलाई॥तजिलैत्रिभुवनपतिरा
ई॥बिनभजेभेदनहीपावै॥जौसकललोकफिरि
॥२॥जहांरामतहांनहीकांमां॥ऐसाकछु

है छिओ मां॥ सो आदि अंत नहीं पासा॥ बिन भजे न
पाईये नासा॥१॥ तूं समझि सरोतरि बांनी॥ हमक ही
सो छिप्र बांनी॥ औसी करनी करिलीजै॥ जन तुर
सी सूषा बिलसीजै॥२॥ ६॥ मन रे आन मरत ही
जूर ही॥टे०॥ आदि अंति मध्य मनसा बाचा इहै जे
सादूर सा हिए॥ टेक॥ नांनां कथा निगम मत नांनां
तहां बसि किन रहिए॥ निइचौ परचौ पकरि नां
हकौ॥ उर मति दीमयो दहिए॥१॥ कोटिक पा
खंड्यान मत कोटिक॥ कोटिक मारिग कहिए॥
सो जत न कूंजत सूजिन सूनावत॥ परमित पार न
लहिए॥२॥ के जनासति के ऊ आसति माषै॥ के
ऊ जनमक के कन हिये॥ औसें या ऊकझोल माहि
परि॥ काहे कौ रोग बहाए॥३॥ राग दोष बिस
राय बिकल बुधि॥ भरम लै धार बहाए॥ जन तु
रसी तरसें आराम करि॥ परमातम पद गहिए॥
४॥ ७॥ मन रे सब घटि करता कहिये॥ के से प
घ ती तिजु ल हिए॥ टेक॥ जो सब घट करता होइ तौ
ऊ प्रयावे किं न होई॥ यह जनम मरन की त्रासा
क्यौं होइ सके पियासा॥१॥ जौ कहिए सब तें दू
रा तौ यह भी मत न पूरा॥ पूरा मत जौ यह होइ
तौ हलन चलन क्यौं होई॥२॥ वैरा तिनिरंका
रा॥ सब व्यापक सब तें न्यारा॥ जन तुरसी औ
सें जांनी॥ सब साधक देंख बांनी॥३॥ ८॥ मन

करता

टेका॥ज्यौं
चौंसब घटिपरमानंदा॥पै
नाहीं॥दुषसुषजीयभुगताहीं॥१॥
नाहीं॥सोई ब्यापिरह्यासब
तिषपतितैंन्यारा॥उपजै बिनसैआ
कारा॥२॥वै जोतिसरूपीपूरा॥सबमांहिजुसब
तैंदूरा॥जनतुलसीअलषिपिछांनौं॥चितचरन
कंवललपटांनौ॥३॥(६)॥मनरेमतभूलैयामांही
यामैंसुषलेसबनांही॥टेका॥यकुहितकरिजि
निजिनिजोरी॥लैगाडीलाषकरोरी॥अरबषर
बबकुसाथा॥तेगएऊलावतहाथा॥१॥जिनकै
असगजबकुतेरा॥गढगूडरगांवघनेरा॥बहुप
यकबकुत्रियसंगा॥तैजेमंडेबचौरंदगा॥२॥य
कुनानादुषकीरासी॥यामैंसुषनांही॥अबिनासी
अबिनासीसुषहैतांही॥संतोषीसंतनमांही॥३
तूतौरिजुतायाकौ॥सिरज्यौंगहिसरनबता
कौ॥अबताप्रभुकीसरनाई॥तेरोजनममरन
मिटिजाई॥४॥जहांतेजपूजप्रकासा॥सब
साधूकरैंबिलासा॥तुलसीतजिआंनबआसा
चलिकरितहांनिवासा॥५॥१०॥मनबिनजाय
रेभाई॥दिनादशऔपारकरि॥गुरग्यानलेसा
ई॥टेका॥नरनारायनदेहपूरबपुनितेंपाई॥१
भजनबिनापछितांहिगौ॥जबसमैंचलिजाई
संसारसहरबजारमैं॥ते भूलिमतजाई॥धकाध

कीतहोयाईए॥ हरिनांवबिसराई॥ २॥ जाकारनि
सङ्ककरमकोऐसे निदिनधाई॥ संगिकोउन आ
यहै॥ जमपकरिलेजाई॥ ३॥ समझिसोंजसंवारि
अपनीसेनपरिजाई॥ पंचचोरमहाबली तोहि
हेरेहेगेआई॥ ४॥ चेतनिचेहरेजागिनिसदिन
सोइमतजाई॥ यहअवसरबहुस्योनहीं॥ तो
हिकोहूसमजाई॥ ५॥ ब्रह्मनामबिसारिको॥ है
मलहिल्लेधाई॥ जनतुरसीबिननारीया॥ जिनि
रोविपछताईया॥ ६॥ ११॥ हरिबिनक्यौंजीवौ
माझीनिसिबासुरिकलैनापरै॥ मेरोजीवतर
सांईहैक॥ बासपक्षिप्रतिपालकोनो॥ जोति
हरसाई॥ १॥ कैसेजसदाहीरहै॥ पियसोंनबि
सराई॥ २॥ रगदादरकमवजलचर॥ जलहि
तुपजाई॥ मीनपलभरिबीसरै॥ तौतलफिमरि
जाई॥ ३॥ बहुबिरहैकैबसिपरयो॥ जैसैकावचुनयं
ई॥ इतीबेरनआइहो॥ तौकरकरदिजाई॥ ४॥
पीयबिनपियरीभई॥ सबैबिथातनबाई॥ वे
षदिकबुनआवरै॥ मोहिलगीबौराई॥ ५॥
बिकलह्वैबनबनफिरौं॥ हौंटेरसुनिधाई॥ ज
नतुरसीप्रभुमिलेहंसिकै॥ सकलसुषदाई॥
१२ ॥ ६॥ गोबिंदानिकटिठुम्हारौनामरे॥ ताकीमै
बलिहारीजावरे॥ टेक॥ ताहि छांडिनहिमय
हुतन्हासोंजतकालीगांवरे॥ मनसाबाचा
नहिंजानिअंतरि॥ रामहिरामजपावरे॥ १॥

रावरे॥वनमेव
॥चितच रनौलिपटो वोरे॥२॥जहाते
धुनि॥ताधुनिमांऊरहा वोरे॥३॥जे
दहिमांदिसमा वेरा४
।गोबिंदागारकमएतममां दी दो। विजनव कुस्यो।
दी दो॥टेक।आपापरकविधासव भूलो॥ऊ
नी दो॥दरिसुष मांहिमचल हैं वैसे।
हो॥१॥जनमम रनमववंधनवुटे॥व
समादी दो॥चरनकंवलकी ब्रायातर हरि
दी दो॥२॥जैसैंनदीयासमद्रि
त्रलटीनउलटादी हो॥तुरसीयो हरिजनदधि
॥१५॥नाईरे
दिनमेला॥निनिरदेपानीजिमितला॥टेक।
उतरकोंअनदिन॥जगु दषिनकोंजाइ
॥१॥जनपारसजगुपाहनरूपी॥जनचंदनजगुब
हंसजगुकागकुबुधी॥दहनअंतरअे
।जनकंचन
मलेनमनसाबाचा॥३॥जनदाताअभिअंतरिपि
।जनऊमिलेय
ऊगजमहाछिबिकाना॥४॥१६॥भग
रिपहेरे॥हिरणांकुसप्रदलादकोमु
॥टेक॥निहकारणदीकरेमां

सो॥मं करता उपजाई॥ दास निरभै क्यों डरैं॥ जाके
जु राम सहाई॥१॥ साच कौं कछू क्व है ॥ झूठ है॥ कू
ठ कौं कैं पोष॥ अति अज्ञान अ सोच अ समझ अ
हो मल दै दोष॥२॥ काल बाचा रहै निकलंक॥ होइ
रत निरबांन॥ सो जन सिंघ संसार जु बका॥ फर
कइ तो परवांन॥३॥ जन तुरसी जग पै स्याध रती॥
दास अभै आकास॥ कोटि कलप ना करि मरै॥ लेप
न लागै तास॥४॥ १६॥ हरि बिन चूले बहुत अग्यां
नी॥ अब गति मति बिरला जानी॥ टेक॥ जोगी जंग
म सेव संन्यासी॥ पख माय षी सों राता॥ निरपष होइ
राम न ध्यांन्या॥ काम क्रोध मद मांता॥१॥ सुष सा
गर अबिनासी राजा॥ न हित स्यवार न पार॥ तासूं
रचिन सकै चानर सूं हूं॥ राचि बिषै मया बार॥२॥
तजे बिकार मोह मद मछर॥ हरिपद दृढ करि
साहै॥ रहै समांइ मगन है मांही॥ आंन दिसा नहीं
चाहै॥३॥ सुगम राग है लहै सुष सोई॥ पद मैं जाइ
समावै॥ जन तुरसी वो साध सरोवनि॥ बहुरि न बं
धन लि आवै॥४॥ १७॥ राम राइ नरमभूले सब लो
ई॥ ते राजन बिरला कोई॥ टेक॥ जल अस नान क
रै बहुतेरा॥ अंतरि मैल सवाया॥ सतगुर मिल्या
न निरमल हूवा॥ तातैं करम कहा धि बिकाया॥१॥
पांहन पुजि पुजि जु गयी नां॥ तुरसी तोरि तोरि डं
ड कीया॥ यह पूजा हरि कूं नहि भावै॥ जो लौं चित
२ निरबिषै न कीया॥ कलि का कीट कहा गति जा

नै॥ रुचि रुचि रै बनाया॥ अंतरक पट खिमेस्यौं
ता रमता रामनहिं गाया॥३॥ कहै हंसकक बारा
चालै। यह अचिरज मोहिमारी मुकतायहन जिभै
हनरक बिषा रहै। रामगति न्यारी॥४॥ तजे ड रामस
हलपटाती। रमता रामपिछानै॥ सतगुर मिलैतौय
हगतिपई ए॥ औरजीय कहाजानै॥५॥ भावप्रेमकीपू
जाकरिलै रहै एकरस मांता॥ जनतुरसी अैमाजनकै
मीअबिनासी रगिराता॥६॥ १६. मै री सोई साधक
हावै॥ नितिसाई कै मनिभावै टेक॥ ज्ञानखड्गलेम
नकौंमारै॥ पांचौं पिसननिवारैरे॥ सीसबिहूनालैरै
कालस्यौं॥ चौरै अतबुहारैरे॥१॥ पाखापावनदेइप
लग शीसन मूस बौइसनारै गुरपरसादिमैवासा
तौरै॥ अैसाकारिजसारै॥२॥ तनमनसीसस्वामिकोसौं
पै। हरिभजिजनमसुधारै॥ जनतुरसी सोई गुरमैरा॥
आपतिरैमोहितारै॥३॥ १७. जुगतिबिनजोगजानि
नईया अैसा॥ सकलशास्त्रमतबखानै॥ लौनबिना
अनतैसा॥ टेक॥ कायाकसैउपरितपकरिकरि। जुग
तिजुजानैनाही॥ बाखपीटै काल रूप महा॥ सरमैरे॥ प
क्यौंमाही॥१॥ मूषांहकोरडौनामजंचायैं॥ मनातहे
मनहीकोइ॥ घनबिनबीजधरनि मंडोरै॥ कैसैंबध
जुहोई॥२॥ जनतुरसी यहअकअकहांनी जोता
हिपरैनजांनी॥ जोगजुगतिपवनी॥ पारत्तातेपा
ीं॥३॥ २० चंचलचितकैसैहैबिपानो॥ डरी
ामिलैदाबिरामीये॥ तजनरहैजनकांनौ॥ टे०

औसैन निस्यौं उलटि आनी ॥ दैजु रूप स्यौं कानौं ॥
तौ ना सा रसना श्रवन न होय ॥ अनंत ही करै पयानौ
॥१॥ करम इंद्रीन कौ संजम करि ॥ ग्यान इंद्री कौ ऊ
आनौं ॥ हठ निग्रह करि रोकि जु राख्यौ ॥ तऊ न रहै
थिरानौं ॥ २ ॥ अग्नि धूम लौं उगौ करै उर ॥ ज्यौं सलि
ता कौ पानौ ॥ ईश्वर तैं औरबडा कौ जोगी ॥ घेरत ता
हि हिरानौं ॥ ब्रह्मादिक सनकादिक सुरनर ॥ रि
षि मुनि किते बखानौं ॥ रहै चपाय च प्यौं न हिय दृ
ष्टि तजै सो होतै सानौं ॥ ३ ॥ बेद पढै अथर्वा पढै । पु
स्तक अथर्वा पढै पुरानौं ॥ करै अघेन नेम स्यौं
निशि प्रति ॥ चित बिन मुकति न मानौं ॥ ४ ॥ उपजै
ह्रै सन बिचार अकलमय ॥ तब चित आवै थानौं ॥
कै बासना त्याग स्यौं थिर होइ ॥ कै थिर जोग साधि
यानौं ॥ ५ ॥ कै थिर होइ निंदकाम भगति स्यौं ॥ अ
रु पायन आनौं ॥ जन तुरसी पदमाहि समावै ॥ हो
इ एक गल तानौं ॥ ६ ॥ २ ॥ ताव तन हि रै बैराग ॥ जा
वत राग द्वेष रिदतै ॥ होइ न आवत्याग ॥ टेक ॥ उ
परि भेष अलेय ॥ भीतरि कामना कौ दाग ॥ सोइ दा
गजु गनिमए बिनां ॥ उपजै नहीं अनुराग ॥ १ ॥ कहा
भयौ तन तजै माया ॥ टूटै न मन कौ ताग ॥ जागत सौ
वत तहां ही कौं ॥ संचरै छल काग ॥ २ ॥ काम क्रोध लो
भ न छुट्यौ ॥ मिट्यौ न मोह बिभाग ॥ त्रिष्णा तरंग न
बिलानी ॥ पंचै न मन सावाग ॥ ३ ॥ निरमूल होहि
बासना मन की ॥ संभ्रम सकल मन भाग ॥ इहै बैराग

उदित होइ उर, के: सीतल बड भाग ।। ४ ।। २२ ।। राम
य मनसा बाधिन आवै ।। तातैं जनमि जनमि कुषपाटे
टिका। आसन बांधे निद्रा साधे, उलटा पवन चढावै,
मन मनसा दोउ थिर नाही ।। तृणा रोग उपावै ।। १ ।। केई
मौनी केई म, धुन बोलै केई कथै अपारा। अपरिग
जल मांहि कालिमा, घायान दि तत सारा २ मनसा
फेरि अपूठी आनै, त्यागै बिषै बिकारा, जो नतुरसी के
है सब आसा छाडै, तौ सतगुरू हमारा ।। ३ ।। २३ ।। राम
राइ करनी कदा निहारी जब लग नही कृपा जु तुम्हारी
टेक ।। ज्यौ किरषी न कुकिरषिक मांहै, सातौं तूर निया
वै। जो घन बरषै न हिउम भिकरि तौ कै बूडा धिन आ
वा ।। १ ।। जीव कमाई करै कोटि एका। तक सरै कबु नांही।
दया मया करि तापाव धारै तब ही सकल बिधि मांही
।। १ ।। जा परि कृपा करहु तुम माधौ, सोई सुहागनि ना
री ।। और उपाय करै बकु तेरा गति नहि लषै तुम्हारी ३
दासभाव तुरसी यौं भाषै कहै सरी ततरि माची। जो (
कमकरौ सोई नल माधौ और बात सब काची। ४ ।
।। २४ ।। अबगति की गति को पावै हौ खोजि रहे बला
दिक स्वरनर। कैसै हू पार न पावै हौ टेक ।। सू जतन
हीर बाकु जाको पार बकहि को धावै ।। थकि रहे स
रत पुरान सकल ही निगम नेति कहि गावै हौ १
पति अघा दग हरौ बिबिजित अकल कल्पौ न हीजा
हौ ।। अति अगहन अति ही गति कीनो निरनामी क
हावै हौ ।। २ ।। बूझौ काहि कहू मैं कासौं, यह संका

सदईजरावैहो॥गांवनगंवनावनहीजाकै॥नाहि
कैसेंकोसुमिरावैहो॥३॥जाएसुग्रकमतामांही
जुंदरीयाबूंदसंमावैहो॥मनिसंदेहबूझौमेंको
संनि॥कोउउलटाफिरिनहिआवैहो॥४॥आपामे
टिहोइजरअसथिरि॥निजपदनितिनिरतावै
हो॥सोरंचकसुखलहैतोलहैमल॥औरहैरांत
हिरावैहो॥५॥जनतुरसीयहअकथकथाहै
कोउबिरलाजनपावैहो॥सतगुरकृपापूरनन
ईआपरिताकैयहसुखआवैहो॥६॥२५॥रामर
हुकरहुसहाइहमारी तुमदीनदयालमुरारी॥टे
क॥बैरीसंगिसदामोहिफिरवै॥कहोकहाबल
मेरा॥तुमदयालसिरऊपरिस्वामी॥करहुसहा
संवेरा॥१॥मैंअनाथकेपिकादिहुकारौ॥हतस
बलघटमांही॥मरदहिमोहिकरैअपनैबसि॥तु
मबिनछूटैनांही॥२॥पांचपचीसमोहमछर॥मोहि
तुर संतावैमारी॥अनंतनहीछूटैंसौजन॥आसाए
तुकैम्हारी॥३॥१२६॥रामरायभेषअनेकबनाया
तुमसासाहिबकहूंनपाया॥टेका॥मायाकेमदि
हमनमांतौ॥डुबिधावकतउगाई॥निराकारनि
रलेपनिरंजन॥भजेनहीरघुराई॥१॥यहमन
आपराधीकामी॥चेतैनहीगवारा॥रामस्तुतिक
हूनहिआनै॥औरैकरैपसारा॥२॥तुमबि
कौनउबारैजनकौ॥तुममेरेप्रानअधारा॥तु
सीदासकहैजनतेरा॥मेटोसकलविकारा॥३

॥२७॥कौऊंप्रीतमआनिमिलावैहौ॥ ब्यासलग
चात्रगलौंसजनी॥हूजाकबुनसुहावैहौ॥टेव
सेजसिंगारमणपावकसमि॥छिनछिनबिरहउ
रावैहौ॥अैसोयोहब्योहारहमारो॥कोईहरिजी
कूंजाइसुनावैहौ॥१॥सोईसाधसोईउपगारी॥
यहवरसालमिटावैहौ॥स्वांतिबूंदलौंसीचिसंने
हौ॥अबमोहिमरतजीवावैहौ॥२॥ कहाकहूंक
रणांमैंस्वांमी॥अबकछुकहैतनआवैहौ॥जन
तुरसीबिरहनिव्याकुलता॥बिनदरसनदुष
पावैहौ॥३॥२८॥धनिधनिगुरदेवहमाराहौ॥
जिनिकृपाकरिकाढिलीयोहौ॥बूडतयहसंसा
राहौ॥टेक॥अनेकजनमकीअरजिनिवारी॥सब
ददीयाततसाराहौ॥नावजिहाजचढायजुग॥
तिसौं॥खेयउतारेपाराहौ॥१॥गुपतबस्तप्रगट
हिषलाई॥प्रगटकीयापरहाराहौ॥अबतनमन
केरिमए जुपावन॥परसिपरसिपीवप्याराहौ
२॥अबिचलबरकीबांहगहाई॥देकैबकबि
धिभाराहौ॥जनतुरसीपूरनसुषपायो॥सतगु
रकैउपगाराहौ॥३॥२९॥धनिधनिपीवकीर
जधांनीहौ॥सुरनरमुनिजाकैउलिगानो॥इंद
घुरैनीसांनीहौ॥टेक॥अवनीआपजमायजु
तिसूं॥मारतमांझसमानीहौ॥अंबरअधर
ल्यौबिनथंभै॥चंदसूरअगिवानीहौ॥१॥ऐसा
कलालकमेरभंडारी॥चित्रगुपतलिषदांनी

हो॥धर्मरायजाकैकुटवाला॥पवनकोडि·भरैपांनी
हो॥३॥सेससहंसमुषिकीरतिगावै॥नारदसेरि
षिग्यानीहो॥सनकादिकजाकैब्रह्मचारी॥सेक
रसेमुनिध्यांनीहो॥४॥सबदेवनमैदेवगुसांई
सबकेअंतरजांमीहो॥अरधउरध मधिकुमही
आंकातीनिलोकनिरिनामीहो॥५॥जैसैनदीयां
समादसमानी॥बहुरिनउलंघैपांनीहो॥जनतु
रसीमिलिरहैपरसपर॥सबदरहैसहनानीहो
॥६॥३०॥ऐसोवोहघररहैरी॥जहांजमहूतन
कोनैकहूनडररहैरी॥टेक॥जहांअनहदबजैबा
जो॥अषंडआठोजांम॥बिनहीदीपकतहांजोति
रमकै॥आतमाबिश्राम॥१॥जहांअनंतधाराहो
हूबरिषा॥सुधाश्रवैसोइ॥आदिअंतिमधिनिज
जनारहैतिहिसुषभोइ॥२॥तहांचंदसूरको
नाहिनैअलपआभास॥तहांउदितिजोहोइर
सोमहातेजपुंजप्रकास॥३॥सतगुरकृपा
होइजापरि॥भएसंतसहाइ॥उरसीतेमलगो
ताचरि॥औरनाहिनैउपाइ॥४॥२१॥ऐसैंगन
परिगएवैसंत॥आपापैआपागलितकरि॥पव
रिउरएकंत॥टेक॥कामनूलैक्रोधनूलै॥लोभनूलै
यापुलोइ॥मोहकीसंग्यासंमटतिरि॥पदपहूंचे
जाइ॥१॥जहांबादनममतनमल॥मनमानउपजै
कोई॥ऐसैंसुषसंमाधिघरमैं॥रहैथिरहोइ
सोई॥२॥पंचततकैपरैवहघर॥त्रिगुनरहतहै

।।जनम मरन दुष तहां।।स्वपन हूं न दिदरसांन
।।ज्यौं सलिल सिंधै मिलै।। ऐसैं न याउन मांन।।कुरस
कुनि बिछुरैं नहीं।।होइ रहै ब्रह्म समान।।४।।३२।।
वाजी ग्यांन बिसरजन कैसे।।तब गोबिंद मन लयै हैं।।
टेक।।उरे कहै सो नांही।।याकथनी बदनी मांही।।तौ
र षबरत की आसा।।केरि करि गए बहुत निरासा
।।जीवत सुष की आसा।।छूटत तन होय दुष्या
सा।।दुष कृता वृत्त होइ।।सब संत कहै यौं सोइ।।१।।
उत्तैक सकउर आंही।।कस क्यौं करै मांही मांही।।
आवत चैन जु नांही।।बसती बसौ मल बन मांही।।२
जब बिसरै बाजी ग्यांना।।कछु नर है न सुधि सदना
ना।।तुरसी ऐसा होइ आवै।।तब कहै आतम सुष
पावै ।।४।।३३।।लोभ को घुन्न दंभ है रे।।या आस्वर
संप दामां ही।।वडो घंम है रे।।टेक।।२ दिसक नयह
जगत बासौ।।नांनां भांति उपाइ।।षट दरसन हूं ब
हाइ।।गए भरम बिकाइ।।१।।सो कारिजकारण मि
टे बिन।।मिटत नाहिंन बीर।।याकौ अरथ इनौ ही
जांनौ।।औरस बकवाब दीर।।२।।प्रथमसंगहि
लोनसा गो।।देकु निपट निपट जु नांषि।।तौ घुले
निहचै जु निज वै।।ग्यांन उरकी आंषि।।३।।पांच अ
रू तीनौं अष्टए।।अबिद्या परवार।।यह अपर वै
पर प्रजु।।नीकै जु लेकु निरवारि।।४।।ग्यांन पर
बैराग बड़ गागदि।।करकु निपट निरमूर।।तौ तु
रसी आतम प्रकासै।।मानूं कोटि उदै भए सूर।।५।।

॥ रू ध ॥ जौ तुम सब का कौ सहि हौ ॥ तौ तुम बड़ ध
रचै हौ ॥ टेक ॥ जिहि घरि नाम कबीर पहु चेतन म
नु कहि धीर ॥ अति हसि हि प्रेम होई जाइ मिले बड़
कौ सोई ॥ १ ॥ जिहिं घरि गोरष गपांनी ॥ दत्त देवा दि
गंबर ध्यांनी ॥ त्यागि त्रिगुणी माया ॥ अपने स्रुध
स्वरूप समाया ॥ २ ॥ सुकादि संत बहु तेरे ॥ आ
इ दीयै जागा डेरे ॥ मिलि रहै महापद मांही ॥
फिर लैरे हंन ही बिछुराइ ॥ ३ ॥ वा घर है यब स्यों
न्यारा ॥ गरि गए कितै अहंकारा ॥ मन इंद्री सहित
ब्रतांहा ॥ कोऊ पहुच्या है ध्यानां ही ॥ ४ ॥ त्यागि
है कोध अरु कांम ॥ निहकाम होइ भजि रांम ॥ स
ब की सहै बुरी भलाई ॥ निरदोष हुवा रहै भाई ॥
५ ॥ तजि निंद्या अस्तुति जांनो ॥ दुष सुष कस क
न कोऊ मांनौ ॥ कंचन मृत्तिगा पषांनां ॥ सब स्यूं दं
वारहै समानां ॥ ६ ॥ वा घर की यह सहनानी ॥ रां
म कही तो हि जुगति बषांनी ॥ तुरसी अतित होइ
नाही ॥ मिलि हौ परम पद मांही ॥ ७ ॥ १५ ॥ १५१ ॥
राग धनाश्री ॥ राम जी कहा स्यौं हम सूं ॥ जनम
अमोलिक पाइ रे निसि दिन ॥ राचि रहे बिष स्यौं
टेक ॥ कांमी कुटिल कलपत दिन बीते ॥ पर निंदा
करते ॥ ग्यांन ध्यांन की षबरि न जांनी ॥ बिमुष
भयो तुम तैं ॥ १ ॥ पांचौं इंद्रीन कै सहिमातौ ॥ लीन
भयो न तुम स्यौं ॥ मन मनसा गहि निमष भरे ॥ स
न मुष न भया तुम स्यौ ॥ २ ॥ जा करनी हम आदि क

कर

।सुरनिलगेतुमस्यौं॥ सोकरनीहमकछुनकीनी
ंमस्यौं॥३॥तुमपावनमैंपतिततबूडतसूव
काढिलेकुकरस्यौं॥जनतुरसीकेआसतुम्हारी॥क
जनकौंपरस्यौं॥ ध॥ १॥ कैसेंकरूंतुम्हारीसेवा॥तु
मनिरगुनहरिअलषअभेवा॥टेका॥ग्यानध्यानमेंक
छुनजांनैं॥ अगमअगाधकेसेंजुबषांनैं॥१॥तुम
अपारपरमितनहीकोई॥थकितनएसुरनरमुनि
लोई॥२॥तुमरेरंगरूपनहिकाया॥काकहिवरनैं
हौहरिराया॥३॥तुरसीदासजनसरनितुम्हारी॥सेव
नजानैंहौदेवमुरारी॥ध॥२॥माधौजीहमअपराध
भरे॥जनमपायसुकितनहिकीनां॥ऊकृतबहुकृतक
रे॥टेका॥जेतेपापकृतेमुबकपरा॥तेहमसकलक
रे॥जाकरनीभवसागरतिरिए॥सोचिततैंबिसरे॥१॥
कांमक्रोधअरुलोभमोहसब॥औगुनअनंतकरे॥
पावननामतुम्हारोजिकौ॥पापपुनिसुमिरे॥२॥सो
सांईफिरिलेषामांगैं॥तौजीवनरकिपरे॥दयाम
याकरिसबफिलकीये॥तौतुरसीउबरे॥३॥ध॥३॥माधौ
जीकरमाकरीयौजीव॥नावनजानौंतेरो॥कांमक्रोधलो
भमोह॥इनिमोह्योमनमेरो॥टेका॥नषसषमेंअपरा
धमेंमन॥भूलिरह्योगंदा॥हिरदैनिजरूपसांई॥।
सोईतजिभयाअंधा॥१॥ बिषयाकैरंगिरातौ॥रांम
नामनजांनौं॥ऐसीमेरीमंदमति॥तुमसौंनहीछांनौं
॥२॥ जनतुरसीअपराधीजीव॥कछूनहिचिरिपाई॥
नाहिंत्राहिसाहिबमेरा॥अबराषौसरनाई॥३॥ध॥

मा ओ जी हो दद्याल मेटि साल ॥ अब कै मो हित
ना री॥ काम क्रोध बिषै बिकार॥ सकल हरि नि
वारी॥ टेक॥ कारहूं सहाइ बेगि आइ॥ मेटहूं दुष
स्वामी॥ अब की बेर पार उतारि॥ तुम हो अंतरजा
मी॥१॥ जनम मे भ्रमे अनेक॥ कऊं न दीस चपा
या॥ अब के जीव चरन सरन॥ पा पौर घुराया॥ २ तु
म दीनदयाल तुं करै निहाल॥ कोटि दुष मेरा जन
तुरसीदास करै कुलाम॥ दरस देहु तेरा॥ ३॥ प
नाथ जी॥ अब कै हो दद्याल॥ आयो सरनि धरनि
गुन आयै॥ कूं छूटे गर साल॥ टेक॥ पांच चोर सं
गि रहे सदा ही॥ औगुन करहि अपारा॥ तुम
म्रात का तो बकु रिन व्यापे॥ सारान हि हमा
रा॥ १॥ तुम दीनदयाल परम सुषदाता॥ यह दु
ष दूरि निवारी॥ भव सागर मैं बूडत है जीव॥ कर
गहि पार उतारी॥२॥ जोगी जती तपी संन्यासी॥ कि
नहूं मरम न पाया॥ ऐसी माया बाघनी तेरी॥ ति
नि चुनि चुनि सब जुग षाया॥ ३॥ करम ब्याधि
लागी करणां मे॥ जीव दुषी अति भारी॥ जन तुर
सी कै आस तुमारी॥ मेट हू बिपति हमारी॥ ४॥ प
द॥ सो सुष देहु जगत गुर मो ही॥ जो सुष संत स
बदी दुष नासै॥ आइ मिलै प्रभु तो ही॥ टेक॥ जा सुष
सुत्र मात हि का बुटै॥ करम न आपै कोई॥ तन मन आ
तम माहि रामजी॥ अति गति आनंद होई॥ १॥ जा
सुष संजम जुरान ग्रासै॥ दुष सुष नासै दोई॥ स

नरजतंमतीन्यौंगुनआगै॥ आतमअस्थिरहोई॥४॥जो
मुषस्यौंसबहीनररुचिकै॥पारपडंतेसोई॥सोसुषम
गतहैजननकरसी॥देऊकृपावंतहोई॥५॥७॥रसनायं
मनामजपिलीजै॥सोचिबिचारिदेषिमेरेजीए रा॥ब
कुबकबादनकीजै॥टेक॥कूवातनकीकहाबडाई
पलएकमांहिजरिवीजै॥तातेंसावधानहोइप्रांनी
रटनरामकौकीजै॥१॥गुरप्रसादसाधकीसंगति॥ह
रिहितलागाजीजै॥मनुष्यदेहभागबडपाई॥हरि
जिबिलंबनकीजै॥जननकुरसीआरतिस्यौंनिसिदिन
रामरसायनपीजै॥३॥ ऐसीभगतिबिनजनमसिरांनौं
जाइ॥रांमनामकीमबीनजांनी॥तोकहाकीयोजनगु
आइ॥टेक॥बारबारतोहिकहिसमझाउं॥यहजग
बसरचलिजाइ॥समझिनसरनगहिगोविंदकी॥बि
षमैंहिरदौनुलाइ॥१॥जोछिनजायसुबहुरिनआ
वै॥तौरिकहूंसतिभाइ॥आवघटैतनछीजैदिनदि
दिन॥पलमैंजाइबिलाइ॥२॥रेमूढनरचेतिअपांनौ
साधकहैसमझाइ॥जननकुरसीकरिएहरिसेवा॥तन
मनप्रीतिलगाइ॥३॥ ९९॥ प्रीतिबिनापीवकिंनहू
नपाऐ॥उतरदषिनपूरबपछिमके॥सबमंतबूझि
बूझाऐ॥टेक॥केउजटाबगवैकरिबसतरातीरथ
कौउविधाए॥बिनाभजनबिसवासबाहिरे॥फिरि
फिरिषांनपिराए॥१॥कोऊजाइपुरीयतेमैंबैसे॥ब
हुंतककष्टउपाए॥पावकमांहीजरधपाइकरि॥लै
लैसीमऊजाइ॥२॥केऊलुंचितमुंडितफुनिकेऊ

तेऊमि कंदमूनि षाए॥ केऊ आइ गुफा बन बैसे॥
पैसी तितिछिना पछिताए॥२॥ प्रीति बिना सब दीम
त का औ बेद उ रांन न मा हे॥ तुरसी प्रीति करी जि
नि पी ह रस प्रेम माहि समाए॥४॥१०॥ राम बिन
हू ब सकल करि जांनि॥ मृतक देह मनो अबि
नासी॥ ओसो ग्यांन पिछांनि॥ टेक॥ चौदा लोक समां
न एक ह्म॥ औसी मह गी जांनि॥ सो कितबादि राम
बिन मोवे॥ साषि सबद परवांनि॥१॥ स्वासे स्वा
सि सुमरि जग जीवनि॥ अब जिन करहु धीर
आदैं काल कै अपने बसि॥ न्योम बाकी कौर॥२
तन मन पवन अमोलिक तीनों॥ सिरजन को दैंबी
रा तौ कुटै भ्रम आवाजांनी॥ मिलै सिंध नदी नीर
॥ ओसी करनी करै जु जोगी॥ भगत सोई मलजा
नि तुरसी दास कहै सति बांनी॥ काल करै नहीं
हांनि॥४॥११॥ धरीर है गी यह देह॥ ताते भजि भग
वंत मुराधा॥ त्यागि या कौ नेह॥ टेक॥ पाई है बड
भाग तैं॥ भ्रमि कै जु राच्या स्यौं षांनि॥ सो बहु पामत
हि जु षोवै॥ कहौ कहा रमांनि॥१॥ अति तीछन हो
इ सुमरि आपनो॥ सुष सिंध राम अदेह॥ दिढ
की आस कति तजि॥ सुर्धं ग्य सब कोयह॥२॥
हंस षीर बनीर लौनी॥ कै जु लै निरवारि॥ यह बदे
ह देही बयह॥ ओसो जु ग्यान बिचारि॥३॥ जन तुर
सी कहै समझि रे नर॥ निरति गहि उलटा आव॥
षति अहो निस चित्य माधो॥ का करि हो बिर मावे

(घ॥ ॥१३॥मगमुषभगवंनकैजनकोइंदाझैसदीप।
पावकमें॥जलिबलि कैलाहोई॥टेक॥ छत्रपतिसू
राजारानां॥मीरमूलकसुलतांन॥तेसबजरे बिषै
वकमे॥होतेचतुरसुजांन॥१॥केते मुए मरैं ह्वै केते
सकांमनिसूंलागि॥जेजनजांनिजुगतिसोंत्यागें॥
केमोटेभाग॥२॥चेतनहोइ मजौंअबिनाडु॥त
संग॥तुरसीदासज्ञानहोइअस्थिर
कालकरैनहीभंग॥३॥(३)॥बाघनिमारीयोरेसाधो
सबजुगधाइ॥कोककोऊजनउबरया॥ज्याह्दसूमि
घुराइ॥टेक॥नैनबैंनकरिमोहेंप्रांनी॥नानाभे
नाइ॥सरपनिसिंघारैसकल॥आपनमारैबाइ
१॥षटदरसनकैसंगिमई॥करिअनहीकारंग॥भागै
ही॥मारिकीएसंतषंड॥२॥पंडितगुनीसूर
बिंता॥सुरनरमुनीजनपीर॥सकलबिनासेबा
घनी॥कांमक्रोधकैतीर॥३॥आदिअंतिअबगति
राध्या॥परहरिपांचपचीस॥कहितुरसीतेउबरे
धूबिसवाबीस॥४॥१४॥छेनसकैकोऊनामतुभ
रा॥अरुफिरदैसबमायामोहमें॥परहरियाप
तिव्हांनबिचार॥टेक॥मीठेलागैस्वादबादरस॥स्वा
सेतीअधिकपियार॥परमारथभावैनहीपल
भरि॥बिषैमैंगलितभएजुगवार॥१॥सुतदारा
नदेखिम्हलोने॥लालचलोभरहेउरधारि॥पा
डकूवदेनस्यों राचे॥लीनभएजीवबिषैबि
॥जेसबतजिकरिभएबैरागी॥तिनहूंअह

ही अधिकारा॥४॥ मैतैं मांनि मनी सब लागे॥ बा
द्विक सब जगु ओहारा॥ जन तुरसी सोई सुमिरे हा
रि कौं जो सिर हू कौं धरै उतारि॥४॥१५॥ राम दया
ल हैं जीव न जानैं गंदा॥ परम दृष्टि सूझै नहीं॥ ज्या
स्यौं लोचन अंधा॥ टेक॥ जैसें प्रगट ज्ञान सु वकपरि
हृदि सम करै प्रकासू॥ कहूं कौ सूझै नहीं॥ तो दोस
किसा कौ हतासू॥१॥ चारि मास रन बन कौं पोषै॥
हरी होइ बन राइ जवासो बिरधै नहीं॥ बरस तैं कु
मिलाइ॥२॥ आप मरी याकरै सबन कूं॥ बांस मिदे
बन मांहि॥ पापी बासन मेंई॥ तो चंदन हू सनन नां
हि॥३॥ कहि तुरसी सब कृपरिस्यांमी॥ मेहरवानु
र चुराइ॥ बिमुष जीव जानै नहीं॥ बिषम हरि कै र
कुलाइ॥४॥१६॥ काकरै राम कौ हो॥ कामी कुटिल
कुजांन॥ का मन नही चित योकरै॥ उर धरि धरि ध्या
ध्यान॥ टेक॥ सतगुर प्रभु न चिंतामणि दीनी॥ सो
करक बहू न लेइ॥ कैकरै कोडी काच संषु ले॥ तहां
तहां चित देइ॥१॥ सुष सागर कौं परहरै॥ ज्यौं मा
डक मटी मयै॥ पस्यौ कंवल कै नारि॥२॥ षातपीत
जागत अरु सोवत॥ उरमै इहै जु ध्यान॥ कै कांम
निकै कामनी॥ और न हू जो न्यान॥३॥ त्रिगुन अ
तीत राम आपने सूं॥ सन मुष कबहूं न होइ॥ ज
न तुरसी रचि कैं रहो॥ बाजीही मैं सोइ॥४॥१७॥
कोधी बापुरा हो॥ हेर सातातैं त बासमांन॥ कू
टाक हूं मिदै नही॥ सीतल गुर कौ ग्यांन॥ टेक॥

ऋरद्रिष्टि त्रिकुटीपुं निरैरटी॥रहै रहे अंग आंन॥ बिन
निजसोकरै॥ रातिदिवसा एकतांन॥ बिनं १॥ परनि
परधनपरत्रियरत॥ परदोस सहन अग्यान॥ पर
छिद्रहीतक्योकरै॥ दोषनदी को ध्यान॥२॥ उपदेसीए
अनकूल आपकौ॥ आतमधरमस मांन॥ तक अबिद्या
पाइकौं॥ मूदिरदे सबकांन॥३॥ चिंतामनिलेकाकरै
काचहीसौं पहिचानि॥ जनतुरसी ग्यालीचल्या॥ बिना
जनतनगावांन॥४॥ १८॥ नामसत्या गिरै॥ नाम सदै अ
ज्ञानकोमूर॥ महाने ढ्य कोजुदाता॥ करैजु कति नि
मूर॥ टेक॥ जनमजनमकी डरीमलिनता॥ बासना
इजगाई॥ कामक्रोधलोभगपाइरा॥ नरकपुर
धा॥१॥ दीरघसूत्री डराचारी॥ असोच अनम्र
अदीन॥ जीवैजड मारगपरै॥ चेतनताकरि चीन
॥२॥ आतमकौं आ बांदई॥ ज्यों घंटा आ कादैन
न॥ आलसनिद्रा हिलिंगउदेकरि॥ जीवहिकरै अस
वधांन॥३॥ जनतुरसी यह तामसी बिधि॥ बरनीबे
नमां हि॥ जहांयहतहांस्वपन हू॥ सुबसुजु नेटा
हि॥४॥१७॥ देवु धिनावरीमत भूलेगो बिंदा अ
बगतिसुमरिसुमरि अबगतिकौं॥ केताहोइ आंन
टेक॥ भागिबडेमनिखातनपायो॥ पूरबलेप्रस
ताते रामसुमरिलेलाहा॥ मतरंगमावै बादि
१॥ जबलगजुरारोगनहीआवै॥ कालनकरै बि
नास॥ तबलगसावधानहोइ सुमिरो॥ होइ
रतरिबासा॥२॥ बारंबार तोहि कहि समझाउं

यह अवसर फिरि नांहि ॥ जन तुरसी हरि कौं भजौ
आरति सौं घट मांहि ॥ ३ ॥ २० ॥ मन औरे अपनौ केव
ल रांम ॥ कहा लोक सूं कांम ॥ यह मत है तुम कौं धां
म ॥ टेक ॥ लोकाचार जन तुरै अति तहां ॥ नाये वेद पु
रांन ॥ जती सती मोछा र थीनि कौं उपजावन अ
ग्यांन ॥ १ ॥ त्यागौ मोह द्रोह पुनि त्यागौ ॥ त्यागौ कन
क अरू लोह ॥ राग दोष सब जग कौ त्यागौ ॥ ज्यौं
मिटि जाइ सकल अंदोह ॥ २ ॥ कहा लोक के निंदे बिं
दे ॥ कहा कीये मान अरु मांन ॥ राम भगति स्यौं बिमु
ष जु होइ बो ॥ इहै जु मोटी हांन ॥ ३ ॥ जन या त्रा
गै लोक कौ ॥ बिषलौं धरौ बिसारि ॥ जन तुर
सी मन क्रम भजौ निरंजन ॥ इहै मोषि कौ द्वार
॥ ४ ॥ २१ ॥ चलौ जीव मां हरा चलि रे जांहिं अपने देस
तहां सुष है सुष आदि अंति मधि नहि दुष कौ अ
हलेस ॥ टेक ॥ जोगी होइ तै फेरी दीनी ॥ च्यारि दिसा व
रि मांहि ॥ लष चौरासी ह्वै फिर्यौ ॥ कहूं सच पायौ नां
हि ॥ १ ॥ कहूं चतुरपद कहूं दुइपद ॥ एक पद ॥ कहूं ब
हु पद तन पाइ ॥ ब्रह्म बिबौ हैतै यह दुष भुगत्यौ
धरि धरि नाना काइ ॥ २ ॥ अब हूं समझि सावधान है
जगु कौ मोह मिटाइ ॥ अनल सुतन लौं उलटि ग
में गन घर ॥ रहि पवा सु बैसं मांइ ॥ ३ ॥ याकू वे अंन अ
मांहिं निरंजन ॥ काकरि रहौ अज्ञांन ॥ अपनौं सु
द्ध सरूप क्यौं न संभारै ॥ निरावर्णं निरबांन ॥ ४ ॥
हैइ सजांती मिलौ ब्रह्मसौं ॥ बिजाती मल षोइ ॥ ज

नतुरसीजुऐसीहोइरहै।।ज्यौंबहोरिबिछोहनहोइ
।५।। २१।।कायाकायरे।।ताकेनरमिननूलोकोरु:न
मिलैतेबहिपरे।।पारनलागेसो।।टेका।।नवसागर।
मांहीपचै।।करिकरिदेहीरंग।।तेबिषयाजलमेंनचेजे
जोतिपतंग।।५।।पंडितगुनीसूरकबिदाता।।सांवत
नटकुजाय।।यादेहीसुषदरीयामांही।।बूडेछिंबि
बिचारा।।४।।अंतकालपिरिनारहै।।देखौकिननि
ताइ।।बिघाकिरमनसमहोइपांनी।।माटीमैंमि
जाइ।।५।।छिनबिनसंग्रहबिनहिमेंबिनसै।।बिन
जाइबिलाया।।ऐसाछिनकायहैजौननिकौ।।नमक
कौंरहैनलाइ।।६।।जानहितहोइतजोसंगयाकौ
नजहूंज्ञानमाया।।जनतुरसीकहैऐसीकरौतौ
सिधिहौहिसबकांम।।५।।२३।।कहाकौकुजा
पीरपराइ।।जाकेनगपौब्रदकौनालौ।।सोसुस
माछीटेका।।हरिबिनुरहमसौंसुनिमसजनी
करवतबहिबहिजाहि।।हिकौंरुपगारीऐसोबिहरि
हूदिपराइ।।१।।दिवसजाइमोहिहरिमगजोवत।।नि
सतलफतैंबिहाइ।।पीवपरदेसहुलसमयोदरसन
बिरहबिघातनकोइ।।३।।बिनदीदारहुछिनमईन्र
गति।।छिनछिनअवधिसिराइ।।तुरसीबिरहनि
बसचपावै।।मिलहिपरमसुषदाई।।५।।२४।।कहै
जेकौंनबिचारा।।तनजलअगमपारतसना
।।क्यौंउतरिबौपारा।।टेका।।तामेंमंछकालसाकेत
प्रांतरेगअपारा।।नरसैजीवअधिकसैमांनै।।रहै

बीचि बहु हारि॥१॥ लष चौरासी जीव जंत कौ मो हि
अंदेसो नांहि॥ सुरनर मुनी जन पीर अवलीया घ
कितभऐ तामांहि॥२॥ गहौ बबेक मिलौ के वटकौ॥
हुँ॥ ग्या वजिन कर कुधीर॥ जाय जगति नौ काचदि
धां नी हस कें लें बिधि उतरौ तीर॥३॥ उतरे पार ति नौ
सच पाया॥ सकल भरम भव भागा॥ तुरसीदास म
ऐ जन मद गति॥ जहां को तहां जाइ लागा॥ ध॥ २५
अब मै आयौ सरनि तुम्हारी॥ भाजन की मोहि रा
मउ नाही॥ मंडी यो चरन मुरारी॥ टेक॥ यह संसार
कूरि हम देष्या॥ ता मै सच नहीं काई॥ राम भजन बि
चि अंतर घांरे॥ बिष मै देह जु लाई॥१॥ भरम करम
भकाम ताहि ढावै॥ भरमावै अति भारी॥ नाव बू
डाइ नंक मै बोवे॥ असे जीव बिकारी॥२॥ कूबी मा
या कूबी काया॥ कूवा परपंच पसारा॥ जमकी त्रा
स अधिक तामांही॥ ता तें की या पहारा॥३॥ वौ
बी आव अलप जीवन धनु॥ बिन सत नांहि
न बारा॥ जन तुरसी सरनाई आयौ॥ देक देकु
दी दारा॥ ध॥ २६॥ हीनता दूरि कर कुजीव केरी॥
सूर होइ सुमिरौ साई कौं॥ मन मनसा ल्यो घेरी॥ टे
क॥ कायर कवांका जको नांही॥ है जक दत हूटेरी॥
पांचौ जीति प्रीति गहि प्रभु की॥ कीर ति रहू संवेरी
॥१॥ तन मन सौ सब्रौं पि सघांनी॥ हरि मागि लौ
हेरी॥ जन तुरसी कहे बिलसौ सुष जुग जुग॥ छुटि
जाइ जम फेरी॥२॥ २७॥ असै मन राषौ तन हीं मां॥

मांही॥निमयनन्याराहोइनावस्यौं॥राचिरदेनिजगांगी
टेकां॥जोमागैसोपनैदिआयौ॥अनमांग्याकछुदीन
जहांजाइतहांजोननदैकां॥फिरिकरौआधीना॥१॥७
नरदैंनदीउदिसपरहरि॥पछिमरागौछूरि॥अस
रमारिसूरफेरिबसांऊ॥रामरमोभरपूरा॥२॥पांच
पचीसौंपगतलचूरौ॥मनसालेउकपराउ॥जनतुर
सीआनंदनजिकौ॥परमैंरहीसमाई॥३॥ १२थी॥धि
राधिरहरैनरतौहिकाकहां॥निरमलनावबिसास्यौ
रा॥निसदिनबिखयंनमैंफिरयौ॥नैकनमांनीहारि
टेका॥रतनजनमपायौऊतौ॥कोऊपूरबलेना
गरे॥सोतैमोम्याकाचगहि॥कनककामनीलाग
रा॥१॥बेदनिहूंसमझाईयौ॥फुनिसमझावैसाधो
रा॥सोतैकबुजांन्यौनहीं॥बाटेबहूंअपराधोरा॥
रा॥यामनकेनायैचल्यौ॥मनसादीसुकलाईरे
ईहूपोथीआपनी॥बिखयाप्रीतिलगाएरा॥२॥
बादीनहूकीसुधिगाई॥जुनरमौंहौबऊवामोरा॥
सोदिनअजहूंआईयौ॥तूक्यौंबिसरयौहरिना
मोरा॥४॥जासुमेरसुमरूपजौ॥उपकौहौइबि
नासोरा॥ध्यानमिलैदबांनमैं॥तूउलटिसुमरिनि
तिमासोरा॥५॥सबतजिभजिएकरामजी॥आपप्र
हीउरवांमोरा॥जनतुरसीकहैकारिजसारा॥स
धहोइसबकामोरा॥६॥ २०थी॥आराधौरेएकरामजी
जौचाहौउतमगांमोरा॥मनसाबाचाकरमनां॥प
र॥ध्यानसुनामोरा॥टेका॥मनभजनमतनपाए

अ कहाकीयोजुगआइरे॥ जौ हरिनावनजानीयो॥ तो
बादि बिगोईकाइरे॥ मूतपितरबंकसेईया॥ करिक
रिआसपियासोरे॥ अतिकालिआलीयरे॥ सोईअव
धिनिरासोरे॥२॥ सो दिनकादेनसमझऊ॥ औ धंत
इथनवासोरे॥ गोबिंदगुनगाए बिनां बजरिहो
रबकजासोरे॥३॥ सबकेसागररामहैं॥ दुषके
मेजनहारोरे॥ नाहिसंनारोगीतिसौ॥ पलपल
बारंबारोरे॥४॥ सबतजिकाहिनसुमरिऊ॥ हरदे
हरिकोनांमोरे॥ जनतुरसीकहेदुषसबमिटै॥ सुष
मैहोइआरामोरे॥५॥२०॥ गगनिमेंबाजेअनह
दबीन॥ मधुरमधुरमांहीमांही॥ मनमृगभयोतह
लीन॥टेक॥ पांचोधाकिजकिरहेंतहांही॥ फिरिन
पयांनोकीन॥ नानानादआनदफंदमें॥ परिनएबि
धिहीन॥१॥ इतवतकीचितवनिसबचुकी॥
चित्तनादेनयोलीन॥ बिसरेयाबिंदकीजुबाजी
जिनिजोगीनअसकीन॥२॥ जनतुरसीवासुषकी
बातें॥ जहांजहांपरतकहीन॥ जेपूरबतजिपचि
मआ॥ जिनिहीमलेयरचीन॥३॥२॥१८२॥
रागजैतश्री॥ मेरे सबलसंनेहीरामजीहो॥ अब
कीबलमबिनरह्योनजाइ॥ अबलाकूंरेदरस
कोजी॥ पलभारमुषदिषलाइ॥टेक॥ अतिआ
धीनभईव्याकुलता॥ घरअंगुनानसुहाइ॥ कबत
बेवतकबहनसोवै॥ जागतरैनिबिहाइ॥१॥ अति
आतुरताबिरहनी॥ सुनिसांईरघुराइ॥ सुनीये

कन आलगी॥ तुम कब र मिलौ हरी आइ॥ ३॥ पंथ निहा
रैं पल गिनैं॥ आरति हिए रै मांहि॥ तुम मिलिबे कौं जीय
तपै॥ बिन देषे जक नांहि॥ ४॥ बिलंब न कीजै रामजी॥ आसा
पूरवौ आइ॥ आतम कौं मिलि मे हरि मया करि॥ मन की तप
ति बुझाइ॥ ५॥ जाकैं सिर पर तुम धनी॥ सो क्यौं दुषी
या नारि॥ कृपा कर तुम मेरे समरथ सांई॥ अंतर बै निवा स
रि॥ अंग संग मिलि दरसन दीजै॥ अंतरजांमी आव॥ तन
मन तुम परि वारनैं॥ जन तुरसी दास बलि जाव॥ ६॥ १॥
११॥ जांउ तेरै वारनैं जी॥ अब मोहि दरसन दीजे आइ
टेक॥ अंतरजांमी सब बिधि जानौ॥ आसा पुरवौ
आइ॥ आतम कौं सुष देहु दया करि॥ तन की तपति
बुझाइ॥ १॥ तुरी न लेरी तो हरि तेरी॥ औरन सौं नहीं
काज॥ हम घरि आवो सब सुष ल्यावो॥ तुम सकल दे
व नि सिरिताज॥ २॥ सब गुन रहिता सकल बियापी॥
सकल सिरोवंनि राइ॥ मोहि मया करि दरसन दीजे
जन तुरसी दास बलि जाव॥ ३॥ २॥ रमइया आवौ घ
रि॥ अब पीव तुम बिन दुषी या देह॥ टेक॥ अब लाऊं
रे दरस कौं॥ दरसन देहु दयाल॥ तुम अंतरगति की स
ब जांनौ॥ परम संनेही लाल॥ १॥ तुम सब सुष सागर
सब सुषदाता॥ सब सुष पूरन देव॥ सेज हमारी आ
इ करि॥ अरस परस सुष देहु॥ २॥ बिलंब न कीजै
दरसन दीजै॥ आतम आस्थिल आव॥ तुरसीदास
जन वारनैं॥ बेर बेर बलि जाउं॥ ३॥ ३॥ बिचालेन दी
न रहैं जी॥ अब पीव क्यूं करि आऊं पार॥ टेक॥ बहै बि

चालै नदी अप रबल ॥ और दीगद रंगंभीर ॥ मैं अब
ला तिरि निास कौं ॥ गहूं किसी बिधि तीर ॥ १ ॥ तामैं म
गरमंछ बुडनै रा ॥ केतो उ वैत रंगा ॥ पैली पार मेरा पी
व वसै ॥ दोइ कदो कौं संगा ॥ २ ॥ हे को ऊस्या रूतन्व बु
ता ॥ पारउतारै मोहि ॥ सांई सु मेला करै ॥ पेवउ उपमा
री साहि ॥ ३ ॥ कांमी तलफै कामकौं ॥ ज्यौं निरधन धन
कौ पाहि ॥ जनतुरसी तलफै दरस कौं ॥ जैसैं चात्रग घ
की चाहि ॥ ४ ॥ ४ ॥ दोस तुम कौं नहीं जी ॥ अदोपी वृषे
ट्यू नो हम माहि ॥ टेक ॥ यहु मन लौभी लालची ॥ अ
ध अक्यानी सोइ ॥ ताते राम दयाल कौं ॥ भाई क्यों करि
दरसन होइ ॥ १ ॥ काम क्रोध अरू बिषै बासना ॥ य
ह निति बरतै जीव ॥ सांई सुं सनमष नहीं ॥ तो कैसें द
रवै पीव ॥ २ ॥ गुन नहीं चोर साह तौ तेरा ॥ अनंत दि
कहां समाव ॥ जनतुरसी दास करना करै ॥ पीव रा
षि सरणि बलि जांव ॥ ३ ॥ ५ ॥ दोस नहीं तुम कौं गु
न रदेवा ॥ मै गुन हीं भूलौ तेरी सेवा ॥ टेक ॥ काम क्रोध
अर बिषै बिकार ॥ जाकरनी भवसागर तिरीए ॥ सो
हम पै नाहिं न लगार ॥ १ ॥ औगुन कौ कछु अंत नां
हीं ॥ नयसत्याम रिरहौ माहीं ॥ भाव भगति बंदगी ते
रा ॥ बिसरौ समरथ सांई ॥ २ ॥ तुम दीनानाथ दया
लस्वामी ॥ मैं करमी कुटिल कांमी ॥ बिरद जांनि उ
बारि अबकै ॥ आयकै अंतरजांमी ॥ ३ ॥ गुन हीं सा
हतो तेरा ॥ आ[illegible] सिरा नहीं और केरा
जनतुरसी कौ सरनि राषौ ॥ पावन साहिब मेरा ॥ ६

तुमही का लागैजू॥ हमही अपराधी मूरि॥ तुतौ रोम
रोम मैं रमि रह्या॥ हंम जांनहिं जू दूरि॥ टेक॥ तुम सदा
सुष सुषद अमल कांगुवंम॥ हंम मलजल जलनरे अज्ञा
न॥ देष्यौ चाहैं दरस तुम्हारो॥ करिकरि मिथ्यामान॥
१॥ जनतुरसी कहै आहि इहि ऐसी॥ कोऊ जानै जांन।
सुजांन॥ बिलंब छाडि नजौ राम आपनौ॥ सूपै षेपु
द निरबांन॥ २॥ ॥७॥ रे तैं गावनकऊ बकहां कौं कीयौ
कहांर हयौ अरुझाइ रे॥ यौं बतौ हि न हि सूझयौ॥ तेरौ अ
वसर बीतौ जाइ रे॥ टेक॥ तेरै प्रथम हरिरावै रामकौ॥
लीन्हौ गुर पै मांगिरे॥ सो बद सा कत षोन हौ॥ या रूवां
कै संगि लागिरे॥ १॥ तेरै मांनि मांनि सनिमन राषीयो॥
मसापद हो बिसराइ रे॥ कौडी के सुष कारनै॥ तेरौ हीज
नम सिराइ रे॥ २॥ रे तू गोबिंद के गुन गावतौ॥ कहै कौ कहै
अलसाइ रे॥ मार परैगी अंध यौ॥ हूं तौ हि कहूं समझाइ
रे॥ ३॥ रे तूं तरकित गासो तौ रिक्यौ॥ त्रिगुन रूप बिस
राइ रे॥ जन तुरसी चौ षाप हमांही॥ तू लोकि न षांनस
माइ रे॥ ४॥ ॥८॥ रे निरदावै बेगा नाव लौ॥ दावै रचिन
नाइ रे॥ यह उपदेस सतगुर तनौं॥ तू सुनि प्रवनौं चि
तलाइ रे॥ टेक॥ रे दावा मैं हाकी डुनी सुरनर गाए बिहा
इ रे॥ रे अरध उरध मधि लोक लौं॥ दावैर है लपटाइ
रे॥ १॥ रे जै तू समझै तौ कहूं॥ यतौ ही अरप ब्यौपाइ
रे॥ आदि अंति मधि नावलै॥ निरति सुरति ल्यौ लटा
इ रे॥ २॥ जे जे निरदावै रहे॥ दावा दष लमिटाइ रे॥
जन तुरसी मिले सुष सिंध मैं॥ ज्यौं जलजलहि समा

पैरे ॥ ॥ ३॥ ६॥ गोपाल ही गाय लै॥ कहा रसो अल
साई। घरी घरी गोबिंद जन॥ तेरो जनम सिरानौ जा
इ॥ टेक॥ जात है आरोगि बय दतन। कंचन रूपी
काहू॥ तावत जुरा रोगन दिनेरो॥ जनम न हि देत दि
खाहू॥ १॥ हीरा हारि तु ब कोडी सुख गहि मत लेहि
सुखाई॥ अमल परेन छुटि है बिसह है॥ फिरि पीछै
पछिताहु॥ २॥ चित वृत्ति लेटि करि ब एकाग्र॥ उर
धरि हू है उपाइ॥ इहै जोग इहै जुगति सकल बि
धि बिसरि यतामति याइ॥ ३॥ इहै औसर यहै दाव
अमोलिक॥ कोऊ पूरब लै पुनि पाइ जनतुरसीज
नम मरन वंला करि॥ तू ताही स्पो ल्पो लाइ॥ ४॥ १०॥
अज्ञानी आवरे कसो हमारो मानि॥ बहो को फिरै बिष
यन संगि॥ एठौ इक्की मांनि॥ टेक॥ सकल शास्त्र संत
नु को सो दे हैं अंगुरी कांनि॥ प्रतिलोम मन भए बिनतन
की होत दिनै दिनै हांनि॥ १॥ देखर अनरथ जु औ
र सब॥ भावै जांनि म जांनि॥ जेन केन[illegible] म जिप रमा
त्म पद उलटि अभिअंतरि आंनि॥ २॥ इहे करनी करि
कार कि ते जन॥ पार पहूंते न्यांनि॥ या बिन औरस कल म
गात्रि ह्यो॥ सो भि ध्या करि जांनि॥ ३॥ आतमी कधर मस
ब कोटी को॥ सो किन लेऊप्र वांनि॥ जनतुरसी तात का
लतन मांही॥ दोइ तुरपद पहचांनि॥ ४॥ ११॥ राम जी को
नांव जु लीए॥ उर के अघ घजरि जाहि॥ टेक॥ जैसे चिनगी
परै अगनि की रूई जु मांही॥ जारि भसम करै ताहि॥ रहै रज
मांक बु नांहि॥ ऐसे ही धौ पाइ॥ जपतप राम को जाप धूं दा

रिलौं कटिजांवदी॥ रहिजाइ आतमों आप॥ ५॥ ज्यौं रवि
कै आये रजनि कै सैं जु रहाई॥ त्यौं जु राम को नाम जपत
का के रहै काई॥ कोटिक रमक टिजांवदी॥ निह चै निज
कारसोइ॥ याम। ही त्यों येन ही॥ साधक है सब कोइ
॥ ३॥ प्रस्वापारस रूप नाम नि हकाम जु सोइ॥ जिनि
सावन जल लौं उर की वासना जु षोइ॥ इ होइ मिलेता
एक नक लौ॥ वा पूरन पद मांहि॥ जन न कुरसी मन क्रम
बचन तेई जन॥ ब क्र स्यौं बि बु रै नांहि॥ वू॥ १२॥ जै
सें हरि आवै हजो॥ श्री रुपाय जु नाहि॥ टेक॥ ज्यौं
चात्रग घन प्रीति बांधि कै बचन उचारै॥ चकोर चितवै
द्दिष्टि इत उत न हिटारै॥ अैसे ही निरमोक रैराम रू
प घट मांहि॥ घरी घरी पल ही पल छिन छिन॥ निम
षबि सारै नांहि॥ १॥ ज्यौं मछरी जल बिन तलफि के त्या
गै देह॥ क्रम अंडकूर कटी सुतनि सु करै सनेह॥
अैसी सुरति धरि राम को॥ निति ही निरूपै नाम॥ निसि
बासुरि लागा रहै॥ तो क्यौं न मिलै वै राम॥ २॥ कामनि
कंत बिदेस लागि रही नैंन व गोरी॥ चितमैं परैन चैन
होइ रही बिकलप बोरी॥ उर अंतर करवत बहै॥
बिनदेषे वै नांह॥ अैसें राम जपे जन अपनो॥ तो मिटे
जनम दुष दाह॥ ३॥ तीबर बेग सं जुक्त प्रभु कौं पा
ध निहारै॥ ताहि ताहि जु करि करि राम कौ नाम उ
चारै॥ एक लागा रहै॥ अपने ही उर अस्थान॥ तु
रसी माहि मिलै वै पावन॥ हे सिंह सि क्रपा निधान
॥ ४॥ १३॥ आवै गे वै राम हमारे॥ उपजा वन उतसा

हा ॥ निठ सथ मम डय सूरिकर हिगे ॥ अवसि बनिर
ननां हां ॥ टेक ॥ मिमिबा सुरि वाढी मघ जोक ॥ करिके
रिझीति उमां हां ॥ जांनू जो यूं मिलो पीवको ॥ जूं समुद्र
कोंबां हां ॥ १ ॥ जीव पीव संधि रहै न कोई ॥ गलेक न कले
कहां ॥ जनम जनम अरू जुग जुगन के ॥ कटि हि हैं मा
रेदा हां ॥ २ ॥ इह अभिलाषा अंतरि हैं मारे ॥ औरन (
कोउ चाहां ॥ और चाहि चितवनि सब त्यागी ॥ तुम
आवो उर माहां ॥ ३ ॥ तुम तेज पूंज बकासा ॥ अपर
मिति हो सुख सिंधु अथाहां ॥ जन तुरसी कूं मिलो (
महां प्रभु ॥ अरपूं यह तन मन लाहां ॥ ४ ॥ १४ ॥ ताव
तअहां न है ॥ अब रपटो किडरान ॥ टेक ॥ अब्बिर
अब्बिरको अरथ मिनि मिनि सब बनि सुनावै ॥ आ
खनिके भेद जुगति बिधि सों ब्यावै ॥ उर अंतरि अ
नरघ बसै इहै अचंभौ आहि ॥ मिथ्या लोभ मोह मा
यामें रह्यो है लाल चीला हि ॥ १ ॥ औरन स्योक है टे
रि भया यमटे बया रे ॥ आपनको अति हाजुल
लों अभि अंतरि ब्यारे ॥ कदर ज बिषया भोभावे
कथि कथि सद रूप हांन ॥ तिल भरि ताहि नत्या
गोई ॥ इहै बडो है रान ॥ २ ॥ बिद्या बिधि पटै अबि
द्या बाडै नाहि ॥ मुखां हरां मन चित बसै माया के
माहि ॥ बोल पोल यां भ्रम मै ॥ होइ रहा आटै लीन
मनि बिचारन समझई ॥ षिरको अषिरको न
तु ॥ कहां ते आए आहि जाहिगे कहां बमाई ॥ इहै
हैं कंतर नाहि ॥ और बक तैं चतुराई ॥ कंनतु

एकही आंमंही॥ निरगुनसरगुनसोई॥तुरसीत्रि
अतीतभजेबिन॥मुकतिनकबहूं होइ॥४॥
॥५॥गाढ मनकौराहौ॥कापटनिरहेलागि॥टेक॥
दिनआए बालिजेबदिनकहती माता॥हो सुतबू
होऊ येमनिबजत्रैकसलाना॥१॥तातैं सुमरो रामजं
तीबरबेगिउपाइ॥आलसीकहौइकारहे॥तेरी
१ औसरबीतोजाइ॥यटेगुनेकोफलबयेहआदिसु
नाई॥गहिमनगोबिंदभजौउलटि अभिअंतरि
आई॥पाचौंपसरनिरकै॥सारइतौही ग्यांन॥इहै
माध्यांनहै॥ तुमकामोजतफिरो आन॥१॥जन
ननदीजैजहांतेहांबेवेनरनारी॥गएनहांहोइना
पलटिसिधतैंसंसारी॥ऐसीप्रबलमायावयज
पलपरयीएनजाइ॥तुलकंचनतुलकाच सकल
करिरहीएसंतोष संमाई॥३॥इहैसबसतनिकही
है सुमृतिकहांही॥इहै आपहीबेदसारस्र बकै
इहै आंही॥करिजतीतिउरधारकै॥मनक्रमबच
बसोई॥जनतुरसीरिदै रामआपने सूं॥रहो अ
घंडरतहोई॥४॥॥१६॥इतौहीसारहै॥औरग्रंथ
बिस्तार॥टेक॥संपूरनमनलेहउलटि अपनेवर
ही॥जेनकेनराम कृतव्रत हैकोरितहोही॥निसि
सुरिलागारंहौ॥इंद्रिआरंभइद्ध्यांना चिततैं
लनंबि सारीए॥निजसरूपनिरबांन॥१॥पबि
यापरहरौ॥जहांजहांजगुलपटाना॥निपट

करक्षु सिरमूर॥ गहिजु॥ साध गुर ग्यांनां॥ बिषबद
नलौं बिसरहु॥ अब सिज उरतै एहि॥ एह बंध एहि
मुकति कौ॥ हि कारन यह देह॥२॥ काहे कौ पटिप
छि गये॥ करक्षु बिसतार घनेरा॥ करम लौं उलटि
जुचित रामसौं राषौ उरहै रा॥ हिरदै केवल पिरिथा
पि कौं रहौ अचलयौ सोइ॥ ज्यों निबाव दीपक
की बाती॥ लौ इन इलउ तहोइ॥ बाजी ज्ञान सुलाइ
ब्रह्मसौं तालीलावै॥ असी धौ अरनी र ऐसै होइ॥
के हिआवै॥ नैंक हू संचरनां रहै॥ जीव सीव बिचि
सोइ॥ जनहरसी परम समाधि यक्षु॥ जब ऐसै यू
होइ॥४॥१७॥ तेरौ औसर रे बीसौं जाइ॥ रे हं तौहि
कहूं समझाइ॥ टेक॥ ताला बेलि सुमरि प्रभु अपनौ
बुलटि अमि अंतरि आइ॥ चा त्र ग घंन घुनि चंद्रच
कोरलौं॥ लागा रहु एक भाइ॥१॥ काचा है पटि बेगु
नि बे पै॥ लै सबधार बहाइ॥ इकचित है रहौ ए
कराम स्यौं॥ तीबर बेगि उपाइ॥२॥ जनहरसी क
हे समझि मन बौरे॥ बेगि बिलंब न लाइ॥ मिलियौ
चाहै राम अपने कौं॥ तौ सुमिरन ही चितलाइ॥३॥
॥१८॥ बक्षु रिक तपए रे यह देह॥ रे हूं तोहि उपदेस
यह॥ तूं रांम नाम जपि लेह॥ टेक॥ नांनां जौन्य भर
मि दुष पाइ॥ परबलै घनि रे रह॥ ऐसी सौंज अप
लमतपावै॥ कोरिक रि अनंत सनेह॥१॥ बिनसि
जाइ भी गै कागद लौं॥ अरु ज्यौं बालू ग्रेह॥ पाइ॥

इन्हिनकमैं॥ अंतिभेदकी षेहा॥३॥ राग दोष
रामजपि॥कार सौंबिलंबकरै है। जनतु
॥तनधरियकुइ लमलेऊ
॥२॥ १९॥ रेनर औसर पायौ नीकौ॥ रामसुमरिनिदं
काम आपनौ॥ काडि कपट याजीव कौ॥ टेक॥ ये बिष
या बिषलौं वत्यागि दे॥ यह सुख अतितफीकौ॥ आन
मचितवनिस्यौं लागारकु॥ सार इहै सबही कौं॥ १॥ य
कतन रतन बुध्या मे न षोवै॥ होइ आशक्ति इनी कौ॥
या मिथ्या मरीचके जलमें॥ कहो कि नपानी पीतौ॥ आ
ति हीतौ बरहोइ तगा सो॥ त्यागि संग त्रिगुनी कौ॥ जन
तुरसी कहै निरभै निसंक भजि॥ तुरपद सब कोटी कौ
॥२॥ २०॥ रेनरया औसर के काजा॥ सुरअसुरादि
सकल जीव मांगै॥ बहु बिधि करैं इलाजा॥ टेक॥
यौ अवसर यौ ही मंत षोवै॥ भरम भरमि कौडी का।
जा॥ हरिजिते ही रतन पायौ॥ सकल जोनि सिरि
ताजा॥१॥ ये बिमृया निरमूल त्यागि दे॥ ये ई दुष कौ समा
जा॥ ये ई त्यागें अब सिकै जु पाई ए॥ महा मोषि कौ रा
जा॥२॥ जिमवंत पीति करिकै रिउ या॥ अतिहीआतु
रहोइ आजा॥ पछितावैगौ काल्हि जुऐतौ॥ बीति जाइ
गौ साजा॥३॥ जन तुरसी कहै समझि रे तितुरन या अव
के जिनकरै अकाजा॥ अषंड हरि चरनन रातारकु
परहरि लौकालाजा॥४॥ २१॥ गाइ गाइ गाइ गोबिंद
गाइ रे गाइ॥ गोबिंद के गुन गाये बिन तेरौ॥ अमोलि
कयकुतन बीत्यो जाइ॥ टेक॥ अवधि दिनातै रे आ

न त घटतने रे ॥ घोरे घोरे पांनी जेसैं ब्राडतं ग्रावपा
लि ॥ ह्दै जानि उर मैं प्रांनि ॥ रामनाम ही बषांनि बिषब
न लौं बिसारि रे ॥ या जगु कौं गै जंजाल ॥ १ ॥ का करि
रे सौं कूर नेह ॥ ग्रपनाइ यह कतमदे ह ॥ ताते सुमरि सांई
ग्रति ही ग्रही ग्रातुर मांही ॥ सुष को सागर राम ॥ दुष को
ह रन एह ॥ २ ॥ ग्रै सोन ग्रौ वसर पावै ॥ स्वरग हू जो बसि
ग्रावै ॥ सो वृथा मत ही गंवावै से इ सुष बाम ॥ जनतुर
सी कहै यह बांनी ॥ ग्रति ही ये मजु सांनी ॥ काटि के फं
द कबु धी ॥ भजि रे ग्राप नौ राम ॥ ३ ॥ १४ ॥ जी या राम सु
मरि मन सुमरि राम सुमरि रे ॥ राम नांम बिना जाय च
ल्यो तेरो ॥ ग्रा छो ग्रवसर रे ॥ टेक ॥ बाबा कर कु बि
चार ॥ तू नहि समझत गंवार ॥ राम रूप बिसारि के
र सौं सोइ ग्रसुर रे ॥ ग्राय है जब ग्रंतर ॥ जंम सूप
रि है निबेर ॥ पछितावैगो न्यांन ॥ तातैं हरि ध्यांन ध
रि रे ॥ १ ॥ ग्रज हूं चेति ग्रग्यांन ॥ बीतौ जाय ग्रवधि
स्यांन ॥ चल्यौ ग्रावै काल कह र परैं ट रे ॥ जनतुर
सी कहै समझिए ह ॥ मते मल त्यागि देह ॥ ग्रारति प
स्यों भजि राम ग्राप नो ॥ जनम सुफल करे ॥ २ ॥ २३ ॥
रमया ग्रा वो जु ॥ ग्रावनइ दै जु वार ॥ तुम हो ग्रवै
ग्रानंद सुष दाता ॥ दुष के भंजनहार ॥ टेक ॥ निस
बासु रि नैंन नमघ जो ग ॥ का रिक रि प्रीति सनेहां प्र
गट हूं राम ग्राव के इ हि ग्रौ सर पल पल बीजत दे
ह ॥ १ ॥ जे ये हो ते सेतुम पूरन ॥ प्रगट करु पर का
स ॥ होइ रही ग्रावरन ग्रबि या रजनी ॥ ता हि रि

।२।।जनतुरसीनिजदासतुम्हारो।।करजो
रामदेहदरसनतुम्हारो।।अवरसब
तुहीलेकु।।३।।२७।।रमईयाआवोजु।।रिदमेंहरिमेरे
तूंजांवनारंनैतेरे।।टेक।।अपनीजोतिजुजगावो।।नष
सषसबतिमरनसाषो।।आईयेजैसेंअबआवो।।तीमो
मनिनावो।।१।।प्रगटोमांहीहीमांही।।बाहिजिकोमोहि
त्रीतिनांही।।उपजेबिनमैजेता मोमननपेतिया२।।२
दीनप्रेमरिदयाकीजै।।निहचैनिजअपनाइलीजे
प्ररमेंअपनौदरसदीजै।।तोसुषमैजीजे।।३।।तनत्रि
बिधितापनिवारो।।बेगिआइअनुपावधारो।।जन
तुरसीकौनिरतसेनीकपारनैतारो।।४।।२८।।आऐं
हीबनैगीहोकंताअबकैधोइहिंबार।।बकरिबे
गिजुमिलननांही।।बीतंतअवधिकरार।।टेक।।वोवे
जललोजातदेही।।दिनहीदिनघटतीजुऐही।।यहै।
है जोनिमिलिसनेही।।मोप्रांनकेग्रेही।।१।।बिरहनीम
रिगजुजोवै।।मनहीमनजागिअरूरोवै।।जोबषसु
कोदरसनहोवे।।तोहीसुषसोवै।।२।।तुमआयेदुष
दुहनासै।।नषसषआनंदप्रकासै।।निरमल
हरिकीजोतिनासै।।रहैनतमआसै।।३।।मधुरमधुरजु
बीनाबाजे।।बिनहीघनमानोगगनिगाजे।।तुमआ
ऐयहराजराजै।।कालमैनाजै।।४।।जनतुरसीथांनाजा
दतेरा।।जुगिजुगिजनमजनमकौचेरो।।अपनोजानि
दरसनदेहुतेरो।।तोहीजीवनमेरो।।५।।२९।।रमई
याआवआवआवअहोमुजितुजदेषनदाचाव

ा दिसन मु षद रस दिषाव ॥ टेक ॥ तुम ही तुम रहौ रैनि ।
दिन ॥ ग रयौ रेयह भाव देषौ देव नैयन नहरि तुम को ॥
न मो दिस तुम ही बिसार ॥ १ ॥ ज्यौं चात्रिग घन च को
यंद हौ ॥ क कट गत न्यो बनाव ॥ यो मम प्रीति टरत
नहीं टारी ॥ तुम सौं त्रिभुवन राव ॥ २ ॥ जन तुरसी गरी
ब गुलाम हरि ते ॥ है निज तुम सरनाव ॥ प्रगटो राम
पूरन तुम मैं ॥ अ रस न रक्क किजाव ॥ ३ ॥ २७ ॥ २०६ ॥
राग मालश्री ॥ निराधार सूं मन लग्यो माई ॥ कैसें धौं वह
पावै ॥ बिन पायन कैसे पंथ चलां नां ताते कंपा
आवै ॥ टेक ॥ बिन ही करन श्रौन बिरति करि कैं
बिन जि का गुन गावै ॥ बिन माला कर बिन दरिस भ
रन ॥ कैसें धौं होइ आवै ॥ १ ॥ पपील हूं के पाइ जु फि
सलै पंबी हूं न तहां धावै ॥ मंडै धार हूते म घ डलन
भाग बिना को पावै ॥ २ ॥ जहां रबि चंद ते जन ही तारा
सु तहु पकासक हावै ॥ अति ही अगाह नग मौं नहीं
पर ई ॥ निगम हू अगम बतावै ॥ ३ ॥ पंच तीनि आव
रण बिबर्जित ॥ द्रष्टि कुमुष्टि न आवै ॥ सत असत
असत सत के बु ॥ क हौ क मौन री जावै ॥ ४ ॥ जन
तुरसी यहु अकथ कहांनी ॥ कहत न क बु बनि आ
वै पूरन ब्रह्म गुर कृपा होइ ॥ सो भल प कुसु षपा
वै ॥ ५ ॥ १ ॥ देव तुम ही तुम हो मेरे ॥ और को कु नाही
तुम ही आ दिन तुम ही अंति ॥ मधि है तुम आ ही ॥ टे
क ॥ तुम ही पान तुम ही पीड ॥ तुम ही नैन नासा ॥ तु
म ही मैं करन सीस पाइ ॥ तुम हो मेरे स्वांसा ॥ १ ॥ तु

मही मावत तुमहीन गति ॥ मंतुमही ग्यांन ध्यानं ॥ तुम
गतुमही जु गति ॥ तुमबिन नही आंनं ॥ १ ॥ तुम
सँमुही दिसा ॥ तुमही देव देवा ॥ तुमही सर्ब मेरो
म्हांरी सेवा ॥ ३ ॥ तुमही मोहि ॥ तुमही मुकति
तुमही बल बिसवासा ॥ तुम बिनां मन क्रम बचना
आसा ॥ ४ ॥ निराकार निज सरूपा ॥ राम अ
जांमी ॥ जनतुरसी निज गुलांम तेरो ॥ राषि सरनि
मी ॥ ५ ॥ ।७॥ चलि मेरे मन मिंत जाहि जंहां ॥ सुषके
गर रमि रहे रांम जहां ॥ टेक ॥ कहार होइ हां बाइ
देषि इंद्री सुषकाई ॥ पेसकल जै है बिलाइ ॥ मा वे जां
मजांनि ॥ तातें कहो सुनि मांनि मेरो ॥ हों आयो होइ
हितू तेरो ॥ सुमरि ले प्रभु आपनो सव ॥ छाडि जी ए बोदि
॥ १ ॥ कांम क्रोध सत्र लौं त्यागि ॥ लोभ के लगाइ आगि
मद गलस्तू नागि ॥ गहि जु दिढ बैराग ॥ ए प्रबल
यदा जु आंही ॥ होइ रहै प्रबत वोट मोही ॥ इन अवतउ
जै जु नांही ॥ उन चरन अनुराग ॥ २ ॥ धनि जो यक्रैहै
॥ संतजनन नु कही तैसी ॥ तोरि अबि द्याजाल तत
नीकैं ॥ छुई लै निरवाह ॥ जहां न धरत्री अंबर नु बाया ॥ प
वन जल तेजो न काया ॥ मोह हना ही जु माया ॥ तहां षि
होइ जाइ ॥ ३ ॥ जहां जगमगा नो ति राजे ॥ अति दी
दस्यूं बिराजे ॥ कोटि अनहद नांद बाजे ॥ होइ
लौ जै जैकार ॥ जनतुरसीवा सुख सिंधमांही ॥ आ
दि अंति रमंध्य सदा ही ॥ परसपर मिलि एक होई ॥ रहि
जु चरन मैं कांर ॥ ६ ॥ ७ ॥ जहा वै रांम तहां नहीं कां

महा उत्तम व
ना॥ अरस्य परम हूं की जुगति नहीं॥ आ पंडि
ऊ धांम॥ टेक॥ पंडित हूं की पक्ष चनांही॥ पकि
त कामे ज्ञांनी॥ गुणी हूं गुणागुणि सदी॥ पक्ष
रहै उरझार॥ पार धौं को उन पावै॥ माया सब कुसौ
नहीं आवे॥ तातें रहैं हैं रत होइ॥ पंच निहारि बि
ति॥१॥ जोगी जंगम जैन जेते॥ संन्यासी हूं कक्कु केते
यान गुही बहे हैं तेते॥ रहै तन दी सु काहू करि॥ क
रितपस्या जु दारन॥ मन को समझैन कारन॥ बि
न कीएं ताकौ निवारन॥ तहां धौं कौंन जाइ॥ २॥
होइ नाही है मिटावै॥ है मिटै मैकु बिलावै॥ मैबि
हो न कछे आनै होइ॥ मन लागे आत्म ध्यांन॥ चलै न
सु सकौ चलाया॥ सबकु स्यौं बांधे न माया॥ ऐसा
हू तो लहै वह घर॥ और कौंन हीजान॥ ३॥ आपा र
न अतीत होवै॥ गलित होइ बासनां षोवै॥ ऐसे
पने अंक धोवै॥ जु मजु गंलके सोइ॥ जन तर सी
मन क्रम बचन आंही॥ रलि मिले वा ब्रह्म मांही॥
बकु रिधौं बिकुरै जु नाही जो ऐसा को होइ॥ ४॥
सदसांन घोइ रे ऐसी सौंज अपांन॥ सुमरि लै
नु आपनो॥ जीव को जीवन प्रांन॥ टेक॥ पूरब
मितै पाई॥ भाग बडे तै रै जु आई॥ सो रतन ब्र
गंवाव ही॥ बिना आतम ध्यांन॥ एकाग्र होइ रहौ
लागा॥ तौ रिक्षमतां जु तागा॥ परपद परसनै
है॥ इतो ही उन मांन॥ १॥ मांनि धौं कहौ जु मेरौ
वां कौं निज हित जु तेरौ॥ त्यागि एक दरज बिषै॥

पनहूंनकरीएपांन॥बधमुकतिकरनकौंदेही।
नांआयीजुएही॥सकलशास्त्रनिसंनेही॥और
नाहिनआंन॥२॥तीनिलोकननवखंडमांही॥सारसु
इतौहीआंही। औरअसारजगतयहु॥भाषजुबे
पुरांन॥तासूंलागिमतिअवधिषोवै॥कादेनआप
अंकधोवै॥सुमरिसुमरिनिहचैजुआपनौ॥नि
रूपनिरबांन॥३॥जनतुरसीकहैयहैब्रह्मबां
।हिंसषीरनीरलौंषबांनी॥जांनिरेजांनेतौजांनी॥का
रहौअजांन॥तौबरहोइजनिआपनौमांई॥अ
नेहिरदाकेवलमांही॥कीटभ्रंगकीनाई॥होइ
लतान॥४॥५॥जडबुधीमनोउलटिअपूगा
रे॥अपनेसाहिबसौंल्यौलावरे॥टेक॥आ
मध्यांनमाजरहूंलागा॥लोरिजगतकातोतूतागा
रीएनहीअतरावरे॥एकाग्रह्वैकैरहुलागा॥हरि
केचरनसिरनावरे॥१॥सुनियहुसीषबीनतीमेरी
गिममतमिथ्याकुटेरी॥कोऊनगयोसुषपावरे
ह्वैदिनकेमानिमोदही॥अंतिचलेछिकावरे॥या
वालोककेभोगजुपांनी॥यहुसुषसुपनाकोसो
नी॥मतहीकरैफैलावरे॥याअभिलाषामांहिय
परी॥बहुतनिसोइबिरथआवरे॥२॥यहुजुगु
वदेषिजनभूलै॥यहतीनौतापनकौमूल॥यामै
नेजनावरे॥यहमिथ्यामरीचकौजल॥किनपी
यौआवरे॥३॥निसिबासुरिआपनेउरमांही
मरिअपनौसमरथसांई॥जतौबनौयहदावरे

यह नग काच सटै मन खोवै ॥ तोहि कहूं समझावै ॥
भा यह अवसर अबकै मति हारौ ॥ पार करन की जुग
ति बिचारौ ॥ मत उरझी करौ अटकाव रे ॥ राम नाम नौ
काच छिपांनी ॥ ज्यूं पार ह्वै जाव रे ॥ ६ ॥ जन हरसी सत
गुरु यों भाषै ॥ आ छोड़ि है उपदेश जु आषै ॥ अपनौ
भजौ निरंजन राव रे ॥ कोटि ग्रंथ को अरथ हूं तो ही
और कहां लौं कहूं बनाव रे ॥ ७ ॥ ६ ॥ मेरे आछे मनवा
काहे न नाव स्यौं नेह रे ॥ बहुरि न औसर यहु रे ॥ टेक ॥
यह हुनी यांकले को कारन ॥ याको अवसि केकरौ ॥
निवारन ॥ राम ही एन लौं व लेस रे ॥ तन धन आदि सक
ल अरपन करौ ॥ जाका ता को देहु रे ॥ १ ॥ सकल सा
स्त्रनि को मत एही ॥ संतहू आषै सुनि रे संनेही ॥ सोई
उर धरि लेहु रे ॥ २ ॥ यहु तन रतन बहुरि नहिं पावै
सो मति कौडी सटै गमावै ॥ करि करि विषय न षेह रे ॥
सद्गुरु उपदेश मांनि निज मेरो ॥ त्यागि बासना एह रे ॥
३ ॥ जन हरसी जुगति जु एही ॥ भज हूं अपनौ राम संने
ही ॥ भगति उर धरि जु एह रे ॥ जनम मरन दुष जीति
महा मै ॥ परम लाभ एहु लेह रे ॥ ४ ॥ ७ ॥ मन मित हां
मारै हूहां न ही थिर रहु को हरे ॥ चल्या जाइ सब लो
इ रे ॥ टेक ॥ सक बंधी राजा ह्वै बीते ॥ राम भजन बि
न गए जु रीते ॥ हा यकू लावत सोइ रे ॥ १ ॥ है जा निज गु
म मति निवारौ ॥ रहो नां मरत होइ रे ॥ १ ॥ रावण कुं
भकर्ण से केते ॥ या भव उपरि जु तेते ॥ काहे न दे
षो जोइ रे ॥ मिथ्या तन धन को गरब करि के अ

तिगए है रोइ रे ॥२॥ कै रूपांडौं जु जहांलौं ॥मनधरि ध
आएते ते जुत हो लौं ॥तीभैंनिवन सबलोइ रे ॥सोई सोई
निमृत्यनियाए ॥बंच्या जू बिरला कोइ रे ॥२॥ दिन दिन
सऊबीत तत न तेरौ ॥कहा करि रहौ अंध अरऊरौ ॥
करम बासनां छोइ रे ॥ तौ बर होइ भज रांम आपनो ॥
जौ चाहै सुष सोइ रे ॥ ३॥ मन गहि पवन अपूना आवै
कूर्म लौं उलटि कै समावै ॥ आपन ही उरधि रहि होइ रे
की टत्रंग ह्वै कैला गो रहौ ॥ वासा हि बसो सोइ रे ॥४
यह सब संतन की बांनी ॥ श्रुति स्मृति हं निइ है बषां
नी ॥सबको निह चो सोइ रे ॥ जन तुरसी ब्रह्म गलता
नहोइ रहौ ॥ ज्यौ बक्क रिषि ज्यौ हन होइ रे ॥ ५॥ ८ ॥
॥२७॥ राग सारग ॥ समझायौ रे मन के बरी ॥ मान्यौ नही
सबद ते मेरौ ॥ सीष सबै ही फिलिक: री ॥ टेक ॥ लोभ मोह
अरू बिषै बासनां ॥ दोजिग गति हिरदै धरी ॥ साव जग
ति अरू दया दीनता ॥ सद गति मुगधा परहरी ॥१॥ रां
म बिसारि काम रसि मातौ ॥ सेयौ नही हरि नरहरी ॥
औगुन कीए अघाइ रैंन दिन ॥ क्यौं पावै सुष कौ घ
री ॥२॥ चेति चेति बक्कयौं समझा कौ ॥ मांनि सीष सुनि
लै षरी ॥ तुरसी दास रांम भजि प्रांनी ॥ नही तर जम क
रि है बुरी ॥ ३॥ १॥ निरमल जस गाय रे मनां ॥ संत जना
हि अनंत राम भजि प्रांनी ॥ कहै संत हरि के जनां ॥
टेक ॥ यह संसार भार बिषसागर ॥ तामे डुष दोजिग
घनां ॥ रूप रंग रस देषि पतंग ज्यौं ॥ बकुत बिरह चे
तुनी जनां ॥१॥ परहरि कांम क्रोध मद मंछ रा ॥ गव

नूनकी जै बिषबनां ॥ या मांहि दुषपावै सुषनाहीं ॥ नहि
लै यम नि रंजनां ॥ २ ॥ निरभै निराकार अबिनासी
सुषसागर दुषषंडनां ॥ जनतुरसी तांहि संभारिरै ॥
नदिन ॥ मनसा बाचा करमनां ॥ ३ ॥ २ ॥ नरकरकुनि
रंजन सेवरे ॥ मनसा बाचा कहूं करमनां ॥ औरन दू
जा देवरे ॥ टेक ॥ औसी सौंज बकरि नहिं पावौ ॥ को
टिधरै जो देवरे ॥ भागि बडे मनिषा तन पायौ ताहि
सुफल करि लेकुरे ॥ १ ॥ झूंठी काया झूंठी माया तासौं
किसो सनेहरे ॥ मात पिता सुत संगी तेरे ॥ अंति बिछु
टै यहरे ॥ २ ॥ बेदपुरांन सकल यौं भाषै ॥ साषिक है
सुषदेवरे ॥ जनतुरसी दास कहै संत हौ ॥ तन मन हरि
कौं देकुरे ॥ ३ ॥ ३ ॥ नरजनम सिरांनौ जाइरे ॥ तातैं रां
म सुमरि अजित अंतरि ॥ करतार होमु रजाय रे ॥ टेक ॥
यह माया सुषदिवस च्यारि कौ ॥ समझि बेगि बिसराइ
रे ॥ यामै सुचि रहीं न हीक बुधी ॥ यकतै परतिष्ठला
इरे ॥ १ ॥ सुमति संभाहि कुमति सबपरहरि ॥ निर
ति सुरति उलटाइरे ॥ आदि अंति हिरदै सुषनिस
दिन ॥ हरि हरि उचरित्र घाइरे ॥ २ ॥ यकतेरा अवस
र यकतेरी बरीया ॥ यकतन बहुरि न पाइरे ॥ जनतु
रसीदास रामभजि प्रांनी ॥ एकचित इकदी जाइरे ॥
॥ ३ ॥ ४ ॥ राजचोरै देषि लुजानेरे ॥ झूंठी मायाके मदि
माते ॥ हिरदै राम न आनैरे ॥ टेक ॥ सकबंधी मंडली
कचक है ॥ चौदा बिद्या निधानैरे ॥ दिवस च्यारि मै मे
ली करि करि ॥ सब दिन दीए पयानेरे ॥ १ ॥ कंचनकौ

रसमदरशी थाँई।।मांहि बैविग्रबानौं रे।।बीसन्तुजा।
रशमसतराजाकें।।छिनमैंषेदमिलांनौरे।।२।।राज।
काजसबबेंस चारैतेकछिरिनिरहांनेरे।।आग्यानई
हिवालेकी जब।जलमेंजाइमिलांनेरे।।३।।मनिषदे
हधरिरेमनजान्यौ।।तेनरब्रह्रूपछितांनेरे।।तुरसीदा
स सतगुरपरसादैं।।यक्रजुगकूगनांनेरे।।४।।५।।तै
नगतिनजांनीप्रांनीया।।आदिअंतिअषिरपदप
रहरि।।कवमरूपपहचानिया।।टेक।।इतउतदेरत
हरिघटमांही।।कबहुंउलटिनजानीया।।उतरद
षिनपूरबपछिम।।फिरिफिरिप्रांनपियानीयां।।
पारब्रह्मसंमिकरिपूजे।।केपाहनकेपांनीयां।।अंत ४
कीबेरसैंबरकेफूलनौ।।चोतबूरखंडानीया।।१।।क
थनीकथिकथिकरमलगाए।।चितुराई चितसांनी
यां।।त्रमत्यागिकेजागिजुगतिगहि।।मनसोंमनल
पटांनीयां।।३।।अजहूंचेतिमुगधमतिहीनां।।मौनि
सुषसुनिकांनीयां।।प्रेमप्रीतिस्योंजिअविनासी
तजिबिनसरबेगानीयां।।४।।इहैजोगइहैजुगति
भगतिकरिउलटिआतमअसथांनीयां।।जनतु
रसीकहैसबदीहुमनासे।।मिलिहिपरमसुषदांनी
यां।।५।।६।।तनकैसैंलहैतमोगुनी।।जिनसोंवत।
सबरैंनिबिहावैं।।दिनटमटमचोपवड्डनी।।टेक।।
परनिदापरदोषनपूरत।।इहैअबिद्याउरधंनी
बक्योंकरैंषालीजुकंमनौ।।करिनसकैसुनीअन
सुनी।।१।।अंतिपरमादआलसीअगिनरा।।आति

त ओघी कत घनी॥ दयाहीन दीरघ जुमूनी॥ सोकमो
हमें रहे संनी॥ ३॥ उलटि नसुमिरै राम आपनो॥ त्या
गि मोह माया मनी॥ तुरसी तेक बहून हीपावै॥ अष
ड अनाहद की धुनी॥ ४॥ ७॥ बाबा दरसन कीकर
नी॥ औरबा बा अैसै तजिप्रानी॥ ज्यौं रबि सागोर
जनी॥ टेक॥ हरि दरसन देषन के कारन॥ गहिअ
का अमन तधरनी॥ कहिकरनी सुमलाय सुरति मनु
चढि है नांव निसरनी॥ १॥ सुरग मृत्त पाताल लोक
लों बिषया सबै बिसरनी॥ साहिब दृढ बैराग अ
नि अंतरि॥ कही सोधरि धरनी॥ २॥ ज्यौं चात्रिग
चितवै नित घन कौ॥ चकोर ससि की करनी॥ अ
से चितै चितै चितमाही॥ चरन कंवल की सरनी॥ ३
नूं करम अग अग उलटावै॥ यौं चित बिरति सर
करनी॥ तुरसी हरि दरसन चहि लेमै॥ नब आतम
गोकरनी॥ ४॥ ८॥ ससक्रिरड तोही अरष ततसु
र सुरति संबाहि निरति कौ उरधरि॥ रटि लराम
पियार॥ टेक॥ कौ है कौ बकि बकि अज्ञानी॥ य
ली करत कपार॥ काया की कि दबा पकरि कै॥ षोज
किं न करतार॥ १॥ ब सैसद सद कई स अहै निस
स्वास न कौ निरधार॥ अैसी सौंज अमोलिक॥ हरि
मु बिन कौ सो वेपार॥ २॥ पलटै पांच प्रान मन
रे रटै राम इकतार॥ अैसी करदिती ही इपरमग
लि बकै न पावै पार॥ ३॥ करम लौं अग अग
टि कै धरि अंतर ग्यान बिचार॥ तुरसी जन मम रन

दुष बूटै।सुष मैं होइ संचार॥४॥९॥ताहि सुमरि म
न निसिदिन हारी।अपरंपार अनंत अघ मोचन
बसै समीप सदा सुषकारी॥टेक॥जनम मरन भव
हरन गुसांई।परम करन प्रभु रब्यांकारी।आदि
अंति मधि अस थिरि राखै।मेटि आपदा बिपति भ
हारी॥१॥दीनदयाल कृपासिंध सागर॥तारन ति
रन परम हितकारी॥भंजन पाप ताप त्रिय मोचन।
चरन सरन राषन बनवारी॥२॥अमतेज परकासपर
मपद॥अमनोति प्रगट अधिकारी।जन तुरसी ता
हि परसपर॥होइ अपंग आमां मंजारी॥३॥१०॥
अलटि चलक्रुमन हरिजू की काहिं।जहां दुष सुषे।
त्रियताप न ब्यापें।रमिरहि एसी निल सुषमांहि॥
टेक॥ जहां उतपति प्रलैक छु नांहीं।उदै अस्त पदो
उनांहिं॥निरमल अकलपद पूरन।परसत चरन
सकल दुष जांहिं॥१॥त्रिबिधि रहित अषे अबित
रवर पे बो केलि करै ता मांहिं॥२॥गुनातीत अ
परमपद।परम तेज षंडित कहूं नांहिं।तुरसीदा
स कुलास देत सो॥निसिदिन चलि बसी एता मां
हिं॥३॥११॥चल क्रुमन जहां जइए तहां रांम॥अब
गति नाथ निरंजन पूरन॥संतनि को बिश्राम॥टेक॥
छाडि अलप सुष गहो परम सुष॥असो ग्यान बिचा
रि॥बिषई चोर संगि बटवारे॥इन को संग निवारि।
१॥सबद बिचारि चलक्रुमन मेरा॥समकितदी जन
ही की जै॥सुषकी सीर सिरोवनि माधो॥जहां अष्ट

तरसमपीजे ॥ २ ॥ जो होउ दैन अस्त सूरन ही चंदा पाप
पुनि दोऊ नाहि ॥ तहां निरमल रूप अनूप अर्थ-
छित रमि रहिए तामांहि ॥ ३ ॥ काल करम तहां कबु
न व्यापे ॥ चलि जई ए तहां धाइ ॥ जन तुरसी वो ब
स सरोवर ॥ ताहि मिलकु सुति माइ ॥ ४ ॥ १४ ॥ ये
ह मोह नीदहि तुम्हारी ॥ कोहे को गरब गुमान करत
नर ॥ सुनकु सुचित हेसी बहे मारी ॥ टेक ॥ या दे
ही को गरब ईये ॥ अंतकाल नहीं तनु म्हारी ॥ तुम बप
रकुं की कोन चलावे ॥ छाडि गए ब्रह्म बडे अधिकारी
॥ १ ॥ जारे नसम होइ छिन मांही ॥ डारे किरम परत स
ति मारी ॥ सूकर स्वान न बित पसु पंषी ॥ इहै जानि
गति समझि बिकारी ॥ २ ॥ नीत रिनरी मैल मलमूत
रि ॥ नौ ३ द्वार करत दिन हारी ॥ कूबी का या कूगी माय
कूबी चाल चलत नर नारी ॥ साची निधि हरि है अति
अंतरि ॥ ता हितु लटि किन जपो रे जारी ॥ ३ ॥ मनी
ष्या गिमे है जुनि वारी ॥ मन पद नारा को उरधारी ॥ का
लन षाय करम नहीं व्यापे ॥ जन तुरसी सुमिरे जु मु
रारी ॥ ४ ॥ १५ ॥ रीकोन के रहो कलंक ॥ भजनाराम
राजा ॥ भवजल तिरि पार गए ॥ सरे सकल काज ॥ टे०
पुनि को प्रवाह बह्यो ॥ पाप प्रचंड भाजा ॥ होते महा
अधम जीव ॥ सुगगनि जाइ बिराजा ॥ १ ॥ कटे कर
म भ्रम नासे ॥ मिटे दुष दुराजा ॥ पकुं चे महापद सुथ
न सुप करि वीति पाजा ॥ २ ॥ परम जोति देषि जा
इ तहां बजे अनाहद बाजा ॥ जन तुरसी ए आनं

रूप अनंत नै अमभाजा॥४॥१४॥ सोवीरअे सो गो
बिंद नाव। त्रिभुवन तन सारा॥ मो है सुमिराइ सो
इ॥ सुक्यौं न करै पारा॥ टेक॥ पाप के समुद्र न॥
त्रिबिधि ताप निवारा॥ इंद्रीन के पद्दार पल मै॥ जा
रि करै छारा॥१॥ कोटि पतित पावन करन। अनं
त अधम उधारा॥ आतमो आनंद रूप। अनाप नि
अधारा॥२॥ सुबुधि दे संतोष अरपि॥ सुपन सु बि
चारा॥ सद गति सुष कौ निधान॥ सो कडष पहारा
॥३॥ अनहद धुनि प्रगट करन॥ परम जोति उजा
रा॥ जन तुरसी आदि अंत राषै॥ अपने रूप मंझा
रा॥४॥ १५॥ मेरे परम सनेही रामजी॥ तुम जीवन
प्रान अधारौ॥ टेक॥ अनेक जनम बिछुरे जण मैं
बहुत लीए अवतारौ॥ अब कै मनु मै यो बसौ॥ बरि
सौ राम न रतारौ॥१॥ घरी महुरत सो धि कै॥ ब्रह्मा ल
गन बिचारौ॥ मैं अबला बारह बरस की॥ मैं सो रस स
जे सिंगारौ॥२॥ लगन जाइ हरि कूं दीयो॥ तब ब्याह
न चल्यो मुरारौ॥ सुर तेती सु संगि लये॥ तहां मुनि
जन जुरे अपारौ॥३॥ डलह नि मन आनंद भयो॥
हरि आए बाग मंझारौ॥ तहां पंच सषी देषन गाई॥
न हो इ लहै अलष अपारौ॥४॥ आनंद आगे नीन
ही॥ तहां तोरन तत बिचारौ॥ आरति कलस बेदा ग
करि॥ तहां प्रेम प्रीत ज्यौं निवारौ॥५॥ मोतीयन चौ
क पुराईयो॥ तहां अनहद बेद उचारौ॥ अब गति
संगि भावरि फेरी॥ सषी गावै मंगलचारौ॥६॥ अ

बिनासीस्यौंषेलनां॥तहांते मनयो अधिकारी॥जन
तुरसी हिलिमिलिरहे॥अबतुं निरिपजन मनिवारी
॥७॥१६॥तुमहीस्यौं है पतिब्रत मेरो॥मनक्रमब
चनतुनसुषसांई॥औरन आसोकाहूकेरो॥टेक
मोकैंनरकसुरगदेसांई॥भावैलषचौरासीफेरो॥
भावैसकलसुहागदेकेहरि॥राषौनिजचरननक
रिचेरो॥१॥बहुतमिलेबहुतेमिलिबिछुरे॥काहू
स्यूंनलगतचितमेरो॥मेरोचिततुमहीतनराच्यो॥
छांडिदीयोअगसंगजुगुकेरो॥२॥तुममेरेमातपि
ताबंधुजन॥तुमहीगुरसंतपतिमेरो॥जनतुरसी
केऔरनकोई॥एकजरेसोअंतरितेरो॥३॥१७॥
देवतुमहीतुमटेरनसुषपायो॥तुमबिनजनमअ
नेकगुसांई॥इनिकूवीमायानरमायो॥टेक॥अब
तुमसरनिसकलदुषनासे॥प्यासोकुतोसुपीयत्रि
पतायो॥अजहप्यासअधिकतनमांही॥अमृतसे
तीकोनअघायो॥१॥मिटीआपदाआनदमारी
मनउलटिरहरिचरनसमायो॥जनतुरसीसतगु
रप्रसाद॥मनिषजनमनोफलपायो॥२॥१८॥प्रा
ननाथस्यूंप्रीतिहमारी॥कोउरिसाइकरेकेहांसि
रो हम जुगहैंहैमूरतजिडारी॥टेक॥कोकनिंदो
बिंदोमनलकोक॥कोऊदेऊनिधरकदोइगारी॥
बेरभावतपजतनहीअंतरितनमनरतभयौच
रनमुरारी॥१॥कोऊकहौयेसंतसुसीतल॥कोऊ
कहोइहअंतिअहंकारी॥बुरीभलीदोवतजिजगु

की॥गुरगमि उलटी जुगति बिचारी॥ २ सबै दोष दिल
तैं जु निवारी॥ निरषि निरषि जु पद बनवारी जनतुर
सी सुमरत सुख पायो अरस परस आतमा मुरारी
३॥१९॥ रंग लागौ रमतां राम स्यौं आमन मरन दोउ भ
रम भागा छूटा आवा गौन स्यौं॥ टेक॥ हरि रंग लागा द्व
गा भागा पायौ आरे गोन स्यूं निरभै होइ भजौ अ
बिनासी॥ कालन कू बेधा न स्यूं १ मन बसि कीया
अंत न दीया राम भाता नाम स्यूं सब सूं षपा या करम
न साया तन मन सौं प्यास्यो मन स्यूं २॥ आदि अंति अब
गति आराध्या राच्या नाती आन स्यूं जनतुरसी मि
लि रहे परस पर दास कबीर सू जान स्यूं ३॥ २० स्वामि
रहे जु नेह पद बानि परमातम पद पाजि सु राना
लेह जुगति स्यूं जानि टेक पवन की पद चानि जु मा
ही॥ होत न हो की हानि मातई जु बुधि कि न कि न होवे
सो थिरि होइ न आन १॥ बार बार तो दिक है जु बोरे
तू न ही सुन तन कानि॥ बाबा जी मेहीं रचि पचि कैं कौ
को अरजै आनि २॥ एक उपजै एक बिनसे यामैं॥
होइ रही सै चातानि जक स्यूं क बहे नेटा नाहीं॥ या
दुनीया दुष षानि ३॥ गुर कौ ग्यान गहि आनि अपू
गा॥ यकू मन मन साता नि। अचल जु करिया ही तन
मांही॥ लै जु ब्रह्म स्यूं बांनि ४॥ भानि रस त्यागि दे
करम सब अमृत तिलो का कांनि॥ जनतुरसी निर
मै निस कम जि॥ अपनो सार गयानि॥ ५॥ ३१
गोबिंद नाम कु स्यूं रौ दे कुं तन मन आदि सौं जस

बप्र मुदी ।। सो तुम अपनी लेऊं ।। टेक ।। यक बो बापु र
सो पर मानंद ।। जावत है यह देह ।। घन चात्रग ज्यों निब
है जन कौं ।। तुम सौं निज करि नेह ।। १ ।। नाव बिना कछु
और न मागौं ।। राजपाट धन ग्रेह ।। धूरि लौं बिख रस
म है यो ।। जिनि जिन जाचै ये ह ।। २ ।। बहूत कहा तुम सौं
कहूं केसो ।। सो कीए कही एह ।। जन तुरसी है नाम रांम
ता हिम जिम कैर हो बिदेह ।। ३ ।। २२ ।। मोहि आरति वा
दर सको उर ।। अति गति जोरे माई री ।। चित चकोर चं
द्रि गलौं कैर हौ ।। देषन कौं पीव पाई री ।। टेक ।। गोपी
एकादशाई दीये ।। बारबार सू आई री ।। परसन कौं प
द पाप नाप वर ।। चन बादर लौं धाई री ।। १ ।। मीन क
हीं जल बिन क्यों जीवै ।। अरद कंवला क्क मिलाई री
अर बिरहा करखत लौं बिदरत ।। बिन सुंदर सुषदाई
री ।। २ ।। हरि बिन हियै री फाटै सजनी ।। नैनन नीर बह
ई री ।। पीय बिदेसि दूरि दरसन नाही ।। अवधि ब
दीती जाई री ।। ३ ।। अति आतुर देषि रांम वे दर
ये त्रिभुवन राई री ।। जन तुरसी दरसन दीया ।। आनं
द बजी बधाई री ।। ४ ।। २३ ।। रांम रंग जानौं रे सब रंग
नि कौं रंग ।। पनु मेरो अबगति अलष अनंग ।। टेक
रोम रोम नष सष सब घट मैं ।। पक्क पवास लौं सोइ
ससि जल कुंभ स्त्र म ति मणि लौं ।। रहा जु असें हो
इ ।। १ ।। ता रंग कौं परस तदीय ककरंग बिलीमा न होइ
जाइ ।। ज्यों सु बदर पन मैं मुष निमषत ।। लोह निज रि
नहि आइ ।। २ ।। पंचतत के रंग मिलावौ ।। कु निश्रि

गुनरंगसोइ॥सबहीरंगकरौइकवौरे॥तापटंतर
हीकोइ॥२॥प्रेमझीतिउरमांद्दिबसावौ॥धरझरैंनि
दनध्यांन॥जनतुरसीतारंगकौतनपावौ॥करहृन
गतिनिरबांन॥ध॥२ध॥चलिचलिमेरेजीयतहांज
ईयेहो॥जहांजगतसिरोमनिराम॥जनकेसकलम
नोरथपुरवन॥सुंदरसुषकौधांम॥टेक॥जहांबिन
हीकरतूंवेजूतंतुबिनमुधुरमधुरधुनिहोइ॥नांनां
नांदबजैबैंहांवे॥आनंदबढिरह्यौसोइ॥१॥जहां
बिनहीपावकतेजतुल्यबिन॥दीपकबलैसुभाइ
अंधउजारोहोइरह्यौ॥तहांतिमरनपरसैआइ॥२॥
जहांबिबिधिगानबाजाबिबिधितहां॥बिमलि
रहीहरिजोति॥महासुमंगलहोइरह्यौ॥तहांनिर
तिवरनबिनहोति॥३॥जहांबिनहीदेवलदेवबि
रांने॥बिनहीसेवनितिसेव॥मनहीमनमांही॥म
मांही॥पूजिबौआतमदेव॥४॥जहांबिनहीतर
वरपहुपफूलिरहे॥बिनहीबासुबास॥बिनही
कंवकोकिलाबोलै॥बचनसुहावैतास॥५॥जहां
बिननीरसरोवरसुभरा॥अमितवारनहीपार॥ज
हांबिनहीकंवलकंवलजुषिलिरहे॥मधुकरकर
हिंगुंजार॥६॥जहांबिनहीपवनपवैनसीतलबै
बिनघनबरिषाहोइ॥जहांबिनहीबीजबिजुल
ीचमकै तैनपुंजकीसोइ॥७॥जहांनजनमजु
राजमकौनै॥त्रिबिधितापकबुनांहि॥बिबुरन
मिलनमिलनघुनिबिछुरन॥ऐविवेपनहितामांहि

जहां रबि चंद तेज नहीं तारा ॥ उदै अस्त न हीं होइ ॥ ज
नतुरसी वा क्रति पुरव कु सुष पै संत लषै मलकोइ
॥ ४ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ राग मलार ॥ संत हो सो है राम हमा
रा ॥ पिंड ब्रह्मंड निरंतरि पूरन ॥ परमानंद पियारा ॥ टे०
अनंत लोक ता मांहि बसत है ॥ रहत सकल तें न्यारा
सिव सनकादिक षोजि परे है ॥ वो है अबिगति वार
न पारा ॥ १ ॥ आदि अंति जे पष निरमल ॥ रहत बर
न आकारा ॥ जनतुरसी वह राम हमारा ॥ ताहि सुमि
रै बारंबारा ॥ २ ॥ ११ ॥ सोई जन पावै दरस तुम्हारा ॥
मनसा वाचा और करमना ॥ नाव लेइ एकतारा ॥ टेक
प्रेम प्रीति स्यों मारिग जोवै ॥ पल पल बारंबारा ॥ इत
उत चित वै नहीं निसवासरि ॥ तुम हा सेती प्यारा ॥ १ ॥
चात्रिग ज्यों चितवै निसिबासुरि ॥ पिय पिय करै प
पुकारा ॥ मुकति बैकुंठ कबु नहीं बांछै ॥ बांछै नि
ज दीदारा ॥ २ ॥ कनक कामनी सब सुष त्यागे ॥ त
न मन भी करै बारा ॥ जनतुरसी ताहि मिलहि पर
म पर ॥ सोई सिरजनहारा ॥ ३ ॥ १२ ॥ हरि बिन एदि
न जात दुष्यारे ॥ सकल सिंगार सेज सुष सारे ॥
जा दिन तैं न एन्यारे ॥ टेक ॥ सुनि री सषी सांवनस
ति आई ॥ बरषि सबै नपारे ॥ हमारे तन अजहूं
ही उलहन ॥ बिरह अगनि के जारे ॥ १ ॥ काल्यों
कहूं कौन यह मानै ॥ अंतरि करवत सारे ॥ मन
हि मन बिसूरि बिरहनी ॥ मुरछि नैन जल ढा
रे ॥ २ ॥ आरति वति आस चात्रग लौं ॥ सारी रैनि

कारे॥ जनतुरसी प्रभुजी निजांनिकैं॥ पंथ नलौं आंनि
गलारे॥२॥३॥ बादल बरषन लागे दोई॥ रोम रो
उर मांहि उमगपकै॥ जल थल डारे बोई॥ टेक॥ उनै
आई घटा ग्यांन की॥ दामनि दमकत सोइ॥ बीजि पव
न चलि हरि जल बूठे॥ अमृत धार स जोइ॥१॥ तप
ति मिटी तन मन भयो सीतल॥ सुरति सुधारस जोइ
नष सष नग्री आनंद रूपनौ॥ सुष झिलमैं सब कोइ
॥२॥ दुरमति मिटि सुम निकुपनौ॥ दुष दलिद्र गा
ए षोइ॥ तुरसी आदि अंति नहुअ नैता॥ मंगल गा
वैं लोइ॥३॥४॥ भली ई ग्यांन प्रकास भयो॥ मिट्यौ जु
तिमर तन मन सुर झांनौ॥ काल भिसाय इगयौ॥
टेक॥ पाप पुंनि कौ उदिम थाक्यौ॥ निरउदिम होइ
रह्यौ॥ जुरा मरन जम जीति जुगति सूं॥ हरि माहिं स
निबह्यौ॥१॥ साच कूंव निनकरि दिषलायौ॥ भरम
तजि करमद ह्यौ॥ निरगुन थित माथि लीयौ जुग॥
ति सूं॥ काढ्यौ सरगुन म ह्यौ॥२॥ पंच ततगुन तीनि
बिबिजीत॥ सोई पद उलटि गह्यौ॥ जनतुरसी गु
रु कबीर कृपा सूं॥ सकल सुहाग लह्यौ॥३॥५॥
राम राय सोई संत जन मारै॥ प्रेम प्रीति अनुराग स
हित॥ निति निरषै निज रूप तुम्हांरौ॥ टेक॥ कांम
क्रोध तजि लोभ हिंमडें॥ मोह कोऊ करै पसारौ॥ सतर
जतम तीनू गुन आगे॥ मांडे अचल अषारौ॥१॥
सीत उसन दुष सुष संमि जांनै॥ हरष सोग स्यौं
न्यारौ॥ मानि अमानि समांनि बिचारै॥ पारब्रह्म

कौप्यारौ॥२॥रहैअरीजनरिकवैकाह्न॥हरिदरसंनमं
तिवारो॥जनतुरसीजाकेदरसंनमनामै॥परसनि
होइजियारौ॥३॥६॥२७६॥रागटोड़ी॥माधौजी
निरमलनामतुम्हारा॥सुमरिसुमरिजनउतरेपारा॥
टेक॥नावलेतपरदासोइहरि॥अविनासीपावमि
लिहिहरि॥१॥नावलेतसबकटहिबिकारा॥काय
कचेतनमनहोइसार॥२॥ततमहिततसारमहिसा
रा॥जनतुरसीकैनावअधारा॥३॥१॥देवनिरंजनदे
वनिरंजन॥देवनिरंजनदुषकेभंजन॥टेक॥औ
रदेवसबहीमनरंजन॥कोउनसमरथकालहि
गंजन॥१॥जामनमरनत्रासतनमैंधन॥तुमबि
नकौनकरैप्रभुषंडन॥२॥तुमरेमातनमातपिताबं
धुपन॥तुम्हारेलाडलहैतुरसीजन॥३॥२॥हरिह
रिहरतहमारेपाप॥हरिहरिकहतमिटैत्रियता
प॥टेक॥हरिहरिकहतरहतमनधीरा॥हरिहरि
कहतमिटैसबपीरा॥१॥हरिहरिकहतजुनरमबि
लांहा॥हरिहरिकहतकरमकटिजांही॥२॥हरि
हरिकहतमिलैहरिप्रांनी॥छुटिजाइसबआवाग
वंनी॥३॥जनतुरसीहरिहरिजपिलीजै॥जपैही
जुगिजुगिआनंदकीजै॥४॥३॥सेंहौहाप्रांनी
स्वांमिस्यौ॥रुचिमांनीकांमनिकांमस्यूं॥टेक॥क
नककांमनीकासंगभावै॥रामभगतिहिरदैनहि
आवै॥१॥पांषडकपटरहैमनमांही॥साचासा
हिबसौरुचिनांही॥२॥स्वादबादकरतासच

पावै॥ साधसंगति देष्यां मुरझावै॥३॥ तजि अमृत
बिषयांहि निकारी॥ जासैं जम ग्रहि होसे मारी॥
॥४॥ जन तुरसी इनकौ संग न कीजै॥ रामरसाइन
भरि भरि पीजै॥५॥ ४॥ आव हो पीव आव हो॥ बि
रह निझरै दरस निकारनि॥ संईयां दरस दिषा
वहो॥ टेक॥ सेझ संवारै पंथ निहारै॥ तलफ तरै
नि बिहावहो॥ १॥ षरी उदासी दरस पियासी॥ मेह
रवांन ह्वै मिलावहो॥२॥ हम घरि आवौ बिलम न
लावौ॥ प्रेम पयाला प्यावहो॥३॥ तुरसी दास दरस
पियासा॥ तुझ मिलने दा चाव हो॥४॥ ५॥ प्रानना
थ तिनि पाया॥ जिनि की प्रीति लगी अभि अंतरि
बिमलै बिमलि जस गाया॥ टेक॥ भये बिसरजन आ
न आलंबन॥ राम नाम ल्यौ लाया॥ गये उलंघि या
कृतबाजी कौं॥ बहुरि न इत जुगि आया॥१॥ तन
मन प्रान अरपि महाप्रभु कौं॥ पाचौं रिप पलटा
या॥ जन तुरसी सुषसागर माहीं॥ सन मुष होइ स
माया॥२॥ ६॥ धनि धनि ते प्रांनी॥ जे हरिनाम जपै
हिरदै मुषि॥ बोलैं अमृत बांनी॥ टेक॥ परनिंदा प
रपंच न दी मावै॥ साधसंगति रुचि मांनी॥ जो सुष
मैं युक्त जगु लपटांना॥ ता सुष सू रीकांनी॥१॥ का
मन व्यापै नहीं कलपनां॥ मुकति सबै बिसरांनी॥
सुमति सषी कौ साथ संग॥ जिनि सुरति अगम
कौ तांनी॥२॥ अनहद धुनि मैं जाइ समाने॥ परम
प्रीति परवांनी॥ जन तुरसी तिन की बलिहारी॥३॥

जिनि ऐसी मति मांनी ॥ ३ ॥ ७ ॥ म ॥ नारे उलटि आव
उलटि आव उलटि आव अपने उर मांही ॥ उलटै बि
न अरध उरध तीनि लोक न षंड सुष ॥ बौर बौर जन
मै तोल है न अपनौ सांई ॥ टेक ॥ यह संसार रमकू
प ॥ मृग त्रिसना कौ सो जल ॥ आदि अंति मधि जाकौ
है थीए जु नांही ॥ ता मै कलि के ते जीव ॥ बीसरे अप
नौ पीव ॥ १ ॥ बिला इक तहू ॥ सुरग जहू न आंही
॥ ब्रह्म लोक इंद्र लोक हूं लौं जु फिरि आवै ॥
और हूं जु गति उपाइ अनेक हूं जु [illegible] बनावै ॥ तौ
हूं उर रहि फिरि नाए बिन अपनौ स्वध आतम सरूप ॥ सु नि
रे सब थौ बतांहि सु पन कु न पावै ॥ २ ॥ थीति लाइ पग
ही ह ॥ अपनैं हिरदा कंवल मांक ॥ इतेही मे उलटि दे
षि समझि है सवाई ॥ जन तुरसी आपनौ सुमरि रांम
षंडि क्रोध लोभ कांम जिनि जिन सुमस्या अपनी ॥
तिन आतम गति पाई ॥ ३ ॥ ८ ॥ निरषौ कहै निज रूप नै
म स्यूं ॥ बार बार प्रीति अरु पेम स्यूं ॥ टेक ॥ अपने हि
रदा कंवल के मांही ॥ ऐसौ बौर और कहूं नांही ॥ १
चित प्रवाह उलटै करि लीजै ॥ इत उत कहूं जान न
हि दीजै ॥ २ ॥ कूरम लौं उलटाउ रहाई ॥ जन तुरसी
न जि त्रिभुवन राई ॥ ३ ॥ ९ ॥ इहै न गति भगवंत दि
भावत ॥ जो जिए जैन कै नहीं इ आवत ॥ टेक ॥ इंद्री
उलटि अपू ठी ल्यावै ॥ कूरम लौं होइ के जु रहावै ॥ १
आपन हिरदै कंवल के मांही ॥ अपना रांम बिचारै
नांही ॥ २ ॥ तुरसी तन धरि लेन लेवै ॥ अन्य न होइ न

जै आतम देवै ॥ ३ ॥ १० ॥ इहै तुम गति तुम्हारी जी ॥ काजा
नै ऐसं सारी जी ॥ टेक ॥ जड अस्थूल मन्य गति बिसरा
वै ॥ चेतन्य धागै सो मन लावै ॥ १ ॥ धागा रूपी केवल
राम ॥ ताहि तु नैत्या गै सब कांम ॥ २ ॥ जन तुरसी सा
चा जन सोई ॥ औसै राम मंत मैं ना होई ॥ ३ ॥ ११ ॥ ३५
राग बसं त ॥ राम इकडु मह रिनिवारि मोर ॥ मैं व
दी जन सरनि तोर ॥ टेक ॥ कठिन ब्याधि घट मैं अ
नंत ॥ तुम बिन्वि बऊं अंतर पारैं नंग ॥ मैं अनाथ व
लना ही मोर ॥ गुन इद्री ब्यापै अधिक जोर ॥ १ ॥ मन सा
सरप नीसंगि ही लार ॥ निस बासुरि लागै बारबार
रोम रोम विष जटै धाइ ॥ तातै मुरछि मुरछि जिय
जाय ॥ २ ॥ तुरसी दास जन करै पुकार ॥ बिष दूरि
निवारऊ अबकी वार ॥ दीन दुषी सरनाई लेऊ ॥ तु
म सुषसागर देवाधिदेव ॥ ३ ॥ १ ॥ अब मैं आयो सरनि
तुम्हारी ॥ तुम्ह होऊ दयाल मुरारी ॥ टेक ॥ यऊ संसा
र भार बिष सागर ॥ डुष संताप घनेरा ॥ तम की त्रा
स अधिक मोहि ब्यापै ॥ तहां न मनै मन मेरा ॥ १ ॥ जौनि
अनेक जीव जल थल मैं ॥ कऊन ही सच पाया ॥ सूक
र स्वांन पतंग कीट होइ ॥ बहु तै नेष बनाया ॥ २ ॥ तुम
दीनानाथ दयाल दयानिधि ॥ कृपासिंधु मुरारी ॥
तारन तिरन परम सुषदाता ॥ त्रय रवौ कं आस हमा
री ॥ ३ ॥ मन साबा ना आन आस तजि ॥ सही आस तु
म्हारी ॥ जन तुरसी कोइ इहै क्रिपा करि ॥ आवागवन
निवारी ॥ ४ ॥ २ ॥ घरि आवहो साईयां वेगि मोरा ॥ मैं

बेर बेर बलि जाऊं तोर ॥ टेक ॥ जैसें चात्रिग पिय पिय क
रै पुकार ॥ घन बिन जक नहिं जिय लगार ॥ जैसें बिर
हनि करै दरस निकाजि ॥ प्रभु तुम बिन मेरौ जनमु बा
दि ॥ १ ॥ तेरौ पथ निहारौं पीव ॥ बिन दरसन तलफै मो
र जीव ॥ अब पीव ऐसी करहु आइ ॥ जैसें उगै सूर
तम जाइ ॥ २ ॥ जनतुरसी कै आस तोर ॥ बिन देषें जी
व जाइ मोर ॥ दुषीया सुषदी जे बेगि आइ ॥ पीव नैनौ
लागौ तेरे पाइ ॥ ३ ॥ भजि रामनाम आधार होइ
बिना रामनाम नहीं और कोइ ॥ टेक ॥ साधसंगति मिलि
करि बिचार ॥ दुष नाहीं आवै सुष अपार ॥ १ ॥ सुष
सागर अनंत अपार देव ॥ मन ताहि संभार करु से
व ॥ २ ॥ जनतुरसी ऐसें लाइ रंग ॥ कबहू न अंतर होइ
संग ॥ ३ ॥ ४ ॥ अबतू आव रे आव मन भजि लै रामजी
राम ॥ सब सुष सागर सब सुषदाता ॥ सब बिधि पूरन
काम ॥ टेक ॥ यहु संसार भार बिषसागर ॥ तामैं जकन
ही कोइ ॥ आतम कै अस थान बैसि करि ॥ निरमल
जो हरिपद ॥ १ ॥ जनम जनम का सब दुष नासै ॥ ज
नम जु रा सव जाइ ॥ जनम जनम की बिपति निवारै
ऐसा है रघुराइ ॥ २ ॥ अगम अघाध अनंत अघमो
चन ॥ निराकार निज देव ॥ जनतुरसी संभारि रैनि
दिन ॥ बिमल बिमल करि सेव ॥ ३ ॥ ५ ॥ अबतू आ
व आव रे आव मन पीतम करि ए सोइ ॥ षंड ब्रह्मंड अ
नंत लोक मैं तास मि और न कोइ ॥ टेक ॥ निरालंब
निज देव गुसांई ॥ भव भंजन भगवंत ॥ सब गुन रहि

तसकलकीजीवनि॥सबसाधौंकाकंत॥१॥सकलबियापी
बतैन्यारा॥सबदेवोसिरिदेव॥जामैंमरैनसंकटिआवै॥
अ अैसालषअभेव॥२॥सबसुषसागरसबसुषदाता॥सब
कासिरजनहार॥जनतुरसीआवागौनमेटिमव॥राषै
रनमेंझारा॥३॥६॥नरमिलियौचाहैरामकों।तौ३थमव
हरिकौमकौ॥टेक॥ आसनसाधिउपाधिहरिकरि॥प
चौंपवनाफेरि॥आतमकेअस्थांनिबैसिकैं॥हरिमघ
हितस्यौंहेरि॥१॥मनबसिकीजेअंतनदीजै॥लीजेहरि
कोनांव॥पलमांहिपरगटहोहिपरमांनंद॥जोमनराषै
गांव॥२॥निरतिसुरतिसमिसमिससिसूरा॥नादहिबि
दमिलाइ॥जनतुरसीमनक्रमबचनसहीस्यौं॥पदमैंवां
नसमाइ॥३॥७॥नरऐसैंनरहहरिध्यायेरे॥जौचाहैसुष
आइरे॥टेक॥ पूरबदेसपरहरि॥पछिमघरिआसन
कीजेआइ॥तहांवास्वासहिस्वाससुमरिहरि॥रेमभे
चितलाइ॥१॥तहांबिनकरमालाफेरिप्रीतिस्यौं॥मनम
समाउलटाइ॥बिनरीपायननिरतिरामकी॥बिनर
नांगुनगाइ॥२॥नवसैंनदीयासांबिकूपमैं॥उलटा
रचढाइ॥जनतुरसीदरसावैदिनलीनह्वै॥परमि
भुकेपाइ॥३॥८॥सषीआनंदकीरितिआई॥उ
टिलयौवाउनमनीस्यौंमन॥तनकीबिथागवाई
का॥रागबसंतहोइरहीअंतरि॥बाजैअनहदता
॥पांचसषीमिलिमंगलगावै॥उडतबग्यांनगुला
॥१॥सुनतग्वालगोपीइंद्रीजन॥आइनएदृको
॥षेलतफागआनिअंतरियीयस्यौं॥आनंदबधौ

अपार॥४॥ जै जै कार करै सब कोऊ॥ गन गंध्रब सुर
देवादी न गली न आनंद बिनोद सु॥ नागरि देहरि मे
जा॥५॥ आनंद हो आनंद रागिनि सषी॥ जहां तहां जि
तकित सोई॥ जन तुरसी वा सुष की महिमा॥ बरनि
सकै का कोई॥६॥१९॥ सषी आज अनूप बन्यो बसंत
आनंद सूं मजौ आपनो कंत॥ टेक॥ जहां सतसंगति
सोभा अभंग॥ ताहि देषि आनंद पावै न अंग॥ बे मे
गुन गावै श्रीगोपाल॥ तहां बाजै बिबिधि बजंद्र रसा
ल॥ ताल तहां उडत अबीर गुलाल अंग॥ वहां अरसप
रस आनंद रंग॥ जहां कोलब टिरन्यो अपार॥ तहां जै
जै जै सबद करहि उचार॥२॥ जहां जितकित साधु संत
सोइ॥ गुन गावै नाचै मगन होइ॥ मानूं अमृत सुधा
सिंधु आइ सोइ॥ सब सभा रही सुष में समोइ॥३॥
जहां सीतल नीर सुगंध बास॥ तहां कंवल फूलि करि
रहे बिगास॥ जहां मधुप साधु बसो इ॥ हरि चरन कंव
लु रस रहे मोइ॥४॥ जो है जो है सबिधि बरनी बसोइ
सो सब घट में जन लषै कोइ॥ तुरसी जो लषै सु सुष
समाइ॥ जुगि जुगि जमडंड दरसे न आइ॥५॥१०॥
यह सब देषी स्वारथ की हुनी॥ तातैं त्यागि गए मुनी
टे०॥ तुमेरा है तेरा कहत मंत करि जु मिले सब लोई॥ ज
ब स्वारथ को कोर घटै तब कोऊ नहि कोई॥१॥ जब
लग लेब देव लालिच कछु॥ तब लग प्रीति सगाई॥
को हवा के वो हवा के आवै॥ पूछै कुसल सवाई॥२॥
कपट मिथ्या हां जी हां जी॥ पतंग को सो रंगा॥ कहिके

रिकैजुमिलेसबको ।ऊ। अंतिकालिनहिसंगा ३ म
फ्यौहारदेषियाजगकौ उलटिअपरगाआया जन
तरसीचितचात्रिगचकोरलौं लैहरिचरनौलाया ४
।११।।२०० गर्कफी। कलिमैनिकलंकहरिगाइएहौ
केवलहरिकोनाव मुषरूपीमैतनिकैसंगिमिलि।ज
सोतहोसबगाव टेक कोटिकमनकोटिकचतुराई।को
टिककरनीग्यान सबपरहरिनेमसुसुमरिरे रामनी
मन्त्रवान।।१ नाआराधनजुतअसुनको सकनक
रीएकौइ जेनकेनजहांउरबाहरि सुमिरतहोइस
होइ।।२ सतजुगमतत्रेतातपद्वापर पूजाकोपरना
वा।अबकलिमैएकरामनामसमि नाहिनच्यानउ।
पाव।।३ पतितपावनकुनिदीनबंधुप्रभु असरन।
सरनसबगाव अधमउधारनअनेतलोकपति ।
अैसोहैहरिनाव ४ सुषसरूपसदगतिपहुंचाव
ना।दुष समुद्रकीनाव। जेबैमेतेतबउतरिगए ब्रि
ननसयोविश्रमाव।५। अरघधरमअरूकोमसो।
विकीहैअटटनिजषानि ताहिसुनतसूरतअ
सुगावत परेगटहोवैआनि ६ कहौकहालौबर
नौमहिमा बरनेबरननिजाइ कोटिपतितपावन
भयेजुगिजुगि अरधनामगुनगाइ ७ बेदपुरा
नसुमृतसतनिमिलि मथिकाढ्योघितयहु जन
तुरसीकहैसुमरितोहिनिसिदिन जनमसुफलक
रिलेहु।।८।१।। हरिकोअमृतसंभावतेहो काकैरे। ज
सोहैकलंक। जनमजुराउषतैबउबरिगये मिटी

है मरन जै सक टेक ॥ हौं ते अधम अधमन के राजा प
तितन के सिरिताज ॥ अरघ नाव तें नें बरु धरि गायौ की
यौ है आपनौ काज ॥ १ ॥ जनम हीन करम उ हीन कु
नि जाति पांति कुल हीन ॥ भए जी बस्यो सौ बसु मरि ह
रि अनु गज गनिका बदीन ॥ २ ॥ तौ बरनास गये तहां
चलि जन हांदी न दयाल ॥ आ रि अति आनंद सुख बि
लसे ॥ कब हुन त्रासे गो काल ॥ ३ ॥ जो घे फिरि कै भये
सोई करम काट मल धोइ ॥ जे सी बिधि पारस के पर
सत लोहा कंचन होइ ॥ ४ ॥ कदा जु बल रजनी बपु
री को उ जांउ देनये मांन ॥ यौ बनाम उचरत दी है
गये पाप पटल बिलीमांन ॥ ५ ॥ जनम मरन जव
काटि फेरये मिले महापद मांहि ॥ जनतु रसी ज्यौं
सलिता सागर मिलि ॥ बहुस्यौं बिछुरै नांहि ॥ ६ ॥ २
कलि मे उपासना नाव की हौ संत मिटई है दिषार
ताहि परहरि बहि परै जु बाहरि ॥ नेम रूप गये है बि
काइ टेक ॥ नाम ही जप नाम तप तीरथ ॥ नाम ही बि
धि बिरत दांन ॥ नाम ही अति पुनीत करि गायौ जु
गि जुगि बेद पुरांन ॥ १ ॥ नाम ही जोग जिगि उनि ना
म ही ॥ नाम ही ग्यांन अरू ध्यांन ॥ जे निज के नाम ही
सौ राता पार न ये ते ग्यांन ॥ २ ॥ नाम ही देव देहरा ना
म ही ॥ नाम ही जगति रजाव ॥ नाम ही पूजा नाम ही
पाया ॥ नाम सिरोमनि राव ॥ ३ ॥ सकल बिधि जिनि न
म हिं डा न्यौं ॥ परहरि आन उपाइ ॥ मन क्रम बचन
नाम हिस्यू राते ॥ ते निज दास कहाइ ॥ ४ ॥ अधम उ

धारहीनबंधू पतितनकोपावननाम॥निकुलनकोकु
ल॥निबलनकोबल॥निरधनकोधनरांम॥५॥नामही
नसमुद्रलंघनकौं॥सफरीनावजुसोइ॥आरोहनक
रिकरिकेतेजीव॥पारपकेंतेलोइ॥६॥जेनिकोनिजैसे
तैसें॥सुधचितहोइसुमिरेरांम॥सेषांनीपलटिकेंब्रह्म
नए॥३सोजीवकौनाम॥७॥स्रुतिसमृत्यशास्त्र सब
हिमिलि॥मथिकाढौंछितसार॥जनतुरसीततना
मरांमकौ॥उरधरिउरेपार॥८॥३॥२७३॥रागग
गौंड॥इनीयासेंकामेराजी॥मैदरसनचाहतेराजी॥टे०
जलहरनस्योवारनतीयार॥चात्रिगचंचनबोरेल
मार॥१॥निसिदिनपियपियकरतबिहाइ॥घनबि
नतनकीतपविनजाइ॥२॥दयाकरहुदरवौरघु
वीर॥बरसिबुझावौमेरेतनकीपीर॥३॥जनतुर
सीकैआसतुम्हारी॥दरसनदेहुदयालमुरारी॥४
॥१॥पाचौंऊपरबलहारीजी॥यहुमेटौबिपति
हमारीजी॥टेक॥कैसैंनामजपौंमैतोर॥पांचपची
सौंव्यापेमोर॥१॥भवसागरअनिवारनपार पा
रिउतारहुसिरजनहार॥२॥तुरसीदासजनक
रैपुकारा॥सबदुषमेटिदेहुदीदारा॥३॥२॥रा
मसुमरिमनमेरारे॥हरिसबदुषतेंजनतेरारे॥
टेक॥तजिहुरमतिनजिरांमअधार॥सनमुषसा
ईसिरजनहार॥१॥जनमजनमकेमिटहिजंजा
ल॥जैसामाहिबदीनदयाल॥२॥जनतुरसीताकी
करिसेव॥सुषकौसागरपूरनदेव॥३॥३॥रेनर

तैंमोमनमोननताही १ अरधउरधमधिलोकं तहां ८
तजन बिनादुखसोकं साहेमुरजजनबतायो करिनि
जनप्रमसुषपाया ३ यकदृष्टिमुष्टिकीबाजी तहां
बरनतसदाहुरा जी ह्वैकराजीसुषसुमपासी ता
तेंलुमसोमंडोविसवासा ४ जेतेसुषयाजगमांहीं
तेतेसबदेफेजांहीं वाअघटमुषसम
कुरसीतहांरतनयेप्रानी ५ २ देवात्मदरसनकेका
जाहो सएरकसमिराजाहो टेक टारडरघोरहाथी १
बहुपायकसंगिसाथी सुतबित बनितासुषरासी
सबत्यागिनएवनवासी १ ऊंचेअतिकनकअवास
बिचिबिचिमनिनकेउजास हीरेमनमानिकमोती
तिनिगांठिनबांधीयोती २ सुषसेकसिघानपान । स
कपरितानीयेबितानं करतेबकुभोगबिलासा ति
निछाडिदईसबआसा ३ दरिबजतेबहुबाजामा
नौघोरिरहेघनराजा सुनीयोनपरतोकान तेजा
यमंडेमैदान ४ ससिबिमलतसनसुनबास रसरा
गरंगकबिलासं होतेभोगपतिअधिकारी तेपरतिब
सएगिपारी ५ सबकुलअभिमानबिसारे तजिगेह
बिदकारिनप्यारे जाइमिलेपरमसुषमाहीं जनर
तुरसीबकुसोगमाहीं ६ ८ देवात्मदरसनकेरा
तेहो तेमतिवारेमातेहो टेक बिसरेबाजीव्योहा
राक बुरहीनतनसुधिसारा रसिनासुचिअमृत
पीवै पीवैनितिकुंभिजुगिनीवैहो १ उलटिकी
याबिश्रांम जहांकौलकेवलनिजधामं तहांउव

इ॥ तहां आरति सूं सुरति समाइ॥३॥ आरति अहित न
गति जो करै॥ प्रभु कौं नाव न पल बीसरै॥ तुरसी सुष मैं
रह्यो समाइ॥ बहुरि न दूत जु गाजन आइ॥४॥ १२॥
देवा अरथी अरथी मांही हो पूरन भगति पल नाही
हो॥टेक॥ तुच्छ कंट बतजि बन कूं जाही बन मैं बैसि नु
तपसी करांही॥ स्वरग सुथानि मूं लोभ न तहोइ करम इं
द्रीन कौं रहै संजोइ॥१॥ ग्यान इंद्री जहां तहां चलि जांहीं
रोके रोकी हूं न रहांही अपने अपने सुष के काज॥ उम
ङि चलैं ज्यूं मंतगज राज॥२॥ येक अरथ अरथ येक चा
हो॥ यकुपन आदि अंति निरबाहो॥ तातें परे न गति सूं
दूरि॥ कामनां नियाषे पचूरि॥३॥ करम इंद्रीनि कौं
मन मकरै॥ ग्यान इंद्री उर तै परहरै॥ होइ निहकांम लै
इ हरि नाम॥ सो पावै पूरन बिश्राम॥४॥ अहि निसि भजै
निरंजन देव॥ त्यागि देह अंजन की सेव॥ तुरसी सुष
बिलसै भगवंत॥ ता सुष कौं नहिं आदि न अंत॥५॥
॥१४॥ देवा जग्यासी जन तेरे हो॥ ते क्रम मूं नेरे हो॥टे
॥ प्रथम सब ब्रह्म अंग है बीरनी रलौं जां नों वा
हे॥ यक माया यक ब्रह्म जु सोइ॥ या जुगति मैं रहै मन
गोइ॥१॥ दीन लीन होइ सतगुर सेवै॥ छिन कहूं न चित
इत उत देवै॥ गुर के चरन कंवल सरनाइ॥ तर बेली
लौं रहै लपटाइ॥२॥ आलस मंद्र रतां मसत्यागो॥
सन मुष सदा रहै गुर आगै॥ या रा सारज नन कै का
जा॥ अहि निसि सु मिरै करै इलाजा॥३॥ तप करि का
रतन के मल दहही॥ मन हू की बिरति उलटी गहिही॥

श्री॥

रमति हरि कै निवारि॥ १॥ दीन दयाल केल अबिनासी
सनमुष सांई सिरजनहार॥ तारन तिरन परम सुष
दाता॥ ताकौं तूं कबहू न बिसारि॥ २॥ म निधान नम
ब करि न दीपावै॥ अब कै करि लै सुकृत सारि॥ जन
तुरसी करि एक हरि सेवा॥ ता ला बेली राम संभारि॥ ३॥ ४॥
रे मन भजि लै राम अधार॥ राम भजै नहीं तो मुषि छार
टेक॥ जब दुष षंडन होइ निज देव॥ ताकौ तूं निहचल
करि सेव॥ १॥ हरि छिरि टेक तचांत हरि॥ तजि दुरमति
पीव मिलहि हजूरि॥ २॥ जन तुरसी कै हूदे गुर ग्यांन निरा
म सुमरित जिह जी बांनि॥ ३॥ ४॥ ता मन के मसतग परि
षूरि॥ जामैं उवै निषै अंकूर॥ टेक॥ सायक हरि नायन
लागै॥ सीत रतै बाहर कौं भागै॥ बिषयन सेती लावै प्री
ति॥ छाडै राम भजन रस रीति॥ १॥ ग्यांन ध्यांन की सुधि
हीन जानै॥ अदिनिसि मारि॥ फिरै अमांनै॥ मानै नही
सतगुर की बाचा॥ परहरि कनक गहै मणि काचा॥ २॥
कांम दांम के मुषहि बचादै॥ बलौ जाइ बिषया के बादै
भजै न ही सुष सागर रांम॥ तुरसी उरमधि एक हू जांम॥ ३
॥ ४॥ नाव जपत तेरौ कहा लागै॥ जा छिन पै जम कौ डर भा
गै॥ टेक॥ नाव जपत उर होइ उजीयारो॥ सोई नांम जपि
मांडि अहारौ॥ १॥ पूंजी घटै न होवै हांनि॥ हरि सुष अघ
टउ दै होइ ज्यांनि॥ २॥ रोम रोम उपजै आनंद॥ संसै सोक मि
टै दुष दंद॥ ३॥ जन तुरसी जपत निरंजन नांव॥ तन मं
न सफल होइ सब गांम॥ ४॥ ५॥ जपि रे जीयरा रांम नांम
दारी॥ जा छिन पै भव सागर तिरी॥ टेक॥ जोग जिगि सब
हौ कौ टीकौ॥ सोई नाव जपि जीवन जिय कौ॥ १॥ सक

लसंतजनसुमरैतासा॥ होइ रहै अजर अमर अविनास
॥३॥ जोतिजगावै अमृतपावै॥ नावनिरूपतइहसुष अ
वै॥ परापरीपदमैंहोयतनाव॥ तुरसीसुमरतनमननाव॥
॥४॥ ६॥ सोहंहंसाजापजपंत॥ सोईजनपरमजोतिप
संत॥ टेक॥ अनिलमंदिरमैंअनिलअस्थापे॥ अनिलज
गाइजुगतिस्यौंजापै॥१॥ गंगजमुनसुरस्वतीमिलावै॥ सु
षमनहोइसुषसागरध्यावै॥२॥ तहां अनहदवजैगाजै
ब्रह्मंड॥ तेजपुंजकेमहांप्रचंड॥३॥ निरसिंधनूरनिरंत
रिवासा॥ तुरसीनिजजनपरसेतासा॥४॥ ७॥ रामनामहिर
दैधरिलीजै॥ जगसौंप्रीतिकहोकाकीजै॥ टेक॥ मनिषात
नपायोनवढिलागि॥ मनषोवैदुनीयासंगिलागि॥ कन
ककांमनीतजौहविकार॥ मनसाबाचारांमसंभार॥१॥
जनतुरसी अैसीकरिलेऊ॥ तनमन अरपिरामकऊंदे
ऊ॥ प्रेमप्रीतिस्यौंराषौलाइ॥ अैसैंजनमनिरहौसमाइ
॥२॥ ८॥ जगसौंप्रीतिकरौजनकोइ॥ हंसमुवोककवासंगि
होइ॥ टेक॥ कनककांमनीबिषफलदोइ॥ जिनदेष्यांबि
षव्यापैसोइ॥ षायेतैंतनकौहोइनास॥ इनकासंगतजै
सोइदास॥१॥ अहिनिसरहैएकस्यौंलीन॥ जैसेपानीमां
हीमीन॥ तबसंसानहीब्यापैकोइ॥ निहचैसबसुषपा
वैसोइ॥२॥ जनतुरसीअैसाजनकोइ॥ रांमनामजपि
निरभैहोइ॥ तिनमनलीरहैलगाइ॥ आपातजिहरिमां
हिंसमाइ॥३॥ ९॥ अैसीचालनिहालकरै॥ मनिचिंत्या
सबकारिजसरै॥ टेक॥ कनककांमनीपरहरिफंदा॥
निरदंदन्याराहोइरहै॥ रामरमैएकतारयेकरसि॥ कां
मक्रोधअहंकारदहै॥१॥ हरषसोगदुषसुषसबत

कैं॥त्रिभ्रांकेसंगियललनबंदै॥ ग्यांनध्यांनगहिगुरको।
नी॥अनहदधुनिसूंलागिरहै॥२॥पांचपचीसूंब
करिराखै॥तनमनसौंपिनांवउचारै॥जनतुरसीताहि
लहिनिरंजना॥जोमनमरनसंतापटरै॥३॥१०॥अरे॥
हरिगुनगाइप्रांनी॥ज्यौंछूटैभरमआवाजांनी
टेक॥मनपवनाउलटाइअपूवा॥हरिसूंहितजगुसौंरू
रूवा॥१॥पांचौंइंद्रीकामेटिपसारा॥सबहीत्यागिसुमरि
रिप्यारा॥२॥गुणरहितनिरगुणनिजदेवा॥तादेवाकी
रिहेसेवा॥३॥परमतत्वमतेजप्रकासा॥परमजोति
तुरसीदासा॥४॥११॥सोईनिरंजनअंजनमांहि॥
कछुनांहि॥टेक॥मनउलटाघटमीतरि
आंनि॥अविनासीपीवलेहियिछांनि॥१॥जाकैगुनरू
रमनांहि॥सोईरामव्यापिरहासबमांहि॥२॥जनतु
सीतासौंल्योलाइ॥जौनीफिरैनआवैजाइ॥३॥१२॥
हरिहिरदैकितचाहौआंन॥तूंजेआपदुनीसौंग्यांन
टेक॥आपरमौधलगावैनांहि॥पढिपढिलोगसुनावै॥
आपनबैध्याकरमकेफंदमैं॥औरनिबेगिछुडावै॥१॥
उदरउपाइकरैंबहुतेरा॥स्वांरथसौंरूचिमांनी॥फूवा
आपरूपसंगिलामा॥साचदेषिदीकांनी॥२॥घटैमअ
इन्मघटकौंजानैं॥पांचौंकैरैपरहारा॥जनतुरसीर
चिरहैरामसूं॥सोसतगुरूहमारा॥३॥१३॥एकहीरा
मआरेधौरे॥एकहीमनबसिकरौआपनौ॥कावहुव
तनिसाधौरे॥टेक॥एमनतौएककहांलावौगे॥एकअ
स्लएकमाया॥व्रसैनांवआरोहएकरतै॥कहौपार

॥४॥ १७॥ तनजांनैकेयहसहनांन॥जादिकनककी
वलौंबलागो।कांमनिमांनौंमिलापधांन॥टेक॥निबाव
नीरलौं अकलकहिरदौ॥पायौअतिसीतलगुरज्ञांन
थावरजंगमसबजीवनिमें॥होइरह्यातुल्यएकसमांन
॥१॥ वहतबातकौधौबिस्तारै॥इहैपरबपरतक्षिपरवा
ना॥तुरसीजिनिनिरगुनरसअचयौ॥तेगहैकैसैंकोई
गुणज्ञांना॥२॥१८॥ तनकीगुहाअरुहिधरअंबरयाम
नकीगुहाअरुहिधरअंबर॥मनकीगुहाकायाकोअं
दर॥टेक॥साधरअंबरगुहाजुमांही॥साधुबिचरैमुक्ति
सहोही॥१॥कहागिरतरफूलनिवासा॥जहांतहांबि
चैकरैबिलासा॥२॥काहैसैतीकरैनडोहा॥नाकाहै
स्यूंबांधेमोहा॥३॥सभिकंचनसभिकाचबिचारै॥अ
सेंबिचरैमनसामारै॥४॥तनगुहामेंहितनकरिपैलै
मनकीगुहामांहिमनमेलै॥५॥मनगुहामेंमनदिठरा
बे॥अचलरहैअमरतरसचाखै॥६॥तनबिधिहोतनला
गेबाग॥सहजेंउतरिजाइनवपारा॥७॥अैसेंउनगुसा
मेमाई॥रमैसुरांमरूपहोइजाई॥८॥जनतुरसीय
जुपरमबिचारा॥समझैगाकोउसाधसारा॥९॥१९॥
अैसीसुरतिसमरिहरिनांम॥जोतूचाहैमोहियधा
म॥टेक॥जैसीसुरतिचरैहिजुचकोर॥चात्रिगचित
घनकीघोर॥१॥जैसीसुरतिप्यासेकीपानी॥अन
अनजपैदूधिवप्रांनी॥२॥जैसीसुरतसमदूनि
आहि॥सुरतिबसैसुतअपननिमांहि॥३॥जैसी
रतिकूरमअंडमिधरै॥बिदरायमनकीजोगीकरै॥

हाइप्रांनी॥ निहंचैकरिलेहरांमसंनेहा॥ ३॥ थंयक्त
व़सरश्रवकेमेलपायो॥ करनांदुसोईकरिलेह
नतुरसीजिसारंगप्रांनी॥ फिरिपीछैदरिमनदेह
३॥ ३॥ नाहिसुमरिमनबारंबार॥ करमब्याधिकाटैस
री॥ ऐसासमरथसिरजनहारा॥ टेक॥ निरालंबनि
वगुसांई॥ सबनिजीवनप्रांनअधारा॥ सबसुष
गरसबसुषदाता॥ सकलसिरोमनिसबमैसार
॥७॥ जनममरनकासबदुषनासै॥ जनमजनमका
मिटैजंजाल॥ जनमजनमकीबिपतिनिवारै॥ ऐसा
साहिबदीनदयाल॥ ४॥ अगमअगाधसकलबि
धिपूरन॥ केवलअसवारनहीपार॥ जनतुरसीता
कहिसेवा॥ मायामोहतजियसंसार॥ ३॥ ध॥ जो
यहहरिगुनगावैगा॥ जनमजनमकीफेरीछुटै
मनबंछितफलपावैगा॥ टेक॥ कांमक्रोधअभिमा
नआपदा॥ हरिनाजकरमनसावैगा॥ निरमलनि
कारपीमकोमजि॥ बकुरिनमवजलिमआवैगा॥
॥७॥ दुषसुषजामनमरनसबैतजि॥ जमकीत्रा
टावैगा॥ परमजोतिपरकासपरसिकैं॥ जुग
जुगांनसचपावैगा॥ ४॥ पांचपचीसतीनिदोइसमि
करि॥ चौथेचितबितलावैगा॥ जनतुरसीसुषसाग
मांही॥ मनमुषहोइसमावैगा॥ ३॥ ५॥ तनमाऊसुम
रिमनसोईहो॥ निरमलअमलअकलपदपूरन
तामेंसुरतिसमाईहो॥ टेक॥ काजपतपतीरथब
रतकीए॥ काजपजोगाहिहोईहो॥ निरमलनाम

तेपदमांही॥३॥जौगमूलजुगतिमूलजगतिमूलसोई॥ग्यांन
ध्यांनसकलमूल॥सुगाइगलितहोई॥गाइगाइकेतेपतित
पावनजएगाई॥सोईजमुगाइबिमलतुरसीमनलाई
॥४॥४॥ औसोग्यांनबिचारकरे॥तौतुमआपानारहेरे
॥टेक॥मांनअमृतसंसारमें॥औमांनजुमारैरे॥औमानै
अमृतगिनै॥सोसाधूसारौरे॥१॥मानऔमांनकीअगनि
मांऊ॥दाऊतसबलोईरे॥ताऊरमेंसतहूजरै॥तौअधिका
रवकोईरे॥२॥समलोष्टसमकंचनं॥दुषसुषसमिजांनौ
रे॥सीतउष्नकीबिथामांनि॥मनमेंमतआनौरे॥३॥
कोऊनिदैदुषपाइकै॥सुषपायजुकोऊकरै॥दरषिहर
षिअस्तुतिकरै॥तुल्यजांनौदो०करै॥४॥जषचौरासी
जीवजंत॥जलथलजितेजानौरे॥निरवैरीहोइसकलमां
ऊ॥एकब्रह्मपिछानौरे॥५॥सकलआस्त्रकौसारजुत
एतौहीआंहीरे॥जनतुरसीसुथससूपमें॥मिलिरहौ है
नांहीरे॥६॥६॥१७॥रागकल्यांण॥काहेरेमनफिरहि
गंवारा॥यामायामेंजकननलोरा॥टेक॥जहांजहांजाइ
तहांसचनांही॥सचहैसाचेसाहिबमांही॥१॥परमसिंध
सुषवारनपारा॥ताहिसुमरिरेबारंबारा॥२॥जनतु
रसीकहैइकअमृतबांनी॥मनितातजिजगजिसारंगपा
नी॥३॥१॥रेमनजपिलेरामहिनांम॥येसबाडिरचीयेन
हीकांम॥टेक॥रूपरंगरसदेषिनबहिये॥अपनेसाई
सौंमनमुषरहिये॥१॥जिनिजिनिजप्योतिनौसचपायै
लैकैअनेपुरीपडचाए॥२॥नांमकबीरअररैदा
स॥तिनकीमिटीजमपेजमत्रासा॥३॥सबडुषहरन

[illegible] तैनं नवरा नैनमकार्दम ० जनक

[illegible] कौड़ माग रणाहन्मरैमुरे वाले

[illegible] कौहै (रा) पावमामा बेकराग कौड़

[illegible] कहो बौ र हमलमोनागी है से म

[illegible] कनल हुनिने अवधिजानहैमागी

[illegible] कौ पानी चटत घटतगयोमागी

[illegible] निनैमागा नयनोमचितपागी जनक

[illegible] नकेवलाये नौतमहोबडमागी २

[illegible] गाही नौ रघिरिकोड़ मतनिधीन्सां मोड़

[illegible] नौ देवबाजी नै मायिहैसबलोड़ हैक

[illegible] पाहीनयालै मतजदैमबकोड़ याहीतेहो

[illegible] कलालेजौं १ मातिम मृतिशा

[illegible] रनौ जौड़ मनभादैयाजौ

[illegible] ५ इतलीगकथावोगवमुकौ ।

[illegible] गद्यादरपनलो गगदेव

[illegible] भाव अनुमूतल

[illegible] धब्बातयें रहौमलनिमें ममो

[illegible] मगोतेदीनयोगुनगा

[illegible] तबिनौबिन कुमरनहीमचपा

[illegible] बाहबिबादबिबे

[illegible] जीत १ अवलमुनतविनिति गुरगंमि

[illegible] इयबिदैतोबत हनीरतिहामा

[illegible] तमहि जावत हमनोरहतमापम

[illegible] जावत २ कौडमापंगुजेन

जिजगुकौ॥ जुगति बिचारि जगति चित लावत॥ तुरसी॥
मग्यांनपति आगै॥ छिन छिन मैं सिर नावत॥ ३॥१॥ प्र
भैरौं उलटि बस्यौ र आइ॥ अब न चलैं निमिष बासुरि
तत्रत॥ रहा राम स्यौ ला आइ॥ टेक॥ यां सं आरत नौं सुषबा
डेरौ॥ राग दोष दोउ धरौं उवाइ॥ अब तुम सरनैं मैं डेरौ मग
नहोम॥ इक चितयेकैं नाइ॥१॥ पाई गैरष्नु रातन पदली
पवलया चौं चौरं बिसराइ॥ जन तुरसी सुष सागर मांही
महज्जै रहौ सैंमाइ॥४॥५॥ चलि रे जा हित हां॥ न दांडष
सुष दोक्ष नांहि॥ काहेकौं दगाध होत अहानी॥ या जुग
ज्वालामांहि॥ टेक॥ जहां जुरा जनम कौ भै नांही॥ बिबर
न मिलन जु नांहि॥ घटै न बधै सदा जुं कायौं॥ एक स्युसौ आ
हि॥१॥ जहां धरनि न सपवन न पानी॥ रवि ससि हन उगांही
तुरसी तावा परम जोति मिलि॥ जुगि जुगि सुष बिलसांही
॥राइ॥१२६॥ राग इमन॥ इकु तन लेहु अरष्य लगाराघ
री घरी गोबिंद भजन बिन दुष बीतौ जाइ॥ टेक॥ लष चौ
रासी भ्रमि पायौ के पूरब पुनि रहा॥ अैसो यहु मानुष जनम॥
अति ही जु दुलभ ऐहा॥ सो रतन हरि भजन बिन॥ तुम कांई
मिलवौ षेहा॥२॥ बहुरि कहौ कहो पाइये॥ अैसो दारात
सोइ ताहि सुर सबही दूक्षौ॥ बड भागी पावत होम॥ सोइ
तुछ बिषयान मैं॥ महसान दीजै सोइ॥४॥ इहूं उडू पा
नैंकी॥ आसति ताकूं त्यागि॥ यामैं सुष कोउ नहीं॥ यकु अै
दिढ षमइ आगि॥ तातैं जे निकै निजे सैतै सैं॥ निकस्यौ
यास्यूं मागि॥५॥ कै बीतराग बैराग धरे॥ कै करौ जगि
हेकोंमा॥ उजेपन दिढ पकरिकै॥ आपनों मन जो केवलरी

[illegible] सीकरी ॥ [illegible] हिमसकोम [illegible]
[illegible] जोकिदतुसार श्रोरन[illegible]
[illegible] बसुरीमेरा मेतेगन[illegible]
[illegible] आउनगारी तोतुमबिनन[illegible]
[illegible] स्तीश्रामा तुमबिन[illegible]
[illegible] प्रभुचरनानेचेरा तुम[illegible]
[illegible] गरीबकोगाहकहै [illegible]
[illegible] सोकोकोम हेक गरी
[illegible] हैसबसाथि ३ इदरतातिजि
[illegible] नाम ॥ गरीबोसिधिमए
[illegible] सिधसाधिकत्रोगिनतकहै
[illegible] सीगरीबोब्रतधारी
[illegible] कानहीकोऊ मत
[illegible] नावलहृरिकरो
[illegible] धकाकहिनुपरस्तारा
[illegible] ॥ जयतपनेम धरमजोध
[illegible] तीरथव्रतदा
[illegible] हिहवो ३ हरिमंत
[illegible] मजिमनसाबाचा
[illegible] हिरमाकरेति
[illegible] हैका जदेजाग
[illegible] ततिनिकीजै [illegible]
[illegible] नाबातहीजेहो [illegible]
[illegible] तिसुरातिनिसुनीजे

यहै नाम त्रियताप पाप परिहरि।जपि जो लौं जुगि जीजे हो
॥३॥ज्यौं चात्रिग घन चंद चकोर है॥मीना जल बिन छीजे॥ऐ
सी प्रीति प्रभु के जु नाम मैं॥जनतुरसी रचि रहै जे हो॥३॥
॥६॥ राम नाम हिरदै राखि॥और सूलि जिन भाखि॥सब से
तनि की इहै साखि॥श्री रामजि रटै जु दान॥काम क्रोध त्या
गि देह नर तन कौ मोद लान लेह॥मोखि कौ उपाय यहै॥औ
र नां हिन आंन॥टेक॥उलटा मर मांझ आव॥प्रेम प्रीति प्र
साद बढाइ॥गाइ जे सुबगाव॥गोबिंद कौ गुनां न बाद॥ज
नतुरसी प्रेम रगति यहै॥त्रिबिधि ताप हरन ये है॥करी एक
रिक रि जु नेहै॥छाडि आन बिवाद॥१॥५॥ आवौ रीस
खी हो मिलि गोबिंद गुन गावैं॥गाइ गाइ प्रीति सूं पीव अ
पनौ मनावैं॥टेक॥अपने अपने मंदिर न स्यौं॥कूडनि च
लि आवैं॥जे निकैं निक्कि ह व कार॥अपनौ राम रिझावैं।
॥१॥ पांच सखी सांत इमिलि औरकुं बुलावैं॥ हिरदै रा
म रूप मैं॥जल बूंद लौं मिलि जावैं॥२॥ तीनि लोक न मैं तो
ऐसो न अवसर पावै॥जनतुरसी अपने प्रभु कौं मिलि
नीति निसांन बजावैं॥३॥६॥ आव आव आव हो हरी
आवन इहै जु बार॥तुम आए मन मतन मैं होइ गाकरा
र॥जो तुम आइ हो नांही॥ तौ हम जीवन कौ नां ही॥बि
रही बिलाय जांही॥याह जु बदती धार॥टेक॥ दया
करि हरि दरस देहु॥ दादि दीन की जु लेहु॥घरखो आस
जु येह॥ हो अनाथ के आधार॥मया करि मंदिर जु आ
वौ॥नयसम आनंद बढावौ॥त्रिबिधि ताप जन कौ उ
ष॥नीकै करौ परहार॥१॥जनतुरसी अपना जु कीजै

जीजेजीजेन्नलैं देषिदेषिकै दीदार ॥ परमतेजपरमजोति
परमनिजप्रकासमांही ॥ मिलिकै आदि अंतिमधि ॥ बि
लसीए सुषसार ॥ २ ॥ ७ ॥ कलिमैं रांमनांमहीनाको आ
नंदरूपउधारनजियकौ ॥ टेक ॥ बेदनिकहो संतनिमि
लिगायो ॥ जगिजोगहूतें अधिकबतायो ॥ १ ॥ औरआ
नसबघ्यकेउपाउ ॥ नामहीसकलसिरोमनिराउ ॥ २ ॥
नामहीकीउपासनाकीजै ॥ नामहीआपनेउरधरिली
जै ॥ ३ ॥ नांमहीपूजानांमहीपाती ॥ नांमहीसेवादिनअ
रूराती ॥ ४ ॥ नांमहीतीनिलोकमैंसार ॥ नांमहीजपि
जनउतरेपार ॥ ५ ॥ जनतुरसीकोटेअंगलौं होउ ॥ नां
महीजपिरामहीजएसोउ ॥ ६ ॥ ८ ॥ चीन्हि निरंजननम
नमजनकरि ॥ बाहरिभीतरिसकलनिरंतरि ॥ टेक ॥
आदिअंतिमधिइकसारा ॥ तरनबिरधनहीबारा ॥ १ ॥
सुषिमथूलबननअबरानो ॥ लिपेनछिपेनप्रगट
नबांनो ॥ २ ॥ जनतुरसीसोईपतिमेरा ॥ हैरहौचरन
नकाचेरा ॥ ३ ॥ ९ ॥ राग है टेक गोपालहीगावै ॥ सोई अ
निनदासहैतेरौ देषिदुनीसुषमननदुजावै ॥ टेक ॥ ज
दपिसरेसरोवरस्रूभर ॥ जहांतहांज [illegible] हिंदरसावै ॥
तदपिचात्रिगषंनपीवै बूंदजल ॥ तहांमूकि आप
नौंमनननजावै ॥ १ ॥ देषोएकओरहपतिब्रत सदा
सिंधकेमांझरहावै ॥ तकनरूचिअचवैजलषारो स्वा
तिबूंदकीआसकरावै ॥ २ ॥ है पुनयकरिजेप्रभु
आपनो आनदेवकेसंगिनजावै ॥ तुरसीतबकरिव
चेरो ॥ बकरिनभवजलनेरोआवै ॥ ३ ॥ १० ॥ अलाह

रदेषि॥ अद्रिष्टि मे द्रिष्टि लाइ॥ अलेषकुं जु लेषि र
हुदी निनारि हिर समाधि॥ न पसको जु रेषि॥ दिल मैं दीद
रउ रिसा॥ आरति स्यूं पेषि॥१॥ पंजकर दमर दिमाहि पर
हास बबे कि॥ तुरसी दास परसि पीव॥ होइ येक मेकि॥
॥२॥१२॥ निरयानि ति बिचोरो रे॥ हसे थं ग्यांन उपजाइ अमन
षीर नीर लौनी कै निरवारो रे॥ टेक॥ जो चाहो सरूप पुष
अपनौ॥ तौ बिषै मनोरथ मारो रे॥१॥ दू है बैराग जोग धी
इदै॥ इ दै ग्यांन उरधारो रे॥ तुरसी ततपद कै मांही॥ लैव
पद मे चारो रे॥३॥१३॥ राग कुसेनी कानरै॥ जहां माई
नांव निसांन बगै॥ तहां न मै व्यापे काहू को॥ जमडर दू
रजगै॥ टेक॥ निरमल होइ पलटि पैनौ रिप॥ तोरि रजर
मतगै॥ तत उलटि र त्रियुता परदित होइ॥ मन बाजीव
लगै॥१॥ नषसष कृरिन सै सब पाप बुधि॥ पद मैं प्रांन
पगै॥ बरतै असत होइ जाइ दूराजी॥ इकराजीव उगै॥
॥२॥ रोम रोम आनंद सुष उपजै॥ सुती श्रुति जगै॥ तुरसी
फीके लगै द त्रिन रस॥ चौथे लिव लगै॥३॥१४॥ गारजि
रसौ अंदरि नांव निसांन॥ जाकी धुनि सुनि कै सच पाये
थके न भए मन प्रांन॥ टेक॥ तिल तिल कै डषमै मारिसा
गै॥ आनंद बढौ अमान॥ ता आनंद मे आनंद बिलसै
मन साध धरि धरि ध्यांन॥ पंच सषी मिलि मंगल गावैरे
गगन रिरि दस्थान॥ महा प्रफुलित तनई आतमा॥ सोम
सुनि सुनि कांनि॥१॥ नषसष निरमल नांव प्रकास्यै
सीतल सुषर समांन॥ तुरसी सो प्रकास पद परसत
फटि गयो पटल अग्यांन॥३॥१५॥ अब हंस सोध

[illegible] श्री [illegible] निमु [illegible] कौ सु रनरसव अ[illegible]
[illegible] त्रिन [illegible] रसगनि मडलकेमांही म[illegible]
[illegible] किन [illegible] दे श्रमंडरे निछिन गा[illegible]
[illegible] २ जानकि [illegible] इगावीनो मेरी हेस्वधि[illegible]
[illegible] [illegible] निहि कै [illegible] जै अ जैव ह होइरती घे[illegible]
[illegible] [illegible] निश्रु [illegible] गई समीरी त्रिम सो
[illegible] श्री श्रापल [illegible] नीति प्रकासी. नहां लै स्मृति
[illegible] १५ नीति [illegible] वैस जहां छितहि
[illegible] [illegible] [illegible] लैस टेक यदील
[illegible] [illegible] [illegible] नायननैस नहांवाल।
[illegible] [illegible] [illegible] जैदेस १ जहां र
[illegible] [illegible] [illegible] नलन सहिदसहैस जै
[illegible] [illegible] [illegible] श्वहैस २ श्रप
[illegible] [illegible] [illegible] नवधनैस दुरसी
[illegible] [illegible] [illegible] नदीलैस ३ [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] वेकिदे मतको[illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] इकोटपरजंतो
[illegible] [illegible] [illegible] मैरा मलखमनि
[illegible] [illegible] [illegible] १ श्रीकदेस्वमत्र
[illegible] [illegible] [illegible] प्रजातननोमे
[illegible] [illegible] [illegible] २ श्रायदी रमन
[illegible] [illegible] [illegible] मनानमानेर सेउ
[illegible] [illegible] [illegible] श्रवनी लानेरे
[illegible] [illegible] [illegible] श्रीजीवखनस्रधि

ध्यानौ रे॥ यूं हैं जानि निरबैरंत पद है॥ जन तुरसी ति
पायो ग्यानौ रे॥ ध॥ १३॥ उत्तेल बिबेक हृदम जानी॥ गु
व्रतीति आस्त्र प्रतीति कैं॥ निहचै करनी कै प्रवानी॥ टेक॥
रिव इतक तांनी॥ यक बकु बिंब एक ही जु आ ही
त्रमजाइ नु बिलींनी॥१॥ यौ जीव सीव जातीय है॥
र बिजाती सब जुगु जानी॥ है सं ग्यान उपजाइ व्यव
हे म॥ तिनि कीये जु दूधर पानी॥२॥ बाचक बिरोध
ध सारे॥ सहत बासना करै बिलीमानी॥ तब ततप
इजु यक हृदि॥ उरै कहै सो मिथ्या ग्यानी॥३॥
है लगति बैराग जो गाकौ॥ ग्यान हृ कौ निजपद पावा
तुरसी दह दिस सर मैं एक ही॥ निरस रूप निरखै
र बांनी॥ध॥१८॥ पू ध३॥ राग केदारो॥ कीजै तौ ह
रिसूं हित कीजै॥ औरहित करिक रिआन सो॥ काहे कै
कंचन बार मिलीजै॥टेक॥ जबलग घट मैं स्वास सबा
सहै॥ तबलग चित बित अंत न दीजै॥ अचल होइ कै
मही आनंद स्यं॥ अंतरि बैठि अमीरस पीजे॥१॥ यक स
सार असार असंगी॥ ताकौ संग पलहू न कीजै॥ की पै
सगान सिनाइ ग्यान गमि॥ अगति होइ अरआम बी
जै॥२॥ तन मन उलटि पलटि रिपु पचौ॥ ध्यान अरपि
निरबांन ही दीजै॥ तुरसीदास सुमरि सुख सांईं॥ अंतै
सें जनम सुफल करि लीजे॥३॥१॥ राम राय अब कै
हो इह दयाल॥ इहै बीनती माधौजी मेरी॥ मेटौ कु पांचौ
साल॥टेक॥ काम क्रोध मोह अधिक जरावै॥ त्रिस्नात
रंग उपाइ॥ मनसा तन मैं अधिक बियापै॥ क्यौं करि बो

[illegible] [illegible] बंधियमायामांहि [illegible]
[illegible] तिहारे. कैसो छुटै नांहि २ [illegible]
[illegible] मायाजाल तुलसीदास
[illegible] [illegible] ३ २ प्रेमकेवंसा
[illegible] [illegible] हरिहरिनितही
[illegible] नामको [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] जीवतोही मरैरे १
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] २ पांचपंचीयेपरहै
[illegible] [illegible] जनतुलसी सुषसागरमा
[illegible] [illegible] ३ २ मोई जनसांईको भावे
[illegible] [illegible] [illegible]जावैरे टे
[illegible] [illegible] मनकोगांहि ल्यावैरे ।
१ [illegible] [illegible] नाच
[illegible] [illegible] २ तनम
[illegible] [illegible] जनतुल
[illegible] [illegible] [illegible]लगावैरे
३ ४ [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] जनमतमरत[illegible]
[illegible] [illegible] तुमजीवतनानाउप
[illegible] [illegible] १ मानिसवदहीन
[illegible] [illegible] [illegible]मैंबोलो
[illegible] [illegible] २ [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]

टिरही बिषमबला ह॥४॥ बकुतकीयौ मायौमेंतेरौ घरिधरि
नांनांकाम॥ अबबिश्रांमपकरिपूरौदे॥ जनतुरसी बलि
जाइ॥ ध॥ प॥ हरिबिनुरेमैकहाकरौ॥ ग्यमकासजिनि
रि आकीनी॥ तासादिनकौंक्यौंबिसरौ॥ टेक॥ जोक बुबा
लायनमेंकीयौ॥ सोप्रभुतुमसौसबगुदरौ॥ इतनीकहत
अवौलैअज हूं॥ बिनबोलेजीयकहांधरौ॥१॥ दिवस
अखितउपदेहनीजवो॥ औरसमीनसंगिमवौरौ॥ अब
मोहिरैनिराकसतईसजनी॥ सूनीसेजमैबहतडरौ॥२॥
पांनफूलमैंनोगतजेदे॥ सबसुषपरहरिमिपरौ॥ आप
रिबिरहतुयंगसतावे॥ याहुषकितहूंजाइमरौ॥३॥ बि
रहनिदुषितनांनिहरिआये॥ प्रेमप्रीतिपावडेधरौ॥ तु
रसीदासजनतईसुहागनि॥ तनमनलेहौपायपरौ॥४॥
६॥ अबयावमिलेहोसुषदाइ॥ तिननिस्वोतिनईसुनि
सजनी॥ बकुतदिननकीमेरीलपतिबुजाई॥ टेक॥ प्रेम
प्रीतिकेबंसेनपहरिकैं॥ षिमांमुवरितिलकतनुराने
मीलअमुषेनकीवेबिलाई॥१॥ षोडिसथंभलगेमंद
रकौ॥ हादसदलतहांसेजबनाई॥ बिरहनिपीवपर
सपूररावे॥ प्रीतिपकुपबरषेअधिकाई॥२॥ निरम
लजोतिनईचहूंवोरा॥ अनहदधुनितहांटेरिसुना
ई जनतुरसीआनंदआरतिसौं॥ सलितादोइसुषमि
धसंमाई॥३॥७॥ नैनाथकितनयेहो॥ रामबिनअ
नरूपदेषनतेंरहेहो॥ टेक॥ परबतेपबिमआये॥
नवौमुदयेहो॥ मेरडेडकीडोरीलागी॥ दशवैगयेहो॥
१॥ सहसरकवलमधिनिवासलयेहो॥ पूरनप्रका न

ग्रानतांत्रा सभैं षोये हो॥ ३॥ सतिसरोवर मधि निरम
ल न्हये हो॥ जन तुरसी मन मूंसनमिलिकैं॥ अंकूर द
हे हौ॥ ४॥ ८॥ हमारे ब्रम संनेही पाये॥ पूरब लै ब्रसा
दि राम दै॥ भागि बडे घरि आये॥ टेक॥ रोमि रोमि तति
सुमिरन बिना टी॥ दुष संतापन साये॥ जन तुरसी मे
रे जनम जनम के॥ आनंद अविनास पुराये॥ १॥ ९॥
आरोधौ रे माधौ॥ माधौ माधौ॥ आपन हित रमो जउत
टि कहू है जोग साधौ॥ टेक॥ उवत बैठत स्वासन की माला
मांही ही मांही॥ फेरि फेरि ची तिस्यौं॥ चित नाम स्यूं लेवां
औ॥ बिसरौ एन राम॥ नाम॥ दुष हरन सुष को जु धाम
जिनि जिनि सुमरयो जु जले॥ तिन ही जु पेद सुष लाधौ
॥ १॥ जन तुरसी सुमरन सार॥ महा मोषि को जु द्वार
न षसष जिनि लीयो धारि॥ धनि धनि वे साधौ॥ २॥ ज
नम मरन जीति॥ पाई अपनी आदू थिति॥ तन धरि
जिनि ऐसी कीनी॥ उलटि काल षाधौ॥ ३॥ १०॥ अपर
रा गा बिहागरो॥ जिनि आर तिसों नजे न सांई॥ तिनके
रहै मनोरथ मांही॥ टेक॥ ज्यूं बकूप की छाया॥ ऐसें बि
रषा जनम गवांया॥ १॥ सुकृत कछू न करतै पाये॥ ज्यों
आए त्यूं ही बसि धाये॥ २॥ तजि सके न त्रिगुनी माया॥
करि सके न मोषि उपाया॥ ३॥ थोथे ही थोथे ग्यांनी॥ बूडि
मूये ज्यूं मिरगी बेपांनी॥ ४॥ जन तुरसी वै अति पछिताये
जब जमदूत नि बांधि चलाये॥ ५॥ ११॥ बिलब कोक
मति करौ कबनाई॥ आपनौ भजन तरु घुराई॥ टेक
स्वास सिरांने जांही॥ वहं स्यौं औसो अवसर नांही॥ १॥

ा सो मनिम सरीरा॥ कहौ कहां रहै नीरा॥ तातैं बगदरन
जै॥ भजि गोबिंदला हो लीजे॥ ३॥ जनतुरसी सकु मत
ारा॥ जिनि जा मोते भये पारा॥ ध॥ २॥ ऐसें आवै कारै
ां हो॥ ज्यौं कूरम उलटाइ अंग अंगा॥ लैत पिटारे माही
टेक॥ ये बिषया बवन लौं त्यागि दे॥ बिमकनिकाकी
तांही॥ कोटि ग्रंथ कौ अरथ करतो ही॥ समझि देषि म
नमाहीं॥ १॥ इहि अगति तिन गावंतकी॥ और बादि जन्म
आंहीं॥ जनतुरसी अपने रिदा कंवल मैं॥ हरि हिरदै रिचा
रिस दांहीं॥ २॥ ३॥ यकु आवती अनूप जु है रे॥ जे आए
तिनहीं सच पाये॥ इहि निज एकु मने रे॥ टेक॥ सबद आदि
बिषया ये परहरि इह दौ उलटी लै रे॥ चंद चकोर लौं रि
दा कंवल मैं॥ आतम रूप चितै रे॥ १॥ निसि बासुरि तहां
ई लागा रहौ॥ कीट भृंग लौं होइ रे॥ ४॥ सकल सास्त्र को
सार हतो ही॥ सोइ चित धरिले रे॥ धनि वै संत जिनो यौं की
न्ही॥ उत मॉगत बवै रे॥ जन तुरसी तैं घिगाए बाजी कौं
म रहै जु ऐसो कै रे॥ ३॥ ध॥ ३५७॥ राग मारू॥ कोइ बू
कौरै बमनां जो सी॥ कहि कब आवै मेरा रांम॥ बिरहनी गु
रैदरसकौं॥ जियनां ही बिस्रांमा॥ टेक॥ ज्यौं चात्रिग घन
कौ रटै॥ पीय पीय करै पुकारा॥ यौं रांम मिलन कौं बिरहनी
तरफै बारंबारा॥ १॥ अति वती आरति करै॥ पीव मिलन
की चाहि॥ पल पल जोबन जात है॥ पीछै कहा करूंगी
आइ॥ ३॥ अबलाकौं सुष दीनीये॥ अंतरजांमी आघतु
रसीदास जन वारनैं॥ बेर बेर बलि जाइ॥ ३॥ २॥ अवध
रिआवौ हो साहिब मेरा॥ निसदिन पंथ निहारौं तेरा॥ टे

अबपीवतुम बिनदुषीयानारी॥दरसनदेऊदयालमुर
री॥१॥सूनीसेजकहोकौंरहिये॥बिनपीवमिलेबहु
तदुषसहिये॥२॥अबजनतुरसीअपनोकीजै॥अबस
परमिलियऊसुषदीजे॥३॥२॥अबपीवचरनसरनिज
येलीजै॥डरमतिसबहिकरीजे॥टेक॥मायानिसिदि
नमोहिसंतावै॥अबपीवतुमबिनकौंनछुडावै॥१॥
ऐसीमायामोहनीतेरी॥जिनितुमबिचिपारीमेरी॥२॥
जीयरेबहुतजनमदुषपाया॥अबकेराषिलेऊरघुराया॥
३॥अबपीवकालमोहिनितिमारै॥बलिजाऊतुमबि
नकौंनउबारै॥४॥अबजनतुरसीआयोसरनां॥बलि
जाऊमेटऊआवागवनां॥५॥३॥रमईयारूपतुम्हा
राहो॥मुकदिषलावोमेहरिकरि॥मुजलागतप्याराहो
टेक॥जोईजोईसुषसंसारका॥सबकीयापरहारा
हो॥तुमहातुमलागीरबी॥बिसरौंनलगाराहो॥१॥रू
यतुम्हारादेषीये॥दिलहोइउजाराहो॥जनतुरसीबि
लसैसदासुष॥ध्यांनहंमाराहो॥२॥४॥क्यौंजीवैवेबि
रहनिबोरी॥जिनकौपीवप्रदेसिबसतहै॥सुधिसंदेन
हिकोरी॥टेक॥निरषैनितिनैंननिमषनिरमल॥जे
मैंवंदयकोरी॥अतिहीबिकलहोइरहीरैंनिदिन॥ह
रिदरसनबिनुमोरी॥१॥बूझतफिरैजहांतहांसषी
येनि॥आतुरदौरीदौरी॥चित्तमैंचैनपरतनहिंचुष।
भरि॥लागिरहीपीववगोरी॥२॥अतिहीआतुरहरिद
रसपियासी॥रहीजमैकरजोरी॥तुरसीतेनलतबसव
पावै॥जबबांहगहैवैधोरी॥३॥५॥सषीमेरीनीदनसा

हो ॥पीवकौंपंथनिहारतैं॥सबैरैनिबिहानीहो॥टेक
बसखीयनिमिलिसीवदई॥मनियेकनूमानीहो॥बि
दरसंनकलिनापरै॥जीयेंऔसीबानीहो॥१॥अयुवो
ब्याकुलभई॥सुखिमधुरीबांनीहो॥अंतरिबेदनबिरह
की॥पीवपीरनजांनीहो॥२॥जैंसूंचात्रिगघनकौंरटै॥मं
छरीबिनपांनीहो॥जनतुरसीपीवबिनमिलो॥सुधिबुधिबि
सरांनीहो॥३॥६॥बिछोहैमरीएमाइरी॥बालसंनेहीगोबि
दो॥नहीदेतदिखाईरी॥टेक॥निसदिनकलिमोहिनापरै॥
तरफतेबिहाईरी॥पियपरदेसिनआईया॥जाइअवधि
सियाईरी॥१॥मीनांजलबिनक्योंजीवै॥कंवलाकमिला
ईरी॥औसैंमीतबिछोहैमेसखी॥मनमेंमुरझाईरी॥२॥मंप
रदेसनिबापुरीबिछुरिबरहांआईरी॥अबहीजानड
लनभयो॥उनदेसनिमाईरी॥३॥बहुतकदिनबिछुरेनये
वातैंअकुलाईरी॥नाजांनुकबमिलहिंगे॥विपीवसुष
दाईरी॥४॥जामिलीयेंआनंदहोइ॥इसदरदमिटजा
ईरी॥जनतुरसीबिलसैआतमां॥सुषसदाअघाई
री॥५॥७॥वैपरदेसीप्यारेहो॥आपअकेलेहोदूर॥
है॥हमकौंकरिन्यारेहो॥टेक॥क्यौंमिलीयेंक्योंजाई
ये॥महांपंथडुषारेहो॥मितेपरवतदोदूरदे॥सोटर
तनटारेहो॥१॥महाउजयानकबनपथ॥अतिरबने
दिनारेहो॥सिंघबाघगुजैंघनो॥अतिहीजुअकारे
हो॥२॥निसिदिनझूरैबिरहनी॥नैननजलढारेहो
पीवबेदेसदरसननही॥धृगजनमहमारेहो॥३॥
...आइहै॥होइहैजैजैकारेहो॥३

[illegible] लिकै प्यारे हो ॥ ६ कंत
[illegible] तुम क्य बिना सो हे मसी
[illegible] टेक तुम हो क्य न्य
[illegible] नौ क्य ध्यास ते क्या
[illegible] ॥ तुम चेतन हे मज
[illegible] क्य पिन दीन ताहि
[illegible] ॥ हे जलपत दासी जु तु म्हा
[illegible] जो बासै सरूप सु ष क्य
[illegible] ॥ ३ तक्य रूप क्य बिच
[illegible] हम सो मोह।
[illegible] ॥ ४ कहे स्यांन
[illegible] हमे
[illegible] गोम मयहि ५
[illegible] मम क्या सक्ति निवा
[illegible] [illegible]
[illegible] हम सरूप मातमप
[illegible] म चेतन मडु
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] नेहकी
[illegible] टेक जुवाज
[illegible] [illegible]
[illegible] ॥ १ [illegible]
[illegible]

हांपावनधरीऐहो॥२॥अतिकोउथिरिनारहो॥देषत
नवमरीऐहो॥जनतुरसीतनमनउलटिकैं॥निजनांमउ
चरीऐहो॥३॥१०॥नहिमेरैंआनसगाईहो॥मन साबाच
कमनां॥सुमरौंसुषदाईहो॥टेक॥यककआलंबनजि
यमहो॥निसिबासुरिगाईहो॥स्वासैस्वासहरिहरिज
पो॥तरल्लूंतरिआईहो॥१॥कोऊकहोएककहूनांही
कोऊकपरौपाईहो॥बुरीभलीबिसराइकैं॥हरिस्योंल्यो
लाईहो॥२॥सकलहितअनहितकीयै॥कलपनांमि
टाईहो॥जनतुरसीसलिताकूपकैगहौ॥सिंधसरनां
ईहो॥३॥११॥पांनीजपिनावनिरंबांनांहो॥जोतोदि
आरतिदरसकी॥जगुसूंदेकानांहो॥टेक॥साचासत
गुरसेईए॥समझावैग्यांनांहो॥लालचिलोनीबहुतेरे
तिनसंगिनजोनांहो॥१॥कूवैग्रबगुमांनमें॥जेजेलप
टांनांहो॥तेसूरषदेषतगये॥नवजलगलतांनांहो॥२
जिनिपांचौंरसपरहरे॥पन्नीसकियनांहोतिनकेमे
गिबिचरीयै॥परहरिभरमनांनांहो॥३॥यासंमिओ
रनग्यांनहै॥नांछिनकोऊध्यांनांहो॥जनतुरसीहरिना
वमोंरकूसदासमांनांहो॥४॥१२॥महापदमझिवतां
यारैंगूंटेकैं॥जपतपतीरथसबकीयै॥करिकरिजुसि
हायारेंगैं॥पंचम हारिपउलटिकैं॥मनमोंमनलाया
रे॥तिनहूपरमसुषपाईया॥जमदंडमिटायारे॥२॥ज
नतुरसीपूरागुरुमिल्या॥जिनिमेदलषायारे॥आत
मांमांहिआनंदपद॥परगटदिषलायारे॥३॥१३॥
किंनसचपायारे टेक

नजोरे आरति सूं सोई ॥ अपनो आनंद घन राम ॥ अलसा
व करी ऐन ही ॥ सुमरतां अनु कोनां म ॥ टेक ॥ अलसाये क
हे क्यों बनै ॥ अलसाये य हू ब सरीर ॥ दिन दिन बीसो जा
त है ॥ जौ वो के स र कोनी र ॥ १ ॥ जैसें धू हरि धू म के ॥ ना दर
बने ब सोइ ॥ ऐसें चिलकत देषीये ॥ धन जोबन ये दिन दो
इ ॥ ४ ॥ अपराधी अग्यान हौ ॥ अ सोच हो अधीर ॥ तु ब्कौ
डी सुष कारनै ॥ तुम क्यों षोवौ हरि हीर ॥ ३ ॥ पूरब पूनि पा
ई बयक ॥ सो जन्म मोलिक सोइ ॥ सो करतैं बू टि जाइगी
बहरि कहातें होइ ॥ ४ ॥ जैन तुर सी कहै समझायकें ॥ सु
नि लेक्क सीष अब येह ॥ सुषसागर सोई सुमरिल्यो ज
ब लग यह देह ॥ ५ ॥ १४ ॥ इननां नो शास्त्र नि मांहि ॥ जाया
तुम जिनि बहौरे ॥ वोवो आव जीवनू अलंपकु ब्बबु बि
तातें राम हि नांम निजु करि गहौरे ॥ टेक ॥ चारि बेद स्मृ
मृति आदि बिद्या अनंत ॥ कहां लौं पढै सुनै धौं जु को
इ रे ॥ सकल को सार निराधार निजानंद पद ॥ सोई रि
दै जु दिढ राषो जु पोइ ॥ १ ॥ कहं क्यूं कहं क्यू कथी इन
मैं नुय ॥ तातें निज निपट निदं चौ न आवै ॥ मधुकर प
रमल पक्कपलों जु सार ही गहौ ॥ मत ब्क्कु बिसतार नि
परिजु मूलि जावै ॥ २ ॥ जत अरु सत मांहि जु सारा रहै
उभै पन पकरि चित वौ राम ॥ अषंड अहै निसिद्धक
तां न लाभा रहो ॥ घाति स्यौं र ढौ जु प तिकौ नाम ॥ ३ ॥
त्यागिये त्रिगुन निरगुन स्यूं लागिरहो ॥ इहै सगपंथ
कौ अरथ सा रा ॥ जन तुरसी अपने सुधसरूप मे होइ

जल मिलि जल कै मंझारा॥ धं...पे। ते वि
कै सौ कै बार॥ ॥ को अंग सुमरै नहीं रांम तैं मैं
मुकति दातारा॥ टेक॥ विषवंछनलौं कांमन दीषंडौ
क्रोधन कीयौ परहारा॥ निज रलौ मुऊरतैं न ऊषास्यौं तै
कीयौ गवारा॥१॥ मोह मीर मारिन मन ता स्यौ॥ मकूजल
पारा॥ कथि कथि ग्यांन कीयौ जक हातै॥ रिदौ रकै लव
रा॥२॥ आज है चेति चिद्रूप रांम भजि तजि माया जंजारा॥ वै
गै कहा कहि हे अपराधी॥ बीतत अवधि करारा॥३॥ उव
सौ चाहै जनम मरन कौ! महाजल सौं इहै बारा॥ जो तुरसी
रअषंड रांम जपि॥ आदि अंति इकतारा॥४॥ १६॥ चल
प्रीतम सौ कहि लीजै॥ सुष सागर अविनासी राजा।
तषं गि आंनंद कीजै॥ टेक॥ कांम क्रोध माया मद मछर
इनकौ संग न कीजै॥ निरमल देव निरंजन पूरन॥ तहां
अंमृत रस पीजै॥१॥ इष सुष जामन मरन काल मै॥ नी
ग हित हां मकीजै॥ जन तुरसी आरति स्यौं चलि कैं॥ परम
जोति मिलि जीजै॥२॥१७॥ जा हिरे दिन ही दिन बीते॥ रा
म भजन बिन रीते॥ स्वासे स्वास पल ही पल छिन छिन
अंजुरी जल लौं जु बीते॥ टेक॥ उलटि आव अप्रपान अ
पनै ही उर॥ सोइ जाति सौं जीते॥ हदि मध्य मजि भगवंत
आपनौ॥ आदि अंति मध्य ही तै॥१॥ इह सुरति सुमृति
नि कौ मा स्मि॥ सब ही की प्रतीतै॥ सो ईम घरा हि हरि सु
मर आरति स्यौं॥ संतनि का रिज कीतै॥२॥ जन तुरसी
इह सब हिन कौ टीकौ॥ जिनि पायौ अरि जीतै॥२॥

रति रामनामपारहिगाये ॥ जयेजु ध्येसोईते ॥ ३ ॥ १८ ॥ जग
बूडेजलच्रमकेमांही ॥ कोऊकाढनहारानाही रे टेक ॥
केउजंत्रमंत्रांहीकेऊजरीबूटीकेमांही ॥ केउ ध्यंमनमौ
हनसाधे ॥ केऊप्रभुकौनिजभजनत्यागिकें ॥ चेतनकौ
आराधे ॥ १ ॥ केउदेवीकोउदेवताकेंउलागेसिवकीसेवा
केउभैरूबलिजुचढावें ॥ आनिनहरिकीभगतिबिन
सूधेजमपुरिचलिजावेंरे ॥ २ ॥ कदाचिकरमनित्याग
तौभ्रममांऊमनलागौ ॥ भ्रमनिहंबिटकावे ॥ तोपाप्या
जीवदुराचार ॥ प्रवृति ॥ कबुञौरउपावेरे ॥ ३ ॥ जि
निगुरपूरापायाया ॥ लेनावकीनावचढाया ॥ षेइउतारे
पाराजनतुरसीतेउबरिगाये ॥ औरनदीउपचारारे ॥
४ ॥ १९ ॥ भूलिपरेजियेभूलिपरे ॥ याबिषयाबनमांही
हो टेक ॥ कबहूनैनत्रवनांही ॥ रूचिरूपसबदके
मांही ॥ कबहरसनारसचाषे ॥ कबहूकामइंद्रीके
बाहे ॥ बचनबिषभरेभाषे हो ॥ कबहूगंधनमन
लावे ॥ नानांअरगजेबनावे ॥ फूलिरहेमनमांनहि
कदरजइंद्रीनिकारनै ॥ काकाउदिमनकरांहीहो
१ ॥ ऊचीबनीकनकअटारी ॥ बिचिबिचिवेदनजु
किवारी ॥ मनबंछतभोगकरांही ॥ हरिनाम सुधा
सिंधपरहरें ॥ बिषेहलाहलषांहीहो ॥ २ ॥ असगज
बहमानिकमोती ॥ नवनवजोबनीजुजोती ॥ लेइन
हीसौंमनलाया ॥ तिनकोडीगहिकंचनहास्या ॥ हीरा
जनमगंमायाहो ॥ ३ ॥ पंथप्रभुरातननहीपाया ॥ ज्योंह

धाया॥ तातैं परपद पायानां
हो॥ चोठै लगि कोई काया हो॥ ४॥ जे हरिनाम हिलागे मानें
सो वतसे जागे॥ गहि गुरु आतम ग्यानां॥ तिनें हरि चैनि सतुरि गये
औरर हेवार अग्यानां हो॥ ६॥ जन तुलसी गाथा गाई औरन
तिकी मति व्यौरि सुनाई॥ जिनिय कुमंत निजु रजु सारी
जे समके तेई साधव हमनये॥ जो अैसे वैरागी हो॥ ७॥ २०॥
काल समान को गरिपनां हो॥ ताको है करि न जि अपनौ पी
वारे जीव समझि सदा ही॥ टेक॥ सनें सनें आवई जु अैसे
जंपूरबा रघ नांही॥ आइ अचानक ग्रसै जीव कं॥ जाम
लोग के मांही॥ १॥ जोई जोई तन धरि आया जग में पतर सदि
भावत ताही॥ ब्रह्मा आदि सकल बिस्व कंपे॥ निरभै ता
कहूं नांही॥ २॥ चलत मैं महा मो बिपद मांही॥ परयागहि दु-
आ ही॥ बिचि हि षंड षंड करितन कौ॥ लेडा रैब कहा ही॥
३॥ सपत दीप नव षंड आदि दै॥ तीनि लोक सब गहो॥ ज
हां तहां डर निडर निबर कौ॥ तिन हरि सगति बिनां ही॥
४॥ इहै जांनि अब बेगै न जि अपनौ॥ सावधांन होइ सो
ई॥ जन तुलसी इहै वेर बरीये॥ औरन वैर किलाई॥
५॥ २१॥ हरिगुन गाइ रे गाइ रे गाय रे॥ मनसा बाचा क
मनां॥ उलटि अभिअंतरि आइ रे॥ टेक॥ इतवत या क
ही चितवनि लगि॥ कहा रहौ अलसाइ रे॥ स्वास स्वा
स पल घरी महूरत॥ तेरौ औसर बीतो जाय रे॥ १॥ बार
बार उनमान आपनें॥ तौ हिक हूं समझाय रे॥ जो चाहै
प्रभु को अब अबै सुषा॥ तौ अलप सुष ही बिसराये
रे॥ २॥ गुर गमि मिला गिवडै तै पायौ॥ नाव निरंजन राय
रे॥ मोहीरा कौडी के बदलै॥ कुमति देह बहाय रे॥ ३॥
जो सुनौ चाहै सब मुक्ति कौ॥ हृ ग्रंथ ग्यानमंत॥ अरथ

दुहै ग्रोपा दूरे ॥ जनतुरसी नजि प्रेमप्रीति सूं ॥ ग्रपनो रामग्रपा दूरे ॥ ६ ॥ २१ ॥ ग्रबकी बेर जो मिलनै पाउं ॥ तो लूं घिजाऊ सकल कृतबाजी ॥ बकुरि न मन कूं जलि ग्रा ऊ ॥ टेक ॥ ग्रासा बंडि ग्रबंड ग्रराधौं ॥ त्रिष्णा तरंग मिटाऊं जनम मरन की ज्वाला लौ लै के ॥ दरि जलि सी चिबुजाऊं ॥ १ ॥ मन ही जीति पवन बंद लाऊं ॥ पचौ रिपु पल टाऊं बुधिक रौं धीरनी र डिढ राषौं ॥ ग्रमक मैन सांऊ ॥ सुषनि धान सोई के सुषमे ॥ चीन ही लाड लडाऊं ॥ जनतुरसी ग्रपने प्रभु कौ मिलि ॥ महासु मंगल गांऊं ॥ ३ ॥ २२ ॥ सषी री नाजगा इ बंकत ॥ जगै गोग्रानंद घंन तौ करै गो मम ग्रंत ॥ टेक ॥ हूं बतदो उनां दीनि हं चै जानि बयेहा र ब्रिं जनलौं कै जो दिंगा रहैगी नकोऊ नेद ॥ १ ॥ ग्रहंकार रूक है सुनि बुधिमषीरी ॥ यक्कु जु ममतकानि सकल कुल वेकी यो चाहै ॥ तौ ग्रब ग्रैसी गति ॥ २ ॥ यक्कुप्रकृतिय कपुरूषजिंनि ॥ इन मेन उपजि है इहै बंबेक ॥ तो हं बतक हा ग्रौर ये ॥ इन मैन रहै को मुझये का ॥ ३ ॥ ग्र ग्रक ग्रादि कुट बचतु बिस ॥ महाप्रले के जांइ ॥ सुध चेतन पुरुष वुझ ॥ सोई मलेव हराइ ॥ ४ ॥ ग्रस्थूलसूक्ष्मालिंगा ग्रलिंगलौ ॥ पक्कहं मरोबल पांन ॥ सो सकल निरमल होवै ॥ जगतपिता ग्रग्यांन ॥ ५ ॥ ग्ररध उरध दसौं दिसा ॥ दरसै न्याकौ रूप ॥ जनतुरसी ग्रैसी बदीं ॥ उपजत बो ग्यांन ग्रनूप ॥ ६ ॥ २४ ॥ ग्रहो बीर मेरौ इदै सुजाव ॥ पुरुष कौ निरबंध करै ग्रपनौ हकरि जुन माव ॥ टेक ॥ हौं ही बांधौं बंधनि

॥हूंहीदेउबुडाइ॥रूं धंजादेवलपवनबासी॥त्रिर
सुरजाई॥१॥ हूंहीडंयसुमनौगानगाऊं॥पापसुरूपे
दू॥ हूंहीलेअपबरगकरौं॥उन्नैरहितग्यानग्याऊं
॥रूंदहनदारनदगधकरौं॥आपहूंहोइस्वीना॥रूंगु
हथिनिरगुनउदैकरौं॥हूंहूंजुकैजाऊंलीन॥३॥जहां
तहांजीवयऊ॥ हूंनाहीतहांयहसीवा॥जनतुरसीजिनि
समझीवयऊ॥तिनअयेकारिजकीवा॥४॥२५॥उलटि
चलहिनरे मनअपनेध्यांन॥हमतुमदोऊअघटवापतु
कौ॥धरैनिरंतरिध्यांन॥टेक॥लगपरसौकहांअलपदूहि
नसुबा॥ये धूरिजुकैसेधांम॥त्रियपीकौस्वपनलहूवनितहि
श्रैसौयौनगतजिहांन॥१॥बारबारमितकहौंतोहिह॥
नपदेसौंयऊपांन॥वतिलौंमी कुंश्रावपूग॥नौचाहैय
दनिरबांन॥४॥ पटेगुनेकेअरथजुयेहो॥श्रौरअफल
संबजान॥विंदअकोरलौंचिंतआतमा॥आदिअंतिहूकतान
॥६॥अजहूचेतिचेतिअभागिहो॥यकमायाअमअग्यान॥जन
तुरसीसुधहोइसुमरिआपनौं॥पूरनब्रह्मनिधांन॥६॥
॥६॥समझिसमझिमनमेरानाई॥हरिहितजिअनंतकहै
जिनजाई॥टेक॥जायजहांरयाकूपसारा॥तासौंलागिहो
हजिनिआरा॥१॥याचौकहांविषैबनमांही॥यामैदुषपावै
सुषनांही॥२॥जैसेंदीपमाहूंपतंगा॥श्रैसेमतरजैविष
संगा॥३॥मांनिसबदसतगुरकीबांनी॥हरिबिनचैननदी
सुनिप्रांनी॥४॥जनतुरसीरांमसंभौरै॥यकदिसआवै
रयहंमारै॥५॥२०॥ समझिनरचेतिरेनजिलेगोपाला

फिरि पीछै पछिताहिगौ॥ जम पकरि करै बेहाला॥ टेक
या माया मैं काग हो रे॥ का रचि रहौ गंवार॥ दिन दश्क
सुष कारनै॥ पीछै दुष होइ अपार॥१॥ मेरी मेरी करि गए
रे॥ राव रंक सुलितांन॥ काहू कै संगि ना चली॥ सब ठे स
ए मैं दांनि॥२॥ समझि समझि साची कहू रे॥ मत भूलै मा
या जालि या मैं दुष बहु पाइए॥ सुष नांहि न एक लगा
र॥३॥ मन सा बाचा क्रमना रे॥ यह अौसर फिरि नांहि॥
जन तुरसी हरि कौं भजौ॥ ज्यौं मिलौ परम सुष मांहि॥४॥
॥२८॥ औसा को ऊ है रे या जग मांही॥ जाकै दरसि सच
पाइए॥ परसैं अघ जाई हो॥ टेक॥ निरबैरी निहकांम
ता॥ सब कौं सुष देवै रे॥ रचै न ही संसार सूं॥ पति कौं नि
ति सेवै रे॥१॥ रज गुन तजि तम गुन तजे॥ तजै सत गुन
हू का संग॥ दोइ पष दूरमति सब तजे॥ रचि रहे रांम कै सं
ग॥२॥ आदि अंति मधि एक सूं॥ तन मन लै लावै रे॥ ज
न तुरसी हरि कौं मिलै॥ मिलि कैं बहुरि न आवै रे॥३॥
॥२९॥ सो जोगी मेरै मन भावै॥ मन साजारि बिरह तत चढा
वै॥ अनहद सींगी बावै॥ टेक॥ अंतरि गति मैं आसन धा
रै॥ इड़ बिधा हरि गावै॥ चित बित उलटि राम कौं सौंपै
बहुरि न भव जलि आवै॥१॥ तजै बिकार जैं अभिंना
सी॥ हरि चरनौं चित लावै॥ मन पवनां राषै घट मांही॥
उनमनि जाय समावै॥२॥ उलटि नैन निज नूर निहा
रै॥ ग्यांन ध्यांन ल्यौ लावै॥ जन तुरसी सोइ जन जोगी॥
मन निज मन हि मिलावै॥३॥ ॥३०॥ नी येरहै प्रेमजल

नैंन॥५॥तिदिवंसगोबिंदगुनगावत॥इहैभगतिमईय
याश्रैन॥टेक॥कायामेंकमैरतानमामें॥उचरैगद
गदबैंन॥मनषषायगलिजांहिमैनलौं॥भजतराम
सुमदैंन॥१॥कबहूहंसैपायसुषरामकौ॥कबहूचिं
तांदुखचैंन॥छिनबिसरतहरिभरिनरिरोवैं॥पीवबि
छोहेश्रैन॥२॥सोईसंतजुऐसाकोक॥जाकोइन्है
जुमैंन॥बिहबलहोइभगवंतछिपावैं॥नहितनकी
सुधिसैंन॥३॥इहैभगतिप्रेमाप्रभुजीकी॥जनमम
रनकीदहैंन॥जनतुरसीमहामोछिफलदाता॥बेद
नबरनीश्रैन॥४॥३२॥कैसेपईयेदरसतुम्हारो॥य
कुमनमुगधमहापदपरहरि॥करतबपरपंचपसा
रो॥टेक॥जहांझूटकीयेतहांतहांधावै॥कहींनका
हूंकोअंगमैंआवै॥लगतआंनरसप्यारो॥कुमनिषु
संगसुमतिसूंअनरस॥मांडिरहौडरआरो॥१॥बु
रैनलेगुनसबैअहारो॥याचरूवकीसुधिहीनसा
थि॥सोवतसांझसंवारो॥कबहूनजागिजपैजगजी
वन॥होइजगतसूंनारो॥२॥प्रेमप्रीतिसोंवचौ
नांही॥सुचिजुरहौमहामैंतैमांही॥होइकैनिल
नतिकारो॥जनतुरसीहरिकेसुषमांहीकैसेहो
इसंचारो॥३॥३३॥रागधनाश्रीमारू॥तबनल
पईथेदरसतुम्हारो॥यकुमनदेतकुहेतसकल
तजि॥होइभरमसौंन्यारो॥टेक॥चितते सबचतुर
ताबिलांहीं॥पंचूएकंतहोइतनमांहीं॥करिन

हि सकत यसारौ ॥ जाइ गार ख्याल तो न होइ कैं ॥ बकुरि
न देइ दिषारौ ॥ १ ॥ जहां ते उनत हां मन आवै ॥ तामन
मधे पवन समावै ॥ लगत न करितारौ ॥ २ ॥ निरति
सुरति दिल मिलि अग्नि अंतरि ॥ निसदिन करत
निहारौ ॥ ३ ॥ चंचल बुधि बिसर जन होवै ॥ सुमति सुंद
री मिलन संजोवै ॥ देजांहि करम किनारौ ॥ तुरसी क्वां
न बसै दरावै घरि ॥ माडिर अचल अहारौ ॥ ४ ॥ २२ ॥
अहो बीर वो इघर मोहि बताइ ॥ वा घर बिन मोपे
रहौ न परत है पल पल कलप बिहाइ ॥ टेक ॥ इहां
मरमुत बकुते दिन बीते ॥ उपजु गतो अधिकार ॥ अ
ब मेरै मनि अैसी उपजी ॥ पर सो परजु के पाइ ॥ १ ॥ ज
हां रबि कोटिष कासक हियत है ॥ तिमरत हिद
रसाइ ॥ आदि अंतिम धि अस्थिर हि होइ कैं ॥ रहै
संत तहां आइ ॥ २ ॥ जहां सदा बरत तइ कराजी
डुती सक नहीं काइ ॥ तुरसी आत मत बसचु पावै
ज बवासु हि समाइ ॥ ३ ॥ २३ ॥ सषी री वो हच
र कहीं एह री ॥ जहां जोति जगामगे सदां ही ॥ बजे
अनाहद तूर ॥ टेक ॥ जहां तिमर वहां त्रिबिधि ता
प नहिं ॥ नहिं उगवै ससि सूर ॥ जामन मरन जुरा
जम कौ मै ॥ तहां न आवै सूर ॥ १ ॥ रहै कहां कूवेसु
ष मै रचि ॥ इहां न जैइ दुष सूर ॥ पेम सहित चलपु
र सिषां न पति ॥ मिटि जाइ अस जुअं कूर ॥ २ ॥ मैं
तै बिसर बिसर भरमादिक छाडि कै बधि हव

क्रूरा। सुषबुधि होइ सुमरि प्रभु अपनौ॥ तौ पैठै नि
जनूर॥ ३॥ जहां गऐ हूदां की होइ अनूरस्त चि॥ जग
दीसै जगा धूरि आदि अंति मधि माधो जी की॥ यहि
येस दा हजूरि॥ ४॥ मन दा जीति पवनै दृढ उरधरि
यां चौं गहि चूरि॥ जन तुरसी कहै अरति स्यौं चलि
कैं रहियै पद मै पूरि॥ ५॥ रूप॥ बीर प्रदेसी दो॥ क
हां रहौ इहां आइ॥ चलि रे जहां तौ हिलै चलौ॥
तहां बसै निरंजन राइ॥ टेक॥ चारि दिसा चौरासी
पुर मैं॥ फिरयौ बहुत हि बार॥ अब बहुरयौ कहा हेर्कं
नरमै॥ परहरि जगु को प्यार॥ १॥ जहां उपजै बिन
सैन ही कोऊ काल हू सकै न बाइ॥ तहां वानिरस्रै घ
र कै बैवे॥ तेरो सब संताप न साइ॥ २॥ जहां अब ग
ति आनंद बिराजै॥ बेअनंद तहां नांहि॥ जहां के
गये बहुरि न हि आइये॥ याकूं बेजगु मांहि॥ ३॥
जहां नौ तिजगा मगोय दा ही॥ तिमर न हिंदर साग
कुरसी आदि अंति अस्थिर तहां॥ रहिए वास सुष
दास मांहि॥ ४॥ रू घी॥ अरे बीर उन देसां चलि जाइ
ये॥ तहां बसै अबांन अधाया॥ मिलि रहियै महा प्रभु
सौं॥ सुष आनंद होइ अपा या॥ टेक॥ जहां चंद सूर की
गम नहीं॥ उदै अस्त नहि होइ॥ जहां तिल नहिं तापन
पीर सै॥ मिलि बहुरि न बिछुरै कोइ॥ १॥ जहां कोउ
मरै न जनम ही॥ नहि आवै न हि जाइ॥ जमकी त्रास
तहां नहीं॥ जहां आनंद रस दा बिहाइ॥ २॥ जहां अन

हद ब्राजे बाजही॥ सदा अंबंड धुनि होई॥ सुनि सब्द पावे आतमां॥ निति सांई के संगि सोइ॥ ३॥ जहां प रम स्वरूप रमतेज है॥ परम जोति प्रकाश॥ परम संत तहां बसत है॥ औरन कोऊ तनबास॥ ४॥ जहां इ क राजी बरते सदा॥ नाहिन दूजी आंन॥ जनतुरसी चलि जाईये॥ मिलि पांन होइ निरबांन॥ ५॥ ३०॥ अ रे बीर सूक को सागर राम है॥ सोई सुमरि चितलाइ कहां भूत बतंत लों फिरै॥ हं तौ हि कहूं समझाइ टेक ये कलिजुग के टिक रूप हैं॥ को टिक लहू की षी नि॥ तामें परि पची ये नहीं॥ तूक सो हमारी मानि ॥१॥ या भ्रम जल में बूडे घने॥ करि करि कोटि उ पाइ॥ सच किनहू पायो नहीं॥ याकूं बैरंगि लपटा इ॥ २॥ जोई जोई सुष करि ध्याइये॥ सोई सोई सुष नहि होइ॥ सुष है साचे नांव में॥ तामें लै सुरति समो इ॥ ३॥ बाजी बिरचि मजीये सदा॥ निरमल हरि को नांम॥ जनतुरसी कारिज सब सरै॥ हरि सुष में होइ बिश्रांम॥ ४॥ ३१॥ कथि कथि गये ग्यांन अनेक॥ कहै जैसें रहै तैसें॥ तेको ऊ बिरला एक ॥ टेक॥ बात कहै बैरागकी॥ बिधि सूं जू मुषा हबना इ॥ ग्रिही कैसे करम करै॥ कैसें मिलै राम राइ॥ १॥ सहंसकृत प्राकृत भाषा॥ बाचक ग्यांन प्रबीन॥ तक्रि कौं जांनै नहीं॥ उर माया के आधीन॥ २॥ वे हद घर धौं को ऊ और है॥ जहां गाऐ गात होइ कांम

धलोत्तअरूमोदको॥सुपनहूंनसुनियेनांम॥उ
बिषैनिसंइंद्रीफिरैं॥चितचेतनिलगिजाइ॥प्यो
कीघापतित्तये॥असीसदाहोइआइ॥४॥अरध
धदसोंदसादरसैजुएकोराम॥कल्पांतकेनीरलो
नासैनहूंसरैनांम॥५॥जनतुरसीअकथकथाय
मुषतरिकहीनजाइ॥जिनिलषीतेनिबावजल
रहेमुषहीसमाइ॥६॥३०॥वऊघरहूरिदै
॥जिहिंघरिपऊचेसाध॥मनसाबाचाक्रमनां॥
काटिसकलअपराध॥टेक॥जहांपयीलनजाई।
बीहूंनदेतदिषाई॥अतिउलजनवदेसा॥सुरन
मुनिबहूथकिरहे॥करिसकैनकोप्रवेसा॥१॥
हांआदिअंतिइकराजी॥मधिहूंनहिंहोतउरा
॥सदाएकरसक्राजे॥तहांअनूपअबेआनं
सूं॥आपनिरंजनराजे॥२॥जहांउषसुषनांही
या॥तहांकागयाफिरिकोऊनांया॥सुषमेर
हासमाइ॥बहूरिनकबहूबिछुरै॥जौवसंउह
चलिजाइ॥३॥जहांऊगैचंदनसूरा॥तहांबजैअ
हदतूरा॥जहांजगमगजोतिउजारा॥जनतुरस
परसइ॥जौयांजगतैन्यारा॥४॥४०॥तहांतु
तकोकोजानै॥जहांअचैनआपहांअ
बुधि॥मननांनांरसबांनै॥टेक॥होइरहेउनमतअ
घरे॥क्रूगेगिरबगुमांनै॥साधसिधकीतनकनबू
॥नोइरहेरसआनै॥१॥मिथ्यास्वादस्वारथ

पु

औरतमंत ॥ कुरीमलीन [illegible] मानै ॥ क्रियाहीनकतूघन
कुबुधी ॥ कुरी साधिनयांनै ॥ २ ॥ सतरजतमतीनोंकी
प्रकृति ॥ इहै जु थितिकरि मानै ॥ तुरसी चौथापदकी
थितबनि क्षिन हूंन चितमै आनै ॥ ३ ॥ ४१ ॥ जहांतु
रीयातत प्रगटभयोरी ॥ जहां त्र्यचैन आपदा भरम
को ॥ बादरफटि जुगयोरी ॥ टेक ॥ गरिगयो गरबगु
मांन बिलांनौ ॥ रागदोष जितयोरी ॥ मनलयो मगन
महासुषमांही ॥ इतिनसेंकतितैरी ॥ १ ॥ उदित भयो
बिग्यांन भानउर ॥ निसबिनाव छितयोरी ॥ तुरसीप्रा
ननिरबांन समानौ ॥ बहुरिन आवैहतयोरी ॥ २ ॥ ४२ ॥
मेरेनैन समानै नूरमे ॥ पावन परसि पावन भये ॥ अ
पावन करि दूरिरे ॥ टेक ॥ उलटि आयेउरउरमांही
तहां देषी बसत सपूररे ॥ जनम मरनको भै मिटयो ॥ फि
रि आवै नहीं अंकूररे ॥ १ ॥ जहां बिन ही दीपक ज्वा
ला दिपै ॥ तहां बिन कर बाजे तूररे ॥ बिन ही पायन
पकुचीयो ॥ मेरो प्रान निरबांन हजूररे ॥ २ ॥ सुष
सागर बासो भयो ॥ दुषदरद भयो दूरिरे ॥ जन तुरसी
बस्त बस्त ही मिली ॥ अब बिछुरन होइ न मूररे
॥ ३ ॥ ४३ ॥ जीया दैष हूं उषको मूर है रे ॥ जिन करो
जिनिकरो जिनिकरो काहूं ॥ इतौ हीमोहि अ
करे रे ॥ टेक ॥ हिरदाकंवल जु मांझ बढि बिस
तरि रह्यौ ॥ मानो बिरष बंबूर हैरे ॥ १ ॥ नैन अ
षकति मोहै जुटेटीकरि ॥ चितवै क्रोधीकूर

॥हूँ दउपाइ उस देइ निजदासकौं॥ सांतिपद कैं
रि हरि दैरै॥ यद मेरौ सत्रय हमित्र मानै सुगाध॥
गदौ मदिर दौ पूरि रहै रै॥ ताउप हिल्या प्रनागि
बिद न्नजे॥ सोई सांवत स रहै रै॥ आ देवई संप
सुधर उदे करि॥ आसुर कौ करै त्रूर दैरै॥ जन
रसी सोई संत सुष जोगावै रहै सदा हरि हजूरि
रै॥ ४॥ ४४॥ राग दोष रहित होइ रामभजन गाइ॥
लटि अपनै उरमांझ आगै पद र॥ जाइ रे जाइ त
न बदीत न यो जाइ॥ टेक॥ कांम अरि जीति सु बिचा
के बाण गहि॥ क्रोध कलबिमां जल सी चि सिराई
नक्र ह मोह मद आदि दोषी जु ए॥ वासनां स
ति सांणि षोटि बगाइ॥ १॥ बसे से हंस ई कई
महामणि न की॥ बैजंती माला जु फिराइ स्वां
स्वांस उरमां झहरि हरि सु मरि जो तेरी सुफल
इयह काये॥ २॥ इहै जोगा बैराग नगति कइ है
न गुरमारि गदी यौ है दिषाइ॥ तीब रहो इनांव
नै ल्यागि आलस अ सुरा॥ हिरदै सुष इक ध्यान मू
न लाग्ग॥ ३॥ इहै हरि जन बिधि उतम आर्या जु तौ
हि॥ सुरति सुमरतिनी कैं जु निरताइ॥ जन तुर
जडत्ताव नां जु दूरि करि॥ रहौ उरमांझ चेतन
लाइ॥ ४॥ ४५॥ जीया राग का हू स्यू जिनि
रै रै॥ अहै मपांन बैराग नगति इहै॥ इहै सब कौ
हउरधारौ रै॥ टेक॥ कै उआवै सुष पाय अस

गी ज्ञे ग्रं

क्षेतनन गग

नयस्योकंहेज

टनिरसनकोष्य

नीगतसं २ इ

को) जेगफलंधिनव

रामगमहिजम

ग ३ ५ ६ ६

कोटिशास्त्रसम

योनीकैजुनिर

बजनलोबिरसहि

गती नकोगिरहमा

श्रीहिम्रतिणधि

तेनाविररमेवस

आत्माध्यानमां

यरपीतिताई

किवे पुरनहत

ज्ञानमुनिहक्षो

निलोहाविहे

होलोइ ग्र

मातानी

करहेनहाम

तामेधिोहहोय

तबिचारै॥नजैरामअबिनासीहो॥टेक॥बिश्व
रहिथानबिराजै॥हरसपरसतेमनासीहो॥म
करणकानामनिरमलजल॥न्हावतहीमलजा
हो॥१॥बिवेकुआदिश्रुदसालकसंन्या॥येई
नौसंन्यासीहो॥प्रकृतिपुरुषबिवरणाकरै
॥ग्यानगंगातटबासीहो॥२॥यामेरदैबदै
दूतवत॥सदैषकलकीसमाहो॥बमासबू
दैर्धरिकौनजै॥कोटितीरथफलपासीहो
॥३॥याहीमाऊबूदमाधौजी॥बैकुंवाकेबासी
॥या॥ [illegible] हीमाऊसुरतरुसुराधि
पति॥बैबैकरैबिलासाहो॥४॥याहीमाऊब्रह्मा
वलासन॥यामेसकरकैलासीहो॥याहीमाऊ
नगुनरहिता॥हैसमदेवअबिनासीहो॥
॥५॥याहीमाऊउलटिकरैदिठबासा॥नबीक
टलगासीहो॥जनतुरसीसोजी॥कनमुकतिफ
पावै॥अगतिनकबहूंजासीहो॥६॥ध्रुवाम
कोकपूरबतनधावैहो॥पूरबदिसारागको
सा॥जाइजीईडषपावैहो॥टेक॥जहां
प्रलयप्लानआपदाघनेरी॥घुणालोघुणत
बिहावैहो॥निहचैनिजसुषसुनहिनैया॥बि
थांजीवबहिजावैहो॥७॥जहांइडीनबिषै
पाहिलागीरहै॥त्रिषनांफलनबुभावैहो॥दो
तधावतअवधिबरीतै॥सुषसंतोषनआवै

[illegible] गग्नोंडा
[illegible] कंजमा होट
[illegible] नरबोंबयांश्मो
[illegible] ग्रसाहयग
[illegible] ध फरब्बहै
[illegible] प्रहिलो
[illegible] ध्यानलगावैलो ध
[illegible] बिसबबनलोन
[illegible] परमजोति।
[illegible] नाम मा
[illegible] होवीब्रह्म।
[illegible] गति
[illegible] संतक्कौं
[illegible] बालो ६
[illegible] बाचयाव
[illegible] टक।
[illegible] छतमाधन
[illegible]
[illegible] जेको
[illegible] छतमाबोधि
[illegible] छत
[illegible] छतमाहिमटटहर
[illegible]

वगाहीकेनिसाननेजैबनै॥अंतकीबेस्कोऊन
साथी॥३॥ तातअरुमातभगनीभ्राताबंनु॥दा
दासीपरिवारसोई॥सकलमाटीमिलेगिलेए
ननगाये कृष्णभजनबिनअवधिषोई॥४॥
कहांबौकहौबरणौंजुमैकहांलौं॥येकहीमृतग्या
सारा॥जहांलौंदृष्टिअरुमुष्टिमैंआवै॥कहेगे
असथूलनांनांबिचारा॥५॥येकहीमृतगांहें
रततपञ्चबीचियेहा॥हेम्बर घ्रौ वोटमहाकोटगो
ताहूकोलेषनजुहुनरपसो॥ताअगोचरिबिंद
जाई॥६॥याहितागेतनत्यागसबकोकीये
हित्यागिबेकबुरद्योन सोई॥याहीमांकतेई
अंतरत्मत॥याहीलागेतेत्यागहोई॥७॥सागरस
बेकउरधाये॥त्रिमूलपरपंचकोकीयोपर
हार जेनतुरसीधेनिधेनिनिजसंतवे॥अपनेसु
धसरूपकरिरहेसंचारा॥८॥५०॥६०६॥राग
।हरिबिनमननहीबांधतधीर॥सोचतहीदि
जादुसषीरी॥नैननिबरषतनीर॥टेक॥जादि
नैंहरिबिछुरेमनजनी॥कछिनपरतसरीर॥बि
हबिथाउरअंतरिमेरै॥कोउनजानतपीर॥१॥
जायसुबक्रिनआवै॥उहोआनंदसुष
मूरि॥संदेसोकोकेआनिसुनावै॥अगमअगो
॥२॥अतिआतुरह्वैउमगिचल्यो॥सु
ननैकनचाडततीर॥जनतुरसीबिरहनिभई

प्रभुकीराह २, हरिस्मृति
हरिहिरिमरान टेक हरामहिवैरीतरि
आनन्दनाद आर्गमननदीभीतिनिरेतरि थ
नीनानानन्द हनुमारिवैरीत्मारति
दीनबन्धुबालिकनद आकरिणीरवेकन
जीतनपरिगाद जैसेगाद्री
बेदीपाम तिसआसुरिकुराह सूतकीयु
नरीलितवीन ववहरि २, हो
मनहर गराकी ममेकेवनमा
नवनाटनहै मरेमत श्रीरनीव
वलिलीमा नव हेतव टेक मा
लोगेननद्न तिनमहेरमान्त
करीवरे गकीहर
रामहमलेक
मनमाकोक
कनहन
मांसमांवे नवौ
४ मौई रातमोइनतमा
५ ३ मना।
नतमकोकोक

विरला॥ गहि गोब्यंद गुन गावै॥टेक॥ घटि घ
रमांही सुंदर सदा ही॥ नाना रूप बनावै। जोगी ज
तीतपी सन्यासी॥ बिष बन मैं न रमावै॥१॥ बडे बडे मुनी
यरप चिहारै॥ पे काहू हाथि न आवै॥२॥ मन साहा
थिकी ये सब कोऊ॥ मन साहाथि न आवै॥ जन तु
रसी मन सोई जीतै॥ जो प्रेम सहित पीव गावै॥३॥१
॥७॥ काहे कौं गहर करत गुन गावत॥ घरी घरी प
लही पल प्रानी॥ हरि बिन जनम सिरावत॥टेक
याचेती निगुन सौं निसन्यू घट॥ बहु दिन लागे व
नावत॥ बिन सत बरक बुनहि लागो॥ किरिपी
बै पछितावत॥१॥ ज्यौं तरवर के पात जात ऊ
बहुरि न डारी आवत॥ यौं तन जाइ ध्याय त्रिसु
वनपति॥ संत सकल समझावत॥२॥ यहु तेरौ
सरसु तेरी बरीया॥ यहु समयो फिरि ना वत
जन तुरसी भजि रामरैं निदिन॥ सुष मैं सुरति
मावत॥३॥ ८॥ निडूने हनकी जैनी चा॥ निडु
हकी ये तन मन सब॥ जा रै जु राकुमीचा॥टेक
जु राम रटन भव दरन सु रारी॥ जित जिनि डू
निडूने हत जे बिन गाधा॥ देह होइ जरि बेह
आसन साधि अंगाधि परम पद॥ निरति
तिउलटाइ॥ सुष दरि दै रटि राम निरंजन
कचित एकै नाइ॥१॥ अलप अहार अल
अलपलुया अनची जो॥ अलपर

[illegible] सीगमद श्रीजीकेदलकीनै ३ श्रामाहि
[illegible] माइदकोहि इदकीतिनमनयांन गोम
[illegible] माहिकैजौइरहै धांध्रोतरहहिश्रांब
[illegible] लिगकोगनयगनजम गायगनितथ
[illegible] श्रोपर्निवश्रातमां नहमकनम
[illegible] कि ५ ६ श्रमन गालैकोकरनजवाड
[illegible] नोवनलाह गाग मु इकोछितयेकै
[illegible] कैनतयायश्रोनश्रवरिगति (
[illegible] पाटिजाड श्रोमकोधश्रहैकारन
[illegible] नैश्रोनस्यों लाड १ कियारेलिता
[illegible] गाप्रोबिसनय जनदरमी
[illegible] रजाया गेतम नमेमिटजाय ३
[illegible] नकोइकोकरनकी श्रीयाकायंरहे
[illegible] दैतेनंबैरनौ हैके मेमेरोकहि
[illegible] श्रमालकेन मनकेवनाहिरती श्राककम
[illegible] मैयोरावहै श्रोवतयारिकोती १ सुन
[illegible] श्रमदेनोवन मानकलिकिती श्रा
[illegible] सुनवनमन श्रीनिनहीसू
[illegible] ती ३ [illegible] किलामांनिधमनश्रामन श्रा
[illegible] किमी श्रेदनीश्रपालयोलागिला
[illegible] नगरैश्रगती ३ जिहिमिरिजो
[illegible] रमांकेमनि माहिनरविमूरती
[illegible] नमनद्दे सुमरनश्रानयती

॥ ७॥४८॥ ॥ ७१५॥ राग ललित ॥ जागि जागि जागि
जागि रे निद्रा जु त्यागि ॥ लागि रहु हरि नाम सूं । तेरो
आऔ अवसर जाइ ॥ आलस करो कै रे अंध ॥
त्यागि यह आपो न फंद ॥ आरति सूं सुमरि लै जु
आपनो राम राम ॥ टेक ॥ काम त्यागि क्रोध त्यागि
लोभ कै लगाइ आगि ॥ मोह हनि वारि मद मछर
तजि देह ॥ मन पवन उलटि आनि । हृदै कंवल धरि
जु ध्यान ॥ आतमा आराधि ॥ कादेन अमित लाभ
लेह ॥ १ ॥ मनि षजन मअनूप पायो ॥ आ औ र
तन दाप्यं आयो ॥ सोई लेषे लाय अपनो सेइ आ
तमा राम ॥ जो ब अैसी करहि बीर ॥ होइ कै सु
स्थिर धीर ॥ तो बतैरे सकल श्रम नहिं हि सिधि काम ॥ २
बेर बेर कहूं तोही ॥ बेर न करि मानि मो ही ॥ यऊ ब
औसर बकरि नांही ॥ अब कै मत षोइ ॥ जनतु र
सी कहै सुमरि सोइ ॥ जाकै नै जे मुकति होइ रे नर
तर आइ अतित जु प्रीति सं जोइ ॥ ३ ॥ १ ॥ जपैदी
बनि हैं जगदीस ॥ मन क्रम बचन बिसवा बीस
उलटि अंदरि आइ ॥ जोग की जुगति जानि ॥ चि
त लै चित मांझ सांनि ॥ ऊब वतइ ध्रूर समि निरहौ ए
न कहूं लै जाइ ॥ टेक ॥ लागा रहु एक तान । अ
मंड आतमा ध्यान ॥ जीवन है इहै जानि ॥ औ रस
कल धंधा ॥ संत सुमृति आसै ये हैं ॥ सो कि नगर
बारि लेह ॥ पीछै बन होइ है मेहा चेतिरे अब मंद

[illegible] द्वतन्याग न्यनतद्गमकोगांव ।
[illegible] ननमानि जनन नवनग्रेद्व नागिम
[illegible] निगनिगी नोमज्ञानि न्वा
[illegible] गगनयक्नदह. २. क्दर
[illegible] गाकोद्वैन दाव फोग.
[illegible] श्रागान व्योमालिकञ्च
[illegible] चदाह तानतु
[illegible] ानिरवान ३.
[illegible] यन्त्रावमादिमे
[illegible] नागम्रातम्र.
[illegible] टक होपन्नग
[illegible] ब्रवापंनरी नातें
[illegible] नतेरी १ तुमद्या
[illegible] परमकरनह
[illegible] न,मश्रनाप्यके
[illegible] नावनलामी न्द्र
[illegible] नरगामी हू १
[illegible] न्द्रा श्रात्मकन्ना
[illegible] न होयरना
[illegible] नविनक्यो.
[illegible] श्रेमन्द्रदानद्धी
[illegible] १ इद्वैस्मान
[illegible] अलोतरैनो व्याप्

तमंगजोवत॥चितमैंपरैनचैनों॥४॥इहै
नौहैसांईयां॥सुषदेदुडषबिसरावौ
कूंमिलौकृपाकरि॥मिलिआनंदउप
॥५॥ ध॥ ४१०॥ रागदेवगंधारि॥
ौतितहोचलिजाव॥याकुंजगुमांही
नदेकौनरमावत॥टेक॥इतवतकीबि
वारो॥अगुनसगनरहाव॥चितचेत
नतुरगमचटिनिसिदिन॥निरगुनघरिपहेचा
व॥१॥जुराजमकौनैनांही॥निरनैहोइरहांव॥
जनतुरसीअपनेप्रभुकौमिलिकरि॥जुगिजु
गिसुषबिलसाव॥२॥ २॥बानीकथिकथिफू
लेप्रांनी॥जोगतिउनसंतनिपहचांनी॥सोतोए
कनजांनी॥टेक॥बातनिमांदौकेचेनलौकर
लावतअंधअग्यांनी॥करनीबोसबूदनलुपन
ही॥क्योंमिलिबोनिरबांनी॥१॥बिचत्रबिच
त्रेकथ्याकहांनी॥बिचित्रिबिचित्रअरथऔ
गाहै॥पैगरबनतजहिगुमांनी॥२॥जनतुरसी
वोहआहिऔरही॥जुगतिअतितबषांनी
जिनिदिढकरिअपनेउरिधारी॥तिनएनिबा
वकौपानी॥३॥ ३॥ ४२७॥ ॥इतिश्रीगुसां
ईजीश्रीतुलसीदासजीकापदसंपूरण॥ ॥श्री
परमातमनेनमः॥श्रीसकलसंतायनमः॥
ररररररररररररररररररररर

[illegible]

[illegible]

[illegible] कासस्य॥ पर ब्रह्मपरा

[illegible] आयत मेश्वरं॥ परम

[illegible] परमपद समान सब

[illegible] मान गुण निराकारं

[illegible] आर॥ निर्विग्रहो नि

[illegible] न अमल अगाह

[illegible] रन॥ अचिंत चिंता

[illegible] ति अचल अमित अ

[illegible] अलिप्त अविहरं

[illegible] अरजन। असगी

[illegible] मिक्षायु नतया

[illegible] करण। चतुर्बिम

[illegible] तरनी वा। आदिम

[illegible] अमल अरूप

[illegible] सुधासिंचनपूर

[illegible] पूर्ण सूजन। ए। को

[illegible] नलहरं। बिमल

[illegible] परमपावन

[illegible] परमसुखकल्यांनको

[illegible] अरपन अते

[illegible] सुसांई ॥

॥गुरदेवकौपरिकरन॥१॥ अथबंदनविधान॥नमोनमोनिजा
नंदमयधनिजांलंबनिजदेव॥निराकारनिरधारअनु॥अव
गतिअलषअभेव॥गुरपदरजबंदनजुकरि॥ संतजनौंकीसे
व॥तुरसीऐसेंसुमरिकैं॥जनमसुफलकरौएव॥ २॥नमोनमो
निरंजनाय॥न्रसुंनायनमोनम॥नमोनमोग्यानरूपाय॥गुरदेवा
यनमोनमः॥२॥ अथश्रीगुरकिपाबिधानं॥ १॥तुरसीप्रथमगुर
क्रिपासौं॥इतिसंतसंगमजांन॥त्रीतीयपूरबअंकूरमिलि॥उदैत
योयहग्यान॥ १॥तुरसीग्यानप्रतितहरिकीभक्ति॥अष्टांगजो
गअरुत्याग॥गुरगमिग्यानमंजूसिका॥षुलीहमारैभाग॥२॥
तुरसीभक्तिजोगबैरागयह॥अरथगरथसुधिसोइ॥नांनारतन
प्रगटभये॥पूरबलेपुनिसोइ॥३॥तुरसीजदपिपूरबकुधिप्रगट
भई॥उदैभईउरआइ॥ताहूकेदातागुरू॥जिनिदीन्हीफेरिजगाइ
॥४॥तुरसीगुरतेंगतिगुरतेंभक्ति॥गुरतेंग्यानअरुध्यांन॥बिनगुरु
कबुनपाईए॥लाषैकोटिकपढौपुरांन॥५॥बिद्यातीनौलोककी॥
असासईजुकोइ॥तुरसीतऊगुरुक्रिपाबिन॥ग्यानदीपनहीहोइ॥
॥६॥ अथश्रीगुरुअस्तुतिविधान॥१॥गुरदातामहामोहिका॥गुरु
मस्तककामौर॥तुरसीगुरुसमिकोनहि॥जिजगतमेंऔर॥१॥तुरसी
गुरुअसबधरमका॥उपदेसनहार॥गुरुहीतैंलंघिजाइए॥महा
भवजलपार॥२॥चत्रमषनवअसटदस॥सबहीमांहीसोइ॥गुरुकी
महिमाअनंतहै॥बरनिसकैकाकोइ॥३॥गुरुसमुद्रतेंअधिक॥
गरवागहरासोइ॥तुरसीतापटंतरबकौं॥बस्तनत्रिनवंनकोइ॥
॥४॥तुरसीसप्तदीपनवषंडमें॥तीनलोककैमांहि॥गुरुसमांनगुर
हीजुहै॥दूजाकोऊनांहि॥५॥अकिंचनआत्मारामगुरु॥गुनइंद्रीजि
तमार॥तुरसीऐसासतगुरु॥निरंजननिरबिकार॥६॥चौपई॥

रीजाइ॥१४॥जबतेमोहिदरसनभयौ॥मिटिगयौसकलकैलेस॥तुरसी
पायौपरमपद॥सतगुरकैउपदेस॥१५॥आतमबोधजदेकरैन॥आपनसु
आरांम॥ऐसासमरथगुरमिल्या॥तुरसीपूरणकांम॥१६॥रविवतत
रमनिसाहरन॥ससिवतहरनजुपताप॥तुरसीऐसागुरमिल्या॥महा
अमलनिहपाप॥१७॥हूंनसुसीतलनीरस्यौं॥छिरकिबुझअनकांम
तुरसीऐसागुरमिल्यां॥अमलआतमारांम॥१८॥तुरसीज्वालाक्रोध
की॥सहजैगईसिराइ॥लोभआगिपानीभई॥मोहकुगयापु
लाइ॥भयसबउरआनंदभयौ॥सोसुषकह्योनजाइ॥गुरकेकृ
पाप्रसादस्यौं॥अबऐसीभईआइ॥२०॥३५॥अथगुरुलक्ष
णनिपारसवतविधीन॥१॥तुरसीपारसवतगुरू॥परसतहीफ
लदेइ॥तातकालतहीजुछिन॥पसमांनसकरिलेइ॥२॥तुरसीपार
सगतगुरू॥हैमभजीवनप्रान॥जिनिपतितजीवपावनकीये॥हंम
सेकितेअज्ञान॥३॥तुरसीपहलीकाचकथीरया॥करपकरता
होइ॥गुरपारसकौपरसिकैं॥अबकंचनभयासोइ॥४॥तुरसी
सतगुरकेसबद॥परतपिपारसरूप॥जिनिपरस्योंक्तितचितदे
तेभयेपलटिअनूप॥५॥कंचनरूपीह्वैनलैं॥लोहरूपयहमन॥
पारसरूपीगुरबचनन॥जोउरधारैजन॥६॥पारसपरसतपलक
मैं॥लोहांकंचनहोइ॥तुरसीतनकसंचररहै॥तोअतिहोइकादे
इ॥७॥ईचंगीचलेगुरसरन॥बरनदोषमिटिजाइ॥तुरसीज्यौंपारस
परसतैं॥लोहांनांमनसाइ॥७॥धातहीस्यौचालेनलैं॥पारसतनौंनु
यांन॥तुरसीपारसिऐसीतिस्यौं॥पेपलटैनहीपषांन॥८॥तुरसीरां
मइहाइसतिकहौं॥जदपिपारसगुरआहि॥तौऊधातहीपलट
ई॥पांहनपलटैनांहि॥१०॥तुरसीकितेसिषगुरघुनिकिते॥अप
नीअपनीगौर॥पारसअमलसुधातसमि॥तेगुरसिषकोऊऔर

तुरसी गुरकौं दोस न दीजिए ॥ गुरनि न पारस अंग ॥ सिष सुध होइ पर
सै नहीं ॥ तातैं लगै न रंग ॥ ११ ॥ तुरसी सुधरि द सिषकैं ॥ अवसि उदै जु
होइ ॥ पारस वत गुरदेव कौं ॥ मांनउ जागरसोइ ॥ १२ ॥ सूरा पूरा सत
गुरू ॥ गरवा गहर सोइ ॥ पारस वत जांनौं सोइ ॥ जो अैसा है कोइ ॥
१३ ॥ भाग बडै हम पाईयां ॥ गुर पारस का संग ॥ तुरसी ताकौं परसि
कैं ॥ धांन मिलै हरि रंग ॥ १४ ॥ पारस हूं तै परम गुरू ॥ तुरसी अधि
क वषांन ॥ पारस धात हि कनक करि ॥ गुर करै आप समांन ॥ १५
पारस वत गुरदेव की ॥ महिमा बरनि सोइ ॥ आगै कल्पतरवत गु
रू ॥ बरणौं बिधि संजोइ ॥ १६ ॥ अथ गुरु कल्पतरवत बिधान ॥
तुरसी कल्पतरवत गुरू ॥ जदपि अधिक कृपाल ॥ तदपि सरनि आवै
कोऊ ॥ ताही करै निहाल ॥ १ ॥ जाकै प्रीति न बैरता ॥ सब स्यों सदा स
मांन ॥ तुरसी कल्पतरु गुरुके ॥ सम कोए साहिनांन ॥ पै परसे अंतित
ये सदे ॥ अैसे कृपानिधान ॥ अघट ग्यान धन अरपिकैं ॥ हरै सकल
दुष ध्यांन ॥ २ ॥ दुष दलिद्र ता दूरि करि ॥ निज अपनौं सुष देइ ॥ तुरसी
सरनागतिन गुरू ॥ यौं अपनौं करि लेइ ॥ ३ ॥ सत्र मित्र जाकै कोऊ ॥ ज
दपि नाहिन आन ॥ तदपि सुतह सुभाव यह ॥ सरनि आये दे ग्यांन
॥ ४ ॥ और राव रंक हौ कोऊ ॥ कोऊ धरैन कांन ॥ तुरसी सदा समान
गुरू ॥ तुल्यत पै ज्यौं भान ॥ ५ ॥ तुरसी जा गुर कै नहीं न्रिघनता ॥ ना
ही बिघनता कोइ ॥ जैसैं भाइ नजैं कोऊ ॥ तैसी ही ताहि सिधि होइ
॥ ६ ॥ ५६ ॥ अथ गुर कामधेनवत बिधान ॥ तुरसी सतगुर कौं सब
द ॥ सूरज धेनि समान ॥ सकल मनौरथ सिधि होंहि ॥ जो कोऊ ध्या
रै कांनि ॥ १ ॥ तुरसी सतगुर कौं सबद ॥ दया दूध निति देइ ॥ सूरज धेनि
लौं अयो करै ॥ [illegible]रि मंजन किन लेइ ॥ २ ॥ ५७ ॥ अथ गुरु चिंताम
णि वत बिधान ॥ ॥ तुरसी चिंतामणि वत गुर बचन ॥ उर धारत
ही सोइ ॥ मनबंछित फल देत हैं ॥ जो उर धारै कोइ ॥ १ ॥ तुरसी चिंता

॥६॥ चितवतही चिंता हरै॥ मिलहि मिलहिं म
॥७॥ चिंता को कनार है॥ उर धारत ही चैन॥ तुरसी अम
लगुर के चरन॥ सीतल सुषद सुचैन॥८॥ सब सिधि सहजैं पाइए॥ उल
सर है तन कोइ॥ तुरसी चितवत गुरु चरन॥ परम लाभ यह होइ॥९॥
॥६७॥ अथ गुरु चंदन वत विधान॥१०॥ तुरसी सतगुर को सबद॥
चंदन जैसा होइ॥ सुगंधे सीतल भये॥ सरनै आये सोइ॥१॥ चौपई॥
सरनैं आइ सकल दुष गयो॥ रोम रोम तन आनंद भयो॥ मन हूं मांझ
उपनो अति चैन॥ परसत सीतल गुर के बैन॥२॥ साषी॥ तुरसी चं
दन वत गुरु॥ पाया है सब डभागि॥ परसत ही सीतल भए॥ बुझी बंरंती
आगि॥३॥ तुरसी गुर बैना जुए॥ अवधारत ही कान॥ पाप ताप सब ही
मिटे॥ ऐसन रहई आन॥४॥ चंदन सीतल घरी यदै॥ नीठ नीठ निबं
हेत॥ तुरसी सीतल गुरु बयन॥ आदि मधि अरु अंति॥५॥ तुरसी जा
के सत्र नही॥ मित्र हूं नाहिं न कोइ॥ सत्र मित्र सब के विषैर हा समान जु
होइ॥ ऐसा सीतल सतगुरु॥ चंदन रूपी जोइ॥ ता पद परसत पाप है॥ ताप
न रहई कोइ॥६॥ ६८॥ अथ गुरु कुरकट वत विधान॥१०॥ तुरसी
कुरकट वत गुरु॥ अंतितही जुक्ति पाल॥ अपनो प्रीति पषवा वदे॥ करै
सिष निप्रतिपाल॥१॥ तुरसी पाप ताप सब ही हरै॥ करै अमित उपगा
र॥ कुरक सुतनि सोंपो भदे॥ लै निरवा है पार॥२॥ ऐसा सम्रथ सतगुर
ग्यान ध्यान दातार॥ पूरन पुनि हम पाइया॥ निरधारें आधर॥३॥ निरधा
रें आधार गुरु॥ और आधार न कोइ॥ कैं आधार मेरे सांईयां॥ जिनि सि
रजे हम सोइ॥४॥ तुरसी परमारथी गुरु॥ पोषत सब न कौं देइ॥ चतपउप
गारन वा वशी॥ ऐसे आनंद केइ॥५॥ आनंद के दाता गुरु॥ सुष सिंध
की जहाज॥ तुरसी पार लंघाय दे॥ बांह गहे की लाज॥६॥ कुरकट स्वा
रथ हूं जु लगि॥ करै सुतनि की सेव॥ तुरसी परमारथी गुरु॥ त्याही ते अ
धिके व॥६॥७४॥ अथ गुर कूरम वत विधान॥११॥ तुरसी ज्यों कू

तुरसी ज्यों कूरम अंडनि कों। राषै दिष्टि लगाय॥ दूर ही तें निज पोष दे। अति त
प्रीति निपाय॥१॥ तुरसी यौं गुर सिषन कों। सुद्रिष्टि करि सुष देइ॥ पोषै प्रा
तिपालन करै। अपनो जानि सुमेइ॥२॥ तुरसी कृपानिधान गुरु पति
त [illegible] तुरसी अपनो जानि करि। आप करै प्रतिपाल॥ तन क चितव
न मांहि गुरु। निज करि कै रैं निहाल॥३॥ सतिसकल्प गुरुदेव की। सु
द्रिष्टि ही स्यों सोइ॥ तुरसी चेला व्है सदोइ। जीव कलुषता षोइ॥४॥
तुरसी जीव कलुषता ना रहै। पलटि ब्रह्म होइ जाइ॥ गुर कीतन क
चितवनि मैं। ऐसी होवै आइ॥५॥१०॥ अथ गुरु कुंजी व्रत विधा
न॥१२॥ तुरसी कुंजी सुत निहित। उडि चटै असमान॥ दूर ही तें निज
पोष दे। करि करि प्रीति बचान॥१॥ तुरसी ऐसे सतगुरु। कुंजन की ग
हि रीति॥ सिष्यनि कों संतोष दे। करि करि कसणी प्रीति॥२॥ तुरसी कृ
पानिधान गुरु। पतित पावन सोइ॥ जाकी निज सुरति ही स्यौं। सिष
नि की सिधि होइ॥३॥ तुरसी सतगु की क्रिपा सुरति। अतित ही बल
वान॥ पतितन कौं पांवन करै। गर्भ आगे धारै प्रांन॥४॥८॥ अथ गुरु
दीपग व्रत विधान॥ एक निमिष का दीरहन। अति ही सरम करि सोइ
एका नदी वै दीव करि। रहै तिमर सब षोइ॥१॥ तुरसीदास गुर सिषनि
का। ऐसैं यह मत जोइ॥ कहूं कठिन कहूं है सुगम। पुनि तें प्राप्ति होइ
॥२॥ तुरसी दीपग मय गुरु। अति तत टस्थल आहि॥ को कु आवक भ
लजाऊ कोऊ। कबू न कदई काहि॥३॥ काऊ के दुष सुष मैं। जदपि नेरै
नाहि॥ तदपि आइ परसे कोऊ। सरूप सुष दे ताहि॥४॥ भरम मिटाइ
जु सिष की। अनयास ही गुरदेव॥ अपनो आतम ज्ञान दे। पद परसत ही
एव॥ बिन सेवा बिन बंदगी। बिन ही कष्ट सुषेव॥ तुरसी दीपगमए गु
रू। ऐसे आनंद केव॥५॥८॥ अथ गुरु चंद्र व्रत विधान॥१४॥ ६
गुरु चंद्रमा चकोर सिष। होइर घाले लीन॥ तुरसी अचवै अमीरस। हो
इ होइ अति आधीन॥१॥ तुरसी गुर चंद्रमां चकोर सिष। आदि अंति

आतस्यौं नीता॥तुरसी बसुषपावई॥
॥ यहसाचीपरतीति॥४॥तुरसी यहसाचीप्रतीति गहि॥उरनिहचौ ध्र
धार॥ अपनौ गुर गोबिंद मजै॥सो सिषत्रिभवनसार॥५॥पांणीहेवेपल
रहै॥तुरसी तीनौ ताय॥रोम रोम सुष स्यांति होइ॥ जपत जपत गुरजा
प॥६॥१५७॥ अथ गुर रबिवत बिधान॥१५॥ तुरसी रबिवत गुरु
की कहालौं बरनौं सोइ॥ महिमा अमित अपार है॥ बरनि सकै का कै
इ॥१॥ तुरसी बिरंचि सेवा बिनि बंदगी॥ अनयास ही नु आश॥बिरद अ
पनौं जांनिकरि॥दीया ग्यांन जाइ॥२॥ तुरसी धनि वेसतगुरु॥ निसा क
री जिनि दूरि॥ कांम क्रोध अरु लोभ की॥ मोह कंकी निरमूर॥३॥ मोह
आवरन निवारिकै॥ निजपद दीया दिषाइ॥ तुरसी धनि वे सतगुरु॥
जिनि ऐसी करी आइ॥४॥ जा गुर तै नई ग्यान गमि॥ फुनि प्रापति नयो
धांन॥तुरसी दरसी आतमा॥ धनि वो क्रिपानिधान॥५॥ बरणांश्रम कै
भेद हौ॥ निसि निश्चित्र लौं सोइ॥ सो बुधि सहित बिलै नयो॥ तेस नरहि
यो कोइ॥ रबिवत ग्यान उदै नयो॥ गुरपरसाद तैं सोइ॥ तुरसी गुर ऐसी
करी॥ जैसी गुर तैं होइ॥६॥१५८॥ अथ गुरु घनवत विधान॥१६॥
तुरसी निकट सोऊं अपनपाउरि गुरु घन होइ सुष तैं ध्रवै॥ सबद सुधा
रसधार॥ तुरसी सिष चात्रग होइ॥ अचवै बारंबार॥१॥ तुरसी सतगु
र स्वांति बूंद लौं॥ बरिषै अंम्रत बैन॥ सिष श्रवन पुट सीपलौं॥ सोगहि
गहिले चैन॥२॥ तुरसी गहि गहि लेगुरु के बचन॥ हिरदै मधि राषत जाइ
तब निहचै तन सीप मैं॥ मन मोती होइ आइ॥३॥ तुरसी मन मोती होइ
सही सो॥ तामैं संसै नाहि॥ जो गुर बचन गहै रहै॥ गाटा के जीय माही
॥४॥ तुरसी गाटा कै गहै॥ घट ही माझ गुरबैन॥ तौ मन नग होइ निपजै॥

औव़सि अमोलिक औन॥५॥ तुरसी षार समद संसार यह॥ तहां सिष सीप समा
न॥ बिष जल सपरस नां करै॥ तौ मोती यन की षांनि॥ हीरा बैरागर घना॥ सील
संतोष सु ग्यान॥ सो नांन गावरु दै हो हि॥ गुरगमि आइ अमान॥६॥ इति १०७॥
अथ गुर रष वचन अंग निधान॥१०८॥ तुरसी निकट होऊ अपराउ व़रि
वचन बांण लगै जाहि॥ सूरबीर सतगुर कौ॥ लफत बीते नाहि॥१॥ तुरसी
निकट की कोक है॥ दूरि दूरि के मारे॥ सांधि सांधि गुर ग्यान सर॥ घाइल करि
डारै॥२॥ सतगुर बांहे षैंचि करि॥ सबद उ लाक तीर॥ तुरसी जाइ लगै जिनौ
तोरे मरम जे जीर॥३॥ सोवत हे मद मोह की॥ नीद माझ अबीद॥ तुरसी सुनत गु
रु के वचन॥ चमकि उठे ज्यों सिंह॥४॥ सुमरन लागे राम के॥ सुनत करन गुर
बैन॥ तुरसी नियरे दूरि कौ॥ नियम न दीक चु अैन॥५॥ तुरसी दरपन ज्यों दूरि
रवि नहीं॥ जदपि अरक अकास॥ तवै बिंब नासै नहीं॥ ताबैं सदा रहौ रि
बिपास॥५॥ तुरसी रवि दूंका करै॥ जो मल निआरसी होइ॥ निकट होऊ
अपराउ व़रि॥ प्रतिबिंब नि दैत कोइ॥६॥ गुर गुर करि दो करै॥ उरतें तजे
न कांम॥ क्रोध लोभ छाडै नहीं॥ कहा भयौ गुर नांम॥ तुरसी गुर कंऊ रि है
त कहिरदा के माहि॥ जो सिष कौ चित सुध होहि॥ प्रीति बिसारै नाहि॥८॥
गुर रवि सिष रविकांत मणि॥ तन करि दूरि डुरंत॥ तुरसी मन करि मिलि
रहै॥ ज्यौं बग्यालके तंत॥१०॥ ज्यौं रवि निकट जु कंवल कैं॥ दूरि कहै ते दूरि
तुरसी तैंई दूरि हैं॥ वै तौ सदा हजूरि॥११॥ इति १०८॥ अथ गुर कै पै सीव दत
निधान॥१०९॥ तुरसी लाभि न पाईये॥ अैसा सतगुर सोइ॥ जा तें यह जी
व पलटि सीव॥ आहीतन धरि होइ॥१॥ सतगुर की सुधक्रि पा स्यों॥ जीव
पलटि होय सीव॥ तुरसी जैसे है होत है॥ कीटी स्यों भ्रुंगीव॥२॥ कीट पलटि
भ्रुंगी व भया॥ जीव पलटि भया सीव॥ तुरसी धनि वो सतगुरू॥ जिन
यह अैसी कीव॥३॥ तुरसी स्वताज भाजन्म का॥ जमाइया भ्रम षांन॥ ज
गाइ आपन सा कीया॥ धनि वो सतगुर जांन॥४॥ इति ११०॥ अथ गुर रष
वचन लाहि वनि धान॥ १११॥ वाचक ग्यानी गुर घने॥ लषि ग्यानी॥

।बाती

बेलसरावके॥बातबनावनसार॥तुरसीअैसेसतगुरघने॥बिरलेजो
कनहार॥४॥जोइमेलहैरिदकंवलमें॥अखंडदीपगसोइ॥तुरसीत्रांती
गुरसोई॥जोअैसाहैकोइ॥५॥अखंडईश्वरजीवकी॥सुधलखिहीगहिते
॥तुरसीतेनेअकासलौं॥बाचकचितनदेइ॥६॥तुरसीबाचूकमेंसूजे
घने॥पढिपढिबेदपुरान॥बहावनिमांहीबहिपरे॥लखिनसकेलखि
ज्ञान॥५॥तुरसीबाचकघटमगवतबरथ॥लखिअकासवतजानत॥
भैपागिवसैयनमाहे॥सोसतगुरकोकआंन॥६॥ततलपदकीसुधाता
लखिकहावेसोइ॥७॥मैनकोंएकहीकरि॥बैठनिरंतरहोइ॥तुरसीअैसा
सतगुरुजगकीजिहाजजोइ॥आपतिरैतारैसिखनि॥आरोहैजेकोइ॥७
॥१९॥अथगुरहंसषीरनीरवतबिधान॥२०॥तुरसीपूरबपु
नितैंपाइए॥अैसासतगुरसोइ॥षीरनीरलौंभिनिकरन॥प्रकृतपुरुषए
होइ॥१॥प्रकृतिपुरुषनिरवारिदे॥न्यारेन्यारेन्यांन॥तुरसीअैसासमगुरु
मिरीजीवनदांन॥२॥तुरसीप्रकृतिपुरुषहैयह॥भिनिभिनिदेइबताइ
संसैकबूरबैनहीं॥सोगुरनामकहाइ॥३॥तुरसीसतगुरनामकहावते॥
लाजनमरकसोइ॥जावतप्रकृतिपुरुषए॥निजकरिलषैतदोइ॥४॥तुर
सीजहांसंसैनहीं॥जहांबिपरजैकोइ॥अैसैंपुरुषबताइदे॥गुरुहमारासो
इ॥५॥चौपई॥यहप्रकृतिपहपुरुषकहावै॥संसैबिपरजैरहितलखा
वै॥तुरसीसाचासतगुरसोइ॥करैबेदनांमबहीसोइ॥हंसामी॥तुरसीसा
चागुरसोईपुरुषहीदेइबताइ॥७॥१॥२०॥अथगुरदारवतबिध
ना॥२१॥गुरदारमईचाहिए॥सिषजोलोहकहोइ॥तुरसीतौतिरिपार
होइ॥बाइजुरैजोकोइ॥१॥लोहजटितहोइदारस्यों॥सोजलमांझतिरई
यांरतहोइबिरकतस्यों॥तौतुरसीलेघिजाइ॥३॥रंगमिलावैतौमिलै॥
गुरुसिषएकसमान॥तुरसीबिरकतबिकारस्यों॥रतमतपदनिरबांन २

तुरसीदासबिरक्तगुरु ॥ मनऊजबोहिथदार ॥ सरक्तबावपषानहैं ॥ ले
बोड़ैमझधार ॥४॥ तुरसीजागिनपाइए ॥ बैरागीगुरसोइ ॥ सरागीकेतेपरे
तिनसौंमुकतिनहोइ ॥५॥ कंनककामनीरतगुरु ॥ हैजगुमाहिअनेक
तुरसीहंमदेखेघने ॥ उभैरहतकोउएक ॥६॥ उभैरहतसतगुरसोईहै
नगतकीजिहलाज ॥ आपतिरैतारैसिषनि ॥ करिकरिजतनईलाज ॥७॥
तुरसीबोकिलनावबिचि ॥ मतबैठौकउकोइ ॥ लंघ्योचाहैलोकत्रय
तौहलकीनावसंजोइ ॥ जहांलोमनलालचनहीं ॥ रहैपापमलनघोइ ॥ म
नसाबाचाकरमना ॥ सेवौसतगुरसोइ ॥८॥ १२३ ॥ अथगुरअंतर
निर्धारन ॥ २२ ॥ गुरगुरमैंबडअंतरा ॥ समझैकोउसुजान ॥ इकदी
पकमणिनछत्रसमि ॥ एकससिसूरसमान ॥१॥ गुरगुरमेंबडअंतरा ॥
बूझैबिरलाकोइ ॥ तुरसीइकपारससमि ॥ इकपषानसमिजोइ ॥२॥
गुरगुरमैंबडअंतरा ॥ जानैकोउजाननहार ॥ इकरतमायामोहमैं ॥ इक
बिरकतसंसार ॥३॥ रतगुरनावसलोहकी ॥ बिरकतबोहिथदार ॥ रत
बोबैमझधारमहीं ॥ बिरकततारैपार ॥४॥ तुरसीबिरकतगुरबिना ॥ स
रकतडूबैनमांहि ॥ बैसिबैसिबूडेघने ॥ पारगयाकोउकंताहि ॥५॥ तु
रसीजरजरनावचढि ॥ मतकोउकरऊअकाज ॥ लंघ्योचाहौलोकत्रै
तौसाजोसमरथजिहाज ॥ तुरसीअथासमदसंसारयह ॥ वारपारनहि
कोइ ॥ संतगुरसफरीनावबिन ॥ लंघ्योजाइनसोइ ॥७॥ तुरसीसफरीना
वगुर ॥ जाउरआतमज्ञान ॥ हुआकंवलमैंहोइरह्या ॥ ब्रह्मांझालतान
जाकैनैननासिका ॥ तुकरसनानहिकान ॥ जदपिहैतदपिनहीं ॥ लहैवि
तिबिलीमानी ॥९॥ १२४ ॥ अथगुरउत्तमप्रापतिबिधान ॥ २३ ॥
अकिंचनइंद्रियजितगुरु ॥ उत्तमचित्तवृतजोइ ॥ तुरसीजागिनपाइये
औरनपायनकोइ ॥१॥ तुरसीजाकेगगनरिदामें ॥ होवहूंनदरसाइ ॥ दि
येजुपरतमचंदतौं ॥ अछितहीजुरहिकाइ ॥ सबस्योंसमानहोइरह्या ॥३

बसुमलबिसराइ॥९॥ऐसाआतमरामगुरसबगुरएजकहोइ॥१॥तुरसी
जागुरमैगुरतानुयहा॥स्वप्नहूनदरसाइ॥सोगुरनामकहायकेबिषहीं
बोफबहाइ॥१५॥अथगुरग्यथयामीत्यागविधानः॥१६॥नहीं
सबूरीसततता॥असततावरतांहि॥ऐसेगुरजनवक्तहै॥तुरसीयाज
गुमांहि॥१॥मायास्वारथकारनै॥बकतककरहिउपाइ॥कंकूनौचैगा
वैकंकूककहै॥अरथबनाइ॥२॥एकगुरअष्टबिकलबुधीअवदैंब
हावैंघोर॥तुरसीतिनकोसंगकिये॥छुटैननरकअघोर॥३॥कनक
कामनीगुरकैं॥सिषहूंकैंफूनिसोइ॥तुरसीबूडेजवजलमहीं॥लोह
लोहमिलिदोइ॥४॥कंनककामनीगुरकैं॥लीयेफिरैजुलार॥सि
षहूंवहिमारगपरे॥बूडेकालीधार॥५॥पांचौंइंद्रीछठोमन॥बषि
गुरसिषदोऊआहि॥तुरसीउभैजुएकसे॥आधिकारीकंकाहि
॥६॥गुरबदरसबसिहोररहा॥सिषबिचिपांनीलीन॥तुरसीदोऊ
अंधरेपंथबतावैकौन॥७॥आपनअंधराअंधसिष॥अंधाहीउ
पदेस॥तुरसीतेप्रभुपंथकों॥लहैनसुरबिसंदेस॥८॥चौपई॥लोभी
कौलोभीगुरकरै॥ताकोकाजकछूनहीसरै॥ज्यौंकामनिकामनिकौं
परसै॥तुरसीसुतसुषपकनंदरसै॥९॥लोभीगुरस्यौंरचिपचिप्रांनी
उभैलोकहारतअग्यांनी॥तुरसीनाकुलअकुलामांहि॥दोउसुषमें
रकोनाहि॥१०॥साषी॥रितिवंतीत्रियत्रियामिलै॥तौकारनरहैनको
इ॥तुरसीपरसेपुरुषकों॥तबफलपावैसोइ॥११॥लोभीकोलोभी
लोभीमिले॥कथाकहैबकुंजाति॥बिनानिरलोभीगुरबिना॥तुरसी
मिटैनभ्रांति॥१२॥चौपई॥अरथनावसबहीकरिस्यूरै॥ज्ञानहीं
नहारजनालिअधूरौ॥सोगुरमनोआजरीनाव॥चढतहीजुबोरैति
हिंभांव॥१३॥साषी॥जवजलतिरैवचाहिए॥तौसारीनावसंजोइ
तुरसीफूटीनावमें॥चढिमतिबूडेकोइ॥१४॥जोकबतोरैबैसिष

फूटे नैरै मांहि ॥ तुरसी जब की मति परै ॥ तब तहां रहि एनोहि ॥ १५ ॥ तुरसी यह
जानै सकल ॥ देषि जर जरी नाव ॥ अंध ही आरोहन करै ॥ औरन धरई पाव
॥ १६ ॥ कूप षनियै जल निमति ॥ गुरु ज्ञान के काज ॥ ऊंचे मांहि एक ऊनदी
तौ छिप कौ करै इलाज ॥ १७ ॥ तुरसी सकल ठई लाजयै ॥ गुर बिनि फोक
ट जानि ॥ जौ नि हे कंचन गुर मिलै ॥ तौ ही चढै प्रवानि ॥ १८ ॥ १५० ॥ अथ
गुरत्यागदोषविधानं ॥ ३५ ॥ अकिंचन गुरुदेव कों ॥ कदाचि त्यागै कोइ
कोला मुरला सिष का ॥ कबहूं काज न होइ ॥ १ ॥ अकिंचन गुरु कों कबै
सिष आकस्तौ जु कराइ ॥ तौ तुरसी ता सिष कौं ॥ लागै दोष अघाय ॥ २ ॥
जिहाज तैं उतरि परै ॥ डोंडनि बैठै धाइ ॥ कंचन कत्यागि कुबधी जु नर ॥
काच की किण ग्रहाइ ॥ ऐसी षता जु षात है ॥ सो सब मन ऊंज आइ
जो बिरकत गुर स्यों बिरचि ॥ तौ नीनि स्यों लपटाइ ॥ ३ ॥ काच बाचनि
कलंक गुरु ॥ बिरदोषी न्रबान ॥ सत्रामित्र सब के बिषे ॥ कर हा एक समा
न ॥ ऐसे गुर को सिष तजै ॥ तौ हूटि बरत अयमान ॥ तुरसी धरक्क परि
परै ॥ फरकत तौ पर्वीन ॥ ५ ॥ तुरसी ऐसां कौं न अन्नागिया ॥ जु गुर की
निंद कराइ ॥ जिबि गुरु ससिमा षा जु लौं ॥ तत दीया दिषराइ ॥ ६ ॥ तुरसी प
रतषि दीया दिषाइ कैं ॥ बंदय मात्मराम ॥ संसै बिपरजै बिना ॥ धनि वह स
तगुर नाम ॥ ७ ॥ तुरसी ऐसे अमल गुरुदेव कौ ॥ जाके होइ कुध्यान ॥ ८
आनै तो वह सिष नहीं ॥ है बिटकीट समान ॥ ९ ॥ ७७ ॥ अथ गुरु उ
पदेशनदषयेदसविधान ॥ ३६ ॥ तुरसी गुर के कहे कौ ॥ बिलगु जु
मानै कोइ ॥ मंद भागता जीव कौं ॥ कैसैं कारिज होइ ॥ १ ॥ जौ ताता हूं कै
कहै ॥ तौ गुरु दे सुभाव ॥ जौ जलका टेकन कमल ॥ रेहे आपनौ ताव
॥ २ ॥ सतगुर ज्यों क्यों ही कहै ॥ तुरसी त्यौं ही मानि ॥ तपत सीत जल
झल परै ॥ तऊ बुझावे आगि ॥ ३ ॥ नदी कनक स्यों बरतां ॥ जदपि क
से सुनार ॥ कौन कंपहरन कौं ॥ औरन कौ कंबिचार ॥ ४ ॥ मीगीम

महास्वारथनरी॥मनासुहातीबात॥तुरसीसुषनापैनहीं॥सोगुरत्रिन
वनताता॥५॥साषीयासंसारकी॥नाषीनहीं कबीर॥कहिकहिवचननि
टकोतौरैनरमजेजी राष॥बाहरिमीगबोलना॥मांहीकरवासोइ
सीसोसतगुरनहीं॥मतिरयती॰जौकोइ॥७॥तुरसीबाहरिनीतरि
सारिषा॥सुधरिदसदासमान॥षरीकहनषोटीदहन॥सतगुरएसहन
नाई॥१८५॥ अथगुरसिषसुधसुमिलतबिधान॥२७ चौपई॥५
जदपिहोइजीयसुधसुभाव॥तऊगुरबिननहिहोतउगाव॥तुरसीजै
दिवदरपनमांहि॥बिनिरबिपावकप्रगटैनाहि॥१॥साषी॥आदि
अमोलिकआरसी॥रहैनिहारिनिहारि॥तुरसीबदननासई॥रबि
बिनरजनिमझारि॥२॥तुरसीरबिहूंकाकरै॥जौआरसीमलीन॥उनै
अमलप्रतिबिंबहोहि॥तौपावकउदैवकीन॥३॥तुरसीकाटैषाईआर
सी केतैगहोजुनात॥पावकप्रकासैनहीं॥नावैसदारहैसनिधान॥४॥
चौपई॥तुरसीपावकरूपीग्यान॥उपजैसतगुरकैसनिधान॥पैजोगु
रतत्ववेताहोइ॥अरुतैसासिषकुंहोइसोई॥५॥साषी॥तुरसीसतगु
रसिषदोऊ॥ज्योतिहीअमलतनहोहि॥तौहीग्यानउपजै॥मोहि रोम
कीसौं॥६॥तुरसीमनसाबाचाकरमना॥त्यागैमिथ्याजुनाहि॥गुरसि
षसुधसंपर्कतें॥अवसिग्यानहोइमांहि॥७॥तुरसीअंतजगुकेमांहि॥ नं
गुरसिषकीसुधताबिना॥ब्रह्मग्यानहोइनाहि॥ब्रह्मग्यानबिनमुक्त
नहीं॥सबसाधूजूकहाहि॥श्रुतिसुम्रतिसबहीकहैं॥अरथयहतोहीं
आहि॥८॥गुरसिषसुधहोइइपनवत॥जैसेसंजोगसुसाढ॥अवसि
ग्यानकवउदैहोइ॥तुरसीनिजअइहिकाइ॥९॥१९४॥अथगुरग्यां
नधांतउपदेसदाताबिधान॥२८॥तुरसीग्यानहीसारहै॥सबहीमां
हीसोइ॥सोसतगुरतेपाइये॥औरउपायनकोइ॥१॥तुरसीसतगुरदा
ताग्यानका॥ध्यानकुदाताजोइ॥मोषिमुक्तिअरपनसकल॥ऐसेसामै

त्र अंग सोरठा ॥ सोई ज्ञान हम पाइया ॥ सतगुर दीया दिषाइ ॥ तुरसी उ
रनिह चानया ॥ नाहीं रंन मै बलाइ ॥ ३ ॥ तुरसी बाहर अंतर मै बहरमु
ष ॥ निनिगुरणाया नाहि ॥ जिनकौ पूरा गुर मिल्या ॥ ते आतमसुष मां
हि ॥ ४ ॥ तुरसी पूरा गुर मिल्या ॥ पाया हम प्रसाद ॥ सब घट माहि लषा
ईया ॥ एक ही ब्रह्म अगाध ॥ ५ ॥ सुष पाया समता नहीं ॥ मिटी बैरता आन
तुरसी अतिसीतल भये ॥ सतगुर के सनिधान ॥ ६ ॥ तुरसी रागादिक नि
कै ॥ रह्यो अति तनराज ॥ समरथ गुर की क्रिपा स्यो ॥ नयो औरही दीला
ज ॥ ७ ॥ तुरसी थिर ह्वै रह्या दिये ॥ लष चौरासी जीव ॥ सतगुर ते सोधीन
हूं ॥ यह भेद ध्यासीव ॥ ८ ॥ जहां संसै नहीं बिपरजे ॥ उत्तर देव अस्थान
तुरसी अलष लषाईया ॥ सतगुर मिलिया जान ॥ ९ ॥ तुरसी मन फि
रि आईया ॥ अपने ही घर अस्थान ॥ अहनिसि आतम ध्यानमै ॥ होइ र
ह्या मगल तान ॥ अब तब तत चलि नास कै ॥ तह कमिटी सब आन ॥
जिम्हि सतगुर ऐसी करी ॥ सुधनिद्व क्रिपानिधान ॥ १० ॥ २०४ ॥ अ
थ सिषकौ परिक्ररन ॥ दूहा ॥ सतगुर का सिष सो सही ॥ सुनै सतगुर दी
कौ ज्ञान ॥ तुरसी मतमन मुषीनके ॥ निमष न धारै कान ॥ १ ॥ तुरसी स
तगुर का सिष सो सही ॥ चलै सतगुर की सीष ॥ गुनइंद्री मन के कहे न
रैन एकौ बीष ॥ २ ॥ जो चालै मन के कहे ॥ महा मदन बसि होइ ॥ तुरसी
सतगुर सिष न सो ॥ सो सिष मन का जोइ ॥ ३ ॥ के उ सिष अपने मन के
के कै सिष तन के जोइ ॥ के कै सिष गुनइंद्रीन के ॥ मूलि रहे यो सोइ ॥ ४ ॥
जहां मन फेरै तहां फिरै ॥ जहां मन कहै तहां जाइ ॥ मन अकह्यो करि
नास के ॥ ऐसे बहु कलि मांहि ॥ ५ ॥ आइ मत मानै नहीं ॥ मानै मन कौ ग्या
न ॥ तुरसी जहां जहां अटकिये ॥ तहां तहां करत पयान ॥ ६ ॥ गुरमुष
मारग छाडि कै ॥ दिन राते जाइ ॥ तुरसी उनमनमुषीन कै ॥ मुष देषि
येन पाइ ॥ ७ ॥ गुरमुष मारग छाडि कै ॥ कनक कामनी लीन ॥ तुरसी द

गहरि बिन। काच मणि न चित दीन॥८॥ सरमन दी संसार की॥ गुरु ने कौ ग
वायी॥ तुरसी डरै न दोष सौं॥ हरम कलिजुग जीव॥९॥ चौपई॥ जिन
ग्रंथ पान माहि मन लायो॥ करत फिरै अपनो मन भायो॥ तुरसी लहै न सग
आन आन॥ बिना बंदगी गुरु कौ ज्ञान॥१०॥ साषी॥ सुनत सुनावत सग कै ग
ये॥ बूझि बूझि बड़ ज्ञान॥ तुरसी दास षाली पये॥ बिन बंबे कब कसान॥
११॥ अंतर गति आरति नहीं॥ देषा देषी ज्ञान॥ तुरसी बूके कान या॥ जिद
तन रिदै पषान॥१२॥ पारस धात हि पलटि कैं॥ षिन मैं कनक करेव॥ तु
रसी या हन रूप कौं॥ कहा करै गुरुदेव॥१३॥ तुरसी ता सिष कौ गुरु का क
रै॥ जाकी दिल दिढ़ रेष॥ बिधि बिधि करि समझाइये॥ पै समझै नहीं बेवे
क॥१४॥ धात ही सौं चाले न लै॥ पारस तनौं जु पान तुरसी परसि हुवी॥
तिसौं॥ ये पलटैं नहीं पषान॥१५॥ जो समझै नहीं सैन मैं॥ तासौं कहि
ये बैन॥ तुरसी बैनन समझिई॥ ता दिक बूनदि कहैन॥१६॥ जो सम
झै गामन की॥ सो तो बिरला कोइ॥ तुरसी या संसार मैं॥ चेतन कहिये
सोइ॥१७॥ सति बकता सुहृदता॥ समबुधी सतवान॥ तुरसी ए मंत सिष
के सेवा सुमरन ध्यान॥१८॥ चौपई॥ तुरसी सदन सील लता धरम गुन गहै
सबद कुसबद सन काहूं कहै॥ सद गुरु सदा सीस परि राषै॥ सो सिष कौं न पर
मरस चाषै॥१९॥ तुरसी सतगुरु को अकह्यौ न हि करै॥ आज्ञा मानि सीस
परि धरै॥ सदा रहै चरनन लपटानां॥ सो सिष सही औरन मानां॥२०
सतगुरु जो देवै सो षाइ॥ जहां जहां पगवै तहां तहां जाइ॥ तुरसी कबहूं अ
मारग होइ॥ सो सिष सही सुष बिलसै सोइ॥२१॥ सार सार स्वामि निज ध
रम॥ सतगुरु कौं पूछे होइ न रम॥ जो कछु कहै सु मानत जाइ॥ तुरसी
अवै सुष बिलसाइ॥२२॥ तीन लोक सुष तिन करि त्यागे॥ मन मुष रहै
सदा गुरु आगे॥ तुरसी इतउत कौं न लुजाइ॥ सो सिष सकल सिरोमनि रा
इ॥२३॥२२७॥ अथ ग्रंथ षसहिमा कौ परिकरन॥३॥ तुरसी गुरुस्व

स्राद शास्त्रमत आत्म अनत्तव जानि सिधसाधिक सबकी क्रिया यामैंस
बैप्र वानि ॥ २ ॥ चौपई ॥ अनंत शास्त्र अनंत बानी अनंत कथा रिषिमुनि
न बखानी तुरसी यामैं सबनको सार हमनी के कीयौ निरधार ॥ १ ॥ स्राखी ॥
याहीमैं भागवतको सारभूत है सोइ याहीमैं बासिष्ट मत बूझे बिरला
कोइ ॥ ३ ॥ याहीमैं स्रुति स्मृतिकौ सारभूत सबग्यान याहीमैं पुरा
नमिकौ धरम समूह प्रमान ॥ विद्या तीनौं लोककी औरकहौं कहां
लौं ग्यान तुरसी याहीमैं है सही सबकौ सुधबिग्यान ॥ ४ ॥ तुरसी याही
माहीं स्राति है परंपा बनी सोइ याहीमैं बैराग है सो जिलेइ जो कोइ
॥ ५ ॥ याहीमाहीं जोग है जोगनिजौ बनिमूरि याहीमाहीं ग्यान है करन
हैं तनिरमूर ॥ ६ ॥ बेदांत सिधांतकौ सबसंतनको सार तुरसी यामैं
है सही सबकौ अरथ बिचार ॥ ७ ॥ तुरसी यामैं आषे जु हैम अधिका
री प्रति धरम उतम ग्यानमाधिकौं भक्ति कनिष्टकौं सुभकरम ॥ ८ ॥ अ
धकनिष्ट अधिकारी बिधान ॥ १ ॥ तुरसी तावत करम कीयौ करै
मन प्रतीति न थाइ जावत असुभकरमकौ काट रहौ उर आइ ॥ २ ॥ ता
वत करम कीयौ करै जावत कबूसकाम तुरसी हिरदौ सुध होइ ॥ ३ ॥ त
ब करमनि सौं का काम ॥ ४ ॥ तावत करम कीयौ करै जावत उर मल हो
इ ॥ तुरसी आदर स अमल नये सिकलिकरै नहि कोइ ॥ ३ ॥ अस धर्म
त है करनकौ सुभ करम हित्र बान तुरसी सुधकौ ग्यान है अरथ इतौ
ही जान ॥ ४ ॥ मलिन आरसी मजिए अमलन मंजे कोइ तुरसी सबकौ
सारयह येते हीमैं जोइ ॥ ५ ॥ तुरसी सुध दरपन मंजे कवन अमल
हिरदै करम जोग साधि साधिकौ धोमरै यह तौ बात अजोग ॥ ६ ॥
ताहीकौं कारिबौ जुगत जपतप बिधिमाहीं तुरसी जाकौ मन मली
न औरनिकूं नाहिं ॥ ७ ॥ तुरसी नाव हीका करै अरु केवट स्यौं का कौ
म जो जन लंघि पार ही गया पायौ पद आराम ॥ ८ ॥ जो ब पार गयौ प

डिएनउपचारा॥१०॥करतकरतसुलक्रिया॥९॥मनकोमेलनसाइ॥तुरसी
तबलरिसगतिमें॥सहजमिचितलगाइ॥१४॥ २९॥ अथमधिअधिका
रीबिधानः॥ २१॥ तुरसीजगाससगावेतकी॥अनयासहीजुहोइ॥याचित
कैसुधजयेते॥नहीकठिनताकोइ॥१॥चिदाकारचितकीबिरति॥तात
कालहोइजाइ॥तुरसीचितसुधजयेतें॥यहफलहोवेआइ॥२॥ज्योंघा
गमनिगननबिचि॥योंसबघटमधेराम॥ऐसीजगतिजोउदैहोइ॥तु
रसीपूरनकाम॥३॥२२॥अथउतमअधिकारीबिधानः॥ ३॥तुरसी
यानगतिकोफल॥आदिअंतजुसान॥तादीबडभागीपावेकोऊ॥४
जाकेएकहीध्यान॥१॥तुरसीयानगतिकोफल॥सानसिरोवनिएह
जहांबिजातीकोनही॥सदासजातीनेह॥२॥तुरसीपिंगलज्ञानयह
जहांनहीपंचकोपान॥उत्तेगुनमुछितजयेतहां॥सुधसात्वकस्था
नकीरीकुंजरअरिजुमति॥थावरजंगमजान॥सबघटनिदोषद
रसई॥आतमएकसमान॥३॥सोरठा॥तुरसीजहांयसान॥समाधि
स्थउतपनजया॥तहांकेएसहनान॥द्वैतज्ञानहीपेषिए॥४॥साषी
अरधरामऊरधऊरांम॥रामहसोंदिसिजोइ॥बाहरिभीतरिरामहै
रामबिनानहीकोइ॥५॥ऐसीद्रिष्टिजुउदैहोइ॥अज्ञानआवरण
षोइ॥तुरसीसिधांतज्ञानयह॥काहेनदेषीनोइ॥६॥२३॥२५४॥
अथजगतिकोउकरन॥अथपरमभागलबिधान॥१॥तुरसीज
गतिज्ञावंतकी॥बेदततीनीलोक॥सुरनरसबअस्तुतिकरै॥हरन
अनंतनयसोक॥२॥तुरसीजगतिजगावंतकी॥सकलसिरोमनिआदि ता
ऊपरकोऊनही॥औरयदंतरहीकाहि॥अरधऊरधमधिहसोंदि
सा॥उत्तेजोरिकरिताहिपंगातसोंबंदनकरै॥ज्ञानमोक्षिरचादि

॥ ३॥ अथ सतिमहिमा निधान ॥ ३॥ तुरसी भगति भगवंत की त्रि
भुवन मैं हित सार ॥ ताहि सुमरि बहु संत जन उतरि गये भव पार ॥१॥ तु
रसी भगति भगवंत की त्रिभुवन मांही सोइ ॥ अतित पावन रूप है संत कहै
सब कोइ ॥ २॥ तुरसी भगति भगवंत की जै दरस अनेक रन ॥ किते पतित
पावन कीये जे आये सुसरन ॥ ३॥ तुरसी भगति भगवंत की पारस के उन
मान ॥ कंचन लोह पर सौ कौ कै सोई सोई कंचन प्रांन ॥ ४॥ सिरोमनि हरि की
भगति जुग जुग अंत तत सार ॥ तुरसी तीनौं लोक मैं ताकौ जैजैकार ॥ ५॥
औरे मत हरि भगति बिन सब ही या संसार ॥ तुरसी जुग जुग मैं सदा ॥
भगति अकेली सार ॥ ६॥ जो मन जोग कै करत गरि पानी नहि होइ
सो मन वोरै लोंगरै प्रेम भगति स्यों सोइ ॥ ७॥ प्रेम भगति सब तैं उतम जो
उर धारै कोइ ॥ जनम मरन तैं छूटै निहचै प्रांनी सोइ ॥ ८॥ चोपई ॥ प्रे
म भगति बिन जप तप ध्यांन ॥ सू खेलागै सहत बिग्यांन ॥ तुरसी प्रेम भग
ति तब होइ ॥ तब सब ही मत साचे जोइ ॥ ९॥ साषी ॥ कहा जोग जुग
ति कै कहा कहा सांषि सु बिचार ॥ उर अंतेष की भगति होइ ॥ तौ स
ब मत लागै सार ॥ १०॥ कहा जोग कहा सांषि बिधि ॥ कहा बैराग बि
चार ॥ जा जा मैं हरि की भगति ॥ सोई सोई मत सार ॥ ११॥ १४॥ अथ
करम मिश्रा भगति बिधान ॥ ३॥ तुरसी गुण गुण कै बिषै त्रिधा त्रि
धा सोइ ॥ करम मिश्रा जानौं जु यह जहां असी भगति जु होइ ॥ १॥ हि
सा दोष उपाय कैं ॥ करै भगति मन लाइ ॥ तुरसी यह अधम स भग
ति ॥ संतनि करन नहि जाइ ॥ २॥ दंभनि मत गोबिंद भजै ॥ नहीं भगति निहका
म ॥ तुरसी ताम स भगति यह ॥ माधि मया कौ नाम ॥ ३॥ भगति करै औरनै
कै ॥ मान घटावन काज ॥ तुरसी अपनै मान कौं ॥ स भगति तमो सिरता
ज ॥ ४॥ धन दारा सुत इंद्रिनि कैं ॥ हरि सुमरै जन कोइ ॥ तुरसी यह राजस
भगति ॥ कनिष्ट कहिए लोइ ॥ ५॥ तुरसी मधि म भगति यह ॥ राजस के

आंसी(६)
माही॥जसकारनजगदीसकौं॥सुमरैउरह्यो॥८॥दो॰अष्टईस्वरजकेअर्थ १
केसोनजेजकोइ॥तुरसीउतमभगतियह॥राजसमाहीसोइ॥७॥अरुसुन
करमवैकरनकौं॥सुक्रितसंचैकराइ॥करुनासोकेसीनजे॥सरधाप्रीति
उपाइ॥तुरसीसालगभगतियह॥कनिष्टनामकहाइ॥सुरतिसुरतिस
ब्दकहै॥संतहृदैदिढिदिढाइ॥८॥प्रीतिअरथभगवंतकी॥भगतिकरै
जुकोइ॥हिरदैनामरटौकरै॥अषंडरामकौंसोइ॥निरंतरनिसदिन
सदा॥औरकांमनहीकोइ॥तुरसीयहसाधिसालगभगति॥संतनिबरनी
सोइ॥१०॥बुद्धिआदिइंद्रीसकल॥विषैनसौंउलटाइ॥लेविधिसनम
रपनकरै॥हरिकौंहिरदैजुआइ॥सेवासुधलागारहै॥फलकांमना
मिटाइ॥तुरसीयहसालगमहीं॥भगतिसिरोवनिराइ॥११॥तुरसीक
रममिश्रानगति॥त्रिधात्रिधासोइ॥गुनगुनविषेजुहंमकह्यो॥बूझै
बिरलाकोइ॥१२॥तुरसीकरममिश्रातगति॥असुधहरिकौंजोइ॥
जाकौचितदरपननयौ॥कहांकरैधौंसोइ॥१४॥तुरसीमलिनआ
रसीमहि॥अमलनमंजेकोइ॥सकलग्रंथकौअरथयह॥येतेही
मेंजोइ॥१३॥चौपई॥तुरसीसुधचितनयोजुजाकौ॥करमनिकौंनपरी
जनताकौ॥जाउररामाहिकरदेषाइ॥सुनसाधैअरुसनकिस्काइ
॥१६॥२२॥अथजोगमिश्राभगतिविधानः॥४॥तुरसीप्रेमभगतिबि
नाजोगसुअंधसमान॥जोगबिनाभगतिहूकसी॥पंगुलकेउनमान॥१॥
चौपई॥प्रेमभगतिउरमेंउपजाउ॥असरथासदृतिकरौकछुआउ॥लावै
भगतिमनसौंपीजोग॥ताताभांहिमिटैदषैसोग॥२॥साषी॥भक्ति
जोगसुमिलतकथ्या॥तुरसीसंतनिसार॥जिनियहनेहनजानिया॥
तिनसंगप्रारसिंगार॥३॥तुरसीसिंगारभगतियह॥कामीनलागेप्रे
मनिहकांमीनिजसंतजन॥कहाकरिहिधौंयह॥भगतिजोगरतहै
रहा॥त्यागिविषेकौनेह॥तुरसीधनिधनिसंतवे॥जिनकेभगति

जु एह ॥४॥ तुरसी जो गमिश्रा जगाति ॥ घोरे ही मे जोघ्र कबूएक बरणी
जु हम संत लषे रस सोइ ॥५॥ ॥२७॥ अथ मिश्रा जक्ति बेराग विधा
न: ॥१॥ तुरसी ब्रा जगत सो जन आदिये ॥ इष्ट अनिष्ट जु देषि ॥ राग दोष
नहीं उपजे ॥ बेराग जगति यह पेषि ॥२॥ तुरसी द्रिष्टि मुष्टि माया जु पद
सकल ब्रह्म की जानि ॥ बेराग मिश्रा जगति यह ॥ लिये न ही कछु मोरि
॥३॥ काम करम बीजा दिये ॥ जो चित में न उगादि ॥ तुरसी सहत बासना
ये ॥ बेराग जगति ये आदि ॥४॥ करम तजे फल क्रत जे ॥ तजे सुध येक
राम ॥ बेराग मिश्रा जगति ये ह ॥ जहां क्रोध न ही काम ॥५॥ त्रिभुवन
त्रिसो जु देषिके ॥ च लै न ही चित जास ॥ निमष एक पल एक हूं ॥ हरि
सुमिरन सों तास ॥ ये काग लागा रहै ॥ दास निका होइ दास ॥ तुरसी
बेराग मिश्रा जगति यह ॥ जहां दृढ़ यह बिस्वास ॥६॥ ॥२८॥ अथ त्रा
नामिश्रा जक्ति बिधान: ॥१॥ जाव तत्र ग्यान सगा जेणी ॥ जगति न उदै न
ही होइ ॥ तुरसी तावत ब्रह्म कों ॥ पावे नाही कोइ ॥१॥ जावत जु ग्यान
सगा जेणी ॥ संगली ये बेराग ॥ जा घट माहि न दैन उई ॥ ता के मोटे भाग
॥२॥ तुरसी त्रिधा जगति यह ॥ बरणी बेदन माहि ॥ गुरु गमि दास लै
बै को कु ॥ और न हि कर आदि ॥३॥ तुरसी प्रथम कनिष्ट जक्ति को ॥
ते ह बता क येह ॥ नाही होइ नाथ हि तजे ॥ के न दिषावे केह ॥४॥ तुर
सी न दपि हम तुम येक है ॥ बी चित्तें दनछि राम ॥ तदपि मेरे हो क्ये ह ॥
तुम प्रभु मैं जु गुलाम ॥५॥ एक रमि नदधि की ॥ सब को अन्न भाषे ॥ तुरसी
उरम नि को न दधि ॥ यों को कन भाषै ॥६॥ या ही ते ह मतु मम ही ॥ दीन
ही न दिन राति ॥ दास सदा इसा गोर है ॥ जदपि एक जाति ॥७॥ तुम्ह मेरा मैं
बांधिया ॥ प्रेम जेवरी या रंग ॥ कसनी के निज ह दामे ॥ लै लै तुम्हरी नाम
तुरसी ग्यान गरजित जगति ॥ मधि मया को नाम ॥ जहां जन के यह आ
संधौ ॥ प्रभु स्यों आगे जाम ॥८॥ तुरसी उतम जगति यह ॥ ग्यान सगाजे

तसोइ॥ जामेदरसैएकही ॥देतननामैकोइ॥९॥तुरसीज्ञानसमाज्ञिणी २
महाभगतियहजान॥ जहांबिजातीकोनही॥सदासजातीध्यान॥१०॥
चौरासीनौलोकमैं॥ एकरूपदरसाइ॥ज्यौदरपनमेंदेषिये॥अपनै
हीमुषकीछाइ॥तुरसीज्ञानसमाज्ञिणी॥यहनिजभगतिकहाइ॥
आतरमैंउतपनभई॥सुधनिवाजनकीकाइ॥११॥ धर्द॥अथसा
रभक्तिविधान ॥१॥तुरसीएकसरगुणभगति॥एकनिरगुनन्नि
जसार॥तामांहीअतिसैंअमल॥सोजीवनिमूलहमार॥२॥निमै
लनिहकांमीभगति॥सोईभगतिभगवंत॥तुरसीभगतिसकाम
ता॥तामैंकजीअनंत॥३॥चौपई॥सकामभगतिकेसेवनहारे॥स
र्गलोकजाइसयेजुवारे॥अपनौंकितफलभुगतांही॥पुनिछीन
भयेफेरियरांही॥४॥परहियतनहोहिंफिरिफिरियांना॥निजनि
हकामभगतिनहिंजानी॥तुरसीसकामहीमनलाया॥तिनकोइ
गहिक्वकांवाया॥५॥तुरसीयहगहरीभगतिजुजान॥अथवा
निरगुनसरगुनध्यांन॥छाडिसकामताकरैजुकोइ॥अपनेआपै
पड़ैचैसोइ ॥५॥साषी॥अथवानिर्गुनइष्टहोइ॥अथवासरगु
नसोइ॥सकामताछाडेबिनां॥मुकतिनपावैकोइ॥६॥तुरसीनि
रगुनसरगुनदरियाभगति॥वारपारनहीकोइ॥रूचात्रिगालौंस
रमता॥योरोहिंगाहिरहोसोइ॥७॥योरेहीमैंश्रानेदहै॥भगतिजु

तुरसीतुसकौकुटिबौ॥सिंगारभगतिजुसोइ॥मतबिष
अस्थिरकबऊंनहोइ॥८॥तुरसीअस्थिरहोइन
यहमनकबहूंआइ॥जावतसिंगारभगतिमैं॥रहाधीतिफेलाइ
गुनकोजानैतहीं॥निहकामताउपाइ॥निजसारश्रेमयाभगति
जाइसुजाइहीजाइ॥१०॥ चौपई॥ तातेसाधिकसोईमत

रै॥ प्रेमसगति उपजै सोई करै॥ तुरसी उर धरि साधन सार॥ अति आरू

ढ़ होइ करै बिचार॥ ११॥ साषी॥ प्रथम मे साधन सगति मैं॥ जौ साधक गहै

गइ॥ तौ तुरसी पीछे कहूं॥ प्रेम सगति उपजाइ॥ १२॥ तुरसी कौन सगति

कैसी जु बिधि॥ साधै साधक सोइ॥ ता साधे प्रेमा सगति॥ उरमे उदै जु होइ

॥ १३॥ तुरसी दास नौधा सगति॥ बरनी बेदन मांहि॥ ताहि समझि उ

र आचरै॥ तौ अंतर मल जाइ॥ १४॥ एक नौधा निरवरतितन॥ एक

प्रवरतितन जान॥ तामै अतिकन रूपनी॥ ताका करूं बिष्यान॥

॥ १५॥ तुरसी नौधा सगति कौ॥ है अति बिस्तार॥ तामै कछू एक कथ

तहू म॥ सार मांहि अति सार॥ १६॥ अ प्रअदन बिधान॥ जो पै पु

प्रथम स्रवन हरि सगति बिचारै॥ ज्यौं गिरही घरनी वजु धारै॥ नौवा

बिना मदिर नही होई॥ तुरसी ताहि जो नेम बकोई॥ १७॥ तुरसी जो तप

तीरथ कीये॥ देह गद दानादि करीये॥ तन मन कौ तिमर धन जाइ॥

सो स्रवन सगति स्यौं सहज नसाइ॥ १८॥ तुरसी स्रवन सगति सनका

दिक संत॥ रिषि मुनि के तेक कहूं अनंत॥ स्रवन सगति जन कारिक

जिते॥ पार पडू तै बरनौं किते॥ १९॥ स्रवन सगति नौधा के मांही

प्रथम नेमि का बरनी आंही॥ तुरसी सो परिषक जो करै तौ आ

गै सहजै सचरै॥ २०॥ तुरसी स्रवन सगति यह नाई॥ बिन साधे किन

मुकति जु पाई॥ ताथें समझि इहै उनमान॥ प्रेम कथा कौ करूं जु पान॥

॥ २१॥ साषी॥ तुरसी प्रेम कथा पर ब्रह्म की॥ वार पार नही कोइ॥ अ

पनै बित उनमान तैं॥ सुनि जु सुचित थिर होइ॥ २२॥ अनंत शास्त्र

अनंत मत॥ अनंत कथा गुन गान॥ तुरसी मिति मर जाइ नहि॥ कहां

लौं सुनिये कान॥ २३॥ अल्प अवधि अल्पहि जु बुधि॥ अल्पही नर उ

नमान॥ ताथें कछू एक सार मत॥ सुनै संत दे कान॥ २४॥ सार सार मत

स्रवन सुनि॥ सुनि राखै रिद माहि॥ ताही कौ सुनिबौ सुफल॥ तुरसी

तिसिरांहि॥२५॥तुरसीश्रवननिहरिकथा॥सुनैंसंतचितलाइ॥
सुनिसुरकानैमनहीं॥श्ररुफिनिवारतजाइ॥२६॥कैजेसुनैसतगुर
बदासरधाप्रीतिउपाइ॥कैजुसाखसोसुनै॥जासुनियेतमजाइ॥२७
रसीश्रवनातिदेवकी॥श्रवनैकथाजुसारा॥ताहिसुनैंजनप्रीतिक
रवहिनपरैबिस्तार॥२८॥तुरसीतेबारतानश्रवनसुनि॥तेबकथा
तेज्ञान॥जिनबसुनैसरधाघटै॥छूटैप्रभुकौध्यान॥२९॥श्रवननिक
थासुधामई॥सुनैसुचितथिरहोइ॥सुनिसुनिमनसुरझाइलै॥श्रोता
कहियेसोइ॥३०॥चौपई॥तुरसीश्रोताश्रैसीकरै॥जूंमृगनादश्रवन
चितधरै॥सुनवसुनततहांलौंजुसुनाइ॥देहगेहसुधिबिसरिजाइ॥३१
साषी॥श्रवनकथासुनैसतमुषा॥श्रसंतनिकटनहीजाइ॥तौउरबाह
रउपजेरोमरोमसुषकाइ॥कथातत्वबेतातपधरमरत॥रहैममतमल
धोइ॥ऐसेसंतनिकौबचना॥रुचिकैंसुनियेसोइ॥३३॥चौपई॥पुना
रस्तनिरगुनकौज्ञान॥निलोसीक्केकरैबषाना॥तुरसीसोबकतापरवान
श्रापतिरैतारैश्रोतान॥३४॥साषी॥तुरसीज्योंहैत्योंकहै॥श्रोरकीश्रो
रजूनाहि॥याजुगमेबकतासोइ॥श्रोरस्वारथीश्राहि॥३५॥पासावदिव
सहरिकथासुनि॥जएपरीबतपार॥तुरसीसोनितिसुनतहै॥पैउपजैन
हीकरारा॥३६॥बकताहोइसुषदेवसो॥श्रोतापीबतसमान॥तुरसीत
बनतउपजे॥ततपरश्रातमज्ञान॥३७॥तुरसीश्रातमज्ञानउतपनहोइ॥श्र
वसिउपजैश्राइ॥जोबकतासतिसेकलपहोइ॥श्रकदेसुबिघनजाइ॥३८
॥चौपई॥तुरसीश्रोताहूंऐसाहोइ॥सुनैसुश्रधरहियाहिलैसोई॥सुनि
हरिकथाश्रवधारैनारा॥ज्यापतिब्रतमेरहैसमाइ॥३९॥कैसुनिक
स्तीहोइसाचा॥कैबजतीहोइमनसाबाचा॥तुरसीदहूंमैंएकहूंनाह
तोसुनिबाकहिबाकिछिमाही॥४०॥तुरसीसुनिसुनिकथाजुसार
मनकेश्राइबजाइबिकारा॥सुनिबानलताहीकासाचा॥श्रीरदेय

मतका चा॥४१॥साषी॥तुरसी देषा देषी हरि कथा सुनि॥ सुनि नम
कोइ॥ जो लौं सर धा री ति स्यों॥ सुनै न हो जन सोइ॥ ४२॥ तुरसी यह
रमरी ति है॥ कथा जु सुनि बो कान॥ घारन हो इ कथा सुनै॥ सौ सुनि बै
ह बूझान॥ ४३॥ तुरसी जद पि कथा पवित्र है॥ सुने हो सुनि फल देइ॥ तद
पि सर धा स्यों सुनै॥ अनंत लाभ सो लेइ॥ ४४॥ चौपई॥ तुरसी बेद तो सिंधु
नसा रा॥ संतन की बानी बिस्तारा॥ सकल धरम सुनि परतीति धारै॥ सो भ्रो
ता संदेह निवारै॥ ४५॥ साषी॥ संदेह जु कोऊ नार है॥ जो सुनै सुरति स्यों
सोइ॥ तुरसी अति उज्जल धरम॥ तामै कसौ न कोइ॥ ४६॥ कसौ कों [redacted] अस
क्रोध की॥ लोभ मोह की बाम॥ तुरसी गई रही नहीं॥ सुनत कथा निह कों
म॥ पराय री पर ब्रह्म की॥ रुचि करि ये कह्यो जाम॥ तुरसी मद ई सुनत है
तिन की कोक हियाम॥ ४७॥ तुरसी यह अनन्नेक था॥ हरन अनंत संने
ह॥ जो बसु ने ता हिना हि रुचे॥ राज पाट धन ग्रेह॥ ४८॥ धनि श्रोता ब
कता जु धनि॥ जिन कै बरता नियेह॥ प्रेम कथा अन दिन सुनै॥ करिक
रि प्रीति सनेह॥ ४९॥ सोरठा॥ तुरसी करि करि प्रीति सनेह॥ कथा रस
श्रवन नि पीवे॥ इहि आलंबन लोह॥ आदि अंति ऐसें जीवे॥ ५०॥ सा
षी॥ तुरसी यह कथा प्रसंग कहा॥ हरन जी वु जट भाव॥ रोम रोम आ
नंद करन॥ आ गै की रति गाव॥ ५१॥ ५१॥ लिलि॥ अ षकी रतनि बिधा
न॥ लि॥ तुरसी श्रवन कथा रसना रमें॥ गोबिंद के गुन सार॥ ता के पाप
पचंड जरि॥ छिन मैं होवे छार॥ २॥ गावत गुन गोपाल के॥ प्रेम प्रीति सों सो
इ॥ तुरसी ता गर सुध हो इ॥ पापन रहई कोइ॥ ३॥ चौपई॥ रसना रुचि गो
बिंद गुण गावै॥ प्रेम प्रीति प्रह्लाद बढ़ावै॥ तुरसी तन सुधि रहै न कोइ॥ कथ
की रतन कहिये सोइ॥ ४॥ साषी॥ कथा की रतन कलिमहीं॥ नाषत बेद पु
रान॥ तुरसी नवजल तिरन कों॥ देजिहा जउन मान॥ ५॥ तुरसी जिहा जरूप
है॥ रसना रटि बौ राम॥ हरषि हरषि कैं गाइ बौ॥ हरिजस छाडि सकाम॥ ६॥

तुरसीतपतीरथव्रतदानसों॥जन्हंसोंपुनिजोश्राश्रितपावनरूपहै॥कर
लकीरतनसोइ॥६॥सतजुगसतत्रेताजुतपद्वापरपूजाजोइ॥तुरसीकाइ
कलिबिषहरन॥कलकीरतनसोइ॥७॥चौपई॥कलिमांहीजिनधारीदे
हा॥करतकीरतनधरतसनेहा॥तुरसीश्रसंसकारीसोइ॥प्रेमलगातिउतपन
सोंहोइ॥८॥प्रेमलगातिउतपनकेकारन कथाकीरतनसुषसाधारन॥तुरसी
जिमियहंदिढकरिगहा॥तिनजीतबकालाहालहा॥९॥सुषदेवश्रादिसंत
सबश्रावै॥हिलालनचिलावै॥रहावे॥रहेमगनहरिजसमेंतोइ॥तुरसीमी
गतापौसोइ॥१०॥जिनहरिजसकोपायोस्वावा॥तुलनेरहीरसचावा॥तुरसीर
हैजुबिहबलहोइ॥पावतगुननश्रपावतसोइ॥११॥साषी॥जहांकथाहरिकी
रतन॥करैंसमतितिनिहकाम॥तुरसीनिहचैसदीसों॥तहांबिराजेंरामा॥१२
जहांप्रीतिसोंमगनहोइ॥करैंकीरतनसाध॥तुरसीतहांछिननारहै॥जांदि
नांसिश्रपराध॥१३॥जाहिकीरतनमनिनारहै॥कंपकालिमाकोइ॥तुरसी
सोहैकथासुफल॥कीरतिहुंसतिसोइ॥१४॥कथासुनतहुंकदाचिकोऊ
कठोरतादरसाइ॥तुरसीकरतैंकीरतन॥सबैरैलौंगरिजाइ॥१५॥तुरसीवै
रैलौंगरिजांहिसबमनकेचारबिचार॥मैंलरूपहिरदोजुहोइ॥करतकीर
तनसार॥१६॥कीरतिकरुनासिंधुकी॥जिनउरधारीसोइ॥तुरसीतेकंचन
भये बकुसोंकाचनहोइ॥१७॥तुरसीयकीरतनबिधि॥कहुकबरतीसार
श्रागेसुमरनबरनकुं॥पावनप्रानश्रधार॥१८॥११७॥श्रथसुमरनबिधि
तः॥२०॥जितेकश्रंगहरिनगतिके॥तासबहीमेंसोइ॥तुरसीसुमिरनसार
है॥सेतकहैंसबकोइ॥२१॥तुरसीसुमिरनसमिकोऊनहीं॥साधनश्रोरजुश्र
न्य॥तिनकरिकैंउपदेसिया॥सतगुरक्रियानिधान॥२२॥चौपई॥तुरसीसुमि
रनहीश्रधिकारा॥सुमिरनसमिकोऊश्रौरनसारा॥जिनसुमिरनकापाया
न्द्रा॥तिपरताछिनयेहिंरजनदेवा॥श्रसायी॥तुरसीकलिमेंकलमलहरन॥
कों॥रामनामसमिश्रान॥सतकोऊदेष्यानहीं॥सुन्योहूंनकोउकान॥ध

सबपाटनकोपाटहै॥सबपुरानननिकोपुरान॥ यावनपदतिहंलोककौ ठर
सीनावनिरबांन॥५॥अपावनपावनकरन॥ कलबिषटारनहारि॥ तुरसीश्रैसा
नांवहै॥रषिहिरदैमुषिपूरि॥६॥जोगजगितीरथब्रत॥जपतपदांनअनेक॥
तुरसीसबहिनऊपरै॥उत्तमनांवकीटेक॥७॥तुरसीनांमसमाननग्यानकोऊ
नांमसमाननध्यान॥नांमसमाननबिधिबरत॥नांवसमिनदतदान॥८॥को
टिग्रंथकोअरथयह॥कोटिग्यानकनयेह॥तुरसीनिश्चलहोइकैं॥करऊ
नांवस्यौंनेह॥९॥तुरसीयाजुगमेंआधारयह॥याजुगमेंयहग्यांन॥याजुग
मेंहरिनांवसमि॥नहींधरमकोऊआन॥१०॥चौपई॥तुरसीधरमअनेक
दिढाये॥तिनमैंकहिकौनेसचपाये॥जेनिजकेंलागेहरिनाम॥तिनहिल
लेपायोआरांम॥११॥तुरसीरांमनामहीसार॥रांमनामबिनधंधबिकार
जिनिआरतिस्यौंसुमिरयासोइ॥तेजनरहेरामहीहोइ॥१२॥साषी॥योरो
कहिनहिमानिये॥करतुकोनजनबिबेक॥तुरसीकनिकाअग्निकी॥दाहत
दारअनेक॥१३॥तुरसीअग्निकुअल्पहोइ॥यौंअल्पकुहोइनांम॥तदपि
अनंतअघनिदहै॥जोसुमिरैकोऊनिहकाम॥१४॥तुरसीपारसरूपी
नामको॥कोजानैंयेजीव॥जिनसुमरयौमनलाइकैं॥तेनयेजीवतेसीव॥१५
तुरसीरैनिकैसेरहै॥जहांरबिउदौकराइ॥असैंसुमरतरामकौ॥पापगये
नहराइ॥१६॥अंधियारोअग्यानको॥रह्योनरहमधिकोइ॥तुरसीरबिवत
रामको॥नामउचारतसोइ॥१७॥अरधघरीहूंहरिनजे॥धनिवहदेही
धाम॥तुरसीतिनकीकौकहै॥जेसुमरैंआठौंजाम॥१८॥सातहुंपलसु
धतास्यौं॥हरिसुमिरनउरहोइ॥तुरसीतासुमिरनकी॥सरत्तरिखुनकोइ
१९॥एकपलककीप्रमितिता॥मोपैबरनीनजाइ॥तुरसीजौमनसुधहो
इ॥नांइबिलंबैआइ॥२०॥निमषनिमषहरिनांवले॥स्वासैस्वाससुम
रंत॥तुरसीपलपलपीवस्यौं॥प्रीतिकरैसोईसंत॥२१॥तुरसीज्यौंप्यासे
जुकी॥प्रीतिनीरस्यौंहोइ॥श्रैसीसुरतिरह्योकरै॥रामआपनोसोइ॥२२

चौपई॥ज्यों तृषै अन प्यासे पानी॥ऐसी प्रीति जु जनै बिनानी॥तुरसी सजन जु
करता सोइ॥जो ऐसा जग मैं है कोइ॥२४॥साषी॥ ज्यों पपुरे मानी र कौं॥चा
त्रिग घन की प्यास॥ज्यों कामी काम हित जो॥यों रांम भजै निज दास॥२४॥तु
रसी ज्यों नैना जु यह॥रूप माहि लित तांन॥नासा गंध रस नारस हि॥सबद
सुनन कौं कान॥देह पियारी जीव कौं॥जीव देह कौ धान॥ऐसी सी प्रीति
उर रांम स्यों॥तजक नांम निरबांन॥२५॥तुरसी रांम सजन करि लीजिए री
जै चिंतन आन॥नरि सरि ऐसी जु पी जिए॥इहै जु बडो सयान॥२६॥इहै जो
ग इहै जुगति है॥इहै साति इहै नाव॥भजत बिलंब न कीजिये॥तुरसी त्रिभु
वन राव॥२७॥जब लग देही सावती॥रोग न कछू सरीर॥तब लग गोबिंद भज
न करि॥बंदि गुर चरन कबीर॥२८॥नांम निरूपत रांम कौ॥जांम घरी पल
सोइ॥तुरसी बिलम न कीजिये॥भजते होइ सु होइ॥२९॥चौपई॥तुरसी
नाम हि संत निगाया॥नाम हि मांहि सब निसचै पाया॥ता रांम नाम कौ उचा
र॥आगै बरनौ चारि परकार॥३०॥साषी॥ तुरसी अधम मधि म उतम॥
अति उतम हू सोइ॥सुमिरन की बिधि जुगति ये॥जानै बिरला कोइ॥३१॥
चौपई॥तुरसी अधम सुमिरन यौं येहा॥रसना रांम नाम जपि लेहा॥यह अव
लंबन तो लौं करै॥मधि सुमिरन की सोधी परै॥३२॥साषी॥तुरसी मधि
सुमिरन जु यह॥कंवकंवल अस्थांन॥रांम नाम उचार होइ॥ता हि घाय
ल कौ ऊनल जान॥३३॥उतम सुमिरन रिदा मैं॥आर तै धरि ध्यांन॥स्वास
उसास रटौ करै॥तुरसी नांम निरबांन॥३४॥चौपई॥अतिउतम सुमि
रन की नाई॥महिमा मुष करि कही न जाई॥रोम रोम ररंकार सुनाइ॥तु
रसी लाग उदै होइ आइ॥३५॥तुरसी उतम अति उतम हूं नाहै॥मधि सु
मिरन हूं लषौ न जावै॥तावत अधम सुमिरन हूं त्यागै॥ताकौ पोह न पार
न लागै॥३६॥जावत र बिसास उदै जु नांही॥उडगन हूं ते बादर छांही
तावत तरीय गहू न छिकरै॥सो आगि बंध पूर मैं परै॥३७॥साषी॥नाडे
हू तिरि ना सकै॥समद तिरन कौं जाइ॥तुरसी प्रथम साधे बिना॥क्यौं लंघै

दरियाव॥३८॥ जावत मन चित की कीरत॥ रही दसौं दिस फैल॥ तुरसी ता
वत उतमन जन॥ कै रत सो सल हली सैल॥३९॥ तुरसी तिनैं तिनैं मन बं
टि रह्यौ॥ फिर तर ह्यौ कित कित न होइ॥ तावत उतमन जन मैं॥ कै सैं गमि हो
इ सोइ॥४०॥१५७॥ अथ अध सुमिरन विधान॥१॥ चौपई॥ तातें
ध हरि नजन संबाहै॥ उतमन जन की यों जो चाहै॥ तुरसी महा मदिर पर आइ॥
ऐसी बिना न पकं च्या जाइ॥१॥ साखी॥ पैरी परी पावदे सुमिरन बढता जाइ॥
तुरसी उतमन जन मैं॥ तबक कं मन न रहाइ॥२॥ चौपई॥ ज्यों बेली तिण कों
लाग लेइ॥ दिन दिन उरध पया नादेय॥ यों हरिजन हरि जन जु मांही॥ ल
ग्या रहै अलसाइ जु नाही॥३॥ सुमिरन डोरी लागा जाइ॥ उरमैं अवित प्रीति
उपाइ॥ रहै न होउ रैही अलसाइ॥ तुरसी तब सुमिरन सचुपाइ॥४॥ करका
ट की माला लेइ॥ अघ वामा सा है खिनि केइ॥ जेन के नरस नामु षरां म
तुरसी उचरै या वन नाम॥५॥ साखी॥ यावन नांव रटौ करै॥ ज्यों चात्रि
ग घन प्रीति॥ अरु रोगहि बैद हि व ज्यों॥ गाहे रहै पहरी ति॥६॥ चौपई॥
तुरसी निमिष निमिष पल पल सुमिराइ॥ घरी महूरत बढता जाइ॥ यह सु
मिरन तावत जु कराइ॥ मधि सुमिरन की गमि होइ आइ॥७॥ साखी॥ यह
सुमिरन अंकूरवत॥ संतन कह्या जु सोइ॥ तुरसी तावत कीजिये॥ जावत
मधि गमि होइ॥८॥१६०॥ अथ मधि सुमिरन विधान॥१॥ चौपई॥
तुरसी मधि सुमिरन है ऐसा॥ आकाश उडगन तेज जु तैसा॥ अध सुमि
रन की उपाया पेह॥ ज्यों अघियारै दीप गयेह॥१॥ साखी॥ तुरसी मधि सु
मिरन यों कीजिए॥ ज्यों त्रिय पुरिष जु नाम॥ मांहि मांहि रटौ करै॥ बाहरि
स्यों का कांम॥२॥ चौपई॥ तुरसी बाहरि न्हू लेनाही॥ जिमि सुमिरन रस
पाया मांही॥ बाहरि तौ लौं ही उचराइ॥ जौ लौं नीत रिसें दन पाइ॥३॥ तुर
सी अब मन उलटा चल्या॥ कंठ के वल कामा रग षुल्यां॥ धुनि अस्यानै बैग
जाइ॥ रत उत की सब धरी उवाइ॥४॥ तुरसी कंठ केवल अस्थान॥ नांवनि
रूपै धरि करि ध्यान॥ बिन ही कर माला जु बिनाही॥ रटौ करै रमा हियौं॥

मांही॥५॥साषी॥तुरसी रांम रट्यौ करै॥ज्यौं पतिबरता पीव॥माही हीं मांही
जुधी ब्याहरिकसूनकीव॥६॥चौपई॥तुरसीपलपलछिनछिनसुमि
मां घरीमहूरतजोमैजोमा॥बढ़तीप्रीतितिनजैयौंरांम॥लौपावैउतमआराम
॥७॥साषी॥तुरसीमधिसुमिरनकह्या॥अपनीबुधिअनुसार॥आगै
मबरनकैंकोऊजानैजाननहार॥८॥उतमसुमिरनकुसमवृत मधितरवृ
रपरवान॥तुरसी अतिउतमनजन॥ताहिफलरूपीजांनि॥९॥सोप
उतमसुमिरनसासिवृतसोइ॥सूरनसायाउदैगरहोइ॥तुरसीअतिउतम
नौंतान॥निपटजुहरनतिसाअज्ञात॥१०॥१२४॥अथउत्तमसुमिरन
विधान॥१३॥म॥५॥तुरसीयउतमनजन॥संतनकह्याजुसोइ॥
बड़भागीपावैकोऊ॥जाताकैनहिहोइ॥१॥ह्रिरदैनांमरट्यौकरै॥मुष
हाजतनाहि॥सासउस्वासनिनामलै॥तुरसीमांहीमाहि॥२॥तुरसीमाला
सासउसासकी ॥ओरउपलौंआरांम॥तासनिरिदाथिरहोइकैं॥सुमिरैअ
पनौरांम॥३॥सासउस्वासनिनांमलै॥निरतिसुरतिउलटाइ॥तुरसीबिर
थषोवैनहीं॥एकऊस्वाससुजाई॥४॥येकऊस्वासनषोईयै॥रांमनांमबि
नबांम॥तुरसीबीत्यौजाततन॥ध्रूवाकोसोधांम॥५॥मोलनचब्रदसनबन
कौ॥येकस्वासहैसोइ॥अैसोधनहरिनांवबिन॥तुरसीबृथानषोइ॥६॥
उगतस्वासानांवलै॥बैगतस्वासानांव॥तुरसीनिसदिननांवलै॥मनचित
करिएकगांव॥७॥तुरसीस्वासासुमिरनकीसदा॥एकादसीनिवासिया
अवसमिकोऊब्रतनहीं॥देमकैउगातिऔगाहि॥८॥छसैसहंसईकय
कीस्वाससमालासोइ॥ताहिफेरैजनसुरतिकरि॥तनमांहीथिरहोइ
॥९॥निसदिनरांमरांमहिजपै॥प्रेमप्रीतिचितगोइ॥तुरसीसोसिधहोइ
सही॥छायामायाषोइ॥१०॥जास्वाहूनहिजरै॥मास्यापुनिमरैनपांनी॥
काट्याहूंनहिकटै॥बोयानहींबूडैपांनी॥अैसेसहंसईकईसा॥माणिन
कीमालाआनी॥तास्यौंउरथिरहोइ॥नावसुमिरैनिरबांनी॥११॥उरअंत
रिलागोरहै॥नवोकैपाटलगाइ॥तुरसीरांमकेनांवमैं॥ताहरित्रैमेवला

२॥१२॥ मोती लौं पोयो कै॥ सुरति सुधागे नाम॥ तुरसी पलन बिसारिये॥ उर
स्यों अपनौ राम॥ १३॥ चौपई॥ ज्यौं सुनार सोनै चित धरै॥ देम हरन की मन मैं क
रै॥ तुरसी यौं उर अपनौ राम॥ सुमिरै अह निसि आठौ जाम॥ १४॥ साषी॥ निर
ति उलटि करै अंधरी॥ आन रूप स्यों सोइ॥ सुरति पराक्रै हरि जो॥ आन आ
लंबन षोइ॥ यां चौकी उलटै धरै॥ कुरम कला सं जोइ॥ तुरसी सब साधु कहै
सुमिरन की गति सोइ॥ १५॥ सुमिरन सब कोऊ करत हैं॥ बित अपने अनमांन
तुरसी पानी लौंन लौं॥ होइ सु सुमिरन आंन॥ १६॥ तुरसी सुमिरन सब को।
ऊ करत है॥ करि करि मांनै फूलि॥ वह सुमिरन कोऊ और हैं॥ तन सुधि रहै
न मूलि॥ १७॥ मन इंद्री बुधि आदि यै॥ हति रहत होइ जाइ॥ तुरसी जा सुमिरन म
हीं॥ रहत बासना मांहि॥ १८॥ जग्य आदिक कामिक्रिक मैं॥ कोक टजप तप
दान॥ तुरसी कलि मैं आषियो॥ सुमिरन ही निरबांन॥ १९॥ सुमिरन माहि स
माहि रहै॥ संपूरन उर आइ॥ सकल ग्रंथ को अरथ यह॥ तुरसी लियो पाइ॥
२०॥ तुरसी कांन निबहरा होइ कै॥ बिसरौ बाजी बैंन॥ रूंगा पूंग होइ कैं न
जो॥ रांम आपनौ श्रैंन॥ २१॥ चौपई॥ तुरसी कांन निबहरा होइ॥ बाजी बचन
सुनैं नही कोइ॥ रांम नाम मैं रहै यौं होइ॥ जैसें की चपषान जु सोइ॥ २२॥ सा
षी॥ नाचै बाहरि बिकुं बचन दोऊं॥ बाजै बजो अनंत॥ तुरसी चसकिन चि
त वई॥ सुमिरन राता संत॥ २३॥ रांम नाम राता रहै॥ अपने ही उर मांहि॥ तु
रसी सूलि बिसरि कबे॥ बाहरि आवै नाहि॥ २४॥ बाह जिके सुष नारवे पाई
उर और रही नोर॥ रांम नाम स्यों मन लगा॥ तुरसी परहरि औरा॥ २५॥ तुरसी औ
रन आवई॥ जो उर राता रांम॥ बिषबवन लौं बिसरि गया॥ बाजी सुषबे कांम
२६॥ ज्यौं सरकित सर मैं रह्या॥ नरपति देष्या नाहि॥ बाजे बाजत नीक लेत च
सकिन चित या ताहि॥ तुरसी यौं रत मत होइ रह्या॥ रांम नांम कै मांहि॥ सुमि
रन करता संत सो॥ जो आसा कोऊ आहि॥ २७॥ तुरसी ऐसा है कोऊ॥ रांम नां
म रत साध॥ धनि वा जननी तात धनि॥ धनि गुरदेव अगाध॥ २८॥ तुरसी धनि
धनि दास वह॥ रांम नांम मैं लीन॥ अषंड अहो निसि होइ रह्या॥ तिन सब सु।

१६॥तुरसीअतिउतमनजन॥कापैबरन्यौंजाय॥लषैसोइ

अतिहिनंमनिहकांम॥रोमरोमहोयोकरै॥सहजैंसुमिरनरांम॥३॥तुरसी
रोमरोमररंकारधुनि॥सहजैचलीजुनाइ॥ज्यौंकारिजबिनाकुम्हारकै
सहजैंचाकफिरांइ॥४॥तुरसीचाकफिरयौकरै॥बिनहीकारिजसोइ
योंउरबाहरिसंतकै॥परमजापयौंहोइ॥५॥बिनहीजपियांजापहोइ
अषंडउरमैंचैन॥तुरसीकरमालाबिना॥बिनरसनाबिनबैन॥६॥रय
नाहलैनकरचलै॥डूलैनमनसासोइ॥तुरसीमनहूंहोइरह्या॥सहजरांमर
तहोइ॥७॥करमंमालाफेरनकी॥षटपटमिटिगईबान॥तुरसीयहमनर
हिगया॥अहलअलाधोनं॥८॥तुरसीआतमध्यानस्यौं॥निमषनन्यारा
होइ॥जसुषकपाराप्रीया॥फेरह्वाअैसेसोइ॥९॥तुरसीमहप्रजपाय
निकौ॥होतेपरदावांम॥सोधूवरिलौफाटिगयो॥चितरहिगयोपकहीरांम
॥१०॥तुरसीरांमनांमहीरहिगयो॥याचितमांहीसोच॥ज्यौंदषियगदार
तें॥उतरनकबहूंहोइ॥११॥कबहूंनउतरईदारकै॥हसीकोनोइ॥तुर
सीयौंचितरहिगया॥सुमिरनमैंसोई॥१२॥टारयाहूंघोंनाटरै॥रहैकामा
दिकरारि॥तुरसीचित्रकीबेलिकौं॥काकरैबाजिबहारि॥१३॥ज्योंगि
रवरकीछायामैं॥नैकौंकंपजुनांहि॥तुरसीअयौंमनहोइरह्या॥रांम
नांमकैमांहि॥१४॥तुरसीब्रह्मनावनांयहा॥नांमकहावैसोइ॥रसना
करमालाबिना॥अषंडउरमैंहोइ॥यहसुमिरनसंतनिकह्या॥सारस
तसंजोइ॥नवसिंधकीजिहाजयह॥चढैसुलंघैलोइ॥१५॥१८॥
अथपारसेंषवनविधानः॥१५॥चोपई॥तुरसीअगुनपुरुषअव

तार। सोऊ सेवा अति षंडे धार॥ तो निरगुन की सेवा सोइ। ता हि साध
बेसक न कोइ॥ ३॥ दोहा॥ सिव सनकादिक आदि सब॥ रिषि मुनि साध
सोइ॥ तुरसी निज सेवा करैं॥ पै पार न पावै कोइ॥ ४॥ सेवा मैं लागे रहैं॥ प
कचित एकै नाइ॥ तुरसी तऊ वा प्रभु कौं॥ प्रमित पार न हि पाइ॥ ३॥ जाकै
हस्त न पाउ का॥ श्रवन नैन मुष नास॥ तुरसी लिंग चिह्न बिना॥ कैसे प
से ऊ तास॥ ६॥ चौपई॥ तुरसी अगुन सेवा सोइ॥ रूप देषि कीजिय तहे लो
इ॥ अरूप सेव च टाइ बौ आंडो॥ अति ही कुलत्तड धारो षांडो॥ ५॥ तुरसी
हम सेव धम अज्ञान॥ का जानै सेवा कौ न्यान॥ सनकादिक संकर अरु
सेष॥ ते ऊ कहै अलेष अलेष॥ ६॥ साषी॥ तुरसी अपनै चित्त मन मांनत्र
स रधा प्रीति उपाइ॥ सेवा मैं लागा जु रहु॥ चरन कंवल चित लाइ॥ ७॥ तुर
सी पांचौं तत्त परै॥ त्रिगुन स्यौं न्यारो॥ त्यौं हि सुछिम चरन वे॥ संतन के प्यारे
८॥ तुरसी चरन बषांनिये॥ जगत जन के नेवा॥ नही अषंड अरूप वे॥
निज अबिनासी देव॥ ९॥ तुरसी ते जप जके चरन वे॥ हाड चाम के नांहि
बेद पुरांन न वरनिये॥ रिदा कंवल के मांहि॥ १०॥ तुरसी रिदा कंवल महीं॥
जोति मई जगदीस॥ ता चरन निलाये रहौ॥ मनौं मई अपनो सीस॥ १२॥ चौ
पई॥ हरि चरनन की सेवा करौं॥ छिन छिन सीस चरन तर धरौं॥ तुरसी ह
रि चरनन कौ ध्यान॥ और तजौ आलंबन आन॥ १३॥ ज्यौं पतिव्रता पति कौ
सेवै॥ छिन कऊ चित न इत उत देवै॥ तुरसी ज्यौं चकोर ससि ध्यान॥ ऐसै
सेवौ पद निरबांन॥ १४॥ अति प्रीति स्यौं प्रेटे पाइ॥ उरमैं हि कोमल न नाव
उपाइ॥ तुरसी अति सरधा लै होइ॥ यों अपनौं प्रभु सेऊ सोइ॥ १४॥ साषी॥
सेवा सुध कीयो करौ॥ कपट मला दिक षोइ॥ तुरसी या सेवा महीं॥ मु
क्ति जीव की होइ॥ १५॥ तुरसी मुक्ति मांऊ संसे नही॥ जौ मन सा
उर आइ॥ प्रेम सहित लपटी रहै॥ कोमल प्रभु के पाइ॥ १६॥ तुरसी
ज्यौं कंवला मन सा बसौ॥ रहे चरन सरनाइ॥ अपनैं न गुन ब

सकै॥तौक्यौंनपरमसुखपाइ॥१७॥चौपई॥तुरसीयहसेवाजुविधा
न॥बरन्यौंअपनैंबितउनमान॥आगैंअरचनगतिजुआहि॥कछूएक
बरनिसुनांउताहि॥१८॥९॥२५६॥अथअरचनविधान॥तुरसीद्र
ष्टिपरैनहीमुष्टिनआवै॥सो॥तापतुकीअरचननगति॥कहौकौनबि
धिहोइ॥१॥दूसिरूपमननालागै॥अदृसिलष्योंनजाइ॥तुरसीअरु
मलषेबिना॥मोमननापतियाइ॥२॥चौपई॥द्रिष्टिमुष्टिबानीब्यो
हार॥उपजैबिनसैंबारंबार॥तुरसीअद्रिष्टअषिरराम॥तहांमोम
नमानतबिश्राम॥३॥साषी॥तुरसीनिरगुनब्रह्मस्यौं॥मोमनमांनत
सोइ॥सरगुनस्यौंरुचिनांकरै॥कोटिकरैजोकोइ॥४॥तावैंसिधिक
सिधिहोइ॥सुषदुषदोउहोइसो॥तुरसीपूजौंपतिआपनी॥पतिब्रत
प्रीतिस्यौंसंजोइ॥५॥निरगुनसरगुनस्वरूप॥बरनैबेदनिमांहि॥तुरसी
निरगुनमूलहै॥अगुनडारीआहि॥६॥सोअगुनडारीबज्यौं॥तोषियेजु
बकुनाइ॥तौनिरगुनमूलतोष्योनपरै॥देषौजलदृष्टयौपाइ॥७॥जै
सैंआरसीजोरिकोऊ॥मांझबदननिरषाइ॥तहांनंनोप्रीतिबिंबहो
हिं॥तिनहितिलकदेआइ॥तुरसीतौउसोज्ञानहोइ॥जौलौंनमूलअर
चाइ॥यौंनिरगुनसरगुनजानि॥देषौनीकेंनिरषाइ॥८॥सबहीतरवर
त्रिपतिहोइ॥करतमूलजलपोष॥तुरसीयौंनिरगुननजत॥अगुनज्ञ
होइसंतोष॥९॥तातैंसाधूसंतजेता॥जेनकेनमनलाइ॥तुरसीनिजनि
रगुनभजत॥अंतितप्रीतिउपाइ॥१०॥पूजाउभैपकारकी॥संतनिबरनी
सोइ॥तुरसीइकबाहजिहै॥इकअंनिअंतरिजोइ॥११॥चौपई॥अंनि
अंतरिपूजायहनांव॥गुनइंद्रीकोहोइसमिटाव॥तुरसीबाहजिपूजाक
रै॥तौमनफैलिदिसौंदिसपरै॥१२॥तुरसीयहसबकौनिरधार॥बिदांव
सिधांतसार॥फुनिसबसाधनकोमतयहै॥अंनिअंतरिपूजाकरिलेहै
॥१३॥अंनिअंतरिपूजायहनाई॥संतनिसकलसिरोवनिगाई॥ताक

रनहि और जु आन। तुरसी यह निश्चै निरबांन॥ १४॥ साषी॥ तुरसी
प्रतिमा देषि कैं। पूजत है सब कोइ॥ ऋद्धि सिद्धि ब्रह्म कौं पूजिबौ। कहौ कौंन बिधि होइ॥ १५॥ तुरसीदास तिहूं लोक मैं। प्रतिमा ओंकार॥ बाचक निरगुन ब्रह्म कौं। बेदन ब्रन्यौं सार॥ रांम नांम आदि और हूं। प्रभु के नाम अपार॥ पूजौं प्रीति लगाइ कैं। तन देवल जु मंझार॥ १६॥ तुरसी यह है मंदिर यह देह रा। इहै तन मो ष्षि सुधाम॥ याही मांझ बिराजही। अमल आत्मा रांम॥ १७॥ चौपई॥ तुरसी इंद्री उलटी लेकैं। पश्चिम तन जु पयानो देकैं॥ रिदय स्थल थिर आसन लाइ॥ अरचन लगाति करैं इहि न्याइ॥ १८॥ चित चंदन घसि गात लगावौ। हेत हेत प्रभु कै अंग लपटावौ॥ तुरसी अति तिव अमल होइ॥ अरचन लगाति करै यौं सोइ॥ १९॥ तुरसी और अरगजे घनें। केते कों कहां लौंग नैं॥ साव लगाति कै अति ही सुगंध॥ अरचौ अपनौं आनंदकंद॥ २०॥ साषी
तुरसी तर ली लेत हांसी लमंजरी सोइ॥ संतोष के पक्षपज बनै। सुंदर माल संजोइ॥ अरचौं आतम देव कौं। चित तिन प्रधित होइ॥ तुरसी यह अरचन लगाति। संतनि बरनी सोइ॥ २१॥ जोइ जु दीपक ग्यान कौ। अनहद घंटा बाइ॥ आनंद स्यौं करौं आरती। उलटि अग्नि अंतरि आइ॥ अषंड आतमा देव की॥ अति निज भाव उपजाइ॥ तुरसी यह निज अरचन लगाति॥ सतगुर दई दिषाइ॥ २२॥ तुरसी यह अरचन लगाति। सतगुर कही सुनाइ॥ आगौं बंदन बरनकं उरदी नता भ्याइ॥ २३॥ २४॥ अथ बंदना बिधान॥
तुरसी अस्तुन अमंगल पाप सब। बंदत हरि गुर साध॥ तातकाल तहीं छिन जाहिं नासि अपराध॥ १॥ तुरसी गुर गोबिंद संतन बिषैं। अति निज भाव उपजाइ॥ मन सौं बंदन करैं। तौ पापन रहई काइ॥ २॥ बंदन उनै प्रकार कौ। संतनि गायौ सोइ॥ तुरसी ता बिधि नेद कौं। समझै साधू कोइ॥ ३॥ तुरसी इक निरगुन सरगुन इक। उनै रूप ये सार॥ सकल सास्त्र समृति कह्यौ। को कजानै जाननहार॥ ४॥ तुरसी निरगुन ब्रह्म है सरगुन

ईश्वरजीवाउतैंवाचककौत्यागकीये॥लक्षिलक्षियेकीवृ॥तालक्षिहीसुधलखैं
[illegible]
[illegible]
[illegible]
करइ॥मनैंमइपरणाम॥७॥लोकदिषावाकाकरैंरे।कुनिपरिपरिकुनिकरि
[illegible]
[illegible]
सवनश्रागेहोइ॥तुरसीसोकमाहिलो॥नहीवाहिलोसोइ॥१०॥करवैहोइसु
नीकसैहोरीश्रयजुश्राय॥तुरसीनिर्द्द[illegible]परतछिनावपहादेषीनीकैनिरत
इ॥११॥तुरसीनिरताइजुयह॥निजनीकैंकरिसोय॥तेनरश्रंतरदीरचै।कपटम
लादिकषोइ॥१२॥तुरसीकपटनावत्यागेबिना॥सरमासरमीसोइ॥यावडी
यरिय रिवैम।परममुक्तिक्योंहोइ॥१३॥तुरसीपरममुक्तितबपाईये॥जबश्रै
सैंहोइश्राइ॥हरिगुरकौंवंदनकरे॥एकभावउपजाइ॥१४॥तुरसीयहवंद
नबिधिकही॥महाबुद्धिसोपाइ॥जोयाहिउरदिढकरिगहै॥प्रेमभगतिफ
लपाइ॥१५॥२७४॥श्रथदासबिधान:॥१९॥तुरसीबनैंनदासकौंश्राल
सएकलगार॥हरिगुरसाधुसेवमैं लग्यारहैइकतार॥१॥चौपई॥हरिगुर
साधुसेवामाहीं॥इकटगरहैश्रोसाइजुनाही॥श्रेसाषानांजादगुलाम:तुरसी
पावैपदश्रारांम॥२॥सतचरनरजसीसचढावै॥ककवस्त्रागेनुरहावै॥श्रा
गंत्रेगतकबहूंकरै॥यहयनपकरिउदधियोंतिरै॥३॥साषी॥तुरसीनि
ह्कामीनिजजननकी॥निहकांमीहोइसोइ॥सिवानितिकस्योकरैंफ
लवासनाजुषोइ॥४॥लोनकाजरांमदिनजै॥नामनिमतदेदान॥तावत
दासातननहीं॥तुरसीसोदाजानि॥५॥जावतसौदाहैसही॥संतकहैसब
कोइ॥तुरसीनगतिकरिनांविक्षै॥दासइनीसुषसोइ॥६॥स्वरगलोक
बंछैनही॥नानरकतेडराइ॥तुरसीनांइलग्यारहै॥रामनांमसोपाइ

॥७॥ कोक चहै धनमालकौं ॥ कोंक मान सुहाग ॥ दास चहै हरिभगतिकौं ॥ मेट
नकौं दुषदाग ॥८॥ दास बडाई आपनी ॥ आप जेमुष कराइ ॥ तौ तुरसी वा दासकै
दासापन घटि जाइ ॥९॥ अपनी अस्तुति आपमुष कै करासै कोइ ॥ ताकौं तप
ध्यान जु घटै ॥ ज्यों ससि कला जु सोइ ॥१०॥ कबहूं मात पितर कवे ॥ कबहूं देई देव ॥
कबहूं नर हरिकौं भजै ॥ नहीं अनित पद सेव ॥११॥ आंन देव तजि रामकी सेवा ॥
करै सु धन्य ॥ तुरसीदास तब जानिलकहै ॥ हरिकौं सकल ॥१२॥ जो दासापन दि
टगहैं ॥ वारनिबाहै जाइ ॥ तुरसी ता हरिदासकौं ॥ कब द्रकाल न षाइ ॥१३॥ हरि
देह हरि गुरकौं भजन ॥ करि संतनकी सेव ॥ तुरसी श्रवननि हरिकथा रसनरमै गुर
देव ॥१४॥ करि सेवा हरिजननकी ॥ मुषिपुनि हरिकौ नांम ॥ आगपर आलंबहै
औरनकौं कंकाम ॥१५॥ तुरसी के हरि के गुर संतजन ॥ जीवनि आनौं येह ॥ और
अस्थूल संसार सब ॥ कबहूं न लावै नेह ॥१६॥ तुरसी तिस्न बूडनकी चितकौं चि
तमैं आनैं नाहि ॥ सेवा मांहि सन्या रहै ॥ रामनांमकै मांहि ॥१७॥ तुरसी नानिंदै ना
बदई ॥ ना हरषै बिसमाइ ॥ मगन रहै हरिसेवमैं ॥ सो सेवग सतिभाइ ॥१८॥ गु
रआज्ञा लोपै नहीं ॥ कोपन काया मंजारि ॥ संतनकी सेवा करै ॥ कोमलता उर
धारि ॥ स्वर्ग मृत पाताल सुष ॥ बांछै नहीं लगार ॥ तुरसी निसदिन नाम रत ॥ सो
सेवग सतिसार ॥१९॥ सत गुर साधूं जननिकैं ॥ चरनकंवल सिर नाइ ॥ तु
रसी नित पस्या रहैं ॥ निमष न इत उत जाइ ॥२०॥ जो सबकी षूंदनि सहै ॥ सबद
कुसबद न जरि जाइ ॥ तुरसी कबू आनैं नहीं ॥ सो निजदास कहाइ ॥२१॥ जो स
नकी षूंदनि सहै ॥ कसक न आनैं कोइ ॥ तुरसी गरद ह्वै वा रहै ॥ संत चरन रत
सोइ ॥२२॥ तुरसी दासनिका परदास होइ ॥ ताहूं का होइ दास ॥ ता सुष पल
पलपटतर नहीं ॥ स्वर्ग सुष भोगाबिलास ॥२३॥ सब संतनिके चरनकी ॥ रजको
तिलक जु देइ ॥ तुरसी ऐसैं दीन होइ ॥ परम लाभ यौं लेइ ॥२४॥ रांम नांम बिन
दासकैं जो मुषि निकसै आन ॥ तौ तुरसी वह दास नहीं ॥ है असोच अज्ञान ॥
॥२५॥ रांम नांम रत होइ रहा ॥ आनि न दास उर माहि ॥ तुरसी रांम बिन और

मता॥दूजा आवैं नांहि॥२६॥जिनि आपा अरपन कीया॥जाका ताकौं सोइ॥स्वरूप
नहूं अय नांवैं नहीं॥जाग्रत की कहै को इ॥अंत्रिवित निरमल होइ कैं॥२ सारां मर
त होय॥तुरसी दास ता दास कौं॥भौ पटंतरि कोइ॥२७॥त्रिविव्रत हूं ते महा अ
धिकार॥साधन निज सोइ॥मान रह्यौ अंबरीष कौ॥ताहि जांनैं सब कोइ॥
२८॥जदपि बरन अधिक है॥दुरवासा रिषि सोइ॥द्रोह कीये हरि दास स्यौं
राख्यौ नांहिन कोइ॥२९॥३०३॥अथ सषा ज्ञान विधान:॥१९॥तुरसी
सषा भाव हूं हरि तजै॥सो क सदा अति होइ॥मनसा बाचा करमनां॥सत कहैं स
ब कोइ॥१॥चौपई॥जो सेवा होइ सेवा करै॥सो तौ अव सिमेव न धरै॥तुरसी
बस हूं मित हि जांनि॥तजै सु ताहू की लेमांनि॥२॥तुरसी पार सस्व रूप रमेश्वर
सोइ॥कैसी हू विधि परसौ कोइ॥तावे जानि अजानि जु सोइ॥ताकौ फल त
हि होई ही होइ॥३॥साषी॥तुरसी प्रभुता जानि कैं॥प्रभु कौं तजै जु कोइ॥ता
की महिमा को कहै॥जो जोरै हू तारै सोइ॥४॥ऐसे पतित पावन प्रभु॥जैसें हूं कैं
सें होइ॥सरधा स्यौं सुमिरे विनु तिनि॥पार लंघाये सोइ॥५॥चौपई॥बाराबरी
कौ नाव न जानैं॥गुन औगुन ताकौ कछु न मानैं॥अपनौ मित जानि वे रांम
ताहि समरपै अपनौं धांम॥६॥पतित पावन नाथ अनाथ॥सुर नर सक
ल बिस्व कौ माथ॥तुरसी कैसें हूं सुमिरौ जीव॥ताहि जु तैसें हितो षे पीव
॥७॥साषी॥तुरसी तैसें हित महीं॥जो जैसें सुमिरइ॥गुन औगुन ता नाम
है॥ऐसे त्रिभुवन राइ॥८॥तुरसी त्रिभुवन नाथ कौ॥सुत हित सुनांर जु ये है॥जे
न केन ज्यौं न जौ भिन्नां॥तैसें ही उधरै ते है॥९॥उधारे संसार स्यौं॥किर पा पर
सन गाइ॥तुरसी पारंगत कीये॥ऐसे हैं रांमराइ॥१०॥३१४॥अथ पैवे
द बिधान:॥२०॥तुरसी मन आत्मा॥कर कैं समरपन रांम॥जाका ता
हि दे उरन होइ॥छाडि कै सकल स कांम॥१॥ज्यों वे चै पसु का धनी॥लेन ह
र होइ सोइ॥तुरसी यौं आपा अरपि दे॥जौ चित प्रभु को होइ॥२॥तुरसी वि

तासोईकरैगा॥जाकौंसौंप्यानार॥ तुलैरा होइ चरनका॥ आदि अंतिइक
नार॥ ३॥ ज्यौंकेवटकीनांवविचि॥ ना रूअताइरूआइ॥ तुरसी आइइकंतर
नये॥ तासनरोसा लाइ॥ ४॥ तुरसी घरजायेजुगुलामकों॥ काथौंचिंतादो
इ॥ चिंतातावत हीजुहै॥ तावतमैंतैसोइ॥ ५॥ तुरसीमैं मेरीमैंतौकरों॥ औ
कछूमेरी होइ॥ सकलसौंजहैरामकी॥ मैंकामैं घौंसोइ॥ ६॥ तुरसीइहैबि
चारिजे॥ रहैमसत छिटकाइ॥ ते नगता नगावर्तेके॥ चसमसमसचपाइ
॥ ७॥ सुनअसुनकरमकौफल॥ बाछैनाहिनसोइ॥ तुरसी बर्हैहीरामि
रै॥ कौडीप्राप्तिहोइ॥ ८॥ तुरसीअसुनकरमनहिआचेरै॥ सुनफलवां
छैनांहि॥ सुनअसुननिहकामहोइ॥ रहैरांमरचिमांहि॥ ९॥ तुरसीस
मसतसाधनकीयेजिनि॥ असबैठेहरुतहोइ॥ जिनिआपाअरपन
कीया॥ जाकातांकोंसोइ॥ १०॥ तुरसीइहसाधनलगति॥ तरलोंसीचीसोइ
तिनिप्रेमाफलपाईया॥ प्रेममुक्तिफलजोइ॥ ११॥ दूहा॥ अथ प्रेमम
क्ति विधान॥ १२॥ तुरसीप्रेमलगतियह॥ जातांकेनहिहोइ॥ बडमागि
पावैकोऊ॥ हरवरहिउलमजोइ॥ १॥ तुरसीप्रेमलगतियह॥ मनबिहबल
होइजाई॥ गावतगुनगोपालके॥ तनसुधिरहैनकाई॥ २॥ प्रेमलगति
पायेजुकोये॥ लछिनप्रवांनि॥ तुरसीसुधिसरीरकी॥ रहीनकोऊ त्यां
नि॥ ३॥ चौपई॥ भूलिगयेगतिइदुनिकेरी॥ नईबिसरजंतमेरी तेरी
तुरसीअैसेसाधूसोइ॥ रहैरांमतनमैताहोइ॥ ४॥ मगनलयेगोबिंद
गुनगावें॥ प्रेमनकेपवाहबगावैं॥ तुरसीताप्रवाहमैंसोइ॥ गईकगै
रतापानीहोइ॥ ५॥ साषी॥ तुरसीकगैरतानासैनदी॥ कोऊकायामां
हि॥ कामक्रोधपीयेगये॥ तेफिरिबिकस्यौंनांहि॥ ६॥ चौपई॥ तुरसीग
येपिसनसोफेरिनआये॥ ज्यौंपकतरवरपातनसाये॥ अतिततनमन
सुधथिरथया॥ प्रेमलगतिस्यौंपांवनभया॥ ७॥ साषी॥ प्रेमलगति

तपनलई॥पूरनसिसलौंसोइ॥तुरसीतहांत्रियतापकी॥ज्वालारहीनकोइ॥
॥८॥चौपई॥तुरसीज्वालाजलकैगाई॥पलटिऔरकी औरहीसई॥सीरी
हुयोरहीजुनाहि॥जोमीगीहोइदहतीमांहि॥९॥साषी॥तुरसीदहतीत
नअरुमनकों॥महाज्वालायेहोआप्रेमहलरुपरतही॥गईरहीमहिसीइ
॥१०जीवसीवअंतरनयो॥रहीनकोकराइ॥तुरसीधनिधनिसंतवे॥नकेयों
नईआइ॥११॥३३५॥५८॥अथ बिरहकोपरिकरनः॥५१॥तुरसीबि
रहनिबापुरी॥अतिगतिरहैउदास॥पीवमिलनकेकारनैं॥अंदरिबाटीप्यास
॥१॥तुरसीबिरहनिबापुरी॥अपनैंमदिरमंझारि॥पंथनिहारैपीवको॥पल
पलबारंबार॥२॥कबमिलिहौंकबनेडिहौं॥कबमेटिहौदैपाइ॥जिनपाइ
नतैंबिछुरे॥बहुदिनगयेबिहाइ॥३॥जियमेंजकरीलगिरही॥बिसबासुरमि
तसोइ॥पीवमिलनकेकारनैं॥रहीपपीहाहोइ॥४॥बिरहनिकेजियजकर
ही॥फिरहीबिकलसमार॥तुरसीहरिदीदारकों॥तलफतबारंबार॥५॥
ज्यौंमछरीजलकौंचहै॥चात्रिगघनकीप्यास॥यौंबिरहनिहरिदरसकौं
तरफितरफितरसात॥६॥श्रवनसुननकीसुधिगई॥रसनारटैनआनाने
नरहेएकटगाहोइ॥दिषनकौंपीवप्रांन॥७॥तुमसुषसागरसांईया॥हमके
नंजनहाय॥बिरहमारीजांनिकैं॥देक्यआइदीदाय॥८॥बिरहनितुमजिदरस
बिन॥निसदिनब्यापैसोग॥तुमबिनकौंनमहापत्न॥याबिथाकाटैजोग॥
॥९॥हंमतनमनतमकौंदीयो॥तुमक्यौंरहेडुराइ॥रैनबिनिहैंसांईयां॥स
नमुषदरसदिषाइ॥१०॥दाधीबिरहअग्निकी॥अनतदिकहासिर॥कैं
तुमहीकैतुमपरसु॥औरनहीकोकांम॥११॥मोहरिआइअधारदेअपनों
रसमदिषाइ॥तौतुरसीबिरहनिजीवै॥नहींतलफितजिसरिजा॥१२॥
कहाहैनिबासुरिकहा॥अषंडआगेंजोम॥तुरसीतलफेबिरहनी॥का
रनअपनेंराम॥१३॥बिरहनिबौरीहोयरही॥तनकीसुधिबिसराइ॥का
जोनीकबमिलहिंगे॥परमसनेहीआइ॥१४॥तुरसीइहैअदेसीउरबसै

तिक सिन आवै होइ। अवधि बीतियों ही गई। अजहुं न आये मोइ॥१५॥ अजहुं न आये रामजी। आनंद दाता सोइ॥ तुरसी जाके मिलें तें। रोम रोम सुष होइ॥१६॥ तुरसी तालावेली नमां हीं। मन सुष धरै न चैन। नैन दुक्ख गीला गहै। देषन कोपी की सैन॥१७॥ तुरसी सह्या दिनकरी रूप। विष ज्वर लागे जोग। तुरसी कै सैं तै रहीं। विरहनि पीव कै जोग॥१८॥ सोसूष वारौ सब्रग कै। नौं घर कै धन धाम में प्यासी तुमद रसकी। दरसन दे हो राम॥१९॥ तुरसी यह अति लाल आति तमो हि। कब दरसें हि रामा। कब मोहि दरसन देहिगे। अषं डधा मैं सांम॥२०॥ तुरसी यह विरहनि घों। उपजो उरमैं आइ॥ पीय बिना ग्रिप जरत हों। ता ता मे लि कर आइ॥२१॥ तुरसी यह विरहा न घो। मेरी जो वड़ जो ग़ जनम भैं तप न कया। बड़ नागी जन जोइ॥२२॥ तुरसी विरहा ऊक्क तें दहै। येक विरह सा दासाय के कल निराकार को लेमिलै॥ सो विरहा ततसार॥२३॥ तुरसी करि करि आस की। जी वत स्यों ते जीव॥ करम फांसि मां ही फंसे। विनां पीति येक पीव॥२४॥ आसिक एक अरूप के। साचे विरही सोइ॥ और रूप कर आस की। रहे फास की होइ॥२५॥ तुरसी पीति इक पांवा मसन की। योई प्रीति सवाना। और प्रीति विपरीति है। मो हि राम की आंन॥२६॥ तुरसी राम स्नुवा इस ति कहैं। जी वे तनितर लीन। साचा विरही जानिये। ज्यौं जल मांहि कमीन॥२७॥ चौपई॥ तुरसी विरहनी दे कोर सुष दुसां मनर गिनिये सोइ॥ ना विरहा मांदी यों होइ। रांम रबी जागी रहै सोइ॥२८॥ साषी॥ तुरसी विरहा विन सकल। मत फीके पवांनि॥ जहां जहां विरह तहां तहां। है प्रभु योंपर वांनि॥२९॥ तुरसी तीव्र संवेगयु का संतनि गाय सो इ। पीव मिलन को पंथ यह। अति उतम जोइ॥३०॥ तनषु जारे आगि मैं। मन सूष देउ बहाइ॥ सकल सुषन ऊपरैं वारौं दिनु दरस आइ॥३१॥ स्हावे न दीत ऊ विनां। संसारी सुष मो हि॥ तुरसी तन न न चैन होइ। जब लै नैंन न देषों तो हि॥३२॥ नैन नि अपने नाथ कों देषों

तुरसीपलकपटलाइकैं॥राषौंमधिसंमाइ॥२४॥तुरसीनि
मनन्यारएकरिसकौं॥जीपीनपाऊसोइ॥जापायेंछिनबिरहनी॥रहीडां
वाडूलीहोइ॥२५॥तुरसीअतउततउतहिरत॥निरषतरैंनिबिहाइ॥दिनहूं
करधरिसीसपरि॥हरिमगजोवतजाइ॥ अजहूंनआयेरांमजी॥कहांरहे
बिरमाइ॥पलकपलकछिनछिनजुयह॥ओसरबीतोजाइ॥२५॥ऐसे
कैसेंबानिहेसांईयां॥तुमजलधिहमसीन॥तुमनिरमोहीनाथजी॥हम
तलफितलफिजीयदीन॥२६॥हेमतुमहीलागेजीवें॥अतरजामीरांम॥
तुमकौंन्यारीरक्केरहे॥यौंकौंबनिहैकांम॥२७॥अतिहिंमनाथबिर
हनी॥अपनेंदरसदिषाइ॥तुरसीसुनाथकीजिये॥लीजेसंगिलगा
इ॥२८॥तुरसीलीजैसंगिलगाइ॥मिटिजुगकोंडषदोव॥हौहतित्रि
भुवनराइ॥मिलिजुयहप्रेमबढीवो॥२९॥हेमतुमंमैंतुमहेमंमहीं॥स
लिलसिधलौंसौंइ॥तुरसीतबआनंदहोइ॥जबपीवऐसीहोइ॥
॥३०॥पीवपीवरटतजु,बिरहनी॥कीटभ्रंगहोइजाइ॥तुरसीदास
तबमलंकडुबिरहनीनामकहाइ॥३१॥हिरे॥अथग्यानबिरहकोप
रकरन॥६॥चौपई॥तुरसीग्यानबिरहअगनिजुयहऐसी॥पावकप
वनसंजोगजुतेसी॥वहप्रचंडनपेंग्रहवनबारै॥यहकायाकेकरम
निजारै॥१॥ज्यौंसरावपावकपुनिबाती॥तेलतगइजुजोवैराती॥यौंमन
पवनबिरहअरुबिंदा॥तयेहकत्रउपजेआनंदा॥२॥मनपवनअहबिंदमि
लावै॥जोयहसौंजयकंत्रहोइआवै॥तुरसीअगटेजोतिप्रकास॥त्रिबिधि
तिमरकौतबहोइनांस॥३॥साषी॥तुरसीपांनीमांहीपरैंटी॥पावकए
कप्रचंड॥सपतदीपसाबतरहै॥दगधकीऐनवषंड॥४॥जलमांहीएक
कलत्रगी॥सीतलसुधसुनाव॥तुरसीतापावकमहीं॥मीनकरैबिचराव
॥५॥दहनप्रगटभईदारमैं॥दारदहनकेजोगि॥तुरसीदारउबरिगया॥
नीयांधूमिआरोगि॥६॥ पांनीमेंप्रवेसकीया॥ तहरनहरबरैंअग॥तुर

ीलाह्वकप्रसतैं उपजै गंगतरंग ७ पांनीको परवे सपल अवनी मीनाप
तुल्हाइ तुरसी मीनामु विनसई चढीजु तरवर जाइ ॥८॥ दौं लागी दरियाव
में दगध भया पांनी तुरसी या गतिकौ कोक समझै जनसांनी ॥९॥ ज
लमें ज्वाला प्रगट नई सो ज्वाला सम्मिनीर ॥ तुरसी दासताछिपरासिकैं
सीतल भया सरीर ॥१०॥ जल होमें ज्वाला जले थलकौ करै दहन ॥ तुल
सीदास फल पाई ये बाकलवीन निदहन ॥११॥ नीरमांहि निरधूम अगनि
प्रगटी अमित अपार ॥ तुरसी तामें जरि गये मनके चार बिचार ॥१२॥ जल
ज्वाला ज्वाला जुजल ॥ जहिं जल बिच मीन ॥ तुरसी पलपल पुष्टि होइ कब
न होवै छीन ॥१३॥ तुरसीदास ज्ञाना अगनि लगी नीरलौं सोइ जगत जु
लज्वाला सया देखे उलटी होइ ॥१४॥ ज्यूम ज्ञान जलवतकता ॥ अबजल
भया जुसोइ ॥ तुरसी उलटी गति नई उलटा ही समझै कोइ ॥१५॥ औ[illegible]
तुरसी उलटाही सब जानें जो देखा नउ सपगुरपानें बिसरि रहा तनकी
सुधि सोइ ब्रह्म ग्यान सौं भयउ जहोइ ॥१६॥ तुरसी निचयो बिरहकौ बांन ॥
नीसरि गयो उसार जु तान ॥ तेजु गमे उगाम गो फिरंही ॥ जतन कीयेंऊ जीवें
नांही ॥१७॥ साखी ॥ तुरसी ग्यान बान जा भयो जिन फरि गये करम जंजीर
रामनाम सौं रचि रहे ज्यौं रचि नाम कबीर ॥१८॥ तुरसी जेते कोम साधून
ये ज्ञान बिरहकी आगि ताइ ताइ तन आपनौं रहे अंग बहि लागि ॥१९॥
चौपई ॥ करम कपास रही कोउ नाही बरि जु गई मांही मांही ज्यौं जुगद
गधकपरे की घरी ॥ तुरसी देषत दीसपरी ॥२०॥ साषी ॥ देषत के दीसें ज
ते रूप रिती वर्तमान ॥ तुरसी अंदरि होइ रहे दगध गापट उनमान ॥२१॥ ७
६४ ॥ अथ परचा को परिकरन ॥ अथ स्तुति को विधान ॥ १ ॥
जोग जगि आदि जु सकल सबमंत देषे जोइ ॥ तुरसी एक परचा बिनां
फीके लागत सोइ ॥१॥ तुरसी सब ही मत परचा बिनां ॥ कंकर का चक
चीर परचा पारस रूप है ॥ आषैं संत सधीर ॥२॥ तुरसी साधक हैं सास्त्र

कहैं॥सुमृतहूं आषैयै म॥येक आतमपरचा बिनां॥सब हि नेम अनेम॥३॥
तुरसी कहां लौं भाषिये॥परचाकी बानी॥जिनके अंतर आंतर भया॥धनि
धनि ते प्रांनी॥४॥तुरसी धनि धनि साधवे॥परचै लागे धाई॥कूरम लौं इं
द्री अटकि॥हिरदा कंवल मैं आइ॥५॥तुरसी हिरदा कंवल मैं रांम जी॥बा
हरि भ्रमैं बृथा हि॥बाहरि तें तन लैं॥जिनियह हूतें दसपाइ॥६॥तुरसी जो
ति जगमगी॥अनयासही नुआइ॥अपनै हीरदा कंवल मैं॥जब प्रभु नयें सहा
इ॥७॥प्रथम अनाहद स्यौं भया॥ परचा पिंड मंझारि॥तुरसी पायो परम सुष
आनंद बढ्यौ अपार॥८॥नांनां बिधि तहां धुनि उठैं॥बाजैं अनहद नांद॥
तुरसी तहां मन मानीयां॥छूटा बाद बिबाद॥९॥परम जोति स्यौं मन ल
गां॥त्रिकुटी के अस्थांन॥तुरसी तत बाजै सदा॥अनहद के नीसांन॥
१०॥अनहद बाजा बाजही॥रुनझुन धुनि तहां होति॥तुरसी तत्र पर
गटि रही॥पारब्रह्म की जोति॥११॥तुरसी पारब्रह्म की जोति कैं॥नही पटं
तरि कोइ॥रवि ससि तारा तेज मणि॥हम देषे सब जोइ॥१२॥रवि सुत ताप
ससि सीतता॥नछत्र चिरिषि रिजांहि॥तुरसी मणि जड रूप हैं॥तातैं पटं
तर नांहि॥१३॥परम जोति कै पटंतरै॥परम जोति ही आहि॥दीए पटंत
र कोनही॥तुरसी या जुग मांहि॥१४॥निरधूंम निरसंधिता॥निरथिर ति
रबांन॥तुरसी असी जोति है॥सीतल सुष दरसमांन॥१५॥असमता सैपा
पसब॥त्रिबिधि ताप बिलीमांन॥तुरसी प्रांन पलटि कैं॥होइ ता जोति स
मान॥१६॥जिन परसी पारस मई॥पारब्रह्म की जोति॥तुरसी ते कंचन
नये॥फिरि तब काच नही होति॥१७॥ससि हूं तें सीतल अधिकै॥रबि हू
तें अधिक प्रकास॥चंदन हूं तें अधिक ओति॥तहां संतनि कीयो निवा
स॥१८॥तुरसी जहां येतर भाया नहीं॥नही बारी नही बेलि॥बिधि बिधि
कुसम बिगसि रहे॥तहां मधुकर करैं केलि॥१९॥तुरसी मधुकर रूपी
मन यहा॥कंवल षटचक्र है सोइ॥परचैम गंध सुबासनां॥तासु षमैं रस॥

सोइ ॥२०॥ परस्वैलगिमहामनयह । विरतिहीनहोइसोइ । परबिहीनपंछी
जुर्यौं रहाजुअसैंहोइ ॥ अवस्तवृतअतिनासकैं । चलाबईजुकोइ । तुर
सीपरमातमामैं । रह्मापंगुलाहोइ ॥ २१ ॥ तुरसीद्वादसपंजका । देवलवस्मा
स्वरूप । तहांवैठेरांमक्रिशाजिहीं । अषंडजोतिसरूप ॥ २२ ॥ तुरसीरांमरसैं
दिया । घातीदिलानकोइ । अटूटदरियानरिरहा । तेजपुंजकासोइ ॥
पेहुराकैपाईये । औरसघातनकोइ । कैनासान्तूनान्तिमैं । निजकेप्राप्ति
होइ ॥ २३ ॥ तुरसीपरस्युपाय्नेके । देवतमअस्थान । वेदपुराननिवरनि
ये । संतनिकीसप्रवांन । जहांजहांमनवितलगो । होइअचलइकतां
न । तहांतहांअपदसिद्दु । उदैहोइ । परमजोतिनिरवांन ॥ २४ ॥ परमजो
तिपरगटमई । तासमतिमिरमिटाइ । तुरसीसतगुनसुधनया । ता
हरयनमैंदरसाइ ॥ २५ ॥ तुरसीजोतिजगदीसकी । जगमगाजगमगज
गमगहोति । ताहिदेषिमसन्नाम्या । अतिआनंदीहोति ॥ २६ ॥ उरे
उलटिररसैंवसे । त्रिकुटीकौलगेकपाट । तुरसीगगनिहाटैषुली ।
परगटीजोतिनिरांट ॥ २७ ॥ वदरागुहुवांनीसुनैं । सुरतासुनैंनको
इ । तुरसीसोवानीअघट । मुषविनउपजेसोइ ॥ २८ ॥ पंगाउवितर
वरवहै । सपंगोचढोनजाइ । तुरसीजोतिजगामंगो । अंधेकौंदरसा
इ ॥ [illegible] तुरसीअथाकोइसुपेषई । गुहजहरिकीजोति । नैननिवारे
षपेरहे । दिवराडूनहीहोति ॥ २९ ॥ [illegible] । पसारोपेषनकेनैन ।
सूरजचौरैनरकेजैंन । तुरसीजगामगाजगमगाहोइ । तासनिवाहिजु
रूपकोइ ॥ ३० ॥ बिरंबारहै कंवलमैंनिति । ताकंवलमैंकंवलापति ।
तुरसीजहांअवैसुषपावै । मनविलसैंमुषकहनआवै ॥ ३१ ॥ तुर
सीअकथप्रथाएह । जाकैनयासुविसरैदेह । गेहहुंकीसुधिरही
नकोइ । बिवरैबिगतसनेहजुसोइ ॥ ३२ ॥ साषी ॥ तुरसीयह
सही । औरअपरबाजानि । जाकैनयासुविलसिई । अवैसुषकी

मांनि॥३४॥तुरसी रांम कहाई सति कहौं॥यामैं मिथ्या नांहि॥बिन घन चम
कत बीजुरी॥हेम देषौं निस निस मांहि॥३५॥नैन बिना हरि नीतरैं॥कैं मिलि मि
लि मिलि होति॥तुरसी दिसौं दिस देषियै॥पार ब्रह्म की जोति॥३६॥तुर
सी द्वै नैनां को कहै और है॥वै श्रवंन कोइ और॥जिनि करि सुनियै देषियै॥जोति
अनाहद टोर॥३७॥तुरसी चलि तहां जाईये॥जहां नांनां बिधि के नांद॥सु
नि सुंदर सुष पाईयै॥छूटि जाइ बाद बिबाद॥३८॥तुरसी चलि तहां जाई
ये॥जहां गयें यह नांहि॥बानी कौ बिसमरन होइ॥रहियें ता घर मांहि॥
३९॥तुरसी चलि तहां जाईयै॥जहां पवै सुष सोइ॥सुष सागर मिलि
वे लियै॥बहुरि बिछोह न होइ॥४०॥तुरसी कहि बेकी नदी॥सुनि बेहूं
नांहि॥देषत सिरषी बात है॥यह पवै सुष मांहि॥४१॥जिन कैं प्रह्म चा
न्या॥सुन्या अनाहद नांद॥तुरसी जोति जगमगी॥धनि धनि वै निज
साध॥४२॥तुरसी धनि धनि साध वै॥जिनि चेतन लीया चीन्हि॥जड़ घटन को
बिसरि गये॥ऐसी अदभूत कीन्ह॥४३॥तुरसी चौबीसौं तत कैं परैं॥ता
हूं परै जु जोइ॥ता पद स्यौं परचा भया॥परचा कहियै सोइ॥४४॥परचा
परमातमा का॥तुरसी औसनआन॥उर मांहि उदित भया॥अनहद घुरै निसा
न॥४५॥उर मैं बाजा बाजही॥होइ रह्यौ जैजैकार॥तुरसी आनंद बढि रह्यौ
गावैं मंगलचार॥४६॥तुरसी काया कंवल मैं॥कोमल कंवल एक और॥तहां
निसा निमष कहूं नहीं॥होइ रह्यौ निति जोर॥४७॥मधुर मधुर यातरि बजैं॥मडला
निरति कराइ॥ऐसा अचरज देषिईया॥तुरसी हेमउर आइ॥४८॥तुरसी बरष
न लागौ ग्यांन घन॥घट मैं घटा संजोइ॥बिबिबिबि चमकै बिडलता॥तिजपुंज की
सोइ॥४९॥घट मैं सेज्या फटिया॥निकस्या निरमल नीर॥तुरसी अचवै ता नीर कौ
सीतल न पा सरीर॥५०॥अम्रत पीया अघाय कै॥नाग्री त्रिसा याहि॥तुरसी
मन पूरन भया॥बहुरि न जाचै काहि॥५१॥षार समंद मैं मिष्ट जल॥पाया
पूरन नागि॥तुरसी ता जल अचवतैं॥त्रिपति त्रिस्ना भागि॥५२॥चो

इ कागा चंदन्नस्तनयास्त ॥ तुरसीनगे अनाहदत्तर ॥ वरषतलागान्न
इतधारा ॥ शीरमञ्चवेश्चात्मसार ॥ ५३ ॥ कोककोउसंतनतहाकेबासी ॥ त
रीघटद्वौ जिंकवलप्रकासी ॥ कोऊदसदलकरिहेनिवास ॥ तुरसीयेषैप
रमप्रकास ॥ ५४ ॥ साषी ॥ कोऊकोकसहश्रकंवलके ॥ तुरसीबासीसोइ
तारसमैरसलन्नधहोइ ॥ रहेरसीलेहोइ ॥ ५५ ॥ चौपई ॥ जहांजगामग
जोतिकोआइनिवास ॥ तुरसीनैननिपरसैतास ॥ परसिपरसिआनंदहीं
होइ ॥ सा आनंदकोअंतनकोइ ॥ ५६ ॥ नलटिचितउनघरिगायो ॥ जहांअन
हदधुरैनिसांन ॥ जहांबिनपायनहीनैरतिहोइ ॥ बिनरसनांगुनगांन ॥
दहदसदीपगदेमिधे ॥ दहदिसगेसांत ॥ दहदिसिचंदरबिमलिरहे ॥ तु
रसीपरमअस्थांन ॥ ५७ ॥ तुरसीचित ह्वतिहीनतनई ॥ परमजोतिकेमां
हि ॥ अंतिलीनजुहोइरह्या ॥ अबइतउतकेनांहि ॥ ५८ ॥ इतउतकेनै
कीनहीं ॥ जैसेंकुरंगफंदमांहि ॥ योंचितअनहदनादमें ॥ गल्याजुनि
कसेनांहि ॥ तुरसीलेकोघरजुयह ॥ परचाहयेआहि ॥ जिनबडभागी
नकेनया ॥ सुजुगिजुगिसुषबिलसांहि ॥ ५९ ॥ तुरसीजालाइकहम
नाकते ॥ सोईपाईगैर ॥ सतगुरतेसोधीनई ॥ नहीतोमरतेदोरि ॥ ६० ॥
॥ चौपई ॥ तुरसीहंद्रीतपतिमिटानी ॥ जबपरस्वेपीयासुधपांनी ॥ जा
पानीकेपीयेंसोइ ॥ बहुरयोतापउदेनहीहोइ ॥ ६१ ॥ साषी ॥ अंतर
कीआतसबुझी ॥ सब्याराइसिराइ ॥ तुरसीमनपांनीनया ॥ सुषमें
रह्यासमाइ ॥ ६२ ॥ पांनीनहीपावकनही ॥ पवनुतहांपंचनांहि ॥ तु
रसीजानउदेनयें ॥ कोटितिमरमिटिजांहि ॥ ६३ ॥ रबिअरसथांनिति
मरनही ॥ ससिअसथानिनहीताप ॥ तुरसीपीवपरचोजहां ॥ तहांपु
निनहीपाप ॥ ६४ ॥ नरसरापदोऊरहे ॥ ड्रषसुषनयेसमांन ॥ जीवसीव
मिलिएकह्वै ॥ परचेकासहनांन ॥ ६५ ॥ परचासबकोऊकहतहै ॥ प
रचाकहियेकोंन ॥ तुरसीमननिजमनकों ॥ मिलिहोइपांनीलौंन ॥ ६६ ॥

औ॥ येक होइ मिलि येक॥ ६७॥ तुरसी परचा तैने परकार के॥ संत बिगाये सो म
एक ब्रह्म गलतां न नये॥ येक दि बितन रहे संजोइ॥ ६८॥ चौपई॥ तुरसी ये
कयालाये कयांनी॥ परचै न येकीये हंस दनांनी॥ येक परचै परकरनी जु
आवै॥ येक अगह न गहौ न ही जावै॥ ६९॥ साषी॥ येक बीज बस्तिस
मनयो॥ येक बरिरहि गयो सार॥ येक नैकु गांन स्यों रहे॥ आपा अगनि प
जारि॥ तुरसी यौं देह अदेह बिचि॥ इतनों ही भेद बिचारि॥ देही दिब्य
देही लिये॥ अदेह अदेह मे झारि॥ ७०॥ अथ उतम परचौ बिधान॥
॥ ७१॥ तुरसी उतम परचा जानिये हा॥ परम जोति कैं मांहि॥ सिंध बूंद जन
होइ मिले॥ न कुरौं बिछुरैं ताहि॥ ७२॥ चौपई॥ तुरसी न कस्यो बिबूरैं तांही
जौ ब्रह्मा अनंत चलि जांही॥ नये जाति की जाति जु सोई॥ बिजाति मल रह
न कोई॥ अपार हबांनी कुंदन नये॥ करम काट मल उतरि गये॥ तुरसी जु ये
सुनि नये जु सोइ॥ परचै माया कु समल धोइ॥ ७३॥ साषी॥ तुरसी अपने ह
उरमही॥ अमल आमा रांम॥ ताप दस्यों परचा नया॥ गया पुजाइ जु कांम॥ ७४
तुरसी जहां रांम तहां कांम नां॥ कैसै धौ रहे तांहि॥ एक सें गिर बिछुर रजनि:ह
मक हूं देषे नांहि॥ ७५॥ जहां र बिरजनी न तहां॥ जहां रांम तहां न कांम॥ तु
रसी कैसें ध्या हर्षे॥ रह हौ उजल धांम॥ ७६॥ तुरसी कैं पद परसे जु के॥ आहि जु
ये सहनांन॥ अंतरि गति गुन गलि गये॥ रहि गया देह निसांन॥ ७७॥ दगध
पट लौं देषिये॥ तुरसी संत सरीर॥ अंतरपद मैं है भरह्यो॥ ज्यौं पाला गलि नी
र॥ ज्यौं पाला गलि पानी नया॥ अरु सिंध सलिल समाइ॥ यौं परचै पद रलि मि
ले॥ साधू अवतहीं काइ॥ ७९॥ काया ऐसें देषिये॥ परचै रतकी सोइ॥ ज्यौं
परेवे के दीप स्यौं॥ होत उपाधि न कोइ॥ ८०॥ तुरसी काया हूं जाइ गरि॥ दि
षिये जु नहि सोइ॥ जो उर एक अलेष स्यौं॥ पूरन परचा होइ॥ ८१॥ पंच तत
स बिम जु होइ॥ ततनि मैं रलि जो हि: तुरसी जारन गउन की॥ बाकी रहे

सुनांहि पूरनपद्यां आहियह सबसाधू जकहांहि जीवतसी वमिलियेकहं
हिं संधिरदे कोऊं नांहि ॥ १२ ॥ तुरसी ग्यांन आगनि में दग्ध होहिं त्रियदेह सुध
एक आत्म हिरदै है पूरनपद पायेह ॥ १३ ॥ तुरसी जीवन नाव जु मिटै स्वधसी वराहि
जाय सतचितसिंधु लींन मन होंहि परचा नांम कहाइ ॥ १४ ॥ तुरसी याप्रचे
कीसगति बिरला जानैं कोइ । म्रू रिस रिवक्रतक मुये ॥ गुरस्यों प्रापति हो
इ ॥ १५ ॥ ८ ॥ ॥ ८२ ॥ अथ रसकों पदेसनन ॥ ८ ॥ तुरसी अनंतलोक
ब्रह्मंडमही ॥ अैसा मिष्ट न कोइ जैसा मिठ रांमरस रहें संत तहां तोइ ॥ १ ॥
चौपई ॥ तुरसी रांमरसाइन सार संतनि जीवन प्रांन अधार जिनि आर
तिस्यों अचया सोइ तेजन रहै बावरे होइ ॥ २ ॥ साखी ॥ तुरसी इही सुमति
की रही संसार न कोइ ॥ मतो मतिवारे होइ गये अचै अमीरस सोइ ॥ ३ ॥ तु
रसी तिनकी कौ कहै जिनि अचियार सरांम जिनके उर वासक्त निदी तो
बिसरे धनधांम ॥ ४ ॥ तुरसी अमी अचे यजु की ये बातें चौपाई ज्यों मूषक
पारायीया कवउतहूंनजाइ ॥ ५ ॥ तनमन की सोधी नहीं आपापर नहीं जांन
तुरसी अचया रांमरस तिनकै ये सहनांन ॥ ६ ॥ रांमरसाइन अचवतें आ
पाकी सुधि जाइ ॥ चेतनि थिरतासरूप होइ ॥ सू तारहै सु तांह ॥ ७ ॥ चौपई ॥ तुरसी
रसरांम कों नांम ताहि अचवतें क्रोध अरु कांम दरसावहि देह के मांहि ॥ तौ
वतसो रस अचया नांहि ॥ ८ ॥ तावत सो रस अचया नांही जावत कांम काया
के मांही ॥ तुरसी जनपरिकोपक रावै क्रोध हू आइ दिसारी पावै ॥ ९ ॥ साख
ी ॥ तुरसी अवकारांमरस तेभये रांमसरूप देहा की सुधि भूलि गये बि
सरि गये रहरूप ॥ १० ॥ जिनि अचया वो द अमीरस होइ रह्या मसतांन
तुरसी ताकी द्रिष्टिमैं आवत नांहि न आन ॥ ११ ॥ जिन हरिरस रुचि स्यों पी
यो रहे परमसुष लोइ ॥ तिन जगु बांनि ज्ये नहीं कोटि करै जो कोइ ॥ १२
जागत स्वपन सुषोपती परै परमरससार तुरसी सोरस अचवतें आनं
द नहै अपार ॥ १३ ॥ चौपई ॥ तिहं अवस्था तिहूं गुन परै तारस अचवन की

॥१४॥साषी॥

बिसरि गये चित वृति सकल॥ जिन अचयो रस वोह॥ (तुरसी) ता रस में नहीं॥ क
हूं की प्रीति न द्रोह॥१५॥ पीया पीया रांमरस॥ सब कोऊ भाषें॥ तुरसी पीया
जानिये॥ सुष और न भाषे॥१६॥ पीया पीया रांमरस॥ सबै नयां ने सोइ॥ तुरसी॥
पीया जानित ब॥ तन सुधि रहै न कोइ॥१७॥ लिष्ष समुद्र संसार मैं॥ सुधा मई
हरि नांम॥ तुरसी अचया प्रीति सौं॥ पलटि न यैते रांम॥१८॥ सो जु सुधा सुद्र
पियो॥ तुरसी रुचि सो इ॥ मति वारे ब्रह्म न भये॥ दे षो उलटी होइ॥१९॥
तुरसी बिंदी बिंदे रांमरस तो बिंदी साची॥ रांमरस बिंदे बिना॥ मिथ्या रस रा
ची॥२०॥ चौपई॥ तुरसी मिथ्या षट रस इंद्री भोग॥ उपजावत उर नांनां रोग॥
ताहि जु गिनैं बिरस बे कांम॥ सो बिंदी बिंदे रस रांम॥२१॥ साषी॥ तुरसी ऐसे
साकौं न अनागिया॥ जब लग देही धांम॥ उर मांही आलस करै॥ अचवत अ
मृत नांम॥२२॥ तुरसी अमृत हरि नांव तजि॥ जो अचवै रस कांम॥ काला सुव
ताप तिनका॥ सुष न दिषावै रांम॥२३॥ तुरसी रांता रांम कौं॥ मोता रस गुन स्वं
ना ताहि जु ये कैसे सचे॥ वृद इंद्री मषपचान॥२४॥ भावित होइ रसा स्वानमें॥ क
रि अमृत कौ पांन॥ तुरसी ऐसे संत कौं॥ का जाने ज्ञान जिहांन॥२५॥ जाके हिर
दै रांमरस॥ पूरि रह्यो नष सष॥ तुरसी ताहि त्रिया समिलगै॥ इंद्र त्रिलोका को स्
ष॥२६॥ सोरठा॥ हूवा रहे बिदेह॥ जिनि अचया वाह रांमरस॥ को उडारो षेह
को ऊ चंदन लेपन करैं॥२७॥ सम कीन दोसै नारा॥ इष हूं कौ चित न लहीं॥
करि रह्यो उनै ग्रहार॥ पीय कैं प्याला पेम का॥२८॥१६४॥ अथ लांबि को परि
करन॥१॥ तुरसी पाया रांमरस॥ तन मन त्रिपति जु होइ॥ वो हृष्णा समिटे न
हीं॥ भी गला रो सोइ॥१॥ जैसा मीग रांमरस॥ तैसा और न आन॥ तुरसी दास ता
हि अचवतै॥ त्रिपति न मांने पांन॥२॥ अनंत कोरि साधू भये॥ अनंत सिध नये
सोइ॥ तुरसी अचवत रांमरस॥ तन धरि थक्या न कोइ॥३॥ सनकादिक सुक से
सशिव॥ नारदादि सब साध॥ तुरसी पीयो रांमरस॥ पुनि कहै अगाध अगाध ४

जुनांहि पूरनपचा आहियह सबसाधू जकहांहि जीवसीव मिलियेकहूं हि संधिरहै कोऊं नांहि ॥ १२ तुरसी ग्यांन अगनि मैं दग्ध होहिं त्रियेदेह सब एक आतम ह्विरहै पूरनपचा येह ॥ १३ तुरसी जीवनाव जु मिटै सब धसीव रहि जाइ सललिसिंधलौं एकह्वौं हि परचा नाम कहाइ ॥ १४ ॥ तुरसी या अचै की सुगति बिरला जानैं कोइ रूरिरू रिबकृत कमुचे गुरस्यों प्रापति होइ ॥ १५ ॥ ८ ॥ १२६ ॥ अथ रस चौपर्द कहनं ॥ ८ ॥ तुरसी अनंत लोक ब्रह्मंड मही ॥ असा मिष्टन कोइ जेसा मिष्ट रांमरस रहै संतन हां नोइ ॥ १ ॥ चौपई ॥ तुरसी रांमरसाइन सार संतनि जीवन प्रांन अधार जिनि आर तिस्यौं अचया सोइ ते जन रहै बावरे होइ ॥ २ ॥ साषी ॥ तुरसी इंद्री सषनि की रही संभार न कोइ ॥ महां मतिवारे होइ गये अचै अमीरस सोइ ३ तु रसी तिनकी कौक है जिनि अचियार सरांम जिन के उर बास कु निंदी ते बिसरे धन धांम ४ तुरसी अमी अचये जु की ये बातै चौपाई ज्यों मूषक पारा पीया इवउतहूं न जाइ ५ तन मन की सोधी नहीं आपा पर नहीं जांन तुरसी अचया रांमरस तिन कै ये सहनान ६ रांमरसाइन अचवतैं आ पा की सुधि जाइ चेतनि सिला सरूप होइ सूतार है सुत्ताइ ७ चौपई तुरसी रसरांम को नांम ता दिन अचवतें क्रोध अरु कांम दरसा ब्रहि देह के मांहि तौ वृत सो रस अचया नांहि ८ तावत सो रस अचया नांहीं जावत कांम काया के मांहीं तुरसी जन परि कोप करावै क्रोध हूं आइ दिषारी यावै ९ साषी तुरसी अचया रांमरस ते न ये रामस रूप देही की सुधि न्हूलि गये बि सरि गये ग्रह कूप ॥ १० ॥ जिनि अचया वो ह अमी रस होइ रह्या मस तांन तुरसी ताकी द्रिष्टि मैं आवत नाहि न आन ॥ ११ ॥ जिन हरि रस रुचि स्यौं पी यौ रहे परमसुष पोइ तिन जग बांन न्हिवै नही कोटि करै जो कोइ ॥ १२ जाग्रत स्वप्न सुषोपती परे परम रस सार तुरसी सो रस अचवतैं आनं द बढै अपार ॥ १३ ॥ चौपई ॥ तिहूं अवस्या तिहूं गुन परै तारस अचवन की

जोकरैत्तौइत्वन्नतचितवनबिसारैएउलटिस्रवंततनमनमैंधारै॥ १७॥साषी॥
बिसरिगयेचितवनिसकल॥जिनस्रक्यारसबोह॥तुरसी॥तारसमेंनही॥क
रूकीपीतिनद्रोह॥१५॥पीयापीयारामरस॥सनकोकस्रावैं॥तुरसीपीया
जानिये॥सुषस्रोरनभावैं॥१६॥पीयापीयारामरस॥सबैनयांनेसोइ॥तुरसी॥
पीयाजानितब॥तनसुधिरहैनकोइ॥१७॥बिषसमुद्रसंसारमैं॥सुधामई
हरिनांम॥तुरसीस्रचयाधीतिस्यों॥पलटिनयेतेरांम॥१८॥सोजुसुधासुद्र
नियीयो॥तुरसीरुचिसोइ॥मतिवारैब्रह्मनतनयो॥दैबोउलटीहोइ॥१९॥
तुरसीबिंदीबिदै रांमरसतौ बिंदीसाची॥रामरसबिदैबिना॥मिथ्यारसर
ची॥२०॥चौपई॥तुरसीमिथ्याषटरसइंद्री॥सोग॥उपजावततरनंनारोग॥
वाहिजुगतेबिरसबेकांम॥तौबिंदीबिदैरसरांम॥२१॥साषी॥तुरसीस्रै
साकौंनस्रनागिया॥जबलगदेहीधांम॥उरमांहीस्रालसकरै॥स्रचवतस्र
मृतनांम॥२२॥तुरसीस्रमृतहरिनांवतजि॥जोस्रचवैरसकांम॥कालात्रष
तापतितका॥मुषनदिषावैरांम॥२३॥तुरसीरांमारांमकौं॥मोतारसगुनसं
त॥ताहिजुयेकैसेसचे॥बुदुबुंदीसुषयाल॥२४॥पाखितहोइरहातानमेंक
रिस्रमृतकौपांन॥तुरसीस्रैसेसंतकौं॥काजानैजगतजिहांन॥२५॥जाकैहिर
दैरामरस॥पूरिरहौतनसष॥तुरसीताहित्रिणसमिलगै॥ त्रिलोकीकोसु
ष॥२६॥सोरठा॥ हूवारहैबिदेह॥जिनिस्रचयावाहरांमरस॥कोउडारोषेहु
कोऊंचदनलेपनकरौं॥२७॥सबकीनहीसेसार॥इषहूकोचितबनलही॥
करिरहौउनेप्रहार॥पीयकैप्यालायेमका॥२८॥१६४॥स्रथसंबिकोपरि
करन॥१॥तुरसीपाया॥रांमरस॥तनमनत्रिपतिजुहोइ॥वोहूप्यासमिटेन
ही॥सोगलावैसोइ॥१॥जैसामीगरामरस॥तैसास्रोरनस्रान॥तुरसीदासता
हिस्रचवतैं॥त्रिपतिनमांनैपांन॥२॥अनंतकोरिसाधूस्ये॥स्रनंतसिधनये
सोइ॥तुरसीस्रचवतरांमरस॥तनधरिध्यानकोइ॥३॥सनकादिकसुकये

॥४॥ तुरसी अगाध अगाध सब कहैं ॥ फुनि पीवै तेजु जांहि ॥ अटूट दरिया अमी
रस ॥ घटै न घैक बूं नांहि ॥५॥ तुरसी षुमारी लागी रहै ॥ कबहूं न अनरु चिहै
इ ॥ अति ही मीग अमीरस ॥ अघावै नहीं कोइ ॥६॥ तुरसी अघाव कोइ न ही
पीवत गये जु गबीति ॥ अजहूं अतित प्यास है ॥ ये हमति वालकुं की रीति ॥७॥
तुरसी पीवत पीवत रांमरस ॥ तहां लौं पीया सोइ ॥ रसनां मैं ताहे इ गये ॥ आपाप
र सुधि षोइ ॥८॥ सरीर की सुधि ना रहै ॥ गई बिसर अन होइ ॥ तुरसी अचै जुएं
मरस ॥ नये जु थे पुनि सोइ ॥९॥ ॥७९॥ अथ अजर जारण कौ अंग लिष्यते ॥ ॥१॥ जा
वत त्रियरि पतन मही ॥ मन बाई अरु बिंद ॥ तुरसी एते अजर जरै बिनां ॥ षिन ९
षिन षैरै कें ध ॥२॥ तुरसी जावत चपल ये ॥ तीनौं या तन माहि ॥ तावत ये ई काल है
और काल कोऊ नांहि ॥३॥ दरसन होक न लहती बिधि ॥ जावत्रियरिपतन ॥ तुर
सी ये अजर जरे बिनां ॥ मिटत न जंनम मरन ॥४॥ जनम मरन न बीज ये ॥ जा
वत जरे न जांहि ॥ तुरसी जरिये जु गति स्यौं ॥ तौ जे कोऊ नांहि ॥५॥ ॥ चौपई ॥ तु
रसी सोई संत जगु जांनि ॥ जिनि ये अजर जरे उर आंनि ॥ ले अरध तैं उरध च
ढावै ॥ जहां के गये न कुशिन हि आये ॥६॥ तुरसी नांद बिंद मन बाई ॥ असाध
रूप बसै ये काइ ॥ जावत तजो गी जरै न ये ह ॥ तावत उपजे बिनसे देह ॥ दो
हौ ॥ जावत अजर जरै नही ॥ अमर न मरई आइ ॥ तावत अथिर न थिर रहै ॥ तु
रसी षिरि षिरि जाइ ॥७॥ षिरत षिरत कलपनां बसि ॥ नांद बिंद अरु बाइ ॥ तु
रसी केते जगु भये ॥ अबउलटा उलटाइ ॥८॥ अतित अजर जु अमर ये ॥ या त
न मांही सोइ ॥ तुरसी जारे जु गति स्यौं ॥ सो अजर अमर न लहोइ ॥९॥ जस्यौ
न जाइ अजर सबद ॥ जइ जीव पै लगार ॥ तुरसी चेतन ही जरै ॥ जाके ग्यांन
बिचार ॥१०॥ तुरसी अजर जरै जोगी सोई ॥ अजर जरै सोइ सूर ॥ अजर ज
रै सोई संत जन ॥ पेषै आनंद मूर ॥११॥ जैसी बिधि दरिया जरै ॥ सकल न
दीयन कौ नीर ॥ तुरसी यौ अजर हि जरै ॥ सो जन त्रिनवत धीर ॥१२॥ चौप
ई ॥ जैसैं निरधन धन हि दुरावै ॥ काहूं आगै कहै न कहावै ॥ ऐसें अपनौं तां

तनंडारा।तुरसीउरैरह,जोगीसार॥१३॥साषी॥सारसूतजोगीसोई।नाउरअर
नाहोइ।जरतो।बिनकेतेपरे।मालीबासनसोई॥सूंसूंसूंबाजेपोंकरोरेनिर
वसमचुषोइ।तुरसीऐसेसबहैंजहां।वहांनतडककोइ॥१४॥सोरठा॥तन
कोंकरिदरियाव।मनमेंगरवातनपकरि।तौलगोनतरीनाव।तुरसीवासंसा
रकी॥१५॥होइरहोगहरगंभीर।तौलोबुधिनिसराइकैं।तुरसीमधिसरीर
कुबककबानकवकनतिदे॥१६॥साषी॥तुरसीजरतोअगायहा।सबअंग
निमैसोइ।सारसूतसंतनिकह्या।गहैसुगरवाहोइ॥१७॥७॥अथ
हैरानकीपरिकरन॥११॥तुरसीकहूंकहूंकथापेकही॥कहूंकहूंपनि
होइ।वेदपुरांननिहूंमहीं।रहीहैरांनीहोइ॥१॥कहूंब्रह्मकथापचीसबां
कारूषटबिससोइ।तुरसीएकनिरधारबिन॥बहीबहीफिरैलोइ॥२॥
तुरसीबहीफिरैलोइयहा।जावतलहैनतास॥जोपदीसोंकेपैरे।अंगंड
जोतिप्रकास॥३॥तुरसीताताब्रह्मकी॥सुधपायेंबिनसोइ।षटदर
सनषटसास्त्र।रहेसुकिंचतहोइ॥४॥चौपई॥तुरसीएकब्रह्मउनमानं
दिषावै।अग्निधूमलौंकहिसमझावै।इकउपमानेरहेसमाइ।सुधसारक
हूलषीनजाइ॥५॥साषी॥सुधिसारकोऊनांलहै।दोयरहेहैरांन।तुरसी
अतिहिअगाहनदे।चलेनकोऊपांन॥६॥चौपई॥येकशाखनिषेदपठावै
इहिंब्रह्मनिलागिरहांवै।तेऊनेतिनेतिजुकहावैं।परविधिकिंआप्रतितन
पावैं॥७॥साषी॥तुरसीरूपनरेषनबरनमपु।आगोपीवोनांहि।कहेक
छोकबुनापरे।ऐसासोकचूआंहिं॥८॥अगमअगाधअगाहिपुरुषाको
कलषेनताहिं।तुरसीकितेपंडितगुनी।रहेओगाहिओगाहि॥९॥द्रिष्टि
मारुआवैनही।मुष्टिराछोनहीजाइ।तुरसीताअबरनकों।बरनैकोक
हिंताइ॥१०॥आदिअंतिमधिप्रमितिता॥जाकीनहींआवै।तुरसीताअज
रअविकौं।कैसेंनीयघ्यावै॥११॥अविदरियाछोडैअपनगाथहेथहोन
हिजाइ।तुरसीनोइविलंबिये॥नाहिनआनउपाइ॥१२॥नोइजुवगिलगि

उधरै ॥ अनंत कोटि निज साध ॥ तुरसी इतर अथाह है ॥ कहि न सकै को बाध ॥ १३
तुरसी कुदरति रांम की ॥ को लषिबे कों आहिं ॥ सिव बिरंचि नारद मुनी ॥ रहे
औगाहि औगाहि ॥ १४ ॥ चौपई ॥ तुरसी ब्रह्मा बिसन महेस ॥ सनकादिक सु
रि इंद्र अरु सेस ॥ तेऊ कहैं ब्रह्म निरदेस ॥ तौ और बपुर कौ कहा प्रबेस ॥ १५ ॥ तुर
सी अगाध अगाध बांनी ॥ सब ही मुष मधि उचरै प्रांनी ॥ कथि कथि कैं कथि रहे जु
सोइ ॥ पै प्रमित पार न हि पावै कोइ ॥ १६ ॥ साषी ॥ बाजीगर की को कहै ॥ बाजी
कौ नही पार ॥ तुरसी किते पंडित गुनी ॥ रहे पोजि पचि हारि ॥ १७ ॥ पंछी को पो
ज जु कहा ॥ कहा मीन को माघ ॥ तुरसी लषि नो ब्रह्म को ॥ ऐसो अगम अ
गाध ॥ १८ ॥ चतुर बंबे की पंडिता ॥ तेऊ न मरम लहांहि ॥ तौ अग्यानी और को
ऊ ॥ का की गिनती मांहि ॥ १९ ॥ अग्यांनीन की को कहै ॥ जु बहे जांहि बिषधा
र ॥ तुरसी यह हैरान है ॥ जु दीपक निकट अंधार ॥ २० ॥ तुरसी अंधियारे
इ है ॥ बचन ब्रह्म औगाहि ॥ परब्रह्म की जांनै नही ॥ रहे लोन हिलाहि ॥ २१
औरन कौं कहै है वुरी ॥ त्यागो माया नेह ॥ आप अंमी करि भोगवै ॥ देषो दैं रवि
षेह ॥ २२ ॥ चौपई ॥ कथनी ज्यौं कुम्हार के भांडे ॥ कथि बो करै रैंन दिन पांडे
तुरसी करनी स्यों चित नांही ॥ यह हैरांन बडौ मोहि आही ॥ २३ ॥ औरन स्यौं
कहै नटे बयारे ॥ आपन कौं लागै अति प्यारे ॥ औरन कौं कहै बिषि बावुरी
आप भोगवै अमृत करी ॥ २४ ॥ तुरसी ऐसे अंध जु जोइ ॥ दिन के सूले जां
नौ सोइ ॥ तिन छिन कौ समझावनि करै ॥ देषत अंध कूप मैं परै ॥ २५ ॥ साषी
हरष सोग की नदी मैं पंडित सूर बहाइ ॥ तुरसीदास ग्यांनी गुनी ॥ जु मुनि बपु
रा किस मांहि ॥ २६ ॥ जगत बिचारा का करै ॥ जांनै नहीं कबू ग्यांन ॥ जांनि बु
झि कैं बहैत है ॥ तुरसी यह हैरांन ॥ २७ ॥ अंधा होइ सु नरमई ॥ ताका नही
अंदेह ॥ छती आंषिन षूह मैं परै ॥ तुरसी अचिरज यह ॥ २८ ॥ तुरसी अचि
रज आहि यह ॥ ताहि न को कुं जांन ॥ येक कहै येक नां न गैं ॥ नजैं अनेक
अग्यांन ॥ २९ ॥ चौपई ॥ निरगुन सगुन एक बतावै ॥ कबहूं जुदे जुदे दि

॥श्री॥ अथ लैकौ परिकरन।

कानकार

पपील पुनि पंछी तहां। पङ्कु विनस के कोश॥२॥ तपतीरथ
जपतप हू स्यौं जानि॥ तुरसी ध्यान हू स्यौं अधिक। लैमारग॥

५॥ तुरसी संत॥

६॥ तुरसी संत तहां गये। जहां नहीं पंच को पसार॥ ती स्यौं गुन करि नां
सकै। पंच निरति हां संचार॥७॥ चौपई॥ तुरसी लैमारग है ऐसा॥ पंछी मो
जमीन मध जैसा॥ अति ही अलह लसौं न हि जाइ। केते करि करि थके उ
पार॥८॥ साषी॥ राति दिवस चितौं करै। तन मांही थिर होइ॥ तुरसी आ
लंगम को॥ लैमघ पावै सोइ॥९॥ तुरसी लै समान को कंन ही। उतम मारग
आन॥ साधूजन निरधारियौ॥ करि अति सप्रमांन॥१०॥ चौपई॥ तुर
सी लै अनंत असंडहि वैरै। लागी होइ तौ अन्त हूं नेरै॥ उलंघि आइ जगत
गुरु जहां॥ आदि अंत लिपटी रहै तहां॥११॥ साषी॥ तुरसी जहां जु लैन हां।
पैन ही॥ संकल्प बिकल्प दोउ॥ निराधार नीरलौं होइ रहा॥ पहि मन चिंता पोउ
॥१२॥ चिंता गई मन थिर भयौ॥ तुरसी लैमध पाइ॥ सकल मनोरथ भाये
नीयर स्यौं न लहराइ॥१३॥ का सुन अस सुन॥ त्यौं करै॥ सुनि सुनि संसै छांन
एक ही स्यौं ल्यौ लाइ रहु॥ जैसौं चकोर ससि ध्यांन॥१४॥ नावै उप होऊं दे
सकौं॥ नावै सुष होऊ आइ॥ जैसी सपरि धारि कैं॥ एक ही स्यौं ल्यौ ला

क ॥१५॥ कैलागी सबजानीय ॥ रहिजाइ बचनअबोल ॥ तुरसी मनकोरथ थकै
कूडी होहि अडोल ॥१६॥ जैसैं चित्रकी पूतरी ॥ रहिजाइ एकही ठौर ॥ तुरसी
असैं ब्रह्मस्यों ॥ होइ रहै चंद चकोर ॥१७॥ तुरसी कहो लौं आषिये ॥ यालै कोउन
मांन ॥ लागी होय तौ नाटरै ॥ जल निकसत हूं होइ मीनप्रांन ॥१८॥ तुरसी प्रांन
निपयानजु करत ॥ अनंतदुष होइ सोइ ॥ तऊं लै न गहो वै नही ॥ जो लगी
ब्रह्मस्यों होइ ॥१९॥ ८६०॥ अथ निहकामी पतिब्रताकौ परिकरनं ॥ १ ॥
तुरसी कैं वारी कन्यार हौं ॥ कै बर बरिहौं रांम ॥ मनसा बाचा करमनां ॥ औ
रनस्यों नही कांम ॥१॥ तुरसी इहै टेक मेरै जीयमही ॥ इहै जुगति इहै जोग ॥ ब
रिहौं राजा रांमकों ॥ छाडि आनरस जोग ॥२॥ तुरसी तुमही तुम चितवत रहौं
तुमही तुम रटौं रांम ॥ तुम बिन और अनेकसुष ॥ सो नही हमारे कांम ॥३॥
सबसुषतिन करि छाडिया ॥ अंतरि इहै हुलास ॥ जुग जुग मिलि आनंद
करौं ॥ अपने प्रभुकै पास ॥४॥ जाव तक वारी आत्मा ॥ ताव तप पतिब्रत पे
ह ॥ निहचै लागी रैनि दिन ॥ करै पति अपनैं स्यों नेह ॥५॥ तुरसी निहचौ त
व लगा ॥ अति तिहारा जंत ॥ जाव तप चै आइ पीव ॥ ह ष लेवो न गहंत ॥६॥ हथ
लेवो हरि गहै जु कैं ॥ दे अपनौ सुष सोइ ॥ तब कं वारी ब्याही जु कैं ॥ पतिब्र
तसब सिधि होइ ॥७॥ चौपई ॥ तुरसी पतिब्रता होइ ऐसी ॥ तो पीव पासि र
है निति वैसी ॥ जो इत उत छिन चित हि चलावै ॥ तो ततकाल धका नल पावै
॥८॥ साषी ॥ तुरसी धका मिलहि अरु पीवकों ॥ संग छूटई जु सोइ ॥ जो पति
ब्रता पति हित जि ॥ अनंत कह्यूं रति होइ ॥९॥ तुरसी इहै जीये जानिकैं ॥ नै
राषे मन मांहि ॥ तो पति कै पतिबरत बिचि ॥ बिघन परै कोऊ नांहि ॥१०॥
चौपई ॥ तुरसी मनकों राषे फेरि ॥ चहूं दिसा तें घट में घेरि ॥ प्रभुकै चरन
निराषे लाइ ॥ सो पतिब्रता नारि कहाइ ॥११॥ साषी ॥ तुरसी गुण अतीत
गोब्यंद न जत ॥ कदाचित दुष होइ कोरि ॥ तऊ दास नेम मानिकैं ॥ षसें न सुर
त न छोर ॥१२॥ सरगुर माया ब्रह्मकी ॥ उतपति षपति प्रतिपाल ॥ तुरसी

निरगुन ब्रह्म है। सब सौं रहै निराला॥१४॥ ब्रह्मा विष्णु महेस लौं। स्वर सिध र
मश्रेवुताय। तुरसी जो सब कैपरै॥ सो निज कंत हमार॥१५॥ आवै जाइन जग
तमैं। जुग तैं नहीं गुन आन॥ तुरसी सोई बर बसो॥ पूरब पीति पछांनि॥ जो
पती सौं कैं परै। पति है मारा सोइ॥ तुरसी और पति नां करैं। जो त्रिभुवन भ्र
रपै कोइ॥१६॥ त्रिभुवन हूं करौं वारनै। तिण कालौं त्यागैं॥ तुरसी उनष सू
रहौं। अपनैं पति आगैं॥१७॥ देह जाउ जानौ रहौ नला॥ रूपहि होइ सहोइ॥
तुरसी कंचन पारस कैं। कौ धींग है जु लोह॥१८॥ तुरसी लोह रूप यह मांडय
न॥ त्रिगुण रचित संसार॥ कंचन रूपी रामजी। भंवनि का नरतार॥१९॥
तुरसी एक ही कौं आराधिसैं। एक हि लै उर राषि॥ इक पंथ निनहीं राषिये।
यह संतनि की साषि॥२०॥ सीप सार तिसौं अचवै। स्वांति सुधा कौ नीर॥
तुरसी तु बषारौं परै। मोती पननासे वीर॥२१॥ तनक रेगु रस बदको॥
जुग बासना चुकाइ॥ तुरसी तब तन सीप मैं। मन मोती होइ आइ॥२२॥ तु
रसी मन मोती होइ आइ कै। ता मैं कचू सेनांहि॥ जु गुसमुद्र षारै नु जल
जौ पल परसियै जु नांहि॥२३॥ तुरसी पति बरत पपीहा को नलौं। जा कै ए
कही आस। और आस बांधे नहीं॥ जौ तन है कौ होइ नांस॥२४॥ तुरसी प
ति ब्रत पपीहा को नलौं। देषौ कि न निरताइ। कै अचवै न नीर कौं। कै प्या
सा ही मरि जाइ॥२५॥ तुरसी प्यासा हि मरि जाइ। तक न अचवै धर पांनी॥ य
ह पतिब्रत की रीति। पपीहा तैं हम जानी॥२६॥ चौपई॥ मुषि पति ब्रत म
न मैं बिभचारा। ढैंगी संगि सं जोइ सिंगारा॥ तुरसी तावत पतिब्रत नांहा॥
साषि स्मृति है मसाध निमांही॥२७॥ साषी॥ साध कहै साषि कहै। तावत
पतिब्रत नांहि। जावत मन चौरी करै। पीव सौं पर दे मांहि॥२८॥ मन॥
बिचरै बाजार मैं। जब जन आगैं सोइ॥ तुरसी तनि पतिब्रत नांहि। रही
मुषि मौं न संजोइ॥२९॥ तुरसी मौं न हूं मिथ्या है। बचन हूं मिथ्या सोइ॥
जो लौं पति सौं नां रचा॥ बहुमन प्रीति संजोइ॥३०॥ सकल लोक की

साहिबी संपति अरवषरव तुरसी त्रिभुवन नाथ परि वारि वारि यौं सरव ॥२१॥ तुरसी वारौं सकल निधि करि करि रिगई लौन रामचरन नो रचिर हों तौ जु बिकौं है कौन ॥२२॥ ८१॥ अथ कृतघ्नी दोष दिकरन ॥ १॥ मनिष जनम तन पाइ कैं जे न भजे गोबिंद तुरसीदास मन क्रम बचन धिग धिग ते नर अंध ॥ २॥ आय कहा जु गुमै कीयौ जु गति न जानी कोइ तुरसी गोबिंद भजन बिन नर षले बादि तन षोइ ॥ ३॥ सा च ह्नै ता सो परहस्या नये रूग मैं लीन तुरसीदास नर अंध रे अंध कमाई कीन ॥ ४॥ लष चौरासी जरमि कै पायौ तन तत सार सो तन षोयो काच गहि कंचन नाम बिसारि ॥ ५॥ अई आयहू तेरी जु गति कंचन डास्यो कीच काच रूप कन्दर जस षसो दिढ गह्यो जु नीच ॥ ६॥ पायौ हो बड़ जतन करि भ्रमि कै चास्यौं षानि सो तन कोडी के सटै षोयौ षल तैं जांनि ॥ ७॥ दोष ॥ सो वृत सो व्रत रैन बिहांनी बासर आयप कंतापानी बपु बिसस्या बरन पलटांनो श्री गुन करत न मन उलटांनो ॥ ७॥ कब कू जांमि न जपे मुरारी मैं तैं करत अवध सब हारी जब हि हूत गलि मे स्रापंफंध तक न राम हि उचरे अंध ॥ ८॥ साषी ॥ तुरसी अंध न सुमिरें राम कौं अबिद्या के चाइ इत उत उत इत फंषतें बीति गई सब आइ ॥ ९॥ जिनि जो बन मैं नां भज्या अबिनासी सुष धाम तुरसी ते पछिताहिगे जब जुरा सकौ चै म चांम ॥ १०॥ या बिनसंगार देह की मति प्रतीति करौ कोइ बारू के मंदिर जु लौं बिनसत बार न होइ ॥ ११॥ तुरसी मिथ्या देह यह तास्यों मोह न लाइ बाडि गास बदे षतें जिन की दीरघ आइ ॥ १२॥ जिन के अंगि सतल छमी चलत बजंत्र जु बाजे तुरसी ते षाली गए ज्यों रूं लावत बाद ॥ १३॥ यावौ बेजीवन मदी मन कौं कु गारव कराइ एक दिनां उठि चलनां बाइ जरी तजि काइ ॥ १४॥ मिथ्या माटी कौ जु तन ।

किरिमाटी है सो ग्यांन तुरसी ताकौ गरब करि ॥ मति रबि गयौ कोइ ॥१५॥ म्रा
रिद्धा रिद्ध रंग धरवै ॥ मल मुत्र की जु षांनि ॥ तुरसी स्त्रि बिसुपन है नहीं ॥ याही
ही गति जांनि ॥१६॥ जाकौं नर अपना कहै ॥ पालै पोषै निति ॥ सो देह है बेगावन
जाइ यो है गी मिति ॥१७॥ कहा रहे सो पलम हि कौ ॥ देषि जु नैन उघाडि ॥ जनम
मिरनौं जात है ॥ जैसैं पानी पारि ॥१८॥ नाज कचु लै आईया ॥ नांगे जाइ जु के
इ ॥ तुरसी नांगा ही आवनां ॥ नांगा ही जांनां सोइ ॥१९॥ याही देह मकहत है
नेहि जु बारंबारा ॥ यह औसर बहौ स्यो नहीं ॥ सकहि तो रांम संभारि ॥२०॥
काम क्रोध कलि विष जरी ॥ महा ठिन संगर सोइ ॥ ऐसी कदर जया देह
मैं ॥ मत अपना वे कोइ ॥२१॥ औगौ पीछै जाइगी ॥ रहत न देयौ देह ॥ देनर
ऊपर स्यो फिरै ॥ रांम सुमिरि किन लेह ॥२२॥ गरब न करिया देह को ॥ पे
ह से तन ही बार ॥ तुरसी गरब गुमांन ॥ तजि रांम सुमरि इक तार ॥२३॥ आ
जा इत न बदितन यो ॥ के हार है सो अलमाइ ॥ सुमिर सनेही आपनौं मन
चित मन साखाइ ॥२४॥ बकरि कहौं कहां पाईये ॥ तुरसी अमोलिक देह तु
रसी आत्म रांम कै ॥ अरघिल गाइ किन लेह ॥२५॥ आगै पीछै जाइगा ॥
अमर नहीं आकार ॥ तुरसी रांम संभारि ये ॥ पलपल बारंबार ॥२६॥ आगे
पीछै जायगा ॥ अबिचल नहीं सरीर ॥ तुरसी सांई सुमिरि लै ॥ सुष सागर
रघुबीर ॥२७॥ आगै पीछै जाइगा ॥ ताकी कैसी सार ॥ तुरसी नीकै राषि
ये ॥ हिरदै रांम अधार ॥२८॥ बार ही तें उतपन भयौ ॥ फूनि है है तन छा
र तुरसी इह गति जानि कैं ॥ रांम सुमिरि इकतार ॥२९॥ कार छाया देह की
मेह सेवन नहीं बार ॥ तुरसी निस दिन बहस्यौं ॥ निरमल नांम उचार ॥३०॥
औपी है कु बाडा नां ॥ सो अब ही देह बिटकाइ ॥ तुरसी तन मन सौं पिकै
सांई सुमिरि अघाइ ॥३१॥ सांई सुमिरि अघाइ कैं ॥ नव न्यात हनी दिह
तुरसी रहे बल घटै गा ॥ च बन हो ईंय सनेह ॥३२॥ कहां पा कर्की देह स्यो
करत ब ऊत अपने स ॥ तेअपने भजि लै रांम न क्यु ॥३३॥

बिनसिजाइपलछिनमहीं देषतहीयहदेह तुरसीइसीयादेहस्यौं करि
येकहांसनेह ३४ जैसेंबांबूधरनिपरि तैसेंहीयहदेह तुरसीऐसीजा
निकैं छाडिदेहकौनेह ३५ षाकहीतेंऊगइकैं साजिरकीयोसरी
र तुरसीताहिअपनाइकैं मतिषोवोहरिहीर ३६ षाकहीवैपेंराकी
यो अंतिषाकहीसमाइ आदिअंतिमधिषाकहै तुरसीतासबिसरा
इ ३७ मतभूलैंयादेहमें करिरांमस्योंसनेह तुरसीचाहौपरमसुष
तोसाहिबसुंदिरढमतयेह ३८ तुरसीयासंसारकों निश्चैजानिअसार
षिनउपजेषिनबिनसई षिनषिनमेंहिहोइबार ३९ भाजननांनां
ड षिनिकौ सकलउपद्रहमूल तुरसीऐसीजगतयह ताकोंदेषिन
भूलि ४० प्रथमस्वप्नसंसारहै तास्वप्नमेंसुपनसंमांन तुरसीपाई
देहयह ताकोंकाअभिमान ४१ होइआइयेआकासमें बादरछि
नकमंझार तुरसीछिनमेंफटिगये तैसोयहसंसार ४२ धूंहरिके
बादरनकी कहौकहांलौंप्रतीति तुरसीदेषतहीजूते छिनमेंगयेब
दीति ४३ जोइहनैंननिरेषिये सुनहीथिराकोइ अपनीअपनी
औसरजुगति चल्योजाइजगुसोइ ४४ जिनकेंहैंवरहीरते गैंवर
घूंमतद्वारि तेनांगोकरिजुनिकारिये काहूनपूछीसार ४५ ऐसेंमि
थ्याजगतइह मायारचितजुसोइ तुरसीजनममरनबिथा फिरिफि
रियातैंहोइ ४६ फिरिउपजैफिरिबिनसई फिरिफिरिलेआवता
र आवागवनदुषहोतहै यातैंबारंबार ४७ तातैंयाजुगबिथ्यांस्यौं
ह्वैवौचाहैदूरि तौतुरसीयाजगतकौ संगकरऊनिरमूरि ४८ जीव
तऊजगुमृअतुलि मूयेमहांमसान तुरसीऐसाजगतयह छिनगजि
येमगान ४९ ऐसोसोजानौजुयह संसारीसनिसोइ अवधिन
दीऊतरिगये कोऊकानहीकोइ ५० ऐसेसेजानौंजुयह भाईबंध
पितमाइ ज्यौंसलितामिचितिणमिले कहूंकहूंकेआइ ५१ कोऊ

काकोकनही॥कोंहेदेषो जोइ॥कालवलीकंगाहेगा॥तनतिकटिनश्रा
ह्हैकोगा॥५२॥राजपाटधनलिपाे॥विनजतियेंनगावंता॥तुरसीहेस्त
अमिनककौ॥फिरितुषहोग्छेनंता॥५३॥ज्योंसीवतस्वप्नमेंपाईयेराज
जुइंदुसमान॥तुरसीजागेंग्छवहे॥त्रिसोसोसबजान॥५४॥रेनरनिसदि
ननामजपि॥कहारहीसबनोमायह॥औसरसमयोजुयुहाछवकरिक
हंपैहोइ॥५५॥आलसीकहोक्कहारहेो॥उगिकिनकरहित्रपाइ॥
जिहित्रपाइकीयेउबरिये॥राजतजेमकीलाइ॥५६॥आलसीकहेम
कहारहेो॥उगिकिनसुमिरेराम॥मौतिविघारीलोंयकरिहौहिलेज
गीतिकोम॥५७॥तुरसीकलपिकउपिकायापोषोमनविगाहो॥
मूढ़ाअबतीकेहरिनामलै॥होइअकलपआरूढ़॥५८॥होइआइडू
टहरिनामलो॥बडिकलपनोआन॥तुरसीबडेकलपनो॥जानमिलेनि
रबान॥५९॥लक्ष्यालक्ष्याहरिनावलो॥अपनेंहीउरथिरिहोइ॥तुरसीकलि
जुगकलिहे॥देसनकरियेकोइ॥६०॥जिनिजनदेनकीयासुतो॥कलि
जुगलपितुराइ॥रामकहनपायेनही॥विचिहीगयेबिलाय॥६१॥न
लोमनावतलोककौ॥होइयलोककीहानि॥तुरसीतजनविचिनगाप
रे॥करतलोककीकानि॥६२॥जनजनकोमनराषतै॥बैरागरनिजदे
हा॥तुरसीवृथविहातहै॥कौनस्यानपनयेह॥६३॥सोरठा॥तुरसीकौ
नसयानपनयेह॥वृथकेचनतनषोईये॥रामनजनविसराइअलसा
इअसरहोइसोईये॥६४॥अलसाईयेनहीएकपल॥सुमिरतजारे
म॥तुरसीबीत्योजाततन॥धूंवाकौसोधाम॥६५॥तुरसीधूंवाकेसेंधोर
हर॥तनधनजोबनजोइ॥कालग्रसेकेंजांहिगे॥द्रिष्टिनपरिहैंसोइ॥
॥६६॥तुरसीमेतेंमतिकरौ॥मितेंधरीउराइ॥विचिमेतेंकाकोटहेंताहि
कोटरहेहरिराइ॥६७॥तुरसीमेतेजनलगो॥बसेअंतनमनमांहिं॥तं
त्रलगदरसनदेवकौ॥जीवकौदीसेंनांहि॥६८॥

रबिरांमबिन्निसोइ तुरसीइदपरदामिटेबिन कैसेंदरसनहोइ ६९
जागिदिवानेचेतिरे कहारह्यौअलसाइ राजारांमरिझाइलै औसर
बीतौजाइ ७० जौरीझैंतौंरिझाइये तुरसीराजारांम फिरिपीछैपछि
ताइबौ जबबिनसैंदेहीधांम ७१ रांमरिझावैतौबिसरि रीझलोककी
आंन तुरसीजोऐसीकरै तौतूबडासुजांन ७२ तौरिझूरति आकारस्यौं
निराकारस्यौंलाइ तुरसीऊरमधिआइकैं इदैअरथयौपाइ ७३ जौ
तैंगुरकौंसिरदीया तौअनंतछिकहौजाहि तुरसीआदरिअचलहोइ
क्यौंनअराधैताहि ७४ आराधतअबिदेवकौं अलसावैकोईअंध तु
रसीआरतिस्यौंसुमिरि अपनौंगुरगोबिंद ७५ तुरसीकथनीकाकथै
कथेकछूनहिहोइ जोचाहैहरिदरसकौं तौमनतनमाहिसमोइ ७६
कथनीकथिकथिकलिमंहि बहुतनिबंधानार तुरसीदासपायानहीं
बिनकरनीकरतार ७७ करनीकरतांपाईये बिनिकरनीकछूनांहि तु
रसीकरनीकीजिये मनगाहितनहीमांहि ७८ तनतजिअनंतनजाई
ये अनंततनपइयेपीव पीवजीवकेपासहै परसिहोइकिनसीव ७९ सु
षचाहैसुषक्यौंलहै तुरसीमुगधगंवार सुषतौसोजलपाइहै जोसब
सुषधरैबिसारि ८० सुषत्यागैंसुषपाईये सुषज्यौंगहैसुषजाइ
तुरसीदाससुषपरहरौ ज्यौंसुषमैंरहौसमाइ ८१ तुरसीदासबि
षऊपरैं मिश्रीलपटाई ऐसेनांनाभोगहैं परहरिदेनांई ८२ दुष
परेत्यौंसुषहै सुषपरेत्यौंदुष ऐसेंपरसपरदेषिये येसंसारीसुष
८३ सुषदुषकौंदेषिकरि मतहिडूलावौजीव तुरसीदुषबहुतांनि
हैं भजिसुषसागरपीव ८४ सुषकेसागररांमहैं सबदुषभंजनहा
र तुरसीताहिसंभारिलै सनमुषबारंबार ८५ तुरसीयासंसारकी
सुषसगाईजांन स्वारथदेषित्रिमिलै बिनस्वारथआपिछांनि
८६ तुरसीयासंसारकौं सुपनेकौसोसुष तहांनचांहियेबावरे र

वेहोइबकइष॥८३॥तुरसीयासंसारसौं॥निमषनकरियेनेह॥नेहकीयेदि
नचषनिमैं॥परैकुबधिकीषेह॥८४॥तुरसीसुषसंसारकौ॥कोटिइषनकी
षांनि॥तिहांपरिजोतिपतंगलौं॥पचेबकतअजांन॥८५॥जौलौंतनआरो
गहै॥तौलौंहरिगुनगाइ॥तुरसीप्रांनप्रबसियरै॥तबकछूबनैनउपाई॥
८६॥जुराआइग्रासैतनहीं॥मनसरघाघटिजाइ॥तुरसीतबइलनदैं
नजिबैत्रिसनवनराइ॥८७॥जुराआइग्रासैतनहीं॥जोबनजाइबिलाइ॥
तुरसीइंद्रीसथिलहोहिं॥तबकछूहैइनउपाइ॥८८॥थरहरथरहरतनइह
कंपतसकलसरीर॥तुरसीरामभजनतब॥कैसैंधौंहोइबीर॥८९॥नैनअ
वैश्रवननहूं॥सुन्यौनपरैसुधबैन॥रसनांयकिकंठकंमधि॥उपजैअतित
पैन॥अगअंगसबसिथलहोहिं॥समझैनहीसुधसैन॥तुरसीतबगोविं
दभजन॥कैसैंधौंहोइऐन॥९०॥करतप्रीतिघटघटनिसौं॥गयाबीति
तनसौ॥तुरसीअजहूंनचेतई॥इहअग्यानीलोइ॥९१॥सोरठा॥घ
टसौंकरतसंनेह॥देहजगतमैंधारियै॥तातैसमझिजयह॥अघटहासौंम
नलाइयै॥९२॥साषी॥जोपीछेहूंछाडनौं॥घटकोप्रीतिसंनेह॥सोअबहि
छिटकाइकैं॥होइरहौअसंगअनेह॥९३॥चौपई॥सोकमिटनकौंओषदि
येह॥पहलहीकहूंनकरियेनेह॥तुरसीउलटिहउरमैंआय॥तांमहीसौंरहि
येसौंलाइ॥९४॥९७०॥अथमनकौपरिकरन॥१॥तुरसीमनपूरबदि
सा॥निसबासुरिधावै॥पछिमदिसआवैनहीं॥कैसैंथितिपावै॥२॥पछिमब
सैंहरिजुप्रांनपति॥हरनअनंतअघत्रास॥तुरसीताहिबिसारिमन॥पूर
बकरैप्रकास॥३॥बिननौंबिननासिका॥बिनश्रवनौचलिजाइ॥बिनतुर
सीरसनांतुबधि॥सकलस्वादरसपाइ॥४॥तांबेमाहिंबहिपस्या॥उलटि
नऔवैगैर॥तुरसीचंचलचोरमन॥जपैऔरहीऔर॥५॥तुरसीजबलग
चंचलचपलहै॥तबलगकरईदौर॥बिनइहांबिनउहां॥दसौंदिस॥फिरि
आवैसबगैर॥६॥तुरसीजबलगचंचलचपलहै॥तबलगरहैनथीरास्वां

रबादबकबाहसौं॥ जाइकरै मिलिसीर ॥ ६ ॥ तुरसीजबलगाचंचलचपलहै
तबलगाबकैअघाइ॥ जबमनवाउनमनिमिल्या॥ तबबोल्याऊनसुहाइ ॥ ७ ॥
तुरसीजबलगमनयहजीवता॥ तबलगादहदिसजाइ॥ नलीबुरीबरतैसबै
बिषअमृतसबषाइ ॥ ८ ॥ तुरसीजबलगामनइहजीवता॥ तबलगाबरतैदो
इ॥ मैंतैमांनिबडाईयां॥ तातीसीलीसोइ ॥ ९ ॥ तुरसीजबलगामनइहजीव
ता॥ तबलगाचंचलदेह॥ जबमनवामृतिगया॥ तबदेहनईबिदेह ॥ १० ॥ तुर
सीजबलगामनइहजीवता॥ तबलगापांचपचीस॥ जबमनवामृतगया॥ त
बपंचपचीसनतीस॥ ११ ॥ यहमनमारैसकलकौं॥ मनकौबिरलाकोइ॥ तुर
सीमनकौंमारिहै॥ पावैगेसुषसोइ॥ १२ ॥ तुरसीजबलगइहमनजीवता॥ त
बलगाबरतैदोइ॥ मैंतैमांनिबडाईयां॥ तातीसीलीसोइ॥ १३ ॥ यहमनमारै
सकलकौं॥ मनकौबिरलासंत॥ तुरसीमनकौंमारिही॥ तेपावैंगावंत॥
॥ १४ ॥ मनकेमारेमुनिगये॥ बनतजिबस्तीमांहि॥ तुरसीइहमनमसकरा
पलधीजीयेजुनांहि॥ १५ ॥ मनकेमारेमुनिगये॥ ग्यानध्यानसुधिभूलि॥
थ तुरसीइहमनमसकरा॥ याहिधीजियेनमूलि॥ १६ ॥ महाकठिनयहमन
है॥ अगहगह्यौनहिजाइ॥ तुरसीकेतेपचिगये॥ कहिकरिकोटिउपाइ
॥ १७ ॥ कायाकसैबहुकालनया॥ मनमौनारससबांइ॥ तुरसीमनरसरहि
तहोइ॥ तौनिरबांनसमांन॥ १८ ॥ जोमनकछूबसिनयाहोइ॥ तकमित
करिगिनौनकोइ॥ तुरसीअपनौऔसरपरै॥ पलटिसत्रहैपयोइ॥
॥ १९ ॥ मनसौंमित्राईकिसी॥ जाकोउलटसुभाव॥ बडेबडेमहामुनीरिषि
इहिमनदीयेडिगाइ॥ २० ॥ राईहूकेबीजसमि॥ तहांनसंचरकोइ॥ ज
हांमनआइसंचरकरै॥ कांमकटकसंजोइ॥ २१ ॥ जोरअतमगुनत्या
गिकै॥ भयासाहिकीमन॥ तौहूताहिनधीजिये॥ सिधिनजुलावैजन
॥ २२ ॥ मनकौजैककरिरिषिबसे॥ बिचरैबौरेहोइ॥ तुरसीतबनलछू
टिये॥ यामनआगैसोइ॥ २३ ॥ कालहूकौमहाकालहै॥ कोटिकसत्र

समांन।तुरसीऐसोमनहै॥महामुगधअग्यान॥२४॥तुरसीतकैनधीजिये
जोमनमूवाहोइ॥कसबिकबहूनबिचलै॥सतप्रतहोइसोइ॥२५॥तुरसी
तकतधीजिये॥यामनकौंबिनताड॥सुपकसिधिलौंबिरिपरै॥तकमधि
कूरनजाइ॥२६॥जौवतसेंपूरनमन॥लयानतनमेंथीर॥तावतकेरोमनको
माडिनदीजेनीर॥२७॥मनहींकुतसतकलपनां॥उपजावैंउरमांहि॥तु
रसीताकीचौमेंपरि॥निकस्यौंचाहैनांहि॥२८॥देषौयामनकीमूढता॥उल
टौकैंसमझाइ॥तुरसीदुषसुषकरिगिनै॥सुषकादुषकराइ॥२९॥जीव
कीरसनावसीं॥रुचिमानईजुसोइ॥ईषदंडमधिमेल्हिये॥तोतलफिल्य
गतनहोइ॥३०॥अपनेहीमनकीकलपनां॥मनकौंबंधनहोइ॥ज्यौंतंतुत
मकरी॥रहीअरझिमधिसोइ॥३१॥ऐसोसोचिबिचारिकैं॥औरनकोक
फंद॥अपनेहींकीयेकरममैं॥अरझिरह्यौमतमंद॥३२॥जैसेंकीयापासको
आपहारविकैंजाल॥तुरसीतौमैंपरिहैंमरै॥औरनकोऊकाल॥३३॥स
कलआसरसमिरतकहैं॥सिधसाधिककहैसोइ॥तुरसीदासमनबसि
कीये॥मनकीमुकतिजुहोइ॥३४॥मनहीमायाबिषेरस॥मनहीनिरबिष
होइ॥मनहीउलटिनिजमनमिलै॥तुरसीगुरगमिसोइ॥३५॥मनहीसो
मनपाईये॥मनबिनमननहींहोइ॥तुरसीलरीयाततकौं॥मनबिनप
कैचैकोइ॥३६॥मनहींसमझैंग्यांनगति॥मनहीहोइअग्यांन॥मनहीप
रसैंपीवकौं॥तुरसीपरहरिआंन॥३७॥मनहीउतममधिममन॥मन
हीचोरमनसाध॥मनहींफिरिमनकौंमिलै॥छाडिमकलअपराध॥३८
॥गरेसबमनकेधरम॥पुनिसंकलपबिकलपसोइ॥तुरसीएबिलीमा
नहोहिं॥तबमनमूवाजोइ॥३९॥जबमनअपनीब्रितिकौं॥बिसरिब
सहोइलीन॥तुरसीतबयहईजुमन॥होइब्रह्मसमुद्रकीमीन॥४०॥
यहमनरतहोइब्रह्मसौं॥इहैबिषयारतहोइ॥तुरसीदोनिगचिस
तका॥इहैमनकारनसोइ॥४१॥इहैमनईदूषसुषनिस्यों॥रचिसंसा

री होइ ॥ तुरसी इहै मन बिरकत होइ ॥ तौ ब्रह्म सामां वै सोइ ॥ ४२ ॥ सब इंद्री
न को मूल मन ॥ अरु जग को सीवां सोइ ॥ तुरसी जिन इह लंघियो ॥ तिनि
लंघी सब लोइ ॥ ४३ ॥ करनै कछू जु नारह्यो ॥ कियो कितनये जु सोइ ॥ तुर
सी जे मन जीति कें ॥ रहे रोम रत होइ ॥ ४४ ॥ बिद्या सकल पढी जु जिनि ॥
अरु जान्यौं जोग अभ्यास ॥ तुरसी जिनि मन बसि कीयो ॥ करि इंद्रीन को ना
स ॥ ४५ ॥ तुरसी ज्यूं इह मन मूर है ॥ यह मन साषा सोइ ॥ यह मन बसि नये ॥
ब्रह्म को ॥ अवसि प्रकास जु होइ ॥ ४६ ॥ तुरसी यह मन नगर जु गरीका
काटर घोर अगाहि ॥ ज्यौं ज्यौं अघा चलाईये ॥ त्यौं त्यौं पछो हू जाइ ॥ ४७ ॥
तुरसी यह मन अस अरैल अति ॥ चलाये न चलाइ ॥ कच अमवार हि डा
रि दे ॥ को उपका मलन हराइ ॥ ४८ ॥ या मन अस को साधिबो ॥ अतिति
उहकर जांनि ॥ तुरसी मनै सनैं सधै ॥ और न ही बल आंन ॥ ४९ ॥ गिर
परि सिलाच ढाइबौ ॥ महा सुइह कर जानि ॥ तुरसी मन कौ जीतिबौ ॥
ऐसो सो परवांनि ॥ ५० ॥ जीवत बीते बरष बहु ॥ उरध चढावत सोइ ॥
ता मन कौं गिर सिला लौं ॥ उतरत बार न होइ ॥ ५१ ॥ मन ही धी जे संत जन
पाम न रिपकौं कोइ ॥ तुरसी धी जे करत हैं ॥ भजन माहि नंग सोइ ॥ ५२ ॥
तुरसी हं म सुर क्रिपा ते ॥ गोबिंद के प्रसादि ॥ संत संगति के प्रसतैं ॥ तपी
जु पाकी आदि ॥ ५३ ॥ अहंकार तें उदित होइ ॥ द्विष्टि ते मुष्ट जु होइ ॥ तुरसी
सो मन तब मरै ॥ जब निरमूर है सोइ ॥ ५४ ॥ तुरसी बाजी को बिसमर
न करि ॥ सुमिरै रांम अघाइ ॥ यह बोषदि उर आचरै ॥ तौ सहजे मन मरि
जाइ ॥ ५५ ॥ ऐसी करनी करै निति ॥ जन चित बित उलटाइ ॥ तौ तुरसी यु
मन की सहजि बिथा मिटि जाइ ॥ ५६ ॥ जोई जोई नोग जु बासना ॥ मन म
हि उपजै आइ ॥ तुरसी सोई सोई टारिये ॥ तौ मन मरता जाइ ॥ ५७ ॥ सह
जि सहजि मन को जतन ॥ तुरसी कीन जु होइ ॥ जो बबि बिधि जोगादि
सुष ॥ ताहि अरपि न कोइ ॥ ५८ ॥ जावत जतन जु मन को ॥ करै संत ज

नसोइ॥ पंचकुटंबीनसहतयह॥ तातनमृतकहोइ॥५९॥ जावतजतन २३
तुमनकी॥ जननदेइछिटकाइ॥ तुरसी तावततपलपातजि॥ तलटिन
वैठेआइ॥ ६०॥ तुरसीजबलगमनअस्थिरनहीं॥ चितचंचलचलिजा
इ॥ तौलौंमहाकरनीकरत॥ रहियैनहीअलसाइ॥ ६१॥ अलसायेकहौ
कौंबनैं॥ अवधिसिरानीजाइ॥ तुरसीमनवसिकारनैं॥ करियेकछूउ
पाइ॥ ६२॥ स्वासैस्वाससुरतिस्यौं॥ रामनामनितटेरि॥ तुरसीमनयौं
आलंबसौं॥ लीजैघटमैंघेरि॥ ६३॥ सनैसनैंसुरकाईयै॥ अरुक्रनिस
वैनिवारि॥ तुरसी राममनरामिकरि॥ रमिरहौअमनमझारि॥ ६४॥
ज्यौंआवैस्यौंलीजियै॥ रीझेअनंतनजान॥ तुरसीमनवसिकीजियै
यौंहीवडौसयान॥ ६५॥ चौपई॥ तुरसीयहमनवसिकवहोइ जब
रातिदिवसलागरहैसोइ॥ याकौपीछौपलनविसारै॥ स्वासउस्वास
मैंअवधिगुदारै॥ ६६॥ औरउपायसवैपरिहरै॥ मनवसिहोइसोईम
तधरै॥ तुरसीऔरउपायनमांही॥ वकृतूलेतिनकीसुधिनाही॥ ६७
॥साषी॥ सनकादिकसिवआदिदे॥ आपैरहेजुजोग॥ तुरसीमनउस
राईयै॥ परहरिनानांजोग॥ ६८॥ सोमननमूरतनयै॥ तननमूरतहोइ
तुरसीतननमूरतनयै॥ हतीनदरसैकोइ॥ ६९॥ वेदांतसिद्धांतकौ॥ इतौ
हिअरथततसार॥ मनवसिकरिनजिरांमजी॥ तुरसीत्यागिविका
र॥ ७०॥ चौपई॥ तुरसीकोटिवातकीएकहीवात॥ कहैसतस्वरवे
रविधात॥ जौसवविधिमनवसिहोइआवै॥ तौजनक्यौंनमुकतिफ
लपावै॥ ७१॥ साषी॥ कायाकुसिमनकौंमुसै॥ थसिकैंकछूनजाइ॥ तु
रसीसोईसंतजन॥ सुविसुधारसषाइ॥ ७२॥ तनमैंमनमनमैंपवन॥ पं
वनमैंसुरतिसमाइ॥ तुरसीतवआनंदहोइ॥ वेआनंदविलाइ॥ ७३
वेआनंदविलाइतव॥ जवमनथिरहोइआइ॥ तुरसीमनथिरनयै
विन॥ कहाकसैहोइकाइ॥ ७४॥ कायाकिसजुदेषियै॥ माहीमो

ज्यौंवनमेंवसौ हसौकिरहौगहिमौन तुरसीमनजीतेबिना मिटैन
दीदुषजौंनि ७६ मनजीतेमहाप्रभुकौ दरसहोइततकाल तुरसीम
नजीतेबिना जपतपसबेजंजाल ७७ जिनमनजीताजुगतिस्यौं सि
धस्येजनसोइ तुरसीमनजीतेबिना बकतगयेहैंरोइ ७८ मनजी
तेसुषपाईये मिटिजायसबेकलेस तुरसीपूरनब्रह्मजहां तहां है
इसबेस ७९ निरहंकारीमनकरि धरैनिरंतरिध्यान तुरसीतब
लपाईये परमजोतिअस्थान ८० मनषवाहैरोकिकें राषैंकाय
माहि तुरसीकरताकौंमिलै मिलिजुनिबिछुरैनाहि ८१ तपति
मिटैतनमनकी सीतलताउपजाइ तुरसीजबमनतनमही थि
रचितबैसेआइ ८२ मनचितथिरहोइतनमही कलहकलपनमि
टाइ तुरसीपरमसमाधिसुष तबजनलहोपैसोइ ८२ जैसैकतषारी
संचै ताकूऊपरितार तुरसीयौंमनसंचिये उलटिरिदामझारि
८३ फेरैतैंमनफिरैगा घेरैतैंघिरिजाइ तातैंघिरियेनहीं तुरसीले
जउलटाइ ८४ उलटायेंमनएसिहोइ आथिबघेउरमांहि तुरसी
बूझेबिकारफल स्वांतिहोइसबगाइ ८५ छिनछिनयहमनअट
किये तुरसीरिदामझारि अटैकेइकेतरहोइगा ज्यूंताकूंउपरि
तार ८६ अटकेअसथिरहोइमन टूटिजाहिसबपाइ तुरसीदास
अम्रतपिवै बिषदेष्योनसुहाइ ८७ तुरसीआदिअंतिलौं यहआ
रनकीजे मनतनमाहीअटकिये जोननहींदीजे ८८ ज्यौंनिरधन
धनकौंसंचै यौंजनसंचईमन तुरसीसोअम्रतस्यौं होइसंपूरनत
न ८९ सोईसंतसोईसूरिवां सोईपंडितबुधिवांन तुरसीमनम
हितनमही जौसुमिरैनावनंबान ९० जोननदेईजगतमहि म
नकौंएकलगार तुरसीराषेफेरिकरि सोसूरासंसार ९१ जपत
पहूंकरिबोसुगम सुगमतीरथब्रतदान तुरसीमनकौजीतिबो म
होकठिनयहजान ९२ जिनिमनजीत्याआपनां मेंतिनरमसबकौ

॥तुरसीबस्तुमिलिबस्तुमैं॥नयेजुब्रह्मसमांन॥९३॥मनसबकाईश्वर
जहै॥मनईश्वरजननहिकोइ॥तुरसीमनईश्वरजननये॥संतकहोवेसोइ॥९
४॥चौपई॥तेईसाधपंडितफुनिग्यांनी॥संपूरनमनबैठेआनी॥निबावनीर
लौंकेरेहैआइ॥तुरसीत्रिष्णातरंगमिटाइ॥९५॥साषी॥तुरसीमनमहा
चलबिचल॥चेचलचपलजुसोइ॥ऐसेंमनकौंबसिकरै॥तीनिनवंनपति
सोइ॥९६॥जैसेंरंगदिगमेलिये॥फटकतिसाहोइजाइ॥तुरसीहीराएक
रस॥दूजेरंगनसमाइ॥९७॥गिरिंफटकरूपजौलौरिदैं॥तौलौंरंगअ
नेक॥तुरसीहोवैहीरसम॥तबैएककाएक॥९८॥इकरंगसौंदूजौधरै
परेबहावत्रिमाहि॥तुरसीतौलौंफटकमन॥हीरारूपीनांहि॥९९॥पांचौ
इन्द्रीपंचरंग॥छठैफटकसमान॥तुरसीसबरंगहोइहिफिल॥जोउरए
अनहरिग्यांन॥१००॥मनकौंजीतिजुगतिगहि॥जेन्तिजिहेगोपाल॥तुरस
पक्षचैगेसदी॥जहोहरिदीनदयाल॥१०१॥जहोहरिदीनदयालहै॥तहांम
नकीगमिनांहि॥तुरसीमनपक्षचैसदी॥जोस्तुमिरैहरिघटमांहि॥१०२॥
कालामुषहोइकालका॥करमबाधिघटिजाइ॥तुरसीजोमनहरिनजो
इकचितइकेताइ॥१०३॥तुरसीकहांपढिऐगुनीऐकहो॥कहोसुनिएवक
ग्यांन॥जबलगमनसमझैनही॥तबसबहीअग्यांन॥१०४॥पटिपटिबक
पंडितभये॥तुरसीमनबसिनाभया॥बिनगहेहरिकीवोट॥१०५॥सोईक
रनीकीजीयै॥सोईकथियेग्यांन॥जिहिस्यौनेबसिहोइमन॥तुरसीपरहरि
आन॥१०६॥तातेंब्रह्ममहेसकौ॥तातेंब्रह्माबिस्नु॥मनबसिनभयेबसिहोहि
गे॥तुरसीयाचौयिस्नु॥१०७॥बनहीत्रासदेहैनदिस॥मनकीषबरिनसार॥
तुरसीफिरैतिहूलोकमैं॥महास्विमताधारा॥१०८॥मनफेरैतनकीप्रकृति
फिरिआवैएकगो॥तुरसीताहिनफेरिही॥मूरषमतकेटोरा॥१०९॥मन
फेरेंमहामुक्तिके॥षुलिजांहिबज्रकपाट॥तुरसीमनफेरेबिना॥प्रांन
घटेबकथाट॥११०॥द्वादसआंगुदेहस्यौ॥जौलौंकरैगवंन॥तुरसीतो

तौजानिये। कव्हूबासनामन ॥१२१॥ अपनेघरिअस्थिररहै। तिलनरितजै तेप्यान। तुरसीतबजानीमनकी। मिटीबासनाआन॥१२२॥ जौलौंचालौंचि नकर्कं। तौलौंजीवतमांन। तुरसीमनम्हवाजानिये। जौगहेरहेअसपांन॥ ॥१२३॥ त्रियारूपहिदेषिकरि। जौउगतउरजागि। तौलौंतुरसीकाचमन। छूओनबिषयादाग॥१२४॥ त्रियारूपहिदेषिकरि। जौकबकरईगवं न। तौलौंतुरसीकाचमन। परपककहैकवन॥१२५॥ परपकमनक्यों जानिये। क्यौंपईयेसुधसार। तुरसीबिषैबिकारकौं। चालैनहीलगार ॥१२६॥ परपकमनहीउपजे। अहंबिषैकीकोर। तुरसीरमितारांमस्यौं। होइरह्याचंदचकोर॥१२७॥ चौपई॥ जावतअैसापरिपकमन। तुरसीहोइसरहईतन। तावतमनप्रतीतिधीकोइ। करैसुजनजलबूडैसोइ ॥१२८॥ पामनकोइहैजगसत्रावा। उरधैलेतअरधकौंजाइ। मानैनहीकाहूकी संक। निरनैबिषैतजैनिसंक॥१२९॥ साषी॥ तुरसीकोटिबातकीएकही कहौंतोहिमनजाइ। जोचाहैअम्रतकौंदरस। तौउरमधिथिरहोइआइ॥१३०॥ उरमधिमारगरांमकौ। बाहजिबाजीकाम। तुरसीबाहजिबिसरिकैं। उरमधिकरिआरांम॥१३१॥ नांमआलंबनबिनांमन। ठैघैकेअलसाइ। कैतुरसीकहौंउविकलै। पैअसथिररह्यानजाइ॥१३२॥ तुरसीकबहूजाइ आकासमन। कबहूंपतालैजाइ। कबहूंत्रमैदिसौंदिसा। पैउरआव तअलसाइ॥१३३॥ उरआवतइहअधमन। आलसकरतअनेक। तुरसी बाहरित्रमनकौं। अबरिपारैतेक॥१३४॥ सकलसिधियामनमैं। जौउरअ सथिरहोइ। तुरसीउरअसथिरबिनां। कौडीकानहीसोइ॥१३५॥ कौडीहूं सरजरिनही। असथिरताबिनमन। तुरसीउरअस्थिररहै। तोइहैअमो लरतन॥१३६॥ कायककबायककरमकौं। जीतेगाजनसोइ। तुरसीजेप्या मनकै। कैरैलागाहोइ॥१३७॥ जोउगतेमनकौंलषै। लषिराषैमनमांहि। तु रसीचेतनिरुपसो। सबजलत्रमैनांहि॥१३८॥ तुरसीचेतनराषैमनकौं

कायागढमांहि॥अचेतनिबहेबहेफिरै॥जहांजहंमनतहांजांहि॥२८
नातिमनहीनजानई॥जातैंजमलैगोजाइ॥तुरसीतबउलटावई॥कनिष्ट
नथाइ॥२३०॥जहांजाइजाननदेतहां॥बिबिहिमनलेफेरि॥तुरसीम
चेतनिसो॥औसैंराषैघेरि॥२३१॥उमतेहिमनकौंलषैं॥लषिराषैवहांगो
तुरसीयात्रियलोकमैं॥उतमचेतनसोइ॥२३२॥आदिअंतिमधिलौंर
ासावधानइकतार॥तुरसीचलननदेमनहि॥सोचेतननिजसार॥२३
तनकेसुषतजिमनकौं॥बलठिआसैंउरमांहि॥तुरसीहरिनाइलाग
हि॥तौसिधिमैंसंसानांहि॥२३४॥पगहोइमनतनमांहि॥गुणइंद्रीबिस
राइ॥तुरसीतबरिदकंवलमैं॥परमजोतिदरसाइ॥२३५॥मनकीमूरिष
ताभिटै॥भरमगलितहोइजाइ॥तुरसीतबयाउरमांही॥आमउदीक
राइ॥२३६॥सबसाधनमिलियौंकहैं॥फुनिकहैबेदपुरांन॥तुरसीमनरिप
जीतिकैं॥नजियैपदनिरबांन॥२३७॥कानयोतनथिरह्वैसिकैं॥धरैजुहरि
कौध्यांन॥उरऔरहीआलंबनकरै॥तुरसीमनअतांन॥२३८॥चौपई॥
पलकलाइबनबैगैध्यांनां॥मेनबजारमैंउदिमठानां॥बिधिबिधिकाबंक
सोदाकरै॥ताकीसरसुधिहूंनधरै॥२३९॥जाकीबूधिगईउनमनी॥होइग
येमनफेराव॥तुरसीतामतिहीनकौं॥इवलननयोफिराव॥२४०॥प्रसरेम
वकौंसमष्ठिबौ॥पीछैकुलनहोइ॥तातैंअबहीढिगराषीये॥तुरसीघट
मैंगोइ॥२४१॥चौपई॥तुरसीजोरबरीजोआनै॥तौमनमुगधउपदइहठानै
तातैंसनैंसनैंउलटावै॥सनैंसनैंमनबसिहोइआवै॥२४२॥साषी॥तुरसी
जोरबरीमनबसिकरै॥जुगतिनजानैकोइ॥औंधाकुंभउदकमैं॥कैसैंबूडै
सोइ॥२४३॥जौंजौंतरहाराबिये॥त्यौंत्यौंउछरैसोइ॥तुरसीजोगजुगति
बिनां॥यहइगतिमनकीजोइ॥२४४॥जुगतिजुगतिमनथिररहै॥अजुग
तिबिषरिजाइ॥तुरसीसबसाधूकहै॥यहजुगतिकौउपाइ॥२४५॥चौ
पई॥तातैंजोगीजुगतिसमावै॥सनैंसनैंमनकूंउलटावै॥तुरसीसनैंसनैं

तावत अंदर सैन रत्र्य रुनारी

ह मन बसि होइ। जोखि जीत्या देष्या कोइ॥१४६॥साषी॥सबै सबै को ध्यान है
जो रबरी को नांहि। जो रबरी आवै नहीं॥ तुरसी मन तन मांहि॥१४७॥ जब मन
थिर होइ तन मही॥ आसा पास मिटाइ॥ तुरसी तब बक्न वहू न होइ॥ मन नू
टा होइ जाइ॥१४८॥ तुरसी कहै जावत मन तन मैं रहै॥ तावत ही जु समाधि
जब तन तजि बाहरि रमैं। तब ही जो निरुपाधि॥१४९॥ तन मैं रहै तावत म
न॥ सिध गोरष समान॥ तुरसी दत अवधूत यह॥ जो रुप्या रहै रिदै थान॥
१५०॥ मन जीत्या गोरष सोई॥ मन जीत्या सोई दत्त॥ मन जीत्या आपै आपै
है। तुरसी त्रिभुवन पति॥१५१॥ मन नहीं के संकल्प तै। जगत उदै होइ आइ॥
तुरसी सो संकल्प मिटै। जगत बीन होइ जाइ॥१५२॥ चौपई॥ जावत जी
वै मन विकारी। तुरसी नर नारी बिलीमांन॥ जब मन मेरै मिटै अभिमान
॥१५३॥ साषी॥ जावत मन मैं कलपनां॥ तावत जगत रसाइ॥ तुरसी जगत र
रसे नत ब। जब मन वा मरि जाइ॥१५४॥ जावत ये चैन तन मैं। तुरसी मन
को बेग॥ तावत जोगी जन को॥ आवै उपद्रव देग॥१५५॥ उगत बेगगिर
दीय लौ॥ मन कौं तन हि संकार॥ तुरसी यं त्रिबो तासको॥ कगि न षांडे की धा
र॥१५६॥ जाको त्रिय बातें व खत॥ उनव मन हरियाइ॥ तुरसी सो कै मैंटि कै
जब प्रतछि धका होइ आइ॥१५७॥ तुरसी अजित मन की॥ करियै नापरती
ति॥ त्रियै बचन सुनि बहि वलै॥ ज्यौं जल बारू नीति॥१५८॥ कंचा ईजौ लौं
जु यह॥ है या मन कै मांहि॥ तावत का व कथी र मन॥ तुरसी कं वन नांहि॥
१५९॥ कंचन मई मन जानि तब॥ जब त्रिय के बिष बैंन॥ उणजी करि ना
सकै॥ अरु मधि त्रिदै न नैन॥१६०॥ नैंन बैंन आदि जु सकल॥ जितै क त्रिय बि
ष बान॥ तुरसी मधि त्तिदै न ही॥ तब मन यह पक जानि॥१६१॥ तुरसी तथा
पि मन यह॥ अैसा ह्रूपक होइ आइ॥ तऊ ताहि न धी जियै॥ ककताली होइ
जाई॥१६२॥ मन धरमी ताके धरम॥ संकल्पौ बिकलप दोइ॥ तुरसी जो मन म
रन को॥ है अंकूर जु सोइ॥१६३॥ मन बीज अंकूर मधि॥ मन के गैं न विकार

तुरसी तास्यौं उदित होइ॥ अषिल लोक संसार॥६४॥ तुरसी सुरनर असुर सब॥ सिध साधिक मुनि सोइ॥ संकलप रजा सबनिका॥ जावत तन नन होइ॥
६५॥ संकलप सौं संसार सब॥ सुरनर असुर अनंत॥ ब्रह्मा बिष्णु महेस लौं॥
तुरसी उरै न कंत॥ ६६॥ संकलप बिकलप जावलग॥ तावत है मन सोइ॥
तुरसी ये बिली मान होहि॥ तब मन मूलौ जोइ॥६७॥ तुरसी सब का मूल मन
मन ही स्यौं सब होइ॥ मन बिना करि नां सकै॥ कारिज कछू न कोइ॥६८॥ ये
कर्म हैं काया करै॥ मन का करै जु सोइ॥ तुरसी यह निहचा जु निज॥ सो मानि
मानै कोइ॥ १६९॥ काया ही उद्दिम करै॥ तब का है न करा॥ तुरसी है सम बु
न करै॥ काया बाहि पौढाइ॥ १७०॥ जो कुछु करै सम मन करै॥ तन का कीया
न होइ॥ तुरसी बन उद्दिम करै॥ तौ दैषौ मृतक जोइ॥ १७१॥ तौ मन हीं कौं
हिराधिये॥ मन ही जैउ लटाइ॥ मन ही कौं बंद दीजिये॥ तब तन कछू न
जोइ॥ १७२॥ मन बिन तन करि नां सकै॥ उद्दिम येक लगार॥ तुरसी तन बि
न मन हूं न पै॥ मन सांस हूं अपार॥ १७३॥ उद्दिम उनै संजौगतै॥ सुन असु
भ सब होइ॥ तुरसी दोऊ थकित भये॥ उद्दिम करै न कोइ॥ १७४॥ कारन स
ब उद्दिम न कौ॥ तुरसी है यह मन॥ तापि छै लाग्यौ फिरै॥ पवन पात लौं तन
॥१७५॥ मन कारन कारिज जु तन॥ तन मई सब संसार॥ तुरसी द्रिष्टि जु दे
षिये॥ सु है मन को बिस्तार॥१७६॥ तुरसी होइ या मन कौ॥ प्रतिलोम परि
णाम॥ सकल शास्त्रनि को इहै॥ सार तत बिश्राम॥ १७७॥ चौपई॥ तबैर
कवल लौं उलटा आवै॥ अरधसी सउरध पाइ करावै॥ तुरसी जब ऐसा म
न होइ॥ तब आत्म सुष बिलसै सोइ॥ १७८॥ साषी॥ तुरसी होइ या मन कै
अरधसी सउरध पाइ॥ ऐसे तन मैं तप करै॥ तौ नैटै त्रिभुवन राइ॥१७९॥
तन बन मैं मन तप करै॥ तजि इंद्रिन को संग॥ तुरसी परसै राम कौं॥ फिरि
होइ यं महि रंग॥ १८०॥ अंतरि प्रति मुम मन करि॥ बाह जिबुधि बिसय
॥ तुरसी हरस केवल मैं॥ परमात्म पद ध्याय॥ १८१॥ अंतरि मुषिम षम

नकरि॥ तानिप्रकृति सब आनि॥ तुरसी धृति गहि ध्यान धरि॥ परमात्मा पिछा
नि॥१८२॥ अंतरगा ति मुषमन कौं॥ आदि ब्रह्म ति जो होइ॥ तौ तुरसी पद पद हि
मिलि॥ पदसरूप ह्वोइ सोइ॥१८३॥ तुरसी साधक कहै सास्त्र कहै॥ स्मृति हू
कहै सोइ॥ अंतरगा ति मुषमन होइ॥ तौ सब जे सब सिधि होइ॥१८४॥ तुर
सी सब मत माही सार यह॥ मन जीतन कौं सोइ॥ तौ न जोग बैराग स्यौं॥
उलटत होइ सु होइ॥१८५॥ चौपई॥ तुरसी उलटत उलटत यह मन जाइ॥
येक दिना थिगुल होइ जाइ॥ इहै जांनि श्रम स्यास जु येह॥ छिन न बिसारै
अपनी देह॥१८६॥ साषी॥ छिन छिन यह मन अटकि कैं॥ तन में आनि ब
साइ॥ तुरसी त्रिभुवन नाथ स्यौं॥ मनै सनै लै लाइ॥ सिला गसिलौ मन रहै॥
सदा सु थिर तन मांहि॥ तौ तुरसी पेषै तुरी॥ त्रिय अवस्था बिलांहि॥१८७॥
जोई जोई तरंग उठै या मन मैं॥ सो उलटी उलटावै॥ सांचि सो चिमन को निर
धन लौं उर में आनि बसावै॥ सोई साधिक सिध होइ मही स्यौं॥ या करनी म
न लावै॥ तुरसी उलंघि जाइ त्रिगुन कौं॥ निरगुन मांहि समावै॥१८८॥ कोटि
क करनी करि जु कै॥ बेग निरजै होइ॥ तुरसी जिन मन उलटि कैं॥ राष्या घट
में गोइ॥१८९॥ पक अहं की को कहै॥ कोटि अहं मिटि जांहि॥ तुरसी जो
मन उलटि कै॥ रव होइ हरि पद मांहि॥१९०॥ मन कारन कारिज जु मन॥ म
नही डारन मूर॥ तुरसी दास मन बसि कीये॥ मिटै जनम अंकूर॥१९१॥ चौ
पई॥ पंच तत गुन तीनि पसार॥ ओ कछु द्रिष्टि मुष्टि बिस्तार॥ तुरसी सो सब म
न पहिचानि॥ मन बिन औरन हू जा जांनि॥१९३॥ मन मन मन सब को ऊ कहै॥ पे
मन मरम को ऊ बिरला लहै॥ तुरसी संपूरन मन जांनै॥ ता ही स्यौं मेरा मन
मांनै॥१९४॥ संपूरन मन जांनन हार॥ ते सानी बिरला संसार॥ तुरसी
कहन सुनन के सोइ॥ सानी अनंत जु गमैं जोइ॥१९५॥ साषी॥ तुरसी
बकुंत जाति मन बरनिया॥ बुधि बिस्तार उपाइ॥ अब चाली सौं सेर मन
बकुंत स्यौं कहौं सुनाइ॥१९६॥ चौपई॥ पिरथी आप अगनि फुनि बाई प

आकासआदिपांचौंतत्तबाई॥फुनिपंचनकीप्रकृतिपचीस॥बरनिसुन
कैबिसवाबीस॥१९७॥साषी॥चामरोमनाडीअस्ता।पंचममासहूंसोइ
तुरसीप्रिथीप्रकृतियै॥बूझैबिरलाकोइ॥१९८॥चौपई॥लालमुत्रप
स्वेदजुजांनि॥सुकलसुमेदसहतिपरवानि॥तुरसीआपप्रकृतियैकही
इनजातिसोजोगीसही॥१९९॥साषी॥आलसनिद्राभूषत्रिषापंचमको
धहूंजांनि॥तुरसीतेजप्रकृतियै॥उपजावनअग्यांन॥२००॥देतजैपुनिलै
चलै॥बोलैगवनकराइ॥तुरसीबाइप्रकृतियै॥संतकहैसमझाइ॥२०१॥
॥चौपई॥रागदोषमोहफुनिमाया॥लजालैजुबसैएकाया॥एपंचोंनिज
तनकेत्याग॥तुरसीतेगपारनबैराग॥२०२॥अबनवनागसुनौंहगुनती
नि॥सतगुरकहैक्रिपाकरितिनि॥तुरसीजोइबनवौंनजांनैं॥सोहांसी
काहेनमनमांनैं॥२०३॥साषी॥पलकप्रथममनबंदहीयै॥तपतिअनि
तिअसूक्ष्म॥सीतलसकलचसुबंधत॥तुरसीबिरलाकोकबूझि॥२०४॥
सोरठा॥तुरसीगुनप्रकृतिनवतीस॥बरनिसुनाएबिबाधिकैं॥मनक
मबचनसहीस॥तामधिजोतिचालीसई॥२०५॥साषी॥पहचालीसौंसेर
मन॥जगतिजनायासोई॥तुरसीजोयाबसिकरै॥सुजोथासोनलहोइ॥२०६
तुरसीजोथासोनलहोइसही॥जिनअैसाकछूकीन॥संपूरनमनजीति
कैं॥याअमनमेंलीन॥२०७॥सबकरिएयामनकों॥पवनधारनाधीन॥तुर
सीजोमनबासिनया॥तौकरनैरहाननआन॥२०८॥नदीयाजबलौलौंच
लै॥जौलौंनसकैसमाइ॥तुरसीमिलैसुषसिंधुकौं॥तौहलनचलनथ
किजाइ॥२०९॥मनकीगईअस्थह॥तनकीमिटीतपति॥तुरसीतपस
धक्की॥तबकोकरिमरैबपति॥२१०॥तुरसीऔषदितबलगषाईयै॥
जबलगतनमेंरोग॥रोगमिट्यौतनजकतजै॥तबस्वासंपूरनजोग॥
॥२११॥११८१॥अथसूछिमारगकौपरिकरनं॥१२॥तुरसीमारगयाबू
को॥कौंकरिपायौंजाइ॥बडेबडेमुनियरथकिरहै॥कारकरिकोटिउपा

इ॥१॥ तुरसीमारगपीवकौ ज्यौंपंछीआकास॥ षुरषोजपईयेनही॥ महाअ
गहनगतितास॥२॥ तुरसीमारगपीवकौ॥ झीनहूंतेअतिझीन॥ पावनदी
किहैपंचके॥ पंकचिनसकईतीनि॥३॥ तुरसीमारगपीवकौं॥ अतिहीषं
डेधार॥ चितगाहिचलैसुपकचिये॥ वोररहैउरवार॥४॥ जोगीजंगमतप
सी॥ पीरअवलीयादेव॥ तुरसीमघपावैनही॥ याकेकरतनषेव॥५॥ अ
तिसूक्षिमअति ही अगम॥ अतिही अगहनसोइ॥ तुरसीसमरथगुरु
बिना॥ पाइवेसकतनकोइ॥६॥ सूछिममारिगमोछिकौं॥ महासुरहक
रआहि॥ बिनहरिगुरकीक्रिपाबिन॥ कोऊनपावैताहि॥७॥ तुरसीमार
गमोछिकौ॥ हैउरमाहीसोइ॥ बाहरिचमतनपाईये॥ कोटिकरैजोकोइ
॥८॥ चौपई॥ जबउलटाउरमाहीआवै॥ तबतततामघकीसुधिपावै॥
तुरसीउलटेबिनाजुसोइ॥ कोटिरहेषपिषबरिनकोइ॥९॥ साषी॥ तु
रसीयहसमझीजु॥ जिनजेतयेजगतेस्यौंअजांन॥ जिह्वगूंगेहोरहे॥ ब
हरेहोइगयेकांन॥१०॥ तुरसीअदभूतबातयह॥ पंथबिनानिजसोइ॥
धरस्यौंअधरहोइअनुसरै॥ सुधिपावैनतसोइ॥११॥ तुरसीउलटापंथय
ह॥ सूधापंथयेनांही॥ सूधेचलैसुबहिगये॥ बिषयानंदमांही॥१२॥ तु
रसीपछिमदिसाजुअनुसरै॥ पूरबपीतिनिवारि॥ पूरबपलैजाईये॥ सूदि
तेहिनिधिनारि॥१३॥ चौपई॥ पंचबिषैपचौंतईनारी॥ इनधौंरहसबन
कीमारी॥ इनहित्यागिउलटेउरगाये॥ तुरसीपरसरूपतेतये॥१४॥ साषी॥
इलत्तचालकबीरकी॥ इलत्तगोरषग्यांन॥ इलत्तरहणीदत्तकी॥ इलत्तपद
निरबांन॥१५॥ इलत्तपालनगुरसबद॥ इलत्तदहबोकांम॥ इलत्तमनकौं
जीतिबौ॥ इलत्तमिलिबौरांम॥१६॥ इलत्तसंगतिसाधकी॥ इलत्तसत
गुरसेव॥ इलत्तरहिबौएकरस॥ इलत्तअलषअतेव॥१७॥ संतनकीग
तिइलत्तहै॥ गहीनकाहूंजाइ॥ सीसदेसांईतजै॥ सोजननलगहराइ॥
१८॥ तुरसीचलवाअचलमैं॥ पलकनपावैजान॥ अचलहितलतहाप
कंचई॥ वामघकौंयहग्यांन॥१९॥

चलत अचल नहिं पाई ॥१९॥ अचल कहूं तेहि रहि दूरि। चल अचल दोउ परदे है सो
पद पावै पूरि ॥२०॥ तुरसी अचल चलाइ लै। चलता को गहि घेरि ॥ चलस
चपावै आत्मा। छूटि जाइ अर फेरि ॥२१॥ चलती प्रकृति अचलकरि। अप
नेही उरमें आप ॥ तुरसी अचल आलसी मन। ताहि उरध को चलाई ॥२२॥ उर
धै चलै सु हरि मिलै। थिर जु नये थिति माहि ॥ तुरसी दास सु षविलसई ॥ क
बहूं बिछूरे नाहि ॥२३॥ अरध उरध जे पंथ का। तुरसी इहौ बिचार ॥ उरधै
चलै सु हरि मिलै। अरध माया मंझार ॥२४॥ अरध उरध उ जे पंथ मधि। तु
रसी उत्तम सोइ ॥ जाहि गहे मन चित की। चंचल छिति थिर होइ ॥२५॥ थिर ते
गये जु गिगन घरि। पकै चेप दस्थान ॥ तुरसी निसदिन चउत है। पेन हंस की
चहौं जिहान ॥२६॥ थिर मारग उ सनग्र कौं। जहां वसे तैनास ॥ तुरसी आनंद
बरतई छह रुति बारह मास ॥२७॥ उ बट चलेसु जाइ मिलै। परम जोति मंझार ॥
तुरसी सुधे पंथ चलत। लूटि लीया संसार ॥२८॥ सुधा पंथ या जगत का। ताहि
अतीत जउ बटजोनि ॥ तुरसी संत नित्या गिया। औरही लीया प्रवानि ॥२९॥
चौपई ॥ जाहि मेघ विमघय हजगा कहे। ताहि बिमे की संत न गहे ॥ तुरसी बिमे
कीउर आइ। पेंग होइ पद मेर है समाइ ॥३०॥ साखी ॥ पंगो तहां न लप कै चढ़ै।
स पंग न पावै अंत ॥ तुरसी ऐसा देस वहुं। बसे न बिछुरै अंत ॥३१॥ च तुरन को
ऊकरि सको। मल न रित हो अबे स ॥ तुरसी पंगो बावरे। तिनका है वह देस ॥३२॥
तुरसी चितराई चित तैं बिसरि। जांनपनों देह सागि ॥ या जल मैं बूडे घने ॥
लषि न सके यह आगि ॥३३॥ बूडे मांनाह विलासमें। मानि मानि सु बसोइ ॥
तुरसी परत छिफंद यह। समझि न सक्या कोइ ॥३४॥ तुरसी काटि जु फंद ये
गया गगन घर सोइ ॥ अलष रूप मैं रलि मिल्या। बहुरि न आवन होइ ॥
॥३५॥ अथ सूषिम जनम को पार करन ॥ १७॥ तुरसी संकलप जनम है। वि
कल्प मरन प्रवान ॥ जनम मरन ये हमकहा। औरक है को कउ आन ॥१॥ चौ
पई ॥ तुरसी मन संकलप बसि होइ। नांनां रूप निहारै सोइ ॥ जौ तसो व

वसुपनमंझारि तहांतहां भ्रमैं बिबिधितनधारि २ यहदेषोमनकीगतिसो
इ कबहुंकीरीकुंजरहोइ कबहुंबिबिधिरूपबिस्तारे अंतिसूछिमनो
नोतनधारे ३ घटहीमेंघटरचिबोकरै मानैंधरैसंवारैधरै यहदेषोमन
कोब्योहार क्योंउतरिबोयास्योंपार ४ साषी यहमनआपहिनारिहोइ
आपहिहोइपुरुष सिवसकतीकोसाजितन आपआपस्योंसुष ५ कब
हूंस्यालसूकरकबै कबहूंमगमृगहोइ कबहूंदेवसरीरसजि स्वरगसु
षरसुगतैसोइ ६ कबहूंराजारंकहोइ कबहुंसाहपुनिचोर नांनारंगब
दल्योकरै यहमननिसअरुभोर ७ नानाबिधिकेसाजितन सूछिमस्थू
लसोइ बेरबेरजामैमरै मनमायाबसिहोइ ८ एकछिनमांहिबहुजनम ध
रैमनुगयथहमन तुरसीधरिधरिफिरिमरै करिकरिसूछिमतन ९ चौपई
इकछिनमैंअगनितअवतार धरैमरैफुनिफुनिहोइ वार तुरसीइहदुष
बिषमबलाइ आपआपकोलेयउपाइ १० साषी सूछिमनकेतनन
को जानतनाहीकोइ अस्थूलजामनमरनस्यों लागिरहीसबलोइ
११ अस्तुतिसुनिमनउलहै निंदासुनिमुरझाइ तुरसीयहैजामनमरनफु
निफुनितनहोइजाइ १२ मानमयेमूवाजुमन बहुरिजीवैयहिदेह औमा
नैफिरिकरिमरै देषौगरबतियेह १३ आवागवनहोइतनमही ज्योंजल
मांझतरंग एकउपजैएकबिनसही मनतुरसीअरुसंग १४ तुरसीआतमछोड
तजि जहांजहांकरैप्रीति तहांतहांजामनमरन देषौयहबिपरीति १५
एअवतारजुमनके समझैकोऊसचेत अचेतननिजानैनही कहांकहांग
वनकरैत १६ अस्थूलजामनमरनको तबहोइहैनहनास जबमनसू
छिमसाजितन करैननीगबिलास १७ तुरसीसूछिमतनसाजैनहीं यहमन
स्वपनहूंसोइ तबअस्थूलजामनमरन बहुरिनकबहूंहोइ १८ इहैजोगइहै
संगिमत इहैग्यानतिनिहंकाम तुरसीसूछिमजामनमरन जीतिहोउंसरवि
राम १९ जबमनकेसूछिमजनम होहिनिपटनिरमूल तुरसीतबकोधोंध
रे लषचौरासीथूल २० चौपई

तुरसी जनम मरन कौ मूल॥ है संकलप बिकलप अतूल॥ ताहि मिटे बिनि यह त्रम
आधि। होइ रही अतिही जु असाधि॥२१॥ साषी॥ तुरसी अनिष्ट बस्त कौं इष्टमा
नि लेसो इ॥ संकलप बिकलप तप तियह। जो नैं बिरला कोइ॥२२॥ बचन सांत
तपन होइ॥ ज्यों मरीचि को पान॥ तुरसी बस्त मिथ्या वहो। यह बिकलप पर धांनि
॥२३॥ कोटि तप स्या करहुं को का। नूं संडल पर आग॥ संकलप बिकलप मिटे बि
ना का रिज सरै न काइ॥२४॥ तुरसी संकलप मिटे जनम मिटै॥ बिकलप मिटे
मरन॥ यह बेदन यह वोषदी॥ कोउ संत कै साधू जंन॥२५॥ तुरसी मिटै जु तान
सों। संकलप बिकलप रोग॥ कै मिटै जोग॥ न्यास स्यों और नहीं संजोग॥ कै।
मिटै ब्रक तबेराग स्यों॥ कहरि नगति करा॥ और मिटै न या रोग कौं। नाहि
न और उपाइ॥२६॥१२५॥ अथ माया को परकरण॥१८॥ तुरसी माया ब्रह्म की
है बैठी॥ अति रितिरी नहीं जाइ॥ बडे बडे महा रिषि मुनी॥ करि करि थके उपाइ
॥१॥ तुरसी माया ब्रह्म की॥ अमित पार नहिं कोइ॥ थहे थाह आवन हीं। लंघी जा
इन सोइ॥२॥ तुरसी माया ब्रह्म की॥ है बैठी करतार॥ ईश्वर होइ आडी नर्दों क
रि त्रम कोटि पहार॥३॥ तुरसी माया ब्रह्म की। अति बिचित्र है सोइ॥ ताकी
बिधि रचना जु कौं। पार न पावै कोइ॥४॥ तुरसी जहां नाही है है होइ तहां है त
हो नाही होइ॥ यह अचिरज माया जु को। दिषो अदभुत सोइ॥५॥ चौपई॥ बि
द्या कौं अबिद्या रस मावै। अबिद्या मोहि मन लपटावै॥ तुरसी ऐसी माया सो
इ॥ ता हि उलंघन कैसें होइ॥६॥ ब्रह्मा हूं स्यों को बड ग्यांनी॥ चारि बेद सुष उचरी बा
नी॥ तिनहूं कौ मन चित चुरायौ॥ सरअ बसर कहुं सुधि न आयौ॥७॥ तुरसी इ
सी अपरबल माया॥ सुर नर असुर सकल भ्रमाया॥ काहूं की छिन सकन आ
नैं॥ तीनि लोक तिन का करि मानै॥८॥ साषी॥ जैसी ही माया पंला। तैसो ही चं च
चल मन॥ तुरसी उनै रियन बिवि॥ क्यों निरबहै जु जन॥९॥ नहीं निरबाहय। ह
जीव को॥ बिन साध के सहाइ॥ तुरसी माया सरपनी॥ घेरि रही चहुं पाइ॥१०
तुरसी माया प्रबल राम की॥ क्यों ही न जीती जाइ॥ सरते हूं को जिव भले॥ कांम

कटाछि दिषाइ ॥ ११ ॥ माया के अंग अनंत है । वारपार नहीं कोइ ॥ तुरसी गुरगो-
विंद बिना । लंघी जाइ न सोइ ॥ १२ ॥ प्रबल माया की प्रकृति ता आगे यह जीव । तु-
रसी निरबल होइ रह्या । सके संभारि न पीव ॥ १३ ॥ माया मुनियरा बसि कीये । ज-
गु बपुरा किस मांहि । ब्रह्मा बिष्नु महेस सौं । तिन हूं बंची जु नांहि ॥ १४ ॥ माया षेल
अगाध है । लष्यो न काहूं जाइ । तुरसी धनि वै संत जन । जे रहे राम ल्यौ लाइ ॥ १५ ॥ म-
हा मुनिजन को मन हरै । माया नृत्य की लाइ । तुरसी जग की कौ कहै । रह्या तिष्या-
घर छाइ ॥ १६ ॥ भागे हूं कौं लोरवै । इसे हूं लेइ मनाय । तुरसी ते जन ऊबरे जे र-
हे हरि चरनौं लपटाये ॥ १७ ॥ तुरसी माया ब्रह्म की । करि बैठी बहु देह । त्रिया
पुरुष होइ परसपर । सब जुग मोह्या सोइ ॥ १८ ॥ केऊ त्रिया होइ संगि लीये ।
कांम कटाछि दिषाइ । केऊ कनक करि बसि किये । अंतरि लोभ उपाइ ॥ १९ ॥
माया के अंग अनंत है । तामै उनै जु जोइ । तुरसी परबत होइ रहे । जो रसी वबि-
चि सोइ ॥ २० ॥ उनै निलंघै सो अवसि । सद रूप मांहि समाइ । तुरसी उनै निबासि प-
र्या । सो नांनां जोनि फिराइ ॥ २१ ॥ जो कबहूं कांमनि तजै । तौ कनक तज्या नहीं जाइ ।
तुरसी कनक हूं परहस्या । तो मानि रहै उरझाइ ॥ २२ ॥ चौपई ॥ जे जे जो नी
संकट आइये । भांति भांति के तेउ रमाये । तुरसी उबरि सक्या न कोइ । बिन गु-
र गोबिंद कृपा सोइ ॥ २३ ॥ साषी ॥ घरघर नी सब त्यागि कैं । ले जु पाये बैराग ।
तुरसी माया मोहि कैं । तिन हूं लाया दाग ॥ २४ ॥ षट दरसन षट स्वाद स्यौं । का-
करि बांधे । तुरसी माया मोहनी । करि मल्हे आंधे ॥ २५ ॥ आंधे कीये अनंत मु-
नि इह माया तेरी । तुरसी दास करुना करै । राषो पति मेरी ॥ २६ ॥ पति राषो प्र-
भु के आवै । मै सरनांगति तोर । माया त्रास निवारि कैं । चरन बास दे मोर ॥ २७
म तुरसी तुम ही आहि प्रबल हम से अधम न आन । माया त्तव जल बूडिते क-
ढो क्रिपानिधांन ॥ २८ ॥ चौपई ॥ माया के आगे मुनि हारे । और पतंग जीव क-
हां बिचारे । जा कौं तुम प्रभु तये सहाय । सो सलैंउ बरे सरनांय ॥ २९ ॥ आसा होइ बै
आडी आवै । त्रिष्ना होइ तरंग उपजावै । तुरसी आसा त्रिष्ना होइ । बहुत क बंधन

परेसोइ॥३०॥साषी॥आसाके आधीन नर। तिन आदरै न कोइ॥ तुरसी मानम
हत बिन। आवै सारी लोइ॥३१॥ तुरसी जे आसाके दास हैं। ते सब जगु के दास
आसा तजि अन आसा त्तये॥ त्रिभुवन बंदत तास॥३२॥ आसास्यों अनरस नबो
लगी निरास सिहाय॥ पंच सषी बिलषी गई॥ नव सच पायो प्रान॥३३॥ तुरसी जि
न आसा षंडन कीयो॥ मनसा करी अहार॥ तिनको जस जग दिरहौ॥ तीन्यों लो
क मंझार॥३४॥ तुरसी आसा परहरौ। त्रिस्ना को यो दीन॥ हिमि मोटे सु नियरा
ले। हो तेव तुरसु जांन॥३५॥ तुरसी आसा परहरौ॥ आसा अग्नि की झाय इन
उरआये सब दहे। बांचै नही लगाय॥३६॥ तुरसी आसा परहरौ॥ आसा बडो
संताप॥ निरासा दिढि करि गहौ॥ तामें सुष अमाप॥३७॥ तुरसी आसा परह
रौ त्रिस्ना को तजि नेह॥ तन मन प्रान कौं अरपिकैं॥ जनम सुफल करि लेह॥३८
जावत जोगी जगत गुर। तावत रहै निरास॥ तुरसी आसा आवै तो जगु गुर
जोगी दास॥३९॥ जगति मुकति निज जांनका। ना सपन कौ मैं होइ॥ तुरसी
जब जन संग्रहै। कनक कामनी दोइ।४०॥ कनक कामनी संग्रहै। गयो न ध्यान घ
टि जाइ॥ तुरसी तजि आस्मा॥ मनुष्यो परै डराइ॥४१॥ बोहि रोग मम हसमोहकौ
परम सोक को षानि॥ तुरसी हरि की रति कषा॥ सकनन देई कांनि॥४२॥ मो दृ गो
रो जिन सिरी॥ तिन हि निरत न ही ज्ञान॥ कछुटिक बकुटिबा करैरो ती बन गु
र के बांन॥४३॥ मोह फांसि में जे फंदे॥ तिन सद्गति सुष नांहि॥ तुरसी दास ड
षे गावे॥ अहह बीस के मांहि॥४४॥ मोह तिमर लातन मदी॥ बदिर होये अमित अ
यार॥ तुरसी दास ता अधम को॥ सरैन हरि जियार॥४५॥ बिषही बिषयों न
रिरहे॥ अमृत कहो समोइ॥ तुरसी अमृत पी जिये॥ जो बिं धरै उगाइ॥४६॥ म
रबि की ज्वाला देषि करि॥ मृग जल करि धावंत॥ तुरसी प्यास मिटै नही॥ त्वमि
त्रामि ववदा हेत॥४७॥ तुरसी इन बिषयान को॥ ऐसो जांनि जोग॥ अलप सु
ष डुष को समूह॥ जपत न बंधे लोग॥४८॥ कथा कहै हे कीरत न सुने पुनि प
र मोधे आन॥ तुरसी तजे न तुब सुष। इहै बडो हैरान॥४९॥ गुरबचनो बाडै

घनी। तुछ तजी नही जाइ। तुरसी तुछ तजे बिनां। बकै रिछ छिनु गताइ ॥५०॥
ज्यौंति न षं निकानै कीयो। तुछ तोदर छोलाइ। तुरसी दास बरिषा नयें। ज्यौं का
स्यों लगि जाइ ॥५१॥ नावै हित स्यों हरिजनौ। नावै न जौ कछु ओर। तुरसी स्नुरति
जहां लगी। पावैगा सोई ठौर ॥५२॥ जौ सन मुष होइ स्नुरदिस। तौ पेषे प्रकास
तुरसी छाया निरषतें। छाया ही दरसात ॥५३॥ माया मारे तामसकों। जो चितवै च
वा वोर। तुरसी तास चितवै नही। तौ जाइ उलटि कर जोरि ॥५४॥ इंदु लोक तैं उ
रवसी। आई करि छलछंद। तुरसी सुकस्या बतिरह्या। गई उलटि पद बंदि ॥
५५॥ बकृत पची बसि करन कों। बसिन न्यास षदेव। तुरसी छलबल फि
लि नये। निरफल गई सब सेव ॥५६॥ आरति होइ त्राई कुंवी। टारन कौं उ
निधांन। तुरसी सुनत सकृ के बचन। रहो नरं नामांन ॥५७॥ जौ लौं देह न ग
सनी। तौ लौं कंपत प्रान। पहरि कवच गुर ग्यांन कौ। ज्यौं निरदेन माया बांन
॥५८॥ ग्यांन कवच पहरे बिनां। प्रान धरत नही धीर। तुरसी बिषम माया तनैं
आइ लगै उर तीर ॥५९॥ बहै सघन घन बूंद लौं। माया के बकृ बांन। तुरसी
उबरि बौकवि न। बिना वोट गुर ग्यांन ॥६०॥ ग्यांन वोट न लउंरिये। कै नजि
ये जगावांन। कै सत सत गुरु क्रिपा तें। और नही बल आन ॥६१॥ येक मृग
स्यों मोह करि। धरि नरथ है देह। तुरसी तिनि की कौंन गति। जु करि रहे
नांनां नेह ॥६२॥ चौपई॥ तुरसी नांनां नेह न मांही। चिह लेप रिनि कृसे नर
नांही। माया बसि होइ गए बिकाइ। ग्यांन ध्यांन सुधि रही न काइ ॥६३॥ तुर
सी ताती सीरी माया। इह माया सब जग भरमाया। या माया स्यौं न ये जु न्यारे
जनम जीति ते संत सिधारे ॥६४॥ साषी॥ द्रिष्टिमुष्टि बाजी बनी। नांनां रंग बि
रंग। तुरसी तामें बिमुष नर। होइ रहे जौ तिपतंग ॥६५॥ बिसरि न सकई नि
मष नरि। बाजी को बिस्तार। तुरसी दास बिसरे बिनां। क्यौं पावै करतार ॥६
६॥ बाजीगर रही बिसारि कै। बाजी में नये लीन। तुरसी दास नर अंधरे अंधक
माई कीन ॥६७॥ मिलियु कों मिलिये कहां। देषे कों कहां ध्यांन। अनदेषे स्यौं

मिलिरहौ।तुरसीसहगुरग्यांन॥६८॥त्यागिपषाणबाहिला।मतकोऊमरवाय।
तुरसीमायाओरहै।जिनिसरजनरपारेयाइ॥६९॥तुरसीमायासवमनमैंवसै।
कोऊलषैनतास।लहरितरंगलेंविषतनी।वैसीजीवकैपास॥७०॥इच्छाकेका
रलैं।मायातनीजुआन।तुरसीआगेसुषघनो।कोऊपकड़ैसंतसुजान॥७१॥
इछ्याबीजकारलैं।रहीसकलदिसपूरि।तुरसीकोऊनजाइसकेंजहांवे
तनआनंदमूर॥७२॥चौपई॥सूछमअस्थूलहोइयहमाया।विधिवि
धिकेसंसारभुलाया॥जनतुरसीअवसाजनकोइ।जिनिमिथ्याकरिजान
सोइ॥७३॥साषी॥मायामिथ्यासत्तसति।ब्रह्मसुतहसुधथीर।मायात
रकीछांहरी।छिनइकउतहोइवीर॥७४॥सदाएकरसनारहै।नांनारूपध
राय।यहमौंकीरतिहै।दिषोनीकेंनिरताइ॥७५॥तावतनीकीसीलगै।जाव
तज्ञांननहोइ।तुरसीज्ञांनउदैभयें।भ्रमसीजायैसोइ॥७६॥चौपई॥तुरसी
सोवतसुपनांमांही।धनपायातातीमिति वांही।जागेदृष्टिपरैवहीसोइ।
ऐसेंयहमायाभ्रमजोइ॥७७॥तातमातसुतबंधुभाई।त्रियासजनयोथीसि
रीसगाई।तुरसीतहांअग्यानिकबिमांनी।ज्ञांनीतासनदेगयेकांनी॥७८
तुरसीधविधनिवैज्ञांनी।जिनिमायाऐसीकरिजानी।ज्यूंधूंवरिकेबादरन
भा।छिनकअडंरफुनिफटिगये॥७९॥साषी॥तुरसीफटिगयेधूंवरिघ
टासौं।कांमक्रोधकेकौहर।मायाऐरकरिनीकसी।बुधिप्रकासीओर
॥८०॥चौपई॥आतमबुधिप्रकासितभई।मायारजनिअस्तहोइगई।तुर
सीसोफिरिनांईमूरि।रबिनततज्ञानरहोउरपूरि॥८१॥साषी॥मायाअस
निरबलभयो।उदयोआतमज्ञांन।तुरसीआगेरबिकें।कहांरजनिकोमां
न॥८२॥चौपई॥रबिज्ञांनरजनीयहमाया।विदेहोतषुरषोजनमाया॥
तुरसीसोज्ञांनघोंजुकोंन।होइरह्याआतमओरैलोंन॥८३॥साषी॥अ
नलोममायाजुकोप्रारगआषेवेद।तुरसीप्रतिलोमीभये।तेसंतअभेद
अवेद॥८४॥अनिअंतरिरतमतमदा।तुरपदमेंगलतांन।तुरसीतहांने

दिनसकैं। तीन्यनमायाबांन ।७५। तुरसी मायाकाकैरे। तासाधूकौ आइ। ति
हूंअवस्थाकैपरै। जु तुरपदर ह्यासमाइ।।८६।।चौपई।। तुरसी अपनैतुर
पदमांही। अरसपरस अंतर कछु नांही। होइर ह्यो ज्यौं आटै लौंन। ताहिजु
कहो बिछोहै कौंन।।८७।।साषी।। बिछोहजु कोऊ नासकै। मायाब्रह्मपर
लीन। तुरसी पांचौं पचिरहै। अरूप किरहै जु तीन।।८८।।१५४९।।अथ
गुणांविभागकौअंग लिष्यते।।१।। तुरसी मायाब्रह्मकी। तासौंगुणउत्प
ये तीनि। एक उतम मधिम एकै। एकक निष्ट जु कीन।१। त्रिगुनके त्रियपुरष
ने। अरधउरधमधिसोइ। तुरसी समझै गासही। संतबेबेकीकोइ।२। तुर
सी उतपतिअस्थितिपुनि प्रलै। तिहुंगुननिस्यौंहोइ। ब्रह्मअकरताइनमंही।
साषीलौं रहै सोइ।३। तुरसी गुणस्यौंगुणप्रवरतिसब। सहजैं चैलीजु जाइ।
ज्यूं चुबकपाषांनस्यौं। लोहचपलह्वै आइ।४। तुरसी जड चुबक जड लो
ह जु। ऐसेंही जडगुनतीनि। परसपरस जोगतैं। चैतन्नताई कीन।५। जद
पि जड गुणधौं जु यह। आपआपमैं आइ। तुरसी मिलि चैतन्न तयै। तकुंचे
तनिसरनाइ।६। चेतनिबिनां कछु नही। थोथे तुषवत जानि। तुरसी कनचे
तहै जहां। चेतनिहीकौं ज्ञांन।।७।।चौपई।। तुरसी जड गुनचेतनि त्रयेज
वचेतनिकैंसरनेगये। चेतनिबिनि कछू होइ न आंन। डर रहै ऐसैं जु पषां
न।।८।।साषी।। तुरसी ज्यौं बाती तेल जु आगनि। जो वरनहार बिनिसोइ। ज
दपि प्रकाससकि है। तदपि कछु न होइ।९। तुरसी यौं जडगुणये। बि
न चेतनि सनिधान। अतितपगजु होइ रहै। अछित आपनैपान।१०। तु
रसी जदपि सकति वंत आरसी। तदपि रबि बिन नांहि। पावकप्रकासै
नही। जड चेतनि यौं आंहि।११। निमतकारन ब्रह्म है। तास्यौं यह संसार।
तुरसी उतपन होत है। यह निहचौ निरधार।१२। ज्यौं रबिकै संपर्कस्यौं। ज
गत चेष्टा होइ। तुरसी ऐसें ब्रह्मस्यौं। उदित होइ यह लोइ।।१३।।चौपई।। तु
रसी कहां रबि कहां रचित संसार। ताउदोत करै ब्योहार। पैर बि कहां लिपत

नहोइ॥गुननिगुनयोंदेषौजोइ॥१४॥साषी॥तुरसीजडचेतनिका॥कछू॥१७
कछूकीयाबिचार॥ओगुनिलिंगाबरनकै॥भिन्नभिन्नबिबिधिप्रकार॥
॥१५॥चौपई॥तिहूंगुननिकेचिह्नबषांनौं॥जितेयकजेसीबिधिजानौं॥तु
रसीतास्यौंहोइयहग्यान॥यहजडयहचेतनिनिरबांन॥१६॥अथसात्विकबिधा
न॥१॥अंतहकरणबहकरणशाम्या॥गिग्याबिम्रियांन॥तुरसीउरउलटेन
ही॥सतगुनाबसेज्ञान॥१॥जोकोकछोनउपावई॥तोकनछोनउपजाइ॥छ
मानामसातिरीयह॥उपजैजनकीकाइ॥नित्यानित्यबबेकहोइ॥बीचि
कछीनरहाइ॥तुरसीजहांजहांबिरतियह॥सोसत्वधरमकहाइ॥१॥दया
सकलजीवनपर॥साचहूदैसुषजास॥अमानअरुआर्जवता॥धीरजदिढ
बिसवास॥सुधरमसीलसुदीनता॥सुमिरनस्वासेस्वास॥तुरसीयहसात्वि
कधर्म॥अधर्मकरनबिनास॥॥जोगत्यागतपदांनयह॥सूतअनेतादेहू
रजाहूजांनोजुयह॥उतपत्यपंथनहिलेइ॥उतममारग॥अनुसरैधीरधरि
आत्मध्येय॥तुरसीसात्विकधर्मयह॥सोमासुजसबिनेय॥५॥इच्छानपा
रहेकी॥आसीकछुधिजास॥संतोषीसीतलचतुर॥सुषदाईगुणदासाफ
लअसंगघटहूअसंग॥बिचरैरहितअयास॥तुरसीसात्विकयह
कोचीन्हेनिजदास॥५॥२१॥अथराजसबिधान॥१॥निष्कामरबसका
मता॥मदमनोरथमांन॥तुरसीएरजकेगुना॥कोउजांनेजानसुजान॥१
मदअमदनजानही॥सुमहीसुषस्योसनेह॥साचसुषसमकेतही॥सुनि
रजकेगुणएह॥२॥अरिमित्रादिजुभेदजहां॥मदउत्साहजसप्रीति॥हानि
बीरजबलउदिम॥तुरसीयेरजरीति॥३॥जोईजोईकछूउदिमकरै॥सजम
षतांपकेकाज॥एमनगतिजांनेनही॥रजरसनिलजनिकाज॥५॥अथ
तामसबिधान॥१॥निद्रानयेआलसदरिद्र॥हिंसासोकसंताप॥तुरसीए
तामसगुनां॥उपजावनउरपाप॥मिथ्यामोहबिषादता॥परपीरास्योंप्रीति

दितसकै । तीवनमायाबांन ॥८५॥ तुरसी माया का करै । ता साधू कौ आइ ॥ ति
हूं अवस्था कै परै । जु तुरपद रह्यो समाइ ॥८६॥ चौपई ॥ तुरसी अपनै तुर
पद मांही । अरसपरस अैतरक वूनांही । होइ रह्यौ ज्यौं आटे लौंन । ताहि जु
कहै त्रिछो है कौंन ॥८७॥ साखी ॥ त्रिछो है जु कोऊ नासकै । माया ब्रह्म पर
लीन । तुरसी पांचौ पचि रहै । अरु थकि रहे जु तीन ॥८८॥ १२४२॥ अथ
गुण विभाग तोय निरूपण ॥१॥ साखी ॥ तुरसी माया ब्रह्म की । तासौं गुणउ
ये तपनि । एक उतम मधिम एकै । एक कनिष्ट जु कीन ॥१॥ त्रिगुन के त्रिय प्रस्ब
नै । अरध उरध मधि सोइ । तुरसी सम कै गा सही । संत बेंबेकी कोइ ॥२॥ तुर
सी उतपति अस्थिति पुनि प्रलै । तिहुं गुन निस्यौं होइ । ब्रह्म अकरता इन मंही ।
साखी लौं रहै सोइ ॥३॥ तुरसी गुण स्यौं गुण प्रवरति सब । सत्व जें वेली जु जाइ ।
ज्यूं चुंबक पाषांन स्यौं । लोह चपल है आइ ॥४॥ तुरसी जड चुंबक जड लो
ह ऊ । अैसें ही जड गुन तीनि । परसपर संजोग तें । चेतनताई कीन ॥५॥ जद
पि जड गुण यौं जु पहहै । आप आप मैं आइ । तुरसी मिलि चेतन्न तये । तऊ चे
तनि सरनाइ ॥६॥ चेतनि बिनां कछु नही । थोथे तुष वत जानि । तुरसी कनक
त है जहां । चेतनि ही को ज्ञांन ॥७॥ चौपई ॥ तुरसी जड गुन चेतनि नये । ज
ब चेतनि कै सरनै गये । चेतनि बिनि कछू होइ न आन । डरे रहै जैसें जु पषा
न ॥८॥ साखी ॥ तुरसी ज्यौं बाती तेल जु आगनि । जोवनहार बिनि सोइ । ज
दपि प्रकास सकि है । तदपि कछु न होइ ॥९॥ तुरसी यौं जड गुणये । बि
न चेतनि सनिधान । अति तपंग जु होइ रहे । अग्नित आपने पान ॥१०॥ तु
रसी जदपि सकतिवंत आरसी । तदपि रबि बिन नांहि । पावक प्रकासै
नही । जड चेतनि यौं आंहि ॥११॥ निमत कारन ब्रह्म है । तास्यौं यह संसार ॥
तुरसी उतपन होत है । यह निहचौ निरधार ॥१२॥ ज्यौं रबि कै संपर्क स्यौं । ज
गत चेष्टा होइ । तुरसी अैसे ब्रह्म स्यौं । उदित होइ यह लोइ ॥१३॥ चौपई ॥ तु
रसी कहां रबि कहां रचित संसार । ता उदोत करै ब्योहार । पै रबि तहां लिपत

नहोइ॥गुननिगुनयौं देषौ जोइ॥१४॥साषी॥तुरसी जड चेतनिका॥कछू घ
कछूकीयाबिचार॥आगै गुनलिंगाबरनकुं भिंनभिंनि बिबिधिप्रकार॥
॥१५॥चौपई॥तिहुंगुननिके चिह्नबषांनौं॥जितेयेक जैसी बिधिजांनौं॥तु
रसी तास्यौं होइ यहम्यांन॥यहजडयहचेतनिनिरबांन॥१६॥अथसात्विकबिधा
न॥१॥अंतहकरणग्रहकरणए॥त्यागिणा॥निमियांन॥तुरसीउरउलटैन
ये॥सतस्तनावसोजान॥१॥जोकोकछोनउपावई॥तोकुनछोनउपजाइ॥छ
मानामसालिगीयह॥उपजै जनकी काइ॥नित्यानित्यबिबेकहोइ॥बीचि
कहीनरहाइ॥तुरसीजहांजहांबिरतियह॥सोसत्वधरमकहाइ॥३॥दया
सकलजीवनपर॥सोवहुदैसुषजाय॥आमानअरुआर्जवता॥धीरजरिद
बिसवास॥सुधरमसोलसुदीनता॥सुमिरनसासैस्वास॥तुरसीयहसाति
कधर्म॥अधर्मकरनबिनासहि॥जोगत्यागतपदानयह॥भूतअनैतादेइ
लजाहुजानौंजुयह॥उतपथपंथनहिलेइ॥६॥समस्मरा॥अनुसरैअरधरि
आत्मध्येय॥तुरसीसात्विकधर्मयह॥सोनासुजसबिनेय॥७॥इच्छाउपगा
रहीकी॥आस्तीकबुधिजास॥संतोषीसीतलचतुर॥सुषदाईगुणवास॥फ
लअसंगाघटहुं असंगा॥निर्वैरैरहितअयास॥तुरसीसाहिताहविषह
कोवीरुह्रैनिजदास॥५॥२१॥अथराजसबिधान॥१॥निष्कामरहबसका
मना॥मदमनोरथमांन॥तुरसी एराजकेगुना॥कोकुजानेजानसुजान॥१
मदअमदनजानही॥सुअहीसुषसौं सनेह॥सोचसुषपमफैनही॥सुनि
रजकेगुणएह॥२॥आरिमित्रादिजुनैरजहां॥मदउत्साहजसप्रीति॥हासि
बीरजबलउदिम॥तुरसीयेरजरीति॥३॥जोईजोईकछूउदिमकरै॥सुजस
प्रतापकेकाज॥एमनगतिजानैनहीं॥रजरजनिलजनिकाज॥४॥अथ
तामसबिधानः॥१॥निद्रानयेआलसदरिद्र॥हिंसासोकसंताप॥तुरसीय
तामसगुनां॥उपजावनउरपाप॥मिथ्यामोहबिषादता॥परपीरास्यौंप्रीति
तुरसीमनवचकरमसही॥एतामसकीबिपरीति॥२॥क्रोधअधिकलोलकुष

धिक। अधिक दंत अरु डोह। आया सकल चिंता अधिक। अधिक कुबद्धी अ
रोह। आसा आसा दुस अधिक। कहो लौं बरनौं वोह। यह ती हुण तामस प्र
ति। अधर्म नौका लोह।। ३।। अज्ञान अधिक आलस अधिक। अधिक दी
निद्रा जानि। तुरसी अवबेक्क अधिक। पतम चेह न प्रवानि।। ४।। अथ अ
थ गुण सम्मिलत्त विधान:।। ५।। तुरसी यह कुल्ह मेरी बस्त। या प्रवाह के मां
हि। बिवहार निमेवद्धि परे। संतोष जु कोऊ नाहि। अरथ धरम काम हो कौं
बडे बडे करम करो हि। गुण सम्मिलत जानौं जहां। यह बुधि उपजे आहि। अ
पनी अपनी वृत्ति कौं। सरधा लो उपाइ। अति तउ तमत होइ रहे। मनइंद्री
अरु काइ। सृष्टय धन पृय स्तु षटय। बकु आरंत उपाय। तुरसी जहां बु
धि वृत्ति यह। गुन सु मिलत जु कहाय।। २।। तुरसी यह स्यह मेरी बस्त। यह
तू तेरी जान। या प्रवाह मे परि रहे। करि करि अेचां तानि। न गुन की सोधी
नही। कहो बसे किस थानि। गुन सु मिलत जानौं जहां। यह बुधि उपजे आ
नि।। ३।। १४।। अथ त्रिगुण तिंग भेद भिन्न भिन्न निरूपन विधांन:।। ५।। स
तत ते सुष रज ते कर्म। तम ते अबिधि अबिचार। तुरसी तीनौं गुणनि का
भिन्न भिन्न भेद बिचार।। १।। रज बासना सकाम की। तामस क्रोध सुभाव।
सत सम दम संजुक्त है। ये त्रिगुण त्रिय भाव।। २।। ए त्रिगुण बुधि स्यों लये।
चित मुष उपजे आय। तुरसी ताहि जिय मानि कैं। बेधन या बिललाय।। ३।। तु
रसी जब सु धरम स्यों हारि तजे। त्यागि कामना देह। त्रिया होइ अथवा पुरु
ष। सात्विक प्रकृति येह।। ४।। सुकरम करै सुष बांछि कैं। उर बांछई जु काम
तुरसी यह रज की प्रकृत्ति। अंतर पार न रांम।। ५।। चौपई।। तुरसी हिंसा हि
र दै धरै। सु करम निनिज सेवा करै। तहां तहां तामस प्रकृति कहावे। सुष पावे
तब ताहि न भावे।। ६।। साखी।। तुरसी धरम उद्दिम करत। चित बिघन जो होय
ताकी पीड़ा मो निमन। सके बिचारि न सोइ। सो वहि सो वकस्यो करै। सुष
आनंद परषोइ। यह अज्ञान बरतै तहां। रज सुभाव तहां जोइ।। ७।। चौपई।

वतिचितमाकैं इषहोइ आवै॥ सोचतसोचतमांहिरहावै॥ सकैनहींपर॥ २५४
मोधिबजाकों॥ नासतीकमनमैंनकाकों॥ तुरसीइहतामसीस्वभाव॥ व
ऊबुडेयासमइमभावै॥ ८॥ साषी॥ निर्मलचितइंडी अचल मन असंगी
ग॥ तुरसीयहजानिसुभावसत॥ हियदषीहै सोइ॥ ९॥ स्वारथबस्तस
नसंग्रहै॥ त्यागनैगासिंगार॥ तुरसीएरजकेगुना॥ बरनेंपंचप्रकार॥ १०॥
वादकलहबधबचनां॥ पंचमसोकदुसोइ॥ तुरसीएतमकेगुनां॥ बूझै
बिरलाकोइ॥ ११॥ दयाधर्मसरधाक्रिया॥ पंचमसतिकिहूंजांनि॥ तुरसी
एसतकेगुनां॥ संतनिकीयेप्रवांनि॥ १२॥ लषचौरासीघटनिमैं॥ आतम
निजएक॥ तुरसीऐसेदेषिये॥ तहांसाविकीबिबेक॥ १३॥ तुरसीघटनि
निनिनिहै॥ नहीं निनिबिचिनांन॥ ऐसेंदेषैं आतमा॥ सोसाविकीजुग्यांन॥ १४॥
तुरसीसाविकज्ञानबिन॥ मिटैनमनकौंमैल॥ राजसतामसइग्यांनमैं॥ यहचि
तपकरैफैल॥ १५॥ तुरसीन्यारीन्यारीआतमा॥ न्यारीन्यारीदेह॥ न्यारेन्यारेदेषि
ये॥ राजसग्यानजुयह॥ १६॥ तुरसीप्रतिमादिकनिकौं॥ करिपूजैनगवांन॥ स्थि
रकौंजांनैनहीं॥ यहतामसीजुग्यांन॥ १७॥ तुरसीब्रह्मादिकअस्तेनलौं॥ लघुदी
रघसबदेह॥ इनहींकौंआतमकहैं॥ तामसज्ञानजुएह॥ १८॥ विषिआदिइंदीस
कल॥ तिनतिनउपजैग्यांन॥ तुरसीपुनिप्रकासहोइ॥ तहांसाविकबरतमांन
॥ १९॥ तुरसीत्रिस्नालोभअसांतिता॥ परधनहरनजुप्रीति॥ जहांजहांराजस
बढ़ै तहांतहांएबिपरीति॥ २०॥ अधिकप्रवरतिबांछा॥ अधिक॥ अधिकबिषै
सोंप्रेह॥ तुरसीरजगुनहर्षिनयै॥ पुनिउपजिईजुयेह॥ २१॥ चौपई॥ अति
तमअतितअबिचार॥ अतितमहांमोहबिस्तार॥ अतितअसावधानीजहां॥
तुरसीअतितितामसतहां॥ २२॥ साषी॥ तुरसीतमस्वमिलतयामनकौं॥ ऐसें
जानैंसोइ॥ सुनिरूपसूझैनहीं॥ सक्तितसीवांकोइ॥ २३॥ तुरसीतमसुमिलत
यामनकौं॥ बकस्योजोनांयेह॥ यहतजिबेनजिबेजुयहै॥ यहबुधिनांहीदेह

नयानकहोइ॥ २५॥ आपआपकौंनिरदैरै॥ महामन्त्रलौंसोइ॥ तुरसीसमिताकी
सुगति॥ समझैएकतहोइ॥ २६॥ सांचिरूपसाखिकीमन॥ रहितकालिमाकांम
गुरबंबेकप्रसादतैं॥ होइरचारतरांम॥ २७॥ तुरसीदुषसुषसंपतिबिपतिकीम
हांज्वालासोइ॥ सुधसाखिकीमनकैं॥ आंचसपरसनहोइ॥ २८॥ संगादिमांहि
असंगनिति॥ आसककबहूंनहोइ॥ तुरसीऐसाहैकोऊ॥ सुसाखिाकरताजोइ॥
२९॥ तुरसीफलहीकारतै॥ करमनिमैंगलतांन॥ रातिदिवसकीयोकरै॥ राजस
करताजान॥ ३०॥ मगनमहागढहकूपमैं॥ नहीसंतसनमांन॥ सगतिनावबूडैन
ही॥ सुराजसकरताजांन॥ ३१॥ ग्यानरहितकारजकरै॥ उरअंधकारउपाइ॥
तिरनगतिसमझैनकबू॥ तमकरतासुकहाइ॥ ३२॥ तुरसीसतसरधाअमल
सबीतमस्योंहोइ॥ रजुकर्मनिअधर्मजुतम॥ एसरधाबिधिजोइ॥ ३३॥ तुरसीजो
कर्मनिपरै॥ अबरनआलरांम॥ तहांजाइकैंगंदैरै॥ सोसाबगसरधानाम॥ ३४
निमषकूंएकटरैनही॥ ताधोनस्योंजुसोइ॥ तुरसीउपसुषमांनिकैं॥ सानगस
रधाजोइ॥ ३५॥ तुरसीसरधासाखगी॥ संतजननकीमाइ॥ पालेपोषेप्रीतिस्यों॥
अमृतपानकराइ॥ ३६॥ चौपई॥ सुतजननीलौंजननिजगावै॥ पालेपोषैपुष्टि
करावै॥ आस्तधर्मउतपनकैरैसोइ॥ जैसेबकस्योंनंगनहोइ॥ ३७॥ तुरसीजि
नकेसरधानांही॥ सुधसाखिगीयातनमांही॥ तिनपैंनजननगतिहोइनांही॥
कैसीहूंबिधिकरकुजआही॥ ३८॥ साखी॥ तुरसीबस्तीत्यागिकैं॥ बनमैंब
सैअसंग॥ साखिगबासाजांनियह॥ रजतमग्रामकुसंग॥ ३९॥ फलबांछाप
रहरिकैरै॥ सुतकरमनकौंसंत॥ सोकमसाखगजानकुं॥ आदिमधिफुनिअं
त॥ तास्योंसगतिउदैजूहोइ॥ जनममरनकीहेत॥ तुरसीतापरसादतें॥ नेटियै
जुनयावंत॥ ४०॥ अतिहीउतमकर्मका॥ फलसाखगसुधजानि॥ तुरसीताफल
सगतिहै॥ सगतिब्रह्मफलमांनि॥ ४१॥ पहलैंहीफलबांछिकैं॥ करमनिकरैजु
कोइ॥ तुरसीराजसकरमवो॥ संतबषांनैसोइ॥ ४२॥ चौपई॥ तुरसीउरधरिहिं
सांअंध॥ करमकरैकोऊमतिमंद॥ ताकरमकेंकीयेयहजांन॥ चल्योरसातलि
जाइअग्यांन॥ ४३॥ साखी॥

सतस्वप स्त्रजनैन दित॥समनसदाञ्जोन त्ररसी॥
णफ़लवुग निस्वैन कुशवान ४४ सा त्विकस्वुपञ्जास
॥वितराजस॥वि॥बद्याजान॥ञ्रज्ञाननत्रनपननया सास्वप
ससमान ४५ त्ररसीसतञ्जारपद कुरमदजससाड स्तुल
सुक्तञ्जरुस्वुपकरन नदानकेनपनाकोड ४६ त्ररसीधान
सीगञ्जादिर रसनाकनक्नोग सहाराजसीञ्जारन न
पजावनस्यपराग ४७ दिसाप्याउनपनदाड कुर॰कलप
नामुष त्ररसञ्जिस्वयञ्जर्थविसदा नामस्त्रञ्जदारनिरुप
धणात्रुरसीत्रिपुगाञ्जदारस सनदीसाड़लीन जालियमा
स्वगवद॥रजनसञ्जुदिदाडवीन धपरजनत्रनपनितान
की॥नसंनमादवमाद त्ररसीसननज्ञानद ज्ञानलघानम
साथि ५० रजपुननेमवनपन नमतदाडछमान सनगु
ननेपाववुद्दि त्रिवुनतिगलवनलान॥५१ रजपदडसृनना
कद्युसमपदईपानात सलजुनपदईस्वर्गद त्ररसीकद
विवार॥५२ त्ररसीसनवअननयथांनपयानकराडना
स्वरदाडकञ्जवनरस्वर्गलाकसनाव ५३ रजवुनवद्दर
रिनगनका वयुविनमईजुबीर नाथरसीसृननाकसेपा
वैमानिथसरीर ५४ जानमपुनषव ननय ननस्यागजुका
शञ्जथमजालिमनपाजिन॰ पसुपर्वाडमोड ५५ ञ्जथम
यांद्दावञ्जभगति मथिसामथिस्थान वनमस्पाउरथनाकम
हिज्ञाग्निदाइयदघान ५६ समरजनमात्रयपुनिका॥क
कछुकीत्याविवार॥त्ररसीनञ्ञापीवरानह ॥ना॥नेन
ञकुंत्रकार॥५७॥निदवयुर॥र रजागुणारमनरनकी॥त्रा
सीन॥त्ररसीएत्रियवसकर रजपुनति निधीत्र॥ीन
॥वायनस्नारतितसा॥पुन ावयनमकन॰ त्ररह॰ सर
तिसां करातिझंकोछार ५५ सनसीतारत

तकेती निअकार तुरसी तीनों लखई सो जन सत जिन सार
[illegible] रज गुन के गुन तीन तुलक प्रथम तन बिंद
दिये नच्यात तत्तर तीन तुरसी जिनि ये वसि कीये ६२ ये
तम के त्रिय लाग लपतिअ निति अस्तु फिता करै तास
को त्याग तुरसी तत्व बेता सोइ ६३ साषी प्रथम सीतल
उसीय सुकच त्रिय तीय सुबंध प्रवांन तुरसी एसत केगु
ना को ऊजा नै जान सुजान ६४ तुरसी बरनै तीनि गुन अ
ष्टादस बिधि सोइ एअष्टादस बासि करै सु जो या सो नल
होइ ६५ तुरसी कहां लोंअ षिये त्रिगुन को बिस्तार का
ल कर्म करता गुफल वर्बिदेस आकार त्रि बिधि ज्ञांनस
रूप त्रि बिधि त्रि बिधसकल संसार जहां लों सुनिये देषि
ये तगुन ते न्यार ६७ इत्यादिक एता वजो सबै गुन म
ईजांन ब्रह्म सिगुरु षमलन पना तुरसी हित अस्थांन ६६ चोप
ई तुरसी इत ब्रह्म सिउत गुरु षजुदो कउमै देत स्पो उपने सो कु
जबरि जीव स्नअन हित होस्आवे तबयुएम ईलल बिया बि
सावे ६७ ॥ अथ सत गुन हष्टि प्रकार विछांन ६ चोपई तुर
सी सत रज तम एतीनि एक अमल हउ नै म तीन तातेसा धक सो
ई करै रज तम मिटि सत गुन बिस्तरै २ साषी रज तम बुधी जग
तम बस सत बुधी को कसाध तुरसी सत मैं सुष घनां रज तम नरै बिषा
द २ रज तम मन ओरज निअंधियारी तामैं उमत फिरैं नर नारी बिन
सात्विक स सिउर जु सोइ तुरसी पंथ बताव को इ ३ पंथन को अना
वइ को ठिक करइ बिचार तुरसी सात्विग वदे बिन रज तम है इन
गार ४ निह संग सोइ संग साधु के सर धद्धी त्रिपाय तुरसी व बसा
त्विगव दे रज तम जाइ बिलाइ ५ प्रथम सात्विग बुद्धि करै वया धरम व
र धार तुरसी असैं होइगा रज तम का परिहार ६ रज तम को परहार न
टे सत गुन केवल होइ तो आगे उरल तसो तन मन रत होइ सोइ ७
सार सार ग्रंथनि आगा है सत संग आदि अति त्रिवा है सत गुर की से
वा नित करै सत गुन बढिर जत मयों मरै ८ निरवार्हि सा सु निरवति प
ष सत गुर ग्यानी क्षग मअगा ध तुरसी एती नोउ र६ है तोर जत मह तिस

नउतपनिहोइमांही॥तुरसीजांनउदेहोइआवे॥तबसतगुनकुछिटकावे
॥१॥रजतमकरमअवासिकेंनिवारे॥सतगुनकर्मनावनउरधारे॥तुरसी
जावतउपजेग्यान॥प्रगटकरनतुरयपदनृबांन॥२॥साषी॥रजगुनतजो
बसेषस्यो॥तमगुनधरेउगा॥३॥तीजेआसनबैसिके॥चौथैरहैसमा॥
॥४॥जोकदाचिरजतमगुनहि॥उलंघिजाइजनकोइ॥वोआगेहूनरपसे
तुरसीसतगुन सोइ॥५॥सतगुनअटकेअनंतमुनि॥दीयेमानिबड़ाइ
रिधिसिधिस्वरगकेसुषिनिमें॥तुरसीरहेलुभाइ॥५॥सातिगसुषमांनि
केंजीव॥अपनोंसीवसुभाव॥तुरसीविसरिगुणबधहोइ॥करैनांनां
जोनिफिरवः॥६॥तुरसीगणपिसनफिरिआवई॥भूपेजुजीवसोइ॥जोसत
तगुनसुषमानिजीय॥अहंजुकरताहोइ॥७॥सतगुनकेजीतविकेंन
हिअगतिकोंउआंन॥केतुरसीनिजनगतिहे॥केनिहकेवलग्यांन॥८॥
कोजुग्यानकामेजुहोइ॥सतगुनकोनिरमल॥तुरसीदासताअंनमे॥
सत्रमित्रसमतूल॥९॥आतमग्यानउदितहोइ॥अंतरजामीरांम॥तुरसी
तबसाविकीहू॥करमनिस्योकाकांम॥१०॥११८॥अथसतरजतमती
नोगुनत्यागप्रकारविधान॥८॥तुरसीतीनोगुणजुए॥मायारचितजु
सोइ॥स्वरनरपसुजीवनिकों॥बंधनरूपीजोइ॥१॥सतमेंरजरजमेंजुतम॥
तममेंसतप्रधानि॥तुरसीतीनोमिलिरहे॥चौथेहिकोंजांनि॥२॥सोत्रिगु
णप्रपंचमई॥निहचैनस्वरजुजानि॥तुरसीनिरगुनज्ञानगहि॥करिजरा
नरभूरानि॥३॥ज्ञानवोषदीगुनविथा॥गुरनयोंवेदसमांन वाकेदरसप
रसतें॥विथाहोइविलीमांन॥४॥त्रयगुनग्यानकोसस्त्रगहि॥गुनत्रमूरसके
हे॥तुरसीगुनत्रमूरकीये॥बकुरिनधरीयेदेह॥५॥वनित्रअपुनिमिश्रि
तकरम॥गुनतिबपाराजितसोइ॥तुरसीतिहूंकोत्यागकोके॥तबनेता
स्योंहोइ॥६॥ततबेलाहीकरैकोऊ॥त्रिगुनकरमकोंत्यागि॥तुरसीओर

तकेतीनिप्रकार तुरसी तीनों लषई सो जन सत जिन सार ॥
॥ दोहा सोरठा ॥ रज गुन के गुन तीन त्रु लक प्रथम तन बिंद
दिये नत्यात तत रतीन तुरसी जि निये बसि कीये ॥ ६१ ॥ ये
तम के त्रिय भाग लपति अनितिअसु फिसा करै तास
को साग तुरसी तत्व बेता सोइ ॥ ६२ ॥ साषी प्रथम सीतल
तृतीय सु कच त्रियतीय सु बंधन वांन तुरसी एसत केगु
ना को ऊजानै जान सुजान ॥ ६३ ॥ तुरसी बरनै तीनि गुन अ
ष्टादस बिधि सोइ ॥ एअष्टादस बासि करै सु जो ग्यासो मन
होइ ॥ ६४ ॥ तुरसी कहां लों अषिये त्रिगुन को बिस्तार का
लकर्म करता जु फल वर्ष बेदसत्र आकार ॥ त्रिबिधि ग्यांनस
रक्ष त्रि बिधि त्रिबिध सकल संसार जहां लों सुनिये देषि
ये त्रिगुन ते न रबार ॥ ६५ ॥ इत्यादिक एना व जो सबै गुनम
ई जांन ब्रह्म निगुरुष मत [illegible] पना तुरसी है तत्र स्यांन ॥ ६६ ॥ चौप
ई तुरसी इत बकति उतत गुरुष जु टोक रमै है तस्यो उपने सो क
जब हि जीव इन अनहित होइ आवै तब गुन एम ई लत बिथा बि
लावै ॥ ६७ ॥ ७७ ॥ अथ सतगुन ह भिप्रकार बिक्षंन ॥ ६ ॥ चौपई तुर
सी सत रज तम एतीनि एक अमल र हुते मतीन तातें साधक सो
ई करै रज तम मिटि सत गुन बिस्तरे ॥ साषी रज तम तुछ जग
तमन बसत बुधी को क साध तुरसी सत मैं सुष घनो रज तम नरे बिषा
द ॥ १ ॥ रज तम मनोरजनि अंधियारी ता मैं भ्रमत फिरैं नरनारी बिन
सात्विक स सिव रजु सोइ तुरसी पंथ बताव कोइ ॥ २ ॥ पंथन को आ
वइ को ठिक करइ बिचार तुरसी सात्विग वटै बिन रजतम है इन
गार ध निह संग सोइ संग छाड़ि के सर धनी लिन पाय तुरसी ठब सा
त्विग वढै रजतम जाहि बिलाइ ॥ प्रथम सात्विग वृद्धि करै वयाध
रक्षर तुरसी असैं होइगा रजतम का परिहार ॥ रजतम
ये सतगुन केवल होइ तो आगैं उरतत सो तनमन रत
सारसार ग्रंथनि आगाहै सत संग अभ्यास त्रिवारे
वानित करै सतगुन बढि रजतम यों मरे ॥ निरवारि
ध सतपुर ग्यानी अगम अगाध तुरसी रती नो ७ रधरै

नउतपनिहोइमांही॥तुरसीज्ञांनउदेहोइआवै॥तबसतगुनकूंछिटकावै
॥१॥रजतमकरमअवासिकैंनिवारै॥सतगुनकमैतावतउरधारै॥तुरसी
जाग्रतउपजेज्ञान॥प्रगटकरनतुरयपदनृबांन॥२॥साषी॥रजगुनतजो
वसेषस्यौ॥तमगुनधरैउगाइ॥तीजेआसनबैसिकैं॥चौथैंरहैसमाइ
॥३॥जोकदाचिरजतमगुनहि॥उलंघिजाइगनकोइ॥तौआगेहूलरपसै
तुरसीसतगुनसोइ॥४॥सतगुनअटकेअनंतमुनि॥दीयेमानिबढाइ
रिधिसिधिसुरगकेसुषिनिमैं॥तुरसीरहेलुभाइ॥५॥साबिगसुषमांनि
कैंजीव॥अपनौंसीवसुत्ताव॥तुरसीबिसरिगुणबंधहोइ॥करैनांनां
जोनिफिराव॥६॥तुरसीगणपिसनफिरिआवई॥मूयेजुजीवैसोइ॥जोस
तगुनसुषमानिजीय॥अहंजुकरताहोइ॥७॥सतगुनकेजीतविकैंन
हिजुगतिकौंउआंन॥केतुरसीनिजनगतिहै॥केनिहकेवलज्ञांन॥८॥
कोजुज्ञानकामैजुहोइ॥सतगुनकोनिरमूल॥तुरसीदासतामैं॥
सत्रमित्रसमतूल॥९॥आतमज्ञानउदितहोइ॥अंतरजामीरंम॥तुरसी
तबसाषिकीहू॥करमनिस्यौकाकांम॥१०॥११८॥आपसतरजतमती
नौगुनत्यागप्रकारविधान॥८॥तुरसीतीनौगुणजुण॥मायारचितजु
सोइ॥स्वरनरपसुजीवनिकौं॥बंधनरूपीजोइ॥१॥सबमैंअरजमैंजुतम॥
तममैंसतप्रधानि॥तुरसीतीनौमिलिरहे॥चौथेहिकौंजानि॥२॥सोत्रिगु
णपंचमईनिदचैनस्वरजुजानि॥तुरसीनिरगुनज्ञानमांहि॥करिजरा
नरमूरांनि॥अज्ञानवोषदीगुनबिथा॥गुरनयौवेदसमांन वाकेदरसप
रसतै॥बिथाहोइबिलीमांन॥६॥नृगुनज्ञानकोसत्रुमांहि॥गुननृमूरनके
ह॥तुरसीगुननृमूरकीये॥बऊरिनधरीयदेह॥५॥उनिअपुनिमिथ्रि
वकरम॥गुननिउपारजितसोइ॥तुरसीनिर्हकौत्यागाकोऊ॥तबनेत
स्योंहोइ॥६॥तत्वनेलाही॥करैकोऊ॥त्रिगुनकरमकौंत्यागि॥तुरसीओर

तकेती लिप्रकार तुरसी तीनों लपई सो जन सत लिलसार ॥ [illegible] ॥ रजगुनके गुन तीन तुलक प्रथम ततन बिंद
दिये नयात ततत रलीन तुरसी जि नियेबसि कीये ॥ ८१ ॥ दे
तमके त्रिय भाग ॥ तपति अनितिअस्त फिला करैतास
कोसाग तुरसी तलबेतासोइ ॥ ८२ ॥ साषी ॥ प्रथम सीतल
उतीयसुकच त्रियतीयसुबंधवांन ॥ तुरसी एसतकेगु
ना कोऊजानैजान सुजान ॥ ८३ ॥ तुरसी बरनेती नि गुन अ
ष्टादसा बिधि सोइ ॥ एअष्टादसा बसि करे सुजोया सो मत
होइ ॥ ८४ ॥ तुरसी कहां लों अषिये त्रिगुनको बिस्तार ॥ का
लकर्म करता जु फल ॥ ब्रह्मविदेसअकार ॥ त्रि बिधि ज्ञांनस
रूप त्रिबिधि त्रि बिधसकल संसार ॥ जहां लों सु निये देषि
ये त्रिगुन ते नरबार ॥ ८५ ॥ इत्यादिक एना वजो सवै गुनम
ई जांन ॥ उक्ति जुरुष म [illegible] पना तुरसी दे तअस्थांन ॥ ८६ ॥ चोप
ई तुरसी इतवक्ति उतत गुरुषजु दोक जमे देतस्पो उपनेसोऊ
जबरिजीवइन अनहितदो इन्आवै तब गुण मई जगविद्या बि
लावै ॥ ८७ ॥ ॥ अथ सतगुन रूप प्रकार बिधांन ॥ ८ ॥ चोपई तुर
सी सत रज तम ए तीनि ॥ एकत्र मत लरे उनेमलीन तातेसाधकसो
ईकरै रजतम मिटि सतगुन बिस्तरै ॥ साषी ॥ रजतम तुर्सी जग
तसब सत बुधी कोक साध तुरसी सत मैं सुषघना रजतम नरे बिषा
द ॥ १ ॥ रजतम मनोरज निअंधियारी ता मैं जमत फिरैं नरनारी बिन
सात्विक ससिउदजु सोइ तुरसी पंथ बताव को इ ॥ २ ॥ पंथनको अप
बइको ठिक करइ बिचार तुरसी सात्विग वढे बिन रजतम होइ न
गार ॥ ३ ॥ निह संग होइ संग छाडके सरधा ही तिजपाय तुरसी वबसा
त्विगवढे रजतम जाइ बिलाइ ॥ ४ ॥ प्रथम सात्विग बुद्धि करै वयाधरम उ
रधार तुरसी असें होइगा रजतम का परिहार ॥ ५ ॥ रजतम कोपरहारन
ये सतगुन के बल होइ तो आगे उरलतसो तनमन रत होइ सोइ ॥ ७ ॥ दे
सारसार ग्रंथनि अगाहे सतसंग अभ्यास ति त्रिबाहे सतगुर की से
वा नित करै सतगुन बढि रजतम ये मरै ॥ ८ ॥ निरबर्ति लाघ निरवर्ति सा
ध सतगुर ग्यानी अगम अगाध तुरसी एती नेउ रषै तो रजतम हटतिस

नउतपनि होइ माही॥ तुरसी मांन उदै होइ आवे॥ तबसतगुन कूं छिटकावे
॥१॥ रजतम करम अवसि कें निवारै॥ सतगुन कर्म ताव तउर धारै॥ तुरसी
जाव तउपजे ग्यान॥ घगट करन तुरयपद न्रबांन॥२॥ साषी॥ रजगुन तजो
बसेष स्यों॥ तमगुन धरे उगाइ॥ तीजे आसन बेसि कें॥ चौथे रहे समाइ॥
॥३॥ जो कदाचि रजतम गुन हिं॥ उलंघि जाइ जनकोइ॥ तो आगै हू नरपस्यो
तुरसी सतगुन सोइ॥४॥ सतगुन घटके अनंत मुनि॥ दीये मानि बढाइ॥
रिधि सिधि सुरग के सुषि निमें॥ तुरसी रहे लुभाइ॥५॥ साबिगस्त्र षमानि
कै जीव॥ अपनो सीव सुभाव॥ तुरसी बिसरि गुण बध होइ॥ करै नांनां
जोनि फिरवाः॥६॥ तुरसी गए पि मन फिरि आवई॥ मूपे जु गोवै सोइ॥ जो सत
गुन सुष मानि जीय॥ अहं जु करता होइ॥७॥ सतगुन के जीतवि कें॥ न
हि आगति कों उआंन॥ के तुरसी निजतगति है॥ के निह केवल तांन॥८॥
कोजु ग्यानकों मेजु होइ॥ सतगुन को निरमूल॥ तुरसी दायसता ईनमें॥
सत्र मित्र समतूल॥९॥ आतम ग्यान उदित होइ॥ अंतरजामी रांम॥ तुरसी
तब साखि की हुं॥ करमनि स्यौं का कांम॥१०॥११८॥ अथ सतरजतमती
नौ गुन त्याग प्रकार बिधान॥ ॥८॥ तुरसी तीनो गुण जु ए॥ माया रचि जु
सोइ॥ स्वरन रपसु जीव निकें॥ बंधन रूपी जोइ॥ ॥सत में रज रज मे जु तम॥
तम में सत प्रधानि॥ तुरसी तीनों मिलि रहे॥ चौथे हि कें जानि॥१॥ ये त्रिगु
ण बे पंच मगें निद्वैन स्वरजु जांनि॥ तुरसी निरगुन ग्यान गहि॥ करि जरा
तर मूरानि॥२॥ ग्यांन वेषदी गुन बिथा॥ गुरमयो बेद समांन वाकेर रसप
रस तें॥ बिथा होइ रविली मांन॥३॥ त्रगुन ग्यांन कों सत्र गहि॥ गुन त्रमूरन के
है॥ तुरसी गुन न्रमूर कीये॥ बहुरि न धरीये देह॥४॥ उनि अपुनि मिथि
व करम॥ गुन निव पार जित सोइ॥ तुरसी तिहूं कों त्याग कोऊं तब बेत
स्यों होइ॥५॥ तब ते बाह्यी करै कोऊ॥ त्रिगुन करम कौं त्यागि॥ तुरसी ओर
जीय इनमहीं॥ रहे पर संपरत्यागि॥६॥ जनम मरन नव बीज ए॥ गुन बितक

मरनहूं इनतैं होइ २:

रमसुनाय ॥ अरघउरधमधिलोकमैं ॥ तुरसी करहिं उगाव ॥ ८ ॥ प्रथमेचित
उतियेजु गुन ॥ त्रितीये इंद्री आंन ॥ अहं मम तआदिजु सकल ॥ ए सबु बीजब
षांन ॥ ९ ॥ तुरसी इनबै जनम होइं ॥ जनम मरन सब बीजए ॥ संत निबारने सोइ
॥ १० ॥ तुरसी बरने तीनि गुन ततज्ञांन ब्योपाइ ॥ आगे बरनौं अवस्था ॥ सुन
ऊं संत चित लाइ ॥ ११ ॥ १२ ॥ अथ त्रिगुण अवस्था लिषीते ॥ ए ॥ त्रिगुण
की त्रिय अवस्थां ताताके अस्थांन ॥ तुरसी निनि निनि बरनऊं ॥ उरधरि गु
रकौ ग्यांन ॥ १ ॥ जाग्रत राजा जु गुपिता ॥ रज गुन रवि तहां देव ॥ चबु अस्थानि
आदिजु सकल इंद्री आदि जेव ॥ आपने अपने सुष निमित लागि रही
बिषसेव ॥ तुरसी यह जाग्रति बिसरै ॥ तौ स्वप्न हूं न दरसैव ॥ २ ॥ सुपन एजामि
धु सुतापति ॥ सत गुण स्वर तहां बंद्रा ॥ सुकंठ स्थानि आदि दिसौं दिस ॥ नरमे
मन सामंद्रा ॥ सुन अरु जनु षसुष कहूं ॥ कहूं मुक्ता कहूं फंद ॥ तुरसी यह स्वप्न
उलंघई ॥ तौ उपजै सुष आनंद ॥ ३ ॥ सुषपति राजा रुद्र तहां ॥ तम गुण गुण
तहीं जोइ ॥ देव दहन बुधि धान तहां ॥ रहे प्राण मन सोइ ॥ तामधि ब्यापक बास
नां ॥ ताकौं नंग न होइ ॥ तुरसी यह सुषपति सही ॥ पै लंघै बिरला कोइ ॥ ४ ॥ तुर
सी चतुर दस इंद्री जु ॥ जो जो बिति करंहि ॥ पुनि जाग्रत अवस्था ये ह ॥ सब स
धू ज कहांहि ॥ ५ ॥ पंद्रह कौ परिसो वई ॥ नीतत कौ जागे ॥ स्वप्न अवस्था जांनि
यहां कहूं मूकै कहूं नागै ॥ ६ ॥ बुधि आदि इंद्री सकल ॥ अतिं बलीन होइ ज्यो
हि सरीर की सुधि नां रहै ॥ पुनि सुषपति ये आहि ॥ अज्ञांन बीज रहि बोक
रे ॥ सो धोंन से जु नांहि ॥ तुरसी ज्ञान बैराग बिन ॥ अरथ इतो ही आहि ॥ ७ ॥ रज
जाग्रति सत गुण स्वप्न ॥ तामस सुषपति सोइ ॥ तुरसी ए त्रिय अवस्था
तिहूं गुणनि की जोइ ॥ ८ ॥ त्रिगुणकनि त्रिय अवस्था ॥ जये बुद्धि बासनां
सोइ ॥ तुरसी ए त्रिय परहरौ ॥ तौ चौथे गामि होइ ॥ ९ ॥ १३ ॥ अथ मतांतर
एक एक अवस्था मधि त्रिधा प्रकार लिषीते ॥ १ ॥ जाग्रत में जाग्रति
रहै कमी रहन नहीं देइ ॥ तुरसी बस्त जो है जसो ॥ ताहि परषि षरी करि

जीवकों नानाबिधिकीत्रास। तुरसीबेहदअस्मैपद॥ परमजोतिपरका
स॥१०॥ बेहदपदबेगमघर॥ तहांनसेकोऊजान॥ तुरसीएकराजीरह
केवलसुषकीषांनि॥११॥ चौपई॥ सुनअसुनकरमएदोइ॥ तहांग
एगजिनसकैकोइ॥ तुरसीऐसाबेहदथान॥ तहांअनंदीघुरैंनिसांन॥
॥१२॥ साषी॥ आनंदकेबाजेबाजहि॥ होमरहोजैजैकार॥ तहांतोनीग
लतानसये॥ तुरसीतिहूंकीरीमभार॥१३॥१६०॥ अथतुरीयाअतीत
षाव॥१४॥ तुरसीतिहूंकीअपेव्याकरीहे॥ तुरसीअपेख्यातीनि॥ घनदू
दलोगन्योंकरै॥ जोलौंपंचमपदलीयानचीन्हि॥१॥ तुरसीपंचमपदचीन्हसा
जुजिनि॥ तहांकेयेसहनांन॥ सेदासेदबिसरिगए॥ रहीनबाजीशान॥२
यहकंचनयहकाचमणि॥ ग्राहजिअग्राहजिसोइ॥ तुरसीतुरीयाअती
तकैइहैबुधिरहीनकोइ॥३॥ कोऊओमानजुकरै॥ अंवरिकोपकुपा
इ॥ कोउबिबिधिसुषपायकें॥ बेगावईबुलाइ॥ संतरहूंनपरएकरसा॥
हरषैनकहूंबिसमाइ॥ तुरसीतुरीयाअतीतके॥ येलछिनओपाइ॥५॥
कोरीकुंजरअरिजुमिति॥ थावरजंगमजांन॥ तुरसीकहूंनबिषमता॥
सबस्योंएकसमान॥६॥ देषनवालोरामहै॥ जोदेषियेसुरांम॥ ऐसीद्रष्टि
उदैसई॥ फटिगईबिषयाबांम॥ अरधउरधदसोंदिशा॥ तेपेताकोना
मं॥ तुरसीओरनसासई॥ जनकोंआवौंजाम॥८॥१६॥१७७॥ अथ
तोनकोयारिकरना॥ कोहिस्यचि॥ कोटिज्ञानगुन
ग्रथ॥ तुरसीजबलग
गुनकोटि
कचतुराई॥ कोटिक
टिका॥
कोटिकअरथसुन
नामकहोवही॥
गौं॥
तोनसमान

तेऊ॥४॥ तुरसी बस्त अवस्था नासै अंबुर॥ सीपी रूपा जेह॥ जहां अवसे संबंधकं तरमहे
हि॥ जाग्रति स्वप्न पेह॥१॥ ज्यों कोऊ भारी मस्त बसि॥ महामत होइ जाइ॥ तास्त्र न
गिनै न अस्तनक हु॥ सका धरी उमाइ॥ दिन हाका नि सकारिघा॥ हरिगुर नैवि
स एह॥ तुरसी जाग्रति स्वपति इहै॥ जहां अवसें जु बिहाय॥ अब स्वामें स्वप्न
गुर मिल्या॥ लम्या सुना वन गपांन॥ तुरसी सिषके अवनमें॥ स्वप्न जाग्रति एजा
न॥४॥ तुरसी स्वप्नामें स्वप्न॥ ज्यों जल मांभवरा॥ एक त्रयजे एक अस्त हूं हिं॥
स्वप्न स्वप्न एअग॥५॥ तुरसी जो जो रूप जु देषिये॥ स्वप्नामें धरि देह॥ जागे तैं
सुधि ना रहै॥ स्वप्न सुषपति एह॥६॥ तुरसी सुषपति तो गुनी वृत्ति लै समान्या
नि॥ सोई वृत्ति लै कैं जगा॥ यह सुषपति जाग्रति जानि॥७॥ तुरसी वृत्ति जो
गुनी॥ हु षक है सबको इ॥ सोई सो लै कैं जगैं॥ यह स्वपति स्वप्न जो इ॥८॥
तुरसी गाढ मूढ होइ सोवही॥ सुषदुष जानै नाहि॥ कहो जाग्रति सोवत
कम्या॥ इहै सुषपति सुप्ना आहि॥९॥ ॥१८३॥ अथ चतुरथ तुरीया निधान॥१॥
तिहूं अवस्था के परे॥ है तुरीया अवस्थान॥ तुरसी जहां जे बोडल ना॥ कहें बो
अविश्वासा ना॥१॥ कहैं पंडित कहे कबि जाना॥ कहै सकल संसार॥ तुरसी
रहै ठाबि तुरी घर॥ सोई संत जन सार॥२॥ अवस्था नमारे ता सकों॥ तुरयो क
ब कू आइ॥ तिहूं अवस्था त्यागि कैं॥ जो तुरयपद रह्या समाइ॥३॥ जाग्रति स्व
प्न सुषोपती॥ तिहू अवस्था मांहि॥ तुरसी पासि दै काल की॥ तासौं गोलि नाहिं॥४॥
जो जन बिसरे जु गति स्यौं॥ जाग्रति की व्यौहार॥ तौ स्वप्न हू स्वप्न भ्रम मिटै॥ सु
षपति होइ संचार॥ सुषपति हूं आगैं चलै॥ त्रिगुण त्याग बिचार॥ तुरसी
दास तुरयपद मही॥ मिलि होइ एकंकार॥५॥ तिहूं अवस्था कैं परै॥ जिनि
कीयो आराम॥ तुरसी जीवन मुक्ति सो॥ कोमन व्यापे काम॥६॥ जावत
तिहूं अवस्था मही॥ है जन को आराम॥ तुरसी तावत काल रिपु॥ निश्चो प
रैमाम॥७॥ हदबे हद के अंत पर॥ समझे कोऊ सुजान॥ तुरसी हद बियु
अवस्था॥ बेहद तुरी प्रवान॥८॥
कोम॥ जावत काल बिघन करें॥ तावत हद आराम॥९॥

जीवकौं नाना बिधिकी त्रास ॥ तुरसी बेहद्द अभैपद ॥ परम जोति परका
स ॥ १० ॥ बेहद पद बेगम घर ॥ तहां न जै कोऊ जान ॥ तुरसी एकराजी रहा
केवल सुष की षानि ॥ ११ ॥ चौपई ॥ सुन असुन करम ए दोइ ॥ तहां ग
ए गजि न सकै कोइ ॥ तुरसी ऐसा बेहद थान ॥ तहां अनंदी घुरै निसान ॥
॥ १२ ॥ साषी ॥ आनंद के बाजे बाजहिं ॥ होम रहो जे जे कार ॥ तहां सो नागा
लतान नये ॥ तुरसी तिहूं की रीमकार ॥ १ ॥ १२० ॥ अथ तुरीया अतीत
भाव ॥ १३ ॥ तुरसी तिहूं की अपे ब्याकरी है ॥ तुरसी अपे ब्याती नि ॥ घनद
द लोगन्यों करै ॥ जो लौं पंचम पद लीया न चीन्हि ॥ १ ॥ तुरसी पंचम पद चीन्हा
जु जिनि ॥ तहां के ये सहनान ॥ भेदाभेद बिसरि गए ॥ रहो न बाजी ग्यान ॥ २
यद कंचन यदका चमणि ॥ ग्राह जि अयाह जि सोइ ॥ तुरसी तुरीया अती
त कौ इहै बुधि रहीन कोइ ॥ ३ ॥ कोऊ श्रीमान जु करै ॥ अंवरि को पऊपा
इ ॥ कोउ बिबिधि सुष पाय कें ॥ बेगा वई बुलाइ ॥ संत इहूं न पर एक रस ॥
हरष न कहूं बिसमाइ ॥ तुरसी तुरीया अतीत के ॥ ये लछिन ब्योपाइ ॥ ४ ॥
ग कीरी कुंजर अरि जु मिति ॥ थावर जंम जान ॥ तुरसी कहूं न बिषमता ॥
सब स्यों एक समान ॥ पाइ घन वालौं राम है ॥ जो देषिये सु राम ॥ ऐसी द्रिष्टि
उदै भई ॥ फटि गई बिषया बाम ॥ अरध उरध दसौं दिसा ॥ तेपे ताको ना
म ॥ तुरसी और न भासई ॥ जन कौं आगें जाम ॥ ६ ॥ १२१ ॥ १४० ॥ अथ
लो लकौ पारिकरण ॥ २० ॥ कोटि सूरातन कोऊ सूचि ॥ कोटि ग्यान गुन
ग्रथ ॥ तुरसी जब लग लो नहीं ॥ तब लग सबै बिरथा ॥ १ ॥ कोटिक गुन कोटि
क चतुराई ॥ कोटिक बात बनावहीं ॥ कोटिक गान तान तुक कोटिक ॥
कोटिक अरथ सुनावहीं ॥ कोटिक पुरान पढै जु बहु बिधि कें ॥ पंडित
नाम कहावहीं ॥ तुरसी एक लो नर बिआगें ॥ नति ... ऐं छिपि जावहीं
॥ २ ॥ लो न समान न पाय कोऊ ॥ मोह सम नि न अर
लंक कोऊ ॥ क्रोध सम नि न रिपि आन ॥
निद हियो सकल

कूडै॥२८॥सतसंतोषकासतन

॥१७॥साषी॥नहीसुषसंसारमैंसंतोषकेसमान॥सोधन
सीहमकोंदीया॥सतगुरक्रिपानिधान॥२०॥देषयासंतोषधन॥अपने
हीउरमाश॥तुरसीपालीपलककों॥अबकोंजावेजाश॥२१॥लालचिकीग
तिओरहै॥निरलोभकीगतिओर॥लालचीजुनीचेनये॥निरलोभनसकल
सिरमोर॥२२॥लालचिअरुनिरलोभनविवि॥इतौफरकपरवानि॥तुर
सीजेतौरविरजनि॥पारसपथरजानि॥२३॥११५८०॥अथबानक
कोपरिकरन॥१॥जिनबोलनकीसकानही॥कोटेबचनकठोर॥तुर
सीवैपरतषिपसू॥संतजनाकेचोर॥२॥संतबचनमानैनही॥अपनीक
हैबनाइ॥तुरसीअैसेपतितनसौं॥बकिबकिमरेबलाइ॥३॥जेनिंदावै
हरिजनजे॥जगुस्यौंतिनकातोरि॥तिनहूंस्योंमांडेघुदी॥अधहरयमीघोर
॥४॥आपउनैचषिअधरौ॥औरनस्योंकहैकान॥तुरसीअैसेपसू॥तिस्यों॥
कबूनबोलेपान॥४॥प्रातबचनजुउचरे॥सांझलौंननिरबाहि॥मिथ्या
बादीमनमुषी॥अैसेबहुजगमांही॥५॥जिनकेबोलेबंधनही॥त्रयति
नहूंकाबेष॥इहीबिकलजुहीरहे॥तुरसीबिसरिबिबेक॥६॥कारबा
चनिकलंकबिना॥बैरागीहोइकोय॥तुरसीकोटिधर्मगहै॥बाहूनीति
जुसोय॥७॥कारबाचनिकलंकबिना॥बैरागीनलओर॥घटदरसणमें
कोऊहोऊ॥ताहितीबिलोकनहीठोर॥८॥जिनकेबोलेबंदनही॥साच
नहिरदामंझारि॥तेआदरयोंहीगये॥जवमजूवालोंहारि॥९॥जिनकेबो

रनीकेमांही॥ तुरसीकरनी ह्वै यों न्यारा॥ जाकरनीमें अहंहै बिकारा॥ ७५॥

॥ साषी॥ कहा रहनी कथनी करत॥ अपजे अहंहै बिकार॥ सोकरनीकथनी नकछू॥ तुरसीमाथेमारि॥ ७६॥ कहांकरनी कथनी करत॥ जो अपजे बलअभिमान॥ तुरसीसोकरनी नकछू॥ कथनी हूं नरमजांन॥ ७७॥ तुरसी केतेकहिजाय॥ केतेकहै गे आहू॥ कितेनी अजहूं कहै वहै॥ पेरहनीर हानजाय॥ ७८॥ रहनीरहानजावई॥ कहणीसबकूं सियार॥ तुरसीर हणीबाहिरा॥ क्यों पावैकरतार॥ ८०॥ रहनीमांहीरांमहै॥ कहनीमां हिकछूनांहि॥ तुरसीरहनीदिढगहो॥ मतनलोकदवीमांहि॥ ८१॥ र हनेसिरषीबातहै॥ कहनेसिरषीनांहि॥ कहैकहैकरतामिलै॥ तोक बिताबहुकलिमांहि॥ ८२॥ रहैकहैगपांनीसोई॥ रहैकहैसोईसंत॥ र हैकहैसोईपंडिता॥ जेटेपदनगावंत॥ ८३॥ करनीपूरा चाहिये॥ कथ नीहे हमहोइ॥ तुरसीहरिदरबारमें॥ दादिलहेगासोइ॥ ८४॥ १६८४॥

॥ अथकांमांगको अंग कहमा॥ ॥ तुरसीतीनीलोकमें॥ अबिद्याकी मूर॥ एकअधिकेलोकामहो॥ रहौसकलघटपूर॥ १॥ जावदेषुतिहूंलो कमें॥ मलिनकरमबिस्तार॥ तुरसीतासबहिनकों॥ कारनकांमबि कार॥ २॥ कांमसमांनकोऊनही॥ बलीजुयासंसार॥ तुरसीसकलजी वजीतेजु जिहि॥ मारिमिलायेछार॥ ३॥ चौपई॥ कालानुषयाकुटि लजुकेरा॥ जिहिंजीवकरिराष्यासबचेरा॥ तुरसीउबरैबिनसक्याकौ इ॥ बिनसतगुरकीक्रिपासोइ॥ ४॥ साषी॥ सतगुरुहूंसरनैकोककै दांचिकोमरतहोइ॥ महाबज्रपापीजुसो॥ दिनकामूलाजोइ॥ ५॥ स तगुरसरनैआइकैं॥ जोनरत्तुगतैकांम॥ तुरसीलोकपलोकमें॥ कहूंनलहैबिश्रांम॥ ६॥ कहायुत्तपरगटकह्यो॥ कहोदेसपरदेस॥ तुर सीत्तुगतेकांमना॥ तजवैगुरकैनेस॥ ७॥ गुरलाजेत्ताजेसुबुधि॥ ग्यांन दीयबुझिजाइ॥ जबनरत्तुगवैकांमना॥ तबेइतीहोइआइ॥ ८॥ कांमीनं डोकुबधिका॥ सुबुधिनकरैप्रवेस॥ तुरसीक्रमकमावते॥ गिनेनदेस

बिदेस ॥ ९ ॥ तुरसी नहीं तन मन मही ॥ न्है ते करम कमाइ ॥ विष अंम्र
त करि करि पीवै ॥ पापी मुगध सिहाइ ॥ १० ॥ कुबुधि न बूटै मन की ॥
तन मैं अति आनंद ॥ देषि कनक अरु कांमनी ॥ भ्रमि गि चलै नर अंध
॥ ११ ॥ भ्रमि गि चलै नर अंध है ॥ समझै नहीं सुजांन ॥ तुरसी ज्ञांनै कांम्रै
कांमी कुटिल कुजांन ॥ १२ ॥ कांमी कुता लौं फिरै ॥ तकत बिरांनी
नारि ॥ तुरसी तुछि सुष कारनै ॥ करत रतन तन छार ॥ १३ ॥ रतन अ
मोलिक देह यह ॥ कै कर सटै जु सोइ ॥ तुरसी षलक षोवत फिरै ॥ पर ति
या रत होइ ॥ १४ ॥ नारी की सोभा कहै ॥ निलज नर अज्ञांन ॥ छिनक बि
षै सुष कारनै ॥ बरनैं सिस समांन ॥ १५ ॥ अलप सुष मैं अंध नरा रहे
अंनदी होइ ॥ ज्यौं नु युंगफण की छाया ॥ मीडक बैगा सोइ ॥ १६ ॥ इषई
कौं सुष करि लीया ॥ छिनक सुष कै काज ॥ तुरसी ज्यौं ग्रम रषै धो त
नक षुआ से षाज ॥ १७ ॥ तुरसी राति राति दिवस कूं फुनि बैही कुमसत
नोग ॥ तिनि हीं फिरि फिरि नोगवत ॥ लजत न अंध लोग ॥ १८ ॥ वै ही क
लि आज हूं वैही ॥ रोगि रै नि वेहा नोग ॥ तुरसी अैसे कसरज सुष निसग
फिरि फिरि करहि संजोग ॥ १९ ॥ चौपई ॥ तुरसी नर नारी की देह ॥ दे
षत नीकी निदानै षेह ॥ तास्यौं लपटि लपटि अभिमांनी ॥ कित जनम षो
इ गये अज्ञांनी ॥ २० ॥ देषौ महाकरर जयह काया ॥ तापरि चित्र अनेक
बनाया ॥ तुरसी तास्यौं मोहित होइ ॥ बकृत गमे ही पतन षोइ ॥ २१ ॥
साषी ॥ तुरसी पाहन पाहन स्यौं घसैं ॥ लोह लोह स्यौं घसाइ ॥ यौं त्रि
य पुरुष दोउ घसैं ॥ तन को काम कै चाइ ॥ २२ ॥ एक बूंद सुष मैं निलज
त्रिया पुरुष मिलि दोइ ॥ तुरसी मोहित होय कैं ॥ चलै रतन तन षोइ ॥
॥ २३ ॥ रसनां पोषै आपनी ॥ छिनक कांम रस काज ॥ तुरसी कामी बापु
रा ए एक रैं ईलाज ॥ २४ ॥ तुरसी कांमी सौं कहै ॥ कहि रैन दै या रांम

९९ तुरसी कहा जागत सोवत कहो॥ जो न बराबैनारि॥ कंचन मई जो॥
गासो ऐसे और का चउत हारि॥ ९६॥ जाके उरम धिना जिदें॥ त्रियकटाछिके
बांन॥ तुरसी या त्रिये लोकमें॥ सो अती तप्रवांन॥ ९७॥ कांम जो हित रांम ही
तजे॥ तजे त्रिगुनकौ नेह॥ तुरसी चौथा पदमही॥ मिलि जन होइ बिदेह॥
९८॥ चौपई॥ निज रहोइ कांम हिजु मिटावै॥ निरमल रांम नांम ल्यौ लावै॥
तुरसी ऐसा कोऊ होइ॥ जग मैं जोगी कहियै सोइ॥ ९९॥ साषी॥ जा सउ
दर उतपन नया॥ तासपटं तर जोइ॥ तुरसी जेती देषीये॥ माता आपनी सो
इ॥ १००॥ चौपई॥ प्रथम नारि पीछें महतारी॥ देषी यह देरां न बिचारी॥
तुरसी जिन अजुगति यह देषी॥ ते गहत जिन गाये बबेकी॥ १०१॥ यह अ
जुगतिया जगति कैं मांही॥ ताहि जु कोऊ समझे नांही॥ तुरसी जिनि उलटी
यह जांनी॥ तिन हूं सकल त्रिया माता मांनी॥ १०२॥ साषी॥ कर जोरे सब
कांमनी॥ पेषें पिता समांन॥ जब जन रत जया रांम स्यौं॥ तुरसी गहि गुर ग्यां
न॥ १०३॥ ग्यांन गस्यो गुरदेव का॥ उरत जिगया अनंग॥ तुरसी जन निरमल
भया॥ पाया सीतल संग॥ १०४॥ सीतल संग छिमा पाईया॥ संत जनौं का सो
इ॥ तुरसी ता प्रसाद स्यौं॥ रहे जु पानी होइ॥ १०५॥ चौपई॥ सतगुर अरु सं
तन की बांनी॥ अति सीतल अति अमल जु जांनी॥ तुरसी जिवि यह सी चित
लाइ॥ तिनकी अनंग अगनि लगाइ सिराइ॥ १०६॥ साषी॥ तुरसी कनक तन ये
ते॥ जिन कांम कीया निरमूर॥ रांम नाम स्यौं रचि रहे॥ रोम रोम सब पूर॥
१०७॥ स्वप्नं तर हूं न सरवइ॥ च ढो गगन घर बिंद॥ तुरसी ताके मुष प
रि॥ मानौं चमकत चंद॥ १०८॥ चौपई॥ कोटिक चंद इक त्र जु कीजे॥ ता
साधू की सोभा दीजे॥ तुरसी तऊ न तुलई तास॥ जो नाद बिंद ले चढा अ
कास॥ १०९॥ साषी॥ तिलक उरध जिनके चढे॥ उनै नाद अरु बिंद॥ ता ज
न कौं मुष निरषतें॥ उपजे अति आनंद॥ ११०॥ नाद बिंद दोउ अग्र धरि॥ ग
या गगन घर सोइ॥ तुरसी तास अतीत की॥ सो ना कौ नहीं कोइ॥ १११॥ तु
रसी सो ना कौं कोऊ नही॥ तीनौं लोक मझारि॥ जो यह जद बिसरि गया॥

कोनपुरुष कोनारि॥१९॥ अंट धूंम आगिलागि होइ रह्यो। कोगम अंपदम जि
ति तुरसी हमतास्यों कहैं। रुनै श्रीगजअतीत॥ [illegible] १७३६॥ अथ मन
कापरकरनः॥ सहजमांहि सोई मिलै। जे कोई मन [illegible] तुरसीपंथ अ
सहजकै पल नरिधरै बपाय॥१॥ सहजसीप [illegible] तो मन [illegible] होइ॥ तु
रसीपानी असहजकैा जो पर सेकव [illegible] माइ॥२॥ चौपई॥ सहजमहतम
अकोउ कहैं। सहजस्वाताय हि बिरला लहै॥ तुरसी सहजस्वा [illegible]
तो परपंच बपल नरिगंनै॥३॥ सहजस [illegible] सब सतानिक [illegible] सहज [illegible]
हि सब निसु घल है। सहज आहि [illegible] सहज [illegible]
पाप॥४॥ निहचरंग रहै न्यारा हरवा॥ [illegible] तुरसी [illegible]
ब सहजसमां है। तब अैसा होइ कैंद रसांहै॥ [illegible] तुरसी [illegible] थारे
बन की॥ मन लावै आराम सहजै सुरति [illegible] रंग॥६
सहजसहजमन रहैगा॥ [illegible] तुरसी [illegible] सहजकी॥ व्या८
कुलता बिसराइ॥७॥ आकुलव्या कुल [illegible] सहज [illegible]
जो पंछी पिंजर बुटै। दह दिस कहै [illegible] सहज [illegible]
मत जिम बनही जाइ॥ तुरसी [illegible] सहज
समां नां मन रहै। वौ अस सहजकी आ [illegible] सहज [illegible]
मनकी त्यागि॥१०॥ चौपई॥ सहजन [illegible] नि यारे। [illegible]
परानि टोरै॥ तुरसी जहां सहजकी [illegible] देखियाई॥११॥ तुर
सी जाजारि दिसधि सहजु होइ [illegible] जो कोइ॥ निरलेपी निरच
य कचित॥ आदि अंबिड बारहे निति॥१२॥ अथ हुदेषो सहजकी बडाई। देषि अ
सहज जुगया पुलाइ॥ मानु अमल पकास्यो जाइ॥ तुरसी मलनर जनी को म
न॥१३॥ साषी॥ तरंग मिटी निहचरंग नयौ॥ [illegible] चंचल [illegible] तुरसी जब
मनसहजघरि॥ आमन की यो आनि॥१४॥ १७५०॥ अथ सीलकौ परकरन

९५ ॥ तुरसी कहा जागत सोवत कहा ॥ जो न बुराबै नारि ॥ के चरन मई जो-
गा सोई ॥ औरका चउन हारि ॥ ९६ ॥ जाके उरमधि नांनि दैं ॥ त्रिये कटाछि के
बांन ॥ तुरसी या त्रिये लोक में ॥ सो अतीत परवांन ॥ ९७ ॥ कांम जाहि तिरांम ही
न जे ॥ तजे त्रिगुन कौ तेद ॥ तुरसी चौथा पद मही ॥ मिलि जन होइ बिदेह ॥
९८ ॥ चौपई ॥ निज रहे होइ कांम कहि जु मिटावै ॥ निरमल रांम नांम स्यौ लावै ॥
तुरसी ऐसा कोऊ होइ ॥ जग मैं जोगी कहिये सोइ ॥ ९९ ॥ साषी ॥ जा सत
दर उतपन्न भया ॥ तास पटंतर जोइ ॥ तुरसी जेती देषीये ॥ माता आपनी सो
इ ॥ १०० ॥ चौपई ॥ प्रथम नारियी है महतारी ॥ देषौ यह है रांन बिचारी ॥
तुरसी जिन अजुगा वियह देषी ॥ ते गहत जि बन गाये बबेकी ॥ १०१ ॥ यह अ
जुगति या जगति कै मांही ॥ नाहि जु कोऊ समझै नांही ॥ तुरसी जिनि उलटी
यह जांनी ॥ तिन हूं सकल त्रिया मातां मांनी ॥ १०२ ॥ साषी ॥ कर जोरे सब
कांमनी ॥ पेषै पिता समांन ॥ जब जन रत भया रांम स्यौं ॥ तुरसी गहि गुर ग्यां
न ॥ १०३ ॥ ग्यांन गह्या गुरदेव का ॥ उरत जिग्यांन्न नंग ॥ तुरसी जन निरमल
भया ॥ पाया सीतल संग ॥ १०४ ॥ सीतल संग हम पाईया ॥ संत जनौं का सो
इ ॥ तुरसी ता परसाद स्यौं ॥ रहे जू पानी होइ ॥ १०५ ॥ चौपई ॥ सत गुर अरु सं
तन की बांनी ॥ अति सीतल अति अमल जु जांनी ॥ तुरसी जिवियर सीचिय
ताइ ॥ तिन की अनंग अगनि गई सिराइ ॥ १०६ ॥ साषी ॥ तुरसी कुवकुवतनये
ते ॥ जिन कांम कीया निरमूर ॥ रांम नाम स्यौं रचि रहे ॥ रोम रोम स बपूर ॥
१०७ ॥ स्वप्नंतर हूं न सरवई ॥ चढै गगन निधरि बिंद ॥ तुरसी ताके मुषप
रि मानौं चमकत चंद ॥ १०८ ॥ चौपई ॥ कोटिक चंद इकत्र जु कीजे ॥ ता
साधू की सोभा दीजे ॥ तुरसी तऊ न तुलई तासा ॥ जो नांद बिंद ले चढ्या आ
कास ॥ १०९ ॥ साषी ॥ तिलक उरध जिनके चढे ॥ उनै नांद अरु बिंद ॥ ताज
नकौं मुष निरषतें ॥ उपजे अति आनंद ॥ ११० ॥ नांद बिंद दोउ अग्य धरि ॥ ग
या गगन घर सोइ ॥ तुरसी तास अतीत की ॥ सो ना कौ नहीं कोइ ॥ १११ ॥ तु
रसी सोना कौं कोऊ नही ॥ तीनौं लोक मझारि ॥ जो यह भेद बिसरि गया ॥

मांनन कोइ ॥ १ ॥ सकल सास्त्र स्मृति कहै ॥ तिनिक है संतस जांन ॥ तुरसी सील सुधर मिसमि ॥ नहीं धर्म कोऊ आन ॥ २ ॥ चौपई ॥ सील धर्म सब ही को ठौरै ॥ सील बिना सब लागै फीकौ ॥ तुरसी जो मुष सुंदर होइ ॥ नासा बिना न सोभ तसोइ ॥ ३ ॥ साषी ॥ नासा बिना न सोभइ ॥ सुंदर नर को मुष ॥ तुरसी ऐसे सील बिन ॥ सब ही धर्म निरूष ॥ ४ ॥ एकादसी जु आदि दै ॥ जावंते पुन्न तसार ॥ तुरसी तासब ही नि मैं ॥ सील सु ब्रत अधिकार ॥ ५ ॥ सील बिना एकादसी ॥ सील बिना तप दांन ॥ तुरसी ऐसे जानहूं ॥ जूं कूकल बिन कांन ॥ ६ ॥ एक आंतक नके बांनस्यौं ॥ नजी नजा फिरै सोइ ॥ तुरसी तानी ति कौं नजि ॥ अ ते नया कहि कोइ ॥ ७ ॥ तुरसी सति अन सील ब्रत ॥ दया अरु प्रति पालि ॥ सब ब्रत नि मैं सार ए ॥ संत निलीये निरवालि ॥ ८ ॥ चौपई ॥ तामै सील धरम अधिकाई ॥ दया सचि ता तास सहाई ॥ तुरसी जा उर उदये एह ॥ सुफल रूप है तिन की देह ॥ ९ ॥ साषी ॥ तुरसी सील सु धर्म की ॥ महिमा बरनी न जाइ ॥ ता हि जप तप जग्य आदि ब्रत ॥ रहै सकल सिर नाइ ॥ १० ॥ जहां सील संतोष तहां ॥ जहां संतोष तहां सुष ॥ तुरसी जहां सुष सब न हूं ॥ देषिये न दुष सुष ॥ ११ ॥ दुष मुष ना हि न देषिये ॥ बहिर औ धीरज ध्यांन ॥ तुरसी सील संतोष तहां ॥ तहां तहां एस हनांन ॥ १२ ॥ चौपई ॥ तुरसी सील संतोष जु सो ऊ ॥ त्रिबिधि बिमर दहर दीप गदो ऊ ॥ जा उरि उदित नये दैन्याइ ॥ धनि धनि ता नर की काइ ॥ १३ ॥ अलप अन्न अलप दी जु पानी ॥ अलप ही निंद्रा अलप दी बांनी ॥ तुरसी ऐसी जुगति गहावै ॥ सोई सुष न लै सील को पावै ॥ १४ ॥ तुरसी नैनानी वै राषै नित ॥ त्रियै देषि न ही चलावै चित ॥ आदि अंत ऐसै जु रहावै ॥ सोई सुष न लै सील को पावै ॥ १५ ॥ तुरसी जेती क त्रिय देषिय न जग मांही ॥ लघु दीरघ मधि जहां तहां ही ॥ माता बहन पुत्री जु अवै ॥ सो सुष न लैं सील को पावै ॥ १६ ॥ साषी ॥ पतिब्रता कं स्यौं अधिक ॥ सदा सील ब्रत नारि ॥ तुरसी वा न्नु गहै ॥ अलप सुष ॥ वा सुष अक्षै मुरारि ॥ १७ ॥ सिंह हरी गिर तैं परै ॥ नावै बहौ सिर लोह ॥ ए जु त्रास न लहै ॥ ज्यौ ॥ पे सील न

मतिहोइ॥१८॥अरु मति दृहोंन दीनावहें॥जलकंजरमारे धाइ॥ एकु नास
रहे प्रीतिस्यों पेसी सगयों नसुहाइ॥१९॥सुषसंपैधनजाकसब मायावि
श्वाबीस॥तुरसीतनमनतबलगौं सीलरहैसदसीस॥२०॥सीलगयेसब
गतहै॥ष्यानध्यानबैराग॥सीलरहैसबरहैतहै॥तुरसीमस्तकभाग॥२१॥
१७७१॥अथ साचकौ परिकरन॥२॥तुरसीताबेषीजीबेदमत॥ताबेबि
विसुधिकहैसास्त्रहैंधिपुरान॥ताबेमतहिकूं लोकके येनहीकोऊसाच
समांन॥१॥साधकहैं सास्त्रकहैं॥फुनि सुमृति कहैं सोइ॥तुरसी सुरनरसबक
हैं साचसमान नकोइ॥२॥साचामघसबत्यरो है तुमिरोवनिसाय॥तुरसी
ताहिगहिसंतजन॥तरिंगए नवपार॥३॥तुरसीनवजलतिस्यो जु चाहिए
वैसाचीनावसजोइ॥मिथ्याके नैरैनचढि॥बकतकबूडेलोइ॥४॥तुरसी
मिथ्यानेरोजरजरौ॥अतिंतफूटीआहि॥जानिआंनिचढोको काअध
बिचिबोरैताहि॥५॥मिथ्यामलमहाअतिबुरौ॥बस्त्रलेपलमिजाइ॥तुरस
कौंहीनछूटहै॥जौलौंनसतिजलन्हाइ॥६॥तुरसीसततजलन्हायेबिना
मधपबेसजुकरिरह्यो॥मीयेहूंछूटेनांहि॥७॥तुरसीसतिताम्रसिसतिताटि
सतितासबेत्रहोइ॥रोमरोमसबतनबसै॥तबसतितासतिजोइ॥८॥चौ
पई॥बिनबेबेकउचरैसतिबांनी॥ताहुमांहि मेरैकब्रपांनी॥तुरसीबबेक
हीसौंबोले॥ताहिकरमकंटिकनहीजोले॥९॥साषी॥तुरसीकहिबौसाच
कौ॥कठिनषंडेकीधार॥साचकहैंजनतबैरे॥कौपकरैसंसार॥१०॥साचकहि
यासंटजन॥बिरलेयासंसार॥कूरजावतजगतकौ॥तगताबहेवअपार
॥११॥मिथ्याबादीमनमुषी॥मनरंजनसंसार॥तुरसीतेसमसाचकौं॥मरमतत
पैलगार॥१२॥कालामुषउनअचनिका॥जिनकैमुखसीपेह॥दंतकरिकरिउदर
उनैरे॥ताहीसाचकौलेह॥तुरसीदेजगपरहिगे॥तामैंसहीसंदेह॥साधकहैं
सास्त्रकहैं॥सबकौनिश्चैएह॥१३॥तुरसीश्रीसेत्र नती॥छंदीअजितअग्यो
न॥नरकजातनासिरसहै॥मोहिपिमकीआन॥१४॥तुरसीऐसेजडनिकौं
मुखिनकौं संगसोइ॥सपनंतरकूनकीजीए॥जागृतकीकहैकोइ॥१५॥

सोनन कोइ ॥ ६ ॥ सकल सास्त्र स्मृति कहै सु निकहै संत सुजान तुरसी सील
सुधरम सम नही धर्म को कु आन ॥ ७ ॥ चौपई ॥ सील धर्म सब ही को ठीकै
सील बिना सब लागै फीको तुरसी जो मुष सुंदर होइ नासा बिना असोभ
न सोइ ॥ ३ ॥ साषी ॥ नासा बिना न सोभइ सुंदर नर को मुष तुरसी ऐसे
सील बिन सब ही धर्म निरुष ॥ ४ ॥ एकादसी जु आदि दे जावे तसु ब्रत सार
तुरसी ता सब नही निमै सील सुब्रत अधिकार ॥ ५ ॥ सील बिना एकादसी
सील बिना तप दान तुरसी ऐसे जान हुं ज्युं कुंडल बिन कांन ॥ ६ ॥ एक
अनक नके बांनसौं नजी नजी फिरै सोइ तुरसी ता नीति कौ नजि अ
नेतनया कृष्ट को इ ॥ ७ ॥ तुरसी सति ब्रत सील ब्रत दया ब्रत प्रतिपालि स
ब ब्रत निमै सारए संत निली ये निरवालि ॥ ८ ॥ चौपई ॥ ता मैं सील धरम अ
धिकाई दया सचि ता ता सस हाई तुरसी जा उर उदये एह सुफल रूप
है तिन की देह ॥ ९ ॥ साषी ॥ तुरसी सील सुधर्म की महिमा बरनी न जाइ
ता हि जप तप जग्य आदि ब्रत रहे सकल सिर नाइ ॥ १० ॥ जहां सील संतोष
तहां जहां संतोष तहां सुष तुरसी जहां सुष सब नहू देषिये न दुष सु
ष ॥ ११ ॥ दुष मुष नाहिन देषिये बहिर सौ धीरज थांन ॥ तुरसी सील सं
तोष तहां तहां तहां एमहनीन ॥ १२ ॥ चौपई ॥ तुरसी सील संतोष जु सो
ऊ त्रिबिधि तिमर हर दीपग दोऊ जा उरि उदित नये है आइ धनि धं
नि ता नर की काइ ॥ १३ ॥ अलप अन्न अलप दी जु पानी अलप ही निंद्रा
अलप ही बानी तुरसी ऐसी जुगति गहावे सोई सुष न लैं सील को पा
वे ॥ १४ ॥ तुरसी नैना नीवे राषे नित त्रिये देषि नही चलावे चित आदि अ
न्ति ऐसें जु रहावै सोई सुष न लैं सील को पावे ॥ १५ ॥ तुरसी जेती कत्रिय
देषिय न जग मांही लघु दीरघ मधि जहां तहां ही माता बहन पुत्री जु अ
वे सो सुष न लैं सील को पावे ॥ १६ ॥ साषी ॥ पतिब्रता हूं सौं अधिक सदा सी
ल ब्रत नारि तुरसी वा न्रुपतै अलप सुष वा सुष अखै मुरारि ॥ १७ ॥ सिंह
हरो गिर तै परो भावै बहो सिर लोह ए जु नासन न ही ऐसो पे सील न

गमतिहोइ॥१८॥भ्रमनिदहोंनदीयांबहैं॥जलकंजरमारेंधाइ॥एजुनास
सहेपीतिसेंपेसीलगायोंनसुहाइ॥१९॥मुषसंयेधनजाऊसब॥मायाबि
सवाबीस॥तुरसीतनमनतबलगो॥सीलरहेंदसदसीस॥२०॥सीलगयेसब
जातहे॥ग्यानध्यानबेराग॥सीलरहैसबरहैवहे॥तुरसीमस्तमाग॥२१॥
१७७१॥अथसाचकोपरिकरनः॥रुद्या॥तुरसीतावेषोजोबेदमत॥तावेबि
बिधुधिकहेंसास्त्रकहैंधिग्रंन॥तावेमततिहूंलोकको॥पैनहीकोऊसाच
समान॥१॥साधकहेंसास्त्रकहैं॥फुनिसुमृतिकहैंसो॥२॥तुरसीसुरनरसबक
है॥साचसमाननकोइ॥३॥साचामघसबगपैरों॥हैजुमिरेवनिसार॥तुरसी
ताहिगहिसंतजन॥उतरिगएभवपार॥३॥तुरसीनवजलतिर्योजुवाहिए
वेसाचीनावसंजोइ॥मिथ्याकेमेरेनचढि॥बहुतकबूडेलोइ॥४॥तुरसी
मिथ्यानेरोजरजरो॥अतिंतफूटोश्रांहि॥जानिश्रजांनिचढोकोऊ॥अध
बिचिबोरैताहि॥५॥मिथ्यामलमहां॥अतिबुरो॥वस्त्रलेपलमिजाय॥तुरस
कौंहीनछूटई॥जोलोंनसतिजलन्हाइ॥६॥तुरसीसततताजलन्हायेबिनां
मथिपवेसजुकरिरहो॥सोयेहूंछूटेनांहि॥७॥तुरसीसतितामुषिसतितारिदै
सतितासबैश्रहोइ॥रोमरोमसबतनबसे॥ववसतितासतिजोइ॥८॥चौप
यई॥बिनबबेकउचरैसतिबांनी॥ताहूंमांहिमरैकछूपांनी॥तुरसीबबेक
हीस्योंबोले॥ताहिकरमकेटिकनहीजोखे॥९॥साषी॥तुरसीकहिबोसाच
को॥कठिनषंडेकीधार॥साचकहैंजनउबैं॥कोप्यकरैसंसार॥१०॥साचकहि
यासतजन॥बिरलेयासंसार॥कूवरंजावनजगतकों॥तगतावहोवनपार
॥११॥मिथ्याबादीमनमुषी॥मनरंजनसंसार॥तुरसीतेसबसाचकों॥मरमनल
पैलमार॥१२॥कालामुषउनभ्रवनिका॥जिनकेम्हहीनेह॥संतकारिकरिउदर
उनरे॥नाहीसाचकोलेह॥तुरसीदोजगपरहिगे॥तासेंनहीसंदेह॥साचेधकैते
सास्त्रकहें॥सबकोंनिश्चोएह॥१३॥तुरसीश्रीसत्रन्हती॥

साचरूपसुधिकोनही कहोंआइकहांजोहि कहांकरनीहेमकरतहैं त
नमनआत्ममोहि १६ कामलपटकुबुधीकुटिल कुमारगारते तेधोंसा
चहीकाकरें बिषयारसिमाते १७ पषापषीतेजातजो सरमासरम
सोइ रूपकाचसुषसंग्रहे साचपदारथषोइ ॥१८॥ चौपई ॥ तुरसीसाच
सबनिसोंन्यारा कहावरनकहांबूढाबारा कहांदीरघकहांसुषलमांन
बिनसमरथगुरकौंकंनजांन ॥१९॥ साषी ॥ तुरसीसाचेगुरबिनां साचा
मारगसोइ अरुसाचीसंगतिबिनां पाइबेसककोइ ॥२०॥ चौपई ॥
तुरसीसाचसोईनलजांने कीयाकोंकरेजुकोने अनकीयाअनथापादेव
ताकीकरेअषंडितसेव ॥२१॥ साषी ॥ तुरसीकीयाकोंकानेकरे अनकी
याउरधारि साचरूपसीवांनयह वाहिलेजुनीकेनिरवारि २२ तुरसी
साचएकअुबसहै मिथ्यातीनोंदेह तातीनोंकोत्यागकरि वचुरथवा
वैसेह २३ तुरसीइहेसाचआकासवत चिदघनआतमराम औरघट
वतमिथ्याजगत उतपतिषपतिकोधाम २४ तुरसीउपजेबिनसई सोतौ
साचनहोइ साचसुथिरअषिरब्रह्म संतबषानेसोइ ॥२५॥ चौपई
तुरसीइहेसाचसुरतिसमदविनकहां इहैसाचसुधसंतबिलहा [illegible]
धजीवसाचहिकाजाने वकरूधवाएकाहितानें ॥२६॥ साषी ॥ तुरसीपंडि
तसोईजपरगहे साचरूपकसिलेइ कौमक्रोधबहेकारमें पलनरिया
वनदेइ २७ महासुअचिरकोअरथ जिनिजिनिकरेबषांन तुरसीके
बलुकवैनही सोपंडितपरवांन ॥२८॥ हीदूमुसलमानकी राषीनाषेना
हि तुरसीज्योंहैत्योंकहे सोसाचाजुगमांहि ॥२९॥ षुसामदीबोलैनही
काहूकीकरिआस सदानिरासीतावरत तुरसीस्वासेस्वास ३० मुषा
मिथ्यानाषेनही गाहेरहेव्रतएह तुरसीनिसिदिनपीविस्यों रामनामरस
चरेह ३१ तुरसीमिथ्यातावलग जावदचितमैंआन रामनामबिसरा
इकैं नज्योंकरैबिषयान ३२ तुरसीएकबिषयाअस्थूलवत इकअ
तिसूक्ष्मसोइ सकलमिथ्याकेमूलए गातबिनसुकतिनहोइ ३३ ५

॥चौपई॥सकल मिथ्या निरमल होइ नासै॥ सो पूरन आइ साच प्रकासै.तु
रसी मुकति हीन मैं सोइ॥ तब निःसंसा नहीं कोइ॥४४॥ १८०५॥ अथ
नरम बिधुंस को परिकरन॥२३॥ तुरसी अचरज एक अनूप है। देषि उप
जै है रान॥ संत सजीव निछाडि कैं॥ परतछि पूजै पाषान॥१॥ परतछि पूजें
पाषान कों। करि करि बहुत पियार॥ जिन प्राण पिंड जीव दीया॥ सो प्रभु
धरा बिसारि॥२॥ बन मंदिर मैं रमि रहा॥ अलष निरंजन देव॥ तुरसी ता
हि बिसारि कर हिं कवन की सेव॥३॥ तुरसी दास त्रियै लोक मैं। एप्रति
मा तत सार॥ एक सांई एक संत जन॥ परमित एब कुंपार॥४॥ तुरसी दास त्रि
य लोक मैं॥ प्रतिमा प्रभु को नाम॥ नाम निरंजन निरमला॥ ता हित जो तजो बा
म॥५॥ मूरति मैं अमूरति बसै॥ अमल आतमा राम॥ तुरसी नरम बिसराइ के
वाही कौ लैं नाम॥६॥ तुरसी ताही कों भरम माहि॥ उलटि किन सेवौ औसैं ज्यूं मू
रति पाषान॥ जगत जन सेवै तैसैं॥७॥ तुरसी यह धा जगत की॥ जल पषान के
मांहि॥ जेरा ते अरि चितरां मस्यो॥ ते रचित होत नाहि॥८॥ तुरसी जिन पाई जु
वै॥ सुष समुद्र की सीर॥ ते न हित जिय हकों पीवै। यह छुत्रि वह हां सीर॥९॥
अष्ट धात कौ सुरगढि॥ अध दीयो उन माना॥ तुरसी सो इह हां क्यों रचे। जिन दे
खो सति मांन॥१०॥ रचियेसो कैसे रचै॥ जिन अरचित लीया उरलाइ॥ तुरसी
दास ही रा अछित॥ कंकर लेइ बलाइ॥११॥ जो थिर कों थिर सेवई॥ तौ अथि
रक बहुत न होइ॥ तुरसी अथिर कों न जे। तौ अथिर हो वै सोइ॥१२॥ अरचित
आगहि अषंड पद॥ घट मैं रहै समाइ॥ तुरसी ता प्रभु के अछित. बाहरि च्यों
बलाइ॥१३॥ चौपई॥ बाहरि न्यौ बलाइ है भारी॥ हम पाए घट मांहि मुरारी.।
तुरसी घट तजि बाहरि गए. तिन के काज कछु नहि भए॥१४॥ साषी॥ ताव
त कारिज नासरै॥ जावत यह अज्ञान. चित्रकार तजि चित्र कों। करि पूजे त
गवांन॥१५॥ चौपई॥ तुरसी सब चित्र का चितेरन हारा॥ निरंतरि रहिय ॥५
राजु न्यारा॥ चित्र ही सों लागो सब कोइ॥

तुरसी है है रानी यह। अदभूद सो जिय मांहि। जिहि सिरजे ता हित न जै
रक्तां पूजन जांहि॥ १७॥ परपद कों लषि ना सकैं। जब सकरम की वोट
तुरसी तरम ही होइ रह्यो। जीव सीव बिचि कोट॥ १८॥ बाहरि दंतव नांइ
कैं। बैग मन फेलाइ। तुरसी षीली षलक सब। तिहि सेवा पतियाइ॥ १९
तव उज्वल करि उदक कर। मन ही को तिमां कांम। इ ह्सि स्वाइ हिं वंदगी
तुरसी रिझै न रांम॥ २०॥ न्हावै धोवै नेम स्यों। बरत नि बाहै वोर। जिन्ह कर
नी कूलषि षमिटै। त है न हीं सीसो ठोर॥ २१॥ मन चित मन साधु धन ही त
न मजे का होइ। कोग दिन प्ररिघोइ ए। तकन उजल होइ॥ २२॥ निंदा करि को
उमति गिनैं। हम कहें सरोतर बात। तन मजे मन मल मिटै। तौ जल चर
नित ही न्हात॥ २३॥ तुरसी जावत सुबहंदी नही। तावत सुजन सरीर। मा
वै सदा बिधि जुगति स्यों। मलि मलि न्हावै नीर॥ २४॥ जल मंजे तन मलमि
टै। मन मल मिटै न नाइ। तुरसी मन मल तब मिटै। जब नांव नीर मैं न्हाइ॥ २
५॥ तुरसी गंग अस्नान करि। फूलि जवै वो कोइ। कांम क्रोध मल मिटे
बिनां मुकति न कबहू होइ॥ २६॥ तुरसी इंद्री सुब नई। तो सब स्तुचिया
धी सोइ। तन मन सब पावन नया। किंत करनेर ह्यान कोइ॥ २७॥ अतमआ
चारी सोई। करै ग्यांन आचार। तुरसी क्रोध चंडाल कों। परसैं न दीलगार
॥ २८॥ अरथी ता अरघ निमष मन। इ तउत जांन न देइ। तुरसी राषै नांव मैं।
आचारी सो श्रेय॥ २९॥ मुष मिथ्या नाषै नही। आचारी सो श्रेन। तुरसी मु
ष बक बाद न सुवै। सीतल राषै नैं है॥ अस्तुत गोरते अटकि मन राषै घट
मैं गोइ। तुरसी ग्यांन आचार इह। जानै बिरला कोइ॥ ३०॥ तुरसी धागा वंधए
क ब्रह्म है। व्यापक सब घट मांहि। मणि गण वत नाना जुगत। तहां स्या
ग होइ नांहि। उसैं नि कोति ति नि नितलषै। कर्म न राषै मांहि। तुरसी ग्यांन॥
आचार यह। सब साधू जन कहां हिं॥ ३१॥ तुरसी यह आचार बिधि। बिरला
को कजांन। औरउ पर न्हायो करौ। मिटै न मैल अग्यांन॥ ३२॥ देह हमारै देह

य॥ देवआतमारांम॥ तुरसी ताकौं सेवतैं॥ सिधिहोदिसबकांम॥३३॥ अमलअ
मूरतिआतमा॥ अकलजोतिप्रकास॥ तुरसी रिदमधिराजई॥ सेवाबिधियों
तास॥३४॥ बाहरिजिवहरमुषवक्रतबर॥ पूजेजलगाता॥ अंदरिसेवारांमकी
जबतुरसीराता॥३५॥ मांनसीकसेवाकरै॥ हरिकीरिदास्थांन॥ तुरसीयति
वाप्तगतकी॥ काजांनेजगतअज्ञांन॥३७॥ मानसीकसेवामुनिनउतमआ
षीआदि॥ मंदनागताजीवकौ॥ जौबउथपैताहि॥३८॥ अंतरिसेवानामकी
बाहरिसंतअराध॥ उंनैसेवकलिमहीं॥ तुरसीआगमअगाध॥३९॥ उंनैसे
वमाहीरचे॥ मनकौमैलमिटाइ॥ तुरसीमाचेदासवे॥ परपदबेवेपाइ॥४०॥
दीपगकरीयातावलग॥ जावतरजनीहोइ॥ तुरसीसांनउतये॥ दीपगकरै दे
नकोइ॥४१॥ दीपगकोबलतावलग॥ जावतरजनीरहीछाइ॥ तुरसीसां
नउदैभये॥ दीपगजाइबिलाइ॥४२॥ चौपई॥ दिनमधेदीपगकोपान॥ तुर
सीवलैननिमषपरवांन॥ जहांजहांरजनीजुअंधियारौ॥ तहांतहांदीला
गैप्यारौ॥४३॥ असैसेहीकनिष्टधर्मइतीको॥ तुरसीतावतलागैनीको॥ जाव
उतमधर्मनहोइ॥ जनममरनकौषोवनसोइ॥४४॥ जबउरउतमधर्मप्रकासै
तबकनिष्टसहजहीनासै॥ तुरसीज्यौंआकासकेतारे॥ दिनउदैनयेद्रिष्टिते
न्यारे॥४५॥ साषी॥ उंचौउरउतमधर्म॥ तुरसीनांनसमांन॥ तबदीपगमईधर्म
कौ॥ कछुनचालेपांन॥४६॥ दीपगमईकनिष्टधर्म॥ परतिमारूपीसेव॥ तुरसी
उतमधर्मयह॥ जुनजिबोआतमदेव॥४७॥ उतमधर्मजुगजुगमहीं॥ संतनिकी
येप्रवांन॥ तुरसीकनिष्टथापियो॥ चितवंतकौंअज्ञांन॥४८॥ चितवंतकौ
अज्ञांनर॥ माहांईजुयहटेक॥ तुरसीतहांहीवेस्परे॥ पंडितचतुरअनेक
॥४९॥ चौपई॥ तुरसीपूरनधरमपिछानी॥ नांहीं॥ रहियाघौवौलेहेचरहीमां
ही॥ ज्यौंदादरकंवलकेजुनारि॥ तिदनयायौपाईयारि॥५०॥ साषी॥ तुरसी
है हैरानीज्युयह॥ अतिहीअचिरजयेह॥ देहीदेहीकौंनजै॥ जपैनरांमअदेह
॥५१॥ मिरैषपैसोक्तिवमहैं॥ आपिरआतमरांम॥ तारांमहिआराधिये॥ तुरसी
होइनिहकांम॥५२॥ सूजनहारापूजिये॥ सृजियसपूजिएनांहि॥ तुरसीपू

जनहारापूजें॥पूजनहारेमांहि॥५३॥तुरसीअहपूजाजुबिधि॥अधिकारी
हीमनजांन॥इतरजीवकोंइतननहीं॥जाकेउरअग्यांन॥५४॥तुरसीदेहधा
रीजुतहांलौं॥अबिचारतजीव॥तेत्रमचितहैलेपरिरहे॥सुमरिनसकईसी
व॥५५॥तुरसीकेजंत्रकेऊमंत्रमैं॥केऊबेदंगीकरांहि॥केऊधातपाषंडकी
परेबहावनिमांहि॥५६॥तुरसीकेऊथंभनमोहननिमैं॥केऊओहनजोहि
केऊचाटनिमारननिमैं॥रहेमुगधयोंमोहि॥५७॥तुरसीकहांलोंआषिये
नरमनकोबिस्तार॥जाप्रवतएतावतनहोइ॥परपदमैंपैसार॥५८॥तावैसप
पुरीबसौ॥गृहबनतीरथगांइ॥तावैतुरसीगिरगुहा॥मुकतिनबिनहरि
नांइ॥५९॥तावैअरधऊरधहूंमल॥तावैमधिमुवथांन॥नरमनजीवकहूं
बसौ॥तुरसीतहांबधमांन॥६०॥बकाश्रोताबहरमुष॥जावतनहींबंबे
क॥तुरसीबिषैबिकारतजि॥नजेवहीपदएक॥६१॥बकाश्रोताबहरमुष
मजैनआतमाराम॥तुरसीबहायेनरमकै॥बहेजाहिबेकाम॥६२॥तावैप
ढिपरबीणहोइ॥पंडितबेदपुरांन॥तुरसीतततलषेबिनां॥सबैपचावदि
जांन॥६३॥पंडितकोपंडितपनौं॥तावतहीपरवांन॥तुरसीरागरतजैरहै॥दोष
नधरईकांन॥६४॥बकाचास्यौबेदकौ॥जोपंडितजनहोइ॥रागदोषगतभ्रम
नसे॥साधबकहियेसोइ॥६५॥तुरसीपढिपढिनकुंपंडितभये॥गुनिगुनि
गुनीअपार॥रागदोषगतनयेबिन॥कोऊनउतरयोपार॥६६॥बवषटनव
अष्टदस॥पढिपंडितहोयकोर॥तुरसीब्रह्मलष्यानहीं॥तौबंकधेननयेसोइ
६७॥तुरसीकहांलौंआषिये॥बानीकोबिस्तार॥नूनहोकअषरअधिक
ब्रह्मबिनानबिचार॥६८॥चौपई॥तुरसीछियजुबानीजाकी॥लागीनसुर
तिब्रह्मस्योंताकी॥रातिदिवसकथिबोहीकरै॥करनीकिंचितहूंनचितधरै
॥६९॥साषी॥बरणबरणबिचारकौ॥कीचमांहिअग्यान॥तुरसीपथरहो
इरहे॥लषेनबेहदथान॥७०॥कहैंबरनकरताकीये॥आप्रमकफुनिसोइ
तुरसीयहनरममानिषलु॥रहेकर्मबसिहोइ॥७१॥तुरसीबर्णभेदकरता
कीये॥तौकहियेयेभैंन॥जौगतैलीयेनीकसे॥आपनैआपनैचिहचा॥७२

रसीबरणीश्रमकीवहकर्मे॥रद्याश्रपरछनतेम समापषीमैंपूछिगये॥
मसोनएकोकांम॥७४॥तुरसीकमीकोउबेदबकी॥लोबीबरठजुसोइ ब
णीश्रमसबहीवेध॥श्रोरकहौंकहालौंकोइ॥एकअरधएकउरधफलप
कविरछेफलजोइ॥इनमेंहीआसकहोमरहेरहठघरीलौंहोइ॥७४॥ब
सननोमिकाठयावव॥ब्रिउपवनआकास॥इनपचनमेंपंडिता॥सबको
आहिनिवास॥७५॥सोरठा॥कोअसएकोसत्य॥समझैनहीअज्ञांनन
रा॥एकोबामरयूह॥एकउदरउतपननये॥७६॥साषी॥ऊंचनीचकोकंन
हा॥पेडिवकरीबिचार॥पचतत्वकीदेहसब॥सिरजासिरजनहाथ॥७७॥ऊंच
नीचसबघटनमें॥बरतिरहीएकजोति॥काकौंमिलिएधाइकैं॥काकोकरि
ऐबोति॥७८॥पितासबनिकोएकहै॥एकहीजबनीजोइ॥एकउदरउतप
ननये॥ऊंचनीचसबकोइ॥७९॥दोइकहोमोहिजुकहो॥एकचकाएकमारि
एककुम्हारबासनबिबिधि॥धरेउतारिउतारि॥८०॥पचतत्वगुनवानिका॥
कीयाजुगारासोइ॥ताहीसोंउतपनकीये॥बिधातासबकोम॥८१॥जैसोजै
सोहकवगहो॥तैसीतैसीजांति॥तैसोहीनांवजुनीकसों॥परिगईकर्मनिप
ति॥८२॥बसबसएकोजुहै॥दोइकहैनहिकोइ॥तुरसीदोइदोइदेषियेसु
करनीकेफलसोइ॥८३॥जनमब्राह्मणनयेकानये॥करनीकरतबिडाय
कूरिपिंडपरेहोइगा॥मूढघारकेओतार॥८४॥ज्योंसोवतकोउस्वपनेमेंस
ह्वबिप्रहोइजाइ॥तुरसीमनमेंहरषइ॥बिप्रकहाइकहार॥८५॥जोगिमस्म
इगा॥बिप्रनकहिहैकोइ॥सूद्रसूद्रकहियापिहै॥तुरसीसबहीलोइ॥८६
जनमनीचकहियेनही॥जोकरमउतमहोइ॥तुरसीनीचकरमकरै॥न
कहावैसोइ॥८७॥तुरसीमधिमसकलजग॥उतमनाहीकोम॥उतमकर
चरै॥उतमकहियेसोइ॥८८॥तुरसीऊंचबुधिवैजानीये॥उतमकासहना
नसीललीएरहैं॥बोलैबचनप्रमांन॥८९॥ब्राह्मणछत्रियबेसस्व
मसोइ॥जोअपंडहरिनांवले॥दिलकीदुबधाषोइ॥९०॥तु

॥२४॥ अनपरचै परम नतषै ॥ अषै रूत जे आन ॥ तुरसी उन अंध आगिका
द्दै गाकौ नहवान ॥२५॥ साव हीन हरि जगा विहूं ॥ हीन जगाति ओ होइ ॥ तुरसी
परअन आचरै ॥ तौरि एस नबंधी सोइ ॥२६॥ गिरही होइ बैरागकौ ॥ बानौ भेष
बनाइ ॥ सुजावै संसार पैं ॥ धोइ धोइ पावै पाइ ॥ करनी क्रूरकौ भी अचिंत ॥ बिषै
भुगवै तन अघाइ ॥ तुरसी सो दुष तो गवै ॥ अष्ट बीस मैं जाइ ॥२७॥ चौपई ॥
सनकादिक कौ साजि बनेष ॥ कबहु न सुमिरै राम अलेष ॥ गिरही के घर
मक माइ ॥ सो नर त्याइ रसातलि जाइ ॥२८॥ बैरागी गिरही कत्ताई ॥ अपनै अ-
पनै भेष रहाई ॥ कहूं जत वहू सत मैर है सारा ॥ तुरसी टेक उतरै पारा ॥२९॥ बैरा-
गी गिरही का कोऊ ॥ जत सत धरम गहै दिढ दोऊ ॥ ता समान उतम नहीं औरं ॥
तुरसी तीन लोक सिरमौर ॥३०॥ साषी ॥ बैरागी कौं ता बवैं ॥ वैसो बिभुवन
भेष ॥ राषिबा गोप गिपां नही ॥ सिर प घरी सु निकेस ॥३१॥ पाइ न नीगा सिर न-
गिन कै कदा चिदै टोप ॥ गल मै पहरै गुदडी ॥ कषि बांधै कसि कोप ॥ बिचरै
बिषै बिमलौ तजै ॥ उर धरि ज्ञान अनोप ॥ यह बानौ बैरागकौ ॥ तुरसी पावन रूप
॥३२॥ बैराग दसा व बसौ तहू ॥ जब अनेद साबे धदेह ॥ तुरसी ती नौं त्यागि कैं ॥ चौथे
बास लेइ ॥३३॥ बानौ उजल जगाव कौ ॥ तब मन राज त रांम ॥ तुरसी जब उरस्यो
मिटहिं ॥ कलहि कालिमा कांम ॥३४॥ जगत भेष तब राजई ॥ करै अगाव कौ त्या-
ग ॥ तुरसी जगु त्याग बिना ॥ अंपरहंस उरकारा ॥३५॥ माला मुद्रा तिलक तब ॥
सोह त जन कैं गात ॥ कनक नक बहु फेर गहै ॥ कोभ नि सेगा न सुहात ॥ सत सील
लवा उर धरैं ॥ सुमिरै त्रिभुवन तात ॥ तुरसी ऐसा संत जन ॥ सुष सिंधु मैं समात
॥३६॥ तुरसी नावै भेष होऊं ॥ नावै होक अभेष ॥ जा उर मैं आपा नही ॥ नहमै तैं न
रम रेष ॥ रांम नाम रत होइ रह्या ॥ आदि अविगत विषे ष ॥ तुरसी ऐसा है कोऊ ॥ सो
आतम रूप अलेष ॥३७॥ [illegible] ॥ अथ कुसंग निषेध कौ अंग ॥ [illegible] ॥
तुरसी कबहूं न की जिये ॥ कुसंगी को संग ॥ सजन बिचि अंतर करै ॥ लाय आपनां रंग
॥१॥ तुरसी कबहूं न कीजाये ॥ कुसंगी स्यो प्रीति ॥ सुसंग मांहि बिबि रिह ॥ संतन की
रीति ॥२॥ गिरही होऊं बैराग न ल ॥ अथवा को ऊ होऊं ॥ तुरसी कबहूं न की जि

।कुसंगीस्योमोहा।३।जितीसभाईसंतजन।करेकुसंगजोग।तेवौही अंतरप
रे।अवसितजनमेआस।।४।।हरिजननांमकहाइकैं।मतकोऊकरैकुसंग।।
कीयेकुसंगतहोतहैं।नराविनजनमीतेग।।५।।तुरसीकदाविश्रैसाहूजहोइ।
बाहरिदसाविदेह।।उरकदरजहेइबासना।तऊनकरिएनेह।।६।।कदाचिश्रै
साहूजहोइ।।कोऊकुसंगीजीव।।धरतेअधरअधरफिरै।तऊनताहिधीजीव
।७।।तातैयहगतिसमझिकैं।।सदासुसंगीदास।।तुरसीकबहूंनबैसई।कुसं
गीकेपास।।८।।विषयनिकीसंगतिकीये।।ग्यानध्यांनघटिजाइ।।तुरसीबुधिब
लसबमिटे।।अबुधिमदेहोइआइ।।९।।विषयेनकीसंगतिकीये।।विषहीउ
पजेआइ।।तुरसीमायामोहमैं।।आमजाइविकाइ।।१०।।उरम्यानीउरझिनपरै
विषईनकासंगराह।।तुरसीनासैग्यांनधन।कीयेंकुसंगनेह।।११।।तुरसीतत
हिबिसारिकैं।।तुगतेविषेविकार।।तिनकीसंगतिकोकरै।।वेलेबोवेमंझिधा
र।।१२।।तुरसीततहिबिसारिकैं।रातेआदरनाम।।तिनकीसंगतिकोकरै।।वै
मूरषदेहविहाइ।।१३।।जबजीवकुसंगतिकोंकरै।।तबहीधकानलगाइ।।तर
मद्दूरितयारहे।।तौधकानलागैकाइ।।१४।।पवगपरिवेकोविसन।दीपगद
हनसुनाइ।तुरसीदीवाहोइवही।।तोपतंगपरैकहांजाइ।।१५।।मरनहारहो
इपतंग।।तबनवैजुदीपगपास।।तुरसीहरितयारहै।।तौकबहूंनहोइबि
नास।।१६।।सुसंगतिकोंत्यागिकरि।करैकुसंगतिकोइ।।तौतुरसीवापतंगकी
गतिताहूंकीहोइ।।१७।।बाहरिस्यामलुनरनिको।उरबासनाविकार।तुरसीउ
तेकुसंगसौं।।राषेसिरजनहार।।१८।।बाहरिसीतरिदसौं।दिसाजितदेषेचित
सोइ।तुरसीसकलकुसंगहै।।जावततानननहोइ।।१९।।काहेकोंव्याकरनपढि
श्रमिकरतयहदेह।।एतेहीमेंग्यांनसब।तजिविषयनिकोनेह।।२०।।तुरसीश्रे
सेसगविकौ।।तिनसंगकरिएना।कियहली विषयावदनकरि।फुनिबकुसौं
ललचाहि।।२१।।बिगरिजाइविधिजुगतिसब।कीयोकरायोछार।तुरसीजोसत
संगतजि।नरबकुसौरचैसंसार।।२२।।संसारीहोइसहीस्यौ।तामेंसबैनाहि।तु
रसीजोसतसंगतजि

लुनहिकोइ उतमसंगतजिओकरै कुसंगतिस्यौंसोइ २४ जौजेवकके अ
थमें बिचरैसिंघसुनाइ तौतुरसीपानिपघटै केहरिनांवलजाइ २५
जोहंसामह्हिरांनको बिचरैबगुहंदमांहि तौतुरसीमहिमाघटै हूजैचे
जौमांहि २६ ऐसेंहीसंतसुसीलनर कुसंगतिमेंसोइ तुरसीकबहूंनसो
भई यहबौयौंनहीहोइ २७ पतिबरतापलहूंबजो बिनचारिनिकेंसंग
तुरसीसुसाहहूंफिरै तौलगैकालिमांअंग २८ तुरसीकारीकंबरिकौं
कोऊनकरैअनुराग सबहैरांनीकरिउवैं जौलगैंषासेकौदाग २९ षासा
फुनिषरीसाफसमि साधूउजलअंग तुरसीकारीकंबरी संसारीनिकेंसंग
३० संसारीअरुसाधसंग कदाचिकबहूंहोइ तौतुरसीमेलैनहीं अरुन
लानकहईकोइ ३१ कचेकेलागैअवसि कुसंगतिकौदाग तुरसीपकै
नालगै तऊरहैनिराग ३२ जौकछुकमीहोइकायामें तौलगैकुसंगकौले
स तुरसीनृमलसंतकै करिनसकैपरवेस ३३ कुसंगसंगतें देषलें फटक
रूपरिदमांहि तुरसीहीरारूपमें फांईझांषेनांही ३४ कुसंगतिलिंदैतास
कौं जाकेउरमधिग्यांन तुरसीताकौकाकरै जोहोइरहाप्रवानतांन ३५
कुसंगकौलेतावलग तबलगकाचारंग तुरसीपाकारंगलगै तौकरियकें
नकोऊसंग ३६ कहांकरैकोऊआइकें तासाधूकौंसोइ तुरसीऐसेंहरि
रंगमहीजोरह्यारंगीलाहोइ ३७ रांमनांमरंग्यौरंगे जाकेतनमनप्रांन तु
रसीकबहूंनभेदई तासकुसंगतिबांन ॥३८॥२८२॥ अथसंगतिकौअं
गलिख्यतेः॥३०॥ तुरसीसंगतिसाधकी सावनसिलासमांन जलरूपीहरिनां
महै वहांपषालौपांन १ तुरसीसंगतिसाधकी सुषसमुद्रकौगंग जेजेजी
वआएसरन पकंचाएउसअंग २ तुरसीसंगतिसाधकी सिकलीगरहोसो
इ सबदसुसकलाफेरिकें काटिनिकारैषोइ ३ तुरसीसंगतिसाधकी पार
सकेउनमांन सुधचितहोइपरसेजुतै कनकरूपनयेप्रांन ४ तुरसीसंग
तिसाधकी मांनौंसलितासोइ सुषसमुद्रकौंलेमिलैं दुषसमुद्रकौंषोइ ।
५ तुरसीसंगतिसाधकी मनकूंसजीवनमूर आदिब्याधिरोगनहरै करैतप

टनमूरा॥६॥तुरसीसतिसंगतिबिनां।पारनयाकोकहांहि।सबसंतनिकोसार
यह।सर्बग्रंथनिकेमांहि॥७॥कबतीचपरसौकोकहा।संतजनननिकेपाय॥
तुरसीसोईपावनहोय।गंगाजेहैनाय॥८॥जैसेंजलमिकलिसबगालिनकी॥
कोऊयंगपप्रबेस।तुरसीगंगोदिकनयोंर हौनस्थानस्रहिलेस॥९॥किन
रेष्याकिनधोंसुन्या।पारसनिकटजु लोह।तुरसीपरसिकंचननया।मिटी
नामकुलवोह॥१०॥जौकस्याचियाजीवकी।देहितअपनोंश्रंग॥तुरसीतौनी
कीजिये।संतजनकुंकासंग॥११॥साधूसंगतिपरसतें।फलकुंनकीजेबांनि
तुरसीसंगतिसाधकी।पारब्रह्मसमजांनि॥१२॥मनकीमिटैमलिनता।मन
साहोइअपंग।मांनमिलैनबोनमें।तुरसीसाधूसंग॥१३॥सेसाजनमजनम
का।जुगजुगतकासोइ॥तुरसीनिश्चैनासई।जौसंतसमागमहोइ॥१४॥
तुरसीसतसंगहीजुसारहै।पारकरनतवसिंध॥श्रैसेसतसंगकोमरम॥
काजानैकोकश्रंध॥१५॥चौपई।सतसंगतिबिनकलुषनजाइ॥ लोकै
टिककरौउपाइ॥फिरिश्रायोनवषंडनुवचैन॥सतसंगतिविनिहोइन
चैन॥१६॥सतसंगतिहैसाधनसार।परसिपरसिकेवेनयेपार॥तुरसीपर
सिपरमसतसंगवनमन।श्रमलहोइसबश्रंग॥१७॥साषी॥तुरसीजीवनज
नमका।निफटजुलाहायेह॥सतसंगमाफसनेरहौ।जबलगहैयहदेह॥१८॥
तुरसीदेहधरेजुका।परमलाभयेंजांनि॥सरधास्योंसोईलेजौ॥सतसंगतिरु
चिमांनि॥१९॥तुरसीसतसंगहीलवे।सारनूतसंसार॥सतसंगहीतैंपाईये
महामोक्षिकोद्वार॥२०॥तुरसीसतसंगआपत्रसंग॥उपसमिताउनिसोइ॥
संतोषलौमहामोक्षिके॥द्वारपारलेजोइ॥२१॥तुरसीइनसबहीनिमैं॥सतं
संगहीप्रधान॥जहांसतसंगतहांश्राहियह॥सबकोनिहचौन्योन॥२२॥तुर
सीसोसतसंगधी॥कहांवईजुकोंन॥जाहियरसेपावनहोंहि॥तीनलोकनि
जमौन॥२३॥कांमनक्रोधनलोभउया॥मोहद्रोहकैनांहि॥श्रैसीसंगतिसाधु
की॥सुनीहेमसुरतिनमांहि॥परसतपापजुगनिकी॥तरहराइसबजिजां
हि॥तुरसीतापकनारहै॥श्रतिहीसीतलश्राहि॥२४॥साधसंगजिहांजहे

नवजलपद संसार ताजि हाजपरि बैसि करि॥ तुरसी उतरक्षं पार॥ २५॥
सतसंगति चंदन विरौ बेली सब जुग जोइ॥ तुरसी जे जे लपटिए जाए सुगं
धे सोइ॥ २६॥ चारि बेद चक्र जुग महीं सपत दीप के मांहि॥ तुरसी सतसंग
ति परसि अफल गया कोऊ नांहि॥ २७॥ साधसंगति तहां बास करि आस
एक उर धारि॥ तुरसी तजियो बिंदप दा यलपल बारंबार॥ २८॥ आराधन
करि ब्रह्म कौ करि संतन कौ संग॥ असंगा होइ संसार स्यौं॥ तुरसी ये उतम अं
ग॥ २९॥ उतम संगति साध की और कुषमैं संसार॥ तुरसी ताकौ त्याग करि
सतसंग करौ संचार॥ ३०॥ बिषयनि की संगति महीं कबहूं नदीजे पाव
तुरसी ताकौं त्याग करि सतसंगति मैं आव॥ ३१॥ सतसंगति के सुष सम
नाहिन सुष कोऊ आन॥ तुरसी हेम टूंटे सबै बिधि नागर तत ग्यान॥ ३२॥
तुरसीदास जन उरधमुषी तिनका करिए संग॥ सुषदेसु षदालि दहरें रं
मल गावै रंग॥ ३३॥ तुरसीदास जन उरधमुषी तिनकौं मिलिए धाए॥ मिलि
ये आनंद उपजे बे आनंद बिलाइ॥ ३४॥ तुरसी उरधमुषी जानौ जुवै ऐसे
साधू कोइ॥ इंद्रीन कौं संजम जु करि रहे ब्रह्म रत होइ॥ ३५॥ जौ तूं चाहे मो
क्षपद तौ प्रथम परसि सतसंग॥ दूजी कामना त्यागि करि साहित पस्या आ
ताजे पड़ां पलटि कै मन तन मे करि पंग॥ तुरसी तब चौथें कहूं जाइ मिले सु
रति गंग॥ ३६॥ जीव समावे ब्रह्म मैं ज्यौं सलिता सिंधमांहि॥ तुरसी साधू संग य
हि और उपाइ जु नांहि॥ ३७॥ साधिक कौ मन फटिक समि छिध ही रंग न मांन
तुरसी संग लियें रहै तौ कांई परे न आन॥ ३८॥ जौ लौं इंद्री बसि नहीं उपजत मो
नारंग॥ तुरसी तौ लौं न छाडियें संतजनन कौ संग॥ ३९॥ जनतासूं हरषि करि
जौ कबबाडे नाव॥ तुरसी तब ही बूडिये कोऊ न करै सहाव॥ ४०॥ तुरसी स्हा
वजु कोऊ ना करै ता पापी कौ सोइ॥ जगवंत संगति बिसारिकैं आप ही कर
ता होइ॥ साच स्वपन सुहाव ई सील ही बैठा बोइ॥ सतसंग पारस का करै जौ प
तौं प्रसेन पीतिस जोइ॥ ४१॥ २०२३॥ अथ साधको यारिका॥ १॥ तुर
सी कितें असाधैं या लोक के मझारि॥ मीगमीग बात कहि बोवें बहवी पार

१ तुरसी किते असाध नर। कहे सु हाती बाव॥ अपने स्वारथ कारने। करै और हो घा
व॥ २॥ अपने स्वारथ कारनैं। बोले अमृत बैन। तुरसी जब स्वारथ न होइ। तब क
टु बैन न दैन॥ ३॥ आप थापी अप स्वारथी। आप पोषक अस्तीन। तुरसी ए अंग
असाध के। साषत बेद पुरांन॥ ४॥ चौपई॥ तुरसी काल मुष उन दुष्टन केरा।
मुषा मिष्ट रिद मां झकरे रा। सब को कुजनधी जो तिन्हैं। बेद पुरांन निकी नें मने
॥ ५॥ अथाह कों थाह करि दिषावे। आप न बूडे और बुडावे। आप सरीषो क
रि ऐसो होइ। उजल रहन न पावे कोइ॥ ६॥ जो बिन चार निपति बरता कों। अपनों प
र सम्यावे ताकों। जाने जो मोसी यह होइ। तुरसी प असाध मत जो इ॥ ७॥ आपन
कामी क्रोधी कूर। करिबे गस्तु किन्ति निरमूर। तुरसी और निकीयो चाहे। बि
धि अधिकें बहकावे बा हे॥ ८॥ ऐसे असंतनि के संग। निष्फ करन तजन मैं नेग
तुरसी इन सों न्यारे रहैं। सो बड नागी मपति कहै॥ ९॥ स्मृति स्मृ साख पुनि सो
इ॥ बेद पुरांन कहे सब को इ॥ तुरसी निज साधू यों आषें। असाध संग त्यागे सुष
नाषें॥ १०॥ असाध को संग कटिक रूप। करि बिसवास बोवे बिष कूप। तावि
तुरसी[illegible] हस्या मिटावे॥ सोई संत सदगति सुष पावे॥ ११॥ २०३॥ अथ साध को
[illegible]॥ ३४ साषी॥ तुरसी साधू या संसार मैं। बड उपगारी सोइ। चिन केद
रस परस[illegible] उधरत है यह स्वोइ॥ १॥ तुरसी साधू या संसार मैं। करुना सिंध रूप।
सीजे बिके नि सुष परसे। जीव बिकार हिं निहोंल॥ २॥ तुरसी साधू या संसार मैं
परतछि पारस रूप। परसि परसि के वे पतित। पलटि रन ये अनूप॥ ३॥ तुरसी
साधू या संसार मैं। गंगा जेहै अंग। आप सरीषे करि लीये। जे आये सतसंग॥ ४॥
तुरसी साधू या संसार मैं। चंदन जेहे जोइ। महा सुसीतल करि लीये। आइ स
पटाने सोइ॥ ५॥ तुरसी साधू या संसार मैं। सूरज ससि समान। पीछे प्यावे सु
रस कथा सुना इरकों भि॥ ६॥ अबिद्या तम हरन कों। सूरज के उनमान। तु
रसी सीतल करन कों। साधू ससि समान॥ ७॥ चौपई॥ तुरसी तब मन धात
पलटन काजा। पारस रस संत हरि साजा। केते पर सिपा रंगति नये। जा
नरनि कुल बिसरि गये॥ ८॥ साषी॥ रानी ग्रान न उवचे। आप धरे लुका

८ नवजलपद संसार॥ ताजि हाजपरि बैसि करि॥ तुरसी उतरहुं पार॥ २५॥
सतसंगति चंदन बिरौ॥ बेली सब जुग जोइ॥ तुरसी जे जे लपटिए॥ नए सुगं
धे सोइ॥ २६॥ चारि बेद चहु जुग मही॥ सपत दीप के मांहि॥ तुरसी सतसंग
ति परसि॥ अफल गया कोऊ नांहि॥ २७॥ साधसंगति तहां बास करि॥ आस
एक उर धारि॥ तुरसी तजि गोबिंद पद॥ पल पल बारंबार॥ २८॥ आराधन
करि ब्रह्म को॥ करि संतन को संग॥ असंगा होइ संसार स्यों॥ तुरसी ये उतम अं
ग॥ २९॥ उतम संगति साध की॥ और दुष मैं संसार॥ तुरसी ताकौ त्याग करि॥
सतसंग करौ संचार॥ ३०॥ बिषयनि की संगति मही॥ कबहुं न दीजे पाव॥
तुरसी ताकौं त्याग करि॥ सतसंगति मैं आव॥ ३१॥ सतसंगति के सुष सम
नाहि न सुष कोऊ आन॥ तुरसी हम ढूंढे सबै॥ बिधि नागर वत पुरान॥ ३२॥
तुरसीदास जन उरधमुषी॥ तिनका करिए संग॥ सुष दे दुष दालिद हरें॥ य
म लगावै रंग॥ ३३॥ तुरसीदास जन उरधमुषी॥ तिनकौं मिलिए धाए॥ मिलि
ये आनंद उपजे॥ बे आनंद बिलाइ॥ ३४॥ तुरसी उरधमुषी जानौं जु वै॥ ऐसे
साधू कोइ॥ इंद्रीन कौं संजम जु करि॥ रहे ब्रह्म रत होइ॥ ३५॥ जौ तूं चाहै मोग
छपद॥ तौ प्रथम परसि सतसंग॥ दूजी कामना त्यागि करि॥ साहित पस्या आग
ता जे पक्वा पल टिकै॥ मन तन मैं करि पंग॥ तुरसी तब चौथै कहूं॥ जाइ मिले सु
रति गंग॥ ३६॥ जीव समावै ब्रह्म मैं॥ ज्यौं सलिता सिंधु मांहि॥ तुरसी साधू संग ग
हि॥ और उपाइ जु नांहि॥ ३७॥ साधिक कौ मन फटिक समि॥ सिघ ही रंग न मान
तुरसी संग लियें रहै॥ तौ झांई परै न आन॥ ३८॥ जौ लौं इंद्री बसि नहीं॥ उपजत मा
नौ रंग॥ तुरसी तौ लौं न छाडिये॥ संतजनहु का संग॥ ३९॥ अतासहर षिकार
जौ कबहु डेना व॥ तुरसी तब ही बूडिये॥ कोऊ न करै सहाव॥ ४०॥ तुरसी महा
वजु कोऊ ना करै॥ ता पापी कौ सोइ॥ भगवंत संगति बिसारि कैं॥ आप ही कर
ता होइ॥ साच सुपन सुहाव र्डे॥ सील ही बैरागो होइ॥ सतसंग पारस का करै॥ जौ प
लौं प्रसेन प्रीति संजोइ॥ ४१॥ २०४२॥ अथ असाध कौ परिक्र [illegible]॥ २॥ तुर
सी कितेक असाधनि या लोक कै मंझारि॥ मीग मीग बात कहि॥ बोवे बहती धार

।१।तुरसी कितै असाधनरा। कहै सुहाती बात। अपने स्वारथ कारनै। करै और ही घा
त।२।अपने स्वारथ कारनैं। बोलै अमृत बैन। तुरसी जब स्वारथ न होइ। तब कटु
बैन न दैंन।३।अपथापी अपस्वारथी। अपपोषक अज्ञान। तुरसी ए अंग।
असाधके सापत बेद पुरान।४। चौपई। तुरसी काला मुष उन दुष्टनके रा।
मुषा मिष्ट रिदमा झकरे रा। सब को कुजन सधी जो तिनैं। बेद पुरान निकी नैं मनै
।५।अथाह को थाह करि दिषावै। आपन बूडे और बुडावै। आप मरै पोक
रि ऐसो हो।६।जल रहन न तपावै को ऊ। धा। जौ बिन चार निपत्ति नरता कौं। अपनौं प
रमत पावै ताकौं। जानै जो मो सी यह होइ। तुरसी प असाधमत जोइ।७। आपन
को मी को धी कूर। करि बैगा सु किन्ह निरमूर। तुरसी और निकी यो चाहै। बि
धि बिधि कैं बहका वै बाहै।८। अैसे असंतनि को संग। निश्च करन सजन मैं तैम
तुरसी इन स्यौं न्यारा रहैं। सो बड़ भागी मम विक हैं।९। सुमत हुसास्त्र पुनि सो
ध बेद पुरान कहै सब कोइ। तुरसी निज साधू यों आषैं। असाध संग त्यागे सुष
साषैं।१०। असाध को संग कटिक रूप। करि बिसवास बोवै बिष कूप। तातैं
तुरसी [illegible] इस्या मिटावै। सोई संत सदा सुष पावै।११।२०३। अथ साधको
[illegible]।३।साषी। तुरसी साधू या संसार मैं। बड उपगारी सोइ। तिन के द
रसपरस तैं उधरत है यह लोइ।१। तुरसी साधू या संसार मैं। कछु नां सिंध सुधा।
सी। जे बिके नि सुष परसदे। जीव विकार दीं नि होल।२। तुरसी साधू या संसार मैं
परतषि पारस रूप। परसि परसि के वे पतित। पलटि रत ये अनूप।३। तुरस
साधू या संसार मैं। गंगा जे है अंग। आप परीषे करि लीये। जे आये सत संग।४।
तुरसी साधू या संसार मैं। चंदन जे हैं जोइ। महा स्यीतल करि लीये। [illegible]
पटाने सो इ।५। तुरसी साधू या संसार मैं। सूर तस सिस मांन। पावै पा [illegible]
रस कथा सुना इ रकौं ति।६। अविद्या तम हरन कौं। सूरज के [illegible]
रसी सीतल करन कौं। साधू ससि सम मान।७। चौपई। तुरसी [illegible]
पलटन काजा। पारस सु संत हरि साजा। केते परसि पारथ तिन [illegible]
नर निकुल बिसरि गये।८। साषी। रानी ज्ञान भ[illegible]यैं। आप [illegible]

तौतुषीयासंसारसब॥ सरनकौंनकैजाइ॥१९॥ जिनबोलेंसुषउपजै॥ अति
ति आनंदहोइ॥ तुरसीतेबोलैंनहीं॥ तौपंथनपावैकोइ॥२०॥ संतसदा
रमारथी॥ घनलौंबरषैंआइ॥ तपतिहरैसबजीवकी॥ अपनोपारसल
इ॥२२॥ कछुनचाहैआपकौं॥ सैंतिसबुधिधनदेहि॥ तुरसीदुषीयाजीवकें
सुषसरूपकरिलेंहि॥२३॥ अचाहीकअरधूतजन॥ आपारहितनिदोष
पतितनकौंपावनकरैं॥ देदेअपनापोष॥२४॥ तुरसीसीतलहीतेसीतल
दन॥ चंदनतैससिसोइ॥ सहितेसीतलसंतजन॥ बैठेनरमलहोइ॥२५॥ सीत
लबांनीबोलहीं॥ सीतलदृष्टिजुदेंहि॥ सीतलपरसलगाइकैं॥ तनकीतप
तिहरैंहि॥२६॥ दाधेजीवकौंफेरिकरि॥ पोषदेहपल्लवाइ॥ तुरसीघनलौं
बरषिकरि॥ स्वातिकरैसबगांव॥२७॥ संतौंसमिकोऊनहीं॥ सीतलओर
सरीर॥ कैसीतलमेरेसांईया॥ हरैसकलकीपीर॥२८॥ क्रियाकरततेंदुष
हरत॥ सुषकेदातासोइ॥ तुरसीसाधूजननिके॥ देषौयेअंगजोइ॥२९॥ स
तिभाषीजुसीलवांन॥ सीतलतनमनतास॥ रांमनांमरतहोइरहे॥ तुरसी
स्वांसेस्वास॥३०॥ तुरसीतनकरिरांमरत॥ मनहूंकरिरतरांम॥ रांमरांमर
तहोइरह्या॥ रोमरोमसबगांम॥३१॥ चौपई॥ तुरसीअतिसीतलअतिहीसु
षदाई॥ समद्रिष्टीसजनकूंअधिकाई॥ जडजीवनकौंकरनसुचेत॥ जगमां
ही बिचरैंइहहेत॥३२॥ साषी॥ औरकारनकोनही॥ बिचरनकौंसंसार॥
तुरसीपरमारथीजन॥ बिचरैपरउपगार॥३३॥ तुरसीऐसाहैकोऊ॥ धा
निधंनिवैसंत॥ परकाजीपरमारथी॥ कहेबतलायेनिबहेत॥३४॥ केसुष
पटदीयेरहैं॥ कैजथाअरथ्यभाषंत॥ तुरसीयासंसारमैं॥ सोपरमसुबुधीसं
त॥३५॥ बोलैबचनबिचारिकैं॥ लीयैंसांतसुभाव॥ तुरसीदासकरबचनकैं
पंथनदेईपाव॥३६॥ कहैचालकरनाइहै॥ कहैसंतरसरीति॥ तुरसीबोलैंसु
धबचनसंडैअन्तरअनीति॥३७॥ सत्रनकाहूकरिगिनैं॥ मितकूंगिनेंन
काहि॥ तुरसीयहगतिसंतकी॥ बोलैंसमितासाहि॥३८॥ सत्रमित्रसबके
बिषै॥ रह्याएकतुल्यहोइ॥ तुरसीऐसासंतजन॥ त्रिगुनअतुलतजोइ॥३९

अफलकरहैफलकेनहीं॥सुनिअसुनसुनबैंन॥तुरसीयासंसारमेंसा
धूकहिएअैंन॥२९॥चौपई॥अतिनअकिंचनइंद्रीजित॥जाकोह
रिबिनअनंतनचित॥तुरसीअैसासाधूसोइ॥जगमेंबिरलादेष्याकोइ
॥३०॥साषी॥सोजनजगतजितजहैं॥जाकेरागनदोष॥तुरसीत्रिस्नांसा
गिकैंग्राहिरसासीलसंतोष॥३१॥सीलगहतनसबकीसहत॥कहतनरिंदे
मुषरेंम॥तुरसीइरासादहतन॥एसंतजनहैकेकाम॥३२॥तुरसीहिरदैसु
कलमनसाअमल॥मुषउचरैमृदबैन॥दयाधरमसतिसांतिता॥ऐसंत
जनोंकेचिहन॥३३॥कहकींजुकुसबदकहि॥मरमनछेदकरांहि॥
तुरसीअैसेसंतजन॥बिरलेयाजुगमांहि॥३४॥तुरसीसाधूजननिकोंसु
नबचनकोसुभाव॥असुनबचनउचरैनहीं॥नावैकोऊकरौकुभाव॥३
५॥साधूबोलैसुनबचन॥उरधरिआतमज्ञान॥काहूकोंदुषवैनहीं॥अंमृ
तमैंजांन॥३६॥कोमलबांनीसाधकी॥लागैअंमृतपराइ॥तुरसीताहिकौ
समत॥सुनतमैंनहोइजाइ॥३७॥सुनतसुषउपजनकैदेत्तेनसमधरैनगाइ॥
अैसीबानीसंतकी॥जीउरचैदेआइ॥३८॥सीतलबांनीसंतकी॥समिझैतेअ
तिजांत॥तुरसीकोटिवपतिहरै॥जोकोऊधरैकांन॥३९॥तुरसीधनिवेसंत
जन॥जोअैसेकोऊआहि॥आपनदुषकष्टकसहहरैऔरकीपाहि॥४०॥
चौपई॥पापतापसबहीजुनसावै॥नागवहैजोकेघरआवै॥तुरसीअै
सेकोमलसाध॥बिसनकरिगाएअगाध॥४१॥साषी॥तनकरिमनकरिब
चनकरि॥जोदेतनकाहदुष॥तुरसीपातगनासहीं॥देषतजनकामुष॥४२
मुषदेषतपातगभजैं॥परसतकरमबिलाहिं॥तुरसीअैसेसंतजन॥सुरत
मांगिमिलांहिं॥४३॥सुरतनाजबपांचैहरषैंआयदयाल॥तबअैसेसाधू
मिलैं॥मिलिकरिकरैंहिनिहाल॥४४॥कोमलहिरदैबिमलचित॥मनसांमें
मलनांहि॥तुरसीरतमलहोइरहै॥अपनेंसांईमांहि॥४५॥निमलतनमन॥
आतमानिमलसबदप्रकास॥तुरसीनिमलहोइरहै॥अपनेप्रभुकेंपास
४६॥जाकेंउरतेंगभिाई॥तिलतिलचिंतांनांहि॥मनसाबाचाकरमना

सोई ।१९। रवमत होइ रघा एमही । कांम कलपनां षोइ तुरसी ओसा है
कोई आनंदी जन सोइ ॥२०॥२१२६॥ अथ संत महिमा कौ परकरन
॥१॥ तुरसी सात हूं पलसु मिस्न कै रै मन चित प्रीति लगाइ महिमा
ता हरि भगत की मो पै बरनी न जाइ ॥१॥ तुरसी पलन की कौ कहै जो सु
घए एक हूं स्वांस । अनिन होइ गोबिंद नजे तो धनि पित जननी तास ॥२॥ धनि
धनि माता धनि पिता । धनि वह पुत्र जु सोइ । तुरसी जो गोबिंद नजे जैसे हूं
कैसें हूं होइ ॥३॥ चौपई ॥ तुरसी जैसें हीं उर आइ । नजे राम अपनौं चित
लाइ । धनि धनि उन जगतन की काइ । और वृथ जनम जुग जाइ ॥४॥ सा०
॥ तुरसी दिज षट क्रम सहित । क्रीया कुसली होइ तक स्वपच हरि भगति
कैं पटंतर तुलै न सोइ ॥५॥ तुरसी नगा स्वपच ही तलो नजै रैन दिन रा
म । ऊंचे कुल का कांम के जहां न हरि कौ नांम ॥६॥ तुरसी ऊंचे ऊंचे बांस
के बिरैब घे अति सोइ । बड़ा ईमें बरि मूये ऊंचे ऊंचे होइ ॥७॥ ऊंचे बांस वृथ धनि
परि तु यंग न के अस्थांन । तुरसी नीचे नीपजै इष अन अरुपांन ॥८॥ इहै
जानि उतम जनम कौ । पार ब करो मति कोइ । तुरसी अनिन होइ हरि नजे ।
बड़ा जु सब के सोइ ॥९॥ चौपई ॥ अनिन अकिंचन हरि कौ दास । नांम उचा
रै एक हूं स्वास । तुरसी तास मिकौ [illegible] कोइ । हमनी कैं देषी सब लोइ ॥
१०॥ जदपि दास अनिन होइ हीन । तदपि पटंतर कौन कुलीन । वह दीन
होइ नांव उचरै । वह अभिमान अग्यानि मैं जरै ॥११॥ जा कैं कुल अभिमान
न कोइ । उतम बरन कौ कि चित सोइ । रसा रांम तन मैं ता होइ । तुरसी ता
हि बंदै सब लोइ ॥१२॥ सापी ॥ हरि कौ अनिन दास होइ । ता महिमा कौ
पार । तुरसी पाइ बेसक कौ ऊ हमनी कैं कीयौ निरधार ॥१३॥ तुरसी दा
सन का पर दास होइ । ता हूं का होइ दास । ता सु षपल पटंतर न ही । स्वर्ग
सुष जोग बिलास ॥१४॥ स्वर्ग मति के सुष निस्पौं ना हिन कौ ऊ कांम । दास
अनिन निहकांम होइ ॥१५॥ तुरसी वा स्के पार कौ पार
के वार बहं [illegible] मत्यसं [illegible] ॥१६॥ दास रता

करौमस्यौ उनैलोकसुषत्यागि॥ तुरसीन्यारा हेइ रहा॥ तहां दहै नदुषकी
आगि॥ २०॥ २०३४॥ अथ शांतिकौपरिकरन॥ ३५॥ तुरसी रैनि आभूषन
वइमा॥ दिवस आभूषन तांन॥ दास आभूषन नगति है॥ नगति आभूषन
तान॥ १॥ तान आभूषन ध्यान है॥ ध्यान आभूषन त्याग॥ त्याग आभूष
न शांतिपद॥ तुरसी अमल अदाग॥ २॥ सो या फलादिकें सबकरमकौ॥ त्याग
कहावै सोइ॥ ज्यूं तरमूलनि कें दिये॥ कौं पललेइ नकोइ॥ ३॥ रहै सा ममु
षि वरनियो॥ श्रुतिसमृति में सोइ॥ स्वां तिसपद प्रगट करन॥ पेषू है वि
रलाकोइ॥ ४॥ चौपई॥ अमल अदाग सांतिपद सार॥ सकल कलेस न
करनप्रहार॥ तुरसी ताहि उर धारें कोइ॥ अति आनंद सम्र बिलसै सोइ॥ ५
तुरसी ताहिन दुषवें कोइ॥ परम स्वां तिसुपरला समाइ॥ तहां कोऊ तपति
न तैदै आइ॥ ६॥ तुरसी श्रेसा सीतलसंत॥ ब्रह्मा बसो मनरहो एकंत॥ होइ
रह्या बदनकौ अंग॥ कहा करै पललोक तुजंग॥ ७॥ श्रति सीतल अविह
अमल॥ अविही औडा सोइ॥ तुरसी तास अतीवकौं॥ जिन सकैं कोइ॥ ८॥ चौ
पई॥ जौ कोऊ कोप तरै मुषबैन॥ समसुष उचरै तास निश्चैन॥ तुरसी तकसि
वैना हि॥ सो सीतल कहीयै जुगमांही॥ ९॥ कलकाया कें कलकैनांही॥ अवि
गहरा औडा मन मांही॥ तुरसी पारनपावै कोइ॥ स्वां तिसिंधमैं रहासमोइ॥ १०
॥ साषी॥ सप्तदीप नवषंड मूं॥ तीन लोक कै मांहि॥ तुरसी स्वांतिसमान सुष॥
और कोऊ दूजा नांहि॥ ११॥ चौपई॥ जहां स्वांतिस तगुरकी दसी॥ तहां को
धजर उपरगई॥ कलि हिकांम बासनां बिलीनी॥ तुरसी स्वांति जुएसहनांनी
१२॥ तुरसी स्वांतिसुधाकौ सागर॥ संत निकरि गायौ जुउजागर॥ तामें तनम
नरहै समोइ॥ यह है अगनि न हिदा कै सोइ॥ १३॥ साषी॥ अहंकार की आग
निमें॥ जरतसकल संसार॥ तुरसी हरिजन बहुं जैरो वौ तजन कौन अधिका
र॥ महां शांतिपद परसिकैं॥ सांत नए जन सोइ॥ ते अहें अग्नि न दाऊ दी कौ
टिकरौ जनकोइ॥ १४॥ जौ सन मलक रमडिकैं॥ उपजावैं अहंकार॥ तुरसी त
ऊ वपजै नहीं॥

नमन सापांन, तुरसी तेज रैंजर निमें, तोकै जाकुं मैं हेरांन ॥ १६ ॥ है रंनी कै ज
गत में अचरज मोंनें होइ ॥ तुरसी जो पानी नया, जौब कै सो पाकु क होइ ॥ १७ ॥
पाकु फिरि हो कै नही, जो पानी नया पांन, तुरसी पानी नातुये, पाकु कवे
ई जांन ॥ १८ ॥ चौपई ॥ जल लै बलै अकाषि जे षिजावै, रागदोष मैं जनम गमा
वै, खपन हूं स्वांति नही उनदेह, तुरसी जहां जहां उदहु तियेह ॥ १९ ॥ साषी
सोई पंडित सोई पारषू, सोई संत सुजांन, सोई सूरसो बुध सोई, सोई सुज
टपवांन, सोई ज्ञानी गुनि जन सोई, सोई ध्याता सोई ध्यांन, तुरसी तये जु त्यागि
सके, रागदोष बिलामांन ॥ २० ॥ चौपई ॥ रागदोष की अगानि बुझांनी, को
म क्रोध देगए जु कांनी, तुरसी जब ही स्वांति घरि आई, तब औरहि उरि फि
री दुहाई ॥ २१ ॥ साषी ॥ फिरी दुहाई रांम की, गएं कामादिक भाजि, तुर
सी ज्यौरवि के उदै, रहै न रजनि कौ राज ॥ २२ ॥ इति पंथ अपषनि कौ
तारिकारसौ ॥ २३ ॥ तुरसी पष अपष परैं, महा परम अस्थांन, साधि नाइ
जो जन रहै, सो तहां पावै जांन ॥ १ ॥ तुरसी पंडित हू की गमि नही, अपंडित
हूं नही जांन, अक्षर सत हूं सपिर है, पेडु लतवो हस्थांन ॥ २ ॥ तुरसी कौ
उनलहि सकै, वा अलहा की लीह, गोडंजा बिचि परि रहै, अपना अपनी रो
ह ॥ ३ ॥ पंडित न्हू खेपाठ में, सु डित बिधि आचार, डेडित त्रियडं अनमें, नि
अपदर हानियार ॥ ४ ॥ चौपई ॥ षटदरस न हूं गहि षट डांडी, अपनी अपनी
मांड जु मांडी, पषापषी में रहे समाइ, नष षनां पनजानां जाइ ॥ ५ ॥ कोंही
इक्का मुसलमांन, अपनें अपनें पष मस्तांन, होइ रहे ओ यांनी लीन, तुर
सी पंथ बतावै कोंन ॥ ६ ॥ साषी ॥ तुरसी ए पूर बवन वे पछिम तन जांहि
रांम नि रालार हिमाया, उत्ते पषनि के मांहि ॥ ७ ॥ तुरसी उत्ते पष निमहीं, ब
ज्ञान करि करि प्रीति, गोह अंधारे करि रहे, मानि मिथ्या परतीति ॥ ८ ॥
ए अपने एपार कै, ए आवौ एजाव, तुरसी सावत पष है, नहिं नुपय स्वभा
व ॥ ९ ॥ कदाचि कोऊ पोंक है, पषनि धातु मकाइ, पषबिन संतन्हि कौ
ई काशिजनासरैं पष बिन लागे नाइ ॥ १० ॥ सिध साधिक जोगी जती

रम. निरपपराग जाना. मनतरानसहजघरिआन्यो. ९५. एकापंत गा
पपावनतपानीको. पपविनपमवंधनानेक. तुरसीसंगनहो. २२. अर्द
अरतसंपमकरो [illegible] ओरनिअपप [illegible] पारंख. तुरसी
कोनहों [illegible] सावापपनिरपघमान. साहियमकहि चेनोहि अपरी
पषसोडे जानेरे. उपरेपवाटा [illegible] रहत्यपसे [illegible] ममतसाचा रह
बेना आहि [illegible] धिरिजपरे तेपपबंधनाहि ॥९०॥ साषी ॥ मेरेना
निजुकरिकारिकाचे त्यपने अपनेपथानिरंष [illegible] पावनेना ॥ ९०. तु,
सीनपपत्नपप अतीत. ताकानहीपपानिसंपा [illegible] ९६. इपरपुभलगा
माविनहिले [illegible] पापपषीपोपपावनदे [illegible] तुरसी [illegible] नहा
काहू [illegible] ९७ [illegible] सालिनाहि [illegible] पारपुन
बानाषोले। पपापपीके उचरेबेन [illegible] रपकपअन. ९८ ॥ साषी ॥
जाकर [illegible] तुरसी [illegible] सबदरसेनतप [illegible]
पौरविनीमाया. ९९. तुरसी [illegible] पपापपी
हाअपरहरे. सोतना जायतोगाइ ॥ १०० ॥ [illegible] आहियरपकन [illegible]
हाउपेन [illegible] तुरसी [illegible] जाइ [illegible]
इ [illegible] काइसंपक [illegible] कहि [illegible]
मिलमु [illegible] बाहि [illegible] सो [illegible]
हि॥ तुरसीया त्रियलोकमें॥ तुरसीदरसे ताहि॥ २१॥ [illegible] सब. सो
वह ह्वसो वंत॥ तुरसी सोई संतजन॥ जु उत्ते सब ने पोवंत॥ २२॥ संपथनिके मधिर
है॥ ताता सीलासागि॥ तुरसी ताहि बुझि नदे है॥ जनम मरन की आगि॥ २३॥
तुरसी जनम मरन की आगि यह॥ वाहि कव हू न जरावे॥ जो नाहीं होरर हो॥
आप हूं क हू न कहावे॥ २४॥ तुरसी हम जो मीजे [illegible] पापपषी के बेन
उर धरिअ हूं नउ चरई॥ वीक हू आ मैन॥ २५॥ चौपई॥ तुरसी नाहि हूआ
रहै॥ पषापषी के बचनन कहै॥ रहै निराला न पप होई॥ तो पपवानन तेदेको
इ॥ २७॥ साषी॥ तुरसी महपन को अरथा सब को निहचो जो [illegible] नाहीं [illegible]

सार ॥ पषापषी को नाऊ यह ॥ सिर सौं धरहूं उतारि ॥ २० ॥ पष तजि न्याय ह्वै छूटहै
अंतितवाही होइ ॥ तुरसी हैं कौं सेघनौं ॥ संत कहै सब कोइ ॥ २१ ॥ [illegible] ॥ पषा
पषी कौं सानां ना ही नयेना सैं ज्ञुपक्ष ॥ तुरसी सहज अपाव ॥ आगै अमल सुधुए
कही ॥ २२ ॥ [illegible] ॥ मिंना ही तहां मैं चलिगया ॥ तैहूं त्यागि स्यागि [illegible] ॥ तुरसी
तहां तद्दु बिधालैस ॥ तां निज घर कौ नैपवैस ॥ २३ ॥ जहां न चंद न हि की ओ सूर
अषंड अनाहद बाजैं तूर ॥ तुरसी जगमग जोति प्रकासा ॥ वहां नाही होइ हूं पंछ
चै निज दासा ॥ २४ ॥ निराधार वाह घर है सोइ ॥ काहू के आधार न होइ ॥ तुरसी नि
राधार होइ जाइ ॥ तब सत लजन तुवा घर हि समाइ ॥ २४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २६ ॥ तुरसी चारि वेद मथि जोक हू ॥ संत निकाबो सार ॥ सो
ई सार सचि रिदैं मैं ॥ मति जू ले बिस्तार ॥ १ ॥ सार सथोरो ही भलो ॥ नाक हू दूजै
असार ॥ तातैं तुरसी समझि कैं ॥ सार ही स्यौं करौ प्यार ॥ २ ॥ थोरो हो मत पकरि रहु
सार सार दृढ बीज ॥ बहु बिसतार न मूलियो ॥ मूलिये न बाधिये तीर ॥ ३ ॥ तुरसी थो
रे ही मैं बहुत सुष ॥ बहुत मांहि कहू नांहि ॥ कंचन के किन हू ननै कंकर ए
को हरि कि हि मांहि ॥ ४ ॥ तुरसी चारयो बेद को ॥ सार सूत मत एह ॥ समिता गहि हि
दृदेह सुषा ॥ बिचि रिजु होइ बिदेह ॥ ५ ॥ तुरसी चत्र सहस्त्र बु अष्टमैं ॥ दस सहंसै यह
सार ॥ समिता व जिन जि अमल पद ॥ आदि अंत अंक तार ॥ ६ ॥ आदि अंत बिला
गा जु रहु ॥ सार सु पद स्यौं सोइ ॥ तुरसी ब्रम कु पहु सिरि बो ॥ काको का जिहि
ह ॥ ७ ॥ तुरसी धरम अनेक हैं ॥ वार पार न हि कोइ ॥ जिहि धरम ही परम पद
द्रिढ करि गहिये सोइ ॥ ८ ॥ तुरसी धर्म अनेक है ॥ नरमत उपाव बहार ॥ नरम हू
स्त निरमल करन ॥ तैको ऊ धरम स सार ॥ ९ ॥ [illegible] ॥ न्रवृति सा न्रवृति सा
धि ॥ निरवृति सत गुरु आराम अगाध ॥ निरवरति निरवृरति बस्त नि सेवै स्रवा वि
षि पैया षेउ तजि दैवै ॥ १० ॥ साषी ॥ जितने पंथ तिनि मांही कथे ॥ नाना बिधि सि मार
बिषै बिकार की पुष्टिता ॥ सो तुरसी सब ये मारि ॥ ११ ॥ घर ही मैं अमृत बसै ॥ घ
ट ही मैं बिष जोइ ॥ बिष तजि अमृत कौं पीवै ॥ हंस सयाना सोइ ॥ १२ ॥ सांच कथी
र सुष संग्रहै ॥ झूठ नीर को त्याग ॥ औसा हंस सरूप जन ॥ पई पूरन भाग ॥ १
३ ॥ सांच रूप निराकार है ॥ निरसै होइ तजे राम ॥ औसा हंस सरूप जन
तुरसी पूरन काम ॥ १४ ॥

जोमुधुकरवासनाको॥अंगीकारकराइ॥तुरसीहेसषीरहीपीवे॥नीरननेरा
जाइ॥१५॥तुरसीऐसेसाधूसंतजंन॥मथिकेवेदपुरान॥सारसारमतसंग्र
हैतजिअसारभ्रमआन॥१६॥चौपई॥सारसारमतसबकोगहे॥गहिना
कैपुनिन्यारारहै॥काहूकेरंगमैंनमिलाइ॥अपनेसुमारगलागाजाइ॥१७॥
अपनेसारसुमारगमाही॥चल्याजाइछिनछांडेनांही॥तुरसीजतनीजोगी
सोइ॥सारबिवेकबकतरतहोइ॥१८॥साषी॥ऐसासारसग्रहीजन॥सदा
तिसुषकेमांहि॥तुरसीभ्रमआवैनही॥तामैंसंसैनांहि॥१९॥२२०९॥अ
थअविचारकोपरिकरन॥३७॥देषादेषीउठिचले॥बूझ्यानहीबिबेक
तुरसीफिरिफिरिबाकरे॥बिनाबिबेकअनेक॥१॥बिनबिबेकजुसुहैजे
अविसोपकूचैनांहि॥तुरसीरामजहांकेतहां॥आयमिलेजगुमांहि॥२॥
॥चौपई॥पहलेकछूकछूगहैबिबेक॥पीछेत्यागीकुटंबअनेक॥बिनहीबि
बेककुटंबहीत्यागे॥तौअधबिचिरहैपारनहिलागे॥३॥पहलेहीजडता
गहेअयान॥बिनसमझेसतगुरकोग्यान॥तुरसीसिधिनहोवैसोइ॥बनमै
बसौबसोनलोइ॥४॥साषी॥जोगजुगतिजानेबिनां॥जडतागहैसरीर
तुरसीअंतिनिबहैसो॥चूकहोइनलबीर॥५॥चौपई॥तुरसीगुरमतजांन्या
नांही॥होइअबिनवेगामांही॥संतहूकोकपोज्पानांहि॥तेमतबारूनीति
जुआहि॥६॥साषी॥जाकेआचारकनही॥पुनिबिचारनहीकोइ॥तुरसी
मनकेसकतिधरै॥पसवाकहियेसोइ॥७॥जाकेआचारजकूनही॥नहिबि
चारअहिलेस॥तनैमांहिएककूनही॥तौधिगधिगताकोवेस॥८॥तुरसीऐ
सेआगिनरा॥साधौसुचिअनेक॥तौहूउरमलनांमिटै॥बिनएकसुधबिबेक॥
९॥अबिवारकोन्हाइबौ॥कुंजरकोअसनान॥हयामयासमझैनहीं॥बूराज्यो
मांडेथान॥१०॥तुरसीजोईजोईकछूकरनीकरै॥सोईसोईकुंजरसोच॥स
विताधर्मनसूझैई॥अज्ञानीउरपोच॥११॥जोईजोईकछूकरनीकरै॥सह
साईनलसोइ॥तुरसीएकबिचारबिन॥अंतिबिगूचनिहोइ॥१२॥बकबक
ननिमैबहियरे॥बिनबिबेकबकजीव॥तुरसीएकअलंबबिन॥किनकूनप
यापीव॥१३॥पेरबहावनिबचनको॥बूझिबूझिबकग्यान॥तुरसीतीष्लगेन
ही॥बिनबिबेकबकपांन॥१४॥तुरसीहीनबिबेकपद॥पढेगुनैग्रंथकोटि
तककालिमांनांमिटै॥कोटैनआयाकोटि॥१५॥तुरसीहीनबिबेकपद॥पढि ॥१६॥२२२
होइनलऔघ॥सबैजमपुरिजां

अथ बिचारकौ परिकरण ॥ ३८ ॥ सबकोऊ बांछै मुकतिफल आनंदितक
रहिं उचार । पै तुरसी पावै नहीं ॥ बिन गुरग्यान बिचार ॥ १ ॥ सबकोऊ बांछैमु
कतिफल मारग लागे जो नाहिं । तुरसी ब्रह्मबिचार बिन । गमि काहूं की नाहिं
॥ २ ॥ बिचार मग परम हा दुलभ है । कौ लहै कौ ताहि । तुरसी सम मध्यौ ना परै । अति
हि सूछिम आहि ॥ ३ ॥ बिचार मग परम हा दुलभ है । कठिन षांडा की धार । तुर
सी के ते षपि रहे । पै लहै न हा स्तु धिसार ॥ ४ ॥ चौपई ॥ बिचार मारग को तुर
सी नांव । करि कर रिथ के स्वर अस्वर गुर गांव । ता हि पाइ बे सकन कोइ । तुरसी य
हे अति अगह व सोइ ॥ ५ ॥ पंडित मुनी सकल पचि हारे । षोजि षोजि मत त्या
दे अति अगह व सोइ ॥ ५ ॥ पंडित मुनी सकल पचि हारे । षोजि षोजि मत त्या
रे स्यारे । पै ब्रह्मबिचार न काहूं आवै । बिन समरथ गुर को धौं पावै ॥ ६ ॥ सा
षी ॥ तुरसी कठिन का ब्रह्म बिचार की । जो उर उतपन होइ । तौ संनै सनै संसार स
हि अस्त जु होव सोइ ॥ ७ ॥ चौपई ॥ तुरसी बिचार मत है ऐसा । हंस जु षीर स्नी
र सु नि वैसा । किं चित हूं उर उदै जु होय । तौ प्रकृति पुरष नि निकरै जु सोइ ॥
८ ॥ साषी ॥ तुरसी सत संगति गुर क्रिपा स्यों । जब उपजि है बिचार । तब सद
ऊंही होइ गा । अविद्या या पर हार ॥ ९ ॥ चौपई ॥ बकुत बात की धौं बिस्ता
रै इतनो अर्थ अनर्थ हि टारै । तुरसी एक सुध ब्रह्म बिचार । बिचास्यो करै
बारंबार ॥ १० ॥ थोरे हि मैं बकुत बिचार । वत ग्यान गहि त्यागि बिकार । तुर
सी तन मन दुषी सोइ । उलटा वर्तै जु होइ सु होइ ॥ ११ ॥ साषी ॥ मम ताकुष
निर्मम तसुष । इतनो ही त्तेद बिचार । तावे षाजो बेद मत । तावे सिधं त सा
र ॥ १२ ॥ बिचार समि को ऊ नहीं । तुरसी तजन जु आन । बिचार ही ते पाइये
केवल आतमज्ञान ॥ १३ ॥ आधि ब्याधि की औषदी है एक ब्रह्म बिचार तुर
सी ताऊ र आचरै तौ होइ रोग को परहार ॥ १४ ॥ बिचार सूरज के उदै जो अ
नगा वंतक राइ । तुरसी सोक बकुन परै मैं तैं षांड कुलाइ ॥ १५ ॥ चौपई ॥
बिचार बिन उचरै हरि नाम । ताहू मैं न लहै बिसराम । तुरसी बिचार ही स्यों
धावै तब जन न्यान परम पद पावै ॥ १६ ॥ तातैं बिचार ही है नीका । बिना
बिचार सबै मत फीका । तुरसी जिन यह पाया स्वाद । तिन सब तनका मत ।
अगाध ॥ १७ ॥ तुरसी ब्रह्म बिचार उपाइ । अब्रह्म उपाधि निवारत जाइ । को
हे को त्रिगुनी यह देह । जड व त जानि तजै ता नेह ॥ १८ ॥ साषी ॥ ब्रह्म ग्यान
क्ति बिप्र को । को टिकर कु आचार । कारिज कोऊ ना सरै । तुरसी बिना बि
चार ॥ १९ ॥ बिचार सोई जानिये । बिन बिचारै नित अबस्त को चितवैन

हौ॥तुरसी छिव कुलविन॥२०॥मनसा बाचा करमनां॥यहके वलमउजां
नि॥तुरसीबस्त विचारमहि॥मनउनमानपरिआंनि॥२१॥दोइत्यागैदो
इकौंगहै॥दोइउरमांहिमिलाइ॥२॥तौ तुरसीक्यौं दोइपरै॥दोइकी त्रासमि
टाइ॥२२॥दोइ उलटायेदोइकौं॥होइअरसिकै बिनास॥तुरसी दोउरा
लिमिलैं॥जहांनदोइकौ बास॥२३॥तुरसी पंचतततकी देह धरि॥सबको
ऊ आया॥काहूं उलटि अमृतपीया॥काहू बिषषाया॥२४॥अंमृत बदू
पंरमहै॥बिषरूपीजु बिकार॥तुरसीगुरकेग्यानबिन॥लागि मूवा सं
सार॥२५॥अंमृतपीयेअवरिये॥बिषषायेंमरिजाय॥तातैतुरसी बिष
तजौ॥अंमृतपीवौअघाइ॥२६॥अंमृतपीयपीयउधरे॥साधू कोटि
अनंत॥जाइमिलेसुषसिंधकौं॥तुरसीतजि भगवंत॥२७॥चौपई॥
तिनिमाया ब्रह्मकौ बिचार॥पइएसतगुरकेउपगार॥तुरसीजारउ
देजुहोइ॥बहनारीजनकहियेसोइ॥२८॥साषी॥ नासुष बकूंयंपवि
महीं॥नांसुषफिरैंअसंग॥तुरसीसुषसब बिचारमहीं॥जोमनमूंसोंबा
दैरंग॥२९॥तुरसीपहिलेफलहि बिचारिकै॥पाछै काजकराइ॥ता
कौकारिजसुफलहोइ॥कबहूंनबिगारिजाइ॥३०॥पहलकरिबेक
रिबेनकूहां॥यहतजिवैयहनांहि॥तुरसीसोईसंतजन॥यहबिबेक
तामांहि॥३१॥आचीअनजाचीकहा॥आइपरैरिषिसोइ॥तुरसी
तकनआवरै॥जोमरुअचतीहोइ॥अनसचतीनाआचेरै॥हंसनि
यानीसोइ॥तुरसीताकेतपकौं॥बिघनमकरत्ताकोइ॥३२॥साधू
सदसोजनकरैं॥असदसोजनसंसार॥तुरसीसाधसंसारबिचि इ
तनौसेदबिचार॥३३॥जोमनजुमतिबिधिजांनिकैं॥जगहिनदेइलघा
व॥तुरसीअलिपतहोइरहै॥ताहिलगैनतती बाव॥३४॥जुमतिजांनि
जडतागहै॥नमतिजांनिसजैएम॥तुरसीदासताहासकौं॥आनंदअ
वैजांम॥३५॥तुरसीहंसबिचारकौं॥महाबिधिबिधिस्योंकोइ॥गहै
सुमनचितलिनिकरि॥मिलैमहापदसोइ॥३६॥बिचारनांमनिरक
ष॥
सोइ॥३७॥चौपई॥बिचार
देषोजीइ॥तुरसीरसनारहिनौकरैं॥

तें बिनराम. जग्यो करै कोक आवौं जाम ॥ ९९ ॥ वपु सीतांग्रु प्रतापजुत ना
ह पे जु गति भेद कछु उत्तम उपाइ जु गति भेद करि जिन्हि भाया ना
क्काल तिन हीय फल पाया ॥ ४० ॥ बनि बनि बिउत संग निकी देह जिनि बिवा
हरधा ग्याप्ह तुलसी सी रतीर चिति कीया देह धरे का लाल तो लीया ॥ ४१ ॥
धारि आत्मा नीर सरीर तिन करि बैठे संत सधीर तुलसी तेहि संत पद बाति
ओर धोक हि बे मात्र जानि ॥ ४२ ॥ .... कहि बिवेक कव कहे साधु यासं
सार मथि काटै घृत आत्मा तुलसी तेको कसार ॥ ४३ ॥ .... तुलसी व
ह ति पुरुष चित्ति निति निक रही करि करि श्रय पर्वे सत संमिवाही प्रकृति
प्रकृति सुत पुरुष सत साह तजे त जेको तब फल पाइ ॥ ......
.... ॥ .... तुलसी सुध जीव को मिथ हुं स्मृत
कु बुध सौं कहि ऐसे हीं जाको ह्रिदे प्रधान ॥ १ ॥ तुलसी सुधी जीव कें संत
कृपा जु होइ उपदेसें धर्म आपनौं कुबुधी कौन हि कोइ ॥ २ ॥ उपदेसि पैं नम
वहि को अजित हृदे को मान तुलसी उरम धिया चित्त हैं होइ स्वेन रिदे प
धान ॥ ३ ॥ परिताई सुपूरि करि राषी तमस मधकाइ तुलसी सुमिनत
पुरुष को जहां कैसे जात सिहाइ ॥ ४ ॥ कबहु क अन तत्त पुनि कबहु कबहु
कुमति अजान तुलसी ता हित उपदेसिये पेद हलैं हीं बसि तान ॥ ५ ॥
सुबुधि सो ह्रिजा को हिये सव दवी जल हो बोइ तुलसी कि तिद दोक
रे कबहुं नन फल तो होइ ॥ ६ ॥ तुलसी अनसतो मिलि होइ अनम दो हिय बीज
बाहन हार बुधि वत होइ तोउ पजे धरम अषीज ॥ ७ ॥ तुलसी सुधात मम
है तवे सिद्धि बुधि पुर जान जौं जब आर सबैं आपु प्रकासैं तान ॥ ८ ॥
चानप्रकासैं रूप नमैं तान सुधा तम माहि एक अस्थ जानि उक्ता मथि
तुलसी दरसें नाहि ॥ ९ ॥ सुध आत्मसों नात्म काहि स्वधात्म सों मान सुधा
त उपदेसिये यह सिद्धि व्यापरधान ॥ १० ॥ जाके बुधि बैरागकी केवल ग्या
निचार तुलसी ताहि हरि जनको करिये बहु उपगार ॥ ११ ॥ करि उपगा
र सुजन को जाकें सद बुधि होइ तुलसी अस बुधि जीव सों नाम कोष
मरें सुकोइ ॥ १२ ॥ महा गांभीर्य जब है ति को ऐसो गुरको ग्यान तुलसी ह
थनपोषिये बोधि बेपि प्रमान ॥ १३ ॥ तुलसी यह द्वारा भोक समस्त तयो
उदासी मत ताहि धर्म उपदेसिकै सब सिव तदे वव ॥ १४ ॥ बलीबसो
कीक्रमसंही सुधरि हर्को यह ग्यान तुलसी अव सिउपदेसिये सठ धे

कौनहोइग्यांन॥२५॥तुरसीजाकोउरग्यानजयौ॥अमलआरसमांन॥ताहि
ग्यानउपदेसिये॥कहेसांषिपरवांन॥२६॥२,२८६॥ अथअविसवासकौ
परिकरन॥४०॥तुरसीदासजाकेरिदै॥नहीरांमबिसवास॥वाकौगतिकहं
नहीं॥जोवैफिरैसोधरपुरआकास॥१॥तुरसीदासजाकेरिदै॥नहीगुरप्यां
नप्रतीति॥संतनिकौबिसवासनहीं॥ताहिदरसैसकलअनीति॥२॥तुरसी
अरधजायप्रवनउरकौ॥नलनरमैपाधिनोमि॥बिनप्रतीतिगुरप्यांनमत
निदतनहीएकरोम॥३॥तुरसीसाधुबरषेंरमजला॥सूरनतेदेकाइ॥अव
सवासरबिअंधकौ॥राष्योरिदैजराइ॥४॥तुरसीजोकवसिलाजुउपरैं॥
अंडवरिषाहोइ॥तौहूंअंकूरनफूटही॥ऐसोहीवोसठसोइ॥५॥औहिव
हिहरिबिमुषकौ॥करतबिहावैरैन॥तुरसीदीननरमतफिरै॥कहूंनपा
वैचैन॥६॥तुरसीसतसंतोषबिन॥मनपूरननहीहोइ॥रातिदिंसनठकत
फिरै॥नरलज्यागुनषोइ॥७॥चौपई॥तुरसीलज्याषोयांफिरै॥भलेबुरेकी
संकनकरै॥जहांतहांजावनहीसोकांम॥ऐसेजीवनकौकहांरांम॥८॥सा
षी॥नरमतफिरैतिहूंलोकमें॥करपकरईनकोइ॥अविसवासकेसिधबि
चिबूडेउबरैसोइ॥९॥तुरसीबूडेउबरईं॥मूरषलोगअनंत॥जोकोउक
ढैकृपाकरि॥ताहिकहैयहगत॥१०॥अपनेहीअविसवासतें॥अंधपरसातल
जांहि॥तुरसीसाधककहांकरें॥जोउरनिहचानांहि॥११॥२२॥७॥अथ
बिसवासकौपरिकरन॥४१॥जपीआपअगनिकै॥अनलअकासकेज
ल॥तुरसीसबकौपूरबै॥अंतरजांमीपालै॥१॥एकसूछमअस्थूलएक॥एकज
रअजरजुजोइ॥एकनकौचलनजुमकि॥एकरहैथिरहोइ॥एकजावैंजा
वैनएक॥ऐसेसेयहलोग॥तुरसीसबकौदेतहै॥साईमेरासोइ॥२॥साली
काहूंबराबरई॥अंतरजांमीरांम॥तुरसीसबकौंपूरबै॥जहांतहांसबठांव
॥३॥चौपई॥तीनिलोकईकसबषंड॥सप्तदीपसागरनवषंड॥तामधि
व्यापकअनंतजीव॥सबकौसुधिलेसमरथपीव॥४॥साषी॥बिनवनहि
कौपूरषै॥गुनऔगुननगहाइ॥तुरसीसेवगरांमकौ॥सोकाहेकौंडरपाइ
॥५॥चौपई॥गरभवासमहासंकटमांही॥तापरजुकैतहांहंनसेनाहीं
तौतुरसीबाहरिवरसोइ॥काहेकौंबादिहाडरैजुकोइ॥६॥साषी॥

चिंता तहिं न करि क्रिये जाके रिदै ह्नु राम पालैं पोषै पिवालौं तासु बिसंभर
नाम ॥७॥ तुरसी सुत जननी ज्यौं सबकी चिंता लेइ भोजन भोजन दा
स कौं जहां मागैं तहां देइ ॥८॥ भोजन भोजन की कहा सुष मैं अपनौं धा
म तुरसी श्रये राम जी तासु बिसंभर नाम ॥९॥ गाहि बिसवास गोबिंद
नजि साबि त्राषि आकीन तुरसी कारनि उदर कै होइ एन ज्यु गुआधी
न ॥१०॥ उदर निमित्त श्रोगैं पहर सब जीव करै उपाइ तुरसी संत हूं चिंत
वै तौ हरि परताप न साइ ॥११॥ बिसंभर नंदा लिदहरन निरत्तै नाम मंत्र
नव सोई नाम उरधारि कैं तुरसी होइ न चिंत ॥१२॥ कैरैन उदिम उद्र कौं
हरि कौ दास कहाइ कै निरहारी ब्रत करै कै अकलपत्ति ष्याइ ॥१३॥
हूं कौ सत संतोष कौ हरिजन नहिं तर्पोषाइ अग्रत के बिजन बनैं तुरसी
त हां न जाइ ॥१४॥ चौपई ॥ लीये बिस्वास रहै उरगाढा ॥ कब हूं ठैवाक ब है
गाढा कबहूं तुरसी रहै ज्यु सोइ पैकलप नांन आनै कोइ ॥१५॥ साषी ॥
तुरसी उर कलपना कौं बजलेप तगि जाइ पोयो हूं षूटै नहीं करिकं
रिथ के उपाइ ॥१६॥ तातै जोगी जो नियह अकलपत्ति ष्या पासु रूषीबा
सी चौपरी कैसी हूं मिलौ आइ ॥१७॥ चौपई ॥ रागदोष का हूं न करांहि ॥
सम द्रिष्टी सीतल सुष मांही ॥ तुरसी कलपि न जा चै काहि राम तणे सैर है ज्यु
लाहि ॥१८॥ साषी ॥ अनइछित भोजन मिलै तौ जन सहज सुतार का
है बडभागी संत कौं तुरसी इती होइ आइ ॥१९॥ नवे रहू त्ति कै इजगरी
एति ब्रत परवांन तुरसी उपरंचि औरसब सकलपत्ति गहै जांन ॥२०॥
नवे रहू त्ति कै इजगरी उतम त्ति क्राये है तुरसी औसे अस्मन कीये बांछै प
नु स्पौं नेह ॥२१॥ कै ज्यु बिचार सो जब करै कै इजगारी समाइ आनंद मि
क बहूं नां करै संतन्नाम सो पाइ ॥२२॥ उतमत्ति कछ इजगरी मधि निष्या
फिरि लेइ तुरसी कनिष्ट जा नियह परघरि धरनौं देइ ॥२३॥ परघरि धर
नौं देइ कलह कीत्ति ष्या षाई तुरसी तातन मांहि नहीं नैक हूं सिराई
॥२४॥ तुरसी त्तिष्या ई जगरी मधुकरी अथवा आरा धी पोइ साधू सो
ई सोई संग्रहै जहां कलपनां न कोइ ॥२५॥ चौपई ॥ रहेत कलपनां
त्तिष्या लेइ सेवग हरि सर धारयौ देइ सोई त्तिष्या अम्रत प्रवांनि और

कलपानांहवाहलजांनि॥२५॥ तुरसीअमृतमिठाअैसी॥ संतसकलही
बसनतिसी॥ सोनिश्चंपांनीजोपावै॥ रोमरोमआनंदरसावै॥२६॥२३२४
॥अथपीवपिछाणनकौंपरिकरन:॥४२॥ कीयाकाहूंकानही॥ पथ्यान
काहूंजाइ॥ तुरसीउथ्थानापरै॥ सोपीवहमाराआहि॥१॥ तुरसीथितिके
बोरुकौं॥ ताहिनहीतुअसार॥ विरतरिन्यारहै॥ सोनिजकंतहमार॥२॥
तुरसीपांनीमेंबूडेनहीं॥ पावकसकैनदाहि॥ पवननउडायानांउडे॥ सोपी
वहमारआहि॥३॥ तुरसीछिपेनहीआकासमें॥ गुनइंद्रीसोंन्यार॥ मन
बुधिचितअहंकेपरै. सोनिजकंतहमार॥४॥ पंचपंचपंचकेपरै॥ दसपरै
फुनिजोइ॥ तुरसीमनबचकमसही॥ दुष्टहमारासोइ॥५॥ फुनिजनतमेंफु
निबालहोइ. तरवताहोवैसोइ॥ तुरसीरूपहोइबिनसई॥ सोतोरांमनहै
इ॥६॥ बालतनरूपधनतरनसो॥ मनननजाकोहोइ॥ तुरसीअजरअमरअपंड
रांमहमारासोइ॥७॥ सपणहूंतेसूछिम॥ जुआति. नभहूंतेमहाविस्तार॥ तुर
सीकहैएककहावपरै. सोजीवनमूलहमार॥८॥ जाकेंपाणिनपदनयणने
नासिकानांहि॥ तुरसीअैसापरमतता॥ व्यापिरह्यासबमांहि॥९॥ जाकी
सत्यामांनिकें॥ बुधादिकनिकोज्ञान॥ तुरसीउतपनहोतहै॥ पैवाहियके
नहीजांनि॥१०॥ येजडवेचेतनिप्रसु॥ सेनिसवहरविश्राहि॥ तुरसीअंवित
अंवत. केसेंलषहिज्ञुताहि॥११॥ लषिज्ञुताहिएनासकै. एवरहपरपी
व॥ तुरसीवैरेकापरैको॥ काजानेसुधिसीव॥१२॥ सुरअसुरअपसुनाग
नरलषचौरासीजीव॥ तुरसीएसबरूपहै॥ परमलरूपीपीव॥१३॥ प
रमलरूपयातेकहै॥ दृष्टिमुष्टिनहिआवनहीकोनिगंधनिपलप्रसु॥
अफहकहोनहिजाइ॥१४॥ वासफूलमेंन्हवासहै॥ नादहूंमैंचनाद॥ तुरसी
रसरसरहितहोइ॥ सोपावैवहस्वाद॥१५॥ ध्यानमुकामनगिकचक्र॥ नही
तासगटगांव॥ तुरसीगुणअतीतपद॥ आपिरप्यासबगांव॥१६॥ अैंहेंतं
नचलेअचलप्रभु रमिरह्यासबगामांहि॥ तुरसीदासवारंगकें॥ परतं
कोकुनांहि॥१७॥

रतासदाथिर॥ जोनफिरैवकसीर॥१८॥ सोरठा॥ अबिगतिअपरंपार
सोसबमांहीसबपरै॥ ताहिलषैसोसार॥ तुरसीजामैंनामरै॥१९॥ सा
षी॥ पिंडब्रह्मंडहिपूरिया॥ अरधउरधसबगांम॥ तुरसीलिपैनलोकमैं
अलिपआतमरांम॥२०॥ तुरसीअलिपआतमरांम॥ लोकमैंलिपैजुनां
हीं॥ इष्टहमारासोइ॥ औरकृतमकिहिमांही॥२१॥ तुरसीकृतमजहां
लौं॥ तहांलौंमनपतियाइ॥ उपतिषपतिकैपरेप्यार॥ ताहिलेसौंपोका
इ॥२२॥ तुरसीताउपरिअवर॥ हजांनांहीकोइ॥ तेजपूंजसमृथधनी॥
इष्टहमारासोइ॥२३॥२८७॥ अथबैरागकौनिरूपन॥ चौपई॥ तुरसी
रेयब्रह्मजाननेंकौं॥ हैउपाइएकत्तान॥ सोबिनबैरागनउपजै॥ याकौ
इहेजुन्यांव॥१॥ साधकहैंसास्त्रकहैं॥ सुमृतिहूंकहैंसोइ॥ तुरसीबैराग
नयेबिन॥ ब्रह्मग्याननहीहोइ॥२॥ तुरसीब्रह्मग्यानकेंनयेंतें॥ अपनेंसु
कदिषिदेह॥ सोबैरागबिनहोइनहीं॥ सबकौंनिहचौइह॥३॥ तुरसी
जेआगेंसाधूभये॥ तेऊरागयेयौंभाषि॥ अबहैंआगेंहोंहिंगे॥ सबकीएकै
साषि॥४॥ चौपई॥ बैरागबिनिजपतपकरैकेतै॥ तीरथहूंन्हौजपु
जेते॥ बैरागबिनजग्यकरैअनेक॥ पोथेतुषवतबिनाबिबेक॥५॥ सा
षी॥ तुरसीबैरागबिनतिहूंलोकके॥ सतदेष्योब्यौपाइ॥ अंतबंतफ
लदेंनकौं॥ उदेनयेहैंआइ॥६॥ तुरसीबैरागहीनलैं॥ आहिजुरतनअ
मोल॥ औरसकलसुषकंकरे॥ परेरहौज्यौंटोल॥७॥ चौपई॥ तुरसी
सोबैरागधौंकौंन॥ जामैंबिषयाभासैंबौंन॥ अरुउपजैउरआतमग्यान॥
बिशेषकरनद्वैतबिलीमान॥८॥ साषी॥ तुरसीएकअपरपरषौंजुए
का॥ आहिजुउत्तेप्रकार॥ बैरागकीबिधिजुगतिए॥ कोजांनैजांननहा
र॥९॥ तुरसीपरलकौजुहै॥ अपरलोमिकातीनि॥ वालोमानिसंजुगति
यहा॥ चारिप्रकारजुचीन्हि॥१०॥ तुरसीतेलोमिकाकै॥ तिनितिवि
मोहिबताइ॥ जाजानेबैरागयहा॥ अतिआरूढहोइआइ॥११॥ जतमा
नआदिद्दीजुइक॥ अंतिलोमिकजांनि॥ बसीकारसिधिकरनकौं॥

तुरसी लेकुं प्रवांनि॥१४॥बसीकार बैराग यह॥अपर रहरि बिषया भोग॥स
बहुरी उलटी नहुं॥बकु रिनधरें संजोग॥१५॥बिषया या बालोक की॥
बिष बबेनलों बिसारि॥उलटि अचल तउ रहीन को कउ धारि
॥१६॥ज्ञो मिका कर मजेउपजे॥ग्यह बैराग बिधान॥के सक्ष संग गुरु कि
या ते॥और उपाइ न आन॥के पूरब ले पुनि ते॥जो मूत हो इन्द्र मन॥तु
रसी हद बैराग यह॥इष सुष करत समान॥१७॥तुरसी या बैराग की
महिमा बरनी न जाइ॥जौ तो मी निजि उपनां॥ता हिस केन को कउ डिगा
इ॥१८॥तुरसीपर बैराग कों॥ये सब साधन जोइ॥जतमान आदि बसीका
र लों॥संतनि बरने सोइ॥१९॥तुरसी चार स्यों जग मांही॥चा स्यों बेद भन
र॥चौ दात मैं लोक मैं॥एई साधन सार॥जिनि साधिक संतनि जुजि
न॥लीये जुगत उरधारि॥तिनकें पर बैराग भयो॥कुणि तर रही न लगार
॥१०॥तुरसी पर बैराग यह॥जे सें जतनि सिधि होइ॥सोई सोई जतन
जु करे॥आर ति पीति संजोइ॥११॥तुरसी पर बैराग यह॥सिधि करन
के काज॥जवमान आदि संतानि कौ॥बिधि बिधि कर कइलाइज॥२०
॥अथ जतमान संग्यां बैराग बिधान॥१॥तुरसी या संसार में॥सार असार
जु कौंन॥ता हि मिनि मिनि बीपाव कुं॥गहे नर हो मुष मौन॥२॥तुरसी
मौन गहै कछु कौं बनै॥यह देह ही पी सोइ॥जावत सार असार ए॥ मिनि मि
नि लषे न दोइ॥३॥तुरसी गुर सास्त्र और गाहि कैं॥मिनि मिनि बीपाइ
यह जु सार असार यह॥ता हि लेकु नीकें निरताइ॥४॥तुरसी सार स
सार असार यहें असु बियह देह॥गुर सास्त्र सब ही निकी॥निज कहि
निह चौ ये हा॥५॥तुरसी गुर सास्त्र सब ही कहें॥संतकुं आषें येह
सो चि बिचार कर ये॥तो रिबिषे कोनें हांपा॥जावत कच बैराग है
कूर पराइ॥तुरसी जावत जतन करि॥रही ये नहीं अलसाइ

२८ कहैताहि॥७॥ औसैंजक्षजतनजुकरता॥ जुगातहोइबैराग॥तुरसीसंग
कुसंगकौ॥ तबताहिलगैनदाग॥८॥ जावतजगतकेसुषनिमैंस
मझतहैजनसोइ॥ तावतबिकतनयारहै॥ तौमुक्तउबरनहोइ॥९॥
॥चौपई॥ जावततनमैंरोगजनावै॥ तावतपथमोजनजोपावै॥ र
हैबैदकेकहैजुमांही॥ तौरोगीकोरोगबिलाही॥१०॥ जावतकर्के
कायाकैमांहि॥ कामक्रोधकीलागेनांहि॥ तुरसीतावतजतनबिसा
रै॥ सोनिश्चैजनमआपनौहारै॥११॥ तुरसीकचबैरागजुऐसो॥ आ
वेकागदिष्यविरतैसो॥ बिनोजतनकीयेंसंगहोइजाइ॥ समझिदे
षइहेउतमउपाइ॥१२॥साषी॥ कचबैरागीकायाकी॥ कसनीदे
षिटकाइ॥ षानपानबीतैदिवस॥ सोवततरजनिबिहाइ॥ बिरकत
तापकरैनहीं॥ मन मनसाउलटाइ॥ तौतुरसीतानिलजकौ॥ कैसेका
जसराइ॥१३॥ बैरागीबैरागलें॥ मनतारबकजकोइ॥ तुरसीजावतना
मिटै॥ रागदोषरियहोइ॥१४॥ बैरागीबैरागलें॥ सतकोउकरकुगुमा
न॥ जावतनैनमैंबसैं॥ नरनारीकौध्यान॥१५॥ जावतस्वपनहूंचितच
लै॥ जुगवतबिषयासोग॥ तावतकचबैरागहै॥ नहीपक्कयोसंजो
ग॥१६॥चौपई॥ जावतकायाक्रोधजरावै॥ षिनहूंकामदिषावै
वै॥ तावतपकबैरागनहोइ॥ तुरसीसबसाधूकहैसोइ॥१७॥साषी॥
तुरसीआइपरैआनंदउष॥ हरषैअरुमुरझाइ॥ तावतजोगीआप
कहै॥ पककह्यानहिंजाइ॥१८॥ तुरसीलाभहूवैमनमुदितहोइ॥
अलाभैकुमिलाइ॥ तावतजोगीआपकहैं॥ पककह्यानहिंजाइ॥१
९॥चौपई॥ अपकजोगीकेमनमांही॥ सावधानतपजिबोकहीं॥ क
बहूंडारीकबहूंपान॥ तुरसीनरमैंदियोदिमान॥२०॥ कबहूंजोगकर
नकीबिचारै॥ कबहूंभोगानमनमैंधारै॥ कबहूंबस्तीकबहूंबन॥ तक
तहांतकबबिहावैतन॥२१॥ संतसमाधिहैसाधनजाको॥ और उपाइन

हीकछुताको॥जाकेमनहैअपकअपार॥जैसेंबायककोसोनार॥२३॥आ
दिअतिसतसंगमेंरहै॥तौजुधरममादैनबहै॥तुरसीसंतसंगचितजिजा
इ॥वाकोअवसिपतापजाइ॥२३॥तुरसीसाधुसंगतिमांही॥कुसंगति
केदोषनसांही॥ऐसिहीअपकाचामतसोइ॥सनैसनैपरपकअ
होइ॥२४॥साषी॥तुरसीकरतजुजतनयहा॥रहैनदोषबिकार॥क
राबिमलकोजरहै॥तौतोबजतनतरघारि॥२५॥अथचितरैकसं
तावैरागविधान॥२६॥तुरसीजावतरिकैनपकेचिया॥पकननया
बैराग॥तावतकबहूंनकीजियेतवधरितपकोत्याग॥१॥जावतचि
कैनपकेचिया॥मिटैनमनोहबिकार॥जावतजपकरितपकरै
करककछुकपचार॥तुरसीबैगिरहियेनही॥इतनोंहीउतमाबिचा
र॥बैगिरहैरिपबलबढै॥जवनहिहोइपहार॥२॥तुरसीजावतचिकै
नपकेचिया॥थिरनतयामनचित॥तावतकबहूंनत्यागिये॥तपस्या
साधिचि॥३॥त्यागनकीजितपकी॥कसियेकायामन॥कसेंकसेंहोइक
नकतूलि॥तुरसीतपसीजन॥४॥तताईतजितनकी॥मनमनसागल
ताइ॥तुरसीतपसीतपकरै॥तोजरिजाहिकोटिकपाइ॥५॥तुरसीकाय
कसेंबिन॥करमकाटनहीजाइ॥जोनपतीजोतोदेषकः॥कनकतावनि
रताइ॥६॥कसेंकसेंयहकायामन॥कंचनमईहोइजाहि॥तुरसीजोक
सीयेनही॥तोकाचहैतैकछुनांहि॥७॥तुरसीकरताजानिकें॥कायाक
सैंजुकोइ॥सोजनकरताकोंमिलें॥कोटिकलंकहिषोइ॥८॥तातैंतपबैरा
गकरि॥अंतितअतित्याग॥तुरसीजोगजुगतिगहि॥तबसिधिहोइ
बैराग॥९॥तुरसीतपबैरागमहि॥तनमनकीगतिसोइ॥कसकसकं
चनहोइ॥काचकहैनहीकोइ॥१०॥जोनिमारिनरतपकरै॥कामको
धअहंकार॥तुरसीऐसेतपकरत॥खुलहिमोषिकेद्वार॥११॥स्वरीनबा
चैतपकरत॥नानरकतेडराइ॥
तिसबासुरिनरहरिजपे॥मनवः

त्यतनपणनगाहि। कसिकायामनपान।
है दहहोर बिलीमान॥१२॥ करैतपतनमनहिव
तुरसी बांछेनपदईसुष। सोपदमांहिसमाइ
तुरसीतपतेईततसार। जोसाधेरजतमहोहिबार।स
है आगेतुरपदलागेचाव॥१५॥ साषी॥ तुरसी
तेउनैबिनास। रजतमकी वृतिनारहै। बाढेस
उपजै। रजतमकोपरसाव। जनतुरसीता
१७ राजकाजसुषकारनें। कायाकसेजुकोइ
हारतसोइ॥१८॥ चौपई॥ सतगुरकुभिसा
करैतपस्यातनमनगाडि। तातपमेंउपजेअभिमान। च
न॥१९॥ कोलागुषधीतातपकेरा। जदोउप
तुरसीसुषमांतिनदरसाइ। तपतिघनेरबढती
है बिचारिकें। तुरसीतपसीआइ। जगतिजां
तिनिकटिनजाइ॥२०॥ सतगुरयाधूसाष्त्र। सब
तपसीतपकरैं। तबहतनकहियेसार॥२१॥ सतिस
निकाइ। वीनोंकीतपस्याकही। करैजग
होइजाइ। तुरसीत्रिगुनप
लपरीगको रजमांऊ
इ॥२७॥ तुरसीज
बाडेचि
तजेम

काल॥तातेयहमनजीतिये॥गहिबैराग्यनिराल॥४॥कांत्यागोंतुछतनबि
तो॥मनकोबिनोअपार॥मनबिनीजोपरहरै॥सोत्यागीत्रिभुवनसार॥५॥
चंचलतासबत्यागिकें॥जबमननिस्चलहोय॥तुरसीतबबैरागमेंकगी
नपरईकोइ॥६॥चौपई॥तुरसीतनकीमायात्यागी॥तेकबैरागीहैंबडभा
गी॥मनमायाकोंतजिगयैसोइ॥तिनिसमानत्यागीनहीकोइ॥७॥साषी
त्यागीतेईजानीये॥जिनयहमनबसिकीन॥तुरसीबैरागलीयेंकां॥चित्तनि
निजलाहालीन॥८॥इंद्रीबसितबजानीये॥जबमनबसिहोइमांहि॥तुर
सीमनबसितयेबिन॥इंद्रीबियरिजांहि॥९॥इंद्रीबसितबजांनिये॥मन
बिषयानिटकाय॥तुरसीत्रिष्णांरहितहोइ॥रहेसंतोषसमाइ॥१०॥ ८०
॥अथसीकारसंज्ञाबैराग्यविधान॥ध॥बेसीकारबैराग्यहा॥आदिमधि
अरुअंत॥तुरसीआगेबरनऊं॥सुनोंसकलईसंत॥१॥अनाप्रितिआसन
करै॥अद्रिष्टिलावैचित॥तुरसीबिसरैबिषेसुष॥सोबैरागीबिरकत॥२॥
सुषमायामांगैनही॥मनमुकलाइनदेइ॥अनबंछीआगेंपरै॥हरिजनत
जनलेइ॥३॥लेतोप्रतिबिपतिग्रही॥देतोफुनिसुगंतत॥तुरसीकबहुले
हैनही॥सोकहियेनिजसंत॥४॥भोजनसोजनसहजमें॥दरसैंदीनदयाल
॥तदसमाइसुलीजिये॥अधिकोप्रतबिकाल॥५॥गीत॥कौडाउतपनिहोइ
इतौपुनिधातनराषे॥सोबैरागीसार॥बेदसुमततयोंभाषे॥बिषयारसबीस
रै॥इकतबिचरैनहदावै॥बेहदपदगलतान॥तासतुरसीवलिजावै॥६॥
भोजनसोजनरुचित॥इतौअंगीकृतकरावै॥जितौसतगुरफुनिसंत॥
बेदबिधिजुगतिबतावै॥अनरुचसौनाआचरै॥अधिकसंग्रहनबढावै॥
तासपतियहमांहि॥तनमततुरसीगावै॥७॥चौपई॥कायककोऊकरम
नकरै॥जाकीयेंजुगबंधनपरै॥बायककोबिसरैबकवाद॥तजेरंमबिस
हि॥मनबचकरमनिरयेनिरकार॥सोबैरागीत्रि—

तजै निरंजन देव ॥ १० ॥ तुरसी सब साधू कहै । सास्त्र हूं इ है कहा हि । काष्ठबा
च निहकलंक रहै । बैरागी सो आहि ॥ ११ ॥ काष्ठबाच निकलंक बिना ।
बैरागी ह्वै कोइ । तुरसी बारूसी तिलौं । अति बिरूचै सोइ ॥ १२ ॥ तुरसी
यह तौ यौं नदी । यह तो षांडे धार । काष्ठबाच दृढ निरबहै । तौ ही पावै पार
॥ १३ ॥ अहनिसि अपने हाउर मैं ही । रहै एम यौं लाइ । तुरसी देषि सकामसु
ष । सिंघ हूं स्यौं षराइ राइ ॥ १४ ॥ बिषया देषै बवन सामि । बिषक नका लौं
सोइ । तुरसी देषि देषि जु डरै । र हा नयानक होइ ॥ १५ ॥ साधनकौ कं उष
रूप संसार यह । महा नयानक रूप । तुरसी पावन दाजियै इ तौ हौ अ
रथ अनूप ॥ १६ ॥ साधनकौ करनी इहै । इहै साषि सिधि जोग । तुरसी दा
स बिषबवन लौं । बिसरि बिषै के नोग ॥ १७ ॥ चौपई ॥ जो आरति होइ पूछै
मो हि । तौ उत्तम ग्यान सुनाऊं तो हि । बिषै सुष बवन लौं बिसारै । तौ या ही
तन धरि आपा तारै ॥ १८ ॥ साषी ॥ ज्यौं कंचुकी उतारि कैं । सयन करै सनेह
तुरसी यौं हरि मिलन कौं । हरिजन त्यागै ग्रेह ॥ १९ ॥ देह ग्रेह संसार की । जि
ती कसगाई आंन । तुरसी गाई रही नरक उरतैं उषरि अमान ॥ २० ॥ बैराग ली
यौ तब ही सुफल । बिसरै बिषफल दोइ । एक कनक अरु कामनी । चित
मैं रहै न कोइ ॥ २१ ॥ तुरसी उनै नि कौ अनुराग यह । होइ निपटि निहराग ।
मनसा बाचा करमना । तब कहियै बैराग ॥ २२ ॥ त्यागी तेई जानियै त्रिभुवन
सोइ ॥ जिन त्यागी बिषबवन लौं कनक कामनी दोइ ॥ २३ ॥ कनक काम
नी आदि यै । जिते कइंद्री सुष । स्वर्ग मृत्ति पाताल के । बरनै बेद निसुष । तु
रसी बैरागी सोई । त्यागि रहै होइ निरुष । निपट निरमूल करि तिनैं तब
कहुं सदा निसुष ॥ २४ ॥ ज्यौं जल स्यूं रूष उपनी । जल ही मां रहाइ । जल
त्यागै जीवै नहीं । अरथ इ तौ ही आहि । यौं बिषैन स्यौं मन नर्यौं । सुरति सु
मृति ज्यूं कहाहि । तुरसी सो मन तब मरै । जब बिषै रह त होइ सां हि ॥ २५ ॥ बि
षै त्यागै त्याग जु सोई । और सब त्याग अत्याग । तुरसी बिषै जु त्यागियै । वौ
उर होइ अदाग ॥ २६ ॥ अलब धबस्त कौ पाइबो । उनि ता जतन कराइ । जो
ग बैम जानौ जु यह । संत निदीयै दिषाइ । अन उनैन स्यूं रहि मैं होइ । बैराग

नामसोपाग॥तुरसीतस्करचोरनये॥ताहिकबहुंनदरसाय॥२७॥विंदा
श्रौदुषकलेसकौ॥घरस्वारथबनकौ॥तुरसीताहिस्यागैफिरै॥त्यागीक
हियेसोइ॥२८॥तेईपावैंपरमसुष॥दावैरचैनांहि॥तुरसीनिरदावैरहै॥उ
लटिश्रापमांहि॥२९॥तुरसीनिरदावैगुहा॥तहांकरहुंश्रारंभ॥निरदा
वैसुषपाईये॥दावासौंकांकांम॥३०॥निसप्रेहहोइनांवले॥जगनिरदावै
होय॥तुरसीजोगकीबारता॥श्रैसेंश्रापेंजनसोय॥३१॥केएकाग्रचितक
रिसाधिश्रभ्यासजोग॥केबिरकतबैरागगहि॥परहरितांनांतीग॥३२॥के
सरधासंजुगतिसद॥सेइतनात्रिनिहकांम॥केग्यानीनिरबैरहोइ॥देषि
सकलघटरांम॥३३॥येचतुपंथसंतनिकहे॥मेटनकौंसगवंन॥तुरसी
श्रौरउपाइहै॥नांनांबिधिकेमत॥३४॥बीतरागबैरागबिन॥मिटैनमन
कौसोक॥ताबेकोटिजतनकरौ॥नरगौलोकालोक॥३५॥चौपई॥केकरि
बौसंतनकौसंग॥केबनमैंबिचरिबौश्रसंग॥केसाधिबौश्रभ्यासार॥के
समझिबौसांषिसबिचार॥३६॥तुरसीएनरधरिहजसमंत॥रांममिलनकौ
दरियापंथ॥जनिजोगीनिश्रपनेउरधारे॥तेजुगजीतिविजलोकसिधा
रे॥३७॥तुरसीयहत्रिपतिकौकांम॥श्रत्रिपतिकौंनाहिनश्रारांम॥ग्यानसंपू
रनकामजाकौ॥सोबनमैंबिचरैएकाएकी॥३८॥श्रैसाधिकसहमनधरै
एकाकीबिचरनकीकरै॥सोतुरसीताकोहोइनंग॥बिनप्रसेपूरनसंतसं
ग॥३९॥सापी॥एकाएकीबीचरिबौ॥सिधिबनिश्रावैबीर॥साधिककौंसो
नैनहीं॥जाकोमनश्रथीर॥४०॥एकाएकीबिचरिबौ॥ताहिनलेबनिश्राय॥
तुरसीजोपरिपकजन॥रहैनकबहूंरिफाय॥४१॥जाकौमनश्रस्थिरनयो
मिटिगईदुगंधिदुरास॥येकाएकीबिचरिबौ॥तुरसीसेनवतास॥४२॥चौ
पई॥नवजोवनाजुनारीश्रावै॥ताहिदेषिमननहींडहकावै॥तुरसीश्रैसा
कोऊहोइ॥निसंगितिरनैबिचरैसोइ॥४३॥सापी॥तुरसीसंगकुसंगको॥
ताहिनलगईरागजी॥श्रैसीपकबुधिबरतई॥
॥४४॥तुरसीउतमबैरागयह॥जामैंरागनदोष॥सम

गहै सब दिढ संतोष ॥४५॥ तुरसी उत्तम बैराग यह तापै बेद पुरान । सत्रु मित्र
सब ही लख्यौ हू वार है समान ॥४६॥ तुरसी उत्तम बैराग यह है अपनी हू
व्यापै ना बेरि रहै जल चलौ उभि बंधन नाही कोइ ॥४७॥ तुरसी उत्तम बै
राग सहा चित्त उलटा उर धारि । बिषया या वा लोक की बिषवत लौं बि
सारि ॥४८॥ इंद्री अपनें बसि करौ का चाहै औरानि । तुरसी बिषया पर
हरौ करि जरनिर मूरांति । इतें माहि सब सुष है इतें माहि सब ग्यान इते
माहि बैराग है इतें माहि सब ध्यान ॥४९॥ सिधिन बांधै सुपनहूं रिधि मैं चित
न देइ । जिन हरि हीरा पाईयो कंकर कौ का लेइ ॥५०॥ कंकर का चक थीर
वृत मिथ्या यह संसार । तुरसी हरि द्रिढ जानि कैं संतन करै संचार ॥५१॥
तुरसी त्रिष्णा त्यागते तन मन मैं सुष होइ । ता सुष के अंस हू समि नही
त्रिभुवन सुष सोइ ॥५२॥ तुरसी त्रिष्णा त्यागते जो सुष उपजै आइ । सुष
सोई और आहि अस सुष संत कहै समझाइ ॥५३॥ तुरसी उत्तम त्याग जानि
तब जब ऐसा होइ आइ । धरै दसा जड भरथ की बिचरै सहज सुताइ ॥
॥५४॥ तुरसी कौ ऊ दुष वो सुष वो कोऊ कोऊ धरौ सिर सार । नरथ दसा
तब जानियें जब उपजै नहीं अहंकार ॥५५॥ देह दसा नरथरी की नरप
पिता कौ त्याग । तुरसी ये तब पाईये जब प्रगटै पूरन भाग ॥५६॥ देह दसा
नरथरी की धरै कौ क बिरला दास । अलप असन कुत सत बसन गिर
कंदर तर बास ॥५७॥ चौपई ॥ हंस रूप बनवासी संत । राषि रहे गिरतरवा
स एकंत । महा मौनि को करै उपाइ । मन मन सा तन मैं उलटाइ ॥५८॥
साषी ॥ मन मन सा उलटौ कौ करै अपने उर अस थापन । या आ रस मै परि रहै
राति दिवस एक तान ॥५९॥ तुरसी बैरागी सोई नगर हू सोई जान जिन
कैं मौनि उपाइ यह और नहीं कछू आन ॥६०॥ कहा बन न बस्ती हू कहा कहा
गिर गुहा जु गाम । तुरसी संत कहौं रहौ जे जो सा है इकाम ॥ दोहा ॥
तावै बस्ती तावै बन तावै हाट बाट निज जन । जिस प्रेही निरदापै है ॥
तुरसी कहु रहौं तवसोइ ॥६१॥ साषी ॥ काम कलपना मिटि गई अरु मै

निजरूप होय॥ तुरसी संत कहे रहे हैं [illegible]

मनी माने सकल सिंगार मैं कसोर [illegible]

कप्या उपजै नही॥ ते काम की लगार॥ तुरसी मैं [illegible]

रा॥ ६ ॥ आसुष की नहीं अस सुहा॥ [illegible]

जना॥ बिचरै बिगत सनेह॥ ७ ॥ तुरसी पर [illegible]

बोना सदा सुतत्री होइ मैं॥ सो असी तप [illegible]

हा॥ पिषै काष्ट पषोन॥ के चन मोने का [illegible]

अया हि जिबु धि बिसरि॥ बिचरै बिदेह [illegible]

को एह स हनोन॥ ६ ॥ तुरसी पक बैराग [illegible]

कै उपजै सदा॥ मैं हैं गरब [illegible]

रसा ग्रम्म तिं त अहल जु होइ रघा [illegible]

बिन चित चलै॥ कनक अय धरी को [illegible] तुरसी [illegible]

सो द्रष्ट न ही कल्पनां का पाँ [illegible]

ध्री॥ जाके यह आराम॥ ३० ॥ हे तन का [illegible]

सो संन्यासी सो ध्री [illegible] यह मत॥ [illegible]

हि सन्यासी श्रुति नहि कहै॥ जन तुरसी [illegible]

जितहोइ॥ ३४ ॥ प्राणायाम करि मन को [illegible]

या कों कहि रायै हाथि॥ बहै नहीं [illegible]

जु धरे सो संन्यासी श्रुति उचरै [illegible]

मनो सो [illegible] तुरसी [illegible]

[illegible] जिन [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

१३ लपलफुनिताखै॥ तुरसीमनकरमबचन॥ यहजुजतनहिहोई॥ जतीज
तनथिरहोइ॥ धरमप्रतिपालैसोई॥१३॥ पांनीपीवैछांनि॥ त्तिब्याकरिनो
जनपावै॥ पायधरैपंथदेषि दयाहिरदैउपजावै॥ सतिबचनउचरै॥ मि
थ्यामुषबोलैनांही॥ येआचरनआराधि॥ रचैअपनेउरमांही॥ सामता
रानबिचारि॥ इहिजुमारगमनलावै॥ तुरसीऐसाजती॥ आपतिरैऔ
रनितिरावै॥१४॥ त्रियाकेमुषबचन॥ सुनैनहीरुचिकरिकांनां॥ उनैलो
इनांउलषि॥ धरैअभिअंतरिध्यांनां॥ रसनाकेरसतजै॥ गंधमधिमननब
हावै॥ घरीघरीपलछिन॥ सुरतिलेलेउलटावै॥ गुह्यजिइंद्रीकोंजीति॥
जुगतिरतहोइपदमांही॥ तुरसीऐसाजती॥ बकरिजुगिजनमेंनांही॥
१५॥ जंत्रमंत्रबेदंतकरि॥ गानकहतिकरिसोइ॥ उदपूरनांकरतहैं॥ तै
तौजती नहोइ॥ हैअजतीअस्वरजुनर॥ संतबषांनैसोइ॥ तुरसीदोजग
परैंहगे॥ तामैसंकनकोइ॥१६॥ जतीजुनांमकहाइकैं॥ मनकामनांउपा
इ॥ कदाचित्रियतनचितवै॥ तौबज्रलेपलगिजाइ॥१७॥ जतीजुनांमकहा
यकैं॥ करकौडीनहीलेइ॥ तुरसी तौइंअंतरा॥ लेकरिऔरनिदेइ॥१८॥
लेबेकीइच्छानहीं॥ दुबादिकनिकीकोइ॥ तुरसीदेबेकुंकीनहीं॥ साचा
जतीजुसोइ॥१९॥ देइतौफलसजमबढे॥ लीयेंपतितयहहोइ॥ तुरसीकछु
लेदेनहीं॥ साचाजतीजुसोइ॥२०॥ चौपई॥ जौकबसहजिद्रिष्टिपरैंना
री॥ तौपेषैअपनीमहतारी॥ पैमलिनताउपजावैनांही॥ तुरसीमनक्रम
बचनजुमांही॥२१॥ वहत्रियहतरमिलापषांन॥ बिसरिगयायहबा
नीतांन॥ तुरसीसोईजतीपरवांन॥ जाकेएकहीआत्मध्यांन॥२२॥ तुरसी
ऐसाजतीनरेस॥ जहांकोंरमैंसो॥ धनिवहदेस॥ धनिवेलोगधनिवैयांम॥
धनिवैअसथलजहांआरांम॥२३॥ २५५॥ अथसतीकौपारिक्षलछ[illegible]
॥१॥ तुरसीसतीसोईसंसारमें॥ आदिअंतिमधिऐं न॥ जतीजननिकेच
नकी॥ हवारहैरजुरैन॥ तुरसीसतीसोईसंसारमैं॥ चितचलबिचल
तास॥ सतबतगाहेंहवारहै॥ दासनिकापदास॥२॥ चौपई॥ सुधचि

तहोइ करि सेवा करै। सकल सामग्री आगे धरै॥३॥ वार है दास निका दास। सं
त सती जन आपैं तास॥४॥ जाजन तो जत बानी पानी॥ श्री चित सहित ले मि
लै नु आनी॥ जती जन निकी सेवा करै॥ तुरसी सो जु सती उर धरै॥५॥ आइ
आगाऊ आगे ले उपलत नरि पाछा पावन देह॥ तुरसी धरम धजा सो सती
आदि अंत निबहैयो जती॥ माया मायामें रहै जु ऐसैं। ज्यौं जल मांही कंव
ला तैसैं॥ तुरसी लिपत न कब हू होइ। सती सुलछिन जगु येजो इ॥६॥
॥साषी॥ परतिरिया परसै नहीं॥ परधन हरै न चुष॥ मास पराये नाहि न
मिथ्या न बोलै मुष॥ पर निंदा पर बाद करि॥ रेइ नैंका हूं दुष॥ तुर
सा सती जन॥ पावे सदा ति सुष॥७॥ जु वा बिस न बिसारि कैं॥ म
रस करि लेइ॥ स्वरान अचै वे सब ग्रंह॥ परहक चित न देय॥ हते
पर आतम॥ न्याइ सुपथ खिचरे॥ तुरसी ऐसा सती जन॥ मा
नत्रेय॥८॥ कहा अपनी कहा पार की॥ त्रिय स्नपन रांचंत॥ उम
दह ले नहीं॥ सुष मैंन उमगीय रंत॥ संपत्ति बिपति समांन चित॥ अ
अंति रषंत॥ तुरसी साचा सती सो॥ न करि न जगु जां मे वा॥९॥
पासन उर धरै॥ अनि न होइ न जै रांम॥ सत गुर पद बंदव करै॥ साध सं
गति आरांम॥ केस न से संसार सुष॥ छाडै सकल सकांम॥ तुरसी ता
व गा कौं॥ आनंद आगें जा मैं॥१०॥ चौपई॥ पापे कहु सुदिन होइ
आवै॥ अन पायें बिसमैं न जनावै॥ संपति बिपति चित रहै समान॥ तुर
सती जु येस हनांन॥११॥ गदे देषै नां नूं समि सो॥ वाचि बसे जु तुये गा
जोइ॥ तुरसी बिना नगाति नि हकांम॥ तहां न रचै एकौ जांम॥१२॥
उदासी ना हि नेह॥ कहां ये हक हां आदि बरे ह जु एह॥ तुरसी एमत जि
रहै जु न्यारा॥ त्यागैं कोकट प्रसैरा॥ १३॥ तुरसी ऐसा सती जु सो
ती जननि का संगी जोइ॥ सहया ला वह असवारा॥ पहुंचै येक मो छि
दरबार॥१४॥ ॥रपइण॥ आपसमरथाई कोपरिकरन॥१७॥
रि क्रपा बिन॥ कोडी का न हिं जीव॥ जन जन कौ जांचत

३३॥ लपलफुनितासै। तुरसीमनकरमबचन। यहजुजतनहिहोई। जतीज
तनथिरहोइ। धरमप्रतिपालैसोई। १३। पांनीपीवैछांनि। त्रिब्याकरिनै
जतपावै। पायधरैपंथदेषि दयाहिरदैउपजावै। सतिबचनउचरै। मि
थ्यामुषषोलैनांही। येआचरनआराधि रचैअपनेउरमांही। समता
ग्यानबिचारिइहिजुमारगमनलावै। तुरसीऐसाजती। आपतिरैऔ
रनितिरावै। १४। त्रियाकेमुषबचन सुनैनहीरुचिकरिकांनां। उनैलो
इनांउलटि धरैअभिअंतरिध्यांनां। रसनाकेरसतजै। गंधमधिमननब
हावै। घरीघरीपलछिन सुरतिलेलेउलटावै। इहजिइंद्रीकौंजीति
जुगतिरतहोइपदमांही। तुरसीऐसाजती। बकरिजुगिजनमैंनांही
१५। जंत्रमंत्रबेदंतकरि। ग्यानकहूतिकरिसोइ। उदरपूरनांकरतहैं। तै
तौजतीनहोइ। हैअजतीअसरजुनर संतबषानैसोइ। तुरसीदोजग
परैहजो। तामैंसंकनकोइ। १६। जतीजुनामकहाइकैं। मनकामनांउपा
इ। कदाचित्रियतनचितवै। तौबज्रलेपलगिजाइ। १७। जतीजुनामकह
यकैं। करकोडीनहीलेइ। तुरसीतौकंस्वंतरा। लेकरिऔरनिदेइ। १८।
लेबेकीइछानही। देबादिकनिकीकोइ। तुरसीदेबेहूंकीनही। साचा
जतीजुसोइ। १९। देइतौफलस्वजसनहै। लीयेपतितयहहोइ। तुरसीकछु
लेदेनही। साचाजतीजुसोइ। २०। चौपई। जौकबसहजिद्रिष्टिपरैना
री। तौपेषेअपनीमहतारी। पैमलिनताउपजावैनांही। तुरसीमनक्रम
बचनजुमांही। २१। वहत्रिययहतरुमिलापषांन। बिसरिगयायहबा
जीतांन। तुरसीसोईजतीपरवांन। जाकेएकहीआतमध्यांन। २२। तुरसी
ऐसाजतीनरेस। जहांकोरमेरु। धनिवहदेस। धनिवेलोग। धनिवेयांम।
धनिवैअसथलजहांआयंम। २३। २५५५। अथतुरसी [illegible]
न। जत्तामननिकेच

[illegible]
रनकी। कुवारहैरजुं
नता गहेह

तहोइकरिसेवाकरै। सकलसामग्रीआगेधरै॥ह चारहेदासनिकादास। सं
तसतीजन आयेंतास॥३॥ जोजन तोजनवानीपानी॥ पीछिसहितलेपि
वैनुआनी॥ जतीजननिकीसेवाकरै॥ तुरसीसोजु सतीउधरै॥४॥ आइ
आगुकआगेलेगमलनरियाबापावनदेह॥ तुरसीधरमधजासोसती
आदिअंतिइजेयौंजती॥५॥ मायामायामेंरहेजुऐसें॥ ज्यौंजलमांहीकंव
लातैसें॥ तुरसीलिपतनकबहूहोइ। सतीसुलछिनजगुयेजोइ॥६॥
॥साषी॥ परतिरियापरसैनहीं॥ परतनहरैनचूष॥ ससपरायेनानषै
मिथ्यानबोलैमुष॥ परनिंदापरबादकरि॥ देइनकाहूंदुष॥ तुरसीऐ
सासतीजन॥ पावैसदगतिसुष॥७॥ जुवावीसनबिसारिकैं॥ मनत
रसैकरिलेइ॥ स्वरानअचवैस्वप्नहूं॥ परहककिंचितनदेइ॥ हतैनहीं
परआत्मा॥ न्याइसुपथविचरेइ॥ तुरसीऐसासतीजन॥ पावैगासु
षप्रेय॥८॥ कहाअपनीकहापारकी॥ त्रियसूपनरंचैतनु॥ सबदेषि
देहलेनहीं॥ सुषमेंनउमगिपरंत॥ संपत्तिबिपतिसमाननित॥ आदि
अंतिराषंत॥ तुरसीसाचासतीसो॥ बकरिनजगुजोमंत॥९॥ आनंद
पाकनउरधरै॥ आमिनहोइनजेरंम॥ सतगुरपदबंदनकरै॥ साधुसं
गतिआराम॥ कैसनेससंसारसुष॥ छाडैसकलसकाम॥ तुरसीता
सेवगकौं॥ आनंदआगेंजामें॥१०॥ चौपई॥ सायेकचुस्तदिलनहोइ॥
आवै॥ अनपायेंबिसमैंनजनावै॥ संपतिबिपतिचितरहेसमान॥ तुर
सतीजुयेसहलांन॥११॥ रहैदेयेंनांनूंसमिसोइ॥ बीचिवसेजुसुयंगा
जोइ॥ तुरसीबिनसगतिनिहकांम॥ तहांनराचैएकैजांम॥१२॥
उदासीनाहीनेह॥ कहांयेहकहांआदिबदेहजुएह॥ तुरसायंममनजि
रहैजुन्यारा॥ त्यागैफोकटप्रसंग॥१३॥ तुरसीऐसासतीजुसोइ चं
तीजननिकासंगीजोइ॥ यहपालावहसबसवारा॥ पहुंचेयेकमोछि
दरबार॥१४॥ २पद्दए॥ आपसमरथाईकोपरिकरजे॥५७॥ हर
रिकृपाबिन॥ कौडीकानहिंजीव॥ जनजनकौंजाचत

॥ ९ ॥ बुरी भलीसमझै नही ॥ रहित विसरजनदेह ॥ तुरसी तुरीया तत्त्वम
हि ॥ नायबसायाग्रेह ॥ १० ॥ मरैसुबकसोनामरै ॥ जेरसुफुनिनआहि
तुरसी फिरैसुनाफिरै ॥ मिलेमहापदमाहि ॥ ११ ॥ जेजीवतमृतागतये ॥
तेफुनिमरहिनबीर ॥ तुरसीसुषमैहोइरहै ॥ जुगाजुगासदासुथीर ॥ १२
मृत्युमृतगकीअवस्था ॥ जीवतगाहैसोइ ॥ तुरसीजुगिजुगिथिररहै
है मरैनकबहूसोइ ॥ १३ ॥ मृतकैमोहजुनही ॥ द्रोहनहीकुनिकाहि ॥
तुरसीइदीनउलहै ॥ जौत्रियबैवैबोहपाहि ॥ १४ ॥ चौपई ॥ जबलगक
बुक हावैजीव ॥ तबलगउदैनसुषकीसीव ॥ जबतुरसीनाहीहोइजा
इ ॥ तबनिहचैसुषमाहिसमाइ ॥ १५ ॥ साषी ॥ हैताजिनाहीकैरहै ॥ तिनको
त्तेनहिकोइ ॥ तुरसीकछुकहावसी ॥ मारषांहिगेसोइ ॥ १६ ॥ हैसोपरह
रिबावरे ॥ नाहीस्योकरिनेह ॥ नाहीनिहचलरहैगा ॥ हैसोकैहैषेह ॥ १७
नाहीनयेसुतिरिगये ॥ भवजलपैलीपार ॥ तुरसीजोकछुहोइरहे ॥ ते
बूडेमझधार ॥ १८ ॥ नाहीकोंगाहरघनी ॥ हैकोंनहीलगार ॥ नाहीनिर
तेघरिमिले ॥ हैमैंनयेबार ॥ १९ ॥ नाहीन्हतेषेलहै ॥ हैतहांतेंअधिका
र ॥ तुरसीनाहीकैरहो ॥ अपनेरामममकार ॥ २० ॥ जहांनाहीहैकछुनाही
हैतहांनाहिनकथ ॥ तुरसीसमझैसंतकोउ ॥ यासाषीकोअरथ ॥ २१
हितहांतेंसत्वहिनिंदे ॥ हैतहांउपतिबिनास ॥ तुरसीनाहीतहांतहां ॥
इतीबस्तकोनास ॥ २२ ॥ नाहीतहांहैअनंतसुष ॥ हैतहांदुषकीरासि
तुरसीसमझैयामतै ॥ ताजनकोसाबासि ॥ २३ ॥ चौपई ॥ हैत्तहांहैतही
हैतहांउपजैबहुरैब्याधि
२४ ॥ साषी ॥ हैअंतरयहबाहरैहारिहमबि
२५ ॥ तुरसीजबइ
इहैत्तगति
उरबासतांउप
अवसथाउ

अस्थांन॥ तुरसी ते पिछांमें गया॥ तब मन मूवा जान॥२८॥ मन मूवा ब
हौरि न जीवे॥ नया आनंद पद लीन॥ तुरसी दास कृत कृत नया॥ जब ऐसे
सा कछु कीन॥२९॥ मैं हो मेरा सब रहा॥ जा वृत मैं जीव रत॥ तुरसी मैं मृत
गत नया॥ तब मैं हो मेरा मिंत॥ मैं हो मेरा अरि कृत॥ जा वृत तउरि अस्थान
तुरसी मैं मृत गत नया॥ जब समचा गुरग्यांन॥३०॥ मैं हो मेरा काल हा॥
मैं हो मेरा जाल॥ तुरसी मैं मृत गत नया॥ तब मैं हो नया दयाल॥३१॥ मैं हो को
मैं पैसत होइ॥ डरपत ता निरसो जा॥ तुरसी बलतो रैनि दिन॥ मनसा के ब
सि होइ॥३२॥ तुरसी मूवा फिरि जीया॥ जीवत नया समांन॥ रोवन हा
री रहि गई॥ मंदिर बगे निसांन॥३३॥ सुमिति सुंदरी जांन पीय॥ आगनि
रूप अहंकार॥ तुरसी जरता उबरया॥ जूरि गये जरावनहार॥३४॥ जहां
सोग तहां सुष नयो॥ दुष जु गयो घर त्यागि॥ विधवा बकरि बकसुजी पा
यो बकरि सुहाग॥३५॥ घरि घरि बहि बधाईयां॥ घरि घरि मंगल चार॥ घरि
घरि अति आनंद नयो॥ सुदरिल सो जरतार॥३६॥ धनि दिहाड़ो धनि घरी
धनि महूरत जांम॥ तुरसी अंदरि आईयां॥ अंतर जांमी रांम॥३७॥
॥अथ चितक पटी को परिकरन॥ ५२॥ तुरसी द्विष्टि अद्विष्टि सब यिकी चू
तक थत॥ बरते कुबुधि सकामता॥ ता ते नमो बिलहंत॥१॥ सुष अथक थे ज
एकता॥ अंतरि बरतें ग्यांन॥ तुरसी दास मन कम बचन॥ लहै न पद निरबां
न॥२॥ चौपई॥ पास भिन हो पापी कलि को॥ कथे एकता बरते दो॥ को
म क्रोध पषि तरि रहि काया॥ कहै ब्रह्म हम हि न माया॥ तुरसी महा मोहि
निरबांन॥ ऐसे सुगयन पावे जान॥३॥ साषी॥ उपरि बैठे अनहित होइ॥ उ
से पलक पलटाइ॥ मो हो मंजारी जु लो॥ मन माया को जाइ॥४॥ पलक मूदि
पापी जु नर॥ बैठे अनिन जु होइ॥ ध्यांन करो भलो तकों॥ पर धन के पर जोइ॥
॥५॥ तुरसी बाहरि नैनां मूंदि कैं॥ रसनां दोवतरि देहि॥ मलक पुटन कों पां
नीयां॥ कांका कांम करेहि॥६॥ चौपई॥ रसनां अग्र रांम को नांम॥ मन में सु

७ जहां जहां सुमिरनये जांनि तहां बघेण भांति परवांनि पलक
मे दिसुमिरनकरहिं ध्यांनधरहिं इक तार मन बिंचे रे बाजार में ता
की सुधिन सार ८ तुरसी तावत त्यू सनी राहेक जुन हि होइ जावत
लिषि लिषि लोक कों अरथ सुनावत सोइ ९ उपरि अनिनजु दे
षिये मादी मति मजाय तुरसी तावत तायत्ति तंकों बिरथा बिधि
आचार १० तुरसी जावत बिरथ है बिबिधि दांन सनांन तावतका
हू गगन कों है मन मांही ध्यांन ११ पहलें मन होइ कें मिलें पीछें हो
हि अघौण अैसें चित कपटीन स्यों तुरसी मिलें जु कोंण १२ जाव
स्वारथ तावलग हसि हसि प्रीति करांहि तुरसी अंत स्वारथ मिटे
घटत घटत घटि जांहि १३ परमारथ की प्रीत री वोर निबा
तुरसी स्वारथ की सुरति पार न पहुंचा कोइ १४
छिपल में तरी वोर निबाह न होइ पूर्ब की छाया लौं
वें सोइ १५ करी कराकों मन मांऊल को लौ राषे कूर
रि जांहि बिषयांत ये हजूर १६
इ जुगति जतन करि दाबिये तो ऊं कंग त क्रिरोग घाव १
मब कूपांव ही चले अंसंतन की चाल
रि हैं हि दयाल १८ दयाधर्म हिरदै नहीं नहीं पेम
यो चाहे रांम कों चले कपट की रीत्ति १९ पहलें न
सत गुरस रनौं लेहिं तुरसी पाछे कपट करि गुरुन
नकरनी तुरसी चे रा द्रिगुषप गटें नांहि
करें तो सरनांन बिचि कहां हि २१
हूं अछिलेस तावत गरक रि तासके
धपकू पनि मैं तिल लेस बो मांहि तुरसी तन पू
ते दै नांहि २२ कसौटी बिचि अइकें
सुध सरीर होइ तब मन भिदे सुबास २४

तपकोलहू बिचिश्राइ॥ तुरसी तबनिनिचिनि होइ। नांवफुलेलकहे
॥२५॥ २६९५॥ अथगुरुसिषदेराकोपरिकरन॥ ५७॥ तुरसी ऐसाको
ऊनामिले। उतमग्यानसुनाइ॥ दुषसमुद्रसौं काढिले। उगति जिहाज
चढाइ॥१॥ तुरसी ऐसाको ऊनामिले। महाउपगारीसोइ॥ आपनउष
सरमहुंसहे। हमहिलंघावेसोइ॥२॥ लंघावई आलिषकें। परेउपर
सलगाइ॥ तुरसी लिंगादिक मिमै। राषैनहि अरगाइ॥३॥ चौपई॥ सबैस
नैमनको निरवारैं। महंमोहकी आरफिनिटारैं॥ नीरषीरलौं निनिचिनि
सोइ। तुरसी करिन्यारा रहै होइ॥४॥ साषी॥ तुरसी हंमढूंढतफिरैं। ऐसा
जोपईये। तौ तवसागरलंघवे। बारनहीलईये॥५॥ तुरसी हंमढूंढतफि
रैं। ऐसा मिलेनकोइ॥ जाकेतनमनमैनहीं। रंचक दोषरिपदोइ॥६॥ तुर
सीहंमढूंढतफिरैं। बिषयांस्यौं न्यारा॥ बिरलाको कपाईये। सतगुजीका
प्यारा॥७॥ जंत्रमंत्र केयाहजी॥ मंक्के जुगमांहीजोइ॥ तुरसीषोजा एमका
बिरलादेष्याकोइ॥८॥ तुरसी जंत्रमंत्रबेदंतके। मानकहतिकेसोइ॥
षोजी हंमदेषेघने। पेब्रह्महितबिरलाकोइ॥९॥ चौपई॥ कूरमलौं इं
द्रीउलटावे। सूरबपरहरिपछिम आवे॥ बिसरिजाइबाजीको दरसान॥ गू
गपूंगहो इरहे अजांन॥१०॥ साषी॥ तुरसी लेंकें जावई। यहमनउनम
नसोइ॥ असमषंतलौं होइ रहैं। तेतौ बिरलाकोइ॥११॥ बिरलाको उपा
ईये। त्रिगुणस्यौं न्यारा॥ तुरसी दासगुनरतयहा। हैजगत्रसार॥१२॥॥
॥२७०७॥ अथहेतप्रीतिसनेहकोपरकरन॥ ५८॥ तुरसी ऐसीप्रीतिक
रिपावस्यौं॥ जैसीचंदचकौर॥ पलहूंइतउतनाटरैं॥ चितवतहीहोइभो
र॥१॥ तुरसी ऐसीप्रीतिकरिपावस्यौं॥ ज्यूंचात्रिगघनहोइ॥ पीवपीव
पीवउचस्यौकरै। निसबासरिनितिसोइ॥२॥ तुरसी ऐसीप्रीतिकरि
पीवस्सं॥ ज्यूंमृगमोहितनांद॥ मातासुतसुरहीबछनि। ज्यूंस्वादीष
टस्वाद॥३॥ तुरसी ज्यूंनरनारीकौं भजै॥ नारीनरस्यौं लीन। ऐसैंप्रीति
करिरांमस्यौं॥ ज्यूंजलसेतीमीन॥४॥ प्रीतिकीजेपीवपाईये॥ तनमन

उजल होइ ॥ तुरसी जो मन मरन का ॥ संसार है न कोइ ॥५॥ चौपई ॥ तुर
सी संसा सब ही नासे ॥ रोम रोम रंकार प्रकासे ॥ ज्यूं रूषे अनप्यासे पांनी
ऐसी प्रीति जो सजे बिनांनी ॥६॥ अंत रहकरै न कंवल जो आहि ॥ प्रीति
कुंचिका षोले तांही ॥ तुरसी प्रीति ही करै प्रकास ॥ प्रीति बिना सब भ्रम
प्यास ॥७॥ प्रीति ही के बांधे प्रभु आये ॥ जुगि जुगि अपने दास जगा
ये ॥ लीये प्रभ सपरिकं बिलगाइ ॥ तुरसी ज्यूं बालक कौं माइ ॥८॥ साषी ॥ तु
रसी प्रीति बिनां प्रभु कौ मिलन दुलभ है संसार ॥ सावैं रहत जिवन
सवौं तन पलटाये बार ॥९॥ सार रहत संसार में ॥ मत ए तौ ही जान ॥ प्रीति
सहेति हरिनाम लैं ॥ तुरसी परहरि आंन ॥१०॥ भूरि भूरि बकृत कमसे
करि करि जतन अनेक ॥ तुरसी कि नहूं न पाईया ॥ प्रीति बिना प्रभु येक
॥११॥ तुरसी नावें रह कूतगान नित ॥ आगा बकूत समलगाइ ॥ निरति सुर
ति लागे नही ॥ प्रीति बिना हरि नाइ ॥१२॥ तुरसी प्रीति सम न साधन कोय
प्रीति सम निभ्रम त आन ॥ प्रीति पकु चावे षांन कौं ॥ लेके प्रम स्यांन ॥१३॥ ताप
ता लोह तुरत ही ॥ संधि रहित मिलि जाइ ॥ तुरसी जो कबधि यल होइ ॥ तौ
बकूरि कसोटी षाइ ॥१४॥ होइ कसोटी ताव लग ॥ जाव त संधि मिलाइ ॥ संधि
मिले जा वसी वकी ॥ तब रूप मांहि बिहोइ ॥१५॥ चौ तुरसी जीव सीव संजो
गयह ॥ मिलवन ज्यौं जल लौंन ॥ प्रीति कसोटी की जियें ॥ नही तौ कारन
कौंन ॥१६॥ ॥२७२३॥ अथ सूरतन कौ परिकरन ॥ ५४ ॥ तुरसी जा सूरात
न मैं सुधि आवै हरिनांम ॥ सो सुरातन नटारिये ॥ अरतैं एकौ जाम ॥१॥ सोई
सूर थिर राही ये ॥ करै सुरति कौं घेरि ॥ तुरसी सुमिरै रांम कौं ॥ पंच महारिप
फेरि ॥२॥ पंचौ बिषरे जात हैं ॥ अपनी अपनी बाट ॥ तुरसी सोई सूर वां
आनै एकैं घाट ॥३॥ काम दहै रम हियाहै ॥ रहै प्रम सुबसोइ ॥ पाव पिछौं
डा नां सरै ॥ तुरसी सूरा सोइ ॥४॥ चौपई ॥ तुरसी कर गहि ध्यांन कमांन ॥ सु
निजु समांहि चान के बांन ॥ होइ आसरू अनेगा हि मारै ॥ ता सूरा कै मैं ब
लिहारै ॥५॥ साषी ॥ मैं बलिहारै सूर कै ॥ जो ऐसा है कोइ ॥ तुरसी अनंग

रिपुमारिकै॥ रघुराम रत होइ॥६॥ सबको कुसल कहा होइ॥ बित्त अपनें ग
त मांन॥ तुलसी पोचें नसिकै॥ सो सब सति जांन॥७॥ सोई सूरमा राहि ये
मांई कों सेवें॥ तुलसी कनक अरू कामनी॥ दोऊ तजि देवें॥८॥ त्रियाच
जे तत खांन गहि॥ कनक हाथ नहीं लेइ॥ तुलसी ताहि प्रभु हंसि मिलें॥
मिलि अपनौ सुख देइ॥९॥ सूरबीर संसार मैं॥ साचे हूं जन सोइ॥ तुलसी म
नमथ मारि कैं रहै जु नर नेह होइ॥१०॥ सूरसु कंचमां नें नहीं॥ कर तको
प्र सों अंग॥ तुलसी ताकों नेंग करि॥ आप न रहै अतंग॥११॥ तुलसी धंनि वे
सूर वां॥ अनिन होइ तजे रंभ॥ काम हिमारि मिटाइ देइ॥ ये सूर के कांम
॥१२॥ कंरि जगया अनंग स्यौं॥ मान बांण ले हाथि॥ तुलसी लरता अंबर है॥
ज धरिय आवै हाथि॥१३॥ तिन तिलक रियम दनकौ॥ जर पनि डारे सूर
तुलसी जंमन मरन तें॥ तब जन ते होइ न सूर॥१४॥ निरमूरन कैरे मदन कौ
अधरि हरि को ध्यांन॥ तुलसी तीनों लोक पति॥ ताकौं बजे निसांन॥१५॥
अमर समान न सूर को॥ जिनि जीत्या सब संसार॥ तुलसी च सब सूर रिखें
जिनकी पीस मर महार॥१६॥ सांवंत सिरसांव व्यों॥ सर हस्ति पीस र॥
तुलसी जित पुर थ्यों नाय हि सब रकायों न सूर॥१७॥ मन जु ऊक पवना [illegible]
मन सबा चु सोइ॥ तुलसी आंगिका मंके॥ क व हु नकायर हीय॥१८॥ धं
मर हैं सब जागत कों॥ कामहि बिरलषकों॥ [illegible] कों मवें [illegible]
हिय बिचेय॥१९॥ तुलसी [illegible] [illegible] कों महिमा
मिटाइ [illegible]॥२०॥ [illegible]
मीर॥ तुलसी [illegible]॥२१॥ [illegible]
सिद्धि [illegible]॥२२॥ [illegible]
मैं [illegible]
कह [illegible]॥२३॥ [illegible]
यह [illegible]
हि [illegible]॥

तौसुरामरिजाइ।तुरसीरनसंग्राममैं।मंडयाज्जुमंगलगाइ।२६।सती
सोईसहिविबैसिकैं।पाडौचित्तकैनाहि।पावकपाणिसमिगिनैं।मन
चित्तपीतममांहि।२७।कोटिआसूषनकोटिसूष।कोटिकबनै
सिंगार।तुरसीव्यसबलणरूपकरि।जरीज्जुपीवकीलार।२८।यौ
साधूसुषदेहकै।तिनकात्यौंत्यागौं।तुरसीतबन्नलबैसई।साहिब
केआगै।२९।साहिबआगैंजाइबौ।रहिबौचरननपास।तुरसीवा
तकुलसेहे।बिनकीयैंहरीनांस।३०।सोचनकीजेसुमरत्तैं।सोईको
निजनांम।तुरसीपोचहूंनहोइयै।जावतहरीगांम।३१।रनमांहीप
बेसकीयै।सूरकरैजोसोच।तौतुरसीसोनैनहीं।सबकोकहैज्जु
पोच।३२।हमसूरकहैंतासकौं।ज्जुपाबापावनदेह।परबलपरदांतं
निकैं।रांमनांमजपिलेइ।३३।फुरत्तेकनककहिपरहरै।बरतीकंमनि
होइ।तुरसीबराबैनहीं।सूरकहावैसोइ।३४।चौपई।अनज्जुरत्ती
रिधिसिधिहमसुनैं।त्यागीसूरकहावैंघनैं।फुरतीमायात्यागैंसोय।
तासमानत्यागीनहीकोइ।३५।साषी।त्रिभुवनमांहीसासनांजास
रकीचलाइ।तुरसीसमरनबसिकीयो।तौकहाकीयोसूरकहाइ।
३६।सोईसूरसांवंतसोई।सुभटक्रज्जुपुनिसोइ।तुरसीसमरहजीति
कैं।आपअजीतहोइ।३७।आघाचलिपाछाज्जुपलै।पावनदेरुअ
तीत।तुरसीयात्रियलोकमैं।सोकहियेमनजीत।३८।जौकबसांईसु
मरचैं।उपजेदुषसरीर।तौऊमनबिग्रहैनांकरे।तुरसीसत्तसधीर।३९।
दुषसुषमांहीसारिषा।संपतिबिपत्तिसमांन।तुरसीयहगतिधीरकी
गहैंरहैगुरग्यांन।४०।धीरनटरैनिमषभरि।देषिदुतीकौंसूष।तुरसी
सदईहोहरद्या।सांईस्योंसनमुष।४१।धीरटरैंकटुक्योंबनैं।होइधरम
कीहांनि।तुरसीप्रांणीप्रपंचमांहि।फिरिफिरिषुचैज्जुआंनि।४२।गहेंघ
टगुरधीरकी।थिरतागहैंअयार।तुरसीवेथिरतातजैं।तौकोंनबंधावैं
धीर।४३।तुरसीजोगैवरचहलैगलै।तौकोकाढनहार।सूरबीरसुषमोरई

होइ ज्युगु में है कार॥४४॥ तुरसी स्रे संतकों मुषमति मोर करां मुष
रिं जो सो जी जे सो जीव वधि भावे काम॥४५॥ तुरसी लोक जाइ परलोक कैं
तै मैं येक रूनां हि॥ जौ जन प्रभु कौं पाइ है धारा चै विषयनि मांहि॥४६॥ पर
रि संग संसार कौ॥ गहा जो गावे राग॥ तुरसी फिरि करि वा करै तौ लागै बज
कौ दाग॥४७॥ संतन कौ कछ्यार ह्यौ जग कूदै फिटकार॥ तुरसी जो वे पगात
जि नरक करि चलै संसार॥४८॥ कुटंब कलयनां मोषि कौं प्रथमें तें हि वेप
ग॥ तुरसी फिरि विषया नजे॥ तौ पिछा पगा उनकौ त्याग॥४९॥ होइ अपजस
या लोक मैं परलोक हित समाज॥ तुरसी राम विमुष जर॥ विच हा पतन हो
इ सो आज॥५०॥ इनै धरमें मैं एक ह्ला दा यिन आया कोश नां जल नयान सतन
षा नर चले वा रित नयो इ॥५१॥ चौपई॥ तुरसी अैसा चषमजु सोइ॥ ताकौ
संग करै मत कोइ॥ कीयें संग नोरे हुं नाह॥ मालित लागे पुनि नसा॥ ५२
॥५३॥ साषी॥ हा सो हा रै वा त सुनि॥ सुसी होइ मन मांहि॥ तुरसी सूरह की
कथ्या॥ इरमें श्रावै नांहि॥५४॥ सूचेत सूरो जीव कौं॥ सूरह की सुरयान॥ तुर
सी जहां कायुर कथ्या॥ तहां तहां मांडै कांन॥५५॥ रांम सजन कौं आलसी॥
श्रान सजन कौं सूरा॥ तुरसी अैसे कूत हैं॥ मं चनि रषे चूरि॥५६॥ चौपई॥
पंचनि के जु वहाये फिरै॥ रांम भजन की सुधि नहीं करै॥ तुरसी ते कायर अ
तान॥ जैसे या वैप दवू वांन॥ मधम सुष नरि सरिव कुबातें कहैं॥ स मानि मांही
उचे चूहैं तुरसी कांम परन जब होइ॥ ववले वे फिरैल काई सोइ॥५७॥
साषी॥ सूर तन की बात सुनि॥ सा हस उपज्या श्राइ॥ तुरसी जब दो कदल
मिले॥ तब जीय श्रा या पुलाइ॥५८॥ चीरै बा दैषी पहरिया॥ सूरतन संजोग॥ तु
रसी जब मारै परी॥ तब भचित यै कूचलो गा॥५९॥ तुरसी बांनै बांधि कें॥ बक
तक रैं हफ डोय अरती वरियां मोरि मुष॥ तेकें पुरांनी गोर॥६०॥ सूरक हं
तन कौं षयें गरस्र यमन नांहि॥ तुरसी पफ़ल्या फिरैं॥ नीर परैं न जिन्ं मांहि॥
६१॥ पेंड पेंड तन कौं करस्नां॥ या जामां मांहि अनेक॥ तुरसी मकरपकों रतन॥
बिरला कोई संत॥६२॥ चौपई॥ जहां जहां उन मत

करैं गवंन तुरसी तहां तहं सो लावै। सोई सुरति मैं रैमन नावै॥ [illegible]
॥ ६४॥ गाहि गासी गुरु ग्यांन की। अरु ध्यान की कमांन। मनसा मारी मन मृग
पंच ब्रिकार ज्यांन। गुरु गमि घेरि हनै कमथ। उलटि रक्षा दास्यांन। तुरसी
तब आगैं सकल। मो झिमुकति आसांन॥ ६४॥ ॥ २०८७॥ अथ काल
को अंग [illegible]॥ ५५॥ तुरसी कंपे काल स्यों। सुर नर असुर अनंत। नै रूप
को ऊ नहीं। बिनां तन गति संवंत॥ १॥ तुरसी कंपे काल स्यों। जिनके कल
पप जंत सरीर। महा भयानक होइ रहे। बांधि न सकई धीर॥ २॥ तुरसी।
जिनकी अवधि कै। आवै अंत न छेव। तेऊ कंपे काल स्यों। ब्रह्मा से
से कैके कासे देव॥ ३॥ तुरसी और बपुरे को काम ही। काकी गिनती मांहि
ब्रह्मा ऊसे से करैं। काल स्यों थरहरांहि॥ ४॥ जाको से ब्रह्मा करै असंख्य कों
कंप होइ। तुरसी दास असा बली। महा काल है सोइ॥ ५॥ काल कंपावे ष
वन कों जो तन धारी होइ। तुरसी हरि गुरु के सरनि। सा चूकै बरे सोइ॥ ६॥
जे जे आये उधमुष। जवर जूरु ले सोइ। तुरसी गोविंद भजन बिन। तिन
मैं रहा न कोइ॥ ७॥ जिनकी अवधि अनंत ही। अनंत देह बिसतार। अ
नंत मन ही मन राषते। ते मरि मिले जु बार॥ ८॥ जिनकी अवधि अनंत ही।
महा बिस्तीरण देह। तुरसा तेऊ चालि बसे। सबै मिलाने षेह॥ ९॥ जिनकी
अवधि अनंत ही। होते अस्थिर पिंड। तेऊ औसरि आइकें। काल कीये षंड
षंड॥ १०॥ घर अवसे बिनसई। बिनसै पानी पौन। नर जीवन बुद्बुदा सम
॥ ११॥ चंद सूर से जांहिंगे। औसर औसर सोइ। नछित्र
हूं षिरि षिरि यै पैं फिर देषिये न कोइ॥ १२॥ तुरसी अस्थिर को ऊ न देषिये
जो तन धारी होइ। अपनीं अपनीं औसर हुं गति। चल्या आइ सब कोइ॥
१३॥ कुंभकरन रावन जुसे। ऊते महा बलसूर। तुरसी तेऊ काल बसि। है
गये कनक चूर॥ १४॥ रहन काहूं को न पावई। राम भजन बिन मांन। तुरसी
काल बली बहु है। सब को मरदै मांन॥ १५॥ तुरसी जे सुर सुष भोगते। अ
सुर जिन सकता कोइ। ते सैं न निते निकसिकैं। अकल निवासि वे सोइ॥ १६॥

तुरसी थिर कोऊ नही॥ जो धरि आया देह॥ चौसर औसर आय नैं॥ मिल
ले जा हित सुं षेह॥१७॥ मेलन कूं दत देषिये॥ मनुष बिलस्त संसार॥ तुरसी
तिऊ जायगा॥ ज्यूं धूमर्के पहार॥१८॥ तुरसी या बो बेजीवन महीं॥ मतको
ऊगार वकराइ॥ एक छिना ऊठि चलनां॥ बाइस री तजि काइ॥१९॥ या छि
नमंगार देहकी॥ मत प्रतीति करो कोइ॥ बारू के मंदिर ज्युं लौं॥ बिनष
त बार न होइ॥२०॥ बिनसि जाइ पल छिन महीं॥ देषत यह देह॥ तुरसी
ऐसी देह सों॥ बाधि करत न रनेह॥२१॥ बारू के मंदिर महीं॥ बैसे आय थि
र होइ॥ तुरसी यों जानैं नहीं॥ बिनसि जाइगा सोइ॥२२॥ ऊंचे ऊंचे गढ नि
पर ऊंचे रचि हिं अवास॥ तुरसी यों जानैं नहीं॥ काल गिनत है स्वास॥२३
तुरसी मिथ्या देह यह॥ ता सों मोह न लाइ॥ छाडि गये सब देष तें॥ जिनकी
दिरघ आइ॥२४॥ तुरसी मिथ्या देह यह॥ बारू की सी भीति॥ काल मघ पै
परैंते॥ चित आवइ न चिंता॥२५॥ काल घटावत देहकों॥ ज्यूं दीवा की
लोइ॥ तुं गाफिल होइ अधेरे॥ कहा रहे सुष सोइ॥२६॥ काल काटला पी
काया कौं॥ ज्यौं लौं त्यों लाम्यो नीवि॥ तुरसी ऐसे पिंड की॥ करिये कहा प्रत
ति॥२७॥ काल बीलै काया जु कौं॥ रिपु होइ लागा सोइ॥ तुरसी राजा रंग भि
न॥ एम न हारन कोइ॥२८॥ काल ब्याल मूषक जगत॥ चकत फिरै विति
सोइ॥ को अब धिक रि उबरे स्यात जत॥ लागे तसरनैं सोइ॥२९॥ काया क
रसन काल कौं॥ मन मानें तब षाइ॥ ताकी रिष्या का करैं॥ रे नरहरि गुन
गाइ॥३०॥ जे तो अंचर रूप जो॥ जप तैं राम दयाल॥ तुरसी ते तो काल है॥ जन पर
डारत जाल॥३१॥ जीय जावैं जम आइ है॥ जब इह अवधि सिराइ॥ तुरसी यों
जानैं नहीं॥ जु पे रि रहा गढ काइ॥३२॥ बकत बट तस्य देह कौं॥ रच्या करत अने
क॥ तुरसी सो फुनि बिनसि है॥ बिन हरि तजन बबेक॥३३॥ या छिन संगार दे
हकी॥ मत प्रतीति करो कोइ॥ काल कहर तक तजु फिरै॥ ले जाइ रूप छि
न सो इ॥३४॥ नानां संपति देषि नर॥ फूल्या अंग न समाइ॥ तुरसी यों जा
नैं नहीं॥ चलि सैं या छिट काइ॥३५॥ बिमुष जीव बि षनि. नि

रहेजंजाल कालबलीसमांनहीं आइगयातत्काल ३६ जाइसुफि
रिआवेनहीं आवेसुफिरिनहीं जाइ तुरसीजबलगदेहहै तबलगसं
गरहाइ ३७ जनहोइ आकासरंग जलरंगप्रगटेसीय तुरसीयह
गतिदेहकी केहेबीसवाबीस ३८ तुरसीसोजनमासोमरेगा औ
सरिऔसरिआइ कोऊआंपीपी बैकोक बिनजीतेमनकाइ ३९
अवधिघटत्तयोंअ धरे ज्योंदीवाकीसोइ ऐसेअलपजीवनमहीं क
हांरह्यो बिषभोइ ४० अवधिघटततयोंअधरे ज्योंसलिताकोनीर
गयोसुफिरिआवेनहीं समझिदेषियहबीर ४१ तुरसीसूछिमकाल
यह कोऊजोगीही नलेलहेत इतरजीवजानेंनहीं जाकेमनइतउ
तजुफिरत ४२ तुरसीसूछिमकालयहमहाजुबलियासोई क
रवतलोंबिहरेसबनि जोतनधारीहोइ ४३ तुरसीगतिजुकालकी
महाअगहनजुआहि सुषिमनिरंतरनितबहे कोऊलषेनताहि
४४ परथमछिनकचापरिकरम पारेपरिपुष्टजुहोइ अद्धाअव
धिप्रजंततलों बाढिबिस्तरेजुसोइ ४५ छिनकपरलपावेनहीं तोबि
स्तरेनकाल तुरसीदासनिरमूरहोइ महाअषंडउरसाल ४६ आप
नेआत्मसरूपम्यों चरनकबहूंहोइ सुषसरूपहीमेंरहे ताहिका
लनदिकोइ ४७ जमतेंडरेजिहांनसब जनकूंमानेसंक तुरसीसुमि
रेनिदिन तातेंस्योंनगावेंत ४८ तुरसीकालकहांकरे जोजीवतजे
जंजाल करनास्योकैसोतजे तौकालहूहोइदयाल ४९ एकजुगति
जमरिपदै एकजुगतिजममित्त तुरसीतातेंरैनिदिन नाइबिलंब्यो
चित्त ५० रामनाइलागारहे अंतरिनेउपजाइ तुरसीतासूंकाल
हूं कृपालहोइफिरिजाइ ॥ ५१ ॥ ८० ॥ अथ संजीवन [illegible]
[illegible] ॥ नांमसजीवनऔषदी सतगुरुबेदसमांन तुरसीजहांजहां
येउसे तहांतहां बियानआन १ नामसजीवनऔषदी सतगुरुदीनी
जाहि तुरसीआदिअंतिलों कालनगंजेताहि २ कालआइधोंका

करै।ताके उर हरि नांम।तुरसी रतमत होइ रहत।।काटि कलपनां को
म ाइ।।चौपई।। रांम नांम सजीवनि जरी।। जिन संतनि ले हिरदै धरी।।
तुरसी ते जम पुरि नहिं जांहिं। रहै समाइ अछै सुष मांहि।।४।।नरम
उनत गात तन केरा।जनम मरन दुष नाहै नेरा।।जिनि राष्या हिरदै सुषिमू
रि।तुरसी रांम सजीवन मूरि।।५।।साषी।।सजीवनि हरि नांम स्यों अति
तआरति होइ।।तुरसी जे जन बिरंचिये।।तिनमैं नांही कोइ घाइ।।तौ मिटि
आतम अभै होइ।जपत सजीवनि नांम।।तुरसी रमिता रांम कों और न
को कुकांम।।७।।निसबासुरि लागा रहै।भाव निरंजन मांहि।तुरसी स
जीवनि जरी यह।और कुजराय बआहि।।८।।चौपई।।तुरसी वह जु
अभै अस्थानां।तहुं जे वो अति दुस्तर जानां।सजीवन गोविंद उनगा
वै।सो जन नरें जांन तहां पावै।।९।।साषी।।जहां जनम मरिबौ न तहां
जुरा न व्यापै आइ।।तुरसी जम को तें नहीं।चलि बसिये तहां जाइ।।१०
जनम मरन जग तमें।बहु दिन बीते सोइ।अब अनते घरि जाइ कें
रहिये न्यारे होइ।।११।।अहं ममता केयरे यह।सो यद जीवनि मूर।तुर
सी चलि सो परसिये।न बहुरि न उठे अंकूर।।१२।।अंकूर बरि जरि च
षम होइ।जनम मरन को षोइ।।तुरसी उर आवो प हर।जो ब्रह्म आलो
क न होइ।।१३।।आलोकन एक ब्रह्म को।जो निज के उहराइ।तुरसी न
र वा हरि सदा।सो धरै न दूसरे काइ।।१४।।पिंगुल होइ अति प्रीति स्यों
तातकाल तरतास।तुरसी जो जन चढ़ि गया।जुरि जुरि करै बिलास
।।१५।।तुरसी सो तरजर बिनां।।धरफनि लागा मांहि।परबिहूं न पेषा
सदा।केलि करै ता मांहि।।१६।। ।।२८५४।।अथ अपारिष को पारिष
रन।।५७।।बनबिचरत बनचर निराज।।मोती पायै छेन।तुरसी कीम
ति बाहरा।गई जु रज्ञा लेन।।१।।तुरसी मोती पाये निपति हय।सब संपति
षडाइ।कीमति हूं न किराट मिति।।किन किन दीये

२ सोजोजानैंनहीं॥ जाकोबित्तप्रताव॥ सोताहिनदेनिडरहोइ॥ करि
करिकोटिकुताव॥ ३॥ सिधमिलौसाधिकमिलौ॥ मिलौसंतसुषदे
व॥ तुरसीदासपारषबिन॥ कोऊनजानैभेव॥ ४॥ रजतकेसोसाहे॥ सु
करीकोसरजाइ॥ तुरसीअतिसोभाणीयां॥ परषपरेयष्टिताइ॥ ५॥
उपरिकलईकनककी॥ मीतरितरियालोह॥ तुरसीतासआदरकी
यें॥ अंतिउपजईअंदोह॥ ६॥ उपरिकलिईकनककी॥ मेल्हीबिच
त्रबनाइ॥ तुरसीसीतरिबस्तबिन॥ षैरनमोलबिकाइ॥ ७॥ षोटीबस्त
हिषरीकरि॥ बरत्ततहैजेआंनि॥ तुरसीदासउनअगनिकों॥ अंतिहो
इगीहांनि॥ ८॥ षोटीबस्तहीषरीकरि॥ जेबगहैंअगपांन॥ मुषकाला
है जाइगा॥ जबनिकसहैनिदांन॥ ९॥ पोवैकायाकंचनी॥ काचस
ंगेसबजीव॥ तुरसीतिनअधअगनिकों॥ कहौकहांहैसाव॥ १०॥ तु
रसीपरषनहारबिन॥ बैरागरगुरगपांन॥ कौडीकौडीकैसटैबेच
तफिरेअगपांन॥ ११॥ द्विष्टिधात्तपाषंडमें॥ जंत्रमंत्रकेमाहि॥ तेअगपां
नहरिहारकी॥ कैसेंपरषलहाहि॥ १२॥ तुरसीआपअपारषु॥ अपार
षूगुरसोइ॥ दोऊतैसेतैसेमिले॥ कैसेंत्रषजुहोइ॥ १३॥ सुगाधनकेपा
नैपरी॥ बिद्याअधात्मआइ॥ तुरसीलेघरघरकरी॥ दईधारमेंबहा
इ॥ १४॥ सुगाधनकेपानैपरी॥ बिद्याअधात्मसार॥ बाजनभोजन
कारनैं॥ बेचीघरघरद्वार॥ १५॥ ताबिद्यापरसादतें॥ पईयैस्वर्गस्थान॥
तुरसीतासअनरझहोइ॥ तौमिलैमुकत्तिनृबान॥ १६॥ सोरठा॥ तुरसी
बिद्याअमोलअतिताई॥ काचपटैकुबधानगवाई॥ लेबैठेचौहटै
जुजाइ॥ तुरसीकरनजुउदरपाइ॥ १७॥ साषी॥ तुरसीजारनपटम
हीं॥ लपेट्याहोइहार॥ तौजुबेगिकोऊनांगहैं॥ देषतजाइबहार॥ १८॥
जौनैंतमपटपाटकैं॥ कंकरबंध्याहोइ॥ तौतुरसीसबकूलसईपर
षबिहूनीलोइ॥ १९॥ ऊपरिहीलागोसकल॥ राबरंकसुलितांन॥ तुरसी

नीउहरिभेदबिना।लहैनबस्तनिधांन।।२०।।बस्तभेदपावैनहीं।।बिनगुरुआ
येसोइ।तुरसीउपदेहिंरामनिमैंरहेरंगीलेहोइ।।२१।।जोजगुरुकीरुचती
कथा।कहेकोऊजनआय।।तोतुरसीजगुरुकुलसई।षरोकहेसमिजाइ
।।२२।।गीकीमूरतिनसोंगरज।सोमणिकहांकराइ।।तुरसीमणिबहुमोलकी
पैतोऊनताहिगहाइ।।२३।।देषीसुनीनकरगहीं।कौमतिहूंपाईनांहिं।
तुरसीतामणिकौपरसु।कैसैंमरमलहांहिं।।२४।।परसेनहींजनपारषू
देवैपरषबताइ।।तुरसीपरषबिनपसरतफिरिफिरिषोटाषाइ।।
२५।।२८३१।।अथपारषकौपरिकरन।।५८।।तुरसीहरिजनपरष
ई।संतबबेकीकोइ।।केतेपंडितपारषू।पचिपचिगयेजुसोइ।।१।।हीराबै
रागरनिके।बडबडपारषूजोइ।।तुरसीपरषैगमनग।सोतौबिरलाको
इ।।२।।जाकेवरचषुषुले।उदयोआतमग्यान।।तुरसीदासताहासकौं।।
सबैपरषआसांन।।३।।तुरसीपिंडब्रह्मंडकी।सबैपरषजियमांहिं।आ
ह्मपरषअदिसहोहिं।जोमनकेसतजांहिं।।४।।चौपई।।तुरसीमनमल
कानेकरै।सकलपरषसहजैताहिफुरै।।बिनसतरिब्रांनेरहैनकोइ।।जो
उदरपनलौंसुधहोइ।।५।।तुरसीपहनिगुणीमायायहब्रह्म।।सदचंच
लहषिरज्योंबस।।इन्हैनिकोसमसिनिजानें।सोपारषूपदहिप
हिचानें।।६।।ज्योंहैंत्योंभांतिपरषतजाइ।सोटाडोरैषरागहाइ।।तुरसीषो
टौविषयाबांम।षराजुरामनामनिहकांम।।७।।साषी।।रामनामहिनि
हकामयह।परषिलीयानिजजांन।।तुरसीयात्रियलोकमहीं।तेपार
षूपरवांन।।८।।चौपई।।जंत्रमंत्रकेनांहिंनतेरे।।त्यागिरहेभ्रमकाचघ
नेरे।।तुरसीआतमधरमबिनांन।कोऊहटिसैंनाभैध्यांन।।९।।साषी।।
तुरसीयाबिनआनकधर्मभ्रमलहैं।कसिकंचनलौंसोइ।।लैकैंहमहि
रदेषल्या।अतितप्रातिसंजोइ।।१०।।२८४१।।अथउपजनिकौपरिक
रन।।५९।।तुरसीचलिअतिआरतिसौं।ब्रह्मसरोवरमांहिं।।हंसरहे
सुषकोनहीं।सुषहैसाहिबमांहिं।।१।।तुरसी

पायपरसोइ॥ अरध छाडि उरधै चलै तौ फिरि न आवणहोइ॥ २॥ तुलसी
बंधन अपने देषि कै सुनै साधनि सोइ मुकत होइ उनकै कारनै और
कारन तदि कोइ॥ ३॥ सो अवसि कै जु मुकति होइ करमकामलषो
इ सुरति सुमृति सब ही कहै संत कहु तुकारै सोइ॥ ४॥ तुलसी बंधन अ
पने देषि कै बिधि बिधि सुरति बौपाइ मुकति निमवजत कजु करै
अपने ही उर आइ सो अवसि कै जु मुकति होइ बंधन बिबिधि मिटाइ
मनसा बाचा करमना संत कहैं समझाइ॥ ५॥ चौपई॥ अपने सुमारगि ला
गा जाइ आकुटि परै न षाडकु लाइ तुलसी ऐसी उपजनि होइ क्यों न
परमपद पावै सोइ॥ ६॥ साषी॥ कहा अपनौ कहा पार कौ पाप पुनि
कौ मेल तुलसी उर आनैं नही चल्या जाइ सु षेल॥ ७॥ चौपई॥ काहू
के दुष सुष मैं नाही अपनौ रांम रटै दिद मांही तुलसी निकहूं न अलस
इ अलसै औसर बीता जाइ॥ ८॥ इत राजा इत रंक जु सोइ ब्रसाइ रू
बहोऊ कोइ काहू की लछि देषि नही लुभावै अपने रांम सहि स्यों लो
लावै॥ ९॥ पलन बिसारै पावक नाम रह्यौ करै उर आगै जांम॥ तुलसी त
बपावै बिश्राम उरै कहैं सो बातनि कांम॥ १०॥ साषी॥ तुलसी ऐसी उप
जनि उपजै आतम कै मांही अंतरजामी रांम कौ पल बिसरै नांही॥ ११॥
रसनां रटै निज नाम निंत श्रवन सुनै मृदंग पान नैन निहारै निरमल प
द चौ हरि मिलि बौ आसान॥ १२॥ तुलसी रूप बी आकास कौ आयौ
किहि संजोग अबतलटौ आका चलि छाडि धरनि के भोग॥ १३॥ हैरै
कालसि चानकौ घर के पंछी न माहि तातै तुलसी उलटि कै चलि
आकास घरि जाहि॥ १४॥ जदपि बिषया नदी कौ तिरि गये संत सुजा
ण तदपि अति तही डरैं मत बकुस्यों पल टाइ॥ १५॥ साव धान रहैं रैंना
दिन मत कोउ अंतर होइ तुलसी अपने रांम कौ नाम न बिसरै सोइ
॥ १६॥ इंद्रादिकनि की को कहै रंक न हू की माया ताहि देषि बीजे नही
मत मोहै काया॥ १७॥ तुलसी ऐसी उपजै जाका हूं के सोइ तौ रांम कूं हाई

मतिकहौं॥धकानलागैकोइ॥१८॥चौपई॥अनातमरूपबिसरिजा
य॥आतमचितवनिचितवहराइ॥अषंडअहोनिसपलबबिसारै॥तौ
यामहीतनधरिआपातारै॥१९॥साषी॥याहीतनधरिवधरै॥अवसिकै
अनसोइ॥तुरसीअहोनिसिरमही॥ओरांमनांमरतहोइ॥२०॥तुरसी
पुरकीकिपैसो॥अैसीउपजीआइ॥रांमनांमसेंमनलगो॥तनकोसु
धिबिसराइ॥२१॥सुहोवैनंहीरांमबिन॥सेसादेसुषआंन॥तुरसीरांमर
वहोइरह्या॥मेमनमनमाआंन॥२२॥चौपई॥उपजनिउपजीयेरूसह
नांम॥आपैसधूसमचपुरांन॥तुरसीरिधिसिधिआडीआवै॥तऊनचा
तनिदेषिलुसावै॥२३॥साषी॥करईलागोकामनी॥करवालागोधनध
म॥मीगलागोरांमजी॥उपजविवेकैकांम॥२४॥त्रियेपेषैपुरुषहिपिता
पुरुषत्रियातनमाइ॥तुरसीअैसीउपजै॥तबकहूरांमरिकाइ॥२५॥
उैरांमरीझैनही॥कोटिकरौजोकोइ॥तुरसीताइरत्रियपुरुषकोत्रि
दबिलैनहीहोइ॥२६॥पुरुषपेयेषैपितासमि॥पापबुधिबिसराइ॥तौत्रि
यउपनौजांनियें॥रांमसुत्रिभुवनराइ॥२७॥चौपई॥पुरुषनारितनचि
तवेअैसे॥जैसेंबालकमातातैसें॥तुरसीजोपदअैसीहोइ॥तोसिधिमैसं
सानहीकोइ॥२८॥साषी॥आजाअब्यावरिहोइजब॥तबपाऊगैरहाई
तुरसीजांमैमगपती॥तासंगिबिचरैमाइ॥२९॥बंकबियानीपुरुषबि
न॥जायापिरमुलपूत॥तुरसीतरखुरिस्वढिगया॥अजरअमरअवधूत
३०॥सत्रसायेपेपेताबिन बंकेजायासोइ॥तुरसीउलटीगतिनई॥बूझे
बिरलाकोइ॥३१॥पाणिपादउपस्थगुदा॥पंचननैनसुपनास॥तुरसी
सेतबिरूनसुत॥तरचढिकरैबिलास॥३२॥तुरसीएकउलटीसई॥उल
टाहीसमझैकोइ॥पहलीराढैमारचो॥स्वरहगीरतनयेसोई॥३३॥ ३।१२
॥अथदयानिरबैरताकोपरिकरन॥ ६०॥तुरसीजेतर्कैहैंजुयेल
षचौरासीजीव॥सबपरदयाबिचारिये॥कहैजुमांनें
पाजुदारघधांनहै॥दयाजुब्रह्मगियानदया

लागै दोष अघा ॥१३॥ जब सुष निंदा निंक सै निज साधू की सोइ तुल
सी तब ता निलज कौ न फल जीवन जोइ ॥१४॥ संतन कौ अपमान
करि अपनो बढवे मांन तुलसी ता अज्ञान कौ सबद न सुनिये
कांन ॥१५॥ आंन करम कीये नरक मैं हैरे हैरे होइ बास तुलसी नि
दे साध कौ तत पर होइ सो चास ॥१६॥ संतन की निंदा करै अव्रमिष
ता सो षाइ तुलसी बुटै देवगति अस्वर भाव उपजाइ ॥१७॥ गौ नप
ती जो तो स नीय ये जे बिजे तु की साषि साधन की निंदा करते दी
ये देव लोक ते नाषि ॥१८॥ रबि दिसि धूरि उडावई नर कौ ऊ अबुधि
उपाइ तुलसी तहां पऊं चे नहीं परे ताही पर आइ ॥१९॥ तुलसी सा
धू एक रस तिन के दुतीन कोइ भाव आपनो पावै नर चिंतामणि
तै सोइ ॥२०॥ साधू जाहि गायंद लौं चले नु जांहि सुभाइ पलु कुते चु
सि तुसि मरे गलियां मांही आइ ताते नचुष चित्तवे नहीं गरवा तन
उपजाइ तुलसी चित्तये ता सतन गायंद गति लजाय ॥२१॥ वले जांहि
चिरबित गहे दीये पलक स्यो फेर तुलसी निहकारन जगु करै वि
नौ स्यो बैर ॥२२॥ न मलन दायक जन बिचरैं सहज सुभाइ जगत स्वा
न स्वारथ मस्यो तिन हूला गो धाइ ॥२३॥ ङबिध भाव त्यागो फिरैं धरैं नर
हि आनंद ऐसे संतन की सुगति का जानै जगु अंध ॥२४॥ दोइ रहे
रत मत ना वस्यो मांन अमांन सब षोइ तिन को कौऊ निंदा करो बिं
दा करो न लकोइ ॥२५॥ साधन की निंदा करै ताही को होइ हानि सा
धन कौ कबू नां घटे जेरा ते पद न्रबान ॥२६॥ कोऊ निंदै कोऊ बंदई
कोऊ करै सावकु भाव तुलसी कछू आनियें या जगु कौ इहै सुभा
व ॥१७॥ चौपई ॥ कबहू बात निस्वर्ग चढावै कबहू पाताल कूं ब
हावै तुलसी जगु जाचिग कौ मुष ता की चित्तन आनो चुष ॥२८॥ गहें
रहो समि तास मि ताव राग दोष कौ करि बिसराव तुलसी यह अत्री
त की बांनी कीयें रहै मन मन सा पांनी ॥२९॥ संतन की कोऊ निंदा

करै॥ तौ संतन को नकबहू नहीं धरै॥ मतागजराज स्वान तन धावै॥ तौ कर
सी सो मान नही पावै॥३०॥ समद रूप साधूजन सोइ॥ निंदे को मन उपजै कोइ
॥ ज्यौं दरियामहि दो मनि पैरै॥ तुरसी परिता कौ कहा करै॥३१॥ तुरसी
अंधे अंधकौ पाइ सो आता की कहन आनें को माआ बधी आंधिअं
धमौं फिरै॥ ता कौ अचिरज सब कोई करै॥३२॥ संतन के धरम हियमहि
धानें॥ जो निबूकि पुनि निंदा गानें॥ तुरसी ता पापी कौं सो॥ मतरपती
जौ साधूको इ॥३३॥ चौपई॥ तुरसी निंदा इमें नेद है॥ इक कबन्त्र पाप लागि आ
॥ एक पाय स्यौं बुटिये॥ कीनेक बूरु पाश॥३४॥ निहकंपी निरबेर हो॥ इज
गु स्यौं रहै दूरघ॥ ऐसे साधू जन निकौं॥ निंदि नरक कौं जाइ॥३५॥ निंदन
सरोषी बस्त है॥ सो निंदियैं निसंक॥ तुरसी निंदे मुक्त हो॥ साधिक कैसें
बसंत॥३६॥ माया मोह मैं हैं मनी॥ सज के चार बिचार॥ तुरसी इण करि
निंदियै॥ तौ तिरियै संसार॥३७॥ निंदे बिन निपजै नही॥ तन मन काया
षेत॥ तातें नरमक मैं निंदि॥ तुरसी होइ सचेत॥३८॥ ज्यौं रबि निंदै रज
निकौं॥ ससिसंतापन साइ॥ यौं जनरू गहि निंदिकैं॥ सुषमें रहै समाइ
॥३९॥ २०१४॥ अथ त्रिगुण को परिकरन॥ ६५॥ तुरसी मत हि करा
वैना पजी॥ निगुनें नरका संग॥ कहियै कबू मानें कबू॥ उपजै दोब
दुरंग॥१॥ इह धेनी बसिं षाईये॥ मधिमि छंन मिला॥ तुरसी मन बच
क्रम सही॥ तक करत तन जाइ॥२॥ अमृत ईये जु देइस्यो॥ कह बे
ली लपटाइ॥ तुरसी तक छाडै नही॥ अपनों कुटक सुभाव॥३॥ सेजा
रिही महा षीति कहि॥ पै पावई नु कोइ॥ तुरसी ता हि लबू रिले॥ स
हु सुभाव ये जो इ॥४॥ फुनि गाहि पै पाईये॥ अतीरषी तिउ पाइ॥ तुरसी
अंति औसरय है॥ फिरि ता हा कौ षाइ॥५॥ तुरसी त्रिगुण नर अरु ना
गदोक॥ उनै एक समि जानि॥ बकति ताति परमो धिये॥ तक न छाडै बां
नि॥६॥ अथ तिम कुंटली जी
नकौ करै॥

देक्षिसराइ। तुरसीजबआपत्तिहोइ। पहेलेबांधिलेजाइ॥८॥ तुरसीगु
नरत्ननिकेसमुद्र बिचि। जोपलुबुडकीदेत। तऊसंदत्तिनत्या
गिकें हुदिसांषु लेलेत॥९॥ जहांबहैमोतीबीषरे। पलकमुंदित।
होजाइ। तुरसीकंकरकांचमणि। तहांदेइटमकोइ॥१०॥ चौपई॥
जहांसंतमंडलीबिराजै। वहांजातमनमैंअतिलाजै। तुरसीषलुको
यहअसुभाव। कुसंगतिमिलिमांनेचाय॥११॥ आगलेकोगुनऔगु
नगावै। अपनौहिरदामांहिदुरावै। तुरसीऐसाकोऊहोइ। वासमा
नषलुनांहीकोइ॥१२॥ साषी॥ गुनकरतेकौंऔगुनी। तुबकरिमा
नैसोइ। तुरसीदासतायत्तिनकौ। कैसैंकारिजहोइ॥१३॥ हेतकीयें
चांटैतनकौ। कुहेततैकाटंत। तातैसठअरुस्वांनस्यों। रचैनबिर
चैसंत॥१४॥ ॥२०२८॥ अथसगुणकौपरिकरन॥ दूहा॥ तुरसीसगु
णसंतकै। समकोयेसहनांन। आपनेगुनाफलकरिगिनै। परगुक
रैपवांन॥१॥ तुरसीसगुणसंतकी। आदिअंतिइहबांनि। परमारथ
केपंथमैं। हवारहैगरदांनि॥२॥ जौकोऊऔगुनकरै। ऊरअंतरि
धरिदोष। तुरसीसगुणसंतजन। ताहूकौंदेपोष॥३॥ तुरसीकरते
हूंस्यौंनाकरै। अमैरागअरुदोष। अनकरतेकौकोकहै। इहसंमत
संतोष॥४॥ तुरसीऔगुनवोरनदेषई। छिद्रहूंतकैनकाहि। वोरप
रायौनांपकरै। सगुनयेगुनआहि॥५॥ मरमछेदकाहूकौ। करैनक
बहूंसोइ। गरवागहरासमुद्रसा। रहाअथाहजुहोइ॥६॥ चौपई॥
तुरसीगुनरतननिकीषांनि। जिनकेयेलछिनपरवांनि। धरतीलौंस
बकौसुषदेहि। पेऔगुनकाहूकौनहिलेहि॥७॥ आपनअंमृतपीवै
पावांवै। असुनपकरिकैनिकटनजावै। तुरसीज्यौंधरतीगिरजो
इ। ऐसैरहैउपगारीसोइ॥८॥ साषी॥ तुरसीउपगारहीकी। इंद्रआअ
वौंपहर। औगुनहूंकोटिकरैकोऊ। वकचितवैहिदिनकहर॥९॥
कहरदिछिनहीकायामैं। आछिमधिअहूं रुअंति। सीतलसुबदा

तुरसी गुनासत २० ।
इ श्रीगुन ा फटकिकै गुनव ... मतजन रूपम
अगुनकेर तेवाकोअपराध ... ११ तुरसी
जसाध १४ तुरसीनिजसाधूसे ... गुनकेरे
इरहे रहे श्रीगुनदेह १३ ... तियेह श्रदे
तुरसीजोलोनेनहीउपजे तोलो ... जाइ
नैविनांघरमरहाइ १ जोलोस ... तोलो
रसीबुकैनविकारफल तनमन ... जोइ २
हो नैसमहितूनऔर तुरसी ...
तुरसीनेजागतरिझाकेर ...
आइरकरैसहाव ...
नसतुनआहिलेस सुनहीम ... पादेह
नैयेरि तुरसीनेसोरूपपिय ...
नैकहजुनाव जोहरिनेउर ...
इनैनिजलघनलोबरषाइ ... तरहजा
पीवस्योहाइ ... तुरसी ... तुरसीपीति
कोरि विनरूनापावैनही ...
नैबिनजगतजुअैसी घृ ... तुरसी
इ रामनामकीरूचिनहा ... मनलागा
करैचोगानकीगोद तुरसी ... नहीहोइ ... आवरूवा
पीजोइ १० ... तुरसी ... तकी नागत ... गोवल्लन
पांतउपजे तबहोइउज ... जोइ गुर
चानहीहोतजुवार ... अगिजाम ... व्योहार
मैसोकीटर ... गतिपातिक ... प्रपनीउ
तिमई ताहिजानैस ... १३ अैसेनैउर ... तुरसीआ
... मगि

द्रबिसराइ। तुरसीजबग्रापत्तिहोइ। पलेबांधिलेजाइ।८। तुरसी
नरत्तननिकैसमुद्रबिचि। ओपलुबुडकीदेत। तऊसंदत्तिनत्या
गिकें। ह्रुढिसांघुलेलेत।९। जहांबहेमोत्तीबीषरे। पलकमुंदित
होजाइ। तुरसीकंकरकांचमणि। तहांदेइटमकाइ।१०। चौपई॥
जहांसंतमंडलीबिराजे। तहांजातमनमेंग्रत्तिलाजे। तुरसीषलुको
यहजुस्वभाव। कुंसंगत्तिमिलिमांनेचाव।११। ग्रगलेकोगुनग्रोग
नगावे। ग्रपनोहिरदामांहिदुरावे। तुरसीग्रेसाकोऊहोइ। वासम
नषलुनांहीकोइ।१२। साषी॥ गुनकरतेकों ग्रोंगुनी। तुछकरिम
नेसोइ। तुरसीदासतापत्तिरको। केसेंकाजिहोइ।१३। हेतकीये
चोटितनको। कुहेततेंकाटत। तातेंसठग्ररुस्वांनस्यों। रंचेनबिर
चेसंत॥१४॥ ॥३०२८॥ ग्रथसगुणकोपरिकरन॥ ६५॥ तुरसीसगु
णिसंतके। समझोयेसहनांन। ग्रपनेगुनाफिलकरिगिनें। परगुक
रेपरवांन।१। तुरसीसगुणसंतकी। ग्रादिग्रंत्तिइहबांनि। परमारथ
केपंथवमें। हवारहैगरदांनि।२। जौकोऊग्रोगुनकरें। करग्रंतरि
धरिदोष। तुरसीसगुणसंतजन। ताहूंकोदेपोष।३। तुरसीकरते
हूंस्योंनाकरें। बैरागग्ररुदोष। ग्रनकरतेकीकोकहे। इहसंमत
संतोष।४। तुरसीग्रोगुनवोरनदेषई। बिद्रहूंतकेनकाहि। वोरप
रायोनांषरे। सगुनेयेगुनग्राहि।५। मरमछेदकाहूजुको। करेनक
बहूंसोइ। गरवागहरसमुदसा। रयाग्रथाहजुहोइ।६। चौपई॥
तुरसीगुनरत्तननिकीषांनि। जिनकेयेलछिनपरवांनि। धरतीलोंस
बकोंसुषदेहिं। पेग्रोगुनकाहूकोनहिलेहिं।७। ग्रापनग्रंमृतपीवे
पावावें। ग्रसुनग्रकृत्तिकेनिकटनजावें। तुरसीज्योंधरतीगिरजो
हू। ग्रेसेंरहेउपगारीसोइ।८। साषी॥ तुरसीउपगारहीकी। डंबग्रा ग्रा
वेंपहर। ग्रोगुनहूंकोंटिकरेंकोऊ। वककचितवेंद्रिष्टिनकहेरा।९।
कहराद्रिष्टिनहीकायामें। ग्राछिमधिग्रहूंरु ग्रंत्ति। सीतलसुभरा

ईसदा॥ तुरसी सगुण संत ॥५०॥ तुरसी सगुण संतजन॥ रूपसमत चित दे
इ॥ और गुन डारै फटकि कैं॥ गुन कन ही गहि लेइ॥५१॥ तुरसी गुन करते स
गुन करै॥ हरै ताकौ अपगुन॥ और गुन रूप रि गुन करै॥ सो कहिये नि
ज साध॥५२॥ तुरसी निज साधू सो॥ जाकै उर मति येह॥ अदेह रंग रचि दे
इ रहे॥ गहैं न और गुन देह॥५३॥२०४॥ अथ सैन को परिकरन॥ ६१॥
तुरसी जौलौं सैन ही उपजै॥ तौलौं मन जाय॥ मन चंचल ता नां तजै॥
सैन बिन थिर न रहाइ॥१॥ जौलौं सैन ही उपजै॥ तौलौं सजन न होइ॥ तु
रसी बुसैन बिकार फल॥ तन मन की तिल सो इ॥२॥ जैसम त्राता कौ भ
ई॥ तैसमि हित न और॥ तुरसी सै आनै उलटि॥ फूटै मन कौ गैरवा॥३॥
तुरसी सैजागा चरि कांम करै॥ करै मन कौं उलगार॥ जैसे सोवत कं स्वपन मैं॥
आदर करै सहाव॥४॥ चौपई॥ तुरसी सै घर बन परदेस॥ उपजन देइ
न च सु तन अहि लेस॥ सु तन ही मां ही जु रापै फेरि॥ ज्यौं गऊ गावाल घरि अ
नें घेरि॥ तुरसी सै सो भूष पियास॥ मिटै और आलस होइ नास॥ निद्रा हं
नैंक हं जु नावे॥ जौ हरि सैं उर उपजि आवै॥६॥ तै उपजै अरु बिरह जगा
इ॥ नैंन निजल घन लौं बरषाइ॥ तुरसी तब सै साचा जोइ॥ जब ऐसी प्रीति
पीव स्यौं होइ॥७॥ साषी॥ तुरसी दास सै प्रीति बिन॥ लगति करि कइ कलि
कोरि॥ बिन स्नां पावै नही॥ सुत जननी की षोरि॥८॥ चौपई॥ तुरसी
सै बिन नगा तिनु ऐसा॥ घृत बिनां ज्यौं भार रजु तैसा॥ रूषे तन मन लागै
सो इ॥ रांम नांम की रुचि नही होइ॥९॥ अलसानैं के आवैं नीदा मन बहु वा
फिरै चौगान की गींद॥ तुरसी जहां जहां सै नही होइ॥ तहां तहां चित न
ए देषो जोइ॥१०॥ साषी॥ तुरसी सै लगावत कौ लगा तन हूं कौ सो गुर॥
क्रिपा तै उपजै॥ तब होइ उजारन कौइ॥११॥ चौपई॥ तुरसी सैं के प बो हार
कीट भ्रंग नहीं हो तनु बार॥ तुसैंसा धू आगि जांमा॥ तै सो सुमिरै अपनौं रा
म॥१२॥ साषी॥ जैसो कीट भ्रंगी नया॥ जाति पांति कुल षोइ॥ तुरसी औ
औसें सै उर धारि कैं॥ लागि कै

निहकांम। तुरसी सो जन सही सों होइ पलटि के रांम ॥२४॥१०४
॥ अथ बीनती कौ तरिकरन ॥ ६८ ॥ तुरसी कहै न हीमत रांमजी म
म औगुन की कोइ। जौ तुम बकसौ तौ कहौं उबरन हौइ तौ होइ ॥१॥
जैसें परसन होह तुम। सो हम कछू न कीन्ह। अलप अबुधा जीव हम उद्ध
रन चित दीन ॥२॥ नांम तुम्हारौ नालीयो हीये हेत उपाइ तुरसी आप त्ता
यौ कीयौ मन दीया मुकलाइ ॥३॥ सोरठा ॥ तुरसी मन दीयौ मुकलाइ
नांनां इंद्रिन सुष मांही। अटकौ नही सुनाइ। मूढ मति मोरव आंहि
॥४॥ बुरौ भलौ औगुन भरयौ। जैसो तैसो सोइ। तुरसी तुम्हारो जु है औरस्य
सि रौन कोइ ॥५॥ जदपि हैं कुतुछ जीव। तऊ तुम्हारी आस। सुष समुद्र कौं
सेवतें का केरहीजु प्यास ॥६॥ धूपदाऊ वांदे वजी। तका तुम बायां वोट तु
म वोट कुंउ षपाईये। तौ सेवग हीकौ षोट ॥७॥ परस तन तुम्हारे दास कौं ड
रिमत्ति हीइ जरिषेह। जब जत्तु मद रबोरामजी। तब का रहै संदेह ॥८॥ हे
तस हाइ कसांईया। जन सेवग परि आइ। औगुन वोर न देषिये देषि
जीव बहिजाइ ॥९॥ तुम्हारी समरथता सबल आवे अनंत न वोर तुरसी
अधम उधारिये चितै क्रपा की कोर ॥१०॥ चितैं क्रपा की कोर सरन
किनराषौ केसो। अराक का केर है मो हिइ है न्याद्रिस्ट देसौ ॥११॥ दपि
दहन दहै देह कौ। षिजवत है मम प्रांन। बरसि बुझावौ रांमजी हौ दा
र क्रपानिधांन ॥१२॥ तुरसीदास रबि के उदै जौ रहै रजनि अंधियार तौ
रबि लाजै रांमजी जन कै रहै बिचार ॥१३॥ सिंघ सरनै हूं जाइ कें जौ जं
बुक दुष देह। तौ तुरसी पासिंघ कौ सरनन कौ कलेह ॥१४॥ अनंत आ
पदा पारबै आहि त तुम्हारे राज। यह दुष हरि प्रभु क्रपा करि राषौ ज
न की लाज ॥१५॥ मैं पतित पावन तुम आइ बन्यौ संजोग। बिरद आपनौ
जांनि प्रभु हरौ बिबिधि बिषरोग ॥१६॥ मैं औगुन की षांनि हौ तुम
गुनकर तारांम। काटिके लंकप्रभु क्रिपा करि जीव ही दे हविश्रांम ॥१
७॥ जौ हम औगुन अनंत कीये तौ हम क्यों छूटें रांम। छूटन तुम्हरे पा

सिहै औरनहीको ऊगंम॥१८॥ कहै धरनि धरीजी यमही॥ आदि अंतलि
ओम॥ जो बूडावै तो रंमजी॥ औरनही बलकोइ॥१९॥ चौपई॥ तुरसी॥
औरनही बलमै रंमनब नेकमकहै नहीं टरै॥ आवै सरजलबोवृ ऊरं
म नल तारे अपनो दे नंम॥२०॥ जोक बूकवैसतु म्हरोवका ईदरी पैक
बूनमलीबनि आई॥ तुरसी गुलाम माहि सरनाई॥ कीन्हों अपनी उद्रत
रई॥२१॥ साषी॥ ज्यों है त्यों तेरा तुम गति॥ हो इन आवै मोहि॥ तातें फिरि
फिरि रंम दोसलगाके तोहि॥२२॥ तुरसी तुम देवा दरपनमई॥ नहीं क॥
विधकब चौहि॥ मैं मुष देषौ जिसी छिवि तैसो नासत मोहि॥ आतु
रसी मेरी ऊई सु ऊकों॥ आडी आवत रंम॥ तुमको दोसकवूनही॥ त
मनमल निहकांम॥२४॥ जैसी तैसी रंमजी॥ तुमतें छाने नाहि॥ तुम
मालिक या जीवके॥ जानत हो सब माहि॥२५॥ अविद्याबस जीय हम॥
नलीक बूनही हो मसकल नली के मूल तुम॥ तुम तें औरनको आग
हा तुरसी या षोटीक लिमांहि सुमाउपजावनेकूं नांहि॥ जो उपजाये रंम
जी तो गहैं रहो दरबां हा॥२७॥ तुमको लज्या दासकी॥ आदि अंत षिम
षि रंम॥ तुम बिन और कोऊ नही॥ जनकें बल आ रंम॥२८॥ कहै बीन
ती साईस्यां॥ हम हि सु मेरस मांनां॥ तुम हि जु तुछ सम्है हो॥ दिक आप
नो नांम॥२९॥ सरनै रषि सवाहि कैं॥ दिजि नही छिटका इ॥ छिटका ये ज
नकों प्रभु॥ हसि है लोग अघाइ॥३०॥ हे म्हेव तुम्हारे च्छरते हैं परनाये
जु गुलांम॥ तुरसी पतितपावन प्रभु॥ हमहि कहां हो रंम॥३१॥ कहा कुँ
बलजनकों काहूकेबल राम॥ हमारें अंधेकी लकुट॥ तुम हो छ्या
नि धांना॥३२॥ तुरसी दान धांन है॥ तुम॥ तुमही भजन बैराग॥ तुरसी
कै तुमही जु हो॥ औरन तां छल पग॥३३॥ जावै नरक के देह॥ रंमजी नाम
स्वाससुवास॥ तावै मो विमुक लिदे॥ रषो आपनै पास॥३४॥
अथ वेलीको परिकरन॥ दूहा॥ तुरसी जर काटै वे
धे न वीर॥ वे किं जाइ बसड कों जे पोषे॥

काटीये त्यौंत्यौं हरीजुहोइ तुरसी यहहै यनहै सीचेसूकैसोइ २
सींचेसूकै बेलरी यहहै देषौहै यंन तुरसी उलटी बात यह कोऊ समझै
संतसुजांन ३ तुरसी जलदीयै बेली जरै बिन जल लहसहैलेइ या
बेली मैंइहै गुन बिना रितिफल देइ ४ तुरसी बिन फूलौं लगैं अम
तफल फूलीन्ह फल जाइ पावक पोषें पुष्ट होइ बिन पावक मुरझा
इ ५ तुरसी पावक ही कौ थावलो पावक ही पोषंत्त जो कब जल दि
षराईये तौ बेली सूकि जरंत्त ६ जावत घरत्तां त्त लगै तावत्त ब
धेन बेलि तुरसी घरत्ते अधर होइ तबकरै अकासौं केलि ७ जब
घरत्ते बेली बिछुरी करै अकासौं गवन तुरसी तब या बेलि कौं दाह
दहै न दहन ८ जो सबही के ऊपरैं ताऊपरि नहि कोइ सुरत्ति बेलि
ता स्यों लगी कबहूं न बिछूरै सोइ ९ तुरसी घरत्ते बिछुरिकैं गगन मैं
करै निवास तब बेली फूलै फलै बहरितिबारहमास १० तुरसी अ
मबेलरी जरबासनां अनंत्त सो जरै निरमूर होहि तबकहूं फल लागं
त ११ तुरसी ता बेली जु के आहिं जु ये फल चारि तातीन निषधब जु नैषे
च तु हंसार हे धारि १२ अर्थ धर्म अरु काम फल गध कामी नर षांहि
तुरसी चतुरथ मुकतिफल ताहि हंस हि नसैं चुगांहि १३ तुरसी मुक
तिफल कारणै मुमुक्षन त्यागे कांम अर्थ अनर्थ सौं तजे तब पायो आ
रांम १४ तुरसी यह महा मोक्षिफल ताहि सगत्त हा न्हैं लहांहि अन्ता
त कबहूं न पावई जो अनंत्त जुग जांहि ॥१५॥३१०॥ अथ अराजको
परिकरन ॥ ७०॥ तुरसी अमित्त अज्ञान यह जहां आपापर कौं पांन
स्व मनऊ जीव जानैं नहीं तहां के ये सदनांन १ आपा कौं बिरकारि गि
नें बिर आपास मझाइ तुरसी यह बिपरीत्ति जहां तहां अगपान कहां
इ २ तुरसी कछू गहाईये गहिले कछू बसीम अज्ञानी अरु अंध की
गति उलटी ही होइ ३ जो बबुरे मधते कोऊ बरजै हित्त बपाइ तो तुरसी
मानैं नहीं मुगधत्त हां हीजाइ ॥४॥ चौपई ॥ मुगधन की मतिये ही जोई

नहीं गति गाडर की होइ॥ पेर चपै एक पर्‍यो तहाँ जाइ॥ सकल परै वह दह अर
इ॥५॥ साषी॥ असति बस्तु सति करि गिनै सति असति करि लेइ॥ तुरसी ऐसे
मूढ़ कों को समझाइ निदेइ॥६॥ नली कहत मानैं बुरौ॥ संत बचन गिनैं तु
छ॥ तुरसी ताको ज्ञान कों कहिये नाहीं कुछ॥७॥ सब ति मारग ना रुचै॥ अव
ति सों अति प्रेह॥ तुरसी ऐसे मूढ़ कों नहीं निज सुष सनेह॥८॥ स्वर ठि
सुष रिपु सम गिनैं॥ पर स्वारति सुष परवान॥ ऐसे संग दहि समझाबते दे
ह धर्म की हानि॥९॥ माया तज तसु दित होइ और मत्त जत अलसाइ॥ तुर
सी यह गति मूढ़ की हम देषी ज्यौ पाइ॥१०॥ तुलसा तन नयें सु दित होइ॥ तु
छ अला नै सोइ॥ सुरछि सुरछि धर पर पैरै मेरे अज्ञा नारोइ॥ ऐसा वो बोबु
धिका॥ कोटि करै जो कोइ॥ तुरसी ताहि हरि दरस को॥ परसन कबहूं हो
इ॥११॥ कौडा राये पुसी होइ॥ कौडी लीये सोइ॥ तुरसी अति तड पित होइ
तासों मंत्तद्द कको इ॥१२॥ पाये सोक आये हरष॥ जाउर मतिय हर्तोइ॥
ड षसुष के दरियाव में॥ बूडे उछरे सोइ॥१३॥ तुरसी यह अज्ञान मत॥ ऐ
से सो परवानि॥ जहाँ ऐ तहाँ हो वै नहीं॥ पर पद सों पहचानि॥१४॥ आत्म
अनआत्म को॥ सुधि सार नहि कोइ॥ तुरसी यह अज्ञान मत॥ प्रगट रूप
जगु जोइ॥१५॥ चौपई॥ तुरसी आत्म विवरत ये का॥ नाना नाम घट बरन अ
अनेक॥ [illegible] कों निनि ता ननजानैं॥ यह अज्ञान सबके तन घानैं॥१६॥ साषी
तुरसी आत्म अमित अपार है॥ ये तावत सो देह॥ उनै निकों एक हीं गनैं॥ धि
गता का मति ये हा॥१७॥ तुरसी कहे धिग धिग रे तो [illegible] कहौ॥ अलप अबुध
जीव॥ अपनौ रूप बिसारि कैं॥ आन रूप रूचि कीव॥१८॥ अलपा बिषै सुचि
मानि कें॥ हास्यो हरि सुष सिंध॥ तातें आवागवन तो हि॥ बारबार हो [illegible]
धा॥१९॥ बेर बेर जों मैं मरैं॥ अलप देह सुष मानि॥ तुरसी यह देही जुदे॥ क
रम नहीं को षानि॥२०॥ आयने रिपु आपन जनैं॥ फिरि करै तिनों सोने
ह॥ तुरसी ताते उषानि मैं॥ उपजे बिनसे देह॥
मकर [illegible] मांडे ये हा॥ तुरसी तहाँ हीं परिय चे ऐसे संत सिदेह॥

तुरसीदेहीसंततिमांही अमांनीमिलिकेलिकयेही जूंसुपंगफण
बायाचुष मीडकवेगमानैसुष ॥ साषी ॥ डषहीकासुषकरिलीय
अज्ञानतातेपाइ जौंमृगमिथ्यामानिजल फिरिफिरिमटकाषाइ
२४ ध्यांवधरतअज्ञानवनर जेतेनतनपटलाइ नैननिपटलाभेरहैं मन
बहिरायाकिंयाइ तामनकीमतिहीनको सोधीनाहिनकाइ तुरस
असेध्यांनमैं तिलहूंनतिरसुरनराइ २५ तुरसीध्यांनअज्ञानको
असोसोप्रवांनि जूंजलबुरामछीनकै होइहोइनरमजुष्यांनि २६
तुरसीअंदरिस्प्रतंतकामनां बाहरिइकटकप्रीति होइदिषावैलो
ककोयहअज्ञानकीरीति २७ तुरसीअज्ञानअनंतहै जोंमरापवि
कोपांनि आगेंहीआगेदेषिये विनाबिचारेज्ञान २८ तुरसीअज्ञान
अनंतहै कहांलौंबरनोंसोइ जीवबहसबिचित्रह्वैकें रह्योजुभागल
होइ ॥ २९ ॥ चौपई ॥ तुरसीसूक्षमअरुअस्थूल ज्ञानअादितीनोंएमूल
याअज्ञानकीसीवांसोइ लंघैज्ञानीजोगीकोइ ३० जाग्रतसुपनसुषोपति
जांवत इनमांहीआरमजुतावत तुरसीनावत्तहैअज्ञान ताआगेंतु
रयातमज्ञान ३१ ॥ साषी ॥ तुरसीतावततुष्टअज्ञानग्रह होताहिलहमार
तावतहमदुषपाईया अबदेगयाकिनार ॥ ३२ ॥ ३०३६ ॥ अथगावरल
षकोपारेकरन ॥ ७२ ॥ तुरसीतिनकेहोइगये कोनीरूपीमन तिनहि
जुसमझावनको मतविषयोकोकजन १ उपदेसियेअजानकर कावेद
धसमांन तुरसीफाटेदूधको कायेहोइज्ञान २ दूधजतनकरिबो
नलोकैजुमलोघृतसार तुरसीबाहिविचिकाबुरा फाटादूधगंवार
३ अबपसमझिअसमझिअनंत रहीतासमदिमाति तुरसीसोसम
जैनहीं नाविसमझावोदिनराति ४ बस्यादिकरिषिमुनिसबै आइदे
हिउपदेस तुरसीमूढमतिहीनकैं मनिनहोइप्रवेस ५ जोचतुरान
नचतुरमुष समझावैसज्ञान तुरसीतकनिमषतरि मूढनमांझ
डेकांन ६ ध्यांनदगधआत्माको किंदेबडोकठोर साधूबरषैपांमर

स।तकनतीजेकोय॥७॥ग्यानरूपअातमाकौ॥हरैरीबडोयधांन।कोटिजत
नकोउककैरैमैक्योंहो।नचिदईग्यांन॥८॥चौपई॥कहियेकछूकछूकरि
जानें।अपनेंमनमनुषरा)कोंमानें॥तुरसीताकग्यानकोंग्यान।कहांसू
नायैहोइस्वग्यान॥१०॥ग्यानी।कैस्वरूपमांनीयलौ।कैउत्तमलौअर्जान।तु
रसीवहविधिकाबुरा।फाटाद्वधअग्यान॥११॥मांनीस्योंग्यानीमिलै।मि
लैपरमसुषहोइ।तुरसीअबहूंसमझाईये।तौमांनिलेइस्वतिसोइ॥१२॥
तुरसीअवतसुविनहीं।नाहितजानअग्यान।सोम्रूरषसमझैनहीं.
संतनिकौस्वग्यान॥१३॥कामनिकैमारिनरहिं।कदाचितपजेग्यान॥
तुरसीमासानरका।व्रकरिलिचेतेप्रांन॥१४॥कहैमोछिपरआपकौं।प
रैस्यौंरकहिकौंन॥मकरिस्तनावहुरयानहीं।होररहापांनीलौंन॥औ
कोकसंतसमझावई.तासमनमोडैवैंन॥तुरसीत्येसेमूरषस्यौं॥गहिरहि
समुषमौंन॥१५॥जबहामारिपअस्यौं।तबकहैसकलस्यौंवरा।आ
पआपस्यौंषेलई।काकौंलोगोकमी॥औरैरसपतअग्यानतरा।बेकमीबे
स्मैं।तुरसीतिनहीनधाजियो।जोहौंहिनिपटअतिनमी॥१६॥जाकौदे
होसौंममताअतिकहूंनाहिं॥सोकमकतिकहियेनहीं।हैंबंधनमां
ही।तातमारास्ततबितबनित॥पलटिरह्याजहाहीं.सोसगमोछिक
हावेतास्वरमावतनाहीं॥१७॥रजगुनमाहीरचिरहे।तमगुनबुधमा
हिं॥सततगुनस्योंप्रचैनहीं॥कहैहैंमत्तरपदमांहिं॥१८॥नारातहीसो
वतरहै।सोवतअमैहिसांन॥तैसेस्वप्नमैंतोइकरि।होइरसमालता
न।सुषपतिसौंपरचैनहीं॥पलएकोपरवांन॥तुरसीपायोतुरयपद।
क्यतत्तलजतअग्यान॥१९॥सोरठा॥होइजरमीध्यान.सोहरियेसु
रष्यांनस्यौं॥ग्यानहीमैंअतिमांन॥तुरसीसोकैसैंटारियै॥२०॥साधं
नेकोकईस्वरवाजुवयांनैं॥ताहिअनीश्वरताकरिमांनें॥नासतीक

...तुरसी है जु संत जन॥ ग्यांन सरोवर न्हा
...मही॥ तन मन मिटि जाइ॥ तुरसी सो मलत
...न रोग न्हाइ॥१६॥ ग्यांन नीर मांही सदा॥ उर मंजई
...तुरसी तन ...सुध होइ॥ पापन रहई कोइ॥१७॥ अहं घटे
...मिटे हरै ग्यांन ...सोइ॥ तुरसी उत्तम ग्यान सो॥ जा मधि ऐसी हो
इ॥१८॥ तुरसी सब ही रूप रैं॥ है उत्तम यह ज्ञान॥ जा मधि दरसे आत्मा
अस्ति होइ अभिमांन॥१९॥ अभिमांन मिटैया तन कौं॥ मन न्हेवै ग्यान
कोइ॥ तुरसी उत्ते दूल जहां॥ ग्यांन सिरोवर निसोइ॥२०॥ तुरसी आत्म
ज्ञान के भेउ बिहन परवानि॥ दुष सुष सम लोहा कनक॥ येउब हां
समांन॥२१॥ चौपई॥ कंचन कौं मृत्पकाट जु मानै॥ कामनि काष्ट पषा
न वांनै॥ तुरसी उत्ते बिनेद बिलांन॥ बसत ग्यान के एसह नांन॥२२॥
साषी॥ ब्रह्म ज्ञान के परसते॥ पावन होइ सरीर॥ तुरसी तर मबा दरफ
टै सद सुष मैं होइ सीर॥२३॥ कोटि जनम के कीये अघ॥ छिन मैं होइ हि
खिलीमांन॥ तुरसी जब उरउपजै॥ केवल आत्म ज्ञान॥२४॥ ज्ञान संपूरन
संत जन॥ जो है या जुग मांहि॥ ताके दरस की॥ तुरसी संख्या नांहि॥२५
सब या बस्तु धा कौ बिनौ दान करै जो कोइ॥ तउ ज्ञानी के दरस की॥ स
सर कौं नहि कोइ॥२६॥ अस्नान होइ अति चहु ष॥ तप तीरथ कीयें दा
न॥ तुरसी ता दुष हरन कौं॥ गुरु बतायो ज्ञान॥२७॥ जौ लौं न ज्ञान उदि
त होइ॥ तौ लौं न रोग मिटंत॥ तुरसी मांन अमांन मैं॥ फिरि फिरि ग्यांन प
वंत॥२८॥ रोग संताव तताव लगा॥ जाव न सम के ज्ञान॥ ज्ञान वौषदी आव
ै॥ तौ होइ निरोगी प्रांन॥२९॥ तुरसी जिन के ज्ञान बेरास जी॥ अपने ही
र होइ ... सुष के दरियाव कौं॥ तिरि जु गाये जन सोइ॥३०॥ त
इ ... तन मन आस मिटाइ॥ तुरसी ते सुष रूप है॥ स
रसी॥ ज्ञान मुसक लो लाइ॥
॥३२॥ ज्ञान मुसक लो ला

इकें॥ अमलकी योमतषांन॥ तुरसीउरआदरसत्तयौ॥ तहां प्रग
टेपद-सोन॥ ३३॥ अंदरिज्ञानउदितनयौ॥ गलिगयौगवेगुमांन
तुरसी जातिजुतासकी॥ पूंछेसुनउअज्ञान॥ ३४॥ अष्टधातयार
समिलेतबकाजातिजुहोइ॥ तुरसीयहबूझीनजिन॥ तरमम
लितनयेसोइ॥ ३५॥ बिरणअमकेजातहै॥ तेजननिकसेजांन॥
तुरसीतेबिसरिगये॥ मोरतोरकोग्यान॥ ३६॥ मोरतोरकीरसीस्यों
बंधेसकलसबजीव॥ तुरसीग्यानीक्यूंबंधै॥ तौज्ञानकहाकथिकी
व॥ ३७॥ ज्यूंरंगमिलेनफटकमणि॥ यौंजनलिपैनदेह॥ तुरसीज्ञानी
जनसोई॥ गहेंरहैमतयेह॥ ३८॥ तुरसीज्यौंनतनीरमें॥ मुकरमधि
मुषछाइ॥ यौंज्ञानीयादेहमें॥ कहनेमात्रआहि॥ ३९॥ देहीकेदुष
सुषनिमें॥ लिपततनकबहूंहोइ॥ तुरसीयासारमैं॥ ज्ञानीकहियेसोइ
॥ ४०॥ तुरसीअपनीइच्छाउठिचले॥ अपनीइच्छाथीवापरइच्छामैंन
पैठे॥ ज्ञानीगहरगंभीर॥ ४१॥ अपनेंतनकौंओरकौ॥ छिनेंसुगंनी
जांन॥ कोकदुषवौसुषवोकौका॥ तुरसीलेइनमांनि॥ ४२॥ मांनितले
इउतेयगुन॥ ज्ञानीगुनगलतांन॥ तुरसीअचलहुवारहे॥ अपनेंउर
अस्थांन॥ ४३॥ ज्ञानीकौंतारैनहीं॥ बाकिबोएकअगार॥ तुरसीछिम
तागहिरहा॥ करिपंचकोपरहार॥ ४४॥ जोकबग्यानीबोलस्यौंतौतु
रसीइहिभाइ॥ ज्यूंकरभिरदधकी॥ कवतसहजसुभाइ॥ ४५॥ चौप
ई॥ सदासुचेतंनरहैअडोल॥ गहेंरहैंयुदिटगुरग्यानअमोल॥ सुषदुष
फलकिनउचैरैबैंन॥ तुरसीयेज्ञानीकेचिहैंन॥ ४६॥ साषी॥ अपनी
अस्तुतिआपमुष॥ करैनकवहूंसोइ॥ औरककीहदेनहीं॥ रहाअमल
तनहोइ॥ ४७॥ चौपई॥ देषिअडंबरदंतनबांधै॥ कूरमलौंजुछिपाइरहैछा
नैं॥ हमऐसेहमकौंकोजानै॥ तुरसीयौंकबहूंउरनाऐै॥ ४८॥ साषी॥ चि
तअपडरताबतैलगा॥ जावतविमररहैौबा
मरमिटेडरजाइ॥ ४९॥ जावतभिष्याजग

हित नजिरायो तजि के धाम मोह हियो फूटि रसत्रो रहिमायो एकै
रोम ७ तुरसी राम अरु राम जन राचै दैक्नुत हों नाहि पाला गलिपा
नीज्यु लौं होय है सिसि मांहि ८ तुरसी पाला गलिपानी मिल्या अ
रुआटे मिलि गया लौन यौं स्वामी सेवग मिलि एक हुवा नाहि विवे
है कौन ९ तुरसी जीव समांन ना सीव सें सीवु जीव के मांहि जीव सि
व एकै हुवा दूजा कोऊ नांहि ॥१०॥ ॥११८०॥ अथ जोग को पार
करन ॥७७॥ श्री गुरुपद पंकज सुमरि विनिस्वामि सें सिध भाव तुर
सी ताप्रसाद ते बरनौं जोग अगाध १ जो जानें ते मुक्त होहि मन के
मिटैं विकार तुरसी मनवसा य गाहोय मिले सुष सिंध संसार २ रोम
रोम आनंद होय नष सष चि मरन साह तुरसी जो तिज गम गो ना जै
गम्यो सु नाह ३ जपतप आदि सकल धरम साधि साधि मरे कोइ तु
रसी जोग न्यासस्यो सो सिध पद है जे होइ ४ नाहि तन मधम हत साधि को
हठजोग के यमांन तुरसी साधिक को कह्यो सतगुरु क्रिपानिधान
५ हठजोग अरु सांपि मत महा सुमारग जान तुरसी तामें हठ को
हठजोग प्रवान ६ हठजोग में स्यार है हठजोग में सुचीत हठजोग
में हठ वारे है तुरसी ज्यूं जल मीन ७ तुरसी जोग व्रत से वतें पारी को
ऊन जाइ जो कवफल पावें नहीं तो छाया सुष विसराइ ८ फल
नु मो छि छाया सुरी सुष साधक है सव को इ तुरसी जोग तरु सेवतें
एक चौ हो ही होइ ९ पे जिनकी आसक्ति मति रहे मुकति मन मांह
तेस्वर्ग सुष वांछे नहीं जो मिले सहज में सोइ १० स्वर्गादिक के सुष
तिस्यों कौन परोजन ताहि जो प्यासा महा मुकति का तुरसी अंति
र आंहि ॥११॥ चौपई ॥ अरथ धरम काम फल वीन ह है जग में हैं दां
घा जल मीन तुरसी जो पाचौं कहे कहे जाको मन लागो तिहं परे ॥१२
॥ साखी ॥ तावे सिधि अ सिधि होइ ह तावे ही हठ क्रूप कुप तुरसी जोग म्या
स तें तक मोरिये तन सुष १३ अनंत सिध आयें तयें साधि साधि तन वा

५॥तुरसीसोमनबायकों॥कोहनलेकउलटाइ॥१४॥उलटावतमनबा
यकों॥बिचिरहीबिषनतनहोइ॥तुरसीजोगनसेनहीं॥आगेकौंहै
कुसोइ॥१५॥नावैषोजिपुरानसब॥तोयारहेसबमांहि॥तुरसीमन
बसकरनकों॥अभ्यासमसोनांहि॥१६॥जतनतचित्रयेनहीं॥चितयैं
चितबिनास॥तुरसीजोगजुगतिगहि॥करिआतमअभ्यास॥१७॥
सबसुषजोगाभ्यासमैं॥आनिकहूंसुषनांहि॥तातैंतुरसीजुगति
गहि॥करिअभ्यासतनमांहि॥१८॥तुरसीतनमैंमनमनमैंपवन
पवनमैंअविसमोइ॥ऐसेआतमअभ्यासकरि॥जोगजुगतिसंजोइ
॥१९॥कीयैंअभ्यासआरोगितन॥रोगादिकमिटिजाइ॥तुरसीमन
मनसासथी॥बंधनबानसमाइ॥२०॥जेजनजोगाभ्यासमैं॥लीनर
हेंआइ॥तिनकेमनद्रिजकामना॥सकेनछिनकचलाइ॥२१॥
रतजोगीभ्यासमैं॥जोगीजनदिनराति॥तुरसीतिनकेमनमैं॥प
रिसकेकोउभ्रांति॥२२॥चौपई॥तुरसीजोगीजोगसुषमांहीं॥स्व
तंतरहंयचैनांही॥सावधानहुवारहैजांही॥अपनेजोगाभ्यासजुम
हीं॥२३॥साषी॥तुरसीजोगाभ्याससमि॥नाहिनआनउपाइ॥मनइ
द्रीबसिकरनकों॥सतगुरदईबताइ॥२४॥केमनथिररहैनांवमैं॥
कैथिरजोगाभ्यास॥कैथिरसंतसंगतिमहीं॥कैथिरसतगुरपास॥
कैथिरआरहिजुध्यानमैं॥कैथिरफिरैउदास॥तुरसीथिरहैवोचाहिए
तोउरधरियेबिसवास॥२५॥चौपई॥तुरसीएसवहीमतसाचा॥
जासोंमनएकरैबिस्वास॥पैबितसीघजोगकैउपाइ॥वेगिनमतथि
रवैसेआइ॥२६॥साषी॥तुरसीकबहूंसाधैजोगकों॥कबहूंदेइ॥
छिटकाइ॥ऐसैंमनथिरहोइनहीं॥बिनकीयेंतीव्रउपाइ॥२७॥एका
ग्रलागारहैं॥तौहीजोगासिधिहोइ॥तुरसीसरधाहीनकौं॥फलनहीं
लागैकोइ॥२८॥ज्योंकोऊबाहेसरनि॥लेलेआवैसोइ॥तुरसीसा
मूंगबिनारहैपचावटहोइ॥ऐसैंमनयाहनामेरै. ये

इ जौलौं जोगकी जुगति सौं। द्रिढ अभ्यास न होइ ॥२९॥ चौपई ॥
तुरसी जोग जुगति जिनि जांनी। तिनके मन थिर सयेउ रआंनी
जोग जुगति सों रहे अचेत। तिनके मन गान पाये षेत ॥३०॥ साखी
॥ जांनी नांही जोग गति जोग पंथ मैं आइ। तुरसी तिनके मन की
सो गांक हौ क्यों जाइ ॥३१॥ जावत होइ आवै नही। जन पै जोग अभ्यास
तावत ध्यांन मुकाम कों। है देषन की प्यास ॥३२॥ जत्र चपल बुधि ब
सत ही। व्यापत त्रिस्ना रोग ॥ मनसा प्रबल बहि फिरै। मन बंछित
बकु जोगाइ द्विन कौ आदर अतिनि। दिल मैं बसै असद रोग। तुर
सी एआचरन जहां। तहां न सधे छिन जोग ॥३३॥ चौपई ॥ नैन रू
प रत श्रवना नाद। नासा गंध रसनां बक बाद। फुनि रसनारस यों
चित धरै। इंद्री काम तो गा की करै। तुरसी जौलों गरउद वृत्ति ये है तौ
लौं न जोग सधै तिहि देह ॥३४॥ साखी ॥ जावत जोग सधै नहीं। ता
वत उदर चिंतानि। बकु षांना बकु सोवनां। अरु मन माया लीन।
३५॥ आसन थिर आवै नहीं। मिटत न त्रिष पियास। तुरसी जब लग
जोग की बादि करत नर चन आस ॥३६॥ मन उलटि बाहरि कों त्रमै
तु गो चैं नाना सुष। तावत जोग कठिन है। तुरसी सधै न दुष ॥३७॥
ए बिपरीति मिटै बिना। अरु मन बिन भये थीर। तुरसी धारा जोग
की को साधबे सधीर ॥३८॥ चौपई ॥ एस वही रसपा कै करै जोग
साधना परि चित धरै। मांडै मरन धरन गुन साइ। जौं तुरसी जोग सधै
तब काइ ॥३९॥ जोग साधनां तब बनि आवै। जब ये नानारस मिटावै
मन चित सरधा उपजै सोइ। तब साधै सोई सिधि होइ ॥४०॥ साखी ॥ तु
रसी सरधा प्रीति बिन। ऐसा जानौ जोग। ताहि साधते समै होइ उ
पजि आवै रोग ॥४१॥ चौपई ॥ रोग उपजै अजुगति कीयें। जुगति प्रमा
दहि बिसरि गयें। ताते सावधान होइ सोइ। अजुगति पंथ न पकरै
कोइ ॥४२॥ नाअ तिआ तुरना अलसाइ। सनै जोग पंथ लागा आइ।

तुरसी सनैं सनैं सिधि होइ। साध्य संत प्रकारै सोइ॥४४॥ साधक कहे साख
मुनि आषें। रिषि मुनि सिधि सकल यौं साषैं। प्रथम सबा हजि चिंता
त्यागो। तौ तउ जोग माऊ चित लागौ॥४५॥ जोग करन को जो उर धारैं। चै
सुब सु धर्म देंस बिचारै। तहां अचल होइ बैसें प्रानी। तौ जोग साधना
होइ मन मानी॥४५॥ साषी॥ कवन जोग के धीर्जु बिधि। साधै साध
क जान। तुरसीदास ता जोग का। तिनि भिनि करै बषांन॥४६॥ चौ
पई॥ षट साधै षट परहरै। षट कौ षोजे संत। तुरसीदास तब षट मही
परचै लागौ ध्यान॥४७॥ साषी॥ प्रथम जोग आलंबन ये है। आसन साधि
सरल करै देह। अलप अहार जुगति स्यौं लेइ। माया मिग मुष नहि दे
इ॥४८॥ पथ भोजन स्यौं बांधै प्रीति। अपथ को छाडै सब रीति। पथि
भोजन तें सिधि होइ जोग। अपथि उपजै नाना रोग॥४९॥ अचिंत अ
पथि अहार स्यौं। बाइ प्रबल होइ जाग। तुरसी उर आतुर कें। रोग न
दे होइ आइ॥५०॥ ऐसें रोग उतपन होइ। साधक कहैं जु सोइ। के पूरब
लै पाप स्यौं। कैं अति अहार स्यौं होइ॥५१॥ चौपई॥ अति अहार अ
लस उपजावै। निद्रा नष सष तेरस आवै। तुरसी प्रांन प्रबल होइ बहै
सम्या जोग तहां कहां रहै॥५२॥ साषी॥ तुरसी जोग साधना होइ तब
जब आसन करैइ कंठ। अन उलसो तनय बद को। संम साधै संत॥५३॥ ज
करै निवारन नींद को। सनैं सनैं हठ नांहि। तुरसी जोगी जुगति रत।
सो कहिये जुग मांहि॥५४॥ जुगति जुगति अन आचरै। जुगति हि अ
चवै नीर। तुरसी संग अजुगति को। कबहूं न करै सधीर॥५५॥ ना अ
ति हसै न बोल है। डोलै नी अति नांहि। तुरसी थिर होइ उर मही। रहै ध्य
नही मांहि॥५६॥ तब ही जोग फल पाइये। जो संजम रहै सरीर। जुगति जु
ति अन आचरै। जुगति हि अचवै नीर। अधिक न निद्रा अधिक संग॥
अधिक न बोलै बीर। तुरसी संग अजुगति को। कबहूं न करै सधीर॥५७॥
॥चौपई॥

चार अधिकरम नपरि धरैनरंग ॥ अधिकन करै काहू कौ संग ॥ येष
ब अधिक सागि थिर होइ ॥ षट अंग जोग गहि साधै सोइ ॥ ५८ ॥ अष
आसन जोग विधान ॥ १ ॥ चौपई ॥ प्रथमे आसन साधे संत ॥ जे सेंही गु
रदेव बतायो मंत ॥ बिन ही आसन बाढ़ही हरै ॥ तुरसी अंति पार न
ही परै ॥ १ ॥ बिन नीव्र ही मंदिर ढहि जावै ॥ अंत टहै घर मांझ समावै ॥ यों
बिन आसन पक साधै जोग ॥ तुरसी अंत उपजै तहां रोग ॥ २ ॥ सा
षी ॥ आसन पक नये बाहिरा ॥ प्राणायाम करै कोइ ॥ तुरसी अंति
तत्र अंतर परै ॥ सिधकारिज नहीं होइ ॥ ३ ॥ चौपई ॥ प्रथमे जोगी आ
सन करै ॥ द्वतीये षटकरम निचित धरै ॥ ३ ॥ जे अभ्यास करै षटमास ॥
अमल होइ तन रोग बिनास ॥ पीछे बिधि सों तिसे जु बाय ॥ तुरसी
बिघन न परई काइ ॥ ४ ॥ साषी ॥ बिघन को ऊपरि नास कै ॥ जौ आ
सन पक होइ ॥ तुरसी नीव्र बिहून घर ॥ होत न देष्या कोइ ॥ ५ ॥ चौपई ॥
तिग गौ उपरि आसन लाई ॥ बैठै अंग बिधि सों जु बनाई ॥ कनक डंड
लौं सुध सरीर ॥ राषै लोचन भूम धिधीर ॥ ६ ॥ यह सिधासन अैसें करै ॥
सो जोगी जा मैं नहीं मरै ॥ मुकति द्वार के षुलहि क्पाट ॥ तुरसी परसे
जोति निराट ॥ ७ ॥ साषी ॥ सिधासन बैठा रहै ॥ डुलवै हस्त न पाव ॥ आलस
निद्रा भूष त्रिष नहि अंतिग तिउपजाव ॥ सातल नैन अवन सु थिर हहि
रि सुमिरन का चाव ॥ तुरसी अैसें संत कौं समरन करै संताव ॥ ८ ॥
चौपई ॥ सब आसन सिव कीये निरधार ॥ तामें अति सेउतै जु सार ॥ सि
धासन पद्मासन सोइ ॥ तुरसी साधे सिधि जु होइ ॥ ९ ॥ साषी ॥ पद्मासन
की जुगति यह ॥ उलटे उलटा न करि पाइ ॥ लैकैं जान नि पर धरै ॥ नासा
द्रिष्टि लगाय ॥ १० ॥ नांसा द्रिष्टि लगाइ कैं ॥ आसन अचल होइ आगमी
गुरउपदेसी जु गति ॥ बिधि संजुगति कराइ ॥ ११ ॥ आगपर आसन प
लौं ॥ आसन रहै अतीत ॥ तुरसी तब मन जानिये ॥ है वा आसन जी
त ॥ १२ ॥ चौपई ॥ आसन पक नये पक होइ काया ॥ होहि आरोगी अंग
आगस बाया ॥ तब मन करिये प्राणायाम ॥ तुरसी सिद्धि होहि सब का

म॥अ॥७१॥अथप्राणायांमविधान॥अ॥तुरसीप्राणायांमकौ।कोय
नौबिधिसनसोइ॥पापसंमूहनिकौंहरैतवमनअमलनहोइ॥१
तुरसीप्राणायांमस्यों॥सकलतिहोइसमांन॥तवमनसाकौरथथके
पापहंदबिलीमांन॥सिधहोइतनआतमा॥अनहदघुरैनिसा
ना॥ऐसेप्राणायांमकौं॥तजेसुवेदअज्ञान॥२॥तुरसीइहैगतिजा
निकैं॥प्राणायांमकरिलेह॥बारबारबिपरजैबिधि॥रबिससि
पवनपुरेह ३॥चौपई॥रबिससिनाडीबिधिओपाइ॥दोवपोत
पवनाजुपुराइ॥तुरसीकुंभकरेचकसोम॥कौरैजुगतिसनजुग
मलपोइ ४॥साषी॥बासनाजुमेटेबिना॥करहिंबायकौस्यम॥
तुरसीचितनवाहरै॥मनआसाकेपास॥५॥प्रथमेत्यागौबासना
डीकरैप्राणायांम॥इकत्यागेइकउलटियें॥तुरसीसिधिहोहिंकै
मा॥घ्रप्राणायांमआलंबस्यों॥मनकीवृत्तिउलटाइ॥तुरसीमनबसि
करनकौंहेयहउतमउपाइ॥७॥अधममधिमउतम॥प्राणायांमके
तेदो॥तुरसीत्रिबिधिसाधतें॥होइसबवृत्तिकोछेदो॥८॥चौपई॥प्रा
णायांमतीनप्रकारा॥अधममधिमउतमसारा॥मात्राद्वादसचतु
रबीसा॥अरुसमकैउतमछतीसा॥एसबजानितजैजगदीसा॥सो
गीस्वरनरकाईसा॥९॥प्राणायांमसोईसतिसारा॥जामधिउमें
चार॥रीमोहबिनहीबाइ॥तुरसीसाधेसिधिलियावैछा॥१०॥प्रा
मकैअबकोइ॥मात्रासहितजुगतिस्योंसोइ॥सोप्राणायांमके
तैसार॥तुरसीसाधेउतरैपार॥११॥निगतैप्राणायांमजुहोइ
मधिमंत्रबीजनहिहोइ॥तुरसीसोप्राणायांमकरै॥तोजोगीव
संचरपरै॥१२॥८१॥अथप्राणायांममधिअजपामंत्रबिध
॥ग्र॥श्लोकमैंमिलिमंत्रहोइ॥सोमंत्रउरधारि॥तुरसीजपियेज
स्यों॥प्रगटैजोतिमआरि॥१॥तुरसीजोगास्पासमैं॥उसेमंत्रयु
एकवोईसीहंएकें॥जपैहोइजीयपार॥२॥

एकमात्रा तीन ॥ ऐसे मंत्र कौं जपै जाय ॥ होइ जोति मैं लीन ॥ ३ ॥ सो
हं सोहं रैन दिन ॥ सब का हूं कै होइ ॥ जन तुरसी परसा बिना ॥ मुक्
ति न पावै कोइ ॥ ४ ॥ सोहं सोहं होइ नित ॥ नासा अग्रे जाइ ॥ तुरसी
सो सोहं सबद ॥ उचरि अंति अंतरि आइ ॥ ५ ॥ अंति अंतरि सोहं ज
पत ॥ दहिं पाप अंकूर ॥ तुरसी जोति जगामगी ॥ बजै अनाहद तूर ॥
६ ॥ अहंद अनदिन धुरै ॥ जागी जोति अ[illegible]पा ॥ तुरसी अंति अंतरि
जपत ॥ सोहं हंसा जाप ॥ हंसा सोहं हंसा सोइ ॥ ७ ॥ सोहं हंसा जाप कौं जपै
जुगति सिस न कोइ ॥ तुरसी सोहं हंसा सोइ ॥ हंसा सोहं सोइ ॥ ८ ॥ चौ
पाई ॥ सोहं सोहं सबद सु ताइ ॥ नाभि कंवल तें उपजे आइ ॥ सोसोहं
उलटि कै उचारै ॥ नाभि कंवल थिर बैसि बिचारै ॥ परम जोति सौं ला
वै ध्यान ॥ तुरसी ए अजपा परवान ॥ ९ ॥ साखी ॥ रसना करि बिन का
या मैं ॥ ररंकार धुनि होइ ॥ तुरसी सब सा धू कहैं ॥ फुनि अजपा बि
धि सोइ ॥ १० ॥ तुरसी प्राणायाम मैं ॥ मंत्र हंस गति सोइ ॥ बिधि बि
धि कै बरन्या जु हंम ॥ बूझै बिरला कोइ ॥ ११ ॥ आसन प्राणायाम का
कछू क बूकी या बिचार ॥ तुरसी आगे जुगति सौं ॥ बरनौं प्रत्याहा
र ॥ १२ ॥ ए ध ॥ अथ प्रत्याहार लिख्यते ॥ दो ॥ तुरसी प्रत्याहार बिन म
ना हम नोरथ सोइ ॥ न मूल होइ ॥ मिटै नहीं ॥ कोटि करै जो कोइ ॥
१ ॥ चौपई ॥ बारबार इंद्री अरु मन ॥ उलट्यो करै जु जोगी जन ॥ यह
आरंभ ता वक्त जु करावै ॥ जाबर मन इकत्र होइ आवै ॥ २ ॥ तुर
सी कूरम गति न्यौ ताइ ॥ इंद्रिन कौं आनै उलटाइ ॥ रिदा कंवल मैं ए
कत्र करै ॥ ऐसा होइ अति रस वृति रै ॥ ३ ॥ जहां जहां इंद्री मन उन
मत होइ कै करै गवन ॥ वहां तहां तै जोगी हरै ॥ तुरसी हरि अपनै
बसि करै ॥ ४ ॥ अपनें अपनें रस कौं जाहिं ॥ बिष अमृत करि तु गा
तां हि ॥ सुरस हलाहल करि जु दिषावै ॥ गहि गुर ग्यान तहां तें ल्यावै ॥
५ ॥ ज्यौं र बिस्वास तपया ना देइ ॥ अपना किरनि आप मैं लेइ ॥ यौं जु

सर्बिया जोगी करै॥ पूरब के रिपछिम मन धरै॥६॥ तुरसी जब ऐसे
मन आसा॥ इंद्रिन सहित रहै ठहराइ॥ तब नल जोग धारणा होइ॥ सा
त्र संत कहैं सब कोइ॥७॥१०१॥ अथ धारणा बिधांन॥५॥ धारनां
जु ऐसें करै॥ जोग जु गति थिर होइ॥ रूप निरष्यो करै॥ नासा अ
ग्र जु सोइ॥१॥ चौपई॥ इत उत कौ चित वृत्ति जु निवारै॥ चित्त दि
लटि एकाग्र धारै॥ उत्तै नैन बिचि नासा थांन॥ तहां निरषै निज प
द निरबांन॥२॥ तुरसी नासा कहें देस्यो न॥ अथवा भ्रूमधि धर जु
धांन॥ मन अचल करि राषै कहीं॥ परम जोति प्रापति होइ तहीं॥३॥
जहां धरियै तहां तें मन टरै॥ परम जोति पद निरष्यो करै॥ तब धार
ना परस्पर कहूं जानि॥ आगे सुध धांन बषांनि॥४॥ साषी॥ धारनां
जु परपक त्यै धांन सहजि लगि जाइ॥ तुरसी परगट पेषियै परम
जोति इहिं काइ॥५॥१०८॥ अथ धांन बिधांन॥६॥ तुरसी कोटि जग
के कीये कौ॥ जैतै पहुंकौ सोइ॥ धांन सो इक ही कला कौ॥ पल पटंतर न
हीं होइ॥१॥ तुरसी एक घरी अरध घरी॥ लौ ऐसु धरै ध्यांन॥ ता पु
न के अंस हू सम नहीं तीरथ ब्रत दांन॥२॥ आदि अंति आगे पद र
जे रहे धांन ही समाइ॥ महिमा उन जोगीन की॥ कापै बरनी जाइ॥३॥
चौपई॥ जोगी ध्यान धरै जु ऐसें॥ जौं बिषयी रत काम नि तैसें॥ रति दि
वस कंठ हि न बिसारै॥ यों जन धांन धनी कौ धारै॥४॥ कीट भ्रंग ही इकै
जु धावैं॥ चंद चकोर लौं धान लगावै॥ तुरसी ऐसे कोऊ होइ॥ आत्म
ध्यानी कहियै सोइ॥५॥ सम आसन सम काइ बिचारै॥ सम ग्रीवा करि
धांन जु धारै॥ नासा अग्र नैन चित देइ॥ परम जोति परचा करि लेइ॥६॥
अथवा रिदै जु धारै धांन॥ मन पवन नख टाउर थांन॥ अस मन पंस लौं बै
वै सोइ॥ तुरसी पूगा ब्रह्म रहोइ॥७॥ साषी॥ सपरस रूप सम है नहीं॥ सब
द न स्तु न ईकोन॥ तुरसी लागा जो निरंजन॥ यह मन उन मन धांन॥८॥ बीस
सिंगार रस स्स॥ धांन गंध बिली मांन॥ तुरसी उन मनि लोके. ये संत कहै

एकमात्रा तीन ॥ ऐसे मंत्रकौं जपै जाय ॥ होइ जोति मैं लीन ॥ ३ ॥ सो
हं सोहं रैन दिन ॥ सब काहू कै होइ ॥ जन तुरसी प्रत्याबिनां ॥ मुक्
ति न पावै कोइ ॥ ४ ॥ सोहं सोहं होइ नित ॥ नाया आये जाइ ॥ तुरसी
सो सोहं सबद ॥ उचारि अति अंतरि आइ ॥ ५ ॥ अंति अंतरि सोहं ज
पत ॥ होहिं पाप नभूर ॥ तुरसी जोति जगामगी ॥ बजैं अनाहद तूर ॥
६ ॥ औहद अनदिन घुरें ॥ जागै जोति अ[illegible]पा ॥ तुरसी अति अंतरि
जपत ॥ सोहं हंसा जाप ॥ हंसा सोहं सोइ ॥ ७ ॥ सोहं हंसा जापकौं जपै
जुगति सन कोइ ॥ तुरसी सोहं हंसा सोइ ॥ हंसा सोहं सोइ ॥ ८ ॥ चौ
पै ॥ सोहं सोहं सबद सुनाइ ॥ नाभि कंवल तें उपजे आइ ॥ सोसोहं
उलटि कैं उचारें ॥ नाभि कंवल थिर बैसि बिचारें ॥ परम जोति स्यौं ला
वै ध्यान ॥ तुरसी एअजपा परवान ॥ ९ ॥ साषी ॥ रसना कर बिन का
या मैं ॥ ररंकार धुनि होइ ॥ तुरसी सब सा धू कहैं ॥ फुनि अजपा बि
धि सोइ ॥ १० ॥ तुरसी प्राणायाम मैं ॥ मंत्र हंस गायत्रि सोइ ॥ बिधि बि
धि कैं बरन्या जु हंस ॥ बूझै बिरला कोइ ॥ ११ ॥ आसन प्राणायाम का
कछू कछू की या बिचार ॥ तुरसी आगै जुगति स्यौं ॥ बरनौं प्रत्याह
र ॥ १२ ॥ ए ॥ ४ ॥ अथ प्रत्याहार लिष्यते ॥ ४ ॥ तुरसी प्रत्याहार बिन म
ना हम नोरथ सोइ ॥ न मूल होइ मिटै नहीं ॥ कोटि करै जो कोइ ॥
१ ॥ चौपई ॥ बार बार इंद्री अरु मन ॥ उलट्यौ करै जु जोगी जन ॥ यह
आरंभ तावत्त जु करावै ॥ जावत मन इकत्र होइ आवै ॥ २ ॥ तुर
सी कूरम गति न्ह ताइ ॥ इंद्रिन कौं आनैं उलटाइ ॥ रिदा कंवल मैं ए
कत्र करै ॥ ऐसा होइ अस्थिर मन वृत्ति रै ॥ ३ ॥ जन होन होण इंद्री मन ॥ उन
मत होइ कैं करै गवन ॥ वहां तहां तें जो गी हरै ॥ तुरसी हरि अपनै
बसि करै ॥ ४ ॥ अपनें अपनें रस कौं जाहिं ॥ बिष अमृत करि तु गा
तां हि ॥ सुरसह लाहल करि जु दिषावै ॥ गहि गुर ग्यांन तहां तें ल्यावै
॥ ५ ॥ ज्यौं रबि अस्त पयानां देइ ॥ अपनी किरनि आप मैं लेइ ॥ यौं जु

सवैया जोगी करै॥ पूरब के रिप छिम मन धरै॥ ६॥ तुरसी जन ऐसें
मन आइ॥ इंद्रिन सहित रहै ठहराइ॥ तब नल जोग धारणा होइ॥ सा
त्रत सत कहैं सब कोइ॥ ७॥ १०॥ अथ ध्यान बिधान॥ १॥ धारनां
जु ऐसे करै जोग जु गति थिर होइ॥ यम रूप निरख्यो करै॥ नासा अ
ग्र जु सोइ॥ १॥ चौपई॥ इत उत की चितवनि जु निवारै॥ चित दि
ष्टि एकाग्र धारै॥ जैसें नैन बिचि नासा थान॥ तहां निरखै निज प
द निरबांन॥ २॥ तुरसी नासा कहै दे स्थांन॥ अथवा भ्रूमधि धर जु
धांन॥ मन अचल करि राखौ कही॥ परम जोति प्रापति होइ तही॥ ३
जहां धरिये तहा तैन मन टरै॥ परम जोति पद निरख्यौ करै॥ तब धार
ना परपक जु जानि॥ या आगें सुष ध्यान बषानि॥ ४॥ मास॥ धारनां
जु परपक तये ध्यान सहजि लगि जाइ॥ तुरसी परगट पेखिये परम
जोति इहि काइ॥ ५॥ १०८॥ अ [illegible] ॥ १॥ तुरसी कोटि जनम
के कीये कौ॥ जैं तप कौ सोइ॥ ध्यान सो लहै इक ला कै॥ पल पटंतर न
ही होइ॥ १॥ तुरसी एक घरी अर धर्ड घरी॥ लगौ सुध ब्रह्म ध्यांन॥ ता सु
न के असहृ समि नही तीरथ ब्रत दान॥ २॥ आदि अति आगें पहर
जे रहे ध्यान ही समाइ॥ महिमा उन जोगीन की॥ कापै बरनी जाइ॥ ३
चौपई॥ जोगी ध्यान धरै जु ऐसे॥ ज्यौं बिषई नर कामनि जैसें॥ रति दि
न सक रहि न बिसारै॥ यों जन ध्यान धनी को धारै॥ १॥ कीट भृंग होइ कै
जु ध्यावैं॥ चंद चकोर ज्यों ध्यान लगावै॥ तुरसी ऐसे को ऊ होइ॥ आ ता
ध्यानी कहिये सोइ॥ २॥ सम आसन सम काइ बिचारै॥ थमिग्री वां का र
धांन जु धारै॥ नासा अग्र नैन चित देइ॥ परम जोति परचा करि लेइ॥ ३॥
अथवा रिदै जु धारै ध्यांन॥ मन पवन उलटा उर थांन॥ असन पंच सोवै
वै सोइ॥ तुरसी पूरा ब्रह्म रहै होइ॥ ४॥ गाथा॥ सप रस पम समरै नही॥ सब
द न सुनई कान॥ तुरसी लागा जानिबन॥ यह मन उन मन ध्यांन॥ ८॥ बीस
रि आइर सस्स॥ धांन गोंध खिली मांना.

सहनोंन ॥ ९ ॥ ज्यौं निबाबाके नारमैं ॥ तुरसी तरंगन्ह होइ ॥ ध्यानलषा
ब्रजांनिये ॥ जब ऐसें रहै मन सोइ ॥ १० ॥ चार बिचार न उपजै कोऊ
रिदै जु आंन ॥ निज तत्त सों लागा रहै ॥ तुरसी ध्यान प्रवांन ॥ ११ ॥ चौपई ॥
तुरसी रिदा कवंलके मांही ॥ जोति मई जगदीसर हांही ॥ ता ध्यांनमें र
हे यौं होइ ॥ जैसें कीच पषांन जु जोइ ॥ १ ॥ साषी ॥ तुरसी कीच पषांन
लौं मन रहै रिदथिर होइ ॥ अप्रमेव सुष ब्रह्म को ॥ तब बिलसे सुष
सोइ ॥ १२ ॥ तुरसी यह ध्यान जु कह्या ॥ सदगुर के प्रसादि ॥ आगै बर
नौं अति अमल ॥ पावन परम समाधि ॥ १३ ॥ ॥ २०७ ॥ अथ समाधि बि
धांन ॥ ॥ तुरसी परम समाधि सुष ॥ तब प्रापति है सोइ ॥ जब पूरन स
दगुर को ॥ प्रसाद प्रगट होइ ॥ १ ॥ चौपई ॥ जनम जनम साषि अरु जो
ग ॥ साधि जु आया होइ अरोग ॥ तुरसी तब समाधि सुष पावै ॥ और कं
है सो मो मनि नावै ॥ १ ॥ तुरसी उरै कहै सो नांही ॥ सांषि जोग सिधि त
ये बिना ही ॥ परम समाधि न उपजै मांही ॥ याको अर्थ इतो ही आंही
२ ॥ तुरसी ध्यान धारना इक होइ आवै ॥ अरु चित्त को बिक्षेप मिटावै
एकाग्र रहै ठहराइ ॥ तब समाधि उतपन होइ आइ ॥ ३ ॥ साषी ॥ स्वर स
मावै चंद मैं ॥ चंद सूर के मांहि ॥ तुरसी तब समाधि सुष ॥ जब उत्ते एक
होइ जाइ ॥ ४ ॥ चौपई ॥ तुरसी उत्ते एक होइ जांही ॥ नाद बिंद ससि सू
र समांही ॥ जीव सीव का मेला होइ ॥ सहज समाधि साधू कहै सोइ ॥ ६
॥ साषी ॥ रवि ससि उत्ते उलटि कैं ॥ पश्चिम अस्त होइ आइ ॥ पूरब दि
सा न ऊगवहिं ॥ बकरि नक बहू जाइ ॥ अमल मिलै मिलि बिछुरै
बिधि बिधि सरूप उपजाइ ॥ तुरसी तब या काया की ॥ माया नहीं दर
साइ ॥ ७ ॥ चौपई ॥ उलटै स्वास स होहिं नहिं स्वांस ॥ तब वर गुहा मैं हि होइ नि
वास ॥ मन मधुकर की पर हौहिं संग ॥ तब समाधि कहिए इक रंग ॥
८ ॥ तुरसी मन मधुकर की पर ऊरि जांही ॥ सोहं सोहं सबद होइ मां
ही ॥ सेवर गुहा मैं रहै यौं होइ ॥ ज्यूं मूषक पीपा रा सोइ ॥ ९ ॥ साषी ॥

सूमषद [illegible] यो ज्ञानसे [illegible] गतो
इ स्थ [illegible] समाइ कर [illegible] कयन बका [illegible] दि
घाइ [illegible] जवस्त्रै सेजुहोइ [illegible] माधिकहोइ १८
[illegible] तुरमा आजलजलहिमम [illegible] भूत मिलिवका [illegible]
बुरात [illegible] पनआत्मै मिलि [illegible] तवसमाधिकहियमतिसा
इ १९ तुरसीपरमम [illegible] जानाकैनहीहोइ व
इसा [illegible] नमतजन यहस [illegible] मसोइ २२ [illegible]
[illegible] तरमा [illegible]
पदजा [illegible] को महासुमम [illegible] इ [illegible] जोग [illegible] समाधिमत वमे
विरमा [illegible] इ १ हवजोग [illegible] आधमत [illegible] मौलिकवाट
तुरमा [illegible] पदजानको [illegible] दखायघाट २ हवजोगम
रसाधिमत [illegible] तुरमा [illegible] जानक मत
निबा [illegible] पाज [illegible] जानकैमारगहोइ साधिजो
गसा [illegible] कहैसोइ तुरमा [illegible] विधिकैजान [illegible]
पद [illegible] विचारैं [illegible] सीज्ञानसुपद्रि [illegible] लोक
वपू [illegible] अध्यातम [illegible] लोकानाकहियेसोइ ५
तुरमा अध्यात्मविना [illegible] ज्ञान एकताबिकोपषिया
[illegible] समकैअसमान ६ तुरमा आध्यातम [illegible] एकरूप
टाइ [illegible] कपरहोइ एकहोइन [illegible] लोकेसपेपियइ ७ एकवोरहे
उइनको एकरूगानकोसाइ [illegible] हिजोपषमे लोकबहूप
तानषाइ [illegible] बोहवलयेश्चि पेरिरकं [illegible] मो [illegible] कहो
नहोइ तौरहियेउरवार ७ तुरसीसिधिहोइ [illegible] लामेनही
संदेह जौपुनितेपाप्तिजहोइ [illegible] मलमत [illegible] १० इतवोहि
[illegible] ततयेवटा [illegible] सजोगानुआहि कतेपारगतिसये किदेजुहोते
जोहि इहैजुगतिबूको बाजिनि जोगीतेईआहि [illegible]

ई॥ जु उसै पंथ प्रचो हि॥ १४॥ तुरसी इन उसै पंथ निका॥ ग्यान जोग।
का सोइ॥ फल एको महा मोछि है॥ भिन मत जानौ कोइ॥ १५॥ ज्यों
दोऊ नैना जु ये॥ साधैं बस्त जु एक॥ यों जु ग्यान अरु जोग कों॥ है
एक ही बबेक॥ १३॥ तुरसी ग्यान बिहंग वत्त॥ जोग पपील वत्त।
आहि॥ वह उडि वह क्रम क्रम कैं॥ फलनि भ्यो जु करांहि॥ १४॥
तुरसी फल जु मोछि मारग जु ये॥ महा जोग अरु ग्यान॥ इन उ
सैन सिधि सये ते॥ पईये परम सथांन॥ १५॥ चौपई॥ तुरसी सां
षि जोग ये सार॥ उसै निकौ धारना बिचार॥ द्रिढ करि जु पजे अ
समांहि॥ तौ मुकति मैं अंदेसा नांहि॥ १६॥ साषी॥ ता मैं सांषि बि
हंगम तै॥ उप जे उरह मफारि॥ तुरसी जौं पपील वत्त॥ जौ साधा हो
इ बौह बार॥ १७॥ चौपई॥ तुरसी जोग जु साधा नाही॥ तौ वत्त सां
ष्य हंजु आंही॥ ज्यूं नौका षेवट जु बिनांही॥ बही बही फिरै दरिया
मांही॥ १८॥ साषी॥ तुरसी सांषि सु धरम तब॥ अति तद्रिढ होइ।
आइ॥ जो जु गति यों साध्या जु होइ॥ जोग षडांग जु काय॥ १९॥ तु
रसी षडांग जोग बिन॥ सांषि पिंगुला जांनि॥ सांषि बिनां जोग हं
यहा आहि अंध उनमांन॥ २०॥ एक परन पंछी उडै॥ एक पग चल्यौ
न जाइ॥ उसै उसै हो हिं उसै कै॥ तौ ही तलै सिधि थाइ॥ तुरसी यों ग्या
न अरु जोग का॥ मत देषौ निरताइ॥ एक न्हो इ एक हो इनही॥ तौ कै
सें काज सराइ॥ २१॥ तुरसी सकल सास्त्र निकौ॥ सुम्रति निहं कै यो
इ॥ अरथ इतौ ही सार है॥ उसै य धें सिधि होइ॥ २२॥ अंध पंग मिलि म
तौ करि॥ निकसि गये फल मांहि॥ तुरसी पायौ परम सुष॥ काल
जाल सै नांहि॥ २३॥ ग्यान पंग पग पंष बिन॥ अध्यातम चष अंध॥
तुरसी जब दोऊ मिले॥ तब कटौ काल जम फंद॥ २४॥ तुरसी इन दो
ऊ बिनां॥ जो जन जोगी होइ॥ पायन पंग चष अंधरा॥ ऐसा जानौ सो
इ॥ २५॥ ग्रंथ॥ [illegible] ॥ १॥

तुरसी तत्तपचीसकौ॥ जागरउपजै ग्यान॥ हंसषीरनीरलौंसुध॥ त्यों
मैंकमीनश्रांन॥ सोईजगीमुडीसोई॥ सेषहंसोपरवांन॥ घटदृ
सनमेंकोऊकहै॥ कृतकृतसोईजांन॥ १॥ हंसषीरनीरलौंत्रि नि
प्रकृतिपुरुषएदोइ॥ तुरसीनिजकरिकैलषै॥ सांषिज्ञानीसोइ
॥ २॥ तुरसीजहांसंषैनही॥ नहिंबिपरजैकोइ॥ उत्तैमांहिएकहै
नही॥ सांषिज्ञानीसोइ॥ ३॥ तुरसीसांषिज्ञानकीपारिषा॥ एतै
हीमेंजान॥ गुनमईदेहबिसारिकें॥ होइरह्याश्रात्मवांन॥ ४॥
तुरसीप्रकृतिश्रनित्यहै॥ पुरुषश्रनिप्रवांनि॥ प्रकृतिजडचेतनि
पुरुष॥ इहैसांषिसुधमांन॥ ५॥ तुरसीजुदैजुदैकरिजानिऐं॥ या
श्रात्मकारजुसोइ॥ प्रकृतिकभीकानैकरै॥ रहैपुरुषैहोइ॥ ६॥
तुरसीपुरुषजुनरैकौ॥ श्राहिजुएसहिनांन॥ प्रकृतिगुणव्यापै
नही॥ सबदिनएकसमान॥ ७॥ ॥ ३४४५॥ श्रथचित्तकोपरिकथ
न॥ ८०॥ तुरसीचितचितसबकोऊकहै॥ चितहिनचीन्हैकोइ॥
जिनचितचीन्यांश्रापनां॥ सयेतत्वचितसोइ॥ १॥ तुरसीचित्त
चितसबकोऊकहै॥ चितहैनकोऊजान॥ जैसैंजचनचितजानी
ये॥ सोइलमकोऊध्यांन॥ २॥ तुरसीचितबीजश्रंकूरमैं॥ श्राहि
जुयहसंसार॥ त्रीलोकबिस्तरिरहेो॥ इलसतापरिहार॥ ३॥ चौ
पई॥ तुरसीचित्तबीजसंकलपश्रंकूर॥ इहैसंसारवृक्षकोमूर॥ ता
हिबिध्वंसेयहजगसोइ॥ निश्चैनिजनिरमूरजुहोइ॥ ४॥ साषी॥
तुरसीकितेसहोइसांवतकितै॥ कितेजुसूरकहांहि॥ चित
जीतैतेसूरिवां॥ तेकोऊश्रौरहीश्रांहि॥ तुरसीश्रमलसमाधिसु
ष॥ महामुक्तिन्रबांन॥ तहांचितजीतैबाहिरा॥ कोउनपावै
जांन॥ ६॥ जानकोऊपावैनही॥ जहांनिजसरूपनिरकार॥ तुर
सीचितवृत्तिफेरही॥ श्राडीवोटपहार॥ ७॥ चौपई॥ तुरसीपडि

नहीजीतेजाइ॥ याकोउत्तमकहैउपाइ॥८॥साषी॥ चितवृत्तिक्षि
तभोमिका॥ चित्तकैउत्तैधर्म॥ तुरसीलषिबोडलगतहै॥ कोऊ
बिरलाजानैमर्म॥७॥ जदपिप्रथमचित्तवृत्तिकही॥ तदपिक
रमयोंनाहि॥ तुरसीबरनोंभोमिका॥ तापाछेंश्रोराहि॥१०॥
अथचित्तकीपंचमभोमिका॥ अथक्षिप्तभूमिविधान॥१॥
तुरसीइंद्रीद्वारहोइ॥ यहचित्तबाहरिजाइ॥ रजगुनकेउदवे
गतैं॥ यहक्षिप्तभूमिकहाइ॥१॥ तुरसीकहूंदुषसुषपुनिक
हूं॥ पायेअपायेहोइ॥ योंबुद्धीउत्तबुद्योकरै॥ इनाबिषयनमेंसो
इ॥२॥ चौपई॥ जावत्तरजतमलेपीचित्त॥ तावचलहैनहीउर
थित॥ तुरसीउरथितिकौतोपावै॥ जोपूरबतजिपछिमआ
वै॥३॥ साषी॥ तुरसीपछिमनावई॥ यहचित्तअधअज्ञानपरे॥
स्यारजगुननिका॥ बहाबहाफिरैअज्ञान॥ घेरिघेरिमुनियरथ
के॥ शिनैनकाहूकानि॥ क्षिप्तभोमिकाजानियह॥ जहांयहअै
चातानि॥४॥५॥ अथमूढभोमिकाविधान॥ तुरसीतामसरू
पीचित्तयह॥ निश्चैजानोंएसोइ॥ कृत्तअकृत्तसमझैनहीरहा
अतिजडहोइ॥१॥ चौपई॥ भलीबुरीसरअवसरसोई॥ सुत्त
असुत्तकीसमझिनकोई॥ तुरसीजबअैसाचित्तहोइ॥ महातामसीकहियेसोई॥२॥ साषी॥ तुरसीमूढभोमिकायह॥ जहांकृत्त
अकृत्तनज्ञान॥ निजकिसमक्योनापरै॥ होइरहैलोपबिज्ञान
॥३॥१२॥ अथबिक्षिप्तभोमिकाविधान॥१॥ चौपई॥ सप्तभोमि
काजबचित्तआवै॥ तबअैसाहोइकैजुदिषावै॥ सुषरुचिदुष
देष्योनसुहाइ॥ तुरसीसोईसोईकरैउपाइ॥१॥ स्वर्गनिकेसुषनि
कौंजुचाहै॥ करिकरिप्रीतिजुवोरनिबाहै॥ तुरसीयोंजानैंन
हीअंधा॥ येईसुषफिरिद्वैहैफंद॥२॥ साषी॥ जूंबिषकेलडूवान
पर॥ मिश्रीलाईसोइ॥ मोठेकरिकरिषाईये॥ अतिबिसूचनि

सरूपहैं॥मतरपतीजोकोइ॥३॥तुरसीबिछिप्तभूमिकायह
सतोगुनीजुकहाइ॥आडीआगलहोइरही॥बहजायबिचि
आइ॥अलपज्ञानअलपहीसुख॥उत्तैनिसुखउपजाइ॥वाहिल्य
गेंहीमुक्तिहोइ॥औरनआनउपाइ॥६॥अथतीनभूमिका
त्यागबिधान॥७॥चौपई॥तुरसीतीनभूमिकामांही॥हलचलत्र
धिकअचलसुषनांही॥तातेंजोगाभ्यासईकरै॥प्रनहित्यागिआगेंचि
तधरै॥८॥साषी॥तुरसीबिधिबिधिकेमेलैं॥जुगतिउपाइबिचारि
उतिकेनिचितथिरकरै॥जनत्रियभूमिनिवारि॥तुरसीतानिभूमि
कात्यागउपजावनसंसार॥एकाग्रनिरोधभिन॥खुलेनमोछिदवार॥९॥
॥२॥अथएकाग्रभूमिकाउपाइबिधान॥१॥एकाग्रचित्तकरन
कौंपवनमउपायजुयेह॥तुरसीजुगतिजतनगहौ॥तजिअजुगतिकौ
नेह॥१॥चौपई॥तातेंजोगीजुगतिसमाय॥अजुगतिकेनेरेनहिंजाय
तुरसीजुगतिमांमथिरहोय॥यहचितसबसाधककहैसोइ॥२॥आदि
अंतिमधिउलटिकरै॥उलटिउलटिफिरिफिरिचितधरै॥तुरसीउलटतउल
टतसोइ॥एकदिनांसहजैथिरहोइ॥३॥साषी॥तुरसीयहचितरहैग
एकाग्रहोइमांहि॥जोयाकौकरैकोइ॥छिनजुबिसारैनांहि॥४॥तु
रसीइहिआरंभिलागिरहै॥रातिदिवसइकतार॥तबसलएकाग्रहो
इ॥यहचितपरहरिआंन॥५॥२०॥अथएकाग्रभूमिकापारुषबि
धान॥६॥तुरसीएकाग्रचितभयेके॥आंहिजुयेसहनांन॥यरेस्या
इषसुषका॥चलैनहीकहींआंन॥आचामाफलगपारहै॥ज्योंचकोर
ससिध्यांन॥चात्रिगघनसफरीजुजल॥बिछुरततजैप्रान॥१॥२०
॥अथनिरोधभूमिकाबिधान॥१॥तुरसीनिरोधभूमिकायह॥इति
रहितहोइचित्त॥परबिहूनपवनजुसौं॥डिगनसकेइतउत॥१॥तुरसी
उडौजुनापरै॥भूलिगयौबहफाल॥

पापासुष निरालं ॥२॥ निरालंब सुष पाईया ॥ जिन काल पाज्ञ चित
वृति रहैत होइ ब्रह्म मैं ॥ पाई पूरन थित ॥३॥ प्रमाण आदि पांचो वृति
या चित्त की जु सोइ ॥ निरोधनो भिका सुधत्तये ॥ इन मैं रहै न कोइ ॥४॥
तुरसी निरोध चित्त तयें उपजै प्रम समाधि ॥ बीज रहित मैं द्रष्टु रहित
रहत जु सकल उपाधि ॥५॥३॥ अथ पंच वृति नाम निधान ॥ छ ॥ तुरसी
ये हू वृति जु करन ॥ कहा नाम थों सोइ ॥ तिन नि भिन्नि प्रगट कहौं ॥ औंस
बकौं ग्यान जु होइ ॥१॥ यह कंचन काच है यह ॥ नां नां रतन बाजी रांग ॥
तुरसी प्रवाम वृति यह ॥ कीयो कै रगण नान ॥२॥ मिथ्या देहादिक नि
कौं ॥ आपा जानै सोइ ॥ तुरसी बिपरजै वृति यह ॥ या चित्त की जे सोइ ॥३॥
बचन ग्यान उतपन होइ ॥ बस्त ग्यान न होनो हि ॥ तुरसी बिकल्प वृति
इहै ॥ या चित्त की जु आहि ॥४॥ बूडि जाव दरियाव मैं ॥ रहै न सुधि धन
धाम ॥ तुरसी ताम स चित्त वृति ॥ निद्रा याकौ नाम ॥५॥ जे आगे सुष
सो गये ॥ दुष रु भोगये देह ॥ तुरसी समृति ना मिटै ॥ पुनि चित्त की वृति
ये ह ॥६॥ इन पांचो वृतिनि तें ॥ नष्ट वृति कि चित्त होइ ॥ चित्त जित जोगी जा
नियह ॥ जो ऐसा है कोइ ॥७॥ चौपई ॥ तुरसी चित्त जित्त जोगी नया ॥ ता
हि कृतकरन कछु न हीरह्या ॥ अजित चित्त कौं समृति तैं ॥ जतनक
रत आलस क्यों बनैं ॥८॥ साषी ॥ तुरसी जावत चित्त मैं चंचलता दरसा
इ ॥ तावत केरौ चित्त कौ दीजे नहीं छिटकाइ ॥९॥ जावत चित्त बाहरित्त
मैं ॥ तावत तुरपद दूरि ॥ तुरसी आवै उरम हीं ॥ तौ पावै पद पूरि ॥१०॥
चित्त मूढै थिर के गुना ॥ गारक होइ गलि जांहि ॥ तुरसी आतम उदित
होइ ॥ रिदा कंवर के मांहि ॥११॥ चित्त बित्त सब या घलि कसौ ॥ चित्त बि
त आषैं बेद ॥ तुरसी पईए परम पद ॥ जौ चित्त कौ होइ छेद ॥१२॥ चित्त
लगि रह्या बिराट स्यौं ॥ बाणी कथै निराट ॥ तुरसी दास महा मोषि के
क्यों करि षुल हि कपाट ॥१३॥ छिन इहां छिन उहां चकूं दिस ॥ चित्त चं
चल चलि जाइ ॥ जावत जन के थिति नहीं ॥ रही अथिति उरझाइ ॥

॥१४॥चितचपलबासनाबसि॥फिरैपवनलौंसोइ॥तुरसीसोउलटै
बिना॥सिधिकारिजनहीहोइ॥१५॥उलटायेहीमिलैगा॥आतमसुष
केमांहि॥तुरसीउलटैनाहिय॥भ्रमतजहांतहांहि॥१६॥तुरसीज
हांतहांरिदस्थानतजि॥चीतचंचलचलिजाइ॥तहांतहांतेल्याव
हीहूनौंरोगनलाइ॥१७॥चितचलावैदेहकौं॥पवनातरकौडार
तुरसीकारनचितपवन॥नहितनतरकौसार॥१८॥मालीकुं
नजुजलबिना॥सौंषालीयहकाय॥तुरसीचितजलस्यौंतरै॥तो
आत्मनमदरसाइ॥१९॥चितनारषिरसयेबिन॥उपजतअनंत
तरंग॥तुरसीततआतमन॥दरसतनहीअनंग॥२०॥तुरसीअनं
गआत्मा॥ज्यौंहैत्यौंनदरसाइ॥आवतचितजलमधैं॥त्रिगुन
कभीरहीछाइ॥२१॥पैपानीलौंमिलिरह्यौ॥तीनौंगुनकेमांहि॥तु
रसीताकौबिछरिबौ॥हंसग्यानबिननांहि॥२२॥हंसग्यानअंग॥
अंगस्यौं॥छरमथिरदेजुहोइ॥तुरसीतबगुणचितदोऊ॥छुदेछुदे
होहिसोम॥२३॥चितमूरखमायाजुगुण॥पलवविषैबिकार॥तुर
सीसोन्रमूरखयेरहै॥एकनिरंकार॥२४॥औरआलंबसबहरि
करि॥चितकेकेरैलागि॥तुरसीचितकेरैलगे॥भरमजाइसब
भागि॥२५॥तुरसीचितकौंबंधनदीजीये॥चितहिघेरिघटमांहि
चितघेरेइंद्रीअथी॥बिलीमानहोइजांहि॥२६॥६१॥अथचित
केधर्मबिधांन॥७॥तुरसीचितधरमीकेबेधमें॥संतकहेंसमझा
इ॥एकैसदगतिपाइए॥एकअगतिलैजाइ॥एकनदीनालेजुदो॥ए
कअमलमलएक॥तुरसीअमलपछिमबहै॥मलपूर्वगवनेक॥
एकअरधएकउरधमन॥एकचपलएकथीर॥तुरसीएचितकेधर
म॥समझैकोऊसधीर॥३॥तुरसीअरधमाघइंद्रीनकौ॥मूरखब
हैसोह॥अनमोलसहजहै॥संतनिकघ॥बूझैबिरलाकोइ॥
॥तुरसीउरधपंथमहांमोतिकौ॥मधि तेलो

मह्मा नौं इहै॥ वा हितें हनी कैं निरताइ॥५॥ इती॥ अथ चित बीज
निरोध बरननं नाम हिं धा ता॥१०॥ सुन अस्तु नत्रा दिजु सकल या चित
कौ बिस्तार॥ तुरसी कछू एक बरनी यों॥ फुनि बरनौं अधिकार॥
॥१॥ चौपई॥ सुत अस्तु सकर मय देह॥ रेही स्यों उपन होहि सोइ॥
ता बीज कौ बीज इह है जानि॥ तुरसी निश्चै तन परवांनि॥२॥ साषी॥
या जगु उत्तपन्न करन कौं॥ प्रगट बीज है दोय॥ तुरसी सुत अरु अस्तुमे
तन तैं उपजे सोइ॥३॥ तातन हूं कौ बीज तो हि॥ बरनि सुनाउं मित तु
सी सब साधनि कहो॥ महा चपल एक चित॥४॥ ता चित्त के सु निबी
ज द्वै॥ बेद पुरानन माहि॥ तुरसी ते जु प्रगट हैं॥ छिपे छिपाये ना
हि॥५॥ प्राण बायु की चपलता॥ फुनि बासना जु सोइ॥ इनतें निके
उदित ते॥ चित की उतपत्ति होइ॥६॥ प्राण सपद बासना कौ॥ भेद
उपाकन हार॥ तुरसी निश्चै सही स्यों॥ है द्रिष्टि कौ बिकार॥७॥ देषें अप
जे बासना॥ देषै चपलके प्राण॥ तुरसी द्रिष्टि देषें बिना॥ संबेदि संबि
त बिलै होइ मान॥८॥ संबेदि उदौ तावत है॥ जावत संबित सोइ॥ तु
रसी संबित बिलै होइ॥ तौ आगैं कछू न कोइ॥९॥ चौपई॥ संबेदि
द्रिष्टि संबित तास्यांन॥ जावत उनैन कौ संधान॥ तुरसी तावत है अ
स्थान॥ समझै कोऊ संत सुजान॥१०॥ साषी॥ जहां लौं सावां जगत की
टहौं ज्ञान अरु ध्यान॥ तुरसी यासु आगैं धसै॥ एक हो हि बिलमान॥
॥११॥ यह चित बौरै लौं गरै॥ अरु बासना बिलांहि॥ तुरसी प्राण चप
लता॥ तौ उरझ उपजे नांहि॥१२॥ प्राण चपलता के मिटें॥ के मिटैं बासना
सोइ॥ दहूं मांहि एक हूं घटै॥ तौ चित उदै न होइ॥१३॥ तुरसी चित के
बीज ये॥ प्राण बासनां मांहि॥ इनकी चंचल बृत्ति मिटे॥ तौ चित उपजे
नांहि॥१४॥ तुरसी इहै रोग सोष दिढ है॥ इहै जु उत्तम बिचार॥ जे बिके
नि बासना मल॥ बस्त अगनि मैं जार॥१५॥ चौपई॥ बस्त अगनि बासना
जरावै॥ तब चित थिर सहजैं होइ आवै॥ तुरसी ज्यों पवनां थिकि जाइ॥

।नहतरगजलदेत दिषाइ॥१६॥ ८३॥ अथचितजीतनेकौंजुग
उपाइ बिधीन॥ १॥ तुरसीचितअटकनकौंइहैमत॥ सरमूलसंस
केसतसग कैसाधनां॥ केसदवस्तविस्तार॥ १॥ चौपई॥ अथमेगुरदत
ये सतसंग॥ त्रितीये सारसास्त्रअग॥ चतुरथचितअटकनकौंसा।
तुरसी पंचमपरमनाथांन॥ २॥ एपांचौंआलंबन सार॥ मेटनकौं
तवृति बिकार॥ तुरसी औरकथा बिस्तार॥ कथिकथिकोऊबांधे
नार॥ ३॥ साषी॥ कथिकथिकलपना॥ मालजुगूथ्योकौम॥ चित
जीतनकौंजुगतिमत॥ येहजुगिजुगिजोम॥ ४॥ चौपई॥ तुरसीएह
जुगजुगमांही॥ चितजीतनकौंजुगतिजुआही॥ जोबइनहि दिषि
कैंजुगहइ॥ सोचितजीतिजगतलंघिजाइ॥ ५॥ साषी॥ चौहातीने
लीकभैं॥ औरकहौकहांलौंपोइ॥ तुरसीचितजीतनेकौंइहैमतऔ
रनकोइ॥ ६॥ तुरसीएपांचौंआलंबतजि॥ जौसोचाहैमन तिरअम
क रिकरिआंणियां॥ हत्यमोवेयहठन॥ ७॥ तुरसीकरमनिग्रहजु
यह॥ संतसी दीया दिषाय॥ चितजीतनकौसुगमत॥ कोइजोगहि
सैंकराइ॥ ८॥ तुरसीयहमतसागिजे॥ जौसोचाहैचित॥ सोप्राणी
कनपरहरै॥ कूकसकूटेनित॥ ९॥ तुरसीकूकसकूटेनित॥ जुगति
बिनचितवलटावै॥ सोकंदीपगलागि॥ षलजुवमनेनेअजावै
॥ १०॥ जिहिजतेउतारपरैगडौंडनमेंमेंभाय॥ असीवताजुयाचहैं
बिनिग्रहजुगतिउपाइ॥ चितहाथिआवेनहीं॥ सकरिकरिप
चिजाइ॥ तुरसीचितसोजीतिहै॥ जिनकेजोगबलकाइ॥ ११॥ ११४॥
॥ ३६३०॥ अथचितसुधकरनकौपरिकरन॥ ८१॥ कोटिज
तनकोऊकरै॥ हांडौबनबनजाइ॥ तुरसीचितसुधनयेबिन॥ मे
हिपदन दरसाइ॥ १॥ तुरसीदरपनमेंमुषदेषिये॥ जोदरपनसुध
होइ॥ तवेबिंबभासैनहीं॥ कोटिकरैजोकोइ॥ २॥ तुरसीतनसुध
मनसुधप्राणसुध॥ चितसुधहोवैआइ॥ तबहरि मोंहिस

ज्यौं दरपन में छाइ ॥३॥ चौपई ॥ ज्यौं दरपन छाया नतनीर ॥ अ
मलत्तये मासत हैं बीर ॥ यौं चित्त सुध नये आत्मरूप ॥ प्रगटये
षिये अंतिहा अनूप ॥४॥ दोहरा ॥ तुरसी चित्त सुध होइ ॥ रागदो
ष मल त्यागि कैं ॥ तौ दरसै सब ही लोइ ॥ ता चित्त दरपन मैं सदा ॥
॥५॥ साषी ॥ तुरसी इहै बिचारि कैं ॥ चित्त कौ मैल मिटाइ ॥ अति त
हां उजल करौ ॥ यौं आत्म रूप दिषाइ ॥६॥ तुरसी परदा चित्त कौ ॥
चित्त कौं परदा नां हि ॥ आं षिन आडी बादरी ॥ रबि ज्यौं का त्यौं आहि
ता तैं चित्त सुध की जीये ॥ मेटि आवरण मांहि ॥ तुरसी सब दादिक
निकौ ॥ अर्थ इतौ हा आं हि ॥७॥ तुरसी दष्टादिक निकौ ॥ जिन की
२ यौं निज कैं नास ॥ तिन के चित्त दपन मएँ ॥ धनि धनि वेदास ॥८॥
चित्त सुध साधू जननि कैं ॥ निकट निरंजन राम ॥ तुरसी प्रगट हो
इरहा ॥ रोम रोम सब ठांम ॥९॥ चौपई ॥ चित्त सुध त्तये सुध होइ स
रीर ॥ तावे न्हाव मन्हावौ नीर ॥ तुरसी सब साधू यौं भाषैं ॥ चित्त सुध ही
कौं टीके सयै ॥१०॥ साषी ॥ चित्त सुध ह्वा जांनियें ॥ जब रा है न औ
गुन आंन ॥ तुरसी अपनें ह्वै बिसरै ॥ मलिन करम कौ ध्यांन ॥११॥
चित्त सुध ह्वा जांनियें ॥ जब ऐसा होइ बीर ॥ रज तम कलुष न ला
वई ॥ अपनें सुद्धि म सरीर ॥१२॥ चित्त सुध ह्वा जांनित ब ॥ जब सत्र
मित्र न हि कोइ ॥ दसौं दिसा दरपन मई ॥ तुरसी दरसै सोइ ॥१३॥ चित्त
सुध ह्वा जांनित ब जब बिषै बास नां बिलाइ ॥ तुरसी उर बाहरि
सकल ॥ एक रूप दरसाइ ॥१४॥ चित्त सुध ह्वा जांनि त ब ॥ जब त्रि
गुण काट नयारा कौंन ॥ तुरसी न्हे गुन कौं मिल्या ॥ जैसें जल जल ली
न ॥१५॥ चौपई ॥ तुरसी सुध चित्त त्तयौ जु जाकौ ॥ रिपि घप्र पडरया
यौ बत्ताकौ ॥ बेरी कौ ऊब सासै आंन ॥ तातैं अत्ते आनंदी प्रांन ॥१६॥
कलह कालिमा चित्त के गाये ॥ मन अरु मनसा न्हमलत्तये ॥ तुरसी
तब आनंदी चित्त ॥ जहां देषै तहां आनंद पचि ॥१७॥ साषी ॥ सुध ॥

चितकेसत्रको॥मित्रहिकहियोकोन॥समयदमोहीहोइरह्यो॥
मिलिकेंश्राटेलौंन॥१८॥तुरसीश्राटेलौंनलौं होइरह्यापदमें
सोइ॥जिनचित्तसुधकीयाश्रापनां॥रागदोषमलषोइ॥१९॥
॥चौपई॥रागदोषमलजरिगये॥मनश्ररुमनसाउजलत्तये॥
तुरसीश्रमलश्रात्माप्रकासी॥चित्तसुधनयेश्रैसीमत्तिजासी
॥२०॥साषी॥तुरसीश्रैसीमत्तिनई॥श्रमलश्रादरससमान॥त
मांहीगदितनये॥निजसरूपन्हबांन॥२१॥३६६० श्रथबासना
कोपरिकरन॥८॥तुरसीजोलौंबिबिधिबिषबासनां॥पिंड
ब्रसेइरही श्राइ॥तौलौएकश्रात्मतत्त॥भिनिभिनिकेदरसाइ॥१॥
घटमठदहदश्राकासए॥परदाज्योंत्रियगांव॥तुरसीजबपर
दामिटे॥तबएके॥निरनाम॥२॥तुरसीनिरनामीपुरुष॥निर
थिरनिरभेद॥बिबधिबासनाबसिनये॥ताहूंनयोबिभेद॥३॥
तुरसीतीनौंलोकलौं॥जीवजंतसबजेज॥जुदीजातिनामजु
जुदो॥सुहैबासनाबंधेज॥४॥तुरसीश्रयनीबासनांमें॥श्रायकी
याश्रारंभ॥तातेंएकश्रनंतनया॥नहीकवानिरनांम॥५॥तुर
सीनिरनामीश्रात्मायह॥श्राइश्रावरणमांहि॥श्रपनेंरूपहिंचि
न्है॥बासनास्यें मांथेंनांहि॥६॥बासनापटलजुफिरायो॥
निजचबूनपरिसोइ॥तातेंसरूपजुश्रापनों॥निजकरिउदेनहि
इ॥७॥तुरसीज्योंतुबबादरो॥राष्याचंदछिपाइ॥श्रैसीहुतबा
सनाए॥सतकोरूपतियाइ॥८॥तुरसीतुबबासनाहबश्रा
नि॥करिसोनियेजुनांहि॥तुरसीमिलेउपाधिकें॥कालमालहो
इजांहि॥९॥मनजावेतोलोंजीवे॥श्ररबासनाश्रनेक॥तुरसीम
नमूलगमये॥रहैएककाएक॥१०॥चौपई॥कायाकसोउग्रतप
करो॥देहीकरिजीवतहीमरो॥तुरसीजावतमूरेनमन॥तोलोंन
मिटतबासनातन॥११॥साषी॥

सनामिताइ तुरसी गैरे मिटै नही कसैकसैयह काय १२ मौन
फ्ती जो तो देषहु मदहरि बिन कोजोइ कोटि बरष तालौल
गी अंतेनहुल सोइ १३ जौव तहु त्यागब बासनां तन मैं रही
प्रवेस जु काया मन मैं तावत को टिजतन कर क कोइ तुर
सी सिधि कारिज नहीं होइ १४ सहस्र पांच दस लौं लगौ त
नमन मांहि समाधि उठजात किन नामिटै बिषमबासना मा
धि १५ तालौं सिद्ध न रहै जाइन मनमन त्यागि तुरसी जब जो
यु नागाइ तब पहले ही तेजागि १६ ज्यूं पुत्र पया तिम धि स्वप्न
को जाग्रत देको सोइ बाजपूत बरहि खोकैरै औसरि गदेखे हे
दू १७ यौं सरीर मैं सरीर की रही बासना समोइ तुरसी तनब
जरहिं सब जब जो गाता न कत सोइ १८ तान बिना नाहिं नही
बिषमबासनायेह सावे तप आग निजराइकैं देह मिलावो प
दे १९ तुरसी तन सुकाय यंजर करो धरौ रैनि दिन धान उ
बासनां नामिटै बिना बिचारे ग्यान २० ग्यान जोग उत्तम तिमि
है सब बासनां बिलाहि तुरसी निरालंब जोग सो तालौं मैर
हि जाहि २१ स्वसाबन उत्तजलपानी सिले पंक कोमल
न ताव नसानी तुरसी ते मैं एक न होइ यौं ज्यों है सो मल न सा
इ २२ तुरसी यौं जु स्नानं अरु जोग बिन अंतर को मल ये
इ न सुर न ही केन ही जो कायह कसो जु कोइ २३ कोटि बर
ष लौं काया कसि करे तपस्या कोइ तुरसी अंतरि होसगी अवि
फ्लै गी सोइ २४ तपकौं दोष न कीजीये तपदेव उत्तम तत्त्वाहि तु
रसी उर होइ वासना सो इसिधि होइ नाहि २५ सावे होइ उर
अख्खर बुधि सावे देव सुभाव जैसे साइ जनतप करै वैसो
ही होइ उपाव २६ रज गुन तम गुन कौ लिये करे तपस्या कोइ
तुरसी अक्षर होइ ज्यों तरे सतगुन दायी होइ २७ तुरसी सावै

कासकों॥फिरिओवैसबवामी॥
वतकछूसकांम॥२८॥चौपई॥गिरहीकामिकफलके
॥रातिदिवसमिलिकरैइलाजा॥तोतेमोछिपदहिनहीपा
हेबासनांतहांरहावै॥२९॥साषी॥कामिकफलनिभोग
ावौलोकत्रमांहि॥तुरसीवैग्रथवरूपहैंइयारूपीनाहि॥
नगुकारनिजउपरहै॥जपतपकरैअघाय॥तुरसीदासजगु
ावै॥अंतिसोनरकिपराइ॥३०॥तुरसीअनंतबासना॥एककहो
वरनैकोइ॥चितनोभिमेरघोकैरै॥मूलनासकोंहोइ॥३१॥
रसीअनंतबासनां॥मूमूमाहीबीजा॥देअस्तहोयोकरै॥
ोसरिओसरिहीजा॥३३॥ओसरिओसरिदेहौंहि॥सहाइकबल
ाइ॥तुरसीसहाइकबिनां॥रहीचितमांहिछिपाइ॥३४॥तबलग
ंकलपमनमहीं॥किंचितहंग्रपजेत॥तबलगजोगसमाधिबिस्तम।तु
रसीदूरिहुरंत॥३५॥चौपई॥जबलगसंकलपबिकलपमनमैं॥तब
लगइषकलेसबहुतनमें॥जबसंकलपबिकलपमिटिजाइ॥तुरस
अक्लेसबबिलसाइ॥३६॥साषी॥संकलपजाजावोरकोघरमेंरहे।
जुहोइ॥तुरसीतैसीहीबासना॥वटिबिस्तरैजुसोइ॥३७॥चौपई॥
गहिबस्तरलैफैलतनांहि॥जोंजोंमनकोपोषजुपाहि॥तुरसीजो
फलअग्रजुसोइ॥घृतसीचैसहसगुनीहोइ॥३८॥ऐसीहेबासना
बलाइ॥ताआगेंबुटिबोकिहिंनाइ॥तुरसीजोंजनउलटीलिइ॥
सोसोंअगमपयांनांदेइ॥३९॥अगनिधूमसोंदेहदिसिधावै॥जो
वपरेरकपवनमिलावै॥तुरसीपवनांघोकोसोमहाचपलचि
रहेमोजोइ॥४०॥साषी॥इकसोवैइकजागहोइ॥इकजागिजागाफि
रिसोइ॥तुरसीऐसीबासनां॥लषैजुजोगीकोइ॥४१॥चौपई॥तुर
साजोगीहीनैंप्रमानैं॥कुजोगीधोंइनकाजानैं॥जिनकेकाटरहो
उरझाइ॥कुबधिकामनांयमेंषाइ॥४२॥साषी॥ एककैबी

त्तिगई॥ एक होन की आस॥ उसन बरषा के बीज लौं॥ औसर देउ

का स॥४३॥ चौपई॥ औसरि औसरि द्दो कराँ ही॥ जब ही सहावक मि

लहिं जु आँही॥ तुरसी सहावक बिन सो ग्य रही चित्त माँही बानी होइ

॥४४॥ साखी॥ तुरसी चित्त नो मिका मैं रही बायना समाइ सो न मूरत्त

यें बिनो कहो कैसे होइ काइ॥४५॥ जोगी जंगम तपसी॥ त्यागि र देत न भो

ग॥ तुरसी मन रसना बुटै इ है ल मो बड रोग॥४६॥ मन के र स बिषबास

नो॥ मो ति श्रमाँ ति उपाधि॥ तुरसी जो लों न सुष समाधि॥४७॥ चौपई॥

जाव वउ रुसतउतकी आसा॥ बदि रही बिषै सुषनि की ष्यासा॥ तावत्त

ध्यान ना यो दूनला गै॥ बिषे बासना आडी आगै॥४८॥ साखी॥ धूम मे

टै धूम ना मिटै॥ जब लग आगनि बरत्त॥ तुरसी आगनि सब सांत होइ

तो धूम न्ही दरसंत॥४९॥ जावत्त दहन में दार की॥ है कछु कसरत्ति को

इ॥ तुरसी ता वत्त दहन में उठत धूम की घोर॥५०॥ जावत तकसरत्ति

काया में॥ कांम क्रोध की होइ॥ तावत्त तरंग उठो करे॥ नांनां बिधि की

सोइ॥५१॥ चौपई॥ तुरसी नांनां तरंग जु माँही॥ आगनि धूम लौं उठै

सदा ही॥ तावत्त रोकी है न रहा ही॥ जावत्त अबिद्या आगनि ज माँही॥

॥५२॥ साखी॥ तुरसी कहां लों आखिये॥ बासनांनि को भेव॥ जावत्त ये ता

वत्त नहीं॥ मिलहिं निरंजन देव॥५३॥ मनसा बाचा करमना॥ या में मि

थ्या नांहि॥ आत्मा आडी होइ रही॥ बासना जु बादर मांहि॥५४॥ क

हां नाम आसे कहा॥ बासनानि को भाइ॥ तुरसी सरूप जानियें॥ तो को

ऊ करै उपाइ॥५५॥ लोक बासनां आदि है॥ मानसी बासनां अंत॥ तु

रसी च तुरथ बासनां ए॥ को ऊ जोगी ही तजैं लहंत॥५६॥ चौपई॥

तुरसी जोगी ही जन जानें॥ जो ति ज्ञ आति ता आरं नवानें॥ तिनि सिनि कैं

जतन कराँइ॥ लोका दि बासनां धरे उवाइ॥५७॥ अथ लोक बास

नो दिषांजा॥१॥ तुरसी लोक बासनां सह जहो ऐसी सी बुधि होइ॥ य

ह जु गनिंदा नां करै॥ ऐसा ना मैं सोइ॥१॥ तुरसी लोक बासनां यह है॥

तोमुनकरमकाराइ योश्रकैलेमानदाको श्रीमानमंयेर ३ ७६ ११
तुरसीश्रमसवनिको कोयमभावेनादा जिनकेउरयह श्रमसा।
लोकान्यकोश्रान।२ लोकारिभावनकारने सीषेश्र थाहलाव
लोकारिभावनकारने कंरबकदतनवनाव गागरालाइ ए।१३॥
नि लोकहिलावेचावे तुरसीतकहरिविमुषको दोइलनदनरा
३.३ लोकरिभावनकारनें गङ्सीमपारियाम लोकारिभावन
कारने जागे श्रागेजाम श्रलयश्रदारश्रनपनुया श्रलयश्रनरा
उवराम इतेउपायेकरेलोकको पत्रधनसुलिराम ५
तुरसी लोकवासनाकाज काकालिलजनकरिछलाज जानि गए
मोहाकोमाने श्रोरनिकाकउरमेश्राने ६ श्रलयश्रनश्रना
हीजुपानी श्रनमुषबोलेमधुरीवानी बिधिबिधिकोजुकसोटः
करै करैकरिसाससिमुहूमेंपर ७ सलाकदावनकारनें कम
करिसाधेजोग तुरसीश्रमंजःजोग बांटेश्रानिनगरा ८ यहंया।
हैनेकीनहो सईनांकेसनार तुरसीकादनसाथजो श्रम्का
टैलोकाश्रधिकार ९ तुरसीलोकबासनायह उपजावनहुष
बीज जनममरनफिरिफिरिदेन मदइरहिन्दरीज १० तुरसी
लोकबासनायह सबसाधुजग नाहि नास्तिकोसुषदं श्राग
ाकलिकप
पायज्ञ,नाहि ११।६८
रिबोबिमनःपरमारथनलह ।कि फलयारश्रमारकहा बिवर
नकोजनाहि "१।यहदेषांदयः श्रह नानायथलिमाड यापवा
हमेपाररहे पैपमुहिपावनानाहिं तवियापाटपढिजुबक
तृपहाश्रमकराहि नरयाननजबबिना बरलाबाफबनाहि ३
नवतमनवत्मसास्य परमारयलोक रातिदिदसगप्पोकरै न
हीश्रात्मश्रालोकाछ, तुरसीश्रात्मश्रालोकबिन पढेजुबेदपु
रान परमारथपावैनहीं कलोकएकज्ञानबश्रार तुरस

त्तिगई।। एक हौंन की आस।। उपजन बरषा के बीज लौं।। ऐसे उदेत
का सा।। ४३।। चौपई।। ऐसी रिस्ते ऐसी रिस्ता के कराही।। ज बह सहावक मि
लहिं जु आंही।। तुरसी सहावक बिन सोइ रहै।। चित मांहीं बांनी है सोइ
।। ४४।। साषी।। तुरसी चित मैं निमिकौ मैं।। रहे बासना समाइ।। सो न सूरत
ये बिनी।। कहौ कैसे होइ सकाइ।। ४५।। जोगी जंगम तपसी।। त्यागि रहे तन मो
ह।। तुरसी मन रसना बुटे।। इहै लमौ बड रोग।। ४६।। मन के रस बिष बास
नो।। मां त्रिश्रमां निउपाधि।। तुरसी जो लोंन सुष स्मांधि।। ४७।। चौपई।।
जावत उरहु तगत की आसा।। बटि रही बिषै सुषनि की ष्यासा।। तावत
ध्यांन ला यौ हून लागै।। बिषै बासना आडी आगै।। ४८।। साषी।। धूम मे
टे धूम ना मिटै।। जब लग अगानि बरंत।। तुरसी अगानि सब सांत होइ
तो धूम नहीं दरसंत।। ४९।। जावत दहन मैं दार की।। है कछू कसर तिको
इ।। तुरसी तावत दहन मैं।। उठत धूम की घोर।। ५०।। जावत कसर ति।।
काया मैं।। कांम क्रोध कछु होइ।। तावत तरंग उठौ कैरै।। नांना बिधि की
सोइ।। ५१।। चौपई।। तुरसी नांनां तरंग जु मांही।। अगानि धूम लौं उठै
सदांहीं।। तावत रोकी है न रहांही।। जावत अबिद्या अगानि जुमांही।।
।। ५२।। साषी।। तुरसी कहां लौं आषिये।। बासनांनि को भेव।। जावत ये ता
वत नहीं।। मिलहिं निरंजन देव।। ५३।। मनसा बाचा करमना।। यामैं मि
थ्या नांहि।। आत्मा आडौ होइ रह्यौ।। बासना जु बाद रहांहि।। ५४।। क
हा नाम आसै कहा।। बासनानि को भाइ।। तुरसी सरूप जानियें।। वोको
क करै उपाइ।। ५५।। लोक बासनां आदि है।। मानसी बासनां अंत।। तु
रसी चतुरथ बासनां।। कोऊ जोगी ही तसैं लहंत।। ५६।। चौपई।।
तुरसी जोगी ही लहि जानैं।। जो निज आचिता आरंन बानैं।। तिनि तिनि कै
जतन कराई।। लोकादि बासनां धरै उठाइ।। ५७।। अथ लोक बास
नो हि त्यांनां।। १।। तुरसी लोक बासनां यह जहा ऐसी सीधि बुधि होइ।। य
हू जुग निंदा नां करै।। ऐसी बानै सोइ।। २।। तुरसी लोक बासना यह।।

...मकराह सोश्रकेलेमानदीको श्रीमानसयेका
श्रमसठनिको कोयमभावेमान जिनकेउरयहवासना।
ध्यकोभान २ लोकरिझावनकारने सोधेश्रथिरुनाव
रिझावनकारने करैबकटतबनाव रागरालाइमधुरधु
लोकछिलावेचावे तुरसीतकहरिबिमुषको होइजनदुनरा
१ लोकरिझावनकारनें मद्देसीसपरिधाम लोकरिझावन
स्ने जोगोआगोजाम अलपअदारअलपनुया अलपबचन
वराम इतेउपायकैलोकको पेअधनसुशिरराम ५
तुरसीलोकबासनाकाज काकानिलजनकरैछलाज जोनेजगु
मोहीकोमाने औरनिकाफउरमेआने ६ अलपअनेअलप
हीजुपानी अरुमुषबोलेमधुरबानी बिधिबिधिकीजुकसोटी
कैरे कर्हेकरिमानिषूहमेपरं ७ नलाकलावनकारनें कम
करिसाधेजोग तुरसीअेमजागोमे बाटेअतितरोग ८ यहयो।
हैनेकीनही 'सूईनोकेसचार तुरसीकाढनसकिको अरुका
हैतोकाअधिकार ९ तुरसीलोकबासनायह उपजावनदुष
बीज जनममरनफिरिफिरिकरन मदईरहितदराज १० तुरसी
लोकबासनायह सबसाधूजनकदाहि तात्यागोहीसुषहै औरन
पायजनाहि ११।६८ ॥कबित्त
टिबोबिमन परमारथनलहाहि कहासार असारकहा बिवर
नकोउनाहि १ यहदेषोदेषहैयह नानाग्रंथनिमाहि यापढ
हेमपारहै पैप्रभुहिपहिचानानाहि तेबियापढिपढिजुब
वृषहाश्रमकराहि तुरसीततलषबिना बरेलोबाऊबहोि
नवतमनवतमसारा२ पदसाषीश्लोक रातिदिवसग्रंथोकरे
हीआत्मआलोक॥७ तुरसीआत्मआलोकबिन पढेजुबे
नत परमारथपावैनही कहाकाणकहातुषआन ५

१००॥ ये बिद्यासकल॥ अबिद्याहोइजाइ॥ जावत्तपटिगुनिब्रह्मको॥ प
रमभेदनहीपाइ॥६॥ तुरसीब्रह्मअगाधहै॥ तत्तहैलष्याजनांहि॥
ते दृष्यपटिपटिप्राणीपो॥ भ्रमकरिकरिमरिजांहि॥७॥१५॥॥
अथ देहबासनानिर्धांन॥ चौपई॥ तुरसीजहांजहांबासनायेह
आपाकोंकरिमांनैदेह॥ ऐसीबिपर्जैबुधिहैजहां॥ देहबासनां
कहियेतहां॥१॥ साषी॥ तुरसीदेहबासनायह॥ जहांउलटीबुधिहो
इ॥ बस्तओरमांनैअवर॥ नहीनिरूपनकोइ॥२॥ सब्दआदिबि
षयाजुये॥ अचितसोमनजांनि॥ रात्तिदिवसउदिमकरै॥ देहीके
सुषमांनि॥ जपकरैतपकरैब्रतकरै॥ तीरथहूरटनांनि॥ तुरसी
कोटिजतनकरै॥ देहसुषनिउरआंनि॥३॥ सोईचोरचांडालसो
ई॥ सोईआपघातीजांनि॥ सोईकृतघनपापीपतित॥ करिबैवास्
कतहांनि॥ आपाओरमांनैअवर॥ अग्यानताउरआंनि॥ तुरसी
आप्पारहसोई॥ जोजैसाहैत्यानि॥४॥१७॥ अथ अंतहिबासनानि
र्धांन॥ चौपई॥ तुरसीकांमक्रोधअरुलोभ॥ मनहीमनउपजा
वनछोभ॥ मोहमदमछरादिकआंही॥ उद्योकरैउरमीमाही॥१
साषी॥ येकरमीउरजावलग॥ तावतनांहीचैन॥ तुरसीसबसाधूक
हैं॥ यहतौबातउऐन॥२॥ बाहरिभीतरिबासनां॥ जितीएकबसी
एह॥ तुरसीमलिनबासनांयह॥ अबसिधरावनदेह॥३॥ चौपई॥ जा
ग्रतजोजोकरमकरावै॥ सोइसोइरिदबासनारहावै॥ सोसुपनांमे
सिधिहोइआइ॥ जिसीमनसाविसीधरिकाइ॥४॥ साषी॥ तुरसीजा
वतस्वप्नमें॥ अमतबासनांदेह॥ नावैनगाननृपनरहो॥ तावतनही
बिदेह॥५॥ दुलभमिटिबौस्वपनको॥ नहौंतत्तकोनास॥ तुरसीके
तेपचतहैं॥ देदेतनकौंत्रास॥६॥ केतेकायाकोंकसैं॥ कैरैगुफामैं
बास॥ केतेअलपअहारलेहि॥ सोषैतनकोमांस॥ केतेनगीनदि
गंबरी॥ बनबनफिरैंउदास॥ तुरसीतउगुरकृपाबिन॥ छूटैनस्वप्नबि

ास ७ [illegible]कदाचिमनजा[illegible] अलपूलादिकरैथा [illegible] ॥
[illegible]नरपंग तुरसीलिगसरीर [illegible] कैमरीरको [illegible] ही
बिनास लावतजनममरनक तुरसी मिटेनत्रास ८ नरसार
नबमित्रयते मानियतयहदे [illegible] मामाहिले [illegible] जो
हियह १० मौदेहीमृतामेये [illegible]कोहोइ नरसी [illegible]
रिजीजीयै औलौहैवहसोइ ११ लोकबासनात्रादि [illegible] चनं [illegible]
बरणीसोइ तुरसीताखेकरन [illegible] मधवासनासोइ १२
[illegible] नन [illegible]बासनायह मनकैम [illegible]
ह बिवेप्रवाहमिटाइकै रहौ [illegible] १ [illegible]
थैतोगा [illegible] तुरसीआथत [illegible] मधवासनाव [illegible]
रासीजीवा सरूपअपनोजान [illegible] मधवासनायह सतपारतो
समाह ३ बेरीकौऊवदोषि [illegible] नरसीमितह
कोनहीं सधबासनाएनाह [illegible] कतबासनकोधा [illegible] इलोहात्रर्थ
मैपाइ तुरसीबिवेबासन [illegible] ४ नवज्ञानधान[illegible]
हूसलै सर्वमोबिकौउपाइ [illegible] बिनबासनान
साइ ६ [illegible] जेनिकै [illegible] सरुनरलाइआ-
ल्माधान तुरसीबिवेबासन [illegible] तोजनको [illegible] फलपावे
७ बिनलायोहीलागीध्यान [illegible] नाहीछिबिलीतान तुरसीमन
रहैतनथिरहोइ जौनिबा [illegible] कौलोइ ८ जनिकेनिबामनाध
रावे घटतघटतघरपर [illegible] तुरसीतबस[illegible]सतरहोइ १
सहज आकासोबिचरेंमाइ [illegible] जीमीजतनकरोइ तोबासना
बिलेहाइजाइ जैपीपलके [illegible] होइ पलासमहजमिजराहोइ
तुरसीपलासतजबासना उरपैउभरिजाहि मधरस
सोचिबडोई एजीपीपलनासहि तुरसीमधरसमीचि
बढावै तोऊधरसनिहचेजुनरा [illegible] आरोगकोज[illegible]प [illegible]

निद्रा यौं बताइ ॥१२॥ चित्त बासना उत्पन्न होइ देइ कहा चित्त है तौ उल
टी लेहु इ हिं आर निसा गार है नित ॥ तब निद्रा चै होइ न उत्पन्न जित ॥१
३॥ निसबासर लागार है कैरै ॥ जहां जहां जाइ तहां तें फेरै ॥ परमत
तमन रा षै लीन ॥ तब सलख समाधि होइ बीन ॥१४॥ प्रथम हित्त
अस थान चुकावै ॥ अनहित होइ आपमें आवै ॥ हूवार है आकमें लो
न ॥ तुरसी स्वप्न समाधि होइ बीन ॥१५॥ साखी ॥ बासना बिनासै जु तब नि
श्चे निज करि सोइ ॥ तुरसी निज बासनानि कौ मूल निकंदन होइ ॥१६॥
मूल हेत आसे उफल ॥ पुनि आलंबन आन ॥ तुरसी कारि ज बासना ॥ प
एकारन परवांन ॥१७॥ जब इन हेतादिक निसयौं ॥ अलटि अहित होइ जाइ
तुरसी तूं जे बीज लौं ॥ तब बासना दिषाइ ॥१८॥ तुरसी तूं जे बीज लौं हो
हिं बासना सोइ ॥ पाप पुनि कौ उदि मत तब उदै न कब हूं होइ ॥१९॥ चौप
ई ॥ जैसें बादर बिन आकास ॥ अरु निरधूम अगनि प्रकास ॥ ऐसें सुध
आचार हि जाइ ॥ तुरसी जो बासना बिलाइ ॥२०॥ साखी ॥ बासनां उ
के मिटैं वें निबावनी रतनमांन ॥ तुरसी चित थिर होइ रहै ॥ गहै तत्त सुध
तिआंन ॥२१॥ चौपई ॥ थकै पवन तरलौं तन थीर ॥ बुझि तन होवै मन
सा नीर ॥ तुरसी निहतरंग होइ जाइ ॥ तामें थिर तुरपद दरसाइ ॥२२॥
आत्मतत्त उदै होइ आवै ॥ पाप पटल पट लौं फटि जावै ॥ तुरसी परदेर
है न कोइ ॥ जौ गुरगमि ऐसी गति होइ ॥२३॥ जाग्र त्रिस्वप्न सुषोपति
तीन ॥ ता आगे तुरपद होइ लीन ॥ तुरसी सो जोगा तत सार ॥ औरु बाय
५ ना बैस सार ॥२४॥ तुरसी ए बिषै बासना भोग ॥ सब संतनि बरनै करि
ग ॥ जिनि एसु सरूप करि जानै ॥ इतै इहां केइ होइ जहां तें ॥२५॥ इहैया
नइ है जोग सबाया ॥ इहै मुकति मघ संतनि गाया ॥ जे बिषया सौं बकव
लये ते निहचै बाजा लंघि गये ॥२६॥ तुरसी इहै बेद कौ सार ॥ इतौ हिमा
हि सर्ब तान बिचार ॥ अरु धुसि धांत है मत एह ॥ बिषयातजि होइ रहो
बिदेह ॥२७॥ अब तन सबद सपरस तक जोन ॥ नैन रूप नासा गंध तीन

रसनारसञ्रादिजुएनोग॥ऐस्योबिनफोकटजोग॥२८॥साषी॥
जोग॥सिधिजानोजुराब॥पुनिजुन्यातिबैराग॥तुरसीअबियाञ्
दियहहोइबासनात्याग॥२९॥सुधअसुधबासना॥बरणौउचै
प्रकार॥तुरसीएकअबधकरण॥एकबधमैंबिकार॥३०॥असु
धतैंबंधसाबकौ॥षाम्रिहोइयहजीव॥तुरसीसुधतैंमुकतिहोइ
परसैअपनौंपीव॥३१॥चोपई॥सुधबासनाजुराषैजावत॥ताब
तजीवसीवहोइआवत॥जीवसीवतबएकैहोइ॥तबतास्योंनपरो
जनकोइ॥३२॥साषी॥सुधबासनासुधकरै॥सरीरकौंजूसोइ॥तु
रसीपदपक्कैचावकैं॥तबजाइअसतजुहोइ॥३३॥तुरसीसुधबास
नांयह॥निरधूमअगनिवतसोइ॥असुधदारनिदाधकरि॥आप
हूकतकतहोइ॥३४॥सोपदपक्कविकैपरै॥तापदमैपक्कैचाइ॥तु
सीआपहअसहेम॥ज्योंदीपगाबसदियाइ॥३५॥तुरसीदीपगबस
दियाइदे॥सुधबासनारांम॥उनैनिमतउतपनमये॥औरनकोक
कोमा॥३६॥तुरसीसुधबासनायह॥ताकैयेसहनानजहोयहतहोम
सैनहीं॥मलिनकर्मकौमान॥३७॥१८८॥३७८८॥अथनृबासन
कोपरिकरन॥८१॥सकाकामनहस्याहोइ॥तांबसीचोसीबार॥
नृबासीकअतीतकै॥तुरसीएमौहार॥१॥कामसकतरुकपरै॥जो
घनबरषाहोइ॥नासोउहैनपसैबै॥कौंपललेइनकोइ॥योंनृबास
संतपै॥आवतरिधिसिधिसोइ॥तुरसीसोसुषमांनिकैं॥हस्यानकब
हूहोइ॥२॥रिधिसिधिबिघनबरिषामये॥उबेनहीहरियाइ॥नृबासी
जअतीतवे॥तुरसीअकिनहीकाइ॥३॥कमसकतईआत्मा॥माईबास
नाबिलाइ॥तुरसीताकौंस्वादजल॥सकैनहीहरियाइ॥४॥हर्योहो
हरियाइमनैं॥जोजलबरषेपूर॥तुरसीसकाकामै॥ऊनतनहीअंकूं
र॥५॥उनमतरतसोजांनिये॥तनमनकेरससोइ॥तुरसीबिसरिबि

कोइ॥ तुरसी उन मन रत्त कौं ऐसें जानौं सोइ॥७॥ जो कब भूए मृतक
की इंद्री उलटै हैं सोइ॥ तौ न्हबासी संत के जगत चेष्टा होइ॥८॥ जाकी ज
रि गई को मन॥ ताकौं काकौ नारि॥ तुरसी बुझी आगनि कौं सकै न
दारु प्रजारि॥९॥ मन के कुसमल जरि गये॥ ग्यान अगनि कैं माहि॥
तुरसी तूं जे बीज लौं बहुरि सो उगैं नाहि॥१०॥ देषे अनदेषे जु की मा
या स्वरूप ति की सोइ॥ उर बासना न उपजई तब मन मूवा जोइ॥११॥
मन मूवा ममता गई॥ भयौ मन कौ नास॥ मछर ताउ पजै नहीं॥ गलित
बासना दास॥१२॥ तुरसी या वा लोक की आसा रही न कोइ॥ निबाव
निरालौ मन भया॥ बिषम बासना षोइ॥१३॥ चौपई॥ तुरसी सुधबा
असुध बासना सिधारी॥ ज्यौं बाजी बिषरे न रनारी॥ रुचि संग तई गई
गलि प्रीति॥ उदै भई उर औरही रीति॥१४॥ असुध बासना मन कूं अंधा
री॥ सुध जे सी रजनी उजियारी॥ तुरसी उनै तई बिली मान॥ तब उदयौ
उर आतम ग्यान॥१५॥ साषी॥ आतम ग्यान उदित भयौ॥ हृस्न अबिद्या
रैन॥ तुरसी अब आनंद भयौ॥ दह दिसि बरसै चैन॥१६॥ ॥३८०॥
॥ अथ ब्रह्म साषी स्वरूप कौ बरनन ॥८॥ तुरसी साक्षी भूत सकल
का तटस्थ आतमराम॥ सब करि न्यारा होइ रहा॥ निरषि रनिहं कौ म
॥१॥ सकल सिष्टि जा स्यौं भई॥ पुनि ता लिपत न होइ॥ तुरसी साक्षी लौंर
है सांई मेरा सोइ॥२॥ तुरसी साक्षी भूत सदा रहै॥ सुष दुष में तह जाइ॥
पालै पोषै सकल कौं॥ आपने सहज सुभाइ॥३॥ चौपई॥ रजगुन करि
संसार उपावै॥ सत गुन करि पोषै पल्हरावै॥ तुरसी तमगुन कैसें घा
र॥ आपन रहे तिहूं सौं न्यार॥४॥ साषी॥ गुन सौं गुन ब्रवरति सब चली
जाइ सब सोइ॥ तुरसी आप अकल अमल॥ बधक कब हूं न होइ॥५॥
चौपई॥ बधक कब हूं होइ जु नाही॥ आदि अंति अरु मधि सदा ही॥ तुर
सी जीवै ऐसा आतम राम॥ जन की जीवनि ताकौ नाम॥ साषी॥ तुरसी
जीवनि जन की जगत्र कौ आधार॥ घट घट माही रमि रहा॥ जैसें कौ

गहर॥७॥ चौपई॥ तुरसी कौ तिग हार ज्यु मांही॥ काहू के उपसुख मैं
ही॥ ज्यौ अलिपत आकास ज्यु चंद॥ कहिबे मात्र घट प्रतिबिंब॥८॥
यी॥ तुरसी घट प्रतिबिंब लौं॥ अलिपत आतम राम॥ उपसुप आंच
गै नहीं॥ अषंड आगै जांम॥९॥ ज्यूं जल सौं घट पूरि कीं आगनि चन
सोइ॥ पात्र जलै जल दाग घ होय॥ प्रतिबिंब आंवन कोई॥१०॥ चौ
ई॥ ज्यूं चंदा पांनी के मांही॥ अलिपत रहै लिपै सो नाही॥ जल बरसै
मंदै सो घ्र बहु नांही काहू मैं होइ॥११॥ ज्यौं रबि सब कौ तिम रहय
॥ अपनौं अषंड उदो करै वे॥ दहिं दोत जग चेष्ट त सो घ्र आपन
बंधन काहू होय॥१२॥ साषी॥ दीपग के परकास मैं॥ कारिज करि सौं
को॥ तुरसी दीपग ना लिपै॥ पाप पुनि मैं सोइ॥१३॥ चौपई॥ ऐसे अ
लिपत आतम रांम॥ काहू के गुन सौं नहि कांम॥ तुरसी दोष बहुं न दे
न को ऐसा ही तू तस दा रहै सोइ॥१४॥ ॥३८१८॥ अथ प्रकृति पु
रुष कौ परिकरन॥८५॥ तुरसी अनछित ब्रह्म के इछा कहीं न जा
इछा तौ आये पियै॥ जौ देह रूप दरसाइ॥१॥ ना तस देह न दारत स॥
नातस आवन जांन॥ नां तस नां दन रूप विष॥ नां तस गौ बयु मांन॥
नातस जनम जुरा न तस॥ न सोइ बिनीमांन॥ तुरसी ऐसा अनछित
पद॥ ताहि सो नित न इछा आंन॥२॥ तुरसी जहां इछा उपतित हो॥ त
उतपति तहां बिनास॥ जहां बिनास तहां सो कहै॥ सो कहां सुपन
सो॥३॥ तुरसी जे कोऊ कहै ब्रह्म कौं कहा॥ अनछित निरंकार तो
केसें उतपति तया॥ अखिल लोक संसार॥४॥ तरवर के इछा नहीं
बीज परे है भोर॥ तुरसी उगि उदो कयै हो दत तरवर एक औ ५॥ तुर
सी सहजैं बीज धरनि गिस्यो॥ सहजैं दीनग्यौ अंकूर॥ सहजैं ही बीसत
रत्यो॥ यौं सूनि तें स्थूल॥६॥ ज्यूं तु वृछ ब्रह्म है सो॥ छाया ज्यौं माया
जांनि॥ वृछ छाया सिरजी नहीं॥ पो ब्रह्म माया मांनि॥७॥ तुरसी जद
पि सुत हियव अनादि माया सोइ॥ तदपि तौ लौं ही ज्यु [जौ लौं स
त नहीं सोइ॥८॥

ग्यानभये मासैनहीं॥ अनादिमायायेह॥ तुरसीऔरबिकैउदै॥ २॥
होतरजनीसेह॥ ८॥ तुरसीमायातावलग॥ जोलौंग्यानप्रागश्रय
ग्यानकेभयेतें देषतजाइबिलाइ॥ ९॥ आदिमधिअरुअंत॥ १०॥
अनादिमायाब्रह्मकी॥ अपनेंसहजसुभाइ॥ उपजावैसंसारकों
पुरुषसंपर्कपाइ॥ ज्यूंलोहो चुंबकसंगि॥ नांनांनृतिकराइ॥ तु
रसीसुबहकछुनासरै॥ जदपिसकतिवंतकाइ॥ ११॥ अनादिमा
याब्रह्मकी॥ अनादिअबगतिपीव॥ ताबिचिसहजिसुनाइयह।
उतपनभयाजूजीव॥ १२॥ तुरसीजदपिजीवउपज्यानहीं॥ तदपिउ
पज्याजांनि॥ परोछितेअपरोछिभया॥ मायासंपर्कमांनि॥ ज्योंआ
रसीअरकबिचि॥ प्रगटीअगनिसुभाइ॥ तुरसीयोंजीवब्रह्मस्यों
सहजउपनाआइ॥ १३॥ कोआरसीअरकको॥ कोजुअगनिउनमां
न॥ तुरसीयहगतिसमझिकैं॥ तितितिनिकरहुबषांन॥ १४॥ आ
कृतिइंद्रयाआरसी॥ अबगतिअरकअषंड॥ आगनिसरूसीजीवहै
तुरसीमहाप्रचंड॥ १५॥ तुरसीरबिकीकोरबिकों॥ षंडिसकैकको
इ॥ संजोगेउतपनभई॥ त्यौंत्यैंबियहहोइ॥ १६॥ गुजनअंगीकृतकर
तही॥ हुवाऔरकाऔर॥ तुरसीउलटीगतिभई॥ लखिमायाकह
ठौर॥ १७॥ दोहा॥ तुरसीजीवबीचरिअपनीगतिसार॥ अहंका
रस्योंअसंकीव॥ तातैंपस्याप्रवाहमझार॥ उपजैबिनसैबारंबार॥
॥ २०॥ साखी॥ तुरसीनांनाबंधनमैंपस्या॥ नांनांरूपमैंसोइसुम
असुमसुगातनलग्या॥ अहंकारबसिहोइ॥ २१॥ करिअपनैसअ
बस्तस्यौं॥ मायाबस्तकोंमूलि॥ तुरसीतातैंसहतजीव॥ जनममरन
दुषसूल॥ २२॥ आपाकौंबिरकोरिगनैं॥ बिरआपायसमझूदेष्यो
अबिद्याजीवकी॥ बंधांबिपरजैमाई॥ २३॥ दृष्टादरससंजोगतैं॥ औसैं
भयाजुसोइ॥ तुरसीनलनीगहतन्ही॥ जैसैंसुवाहोइ॥ २४॥
सुतुरसीनलनीमायासुकयहजीव॥ मतनरमाइऔरहीकीव॥

ताते बंधजानि बिललावै ॥ मुकति आहि पै मरम न पावै ॥ २५ ॥ साखी ॥
तुरसी ऐसी काहू सौं न होय ॥ जैसी या अगि कीन ॥ अब ध होइ बंध
न पस्यौ ॥ मरकट लौं मति हीन ॥ २६ ॥ तुरसी तन कस्वा दरस लागि
कैं ॥ सफरी लौं सब सोय ॥ दुष समुद मांहि परयौ ॥ सुष समुद्र कौं षो
य ॥ २७ ॥ अप बिषपति परवांह मैं ॥ पस्यौ पतंग ताही य ॥ दुष सुष के रू
क कोर मैं ॥ डीरत लोगो सोइ ॥ २८ ॥ बिबिधि बाजी कौं निरषि ॥ अब
धन यान धसोय ॥ बिसरि गया गति आपनी ॥ तुरसी परबसि होय ॥
२९ ॥ परापरी सों बिसरिकैं ॥ परयौ सो मिगुन मांहि ॥ तुरसी च्युगु
न नापकी ॥ निमष हू सो धी नांहि ॥ ३० ॥ ज्यूं नलनी सूवे गही ॥ सूवा
नलनी सोय ॥ तुरसी प्रकृति जीव यों ॥ रहे जु ऐसे हीय ॥ ३१ ॥ ज्यूं दहन
दारमैं दुरि रही ॥ धरि जु दारु तन मांन ॥ तुरसी यों जड देह संगि होय
रह्या जड वांन ॥ ३२ ॥ चेतन परि जड गुन मिल्यौं ॥ बिसरि गया अप गांव
तुरसी ज्यौं मिलि धात मिलैं ॥ दुसो सकंचन नांम ॥ ३३ ॥ ज्यौं पै मैं पा
नी मिलै ॥ पानी मैं पै सोय ॥ तुरसी प्रकृति जीव यों ॥ रहे परसपर हो
डू ॥ ३४ ॥ जड प्रकृति में जीव यह ला क रिस परस प्रवेस ॥ तुरसी आ
पन हूनयां ॥ जैसें मणि बिन सेस ॥ ३५ ॥ हौं औरै यह औरै रही ॥ सम्मक
तनांही जीव ॥ मीटा कौं अपनाइ कैं ॥ मूढ बिसारत पीव ॥ ३६ ॥ चौ
पृई ॥ जड सें गति चेतन जड न्यया ॥ अपने स्व नार हि बीसरि गया ॥ तु
रसी जड हैं चेतनि होय ॥ जब चेतनि कौं परसे सोइ ॥ ३७ ॥ साषी ॥ चेत
नि कै संगि गये जो ॥ जड हैं चेतनता आय ॥ तुरसी ज्यों लोहा अगनि सं
गा ॥ अगनि वत होइ जाइ ॥ ३८ ॥ चौबीसों चेतन भिन्न ये ॥ जब चेतनि की
ये बास ॥ तुरसी ज्यों रवि केउ दौ ॥ सब कौं नयों प्रकास ॥ ३९ ॥ चेतनि
बिन जड मृतक ॥ जड बिन चेतन न पंग ॥ तुरसी ऐसें इक तनये ॥ न
बना ओर सरंग ॥ ४० ॥ जड संगाति चेतनि जड ॥ चेतनि जड प्रकास बान

७७ जड तयोपरसपरमेल। तुरसी जब दोऊ भिंनि होंहि। तब तिह कं
चन षेल ॥ ४२ ॥ तुरसी तब तिह कंचन षेल। जब जो ऐसे होइ आ
वे। हंस षीर नीर लों। उनि सें जो ग मिटावे ॥ ४३ ॥ तुरसी उनि निको मि
लनी जु यह। पलटि अमली नी होइ। इहै जोग जुगति ह्वहै। संत
कहें सब कोइ ॥ ४४ ॥ दारदहन लों होइ रहे। प्रकृति पुरुष मिलि
दोइ। तुरसी भिंनि भिंनि होत है। जतन कीये तें सोइ ॥ ४५ ॥ अथ प्र
कृति पुरुष भिंनि भिंनि अंग विधान ॥ तुरसी संगति गुरु कृपा स्यों
जब अप जिहै बिचार। तुरसी तब भिंनि भिंनि होंहि। ओर न हो उप
चार ॥ १ ॥ ज्यों दध माथि घृत काढियै। पुनि ली जत है ताय। ऐसें ज
तन कीये देह स्यों। जीव जुदा होइ आइ ॥ २ ॥ जुदाई या जीव की ॥
मोक्ष कहावे यह। तुरसी तन अभ्यास कहा। यह स्वै धन यह देह ॥ ३ ॥
प्रकृति पुरुष भिंनि करन कों। बांधे बिबिधि पुरान। नो हतो का
रन कवन। कथि बेस्यो यह ग्यान ॥ ४ ॥ चौपई ॥ अनंत स्यास्त्र अनं
त बानी। अनंत कथा बिधि के जब षानी। अनंत कथा संतनि को
बिग्यान। ताहू मांहि मांहि कथ्यो यह ग्यान ॥ ५ ॥ साषी ॥ तुरसी स
ब को सार यह। यासम और न कोइ। प्रकृति पुरुष भिंनि को जीये
जे भिंनि के नि धौं सोइ ॥ ६ ॥ नां तू देह न देह तूं। समझ्यो तो यों आहि। तु
रसी समझे बाहिरा। रह्या परस पर लाहि ॥ ७ ॥ तुरसी पृथी तत पानि
तैं न हीं। जो समझे सां षि बिचार। आप अगनि अन ले जु षं। इंद्री
षी बिकार। अहंकार बुधि आदि दे। प्रकृति के ओहार। तूं औरए
और ही। स्यागि होइ किन न्यार ॥ ८ ॥ चौपई ॥ तूं आपनें ब्रह्म समझि
सयानें। कहा परि रह्यो देह दहानें। देह माया कृत मस्रूप। तूं अबिनी
सी अंस अनूप ॥ ९ ॥ साषी ॥ तूं अंस निरगुन ब्रह्म को। देह गुन को
६ ताग। तुरसी यह गति समझि कौं। छाडि देह को राग ॥ १० ॥ जाको षेल्या
हि ले। ताही कूं दे धारि। बिरलो गानि न हाराचिये। इतनौं हौं ग्यान बिच

चौबीसौ प्रकृति नश्वर। माया को असंजोग॥ तूं असंग गुन ब्रह्म कौं। क्यौं
न संभारे सोग॥१४॥ कहा अरु फिर होय यामहीं॥ अज्ञान तागपास॥ तरकि
तगा दखे तौ रिकैं। कौन जुदा है दास॥ अनुदाई याजी व को। जो
प्रकृति स्यों होइ॥ तुरसी तब यह दसी रहै। जीव कहै नहीं कोइ॥१६॥ पुर
सा जुदा नयें हावनैं गौ॥ त्याग प्रकृति संजोग॥ संजोग माहिं दुष है।
आनंद मूल बिजोग॥१५॥ तुरसी सब को सार यह। यासमि और न कोइ
प्रकृति पुरुष तिनि को जोये॥ जे तिन के निर्धों सो होइ॥१६॥ गुण अतीत
सो ब्रह्म है। गुणन बंधे ईश्वर जीव॥ तुरसी गुण को बिषमता। ज्यों घट में
नव तत्त्व ईव॥१७॥ ब्रह्म रहत ईश्वर नयां॥ ईश्वर तैं नयां जीव॥ उपाधि गत
त्रिधा नयां। नहीं कर्ता यह कीव॥१८॥ प्रकृति पुरुष तिनि को जोये
है समान उपजाय॥ तुरसी सब को सार यह। संत मिदीयौ बताइ॥१
९॥ या समान और जु नहीं॥ पर येष न को ज्ञान॥ तुरसी दीपग रूप है
हरन तिमर अज्ञान॥२०॥ प्रकृति पुरुष तिनि को मिजिन। तत ज्ञान
गहि सोइ॥ तुरसी ते बासरि ययें॥ मेरी तेरी दोइ॥ २१॥ प्रकृति पुरुष ति
निकों ये जिव। तिन के सहनांन॥ लोहा कंचन म तुका। तुरसी एस
ह्नान॥२२॥ छ॥ २८८५॥ अथ आत्मा परमात्मा निरूपन को परिक
रन॥ ८६॥ तुरसी आत्म परमात्मा बिचि॥ इतनों ही भेद बिचार॥ परमा
त्मा प्रकृति परे। आत्म प्रकृति मंझारि॥१॥ तुरसी आत्म प्रकृति बधा।
अब धप्र मातम जोनि॥ यह जु भेद संतनि कह्या॥ आइ सापि प्रवान॥ बे
द कहे स्मृति कहैं। सास्त्र ढूंढ कहैं सोइ॥ जावत करम कछु अंतर। चाव
त है ए दोइ॥२॥ तुरसी जे ये दोइ जु होहिं नहीं॥ तो कै परत जिव न जाइ
का है कौं कसिक सिजु तन॥ करिके रमैं उपाइ॥३॥ तुरसी जे ये दो
ऊ होहिं नहीं॥ तौ ध्याता ध्येय को ज्ञान॥ सकल अर्थ अनरथ होय॥ बू
टि जाइ तय पदांन॥४॥ आत्म परमात्मा का। है यह उत्तम विचार॥ तुरसी
जिन यह जानीयां। ते ज्ञानी संसार॥५॥

वतबधहै॥निश्चैनिजकरिसोइ॥जोवतरागरुद्वेषकोरेषअनि
अंतरिहोइ॥१५॥तुरसीरिषनरहीको॥जाउरमांही॥ग्यान॥रागदे
षगुनगाविगए॥सोकहिएअबधनबोंन॥१६॥तुरसीबधअ
बधका॥तिनितिनिभेदबिचार॥बिधिबिधिकेहैंमबरनिया॥
कोऊजानैंजाननहार॥१७॥चौपई॥तुरसीजानहीजनलजा॥
नैं॥याबधअबधकैजुन्यानैं॥औरअग्यानकहापहिचानैं॥त
कहूघतएककहितांनैं॥१८॥ ३०२७॥ ॥अथकुबिधाकोअंगि
करन॥४४॥जोयाकुबिधामैंबसै॥मायाभजोंकरंम॥तुर
सीतेअघिबिचिरहे॥समझोनएकौकाम॥१॥कबहूंमूरतिपि
तरकौ॥पूजेप्रीतिलगाइ॥कबहूकहैंअनिनहोइ॥भजौ
नरंजनराइ॥२॥कबहूरामभजनको॥गरब्यजेउतसाहा॥क
बहूंकहैमायाभजौ॥तनधरिसोपहलाह॥३॥कबहूंकहैन
गुनजौ॥कबहूंआगुनतनजाइ॥याकोलाफोलीमैंबीतिगई
सबआइ॥४॥याकीनाफोलामैंही॥षोईकंचनदेह॥तुरसीरम
भजयानहीं॥तोरिकुबिधसोंनेह॥५॥याकुबिधाकेपंथमैं॥बकु
तकअटकेआइ॥तुरसीइनतेउकाषतें॥कालपकडताआइ॥
६॥एकपंथमहामोष्ठिको॥एकमायातनजाइ॥तुरसीपंषकपूछेबि
ना॥पंथाबोटाषाइ॥७॥तुरसीमुकरमंदिरमही॥ग्रापतिकीयोप्र
बेस॥अपनाफांईदेषिकैं॥करिकरिमलौकलेस॥८॥आपापैंतासेप
रै॥भलेबुरेगुनदोइ॥तुरसीज्योंगजमुकरनमैं॥बोलतफांईसोइ॥
९॥जोअपनेउरदपजै॥काकूंसोंबैररनाव॥तुरसीसोवनसबनमैं
तैसोहीहोइदरसाव बिलौ चोरकों॥साहसमितसा
मांन॥तुरसीकार ना॥१०॥एकनिसत्रअ
करिगाने॥एकनि कौ॥यहसबका
रन आजै नैंसुष॥

जहांनस्वारथचाहिकहै॥ताकाकालामुष॥१४॥यातैंयहसेकलप
सब॥तुरसीअपनौहीआहि॥काकोसुषकरिमानियै॥दुषमां
नियेजुकाहि॥१४॥चौपई॥दिलकीदुबिधाकैरैनहूरि॥ध्यांन
धेरैंदोऊस्वरपूरि॥तुरसीनरनहीहोइगजियारै॥बिनाबिध्
सेदुबिधअपारै॥१५॥जबलगदुबिधातनमनमांही॥तबलग
जोगसिधिहोइनांही॥तुरसीजोगसिद्धिहोइआस॥दुबिधामि
टैमनमस्जिास॥१६॥जावतअबिद्यानीरननासै॥तावतनैअका
सप्रकासै॥एकजीवएकसीवजुनांम॥ताहिगिनतबीतेबहुजा
म॥१७॥दुबिधादरपनदुबिधानीरा॥करैएकस्योंदोइसरीरा॥जब
तुरसीदुबिधातबनासै॥जेरेपरेएकोआतासै॥१८॥दुबिधाकेह
रिकूपमैंपरे॥दुबिधाहस्तीफटकस्योंभिरै॥तुरसीदेषिदुबिध
कीफोई॥कोटिकपरेकुबधिकीषाई॥२०॥साषी॥जोअपनैंहोइ
बेरता॥तोपरहूबेरताहोइ॥तुरसीअपनेंसुधिहोइ तोसुधिदसों
दिसजोइ॥२०॥जैंसैंकरतैजुकरतेगें॥सिरनयेंसिरजुनराय॥तुरसी
काहेनदेषहूंदरपनमैंनिरताइ॥२१॥गुनजुदेषिदुषसुअकछु
दरसतदुबिधाभान॥तुरसीअपनौहीजुहैसेषसुसदासमांन॥२
२॥आपापरबिसराइदेतौदुबिधाकोदेदांन॥तुरसीसुचसहजअको
समैं होइरवैगलतांन॥२३॥ रष्पं॥अथदुबिधाबिध्वंसकोप्र
करन॥१८॥तुरसीदुबिधाआरसीअरकरतेंछूटिजाइ॥तबउ
रेपरैसेआतमा॥एकरूपदरसाइ॥१॥जावतदहनजुदारमैं॥तुरसी
उदैनहोइ॥तावतहीबेनामहैं॥प्रगटेंएकेसोइ॥२॥चौपई॥जावत
हैपालाअरुपांनी॥तावतनेजुनामनिसांनी॥तुरसीजबगारिए
केहोइ॥तबदुबिधाधौंरहैनकोइ॥३॥तुरसीकेरीद्रिष्टिजुआही॥ता
वतदैचंदादरसांही॥जबसुधहोइगहैआरांम॥तबएकोचंदाएको
रांम॥४॥साषी॥उनैबिंबहौंहिएकही॥तुरसीदैतमिटाइ॥जब

वृत्त बंध है। निश्चै निज करि सोइ। जो वृत्त राग जु द्वेष की रेष अन्ति
अंत रिहोइ।१५। तुरसी रेष न रही को। जाउर मांही ज्ञान। राग द्वे
ष गुन गलि गए। सो कहिए अबंधन बान।१६। तुरसी बंध अ
बंध का। भिन्न भिन्न निरदे बिचार। बिधि बिधि के हे मबरनियां
को कुजानै जानन हार।१७। चौपई। तुरसी जो न ही जु नलजा
नै। या बंध अबंध के जु न्याने। और सु ज्ञान कहा पढ़ि चौबे। त
र्क हू धरता एक हि तानै।१८। १००२७। ।अथ द्वबिधा को प्रति
करत।१९। जो या द्वबिधा मैं धसै। माया म जो करांम। तुर
सी ते अधिबिचि रहे। सरयो न एको कांम।१। कबहुं सूतपि
तर कै पूजे प्रीति लगाइ। कबहु कहैं अनि नहोइ मजो
न रंजन राइ।२। कबहु राम न जन की। नरखै जे उतसाह। क
बहु कहै माया मजो। तनधरि सो पहलाह।३। कबहु कहैं न
गुन जो। कबहु अगुन तन जाइ। या बोला फोली मैं बीति गई
सब आइ।४। या बोला फोली मैं ही। खोई कंचन देह। तुरसी राम
सजु पानही। तो रिद्धबिधयो नेह।५। याद्वबिधा के पंथ मैं बठं
त कन्ट के आइ। तुरसी इत उत जा पथ तैं। काल पकता आइ
।६। एक पंथ महा मोक्षि को। एक माया तन जाइ। तुरसी पंथक दूं बि
नां। पथा खोटा षाइ।७। तुरसी मुकर मंदिर मही। मृगापत्ति की योप्र
बेस। अपनी फांई देषि कें। करि करि मूवो कलेस।८। आपा वैता सेप
रे। भले बुरे गुन दोइ। तुरसी ज्यौं गज भुवन मैं। बोलत झांई सोइ।
।९। जो अपने उर उपजे। काकुं सौं बैर रसाव। तुरसी सो व्रतसमै
ते सोही होइ दरसाव।१०। ज्यों रबिलौं रिपु चोर को। सा हस मित्र स
मोन। तुरसी कारन आपनौ। और न हूजौ जोन।११। एक निमित्र उ
करि गौ नै। एक निमित्र कहाइ। तुरसी अपनी दृष्टि को। यह सब क
रन आहि।१२। जहां जहां कछु स्वारथ होइ। तहां तहां मांनै सुष।

जहांनस्वारथचाहिकेहै॥ताकाकालामुष॥१३॥यातेंयहसकल्प
सब॥तुरसीअपनोहीआहि॥काकोसुषकरिमानिये॥दुषमां
नियेजुकाहि॥१४॥चौपई॥दिलकीदुबिधाकैरैनदूरि॥ध्यान
धरैनंदोऊस्वरपूरि॥तुरसीनरनहीहोइरुगजियारे॥बिनाबिधु
सेदुबिधअंधारे॥१५॥जबलगदुबिधातनमनमांही॥तबलग
जोगसिधिहोइनांही॥तुरसीजोगसिद्धिहोइआइ॥दुबिधामि
टेमनमहिजाइ॥१६॥जावतअबिद्यानीरननासै॥तावततभैअका
सत्रकासै॥एकजीवएकसीवजुनाम॥ताहिगिनतबीसेबकुजां
म॥१७॥दुबिधादरपनदुबिधानीर॥करैएकस्योंदोइसरीर॥जन
तुरसीदुबिधातबनासै॥उरैपरैएकोआतासै॥१८॥दुबिधाकिह
रिकूपमैंपरै॥दुबिधाहसीफटकस्योंमिरै॥तुरसीदेषिदुबिध
कीझाई॥कोटिकपरेकुबधिकीषाई॥२०॥साषी॥जोअपनेंहोइ
बेरता॥तोपरद्वैबेरताहोइ॥तुरसीअपनेसुधिहोइ तौसुधिदसौं
दिसजोइ॥२०॥जैसौकरउदैजुकरउवैं॥सिरनयेंसिरजुनवाइ॥तुरसी
काहेनदेषसंदरपनमैंनिरताइ॥२१॥गुनजुदेषिदुषसमकछु
दरसतदुबिधाभान॥तुरसीअपनौहीजुहैलैषसुसदासमान॥२
२॥आपापरबिसराइदैअ॥दुबिधाकोदैदांन॥तुरसीसुसहप्रका
समैं होइरहोगलतांन॥२३॥२८५०॥अथदुबिधाबिध्वंसकोपा
रिकरन॥८०॥तुरसीदुबिधाआरसी जरकरहेंबूटिजाइ॥तबउ
रेपरैसेआत्मा॥एकरूपदरसाइ॥१॥जावतदहनजुदारमैं॥तुरसी
उदैनहोइ॥तावतहीदैनामहैं॥प्रगटेंएकेसोइ॥२॥चौपई॥जावत
हैपालाअरुपांनी॥तावततभैजुनामनिसांनी॥तुरसीजबगरिए
केहोइ॥तबदुबिधाधौंरहैनकोइ॥३॥तुरसीकेरीद्रिष्टिजुआंही॥ता
वतदेचंदादरसांही॥जबसुधहोइगाहैआरांम॥तबएकोचंदाएको
रांम॥४॥साषी॥उनैबिंबहौंहिएकही॥तुरसीदैतमिटाइ॥जब

वतबंधहै ॥ निश्चैनिजकरिसोइ ॥ जोव्रतरागजुद्वेषकीरेषन्त्रनि
अंतरिहोइ ॥ ५ ॥ तुरसीरेषनरहीको ॥ जाउरमांहीग्यान ॥ रागद्वे
षगुनगलितगए ॥ सोकहिए अनबंधनबांन ॥ ६ ॥ तुरसीबंधअ
बंधका ॥ निजनिजनिजमतिकैविचार ॥ बिधिबिधिकेंहैंमबरानिया ॥
कोकुजानैजाननहार ॥ ७ ॥ चौपई ॥ तुरसीजोनहीजगलजा
नैं ॥ याबंधअबंधकैजुनमानै ॥ औरग्यानकहाषद्दिचीनैंत
कहूधरतएकहितानैं ॥ १८ ॥ ४०२७ ॥ ॥ अथ द्विविधाकोपरि
करता ॥ ४८ ॥ जोयाद्विबिधामैंधसै ॥ मायामजोंकरंम ॥ तुर
सीतेअधिबिचिरहै ॥ सरैनएकोकाम ॥ १ ॥ कबहूंमूरतपि
तरकरै ॥ पूजैप्रीतिलगाइ ॥ कबहूकहैंयनिनहोइमजौ
नरंजनराइ ॥ २ ॥ कबहूरामनजनकौं ॥ नरुपजेउतसाहा ॥ क
बहूकहैमायामजो ॥ तनधरिसौंपहलाह ॥ ३ ॥ कबहूकहैनि
रगुनजो ॥ कबहूंअगुनतनजाइ ॥ याकीवाफोलीमैंबीतिगई
सबआइ ॥ ४ ॥ याकीवाफोलामैंही ॥ षोईकंचनदेह ॥ तुरसीराम
नज्यानहीं ॥ तोरिद्विबिधस्यौंनेह ॥ ५ ॥ याद्विबिधाकेपंथमैंबकु
तकअटकेआइ ॥ तुरसीदूततजतजाषतें ॥ कालपकरतांआइ ॥
६ ॥ एकपंथमहामोष्टिको ॥ एकमायावनजाइ ॥ तुरसीपंथकपूंबेवि
नोपथ्यावोटाबाइ ॥ ७ ॥ तुरसीमुकरमंदिरमही ॥ मृगापतिकीयोप्र
वेस ॥ अपनीफांईदेषिकें ॥ करिकरिमूवौकलेस ॥ ८ ॥ आपाबैंतारोप
रै ॥ भलेबुरेगुनदोइ ॥ तुरसीज्योंगजभुवननमैं ॥ बोलतफांईसोइ ॥
९ ॥ जोअपनेउरउपजे ॥ काकुंसौंबैररनाव ॥ तुरसीसोवहसबनमैं
तैसोहीहोइदरसाव ॥ १० ॥ ज्यौंरबिलोरिपचोरकौं ॥ सादसमितसा
मांन ॥ तुरसीकारनआपनी ॥ औरनहूजौजानि ॥ ११ ॥ एकनिमित्रअ
करिगीनै ॥ एकनिमित्रकहाइ ॥ तुरसीअपनीदृष्टिकौं ॥ यहसबका
रनआहि ॥ १२ ॥ जहांजहांकछुकारणहोइ ॥ तहांतहांमानैसब

जहां वसार थ वाहि कहै आका का बानु षा॥१५॥ षीवैं घट्टस कल्प
सब। तुरसी अपनो ही आहि॥ का को लष करिमा विये ऊ षमो
वियेजु का हि॥१६॥ मैपदइ पद दिन को ऊ बिषा कौ नेह पिआर
धरे नेद ऊस्वरू प॥ तुरसी तस्व ही होर गवियारी वित विध
सेड बिध अथारो॥१५॥ जब लग ऊ विषा [illegible] माही तद तय
जोगा सिधि हो रना ही। तुरसी जोगा सिद्धि हो स्यार [illegible]
टै मनम सिजा मा॥१६॥ जा बत अबि का [illegible]
सत्र कासे एक जीव एक सी [illegible] नाम [illegible]
मा॥१७॥ ऊ बिधा दरपन ऊ बिधा नीर कै [illegible]
तुरसी ऊ बिधा तब नासे जैरे पैरे [illegible]॥१८॥ [illegible]
रि कूप मैं परे। ऊ बिधा हंसी [illegible]
की झाई॥ को टिक पर कुब धि [illegible]
बेरता। सो परद्वै रमहे [illegible] तुरसी [illegible]
दिस जो मा॥२०॥ मैं कर ऊ मे जुकरहै [illegible]
काहे न देष [illegible] दरपन मे [illegible]॥२१॥ [illegible]
दरसत दु विधा [illegible]। तुरसी [illegible]
२॥ आया पर विसराइ दे [illegible] ऊ [illegible]
सबै होइ रहे [illegible]॥ [illegible]
रि करन॥२४॥ तुरसी ऊ विध [illegible]
रै यौ रैसे आत्मा एक रूप दरसन॥ [illegible]
ऊ दैन होइ॥ तावत ही वे ना सै है। [illegible]
है पाला अरु पानी। तावत वे [illegible]
केहोइ॥ तब ऊ बिधा धोरहै [illegible]
वत दे च दादरसाई [illegible]
तम॥४॥ साषी॥ ऊ मैं बिबहा हिर [illegible]

हीजीवसीवहि मिलै होइ परस्पर भाइ ॥५॥ चौपई ॥ एकराम
सबहिन के मांही ॥ तामे फेरफार कछु नांही ॥ जौं गरबाम द्वि ष्टि
मिटिजाइ ॥ सुध एकता ज्ञान उपाइ ॥ ६ ॥ साषी ॥ सुध एकता ज्ञा
न होइ ॥ अपने ही उर आइ ॥ तबहि दोइ का एक होइ ॥ तुरसी द्वैत
मिटाइ ॥ ७ ॥ तुरसी द्वैत बिध्वंसन ज्ञान यह ॥ चेतन हो ॥ हिलेइ
मनि गाव घट काने कै ॥ यों ही चित देइ ॥ ८ ॥ था गास्पा रांम है ॥ म
णिगण नाना देह ॥ तुरसी ब्यापक होइ रह्यो ॥ और न दूजा केह ॥
९ ॥ तुरसी द्वै सब सूरति सूरति को ॥ इतो ही उत्तम बबेक ॥ देव द
हन वन एक है ॥ देह दारव तन अनेक ॥ १० ॥ दारनि बिसये कानया ॥
पीपर कैर बबूर ॥ दहन सब बि मैं एक है ॥ रही सकल बन पूर ॥ यों
घट घट मैं रांम है ॥ ज्यों जल चंदा सूर ॥ तुरसी ऐसे देषीये ॥ तौ उबि
धार है न मूर ॥ ११ ॥ जीव सीव द्वै नही ॥ जो बुधि भेद बिलाइ ॥ जौं क
रसा गे आरसी ॥ तै तब बिंब दीषाइ ॥ १२ ॥ एक जीव एक सीव
बेद बतावत भेद ॥ तुरसी तावत जु है ॥ जौ लौं न होइ बुधि बेद ॥
बुधि भेद बिलीमान होइ ॥ अहंमंमत मिटि जाइ ॥ तब दो दोउ
एक होइ ॥ सलिता सिंध समाइ ॥ १४ ॥ तुरसी सलिल समावै सिंध मै
है न सलिल को नांम ॥ जीव समावै सीव मैं ॥ तब एकौ निरनांम ॥ १५
॥ इति दृष्टि ॥ अथ सत्संग निरूप को परिकरन ॥ १० ॥ चौपई ॥ सत्स
संगी सो उहमारा ॥ जो या उपत्ति षपत्ति स्यों न्यारा ॥ अषंड तेज
कास ॥ ता संगि बिचरों करौं बिलास ॥ १ ॥ त्रय मम मिलन ताकूं
जोछ मिले वपल मरि बिकुरै सोइ ॥ तुरसी ऐसे सतसंगी रांम सिंध
करन संत कौ कांम ॥ २ ॥ तुरसी ताही स्यों करि नेह ॥ ताही कों भजि
ताही लेह ॥ ताही संगि सदा रहु लागा ॥ कबहु न तोरै तांदू तागा ॥
३ ॥ तास भिन नही मीत कोऊ और ॥ हमनी कै देषी सब ठौर ॥ तुरसी मह
जलतारक रांम ॥ पतित पावन है ताका नाम ॥ ४ ॥ अबि हर अजर्व

मरहैसोआपुनिरबंधबालतरननहीहोइ॥तुरसीदासएककरसजे
इ॥संगीरामहैमारासोइ॥५॥साषी॥तुरसीअनंतचौकरीअनंतजु
ग॥बीतिबीतिजोजाहि॥तऊरामसेंगना॥बुटैजेोपरस्याहोइमांहि
॥६॥चोपई॥तुरसीपृथीआदिपंचएततता॥कदाचितिनहुंकोहो
इअंत॥जिनअपरेअस्तुपरसेंमाहीं॥तिनकोनासकदाचितनाही
॥७॥ब्रह्माकीअवधिकोह्वनाम॥पैताजोगीकोनहीबिनास॥जिन
संकलपबिकलपबिसराय॥अबिनासीयोंलैमनलाय॥८॥
२०७४॥अथआत्माकोपरिकरन॥०॥तुरसीज्योंपहुपमें
बासना॥तिलमेंतेलपरवांनि॥त्योंसैनघसघतनमहीं॥ब्यापक
आत्मजांनि॥१॥तुरसीज्योंदारमेंदहनहैं॥पैदिषराईनहिदेइ॥त्यों
तनब्यापकआत्माकोकमहामतीमथिलेइ॥२॥मथिकाटेमाष
नहुतो॥सीरनीरहोंसोइ॥तुरसीजुगजोगीसोआत्मारकुजोगीजोइ
॥३॥कोरीकुंजरसबनिमें॥थावरजंगममांहि॥तुरसीब्यापकब्रह्म प
है॥न्यारामिल्याजुनाहि॥४॥न्याराकुकहाजुनापरै॥मिल्याकुकहा
नजाइ॥तुरसीबिबिपतिबिरलो॥सबघटरह्यासमाइ॥५॥सबघ
टआत्माएकहै॥भिनिभिनिनिवासत॥तुरसीघाणएकहै॥प्रतिमानम
नेकअनंत॥६॥तुरसीताहिकोअसुधचितहीनिजकरिजानैसोइ
असुधअंतहकरनमेंप्रतिबिंबतनहीहोइ॥७॥चोपई॥यहहूंयह
तूमेरीतेरी॥यहहंकारमतिनहिंआवैनेरी॥तुरसीजबआत्माप्रका
सैजहांतहांआत्महीभासै॥८॥साषी॥तुरसीरहितउपाधितेनिर
उपाधिनिजसार॥घटमठमांहीरमिरह्या॥रहितअवस्थान्यारि॥९॥
॥चोपई॥लिंगअलिंगसूक्षमअसथूल॥नहूंनागाकरिमायामूल
॥तुरसीदासतापरेबुजो॥आत्मासर्वसुअयेडितसोइ॥१०॥सत
तावनमावनचावतताम॥गांवनगांवननांव॥हेहम्येहननेह [illegible]
तुसीताबलिजोइ॥११॥आत्मअबलअषंड

तुरसी ब्यापक सकल में । लिपत न काहू होइ ॥१४॥ है न जस बंध
र उपरै सत्र बतर ता से नाहिं । जहां जहां नार दरपन जहां । दरस
त जहां तहां हि । यों अवगति पद दूरि रहा । पिंड ब्रह्मंड ऐ बगा
इ ॥ नांद बिंद जल थिर जहां । प्रगट ता तन मांहि ॥१३॥ ऐक ब्रह्म
आकास वत । सब घट रहा समाइ ॥ तुरसी देह गुन वासरै । ता
हि न लेंद रसाइ ॥१४॥ सतगुर ब्वारै हम सम्ना । सास्त्र हमें सोइ ॥
अनात्म बिसरे बिना । आत्मला जन होइ ॥१५॥ आत्म प्रकास ई
जो मन सुध होइ जाइ ॥ तुरसी मन तुछ नये बिना । तै से न बिंब दि
षाइ ॥१६॥ तुरसी परमात्मा परकास ई । अब सिज्ञ हिरदा मांहि
जो पहले मन सुध होइ । और उपाइ जु नांहि ॥१७॥ काया कुंभ में
प्राण जल । रायौ अचल समाइ ॥ तुरसी तत तार न थिर न । आत्म
न मे दरसाइ ॥१८॥ अक्रांति पवन के मिटे तें । मनसा तरंग बिनास
तुरसी प्राण जल सथिर है । तासे ब्रह्म अकास ॥१९॥ आराध ता आ
द्र सिपद । द्विमि स्रूप डरि जाइ ॥ जो निरषत मुकर मुकर बिलो ॥
तुरसी [illegible] ॥२०॥ ज्यूं मुष तासै द्रपन में । तैरै परै सुधसो
इ ॥ तुरसी यो दरसे आत्मा । जो मन चित सुध होइ ॥२१॥ सुध चित क
रि सकल में । देषै आत्म राम ॥ तुरसी तब तासंत को । क्रोध न ब्यापै
काम ॥२२॥ चौपई ॥ तुरसी कां मति जरि होइ जाई । क्रोध न कबहु
देत दिषाई । लोभ मोह कौ रहे न नांम । जो चित सुध की करे षेरां
म ॥२३॥ साषी ॥ चित्त आरसी अमल हो । ग्यार जतम का टमि टाइ ॥ तो
उर बाहरि दसौं दिसा । एक रूप दरसाइ ॥२४॥ तुरसी आत्म दरस
ई । तामें नहीं संदेह । जो उरमल आदरसम्ह होइ । पर हरि नांनां नेह ॥
२५॥ चौपई ॥ तुरसी नांनां नेह न मांही । ता वत तवा नुति चित आं
ही । त्यागि नेह निरमल होइ आई । ता चित में आत्म दरसाई ॥२६॥
॥ अथ आत्मा वा त नि श्रेणी ॥१॥ चौपई ॥ ॥ ॥ ॥

किरनिउलटिउरपेसा॥ अचलमर्द हिनचलैनसोइ॥ त्योंकसुष
मेरहैसमोइ॥ १५॥ साषी॥ जीवनमुक्तिजुजननिके॥ मिटिगये
बिषैबिकार॥ तुरसीतिहूंपरेकरिरहे॥ तुरपदमेंपेसार॥ १६॥ साषी
॥ जिनकेउरकामनाजुसोइ॥ कषरिरागहैरहीनहींकोइ॥ तुरसी
जीवनमुक्तिजबजोइ॥ जोऐसेजोगीहैकोइ॥ १४॥ कामनिक
बहुरूपकिदिषावै॥ कोधअगनिकायानजरावै॥ तुरसीऐसे
लअसमोह॥ तिनहूंकोमिटिगयोअंदोह॥ १२॥ साषी॥ हरषसोग
हिरदैनहीं॥ संपतिबिपतिसमान॥ लोहांकंचनसमगिनै॥ सोम्
रतितगवान॥ १६॥ जहांमनमानैतहांरहै॥ उजरबस्तीसोइ॥ तुरसी
गुनगलतांनकै॥ कारनलागैकोइ॥ १५॥ जहांमनमानैंतहांरहै॥ अ
रथकरधमधियान॥ तहांतहांमुक्तिसरूपहै॥ तुरसीगुनगलि
तान॥ १६॥ चौपई॥ गुणउपाधिजाकीगलिगई॥ तांकीसंपाअरही
भई॥ जूंपारसपरसेतैंलोह॥ तुरसीपलटिगयोंओरहालोह॥ १७॥
॥ साषी॥ संतोषीसाधूजनां॥ सतिवक्तासुषरूप॥ तुरसीपिरथीलो
ककौ॥ वेजनपावनरूप॥ १८॥ संतोषीसाधूजनां॥ जतसबसारासोइ॥
तुरसीआतमरांमरता॥ जीवनमुक्तिबजोइ॥ १९॥ जीवनमुक्तिबजा
निये॥ तनहीअछितजुसोइ॥ तुरसीजिनकैरागनहि॥ दोषनदरसैको
इ॥ २०॥ हिरदैकीग्रंथितांसां॥ तत्सबोसंदेह॥ तुरसीजीवनमुक्तिसो
पदबंदनकरिलेह॥ २१॥ पदबंदनकरिलीजिए॥ अतित प्राप्तिपा
इ॥ जीवनमुक्तिजोगीनिकै॥ तुरसीसरनेआइ॥ २२॥ तुरसीसरन
कौंजोगिहैं॥ जोऐसेकोऊआंहि॥ जिनकेतनअरुमनकी॥ तृष्णा
ईत्रिष्नानांहि॥ जीवनमुक्तिजानौंजुवे॥ यात्रिभुवनकेमांहि॥ तुरसी
ब्रह्मसरुपहैं॥ पटतरकोऊनांहि॥ पटतरकोऊनही॥ हंमदेषीसक
लजिहांन॥ जीवनमुक्तिजोगीनके॥ तुरसीकोऊनआन॥ २३॥ तु
रसीमौंनअमौंनकी॥ बनबस्तीकोसोइ॥ मुक्तरूपमहांमुनिकैं॥ आ
धारहीनकोइ॥ २४॥ जोबोलैतोब्रह्मसमुष॥ अबोलेब्रह्ममांहि॥ आ

दिश्रतिमांधवसबिना दूजाअमेनाहिं २५ याचौकायरामि द्या मेभ्रमलगाग। तुरसी श्रमलनऽ आतम स्वाजीयनाग।
७२६ नावतजीवनमुक्तिनही तोमयेकाश्रास तुरनाभावन मुकतिनये तेश्रानदीदास २७ श्रानदीसततनऽ५ समे। स्वतेत्रसुखबिलसाहि तुरमीऽदाम्रुबिनको श्रहिलेसहू ना नाहि श्रसेजीवनमुक्तिजन तुरमीजुगमश्राऽ तिनकटय नपरसस्यो सथायावनहोऽ
तुरमीयात्रियलोकमे कुसलीत येकोन कवलपदमेहोऽ। तुरसीया त्रियलोकयेमे कुसलीव वियेसोऽ श्रादिव्याधिनाकउम देनव वहहोऽ २ जनदय-सनजहा बिचारऽमुमाऽ तर सीतलातहारामहे कुसलागगरानेऽ ३ श्रादव्याधिनाकी ई रागदोवतयेहीन सव लगा उकलपगानिगई कोइस्थापद हीन ४ तुरसीकसकतदय काककायामाहि कीकवबो सुखबोकोकाकुसलीश्राऽ ५ मत्रमित्रनासनही सुख ऽवनयगलतान। तुरसी स्वतक समझोनकवनान ६ वैरीकतसुपलटिके पिरनयामित्रसमान तरसी श्राबद नये कुसलीएसहनान ७ कुसलीकायागुनतिम घुचेनाक लगाऽ तुरसीरलटिकेकरिग घा श्रातममाहिसचार ८ माया बादलफटिगयो उदयोश्रात्मश्राकास तुरसीकुसलीसतको श्रागपदहरविलास ९ मिटीत्र्याधिसमाधिमे मवहोऽराग्या। गलतान तुरसीकुसलीसतके एमतश्रावतपरान १० राग। दोषकाजुदीश्हि सुसहजगाई विलाऽ तुरसीकुसलीसतस व देयेकुसलहीमाऽ ११ तुरसीवा तविदेहकीरेमनपूछनमोहि जेबिसरेथतिश्रापा तोरव

देखौंतोहि ।१॰। तुरसीबात्तबिदेहकी मुष्पत रिकहीनजाइ।
षड्गधारक्तेकलत्त।त्तगाहोइत्तोपाइ।२।जावत्तसुधबासना
स्तक्षिमहंतमनांहि। तावत्तजीवनमुक्तिहै। बिदेहमुक्तिजु
नांहि।३। यह भाता भेयदेयह। यहबिज्ञानजहांहोइ।तुर
सीतनककृत्तनमांहि। जीवनमुक्तिजुजोइ।४।तुरसीमहां
बिदेहमत्त। महापुरसकहैसोइ। जहांबरणआश्रमकीप
हचांनिनरहीकोइ।५। तुरसीमहाबिदेहमत्त। जहांत्ततत्रि
गुणीदेह। मत्तगजलौंबिसरैफिरैं। कीयैंजगत्तसुषषेह।६।
तुरसीबिदेहमुक्तिजांनौंजुयह। नषेबेदपुरांन। यहहूयह
चूयहअरद। सेदत्तयौबिलीमांन।७। येआपनेएपारकेयब
लसआरिण। तुरसीजहांजहांदृष्टियह। तहांनमुक्तबिदेह।
८। तुरसीबिदेहमुक्तिकेआहिजुएसहनांन। ब्रह्मजीवए
केसया। कहनेकोनहिआंन।९। तुरसीबिदेहमुक्तिपाइजु
जिनिबडभागीजनसोइ। पाइआपनेप्रनिकौफल। रहैजुकत
कृत्तहोइ।१०। चौपई। सरीरकीसुधिसारनजांनें। होइरसाभ
त्तआत्तमत्तांने। कुनिबिदेहकीयहगत्तिपाई। सबनिआगैपा
टबताई।११। जनतुरसीअैसाहैकोइ। पारब्रह्मपदत्तरजसो
इ। बेहदपदमेरहासमोइ। ज्योंपालागलिपानीहोइ।१२। जाके
केपनकायामांहीं। बिजयैबिजायकसकेनांहीं। [illegible]याछीन
बिदेहीसोइ। चित्तदीपलौरहाजुहोइ।१३। तुरसीयहनरयहथै
नारी। यहबिभेदबासनासिधारी। जाकेनिपटगरिगयेजुकाम
सोकहियेअबधआत्मरांम।१४। साखी। तुरसीआत्मरांमकोसा
गिमुक्तित्रियनेह। तकलरूपीहोइरहे। बकरिनतेजेहपिधिघि
घिआइआइपरै। ज्योंसावनकामेह। नासेगल्हैनयहहवैजेजन
मुक्तिबिदेह।१५। तुरसीकहैंजुकहांलौं। बरत्तौंमत्तबिदेहजा

गाहोइ सोपावै मनाद ... नहीं सचै ...

... तुरमासमनालननहीसचै ... श्रुतिमधिमाहि

हि सिलासरूपीमताः श्रुतिस्रुतिमधिमाहि ... ज्ञानीतेदनाहीं ... पति

... कृषसमकरकनदीतामाहि ... ज्ञानीतेदनाहीं ...

... तिषिदनहीकोइ सिला ... धर्मइ २ ...

... रेताहि औश्रीसाजुगमें ... सिलासरूपाहि ...

कामकलपनामनकोषाइ ३ ... कामनकोपनली ...

... हीकनहीकोइ ... मायुकहीनलोइचेत ...

... हीगाहिरषा, आपापर ... सोइ ...

... लमजोइ ४ तुरसीताहिते ... आरीका ...

... मनचितकोहति ...

... रतिब्रह्मस्योलाइ, केआ ... आश्रोचरनहूती

केमनचितबुधिकोगाहै ... सुषकावि

तके तुरसीकहिसमा ... निहमलि

सरेधान पापहूमाहिलि ... मासधीर

... ननकरै, अस्तुतिहर ... चनके

जान ७ तुरसीमतमधीरै ... मनगायात्रा

हैयह तथोनेद विलीमार ८ ... तिहाका ९ आसूलेता

समाइ, सिलासरूपीमतसे तुरसाश्रितिहाका ... नासे चरावेसाइ असा

सदा रागरगावितहोइ ... मिधससखो गजिनस

होइजन ज्ञानकरि गुनइदूरमकोइ तातुरसीमिधससखो ... सकलपताहि

केकोइ १०, सारसूतमतासलाको जेराछेमनमाहि ... स्वप्नहूनदस

उपजे विकलपबायेनाहि ... ११ यामततेहम

हि तुरसीस्वयपतिलाधके तुरयदमाहिसमाहि ... स्वपनहोहिगा

हैतहे मतजुसिलासमाज ... इमकेडिगायेनाडिगा ...

८१ अंग अंग सब उलटि कें। ताहि रहै कूं रमचांन। तुरसी तेपद ब्रह्म हैं। न
हो कहन कों आंन। जो कब सीत संतावई। तौ सिला न उचरैं आहि
सहस किरनि सूरज तपै। तौ दोष न देवै ताहि। यों जोगी कें जगत
सब। मारै कुबचनौ ताहि। तौ जोगी आवै न कबू। रहै सिलागुन
माहि।।३।। चौपई।। तुरसी रहै सिलागुन सार। सीत उसन नहीं ता
सम झार। कदा चित उपरि पार बन होइ। तौ ता नै डिगि फिरै नहि
सोइ।।४।। यौं जोगी दुष सुष के मांही। तुरसी अचल अचल सै सोनां
ही। जो कब हूं रत उरत चलि जाइ। ता व्रत नहीं सिला मत पाई।।५
।।साषी।। तुरसी तन करि बिचरई। अपनै सहज सुभाइ। मन क
रि अचल हूं वार है। सुरति ब्रह्म स्यौं लाइ। ऐसा साधू है कोऊ
अथिर हो जुइ हिं काइ। धनि ता माता धनि पिता। त्रिभुवन बं
दत पाइ।।६।। सिला महा जड रूप है। साधू चेतनि सोइ। संत सि
ला ए अंतरा। प्रगट देषियै सोइ। जदपि सिला अडोल है। साधू च
ला क्रिय होइ। तुरसी तथापि ब्रह्म है। संत समान न कोइ।।७।।
तुरसी कोमल सदा कठोर नहीं। दुष सुष रहित समान। अषंड
अछिद्र अकास वत। ब्रह्म सिला उबांन। ताहि कोऊ ज्ञानी हो लषै
और निकौं नहिं संभन। यौं साखी बास रिरह्या। बिषवत बाजी ना
न।।८।। चौपई।। तुरसी सिला मत सो पावै। जो कोऊ ऐसा होइ
आवै। दुष सुष मांहि रहै न ही देह। ह्वार है उर अचल बिदेह
।।९।। तुरसी सिला मत यह सार। संत निबरन्यौ करि अधिकार। ब
ड भागी ही पावै कोइ। इतर जीव कौं दुलभ जोइ।।१०।।४०८।।
।।इति श्री सिला कौ पारिक्षा अंग।।१५।। ।।तुरसी ब्रह्मा कीट पर
जंत लौं। आतम एक समान। ज्यौं ससि सिंध सराव मैं। देषि ले कुउ
नमांन।।१।। ब्रह्म आदि कीट परजंत। पावर जंगम संत अनंत। तु
रसी सब मधि ब्यापक रांम। काहू के उनस्यौं नहिं कोमा।।२।। काहू

केथनमैं नहि आवै। सबमैं समानस दार है।वै।। जौं चंदा जलकुं
तनिमांही।। व्यापक वोर वोर सो आंही।।३।। साषी।। सबघट व्यापक
होइ रह्या।। तुरसी राम अदेह।। औरका और होवै नहीं। कहें सदेह
और और यह देह्।।४।। तुरसी गुनकी विषमता। वस्तविषमता नां
हि।। ताजनति निजिनि देषिये। रविप्रकासबमांहि।।५।। कहाउत्तम
मध्यमकहां। कहासूछम अस्थूल।। तुरसी सबगुनघटनिमैं।
आत्मएकसमतूल।।६।। सबघटपिंडब्रह्मंडमैं। व्यापक आत्मए
का।। तुरसी द्विष्टिगुनबंधहै। तौलौं दरसै अनेक।।७।। चौपई।।
विष्ट दिष्टि जौलौं घटमांही।। तोलौं नानारूप दिषांही।। तुरसी
समद्रिष्टि उपजै आय।। तब तलएकरूप दरसाय।।८।। मेघबूंदगि
निकिनसबपायो।। मनतेधोषामांहिआटकायो।। तुरसीनिरमेर
कोनाश।। ताकौहोइ स्वरूपदरस्योसीरा।।९।। पूरनहोइ पूरनपदपेषै
पूरनबिनकछुऔर नदेषै।। तुरसीपूरनकहियेसोइ।। जाकेउर
मधियहमतहोइ।।१०।। साषी।। तुरसीवासौं बेदको सार सूत
मतएह।। समितागहिदहिदेहस्रम।। बिचरिजुहोइ बिदेह।।११।।
बिचरिजुहोइ बिदेह। विसरिजगुआरिमित्र।। तुरसी तुलिता
तबै। दरसौ दिसदेतदिशार्थ।।१२।। तुलिताजबउरउपजिहै। द्वैष
यकेहैदूरि।। तुरसी तबहूंमजांनिहै। माया आनंदमूर।।१३।। नि
द्रा अरु अस्तुतु जवैं। जबतुलिकेंहैरांम।। तबतुरसी जबजांनिहै। पा
येपरमबिश्रांम।।१४।। चौपई।। तुलिकंचनतुलिकाचबसोय।। घ
टिबधिनेदबिसरजनदोय।। तुरसीचबसुमितासबजानी।। हैरेक
हैंसो आहि अस्थानी।।१५।। एकवोरकंचनकीढेरी।। यकवोरकोकी
चघनेरी।। तुरसी जेसमांनज्ञजानें।। ताहिसमितासबसंतवषा
नैं।।१६।। अससमितामिधिहोइ आवै।। त्रिबिधितापनहितांहिन
रावै।। तुरसीसोचुरपदमैंजाइ।। सलिलसिंधलौंहोइरहाइ।।१७।।

कोऊ कटुक बचन कहि कैं जु दुषावै ॥ कोऊ सीतल सबैं सुना
वै ॥ दुष सुष कस क कबू कै नावै ॥ सो मत कोऊ बडू ज्ञा गा पावै
॥ १८ ॥ साषी ॥ कोऊ चंदन लेपन करै ॥ कोऊ उडावै धूरि ॥ दो
ऊ सम हि होइ बौ रांम जी है गति कुल मह रि ॥ १९ ॥ या मत कौं हम
से पहित ॥ षपत आहि बकु साइ ॥ तुरसी तब तल पाईये ॥ जब
ये महि करै सहाइ ॥ २० ॥ रांम कृपा ते पाईये ॥ कै गुर पूरा होइ ॥ ता
के दरस परस ते ॥ सम मत उपजै सोइ ॥ २१ ॥ चौपई ॥ को टि आ
स्त्र का मत एह ॥ आत्मा चित है बिसारि गुब देह ॥ कनक कीट मृत्तु
का पषांन ॥ तुरसी देषै सर्ब समांन ॥ २२ ॥ साषी ॥ कोऊ आवौ त्त
लजा कुकोऊ ॥ निंदो बंदौ कोइ ॥ तुरसी सम रहे सिंध लौं ॥ पूए
कहियै सोइ ॥ २३ ॥ सत्र न नासे स्वपन हूं ॥ मित न हून दरसाइ ॥ तुरसी
समिता ज्ञान गहि ॥ रहा संतोष समाइ ॥ २४ ॥ अनंत सिद्ध साधनि
कौ सास्त्र निहूं कौ सोइ ॥ मत एतौ ही सार है ॥ सम तार हो समोइ
॥ २५ ॥ आगै पाछै रांम है ॥ अरध उरध मधि रांम ॥ तुरसी दह दिसि रां
म है ॥ रांम सकल ही ठांम ॥ २६ ॥ गुणं अतीत न गुण मई ॥ अबगति
अपरंपार ॥ तुरसी दह दिसि न्यारि रहा ॥ कोऊ जानै जानन हार
॥ २७ ॥ जाहि बैरी नासै नहीं ॥ मित्र न नासै कोइ ॥ तुरसी बेहद रूप
में समावैगा सोइ ॥ २८ ॥ रिधि आयें बहु बिना चले ॥ अन आये न घट
इ ॥ तुरसी पूरा संत सो ॥ रहे सिंधु के सुभाइ ॥ २९ ॥ तुरसी निंदा अ
स्तुति कौ रचन ॥ सुनै न कबहूं सोइ ॥ सुनि काहू कौ ना करै ॥ रषै
एक ही होइ ॥ ३० ॥ पंच तत्त की देह सब ॥ ता मैं बस्त समांन ॥ घटि
बधि कहूं न देषिये ॥ तुरसी यह तत ज्ञान ॥ ३१ ॥ जहां जहां जित
कित सबै ॥ अरध उरध मधि सोइ ॥ तुरसी रमिता रमि रहा ॥ षांटि
सा न कोइ ॥ ३२ ॥ उरै परै एक आतमा ॥ दिबि दिष्टि होइ भाव ॥ तुरसी
मणि गण रूप तजि ॥ धागौ दृष्टि लगाव ॥ ३३ ॥ जब दिबिदृष्टि

दित होइ॥ चरम दिष्टि बिलीमांन॥ तुरसी तब नल पाइए॥ यह सो
तासु ग्यान॥ २४॥ तुरसी यह समिता धर्म॥ सास्त्र बेद पुरान॥ सब सं
तनि मथि काढियो॥ महा अकल मष ग्यान॥ २५॥ तुरसी यह स
मता धरम॥ जो उर सेचि कोउ लेइ॥ तो ऽ षस्त्र षकी कसक उर उप
जै न कबहूं न देइ॥ २६॥ यह है यह रूप यह स्वरूप॥ बिना जो अं
हि॥ तुरसी समिता कै नयें॥ सकल एक होइ जांहि॥ २७॥ चौपई॥
ताता सीली तरंग मिटावै॥ उ षसुष कबहूं न उपजि आवै॥ तुर
सी मान अमांन समांन॥ समिता नयें होइ यह ग्यान॥ २८॥ साषी॥
तुरसी यह समता कही॥ महा बुधि मो पाइ॥ आगे आषों एकता
तहां न द्रष्टि दरसाइ॥ २९॥ ७२४॥ अथ एकता को परिकरन॥
॥ दोहा॥ तुरसी बेद पढ्यौ ब्याकरन पढ्यौ॥ पढ्यौ अष्टादस पुरान॥
सकल सास्त्र सो धि कैं॥ नित नितनि करै बषांन॥ जप करै तप करै
ब्रत करै देह बिबिध दत्त दांन॥ हृदै स्यांति न उपजै॥ बिना एक
ता पांन॥ १॥ जो उर उपजै एकता॥ तो उर सीतल होइ॥ अहं ब्याधि
तेउ बरै॥ निश्चै पाणी सोइ॥ २॥ अरध उरध मधि दसों दिसा॥ द्रपन स्
प सब जोइ॥ तुरसी ध्याता ध्येय बिनु ध्यान॥ तब सेचर रहै न कोइ॥ ३॥
एक ब्रह्म कपि बौ सुफल॥ तब सो हत्त मांघे॥ अहं ब्याधि गुन गलि
त होइ॥ मैं तैं मिटि जाइ॥ ४॥ मान अमांन समांन सब॥ सम अरि मित्र
ई॥ तुरसी आनंद पद पन लो॥ दह दिसि दरसाई॥ ५॥ तुरसी द
ह दिसि देषिये॥ एक हि अमल अरांम॥ बाहरि भीतरि सरिर षा
तहां नहीं षे को नांम॥ ६॥ तुरसी अषैत ग्यान यह॥ अषि हीं अमल
जु सोइ॥ अधिकारी हांलपै को॥ जा ताके नहि होइ॥ ७॥ तषि
बौ अषैत ग्यान को॥ कांम कौन हि कांम॥ तुरसी ईहां जित मण तिन
को पद आरांम॥ ८॥ तुरसी अधिकारी हांलपै को॥ अनअधिकारी नौ हि
वं कौं॥ ग्रंय यह पती ति सुनी जु हम॥ बेद पु । अ

कारीजीवकों ॥ मलाअदीत यह ज्ञान ॥ तुरसी मलिन आषिये ॥ केजा
इ ध्यान कु ध्यान ॥७॥ तुरसी अतित ताते इधमें ॥ अतितसरीरमांहि ॥ त
नकतनकऊरेकोऊ ॥ दधिघृतदोऊ नांहि ॥८॥ तुरसी अधिकारी प्र
ति ज्ञान यह ॥ कह्यौ हम बिधि औपाइ ॥ अनअधिकारी जीवकों ॥
देष्यो सुन्यो न सुहाइ ॥१०॥ तुरसी अजितइंद्री कोऊ ॥ कथ्यो एकताग्या
न ॥ किन देष्यो किन धों सुन्यो ॥ तवा मधि मुष मांन ॥११॥ तुरसी त्वे
बिंब भासे नही ॥ अजितइंद्री उर ज्ञान ॥ सकल सास्त्र स्मृतिनकों
यह निहचौं न्रबांन ॥१२॥ तुरसी अजितइंद्री कथ्यौ कोऊ ॥ ज्ञान एक
ताये हाउ ॥ गतन अंकूर पषांन में ॥ भावै देय ईश्वर यो मेह ॥१३॥ तुरसी
ज्वाला बिचरनैकों ॥ जलचर होइ अधिकार ॥ तौ रागी उर उपजे ॥ यह
अद्वैत बिचार ॥१४॥ तुरसी कहालों आषिये ॥ सरागी उर ज्ञान कों ॥
टिकै तऊ न होइ ॥ ताषै बेद पुरांन ॥१५॥ सोरठा ॥ तुरसी कांम क्रोध
कोइ कपट एकता मुक्ति होइ ॥ तौ मुक्ति जाइ सब लोइ ॥ अमुक्ति का
हू कौ नही ॥१६॥ साषी ॥ मुषस्यों कथै जु एकता ॥ मन कांम ता अते
क क्रोध सो नछुटा नही ॥ कहा कथै होइ एक ॥१७॥ देहाअध्यासी
जीवकों ॥ यह एकता जु ज्ञान ॥ कैसें कउपदेसौं कोऊ ॥ तुरसी होइ न सां
न ॥१८॥ तुरसी भान प्रकासैज्ञ पन मैं ॥ रामन स्व धात्म मांहि ॥ सकलसा
स्त्र सार यह ॥ पतैही में आहि ॥१९॥ जाकै उर भयौ आर सी ॥ रागदोष
मलषोइ ॥ अधिकारी या ज्ञान कों ॥ तुरसी कहिये सोइ ॥२०॥ तुरसी
रागादिक जाके गये ॥ रह्यो जु कोऊ नांहि ॥ ताहि सं लवे ज्ञान यह
औरनि कुकर आहि ॥ बिषया या वा लोक की ॥ त्रम करि जानी सो
इ ॥ बिषबनलौं बिसारि कैं ॥ रह्यो जु उलटा होइ ॥ अधिकारी या
ज्ञान का ॥ तुरसी कहीये सोइ ॥ और एकता कथ्यो करै ॥ कथं क
छू नही होइ ॥२१॥ अंतहकरन न बहकरनए ॥ जिन लीये उलटा
इ ॥ या वा लोक के ॥ बिषै सो गा बिसराइ ॥ याअद्वैत जु ज्ञान मैं सो

ईसलेवहराइ तुरसीजाउरेतेगोंय नानासरमबिलाइ ।२ ... मा
दिसपतिजुयह जाकेसिधिलईसाइ तुरसीधानिधि ... प्र
धिकारीजुकहाइ ।२३ तुरसीसमादिसपतिजुयह ...
णीसार अद्वैतज्ञानउदेकरनको हसाधनअधिकार २४ तुरसी
इनसमदमादिसाधननिकरि संयेमपूरनसोइ ...
बिबेजुको नहीकबिनताकोइ २५ याअद्वैतजुज्ञान... तीथि
हमकबुसुनाइ तुरसीअैसेरटेहोइ जौगुरकर... २६ ।
तुरसीगुरकारनसबधरमका हेतपदेसनहार गुरदान...
जाईए द्वैतप्रपचजुपार २७ द्वैतपरपचलघनेको अद्वैत...
नासोइ तुरसीतत्तमउपाइह तासबबह्मविलोइ २८ सबघट
व्यापकएकहे निरदोषीकिटंध यहस्रवबह्मउपासना तुरसी
निजकरिलेषि २९ यहनिजबह्मउपासना सोबहटगुन तु
रसीसबसाधूकहे सबसास्त्रनमान ३१ सहा बिमानधिडि
धरे यहबुधितिसषद ज्ञान तुरसीनिदिध्यासकहा यह
निदिध्यासनज्ञान ३२ श्रवनमननकोफल... बह्मभावना
येह तुरसीसागिनउदेहोइ छिमसवनजउदेह ३३
तुरसीजाइभावनानिवारे बह्मभावनाउरमुधार गुरगामि...
लौंतावेसोइ जीवसत्तामिटिबह्महीहोइ ३४ तुरसीबह्मभाव
केकारनी यहे भावनासुधमाधारन मुरतिसमेतीमिलिबरनी
सार द्वैतविध्वसनपरमोबचार तुरसीद्वैतभ्रमलको
जौबह्महिपावेकोइ अपहअहैनिसिद्धराम ज्योंनबह्मरुज
सोइ ३५ तुरसीतौबभावउपाइ नदीबरालौलागीजाइ
यासबबह्मभावनामाही तौबह्महोनमैसमानाही
बह्मीबह्मकीयोकहे कवेमयएकतान तुरसीकरनयहभा
वना रहेतजगुकोमान ३८ किनदेष्याकिनधासत्या न्हा

येतेसोइ॥तुलसीरजमाहींजनुजंग॥ऐसेंयहजगुजोइ॥३९॥तुलसी
तारतसाचौसोलगौ॥जोरनाहिनज्ञान॥ब्रह्मज्ञानकेभयेतें रहै
नजगुकौसान॥४०॥तुलसीबरणाश्रमनछत्र॥सोहैजहांजुरैन॥सो
नउदेतासेनहीं॥ऐसोज्ञानजुऐन॥४१॥ब्रह्मज्ञानकेभयेतें मि
टिजाइद्वैतकलेस॥तुलसीज्योंरबिकेउदें॥रहैनरजनीलेस॥४२॥
ब्रह्मज्ञानअज्ञानयह॥एकैसंगजुसोइ॥तुलसीकैसेंसोतर्थय
हतौंयौंनहीहोइ॥४३॥तुलसीअज्ञानकीरजनीभई॥ज्ञानसुत्ता
नसमान॥जहांयहरहांवदनहीं॥वहतहांयाकोहान॥४४॥महा
अद्वैतजुज्ञानयह॥तहांकैसोअज्ञान॥तुलसीहमदेष्योनहीं॥सु
न्यौंहूंनकहूंकान॥जेतेबिरोधीजानिये॥तेजतिमरउनमान॥सत
समृतिसबहीकहैं॥साषैबेदपुरान॥४५॥जदपिअज्ञानबलीहै॥
करैआवरणआइ॥तथापिआगेंज्ञानकें॥तुलसीकछुनबसाइ
॥४६॥कहाबलतुछबादरीको॥आछादईजुभान॥ऐसोअद्वैतज्ञा
नहै॥निरावर्णनबांन॥जाघटमेंउतपनभया॥तहांकेयेसहनांम
तुलसीअरिमित्तएकभया॥रहीनद्वैघाआंन॥४७॥ज्योंगिरवरकी
गुहामें॥जुगांतकोअंधियार॥महाजटितजुकैरहो॥क्योंहीन
होइप्रहार॥दीपगकेजोवतनही॥तातकालतिहिबार॥तुलसीगयो
रह्योनहीं॥ऐसोअद्वैतज्ञानबिचार॥४८॥जपतपजज्ञादिकनि
को॥ब्रतादिकनिकोसोइ॥ज्ञानअकेलोसारहै॥ज्ञानसमाननको
इ॥तुलसीतास्योंलोकमें॥औरकहौंकहांलोंसोइ॥ज्ञानसांनदत
[illegible]जुधरम॥निसविछत्रलौंसोइ॥४९॥तुलसीइंदुआदिनछत्र
कासई॥तऊनिसानसूरनहोइ॥सांनउदेतासेनहीं॥ऐसोज्ञान
जुसोइ॥५०॥तुलसीज्ञानसमानकोऊनहीं॥जाज्ञानकेजुमांहि
घटघटतासैएकहीं॥दूजाकोऊनांहि॥५१॥तुलसीज्ञानसमानकी
ऊनहीं॥संतकहैंसबकोइ॥सुरतिसमृतिसबहीकहैं॥ज्ञानतहांन
हीदोइ॥५२॥

चेतन्हीअरथारह्यौ।।जैसेंसकल
।।चित्तरूपरासिहै।।अरुचेतनरूपकोसूरयास
हसबसबसैतनिकरह्यौ।।ससतबहकिपरौकहूंदूरि।।५१।।तुरसीरू
रिनजाइयै।।अरैयरैएकरांम।।बाहरिसौ।।तारितिरिरह्यौ।।रहितवस्त
अस्तनांम।।५२।।तुरसीनांमरूपतैंभैनिरंतरदेव।।सकलरूपकासक
सोइ।।सबकौसोतासकलप्रिया।।व्यापिरह्यौसबलोइ।।५३।।[illegible]
मैंदहतहै।।रूपैव्यापकधीव।।एकरूपनिसांधसूबायनां।।पिंडपिंडमैं
जीव।।रोमरोममैंरमिरह्यौ।।यौंसबघटव्यापकसीव।।तुरसीब्रमचए
कहीहै।।नांभैंयसधीव।।५४।।जदपिदारतिनितिनिविहैं।।दहनिनिनिति
नितांहि।।तुरसीदहनएकहीहै।।ब्रह्महूंयैंसब्याहि।।५५।।तुरसीद
रतिनितियेकलया।।पीपलकेरबंबूल।।दहनसकलमैंएकहै।।
यौंब्रह्मसबनिकौमूल।।५६।।उत्तममधिमघुघटनिमैं।।ब्रह्मएक
हीआहि।।तुरसीजकौविषमता।।वक्कविषमतानाहि।।५७।।[illegible]
धएकहीहैसबघटमांहि।।सोइ।।तुरसीबवसाबूकेंहैं।।[illegible]
कोइ।।५८।।जैंसबग्रामणिमानानिविधि।।[illegible]
एकोआहि।।त्यैंसैंअरूपटवलेहै।।समांनसबघटमांहि।।५९।।[illegible]
कहोइरह्यौ।।स्वाकैंजनांहि।।६०।।तुरसी[illegible]
मणिगणघटविरूप।।[illegible]रांमहै।।[illegible]
३।।कायामायाआदिदै।।[illegible]विकार।।[illegible]
हो।।सहनिस्वैनिरधार।।६४।।चितचेतन[illegible]
नांएहा।।तुरस[illegible]जिकौ[illegible]नाहि।।६५।।[illegible]
हनकरि।।[illegible]
६६।।चित्तनहाँ[illegible]
डरूपहै।।[illegible]।।६७।।[illegible]
धरूडवगाच[illegible]

मनपांनी जिनका सुष्या ॥ न्रम हे गया बिलाइ ॥ ७ ॥ भेष बिबेक हा
नया रहीन को कराइ ॥ तुरसी परमातम जीव यह ॥ सलिता सिंध
समोइ ॥ नराति जोगा बेरागी को सब फल दैवे याइ ॥ १०॥ ॥
॥ ५२२४ ॥ ॥ इति श्री गुसांई सुन्दरदास जी को साषी संपूर
ण ॥ संवत् १८४५ ... ॥ ... ॥
॥ श्री रामनिरंजनदेवाय नमः श्री गुरुदेवाय नमः श्री परम
हंसेभ्यो नमः ॥ अथ ... ॥ अथ जोग संग्राम ॥
कठिन षांडे की धार ॥ याके संकर सेस अरु जीव कहा बिचार ॥
१ ॥ सुर नर मुनिजन पीर रहे सो व जल उरवार ॥ गुरगमि ग्यांन बि
चार ॥ गहे बिरला जन पार ॥ २ ॥ सम दृष्टि सम ताइ रहे निरबैर नि
रास ॥ सो जन उतरे पार ॥ काल नही करै बिनास ॥ ३ ॥ जाके सत्र
न मित्र ॥ नही संगि दूजा कोई ॥ सदा रहे निरबंध ॥ साध जन का
हये सोई ॥ ४ ॥ नही किसही सूं नेह देह का सुष नही चाहे ॥ सी
त उश्न सिर सहे ॥ आदि अंत ऐसी निरबाहे ॥ ५ ॥ घर बन दोऊ
रीति रचे नही जन स्वारथ ताई ॥ कंनक कामणी त्यागि रहे उनमा
न लै लाई ॥ ६ ॥ ऐसी रहणी रहे तास कूं लेह पिछांणि ॥ कथे स
चर लेकान ॥ सोई परहरिये प्रांणी ॥ ७ ॥ सबद सरोतरि कहे मि
थ्या कबहूं नही बोले ॥ षोजे पद निरबांन काहू कूं बान बिबान डो
ले ॥ ८ ॥ आसा त्रिश्नां बाडि तजे सब जग मोहत्याग ॥ रहे निरंतरि
लागि ॥ सोई जोगी ततसार ॥ ९ ॥ काया कूं बसि करै ॥ मोह तत जि
ममता मारै ॥ ऐसा अवधू जांनि ॥ कास तैं हरि निवारै ॥ १० ॥ निर
गुण रहे उदास ॥ नही संगि दूजा भावै ॥ एकल मल अबीहसो
ई अवधूत कहावै ॥ ११ ॥ नही आगिली चाहि पीछे नही संसा को
ई ॥ रमैसी गी परवांण देव गति कहिये सोई ॥ १२ ॥ निंदा बिंदा को
इ काहू स्यों बैर न राषे ॥ सब देषे समि साइ जैसा रंक तैसा राव

।सिथिरकरै।हाटैनही घरिघरिद्वारं।इउ
पावैअकलपअहारौ।१६।चंचलराखैमारि
रपावै।असाओधूजांणि।मरैनहीजरागु
।चलौमनिवारि।आमाअस्थिरआवै।।
दसरा नूरकादरसणपावै।१७।कूवाबाइ
।बाडीबाग।आसणमढीमसांण।तजैसब
।तमंतओषदजडीबूटीनहीजांणै।आ
आराध।कूवसबहीकरिमानैं।१८।परहरिबाद
बिबाद।तजैसबहीकासाथ।चकमकज्वालाफाडिकरैन
हीजीवकीघात।१९।स्वादसकलसेगतजौ।षाटामीठाअ
पारा।इंद्रीभोगनदेइ।सोईजोगीमनिसार।२०।इलापिंग
लाफेरि।पछिमकूंउलटावारै।भंवरगुफाकैघाटि।पीवैअ
म्रतसचपावै।२१।इम्रतपीतैअघाइ।उपतिसबतनकी
जाइ।थकहोइत्तामांहि।जासकैबायनमाई।२२।पर
हरिपांचपचीस।दोइतजियेकपिछांणै।सतगुरकैपर
सादि।असागतिबिरलाजांणै।।२३।तजैइसअरसुप।।ग
गनमैंआसणलावै।।तहांदेषैनिजनूर।मगनहोइमांहि
समावै।।२४।।दोहा।।एकनिजज्ञानबिचारिकै।उनमनिर
हैसमाइ।सुखीदासअंतरनहीं।।लागिहैइहरिआइ।।
२५।।१।।इतिकरणीसारजोगग्रंथसंपूरणसमापता।।।अ
थसाधसुलछणजोगग्रंथ।।साधूजनसंसारमैं।रमैंसुभाइ
सुभाय।काहूंकैरंगिनांमिलै।आपणैरंगिरहाइ।।१।।सुषबा
णीसुसबदचवै।कुसबदकहैनकाहि।सीलसबुरीसाक्तिकै
चालैएकैनाह।२।निरपषनिरदावैरहै

धरै सदा सो मति सूं मेल ॥ दरद महरि का ना वेलै ॥ मन अरु मुख
सा मेल ॥ ४ ॥ पर निंदा ता वै नहीं ॥ पर पंच पलन सुहाइ ॥ पर
आतम सों प्रीति करि ॥ पर चै बिलबै धाइ ॥ ५ ॥ विष अम्रत मैं
जनम ही ॥ निस दिन निकरि लेइ ॥ विष त्यागे अम्रत गहै ॥ औ
सा काज करेइ ॥ ६ ॥ अलप अहारी अलप नींद ॥ अलप ही नि
द्रा नेह ॥ अलप रमिणि रमैं जुगति सूं ॥ अलप ही सबद क
रै हो ॥ ७ ॥ आदि मैं मारग आदि मत ॥ आदि गहै बिचार ॥ आदि के
सिरि टेबो करै ॥ निराकार निज सार ॥ ८ ॥ करम तजे करता स
जे करै न जग की काणि ॥ काया नगरी मांजि कैं ॥ करता लेह पि
छांणि ॥ ९ ॥ थिर षयै सो नास जे ॥ अबिनासी सूं नेह ॥ देह तणा
सुष त्यागि कैं ॥ होइ रहै सम थेह ॥ १० ॥ होइ रहै सम थेह लौ ॥
तन मन आपा जार ॥ आरति सूं आतम मही ॥ रमै रमैया क
तार ॥ ११ ॥ मुष जु आंन उचरै नहीं ॥ पर पंच सु नैन कान ॥ उरै
लेइ ण उलटि कैं ॥ धुनि मैं राषै ध्यांन ॥ १२ ॥ कोके निंदै कोऊ क
बिंदै ॥ कोऊ करौ आदर भाव ॥ कहै वा चित न लावई ॥ हरि
जिवे को चाव ॥ १३ ॥ सुष दुष पल है न पग धरै ॥ दुष दे षिन सु
रजाइ ॥ दुष सुष दै सामानि करि ॥ समता सम निरताइ ॥ १४
सम जु लोसट सम कांचन ॥ सम जु मान अपमान ॥ सीत
सम न सम करि गिनै ॥ सम चौरासी जान ॥ १५ ॥ सम जु धूप सम
छाहड़ी ॥ सम पांणी सम पाल ॥ सम सेत फटक मणि मोतीयां
सम कंकर सम लाल ॥ १६ ॥ सम मन पवनां वन मही ॥ निरति
सुरति सामान ॥ नाद बिंद सम करि सजै ॥ पूरण परम निधान
॥ १७ ॥ परापरी सूर चि रहै ॥ साध सुलछिण एह ॥ जन सुंदर सौ
साधे तजन ॥ प्रति छिब प्रभु की देह ॥ १८ ॥ इति श्री साध लछ
ण जोग ग्रंथ संपूरण ॥ अथ [illegible] ॥ दोहा ॥

गुरुपरसादअकलगवांनी॥बेदुनौंतनीजोचालबषांनी॥चौ
हअषिरकाकरैबिचार॥जोचान्हैसोउतरैपार॥१॥प्रथम
बिसरैमायामोह॥बिसरैप्रीतिबैरतादोह॥बिसरैममत
मांनबाडाई॥बिसरैहरिबितनुरीसलाई॥२॥बिसरैआप
अरअभिमांनां॥बिसरैषुदीगरबगुमांनां॥बिसरैजपंचब
दबिबादं॥बिसरैषटरसइंद्रीस्वादं॥३॥बिसरैकांमक्रोधक
संग॥बिसरैकुबधिबिषैकारंग॥बिसरैत्रितिगाबिनिद्रा
लष॥बिसरैपापपुनदुषसुष॥४॥बिसरैपाषंडकपटछनाव
बिसरैरंगरूपरसचाव॥बिसरैहसनबकनकोबांनी॥बिस
रैकलहकलपनांकांनी॥५॥दोहा॥बिचरैसतसंगतिमही॥
कीरतिकरैअघाइ॥सोईपरमनिजबैस्नौं॥जोपतिकूंबिस
रिनजाइ॥६॥चौपई॥तोसाहेरंमनांमततसार॥साहेयम
तमपांनबिचार॥साहेबुधिबिबेकप्रकास॥साहैसावनगा
तिबिसवास॥७॥साहैजतसतसीलसंतोष॥साहैदयाधरमत
जिदोष॥साहैनिजकरकरनीआधार॥साहैनांवनिरंजनसा
र॥८॥साहैदीनगरीबीध्यांन॥साहैदिढकरिधीरजध्यांन॥साहै
सुरतिनिरतिमनपवन॥साहैनिजततनिरमलचरन॥९॥साहै
प्रमाधैतजिस्वारथ॥साहैअरथपेलिपवअनरथ॥साहैसच
स्फटिककौवै॥साहैप्रेमप्रीतिनिजध्यावै॥१०॥दोहा॥साहैनि
जततनिरमला॥साहैनिजमतिसार॥सोईपरमनिजबैस्नौं॥जो
कएलेकूकसडार॥११॥चौपई॥तौनकरैतीरथबरतकीआसा॥
नकरैजपतपअनउपासा॥नकरैपारथपूजासेवा॥नकरैनांनां
बिधिनषेवा॥१२॥नकरैबिसचारीकासंग॥नकरैकांमनिकल्ह
कुसंग॥नकरैबिराजअरंभोपार॥नकरैसिवसाधापरवार॥१३॥
नकरैआसनघरघरम्मार॥नकरैपडिंगुनिवकबिसतार॥

नकरैपरत्रीस्योंनेह॥ सोलगतामेंपायनषेह॥१४॥ नकरैपरा
नद्रोउपहासी॥ नकरैप्रीतिबिनासी॥ नकरैकिसस्यूंबेरत्रसा
नकरैहरिबिनआनउपाव॥१५॥ चौपाई॥ प्रीतिकैनिन्दे
वस्यो॥ ममकाममनसाइ॥ सोईपरमनिजषेसनो॥ जनतूरबीब
लिबलिजाइ॥१६॥ चौपाई॥ तौआरतिसोंहरिनांवरूपा
रतिसोंनिजरूपनिहारै॥ आरतिसोंनिरसेरसपावै॥ आरतिसौं
मरिबकौरिनजीवै॥ आरतिसूंनिरमलजससगावै॥ आरतिसूं
जततदरसावै॥१७॥ आरतिसूंचीन्हैंपदसोई॥ जाचोकरि
नमनहोई॥ आरतिस्योंपातिसूंल्योलावै॥ आ
मघिरांमेंध्यावै॥१८॥ आरतिसूंपेषैपातिसूंदर॥ ता
डुषडंडर॥१९॥ दोहा॥ आरतिसूंसे
या॥ सोईनिरमलबेसनो॥ निरमलमांहिसमाइ॥२०॥
नीजोकरै॥ सोजनहरिकीदेह॥ सरसोजामनमर
कलअनेह॥२१॥ इतिश्रीसंपूरणग्रंथ॥ तिलगुणतेदा॥
चेतसार॥ सुमिरिअमिअंतरिप्राणी॥ मर
सत्तगुरकीबांणी॥१॥ कालजालजंआल॥ लागितन
सरमनिसामेंपेषि॥ मुगधसुरिषमतसोवै॥२॥
साकलटितहांकैरैनिवासा॥ सबघटसिरजनहारा
परआसा॥ अलयेअनित्यअनंत॥
मांनगुदारि॥ दीनहोइनिसदिनजागी॥४॥
स्वारस्वारथजुनिवारी॥ परमारथपरतीत॥ सुमतिसब
री॥५॥ उषीसुषीसामांन॥ दोहकाहनेहीकीसै॥ निर
रहै॥ सुमरिकेलाहालीजे॥६॥ दयामयासंतोष॥ सील
गाहिये॥ बुरीभलीसुषसैंजु॥ नलिकबहूंनेहीकहियै॥७॥
[illegible] सोईदेहो[illegible]

लचतुवनपतिराई॥८॥ज्यौंजलदिनअरुराति॥चलतपलअटके
नांही॥ऐसेंगवनकरिमिलियेसुषसागरमांही॥९॥कहंअट
कीयेनांहिरटियेनितिहरिकोनांम॥नांमबिनाजोकरेसोई
तरसीबेकांम॥१०॥सबदीकूंसुषदेइडुबदीजैनलगार॥ज्यौं
जलथलमैंघोष॥अतिन्यारेकान्यार॥११॥कामक्रोधअहंकार
लागिपलहूंनरहिये॥संतनदोउसमाइ॥जाइसुषसिंधमिलि
ये॥१२॥कहोनिरगुनसरगुनकहा॥सकलहीसमकरिलीजे
अननिरगुनसाह॥स्वादरसकछूनकीजे॥१३॥कहाषाटाकहा
मीठा॥कहामधुराकहाषारा॥सबहीहरिरसनिरधारि॥अगनिज
मकरैअहार॥१४॥बुराभलानहींकहिये॥लहियेसोसोजनकी
जे॥आनअगनिबुझाइ॥सदासांईसुमिरीजे॥मनबचक्रमसु
निबीर॥येहेजमतिदिढकरिसाही॥तोनिरतनलागैबार॥
पावेपरस्वेसुधराई॥१५॥मनमनसाजमनाइ॥समाइपरम
पदमांही॥नाइचतौंगहिमत॥अनंतकहुंरचौपैनांही॥१६॥
कहारंककहाराव॥काहूकोआसकतनहोईये॥नाइतनाग
सिसाहि॥सकलतजिनिरबंधनरहिये॥१७॥कनककामनी
त्यागि॥सुषसंपतिसबषोइ॥षोयेबिनासंताप॥जनमजन
मंतरहोई॥१८॥मांनिहमारीसीष॥रांमअभिअंतरिगाई॥पां
चपचीसोंत्यागि॥जागिजगपतिसिरनांई॥१९॥ज्यौंसबमैंआ
काश॥बाहरिभीतरिएकसार॥ऐसेंप्रभुकूंपेषि॥बहोत्का
हांकरैबिचारा॥२०॥अगतिअपरंपार॥ब्रह्मअडिगअबिना
सी॥देवरषादसोंदिसनूरि॥पलटिपरस्वैकरिसेवा॥२१॥बाह
रिभीतरिएक॥एकसबदमैंजानी॥अरधउरधमधिएक॥एकहं
सूरुचिमांनी॥२२॥सबहीमतओगाहि॥सारमतवोहितुन
या॥ऐसीकरनाकरैतो॥बहोरिफिरिथ

काया कबहूं न धारई बकुरि न या जग आय तुरसी सुषसा
गर महीं रहाये सदा समाइ ॥४९॥ ॥ इति श्री ग्रंथ जोग संपूर
ण समापता ॥ ॥ श्री गुसांई तुरसीदासजी की बाणी संपूरण
॥ ॥ अथ श्री राम जन ... श्री निरंजन देव आ सहित जे ॥ गोर
ष नाथ नर हरीगोपाल जो सहित हैं ॥ अनंत जोगेसर सहित
हैं ॥ कबीर नामदेव जो सहित हैं ॥ अनंत साध सहित हैं ॥ ध्या
न जोग ... हैं ॥ मिहर बान जो सहित हैं ॥ निरंजन प्रमाण ॥ श्री
राम सो जे ... ॥ आन ... जनहरीदास जी को अंग लि
ष्यते ॥ ... ॥ श्री गुरुदेव को अंग लि
ष्यते ॥ जनहरीदास के पान गुरु सतगुरु सिरजनहार निधिपा
ई निरसै नयाँ अरस प्रस दीदार ॥१॥ जनहरीदास के पान गु
रु साध सेती प्रीति साध सदा गोबिंद सूं जे देही का गुण
जीति ॥२॥ जनहरीदास के पाव गुरु गुरुदया सुं नेह दुष
सुष दोइ व्यापे नहीं गुरुदया गुण एह ॥३॥ गोरष हमारे ग
रू बोलिये पाट हमारी चेली सति का सबद सहज घरि षे
लैं आविचड रमति पेली ॥४॥ माई मूं डूं सिधि की जे ओ निरं
जन नाथ हरीदास जन यों कहै सिरि गोरष का हाथ ॥५॥ दि
दई सतगुरु मिल्या हीरा लीया सूत्ता म हरीदास जन औह
री बोठा कदे न माहरा ॥६॥ बलती अग्नि बुझाइ करि सीतल की
या अंगार जन हरीदास आनंद भया सतगुरु का उपगार ॥७॥
बलती अग्नि बुझाइ करि सीतल कीया सरीर जन हरीदास
गुरु गम मिलैं पीया त्रिमल नीर ॥८॥ जन हरीदास नाथ का
बालका रहै नाथ की छाया पूरण ब्रह्म प्रमसुख दाता नि
रंजन राया ॥९॥ जन हरीदास सतगुरु सबद औषरि लागा बा
ण ... ॥१०॥ ...

कौ अंग ॥ गुरु गिरही माया गहै। सिष बैरागी
थमत क्यौं मिलै। प्रगट पैंडा दोइ ॥ ५॥ गुरु लागा
ग्रं दरि हरि साच ॥ जन हरीदास अमृत कौं मिलै
ाचा ॥ ३॥ गुरु सिष दोऊ करि चल्या, जन हरी
ष चाले गुरु कै, तौ वह गुर सिष नाहि
सं धत जि सौरै बेगा जाया। सो गुर सिष कौं तु
णमाचा मिलाय: ॥ ४॥ जो कछु गुरु सिष कौं कह्या, सो
सौ गुरु पै होइ ॥ जन हरीदास की बंदगी ॥ गुरु गोबिंद न हो दोइ
पा ॥ गुरु निरंजन गोबिंद न जो, वै साही सिष होइ ॥ जन हरीदास
मत ऐक है ॥ तब कहा ण कौं दोइ ॥ ६॥ जन हरीदास गुरु
गार हू ॥ बिष कौ डै कू डि जाइ ॥ ७॥ सिष भ तो गुरु का करै, सिष हा
भकि रिया ॥ जन हरी दास गुरु क्या करै ॥ सिष मू रिष मुगजा ॥ ८
र ॥ ६॥ मित्र पाया नांपिवै ॥ बिष कायी व ण हार ॥ ६॥ पानी गुरु
सो सिष मिलै, सो सिष मै पानी होय ॥ इष एक ही के सजन
बक हि बिकौं दोइ ॥ १०॥ बालक है आकास की ॥ आप स्मात
लि जाइ ॥ ११॥ पानी गुरु सो सूरिष मला ॥ सकै न ओर स्मुलाइ
॥ १२॥ सिष साचा साचे मिलै ॥ गुरु दीरघ नमना स: रहित
कए के बसत ॥ ऐक दिसा इ निवास ॥ १३॥ सिष सूता जागै
रै निपकौं ती आइ ॥ वा सिष के अति गुरु मिलै ॥ तौ अति रस
त लिजाइ ॥ १४॥ पश्चिम देस पं प अर है ॥ पूर्व रह समाइ ॥
गुरु के मति जे सिष मिलै ॥ तौ पारिप कै चे जाइ ॥ १५॥ १६॥
मिरण कौ अंग ॥ साहिब जी की बंदगी ॥ कीजे तब मन लाय
न हरीदास षेलत हो ॥ जहां काल न पहुंचे आइ ॥ १॥ अनित
आवै पर है ॥ अपणै हिरदै धारि ॥ जन हरीदास निरंतर मै
९
जनमै मन बिचारि ॥ २॥ नांव:

इसहोइ हरीदासजनयौंकहै मूलिपडेमतिकोइ ३ देवकरि
कोईमतिमरै परैनपकैचेहाथ जनहरीदासनिरसैमतै सजो
निरंजननाथ ४ हरिसाहित बिसारिमा ताबि अवरकेसाथि
लोकलाजबहिजाहिंगा हाथ नावैहाथि ५ उलटागोतामा
रिकरि अंतरिअवषबिचारि रामसजनआनंदसदा कदे
नआवैहारि ६ सनकादिकजोगीजनक मतिगतिलषैन
कोइ जनहरीदासताकोंसजो सजनाहोइसुहोइ ७ मेंह
रिसुषबाडौंनही मीवालागोमोहि कमकविनसबकेका
पीनसूपलेसोहि ८ मेंहरिसुषबाडौंनही बालकहतक
ठक हरीदासजनयौंकहै मीवालागोमुक ९ मेंहरिसुमि
रणछाडौंनही मनवांमारिअटकि जनहरीदासकरमनरं
मसबहूतजा गहि गुरुगंपानफटकि १० जनहरीदासनि
रसैमतै सजौनिरंजनराय कालजालभागैनही सुषमैंर
हैसमाइ ११ जनहरीदासनिरसैमतैपाजावकै अटकि
अटकिसमकाइ दूजीदूरमतिदूरिकरि हरिचरणांचित
लाइ १२ रुप॥ बिरहकौ अंग॥ बिरहनिउगीदरदसूं अबलासूं
क्यामाण केमिलिहौकेतनतजौं संगाहोकेलसुजाण ॥ ज
नहरीदासकासूंकहूं अपणांघरकोलाइ ज्योंजाल्यासूं
होजल्या जलिबलिरह्यासमाइ २ बिकलभईबिलबेक
लौ नालाबेलीजोर हरीदासजनबिरहनी मिलौसनेही
यार ३ अंतरिबिरहाआईया रोमरोमसबमांहि जनह
रीदासकेहरिमिलो कैअबजावणनाहि ४ अविनासी
आवूपहरै अपणैहिरदेधारि जनहरीदासनिरसैमतै निरसैब
सतबिचारि ५ कफनीकफनासारिषी पहिरैबिरलाकोइ जन
हरीदासबिरहअग्निमैंपैसिकरि जलिबलिकोलाहोइ ६॥
६१ बिरहाकौअंग॥ आगै

॥नम॥ श्रीरामायनेनम श्रीगुरुभ्योनम॥ ग्रंथ
मैणी अष्टपदी लिषिते॥ राग सूहो॥ एक बिनं
॥सबै अयान वो आपै सयाना॥ सतरज तम थैं कीं
षानि बिसतार उपाया॥ पंच ततले कीन बंधान
॥निमान॥ अहंकार कीन्हो माया मोह॥ संपति
अकाहू जलेरे पोच अकुल कुलवंता॥ गुण
अनवंता॥ भूष पियास अन हित हित कीन्हो॥
रिलीन्हो॥ पंच स्वादले कीना बंधू॥ बंधे करम
॥अवर जीव जंत जे आहा॥ संकट सोच बिआपै
ताहा॥ निंद्या अस्तुति मांनि अपिमांनां॥ इहि झूठे जीव ह
त्यो गियाना॥ बहु बिधि करि संसार भुलाया॥ झूठे दो जगि
साच लुकाया॥ माया मोह धंन जोबना॥ इनि बंधे सब लोग
झूठे झूठे बियापिया॥ कबीर अलष लषै नहीं कोइ॥२॥ झूठ
नि झूठ साच करि जांनां॥ झूठनि मैं सब साच लुकानां॥ धंध
ध की कीन्ह बहुतेरा॥ करम बिबर्जित रहै न नेरा॥ षट दरसन आ
श्रम षट कीनां॥ षट रस षाटि कांम रस लीनां॥ च्यारि बेद छह
सास्त्र बषांनैं॥ बिद्या अनंत कथै को जांनैं॥ तप तीरथ कीनें
ब्रत पूजा॥ धर्म नेम दांन पुनि दूजा॥ और अगंम कीने ब्यौहा
रा॥ नहीं गमि सूझै वार न पारा॥ लीला करि करि भेष फिरावा॥ वो
ट बहुत कछू कहत न आवा॥ गहन ब्यंद कछू नहीं सूझै॥ आप
न गोप्य भयो आगम बूझै॥ भूलि परयौ जीव अधिक डराई॥
रजनी अंधकूप ह्वै आई॥ माया मोह उनवें भरपूरी॥ दादुर दामि
नि पवनां पूरी॥ तरपै बरिषै अषंड धारा॥ रैंनि भांमनी भया अं

घा॥ बेद नि आदि कहूं कोमांनैं॥ जांनि बूझिमैं नयां आयांनैं॥ न
टबरूप षेलै सब जांनैं॥ कला के रंग नग अंकुर मांनैं॥ दो षेलै सब
ही घटमांही॥ दूसर के लेषे कछु नांही॥ जाके गुन सोई पैं जां
नैं॥ और को जानैं पार अयांनैं॥ नलेरै पोच औसर जब आवा॥
करि संनमांन पूरिजन पावा॥ दांन पुंनि दंम दक्ष निरसा॥
कबल गार कुंनंट रंसका वा॥ फिरत फिरत सब चरन चुरांनैं
हरिचरत अगांम कथें को जांनैं॥ गणगंध्रप मुनि अंतन पा
वा॥ रह्यौ अलष जग धुंध धेलावा॥ ब्रंहि बाजी सिव बिरंचि तुलां
नां॥ अवर बपुरा को कंचि जांनां॥ नाहि नाहिमैं कीन्ह पुका
रा॥ राषि राषि सांई अ हि बारा॥ कोटि ब्रह्मंड गढि दीन फिराई॥
फल करकीट जनमब कुंताई॥ ईस्वर जोग षयज बलानां॥ टस
स्यौ धांन त्यपषंडन कीनां॥ सिध साधिक जेन कहं तैं कोई॥ मनचि
त थिर कहैं कैसैं होई॥ लीला अगांम कथें को पारा॥ बसकुंस
मीप किरकुंनियारा॥ षग षोज पीछें नहीं॥ इतत्त आपरूपार
बिंनि बचे का जांनियें॥ कबीर सबरूंग अंदकार॥२॥ अलषनि
रंजन लषैन कोई॥ निसैं निराकार है सोई॥ सुंनि अस्थूल न रूप
नहीं रेषा॥ दिष्टि अदिष्टि छिप्या नहीं पेषा॥ बरन अबरन कथ्या
नहीं जाई॥ सकल अतीत घटि रह्या समाई॥ आदि अंति ताहि
नहीं मधे॥ कथ्यो न जाय आदि अकथे॥ अपरंपार उपजै न
हीं बिनसै॥ जुगति न जांनियें कैसे कैसें॥ जस कथियें तस
होत नहीं॥ जस है तैसा सोइ॥ कहत सुनंत सुष उपजै कबी
र॥ अर परमारथ होइ॥३॥ जांनसि नहीं कस कथसि अयां
नां॥ हंम निरगुन सरगुन करि जांनां॥ मति कर हीन कवं
नगुन आहा॥ लाल चिलागि आसि रे रहा ई॥ गुन अरूपांनदी

हेमहीनं॥जैसीकछुबुधिबिचारतसकीनं॥हेममतिहीन
॥कुजुगतिनआवै॥जौतुम्हदरवौतौपूरिजनपावै॥तुम
चरननकवलमनराता॥गुनत्रिगुनकेतुमनिजदाता॥
तकवौप्रगटिबजावौजैसा॥जसअननैकथियातिनितैसा॥
प्रोजैजंत्रनादधुनिहोई॥जैबाजावैसोऔरकोई॥बाजीनं
वैकौतिगदेषा॥जौनचवैसोकिनहूनपेषा॥आपआपपैं
जोनियें॥हेपरिनाहीसोय॥कानीरूपभेकेरा धंनजंम॥जाग
तहाथिनहोय॥४॥जिनियकरूपिनाफुरकरिजांनां॥और
सबैडपयादिनआनां॥गपांनहीनचैतेनहीसूता॥मैजागपा
बिसहरसैसूता॥पारधीबांनरहैसरसांधै॥बिषमबांनम
रैबिषबांधै॥कालअहेरीसंकसिकारा॥स्वावजसुसासकल
संसारा॥दावानलअतिजरैबिकारा॥मायामोहरोकिलेजारा॥
पवंनसहायलोनअतितईया॥जंमचरचाचहूंदिसिफिर
गईया॥जंमकेचरचहूंदिसिफिरलागे॥हंसपंषेसूम्बक
हांजाइगे॥केसाहेंकरनिसदिनरहई॥जबधरिअैचैतबध
रिचहई॥कठिनपासिकछुचलैनउपाई॥जमदुवारिबांधेसबजाई
सोईत्रासस्वनिरंमनगावै॥मृगत्रिष्णांज्यौदिनधावै॥अति
कालकिंनहूंनहिदेषा॥दुषकूंसुषसबहीकरिलेषा॥सुषकर
मूलनचीन्हअमिअसागा॥चीन्हैंबिनासहेडुमलागे॥नीवकीटर
सनीवपियारा॥यौंबिषकौंअमृतकहैसंसारा॥बिषअंमृतएकेक
रिसांन्यां॥जिनिचीन्हांतिनहींसुषमांन्यां॥अबतयजदिनदिन
दिंसिरही॥हरिअमृतअरबिषषाई॥जांनिअजांनिजिनोंबिष
षाया॥परेलहरिपुकारैंधाया॥बिषकेषायेंकागुनहोई॥जावेदनि

बेकुषीर बिनासा॥ तिलसुक्रकारं निरुषअसमेरु॥ चौरासीलष
कीन्हांफेरू॥ अलपसुषदुष आदिअनंता॥ मनमैंगलजो
मैमंता॥ दीपकजोतिरहै इकसंगा॥ नैननेह मनपरैपतंगा॥
सुषबिश्राम किन्ह नहिं पावा॥ पहरिसाच रूपादेषि धावा॥
लालचिलागे जनमसिरावा॥ अतिकालदिन आइतुरावा॥ जब
लगहै यकु निजतनसोई॥ तबलग चेतिनदेषैकोई॥ जबनि
करि जचलिकैरे पयांना॥ तयो अकाजतब फिरिपछितांना॥ मि
ग्रत्रिष्णांदिनहिनिडसी॥ अबमोहि कछुनसुहाइ॥ अनेकज
तंनकरि टारिये॥ कबीरकरं मपासिनहीं जाइ॥ पा॥ रेरेमनबु
धिवंतसंडारा॥ आपआपनांकरैबिचारा॥ कंवनसयांनकंव
नबौराई॥ कहिंसुषपईये कहिंदुषजाई॥ कवनदरिद्रको
बिषमैंजांनां॥ को अनहितको हितकरिमांनां॥ कंवनसारको
आहिअसारा॥ को अनहितको हितहिपियारा॥ कंवनसाच
कंवनहै रूवा॥ कंवनकरुकोलागैमीठा॥ किंहिं जरियै किंहि
कीजे अनंदा॥ कंवनमुक्तिको गलकेफंदा॥ रेरेमनमोहि बौ
रिकहि॥ कृतत्त तत्तु बौतोहि॥ संसेसूलसबै गई॥ कहिसमका
ईमोहि॥ पा॥ सुनिहंसा हकहै बिचारी॥ त्रिजुगजोनिसबैअं
धियारी॥ मंनिषाजनमउतिमजोपावा॥ जांनूंरांमतौसयांन
कहावा॥ नहींचेतैतौ जनमगमावा॥ तयो बिहांनतबफिरि
पछितावा॥ सुषकरमूलसगतिजोजांनैं॥ औरसबै दुषया
दिनआंनें॥ अंमृतकेवलरांमपियारा॥ औरसबैबिषकेभं
डारा॥ हरिषआहिजोरमियेरांमा॥ औरसबैबिसमांकेकांमा
सारआहिसंगतिनिरबांनां॥ औरसबैअसारकरिआंना॥ अ
नहितआहिसकलसंसारा॥ हितकरिजांनियेरांमपियारा॥

साचसोईजोथिरकरहाई॥ऊपजैबिनसैऊठिजाई॥कोमा
सोजोसहजैंपावा॥अतिकलेसतैंकस्टकहावा॥नांजरिये
नाकीजेमैंमेरा॥तहांअनंदजहांरांमनिहोरा॥मुकतिसो
ईजुआपापरजांनैं॥सोपदकहांजिहिंत्रमिस्तलांनैं॥ग्यान
नाथजगजीवनां॥दुलैंमरांमपियारा॥सुतसरीरधनप्र
हांजायरैंतरवरपंषिबिसियारा॥७॥रेजीवअपनांदुषनसंभा
रा॥जहिंदुषमांप्योसबसंसारा॥मायामोहझूठेयबलोई॥
कंचनतलासमांनिंकदोयोषोई॥मैंमेरीकरिषराबिगुता॥
जननीउदरिजनंमकासूता॥बहुतैंरूपभेषबहुकीनां॥जु
रामरंण॥क्रोधततनबीनां॥उपजैबिनसैजोनिफिराई॥सुषक
रमूलनपावैचाही॥दुषसंतापकलेसनबपावै॥सोनामिलै
जोनरतबुझावै॥जहिंहितजीवराषिहैभाई॥सोअनहित्तकै
जाइबिलाई॥मोरतोरकरिजरैअपारा॥मृगत्रिष्णांझूठीसं
सारा॥मायामोहझूठिरह्योलागी॥कासतयोइहांकाकैहैंआ
गी॥कछुकछुचेतिदेषिजीवअबही॥मनिषाजनमनपावैक
बही॥सारआहिजैसंगपियारा॥जबचेतैतबहीउजियारा॥
त्रिजकजोभिजेआहिअचेता॥मनिषाजनमभयोचितचेत
आतमसुरषिमुरछिजरिजाई॥पिछलेदुषकहतैंनसिराई॥
सोईत्रासजेजांनैंहंसा॥अजहूंजीवकिंनकरैसंतोसा॥भौसाग
रअतिवारनपारा॥तातिरिबेकाकरौबिचारा॥जहिंजनकूंआ
दिअतिनहीजांनियें॥ताकोडरकाहेनमांनियें॥कोबोहिथको
षेवटआही॥जिहिंतिरियेसोलीजेचाही॥संभकिबिचारिजीव
जबदेषा॥यहुसंसारसुपिंनकरिलेषा॥भईबुधिकछूग्याननि

नेडै दूरि कथ्यो नहीं जाई ॥ ताके चीन्हें प्रचा पावा ॥ नई संमकि ता
सूं ल्यो लावा ॥ साध संगति हित बो दिया ॥ सत गुर षेवं णहार ॥
अलप ग्रदि कत बजोणिं ॥ कबीर गोपद ष्युर बिसतार ॥ नार
ग्रंथ बडपदा लिष्यते ॥ राग सूहो ॥ नया दयाल बिसहर जरि ॥
जागा ॥ गहागहा न प्रेम ल्यो लागा ॥ नया आनंद जीव नये उल्हा
स ॥ मिले राम मनि पूरी आसा ॥ मासि असाढि रवि धरणि
जरावै ॥ जरत जरत जल आय बुझावै ॥ रुति के सुनाइ जमीस
बजागी ॥ अंमृत धार होइ झर लागी ॥ जिमी मांहि उगी हरियाई
बिरहनि पीव मिले जन जाई ॥ मनि कामनि के नये उछाह ॥
कारनि कौन बिसारी नाह ॥ षेलत म्हा राम रंन सयामोरा ॥
चौरासी लष की नां फेरा ॥ सेवग सुत जे होय अनियाई ॥ गुन
औगुन सब तुम हि समाई ॥ आपनै औगुन कहूं न पारा ॥
दूदै अनागा जे तुम्ह न संभारा ॥ दरबैं नहीं कायं तुम नाह ॥ तुं
म्ह बिछुरैं मैं बहु दुष चाह ॥ मेघ न बरषैं रंजा हिं उदास ॥ त
उ नसा गै सागर आस ॥ जल दरसैं तो ताहि न हीं नावै ॥ केसरि
जाइ कै उहे पिलावै ॥ मिलौ राम मनि पूरवौ आसा ॥ तुम्ह बिछु
र्यौं मैं सकल निरासा ॥ मैं र निरासी जब निधि पाई ॥ रांम नांमि
जीव जागि पा जाई ॥ नलनी के ज्यूं नीर अधारा ॥ पिंन बिछु र्यां ये
रवि प्रजारा ॥ राम बिनां जीव बहु दुष पावा ॥ मन पतंग ज्यूं
अधिक जरावा ॥ माघ मास रुति परै तुसारा ॥ नयो बसंत तब
बाग संसारा ॥ आपनैं रंगि सब कोई राता ॥ मधुकर बास लेहि
मैमंता ॥ बन को किला नाद गह गहांनां ॥ रुति बसंत सब के
मनि मांनां ॥ बिरहनि रजनी जुग जाइ तिसईया ॥ बिनि पीव मि
लैं कलपट लिगईया ॥ आत्म चेतिसं मकि जीव जाई ॥ बाजी

रांमनिधिपाई॥नयादयालनितिबाजैंबाजा॥सहजैंरांमनांम
नराजा॥जरतजरतजलपाईया॥सुखसागरकरमूला॥गुर
सादिकबीरकहि॥ताजीसंसैसूला॥१॥रांमनांमनिजप
सारा॥मिथ्यारूपसकलसंसारा॥हरिरततरांमैंजातिपतैंरा॥जबक
कहरिकैंजूसगा॥कंचिनकैसिपिनैंनिधिपाई॥नहींसीसाकूध
रौंलुकाई॥ढिंढैनसंमाइजांननहींपारा॥लागेलोमनन्बीरहका
रा॥संमिरतरूपनैंउनमांनां॥किंचितजोगरांममैजांनां॥सुष
साधकाजांनियेअसाधा॥किंचितजोगरांममेलाधा॥कुबज्या
होइअम्रतफलबंध्या॥पकम्योतबमंनिपूगीइछ्या॥नींरैतैं
दूरिदूरितैंनियरा॥रांमचरित्रनजांनियेंजीयरा॥सीतथैंअग्नि
फुंनिहोई॥रबिथैंससिससिथैरबिसोई॥सीतथैंअग्निप्रज
रई॥थलथैंनिधिनिधिथैथलकरई॥बज्रथैतिंणतिंणएसौर
रिहोई॥तिणथैंकुलसकैरपुनिसोई॥गिरवरछारछारगिर
होई॥अबगतिगतिजांनैंनहीकोई॥जहिंदरमंतिडोल्यौसं
सारा॥परेअसूकिवारनहीपारा॥बिषईमूतोकैकरिलीनां
जिनिचीन्हा॥तिनकौंसुषदीन्हा॥सुषदुषजहिंचीन्हिन
हीजांनां॥ग्रिसैकालसोगसूतिमांनां॥होइपतंगदीपमैंपर
ई॥झूवैस्वादिलागिजीवजरई॥करगहिदीपकप्रहिजुकूपा॥य
कअचिरजहंमदेषिअनूपा॥ग्यांनहीनवोछीमंतिबाधा॥सुषां
साधकरतिअसाधा॥दरसंनसांमिकछुसाधनहोई॥गुन
संमांनपूजियेसिधसोई॥लेषकहांजैबपिअसुधा॥बिंणिं
चेजुगबूडणिंबूडा॥जदपिरबिकहियेसुरआदी॥ऐसैरबिक
नांसुरचाहीं॥कबकैंकतासंनहोइजराई॥कबकुंअमेडध

रुपदेषा॥ ताकैंसैंह मूंढ क्यूं सुष पावै॥ दौरैं तास कूं सूल गमावै॥
अंत राज दिन दिनैं सु होई॥ दिवस सिराइ जनम गयें षोई॥
म्रतिकाल किं नहीं नहीं देषा॥ मायामोह धंन अगंम अले
षा॥ फुवै फूव रह्यौ उरझाई॥ सावं अलष कवूं लष्या न जाई॥
सा चेनी यरै फवै दूरी॥ बिष कौं कहैं संजीवंन मूरी॥ कथ्यौ न
जाइ नीयरै नहीं दूरी॥ सकल अंतर रह्यौ घट पूरी॥ जहां
देषौं तहां रांम समानां॥ तुम्ह बिनि गोरष और न हीं आंनां॥ ज
दपि रह्यौ सकल भर पूरी॥ तावबिनां अंगनि अंतरि दूरी॥ लो
नपाप दोकं जरैं निरासा॥ फवै फूव लागि रही आसा॥ जकुंवां
कै निन प्रगट बजावा॥ सुष संतोष तहां हंम पावा॥ निरंत
रि जस कीनां प्रकासा॥ पावक रहै जैसैं काष्ट निवासा॥ बिनां
जुगति कैसैं मथिया जाई॥ काष्टि पावक रह्यौ समाई॥ कष्टैक
ष्ट अग्नि प्रजरई॥ जोरैदा रंगं नि संमि करई॥ रांम कहैं तेरा भेदो
ई॥ दुषक लेस घासैस बषोई॥ जनम के कलि बिष जो हिं बितारे
नरंम करंम का कछू न बसाई॥ नरंम करंम दोकं बरतै लोई
इनका चरितन जानै कोई॥ इनि दोक संसार भुलावा॥ इनके
लागै ग्यांन गंवावा॥ इनकौ मरंम पैं कोई बिचारी॥ सदा अंनं
द लैलीन मुरारी॥ ग्यांन दिष्टि जे देषै लोई॥ इनका चरितन बुझ्यौ
नै सोई॥ रजनी रज देष तं अंधियारी॥ इसै नुयं गंमस बिनि उजि
यारी॥ तारै आगिनंत गुनहिं अथि कंइ पारा॥ तत्त कवूं नहीं तै
तअधारा॥ फवे देषि जावं अषिक डराई॥ बिनां स्नुयं गांम इसी
ह तियाई॥ फवै फूव लागि रही आसा॥ जेव मांस जैसैं कुरंगपि
यासा॥ त्रिषावंत दहिदिसि फिरि आवै॥ फूव हिलासा नीरन
पावै॥ ऐक त्रिषावंत अरु जारज राई॥ फवी आस ता गिमरिजा
ई॥ नां करतार जांनि सुह रिया॥ करंम के बांधे नाच चकरिया॥

हैंमोरकबुवाहिनयाहीं॥नरंमकरंमदोउमतिगावाई॥नरंमकर्मेदो
मेंतिउयहरिसा॥फ्रेनांवसाचलेधरिया॥रजनीगातमईरवि
रगासा॥नरंमकरंमदोउकेंरविनासा॥रविप्रकासतारेगं
नवीनाः॥आचारमोहारसबमेयेमलीनां॥बिषकेदाधेंबि
अनहींसावे॥जरतजरतसुषसागरपावे॥ज्ञानतरूगदिनधां
वैआसा॥अधदरांधसहैंउपत्रासा॥एकत्रिषावंतहूसेरेंवि
तवडीदहदिसिज्वालाचहुँदिसिजरई॥करिसेनमुषजब
ग्यांनबिचारी॥संनमुंषपरिया आगनिमंझारी॥गछतगछ
तजबआगेंआवा॥बिनउनमांनटबुवाएकपावा॥सीतलसर॥
रतबरहेसंमाई॥तहांबाटिकरतदाऊंजाई॥यौंबारूनिमनम
याहैंमारा॥दोधाडुमकलेससंसारा॥जरतफिरेंचौरासीलष॥
सुषकरिमूलनकिंनहींदेषा॥जाकेबाडेंमेंयेअनाथा॥सूलि
परेंपांवेंनहिंपंथा॥अछैआनिअंतरिनीयरेंदूरी॥बिंनची॥
हैकूपदहीमूरी॥जाबिनिहंसबकुलदुषपावा॥जरतजरत
गुरिंमामिलावा॥मिल्याअमरलोकसहजिसमाई॥षिनिबि
सुष्याजीयअधिकजराई॥जेमिलियातेकेंरेंबधाई॥प्रमानं
दैनिदिनगाई॥सषीसहेलीलीन्हबुलाई॥सुतिप्रमानंदते
टियेजाई॥सषीसहेलीकरेंअनंद॥हिलिकरिनेटियेप्रमानं
हीं॥चलीसषीजकंवांनिजधांमा॥नयेरूपाहैसबछोडकामा
जांनिकमोरेसरसबसंता॥मेंबलिजांवंतोरेंनगावंता॥नगमि
हैतिगावेंलेलीनां॥अ्नूबननादकोकिलाकीनां॥बाजेसंघ
बदधुंनिबीनां॥तनमनचितहरिगोबिंदलीनां॥चलअचल
पाइनमधुरनी॥मधुकरअंपलहिंआघरनी॥स्यावजसी
रहैसबमांची॥चेदसूररहेंरथपांची॥गंणगंधेमुनिजी
देना॥आरतिकरिकरिं॥

आसा। हंमकंचिरहु संतन रांमदासा। तगाविहे ति रांमगुणगावैं
सुरनरमुनि डुलंत पदपावें। पूंनें विमलसपिमां सबसंता। दर
संत जो ति मिले सारंता। चंदन बिलनों बरनों धारा। यों मूजि
येप्रांणपति रांम पियारा। सावसरातिमूजा अरसाती। आत्त
रांम मिले बकुं सांती। रंमरांम रंम रूचि मांनें। सदा आंनद रांम
लेजांनें। पाया सुषसागर कर मूला। सोसुष नहीं कहं सम
तूला। सुषसमाधि सुष नयादमारे। मिस्पान बेगरहेभ जहि
लागी सो जांणिहे। रांमकबीर औरन जांनें कोइ ॥५१॥ आंप्यस
तपद लिषते। राग...हैं। कहेंन संतनकों जहि जुगकीन्हां। जुगमु
लांनसो किं न कू न चीन्हां। सतरजतंम थें कीन्हीं माया। आप
णमधे आपलुकाया। तेतो आदि आंनंद सरूपा। रंमनपलव
बिसतार अनूपा। साषा त तथें कुसंम गियांनां। फलसो आ
छ्या रांमको नांमां। सदा अचेत चेति जीव पंषी। हरितरवरिक
रिबास। फूवै जगि जिनि मूलसी रेजायरा। कहेंन संतनकों अ
स ॥५॥ सूक बिषयकु जगात जपाया। संमकि तय रें बिषमतेरी
माया। साषा तीनि पत्र जुग च्यारी। फल दोइ पाप पुंनि अवि
कारी। स्वाद अनेक कथ्या नहीं जाहीं। कीया चरित्र सोइ नमें नां
। तेतो आहि निनार निरंजनां। आदि अंति नहीं आंन। कहेंन
संतनकों कीन्हें जुग। आपे आप सुलांन ॥५॥ जिंनि नटवैं नट
सारी साजी। जो षेलै सो दीसै बाजी। मो बपरें तैं जोगति धारी।
सोंबिरंचि नारद नहीं दांनी। आदि अंति मधि लीन सये हैं स
हजें जांनि संतोष रहें हैं। सहजें रांमनांम ल्पो लाइ। रांम रांम
कहि सगाति दिठाई। रांमनांम जाका मन मांनां। ति न तौ
निज सरूप पहिचांनां। निज सरूप निरंजनां। अपरंपा
र अपार। रांमनांम ल्पो लाइ सिजीयरे। जिंनि सूते बिसतां
र॥३॥

करिनिसतारजग धंधेलाया॥ अंधकायाथेंसुरिषउपाया॥
जिंहिजैसीमनसातिंहितैसानावा॥ ताकोंतैसाकीन्हउपाव
तेतौमायामोहमुलांनां॥ असंमरांमसोकिंनकंनजोनां॥ जि
हिंजांन्यांतेनिरमलअंगा॥ नहीजांन्यातेन्नयेभुवंगा॥ तामु
षिबिषआवैबिषजाई॥ तेबिषहीबिषमेंरहैसमाई॥ मांता
जगतमूतसुधिनांही॥ भ्रमिमूलिनरआवेजांही॥ जांनिबूझि
चेतैनहीअंधा॥ जवरकरमकांमकेफंदा॥ करमकीबांधौ॥
जीयरे॥ अहिंनिसिआवैजाय॥ मनिषादेहीपाइकरिहरिवि
सरैतौफिरिपीछेंपछितावा॥४॥ तौकरिसाधिचेतिजावंदा॥ त
जिभ्रकीतिनजिचरंनगोब्यंदा॥ कदकूपतजोयमवासा॥ रेजी
यरांमनांमअभ्यासा॥ जगजीवंनिजेसैलहरितरंगा॥ षिन
सुषकौंभूलसिबकंसंगा॥ भगतिहीनजीवंनकछुनांही॥ उ
तपतिप्रलैबकुरिसमांही॥ भगतिहीनअसाजीवनां॥ जनम
मरंनबकुकाल॥ आश्रमअनेककरिसिरेजीयरा॥ रांमबिनांको
ईनकरैप्रतिपाल॥५॥ सोईकपावककरिसूय हुदुभजाई पसब
प्रहरिविषेसगाई॥ मायामोहजरैजगआगी॥ तासंगिजरसिक
वंनरसिलागी॥ त्राहित्राहिकरिहरिनपुकारा॥ साधसंगतिमिलि
करउबिचारा॥ रेरेजीवनहीबिश्रांमा॥ सवदुषषंडणरांमका
नांमां॥ रांमनांमसंसारमेंसारा॥ रांमनांमभौतारणहारा॥ सुम्रित
बेदसबैसुणंणं॥ नहीआवैक्रितकाज॥ नहीजैसेंकुंडलवनंतमु
ष॥ नंकबिनिसेसिसिरराज॥ ६॥ अबगाहिरांमनांमअबिनासी॥
हरितजिजिंनिकतहूंकोंजासी॥ जांहांजायतहांनयापतंगा॥
अबजिंनिजरैसंमकिबिषसंगा॥ चोषारांमनांमलिलीनां॥ भ्र
गीकीटभावतसकीनां॥ नवसागरअतिवारनपारा॥ तातिरि

५ बेकाकरैकबिचारा॥ मनितावेअतिलहरिबिकारा॥ नदीगमि
सूझेकछुवारनपारा॥ सोसागरअतिअथाहजल॥ तामेंबोहिथ
नांवअधार॥ कहैकबीरहमरांमसरंनि॥ तातेंगोपदखुरबिस
तार॥ ७॥ ३॥ ग्रंथअष्टपदीलिष्यते॥ रागसूहो॥ कोईकोईती
रथबरतलपटांनां॥ कोऊकोऊकेवलरांमनिजजांनां॥ अज
राअमरकोकअस्थांनां॥ ताकामरंमकाहूबिरलैजांनां॥ जेनहिं
उपनांधरनिसरीरा॥ ताकेपंथिनसीच्यानीरा॥ जहांनहीलागै
सूरिजकेबांनां॥ सोमोहिआंनिदेहुकोईदांनां॥ जबनहींहोते
पवंननपांनीं॥ जबनहींहोतीसिष्टिउपांनी॥ जबनहींहोतेप्यं
डनबासा॥ जबनहिंहोताधरनिआकासा॥ जबनहिंहोतेग
रभनमूला॥ जबनहिंहोतेकलीनफूला॥ जबनहिंहोतेसबद
नस्वादं॥ जबनहिंहोतेबिद्यानबादं॥ जबनहिंहोतेगुरून
चेला॥ गमिअगमिपंथअकेला॥ अबगतिकीगतिकाकहूं
जसकरगांवंनगांवं॥ गुनबिहूंनाकापेषिये॥ काकरिधरिये
नांव॥ १॥ आदमआदिसुधिनहिंपाई॥ मंमांहवाकहांतैंआ
ई॥ जबनहिंहोतेरांमषुदाई॥ साषामूलआदिनहिंपाई॥
जबनहिंहोतेतुरकनहिंदू॥ माताकाउदरनपिताकाबिं
दू॥ जबनहिंहोतेगाइकसाई॥ तबयाहबिसमिलाकिनिफु
रमाई॥ भूलेफिरैंदीनदोइधांवैं॥ तासाहिबकापंथनपावैं॥ सं
जोगेकरिगुणधरया॥ बिजोगेगुणजाई॥ जिभ्यास्वारथिआप
णांकीजैबहुतउपाई॥ २॥ जिंनिकलमांकलिमांऊपगाया॥ कु
दरतिषोजतिनहूंनहिंपाया॥ करमकरीमभयेकरतूता॥ बे
दकुरांननभयेबेरांता॥ किरतंमसुनतिऔरजनेऊ॥ हिंदूतुरक
नजांनैंभेऊ॥ मनमसलेकीसुधिनजांनें॥ मतिभूलादैदीनब
किरतंमसोजगअंतिऔतरिया॥
किरतंमसोजनांवजसधरिया॥ ८

नै।पांणीपवनसंजोइकरि।करिलीनीउतपाति।सोनिहि
बदसमाइ॥तबकाकहियेकुलजाति॥आतुरकीधर्मबकं
हेमसोधा।बकबजगारकैरोबोधा॥गाफिलगारबकैंअधि
काई।स्वारथिअरथिबधैंगाई।जाकोदूधदूहकैंपीजै॥ता
तांकूंनषकूंकीजै॥लककैरेषकैंउहियायायारी।ताकाअब
तमसबैंसरारी।बेअकलीअकलिनजांणंहीं।भूलेफिरैंएलोई
दिलदरियादीदारबिनि।निस्तिकहांथेंहोइ॥आपंडितभूले
पटिगुणिबेदा।आपउपावैंनानाभेदा।संध्यात्रपंनअरुषटकरमा
लागिरहेइनिकेआश्रमा॥गायत्रीजुगचारिपढाई।पूछौजाइमु
क्तिकिंनिपाई।सबमैंरामरहेलेसा।चा इनतैंऔरकहौकोनांचा
अतिगुनअवकैंअधिकाई।अधिकैअबिनहोइभलाई।जा
कोगकुरअबप्रहारै।सोकैसेंअबसहैसहारै॥कुलअभिमा
नबिचारतजि।षोजोपदनिरबांन॥अंकूरबीजनसाइगा॥
तबमिलेबदेहीयांन॥५॥षत्रीकरैंषत्रियाधरमा।ताकोहै
दूसवायाकरमा।जीवहिमारिजीवप्रतिपारैं।देषतजनमम
आपनोंहारैं।पंचसुभावजुमेटैकाया।सबतजिकरमैंजेराम
राया॥षत्रीसोजकुटंबसोंझूझै।पंचोंमारिएककोंबूझै।एअ
वधगुरगंमिलषावा।गहिकरवालधूपधरिधावा॥हेला
करैनिसांनांघाऊ।झूझपरैंतहांमनमथराऊ।मनमथमरै
नजीवई।जीवंनमरंननहीहोइ॥सुंनिसनेहीरामबिनिगंग
येअपनयोषोइ।हाअरभूलेषटदरसननाई।पाषंडभेषरहे
लपटाई॥जैनबोधअरुसाकतसैंनां।चारबाकचतुरंगाबि
हूंनां।जैननीवकीसुधिनजांनैं।पातीतोरिदेहुरैंआनैं।दूनोंम
रवाचंपकफूला।तामैंजीवबसैंकरतूला।अरुपृथिमीकारो
क
मउपारै।देषतजीवकोटि

८७

रारा॥ कहैं रैलपतबंद घसै तहिं द्वारा॥ तिनकौं हस्या केश्रदत्त
ता॥ षटदरसननमें जैन बिगूत्ता॥ ग्यान अमरपद बाहिरा॥ नी
रादी तैं दूरि॥ जिनि जान्यां तिनि निकटि है॥ रह्या सकल तरपू
रि॥३॥ आपन करता नयो कुलाला॥ बहु बिधि सिष्टि रची द
रहाला॥ बिधनां कुंभ कीये द्वै थाना॥ प्रिति बंब तामांहिं समा
नां॥ जगर आग्नि दीनां प्रजारी॥ ताम हि आप करी प्रतिपारी॥
भीतर थैं जब बाहरि आवा॥ स्यो सक्ती देनांव धरावा॥ तूलै
अभिं परैं जिनि कोई॥ हींदू तुरक कछु कुल दोई॥ घर का सुत
जे होय अयांनां॥ ताकै संगि क्यों जाय सयांनां॥ साची बात कहै
जे वासूं॥ सो फिरि कहै दिवांनां तासूं॥ गोपि भिंनि है ये के इधा॥
का सू कहिये बांन नसूदा॥ जिनि यह चित्र बणईया॥ सो सा
चा सुत्रधार॥ कहै कबीर ते जन भले॥ चित्रवंत लेहिं बिचारि॥०
॥४॥ ग्रंथ बारह पदी लिषते॥ राग सूहो॥ पहला मनमें सुमिरौं
सोई॥ जा सम तुलि और नहीं कोई॥ कोई न पूजे वासूं प्रांनां॥
आदि अंति वौ किनहूं न जांनां॥ रूप अरूप न आवै बोला हरू
गरू कछू जाइ न तोला॥ भूष न त्रिषा धूप नहीं छांहीं॥ सुष दु
ष रहति रहै सब मांहीं॥ अबगति अपरंपार ब्रह्म॥ ग्यानरूप
॥ बहुत बिचार करि देषिया॥ कोई न सारिष रां
म॥१॥ जो त्रिभुवनपति वौ है ऐसा॥ ताका रूप कहौ धौं कैसा॥
सेवग भजन सेवा कै तांई॥ बहुत भांति करि सेवग सांई॥ तैसी
सेवा चाहै लाई॥ जा सेवा बिनि रह्यौ न जाई॥ सेव करंता जो
दुष पाई॥ सो दुष सुष बरि गिणहु सवाई॥ सेव करंता सो सु
ष पावा॥ तिंनि सुष दुष दोऊ बिसरावा॥ सेवग सेव भुलांनि
यां॥ पंथ कुपंथ न जांन॥ सेवग सो सेवा करै॥ जहिं सांई भ
लमांन॥२॥ जहिं जग कीता सकीतस के हौ॥ आपे आप भ्र

(ही)॥कोईनजांनैंवाकाभेवु॥भेऊहोइतौपावकै ॥
नैंश्रागैंनपाछू॥श्ररधनऊरधनरूपनहीकोवू॥माईनबाप
णनहिजावा॥जांवहिंजाणंनवहिकोजावा॥वोहैतैसावोहा
नै॥वोहीश्राहिश्राहिनहिश्रानै॥नैनावैनश्रगोचरी श्रवना
रनोपार॥वोलणकासुषकारणैं॥कवीरकहियेसिरजनहा
ऊ॥सिरजेनहारनोवधूतेरा भवसागरतिरिवेकोभेरा जे
क्तेरारांमनकरता॥तौश्रापैश्रापश्रावटिजगमरता॥रांम
गुसांईमेहरिजकीन्हौ भेरासाजिसंताकोदीन्हौ॥दुषषंडण
महमंडण॥सगतिमुक्तिविश्रांम॥विधिकरिभेरासाजिया
धस्यारांमकौनांम॥४॥जिनियकभेरादृढकरिगहिया॥ग
येपारतिनहींसुषलहिया॥ऊमवांकैजिनिचितहुलावा॥
करछिटकेथेंपाहैपावा॥येकडुविरहेतरवारा॥तेऊगिजर
नरायघहारा॥रांमणहारेकौकछूजुगतिनकीन्हौ॥रांमणमहा
नपायाचीन्हौ॥जिनिचीन्ह्यातेनिमलश्राया॥जेश्रचीन्हतेनय
पतंगा॥रांमनांमल्योलाइकरि चितचेतनिहैजागा कहैकवी
रतेकबरे॥जेरहैरांमल्योलागि ५ श्रचयतश्रवगतिहैनिधारा
जांणंजाइनवारनपारा॥लोकवेदथेंश्रांछैनियारा॥छाडिर
ह्योसवहीसंसारा॥जसकरगावनगावनधरा केसैंगुनबर
नौमैंतेरा॥नहींतहांरूपरेषगुनवांनी॥श्रैसासाहिबहैश्रकु
लांना॥नांसोज्ञानविधनहीवारा॥श्रापैश्रापश्रापनपौतार
कहैकबीरबिचारिकरि जिनिकोईलावौतंग॥सेवासनमन
लाइकरिरांमरह्यासरबंग॥६॥नहीसोदूरिनहीसोनीयरा॥
हीसोतातानहीसोसीयरा॥पुरिषननारिकरैनहीकीरा॥स
मनथांमनश्रापेपीरा नदीननाव धरेंतिनहीधीरा॥नहं

१७

रारा॥ कहैं रैलपत अंद धसैं तहिं द्वारा॥ तिनकों हस्या के अदनू
ता॥ षट दरसन में जैन बिगूता॥ ग्यान अमरपद बाहिरा॥ नी
रादी तैं दूरि॥ जिनि जान्यां तिनि निकट है रह्या सकल तरपू
रि॥७॥ आपन करता तयो कुलाला॥ बहु बिधि सिष्टि रची द
रहाला॥ बिधनां कुंसत कीये दे थांनां॥ प्रितिबिंब तामांहिं समां
नां॥ जठर अग्नि दीनां प्रजारी॥४॥ तामहिं आप करी प्रतिपार
नीतर थैं जब बाहरि आवा॥ स्यो सक्ती दे नांव धरावा॥ तले
अमिं परैं जिनि कोई॥ हीं दूतुरक कहूं कुल दोई॥ घर का सुत
जे होय अयांनां॥ ताके संगि क्यों जाय सयांनां॥ साची बात कहै
जे वासूं॥ सो फिरि कहै दिवांनां तासूं॥ गोप्य भिंनि है ये के हथा
का सूं कहिये बांनन सूदा॥ जिनि यहु चित्र बणईया सो सा
चा सूत्रधार॥ कहै कबीर ते जन तले॥ चेरत वहते लेहिं बिचारि॥८
॥७१॥ ग्रंथ बारा हृ ग दी लिषते॥ राग सूहै॥ पहला मन में सुमिरै
सोई॥ जा सं मितु लि और न हीं कोई॥ कोई न हूजे वासूं प्रांनां॥
आदि अंति वौ किंन हूं न जांनां॥ रूप अरूप न आवै बोला हरू
गरू कछू जाइ न तोला॥ भूष न त्रिषा धूप नहीं छांहीं॥ सुष
ष रहति रहै सब मांहीं॥ अबगति अपरंपार ब्रह्म॥ ग्यान रूप
सब ठाम॥ बहु त बिचार करि देषिया॥ तो कोई न सारिष रां
म॥१॥ जो त्रिभुवन पति वोहै असा॥ ताका रूप कहौ धौं कैसा॥
सेवग जन सेवा कै तांई॥ बहुत भांति करि सेवगु सांई॥
सेवा चाहै सांई॥ जा सेवा बिनि रह्यो न जाई॥ सेव करंतां जो
दुष सांई॥ सो दुष सुष बरि गिणहु सवाई॥ सेव करंतां सो सु
ष पावा॥ तिंनि सुष दुष दोऊ बिसरावा॥ सेवग सेव भु
लां पंथ कुं पंथ न जांन॥ सेवग सो सेवा करै॥ जं हिं सांई भव
त समांन॥ २॥ जहिं जग कीन्हां सकीन्हां के हो॥ आपे आप

थिहे।हे॥कोईनजांनैंवाकाभेवु॥ सेउहोइतौपावैकेउ॥ वांवैंन
दाहिंनैंआगैंनपाछू॥ अरधनऊरधनरूपनहींकीछू॥ माईनबाप
आंवंणनहिंजांवां॥ जांवंहिंजणंनवंहिंकोजावां॥ वोहैतैसावोही
जांनैं॥ वोहीआहिआहिनहिंआंनैं॥ नैंनांवैंनअगोचरी॥ अवंनां
करनांपार॥ बोलंणकासुषकारणें॥ कबीरकहियेसिरजनहा
र॥४॥ सिरजंनहारनांवधूंतेरा॥ भवसागरतिरिवेकौंबेरा॥ जे
यहुबेरारांमनकरता॥ तौआपेआपआवटिजगमरता॥ रांम
गुसांईमेहरिजकीन्हां॥ बेरासाजिसंतांकौंदीन्हां॥ दुषषंडण
महमंडणां॥ भगतिमुक्तिबिश्रांम॥ बिधिकरिबेरासाजिया
धस्यारांमकोनांम॥५॥ जिनियहुबेरादिढकरिगहिया॥ ग
येपारतिनहींसुषलहिया॥ दुमनांकैजिनिचितडुलावां॥
करछिटकेथैंथाहनपावा॥ एकडूबिरहेउरवारां॥ तेजगिजरे
नराषणहारां॥ राषणहारेकौकबूझा॥ तिनकौंन्हां॥ रांमंण म्हार
नपायाचीन्हां॥ जिनिचीन्हांतेनिरमलअंगा॥ जेअचीन्हतेभये
पतंगा॥ रांमनांमल्योलाइकरि॥ चितचेतनिकैजागि॥ कहैकबी
रतेऊबरे॥ जेरहेरांमल्योलागि॥६॥ अंचेतनअवगतिहैनिधारां॥
जांणंजाइनवारनपारां॥ लोकवेदथैंआछैनियारां॥ छाडिर
ह्योसबहीसंसारां॥ जसकरगांवंनगांवंनषेरा॥ कैसैंगुनबर
नौंमैंतेरा॥ नहींतहांरूपरेषगुरबांनां॥ ऐसासाहिबहैअकु
लांनां॥ नांसोज्वांनब्रिधनहींबारां॥ आपेआपआपनपोतारं
कहैकबीरबिचारिकरि॥ जिनिकोइलावौसंग॥ सेवौतनमन
लाइकरि॥ रांमरह्यासरबंग॥७॥ ना॥ नहींसोदूरिनहींसोनीयरा॥ न
हीसोतातानहींसोसीयरा॥ पुरिषननारिकरैनहींकीरा॥ घां
मनघांमनआपेपीरा॥ नदीननावधरंतिनहींधारा॥ नहींसै

काचनहीसोहीरा॥कहेकबीरबिचारिकरि॥तासूंलावैहेत॥।
बरंणबिबर्जितकेरह्या॥नांसोस्यांमनसेत॥७॥नांवोहबारह
ब्याहबरात्ता॥नीतपितंबरस्यांमनराता॥तीरथबरतनआवे
जाता॥मखनहीमूलिबचंननहीबाता॥नादनबिंदगरंथनहीं
गाथा॥पवंननपांणीसंगनसाथा॥कहेकबीरबिचारिकरि
ताकेआथिननांहि॥सोसाहिबकिंनसेईये॥जाकेधूपनछां
हि॥८॥तासाहिबकेलागऊसाथा॥दुषसुषमेटिरह्योवोहनाथा
नांजसरथघरिऔतरिआवा॥नांलंकाकारावंणसंतावा॥देवा
कीकूषिनऔतरिआवा॥नांजसवेलेगोदषिलावा॥बाकंनही
डूनहीबलिछलिया॥धरणीदंतलेनउधरिया॥गंडुकसालिग
रांमनकेला॥मछकछहेजलांहनडोला॥बारामंतीसरीरनबा
ड्या॥जंगंनाथलेपिंडनगाड्या॥नांवनिगोवरधंनकरधरिया॥
नांवोहग्वाराननिकेसंगिफिरियां॥बद्रीबेसिनध्यांनधरयवा॥प
सरांमह्वैषत्रीनसंतावा॥कहैकबीरबिचारिकरि॥येवेला
ब्योहार॥याहीथेजोअगमहे॥सोबरतरह्यासंसार॥९॥नांत
हिंसबदनस्वादनसोहा॥नांतहिंमाइनहीताहीमोहा॥नांतहिंसा
सरूसरनहीसारा॥नांतहिंरोजनरोवणहारा॥नांतहिंसूतिगपा
॥नांतहिंमाइनदेवनप्यापिग॥नांतहिंब्रिधिबधा
वाबाजे॥नांतहिंगीतनादनहीसाजे॥नांतहिंजातिपांतिकुलली
का॥नांतहिंछोतिपवित्रनसींचा॥कहेकबीरबिचारिकरि॥
वोहैपदनिरबांनसतिलेमनतहांराषिये॥जहांनदूजोआंन॥
१०॥नांसोआवेनांसोजाइ॥ताकेबंधपितानहीमाइ॥चारबि
चारकछुनहिंवाके॥कंनमंनिलागिरहीजेताके॥कोहेआदिक
वनकाकहिये॥कवनरहणीवाकाकेरहिये॥कहेकबीरबि

हमालनीरइंद्रआस्वारथिसबकीया॥बांध्यात्रमसरीर॥३॥ऐकै
पवंनऐकहीपांनी॥करीरसोईन्यारीजांनी॥मीठीस्युंलेमांटीपो
ती॥कहोकहांधोंलागी॥छोती॥धरतीलीपिपवित्रस्यंकीनी॥
छोतीउपाइलीकबिचिदीनी॥याकाहंमस्यूंकहोबिचारा॥४
क्यूंतोतिरिहौ॥श्रेहिआचारा॥करिआचारत्रजीवसंतावा॥
नांवबिनांसंतोषनपावा॥सालिगरामसिलाकरिपूजा॥तुरसी
तोरितऐनरदूजा॥ऐपाषंडजीवकेभरमां॥मांनिअमांनिजीव
केकरमां॥साचांसीलकाचौकादीजे॥नांवभगतिकरिसेवा
कीजे॥नांवभगतिकीसेवामांगै॥सतगुरकहेप्रगटनहींखांगै
खेनसेउपजीनभउहराई॥परकीरतिमिलिमनिनसमाई
जबलगनांवभगतिनहींकरिहै॥तबलगभवसागरनहितिरि
रिहै॥नांवभगतिबिसवासबिनि॥कटैनसंसैसूल॥कहैकबीर
हरिभगतिबिनि॥मुक्तिनहीरेमूलि॥४॥६॥ग्रंथयककागहगरा
लिख्यते॥तूसकलगहगरा॥सफसफादिलदारदीदार॥तेरी
कुदरतिकिनहूंनजांनी॥पीरमुरीदकाजीमुसलमांनी॥देव
देवांणगंध्रपब्रह्माइंद्रमहेस॥तेरागतितिनहूंनजांनी॥१॥
काजीसोजोकायाबिचारै॥तेलदीपबिनिबातीजारै॥तेलदी
पमैंबातीरहै॥जोतिचीन्हिकबीरकाजीकहै॥२॥मुलनांबांगदेइ
सुरजांनी॥आपमुसलाबैठेतांनी॥आपनमैंजोकरैनिवाजा
सोमुलनांसरबतरिगाजा॥३॥सेषसहजमैंमहलउगावा॥
चंदसूरबिचितारीलावा॥अरधउरधबिचिआनितारा
सोईसेषतिहूंलोकपियारा॥४॥जंगमजोतिबिचारैजंगम
जीवसावदोउऐकैकैवा॥जिंचितचेतनिकरिपूजालावा
तेतौजंगमनांवकहावा॥५॥जोगीभसमकरैभैमारी॥सहेली

गहेबिचारिबिचारि॥ अनंतेघटप्रचासूं बोले॥ सोजोगीनिहंच
लकदेनडोले॥ ६॥ जेनजीवकाकरेकबिचारा॥ कोणजीवका
रूपअधारा॥ कहांनेसेचोरासीकादेवा॥ लहेमुक्तिजोजोएसे
७॥ भगत्तातिरणमेतेसंसारी॥ तिरणतत्तकोंलेकबिचारि॥
प्रीतिजांनिरांमजोकहे॥ दासनांमसोभगत्तालहे॥ ८॥ पंडित
च्यारिबेदगुणगावे॥ आदिअंतिकाभूतकहावे॥ उतपति
प्रलेकहेबिचारी॥ संसाधालेसबेनिवारी॥ ९॥ अरधकउर
कयेसंन्यासी॥ तेसबलागिरहेअबिनासी॥ अजरांवरकों
टकरिगहे॥ सोईअकहपुरिसकोंलहे॥ १०॥ जहिंधरचालर
असंडा॥ प्रिथमीमारिकरीनोषंडा॥ अबगतिकीगति
जाईदासकबीरअगहरांमसेंप्रीरहेरांमल्योलाई॥ ११॥ ७॥
कबीरजीकासतबारअंथलिष्यंते॥ बारबारहरिकागुनगावे॥ ग्र
रांमिलेसहरकापावे॥ टेक॥ आदितकरेभगतिआरंभ॥ कायामं
दिरमनसाथंभ॥ अषंडअहिनिसिसुरष्योजाय॥ अनहदबेनिस
जमेंबाइ॥ १॥ सोमवारससिअम्रतझरे॥ चापततबेलिसबेबिसतरे
बांणीरोक्योरहे पार॥ मनमतिवालापीवेनहार॥ २॥ मंगलवा
लेमांहीतिपंचलोककीछाडकरीलि॥ घरछोडेजिनिबाहर
यान दिजेतोषरोरिसावेराय॥ ३॥ बुधवारकरिबुधिप्रकासहि
दाकंवलमेंहरिकोंबास॥ गुरगमिदोउयेकसमिकरे॥ उरध
कलेसूधाधरे॥ ४॥ ब्रिसपतिबिषियादेयबहाइ॥ तीनि
संगिलाइ॥ तीनिनंदीत्तहांत्रिकुटीमांहि॥ कुसमलधोवेअ
निसन्हाहि॥ ५॥ सुक्रसूधालेअहिब्रतचढे॥ अहिनिसिआ
आपसंलडे॥ सुरषापंचराषियेसबे॥ तोदूजादिष्टिनपेसेकबे
॥ ६॥ थावरथिरिकरिघटमेंसोइ॥ जोतिदीवटीमेल्हीजोय॥

२०१ चोरी पाचूजीत्तिरामल्योलावे सोजनजो निप्रेमपदपावे १७ त
पबलबकुरत्रअकूलेवोटा एकूचिन सकयोबा चिहीत्यटा साधन
साधत्तबटेअहंकारा सोसागरेबिचिफूलेहिंधारा १८ बूडे
बकुतपरायेसारे रामबिनाकोपारउतारे अंधअचेतकूप
पडि·मूवा बिषेबिसारिनसदागतिहूवा १९ सदगत्तिसाध
सारबिणिनांही जहिंथिररामबसेघटमाही मांहीबसतहो
यउजियारा भ्रमकर्मकाटूटेहिंतारा २० तालाटूटेहिंतबेस
चहोई अकलपरहत्तबिघनन्हीकोई धीरजधरेंप्रेमल्यो
लावे रामरंभैसोरामसमावे २१ हरिकेनांयप्रीतिजेलागो आ
वागवणमिटे तो तागो मनकाबिषेबिकारनजांही स्वारथसा
राधरेक लुनांही २२ नाटिकचेटकसांगकहाया हरिबिनिम
कलकालिकलिषाया जंत्रमंत्रपढिवोषदिमूला उद्धरपावक
रेहरिमूला २३ पायासकत्तबहलकीमाया कर्मकरत्तहरिचि
त्तिनहीआया अेसीसकत्तिसबेबसिकीया स्योसंकरबसा
बसिकीया २४ देषिसरूपमोहनीमाया त्रिभुवनपत्तिमादि
माया जीवतजीवनबंच्याकोई आसापासिबंधि
२५ उबस्याकोईदासनिरासा ताकाचित्तहरिचर
हमजीवनकीकोणचलावे ज्यूजलमांहिबुदबु
दादिषावे २६ बिनसत्तबेगिनलावेबारा सजेनरामकरेअ
हिंकारा चोरासीआवभजनन्हीकीया तनधरिकहा
कीयोधिगजीया २७ नाडीहीणपडेतनषीना रामकथा
सुमिरणनहीकीन्हा अेसारामनामततसारा तातजित्तभि
पड्यासंसारा २८ जबलगजगतिभकतिकीआसा तबलग
हरिसूनांहिबेसासा प्रजापातीदेईदेवा रामबिनासबझूठी
सेवा २९ येकषटकर्मपाकआचारी हरिबिनिबहेतबि

पुचे नरी॥ पारब्रह्मका तजि बिसवासा॥ मृत्यापुं निजातकी आसा॥ २० आपणमें रे और जिवांवें॥ बिनिं औषदि बडे बेद कहांवें॥ करणी कथणी पंन आचारा॥ राम म्हाखिपद के नस्यून्यारा॥ २१॥ तब स्याडब ध्यास्यू जन न्यारा॥ जिंनिंजानि केवल राम संम्हारा॥ औसा राम अकल असेवा॥ ताकी करिजानें कोई जन सेवा॥ २२॥ सेवग सोज सहजि हरि सेवें॥ मन कूं यक डि पेम रस त्ते वें॥ निस दिन आपनें जीया धारें॥ जन जीवन आपनों न बिसारें॥ २३॥ बिसनों सो जो प्रम बिसवासी॥ रहे निरंस परे न ल्हा यासी॥ यनि सोई साध जपाचे सो साधे॥ जंकें सासो तजि अबगति आराधे॥ रि धा पंडित सो जो पद हिबिचारें॥ आहि निसि ब्रह्म अगिन प्रजारें॥ बकता बेद नेद जो सो धे॥ निरामबिचारि अरांम औरे धे॥ २५॥ ताकी प्रीति तत हिं बनि आवै॥ जहिं घरि स्वरति ता हीं पु रि जाई॥ नमत त्रम स्यूं न्यारा हो ई॥ पारब्रह्म गति जानें सो ई॥ २६॥ जब लग आपनों घट नहीं सोधो॥ तब लग गति मुकति कों षोजे॥ जब लग घर तजि बाहरि जाई॥ तब लग दास नरां म हि पाई॥ २७॥ जब लग त्रकस्तुरग की आसा॥ जब लग हरि स्यूं नाहिं बेसासा॥ जब लग राग दोष जीय मांनें॥ तब लग जन नहीं राम पिछांनें॥ २८॥ राम रमें सो राम समावें॥ आपनों आप आपहि ष्यावें॥ आसा अकल सकल भ्रमाया॥ आपनां तें दिन देय रेना या॥ २९॥ अंतरि आप निरंतर रिछाया॥ इतनत कहे त न किं न हूं न पाया॥ जहिं जनि राम आस तजि गायो॥ ताको दि ष्टि प्रेम पद आयो॥ ३०॥ निज जन तनो वे निरस संम्हारें॥ लील पद निरबांण बिचारें॥ तासा द्विकका प्रगट पसारा॥ गोंदे चल तन मिले अपारा॥ ३१॥ इब ध्या धेरे ॥ स्तु रोस

२.

बदसूतिकरिजांनें ॥ धंनिसोईसाधजुरांमउपासी ॥ हरिसूंमि
लिजुगसाधउदासी ॥ ४२ ॥ ताकैंचरंनिसरंनिजोरहेये ॥ तोअ
नेअमोलिकहरिफलपईये ॥ जबलगसाधसमागमनांही ॥
करमउपायकेरकछुमांही ॥ ४३ ॥ साधसबदसूंतालाषू
टें ॥ आवागवंणतरंमसबछूटे ॥ आवागवंणमिटेसबपोवे
गरसवासिफिरिबकुंरिनआवे ॥ ४४ ॥ ऐसारांमअलष
अबिनासी ॥ ताकादासपरेक्यूंपासी ॥ हरिदरियामेंमुक
ताफ्लै ॥ रांमसुमरिदुबधाअघपेलै ॥ ४५ ॥ दुबधाधरेसु
रांमनपावे ॥ योंहीफिरिफिरिजनमगमावे ॥ काहूकेमनि
केसीआई ॥ मोहिअमगुरिदेवबताई ॥ परमातमजुत
तबिचारे ॥ कहेकबीरताकेबलिहारे ॥ ४६ ॥ १० ॥ ग्रंथ
बोधदादूसरी लिषंते ॥ जांमणमरंणमहादुषतारी ॥ हरिसंमि
रणयेमिटैबिकारी ॥ साधसंगतिजेयकंमनलावे ॥ ताकूंब
कुरिनबिषैसंतावे ॥ १ ॥ साधसंगतिकीकंचीकला ॥ बलबि
नसेकैनिरला ॥ निरबलकाबलकष्यानजाई ॥ अबलका
लवाकूंनहींषाई ॥ ४ ॥ कांमकष्टतिनिहींअजास्या ॥ जिनि
हिरदैहरिनांवबिचास्या ॥ नांवबिचारअमोलहैं ॥ सुणिसं
तचित्तलाइ ॥ जांणिअजांणिजोहरिभजै ॥ त्रिफलकदेन
जाय ॥ ३ ॥ १ ॥ जोजनहरिकीसेवालागो ॥ दुषमिटैभ्रमसब
हीभागो ॥ नांवप्रतीतिधरेमनमांही ॥ तेनरकबकुंनआवे
जांही ॥ २ ॥ रांमनांमकंचानीसांणं ॥ हरिकूंजांणेसंतसया
णं ॥ क्रिपणवांकूंकदेनदेषे ॥ लागिरह्यामायाकेलेषे ॥ ३ ॥
मायालेदीन्हांहैजाई ॥ भ्रमिभूलेजांमैंमरिजाई ॥ जांमैंमरै
महादुषपावे ॥ मूरिषअजहूंनरांमेध्यावे ॥ ३ ॥ मूरिषअज

तेहिंसदाअबूफेअपान॥लोभमोहिकबोलसकै
रछाडआअभिमान॥४॥अयेअभिमानबसदाउपदेवैं हीन
॥यास्यूंकबकुनहोइमनलाई॥येप्रहरिजेहरिस्यूंलागै
हीतैयेसंसामागै॥२॥हरिदेदीनबंधसुषदाई॥मातापि
कोइगिणैनमाई॥पुत्रदारावाकेकछुनांही॥प्रेमनां
वाकेमनमांही॥असाचासंतकीसेवामानै॥रामकेहरा
ताकूंजानै॥पत्रीबांलणकछुनलेषै॥हरिस्युंमिरहेहरि
ताकूंदेषै॥३॥हरिअगंमअगाध॥पूहै॥निरकारहैसोअसा
नकेसंगिरहै॥न्याराकबकुनहोय॥४॥३॥असैसाहरिकीपु
बलमाया॥जोजगसयास्युंनहीपाया॥जिनिसिरज्यातांकूं
जांणेंनांही॥तूंलिरह्योजहांकातहीही॥मायाबंधनलेसबलो
णै॥सूतेसदाकबकुनहीजागै॥५॥साधमिलेजबपानबषाणै
हेमकंचेमनिअैसीआणै॥असैसानीचपरमजगमांही॥अप
णाणिकूंजाणेंनांही॥२॥कंचनीचबंधोसंसार॥हरिजन
हरिकेप्राणअधार॥नअपुत्रघरिसंपतिआगै॥असैमेरेसं
तसुषदाई॥१॥कंचनीचसबउधरे॥जेलागेहरिनांमि॥कबी
रमूरिषमरमनजाणही॥तूंलिरहेबेकांमि॥६॥४॥१२॥ ॥
॥अगाधबोधलिषते॥अथधूंअसापानकथोरे॥जाकोबूझेवि
रलाकोई॥ब्रह्माविष्णकुंमेरपुलिंदा॥ईसनजाणेसोई॥१॥उत्त
रदिषणपूरबपछिमा॥च्यारिचककरैमेला॥चौदालोकजीवि
गउरगामितें॥करैंब्रह्मस्यूंमेला॥२॥पेसिपयालियेसकूंनाये
दसबारापरिमेल्हो॥बेकुंटांस्यूंगारउहकालो॥असैसारांमतिषे
॥३॥राजापरिजाजुगास्यूंकाढो॥सूरतेतासोमारो॥वेदअस
ररसातसिपेलो॥करबिनिअबरफाडो॥४॥छाडोच्यारि

चारिअवतजि ॥ नौसूं नेह न बांधौं ॥ सौगावली परिधान
धारौं ॥ सुरति सिंगनि कूं सांधौं ॥ ५ ॥ सीघलदीप चलाउं मैं
चरां ॥ आंणि उकसैं बासं ॥ नौं नाथ चौरासी सिधा ॥ तिनतें
आगम निवास ॥ ६ ॥ कांजी मुलां पीर अवलिया ॥ मुनियर के
टि अठ्यासी ॥ वोह घर सुं निसकल तैं न्यारा ॥ अकल पुरिस
अविनासी ॥ ७ ॥ निराकार के परचै षेलौं ॥ अबिहड पद आ
राधौं ॥ देव देहुरा ताहूं तैं बिबर्जित ॥ असी सेवा साधौं ॥ ८ ॥ सा
यर सात ह जिन्हा सोषौं ॥ मेर सिषर कूं ढाहौं ॥ काली कंनधो ह
बिनि पांनी ॥ रस बिधि रंग चढाऊं ॥ ९ ॥ च्यारि बेद ब्याकरण
सासत्र ॥ अष्टादस पुराणां ॥ चौदा बिद्या सनिसबद मैं ॥ अपह
आंणि समांणां ॥ १० ॥ नौसै नदी कूप मैं बासौं ॥ चौंसठि जोगणि डा
हौं ॥ निरमल नीर जुगति करि राषौं ॥ बावन बीर हियां कै ॥ ११
अहद संण थांण वे पाषंड ॥ कोई न जांणै मरमां ॥ सहज सुभा
इ रांम गुण रमतां ॥ आयौ बैगो ता घर मां ॥ १२ ॥ सगज नालि उपा
डौं जड तैं ॥ आंणि अनत मैं रोपौं ॥ दास कबीर बिचारे असी अ
हिं बिधि प्रांण समोषौं ॥ १३ ॥ १२ ॥ अथ श्री गोरषनाथजी की स
बदी ॥ ग्रंथ ॥ १ ॥ श्री ॥ ॥ रांम निरंजन गुरगोबिंद ॥ अविनासी हरि
आनंद ॥ श्री निरंजनाय नमः ॥ सबदी गोरषनाथ जी कौ लिष्य
ते ॥ बस्ती न सुंनं सुंन्यं न बस्ती ॥ अगम अगोचर असा ॥ गगन
सिषर महिं बालिक बोलै ताका नांव धरौगे कैसा ॥ १ ॥ अदेषि
देषिबा देषि बिचारिबा ॥ अदिष्टि राषिबा चीया ॥ पाताल की गंगा
ब्रह्मंड चढाइबा ॥ तहां बिमल जल पीया ॥ २ ॥ यहां ही आछै
हांसी अलोप ॥ यहां हीं रचिले तीनि त्रिलोक ॥ आछै संगोर दै
जुवा ॥ ताकारणि अनंत सिधा जोगेस्वर हूवा ॥ ३ ॥ बेद कतेब

रब ढंकी तलि श्रांणी ॥ गिगनि सिषर चढि स
हो श्रूफों अलष बिनांणी ॥ ४ ॥ अलष बिनांणी
लै रांनि निरंत्रन एक जोती ॥ तास बिचार तवि
श्रौ मांणिक मोती ॥ ५ ॥ बेद न सास्त्र कतेब न कु
र्‍यांन जाई ॥ ते पद जांणै बिरला जोगी ॥ श्रोर
॥ हसिबा षेलिबा रहिबा रंग ॥ कांम क्रोध न क
बा षेलिबा गाइबा गीत ॥ दिढ करि राषिबा अ
सिबा षेलिबा धरिबा ध्यांन ॥ अहि निसि कथि
बा ब्रह्म गियान ॥ हसै षेलै न करै मन भंग ॥ ते निहचल रहै सिध कै
संग ॥ ८ ॥ मन मुषि जाता गुर मुषि लेका ॥ लोही मांस अग्नि मुषि
देका ॥ माता पिता की मेटै धात ॥ ऐसा होइ बुलावै नाथ ॥ ९ ॥ ना
थ कहंतां सब जग नाथ्या ॥ गोरष कहंतां गोई ॥ कलमां कं गु
महंमद होता पहिली मूवा सोई ॥ १० ॥ सबदै मारी सबदै जिलाई
ऐसा महंमद पीर ॥ ताकै भरंमि न भूलै काजी ॥ सो बल नहीं स
रीरं ॥ ११ ॥ महंमद महंमद न करि काजी ॥ महंमद का विषम बि
चारं ॥ महंमद हाथि करद जु होती ॥ लोहा गढ़ी न सारं ॥ १२ ॥ घ
सारं म सारं गहर गंभीरं ॥ गगन उछलिया नादं ॥ मांणिक पाया
फेरि लुकाया ॥ झूठा बाद बिबादं ॥ १३ ॥ कोई बादी कोई बिबादी
जोगी कौ बाद न करणां ॥ अठसठि तीरथ समंदि समावै ॥ यौं जोगी
कूं गुरमुषि जरणां ॥ १४ ॥ उतपति हिंदू जरणं जोगी ॥ अकलि पी
र मुसलमांनी ॥ ते राह चीन्हौ हो काजी मुलां ॥ ब्रह्मा बिसन महादे
व रचै जांणी ॥ १५ ॥ मांन्यां सब दचु काया डुंदी ॥ निश्चै राजा सर
री ॥ त्रचै गोपीचंद ॥ निश्चै न रचै भरथरी ॥ त्रचै जोगी अमांन
द ॥ १६ ॥ अहि निसि मन लै उनमन रहै ॥ गंम

कहै आसा छोडे रहै निरासा ब्रह्मा कहै हौं ता को दास ॥१७॥ अ
रघैं जातां उरघैं धरैं कांम दग्ध जे जोगी करैं तजै अलिंगण
काटै माया ताका बिसनु पषालै पाया ॥१८॥ अजपा जपै सुंनि
मन धरै पांचौं इंद्री निग्रह करैं ब्रह्म अगनि महि होमैं काया
तास महादेव बंदै पाया ॥१९॥ धंन जोबन की करै न आसा
चित न राषै कांमणि पासा नाद बिंद जाकै घटि जरै ताकी
सेवा पारबती करै ॥२०॥ बालै जोबनि जे नर जती काल दुकाल
ते नर सती फुरतै भोजनि अलप अहारी गोरष कहै सो का
या हमारी ॥२१॥ पूरंण पेट तब ही फेसती जो तिम्र मुये कहावे
जती धन बिन सैं बैरागी त्यागी नाथ कहै ते बडा अडो नागी ॥२
२॥ सबद हि ताला सबद हि कूंची सबद हि सबद जगाया सबद
ही सबद जब परचा हूवा तब सबद ही सबद समाया ॥२३॥ सबद
बंदौ रे अवधू सबद बंदौ थान मान सब धंधा बंद त गोरष
नाथ आतमां बिचारी ज्यूं जल मधे चंदा ॥२४॥ सबद बंदौ रे अ
वधू सबूद बंदौ सबद सी ऊंत काया निरंजण वैको डि राज राज
त जीला प्रजा का अंत न पाया ॥२५॥ पंथ बिन चलिबा अ
ग्नि बिन जलिबा अनील त्रिषा ज अहटिया ससंम बेद श्री
रष नाथ कथिया बूकि ल्यो पंडित पढिया ॥२६॥ गगनि मंडल मैं
धा कूंवा तहां अमृत का बासा सगुरा होइ सु भरि भरि पीवै
निगुरा मरै पीयासा ॥२७॥ गगनि नाो संत तेजैन सो षेत पवनै प
लंत बाई मही मारैन भाजंत उदकै न बूबंत कहूं तो कोपति
याई ॥२८॥ बास सहै ता सब जुग बास्या स्वाद सहै ता मीठा साच
कहै तौ सतगुर मानैं रूप सहै ता दीठा ॥२९॥ मरौ रे जोगी मरौ मरण है
मीठा ति जिस मरणीं मरै गोरष दीठा जीवता म
रिबा मरि कैं जीबा अंमी महारस तब भरि पीबा ॥३०॥ पा

बा

धाइबा पाइबा धापिबा नांही॥ चालिबा धाइबा थाकिबा नांही॥ जो
टि बापलै टिबसे इनांही॥ हसिबा षेलिबा बेलिबा नांही॥ २१॥
हबके न बोलिबा ठबके न चालिबा॥ धीरैं धारिबा पांव॥ गर
ब न करिबा सहजैं रहिबा॥ यौं भणंत गोरष रांवं॥ २२॥ न रिया
ते थार तकलकं तते आधा॥ सिधे सिध मिल्या अन धू॥ वे ल्यात्र
रला धा॥ नाथ कहै पतषि प्रवांणी॥ पारिष तरिषा दिष्ट सुषिवां
णी॥ २३॥ नाथ कहै सुणौ रे अवधू॥ दिढ करि राषो चीयां॥ कांम क्रो
ध अहंकार निवारो॥ तौ सबै दिसंतर कीया॥ २४॥ स्वांर्भा वंन्यं डि
जों कैतो षुधा व्यापे॥ नगरी आंकं तौ माया॥ भरि तरि षाकै तौ नि
द्रा व्यापे॥ क्यूं सीझंत जलं बंद की काया॥ २५॥ धापे न षाइबा भूषे
न मरिबा॥ अहनिसि लेबा ब्रह्म अग्निं का भेवं॥ हठ न करिबा प
डे न रहिबा॥ यौं बोल्या गोरष देवं॥ २६॥ षोडसै षोडसमास
ता घटि पवना रहै संमाइ॥ गगनि मंडल में आनंद बाजे॥ प्यंड पडै ह
तौ सतगुर लाजै॥ २७॥ अवधू अहार तोडौ निद्रा मोडौ॥ कबहूं
न होयबा रोगी॥ नाथ बोलै वनासपती॥ यौं कोई विरला जोगी॥
२८॥ अवधू अहार कौ तोडिबा॥ पवंन कूं उलटिबा॥ यौं कबहूं हो इ
इगा रोगी॥ छै छै मासै काया पलटंति॥ नाग बंग वनासपती जो
गी॥ २९॥ देव कला तै संजम रहिबा॥ सबद वाक्य होई॥ मन पव
नां लै उनमनि रहिबा॥ तो जोगी तत सारं॥ ३०॥ अवधू निद्रा के
घरि काल जंजालं॥ अहार के घरि चोरं॥ मैथुन के घरि जुरा
वियापे॥ ३१॥ [illegible] घर जोरं॥ ३२॥ अति अहार इंद्री बल करै
नासै ग्यांन मैथुन चित्त धरै॥ व्यापै निद्रा झंपै काल॥ ताके हि
दै सदा जंजाल॥ ३३॥ अहार निद्रा झंपै काल॥ कैसे करि

[illegible] हाथ [illegible]

करिजोडै ॥ ४२ ॥ सूरजे षाइबा चंद्रे सोइबा ॥ उत्तेन पायबा पांणी ॥ जीवंता कैमृतलिम्रवानबिछाइबा ॥ यो बोल्या गोरष बांणी ॥ ४४ ॥ जीवृत्ता बिछाइबा मृवावो ढिबा ॥ कबकं नहोइ रोगी ॥ बरसैं दिनि काया पलटै ॥ ते कोई कोई बिरला जोगी ॥ ४५ ॥ जलके संजमि अटल आकास ॥ अंनके संजमि जोति प्रकास ॥ पवनके संजमि लागे बंध ॥ बिंदके संजमि थिरि होवे कंध ॥ ४६ ॥ अंनका मांस अनिलका हाड ॥ तत्तका बंध चालंत वाड ॥ फेरिबा बाई साधिबा जोगी ॥ बंदत्त गोरषनाथ ऐसे सोगा ॥ ४७ ॥ आसंण दिढ अहार दिढ ॥ जो निंद्रा दिढ होइ ॥ गोरष कहे सुंणौरे अवधू ॥ मरे न बूढा होइ ॥ ४८ ॥ तब जांणिबा अनहद का बंध ॥ नपडे त्रिभुवन नपडे कंध ॥ रातन असरे त अंगा थें न ही छूटे ॥ तौ जोगी कहंता हिवडा न फूटे ॥ ४९ ॥ जब लौं पेट पूषि नही चीकं हंटै ॥ जब लग ररंकार सहंटै ॥ चितचेतनि करि करं मन काटै ॥ तौ जोगी कहंता हिवडा न फाटै ॥ ५० ॥ १५ ॥ बडे बडे कुले टूटे पेट ॥ नांही भूत्ता गुरू सूं भेट ॥ षड षड काया त्रिमलनेत ॥ जब जांणिबा गुरू का हेत ॥ ५१ ॥ मोटे पेट फ्यंड अस्थूल ॥ जोगी जुगति न जांणी मूल ॥ षाया सात फुलाया पेट ॥ नां सूं भेट ॥ ५२ ॥ मिलिया सतगुर दीनी दिष्या ॥ उतिणी मांगो सिष्या ॥ नाथ कहे तुम सुंणौरे बाला ॥ अएतें अ नहद षूटे ताला ॥ ५३ ॥ सिष्या हंमारी कांम धेनि बोलिये संसार हंमारी बारी ॥ गुरप्रसादें सिष्या षाइबा ॥ अंति कालि न होइगी मारी ॥ ५४ ॥ षावे बकत चलावे छोटा ॥ जोगी नां तेपे थका षोटा ॥ अलपे हारि पात्र पूरा ॥ नाथ कहे ते पंथका सूरा ॥ ५५ ॥ स्वांग का पूरा ग्यांन का कूरा ॥ पेट का टूटा डिंभ का सूरा ॥ बंदत्त गोरष

नाथ न पाया जोगी ॥ करि पाषंड रिझाया लोगा ॥५६॥ पेट की अग्नि
बिबर्जितं । दिष्टि की अग्नि षाया ॥५५॥ न गुर का आगें ही होता
ते फिर ले अवधू आया ॥५७॥ नकं समिये के दीजै आदि ॥ कहै गुरु
जी यहु बिधि मांडि ॥ षायें ही मरिये अण षायें ही मरिये । गोर
ष कहै पूता संजमि हीं तिरिये ॥५८॥ थोडा षाइ तौ कलपै झल
पै ॥ घणां षाइ तौ रोगी ॥ दुहूं पषां की संधि बिचारै सो को ई बि
रला जोगी ॥५९॥ दाबे न मारिबा षाली न राषिबा जांणिबा अ
स्स्र अग्नि का भेवं । बूढे ही थें गुरबांणी होइगी ॥ सत्य सत्य भाष
त श्री गोरषदेवं ॥६०॥ जिभ्या स्वारथि तत न षोजै हेला करै गु
र बाचा ॥ अग्नि बिहूंणां बंधन लागे ढलि किजाइ रस का चो
॥६१॥ मरि न रिषाइ ढलि ढलि जाइ ॥ जोग नहीं रे पूता बाडी बांला
आ संजमि रहै सो बैन जागै ॥ नाद बिंद अस्थिर काल कर्म नागै
॥६२॥ इंद्री का लडबडा जिभ्या का फूहडा ॥ गोरष बोलै रे प्रतषि चू
हडा ॥ काछ का जती मुषि अम्रत बांणी ॥ सो सति गुरि षाग तिम
जांणी ॥६३॥ अवधू मन चंगा तौ कठौटी ही गंगा ॥ बो आपेल्हा
तौ जगत्र चेला ॥ नाथ कहै जब दया आइ गया दोष तब मुक्ति
नाहीं ॥६४॥ किरिया हीण सबद का सूरा ॥ कारिज सिधि न
व्है पूरा ॥ सीष साषि बिसाह्या बरा ॥ नाथ कहै पूता षोटा नफ
रा ॥६५॥ षारे षिरंत षाटे झरंत ॥ मीठै उपजंत रोगं ॥ गोरष कहै
सुणौं रे अवधू अन पांणी होइ जोगं ॥६६॥ आलस निंद्रा झीक
जं ताई ॥ उद्गार अपान अरू जोन समाई ॥ गोरष कहै अभ्या
तं मये हो साधंत जोगी देह बदेहा ॥६७॥ बजरी करतां अम
री राषै अमरी करतां बाई ॥ भोग करंतां जो बिंद राषै तौ गोर
ष का गुरु भाई ॥६८॥ नग्रा मुषि बिंद आनि मुषि पारा ॥ जो राषै

१३८

सेमगुरू हंमारा गोरषकहै सुणोरे पूता ना दबिंदले अहिनि
ता ६९ अवधूई सुर हंमारा चेला तणजे मछिंद्र बोलिये नाती
रीष्टथी मरिमरि जासी अम्है उलटा सिष्टि करिथापी ७० सा
का सबद सो नांकी रेष निगुरा की चाणिक सगरा कों अपदे
नाथ कहै सतिनही न्त्रांती जातिप्रवाणे लागे नाती ७१ गोरस
लासगा रोगी सूषा निषिक तौला सोभी गोरष कहै सरपग
इंनमें निपजै नांहा जोगी ७२ घटि घटि गोरष बाहै क्यारी
हो पजै सो होइ हंमारी घटि घटि गोरष फिरै कि ... काचे तां
है नपांणी ७३ घटि घटि गोरष फिरै निरता को घट जोगी को
टसता घटि घटि गोरष घटि घटि मांन आपा पचे गुरमु
चीन्ह ७४ केता आवें केता जांहि केता मांगे केता षांहि के
रूष बृष तलि रहै गोरष अणभै कास्यो कहै ७५ अवधू
रूणं तमूलणं नांही नंषो अंतस्त्र नांनी सहा षो जीजीवै बा
दी मरै ऊपा धा कांपं इपडै ७६ नथमिए तो बाडि बा अवधू
के सनै सअस्देस मायां मभिता मोहफुनि तजिबा सतगुर
कै उपदेस ७७ कोई निंदै कोई बिंदै कोई करै हंमारी आशा
गोरष कहै सुणोरे अवधू यहु पंथ षरा ऊदासा ७८ जोगी
इपनिंद्रा कषे मदमांस अरू त्तांगि नषे रोकोत्र सो परिया
रंक हि जाय सत्यसत्य भाषंत श्रीगोरषराय ७९ अवधू मां
स भषंत दया धर्म को नास मदपीवंतत हां प्रांणनिरास तांगि
भषंत स्यांन ध्यांन षोवंत ते प्रांणी जमद्वार रोवंत ८० सूकै कं
व अरूनूष बियापे देह बिसरजन निंद्रा व्यापे बुधि बिणि ब
के बिकलकै जाइ तांथै गोरष तांगि नषाइ ८१ चढती न्वैरेक
तरता बाई तातै बिजिया सिधौं न षाई नाथ कहै रे अमल

पिछांणी॥जोगीजोगअध्यांतमबांणी॥८२॥पांवड्यांपगफिस
लैअवधू॥सोहैठीजेकाया॥नागामूंनीदूधाधारी॥एताजोगन
पाया॥८३॥दूधाधारीपरघरिचित्त॥नागालकड़ीचाहैनित्त
मूंनीकरैमित्रकीआस॥बिनांगुरदड़ीनहींबिसवास॥८४॥दि
षंणजोगीरंगाचंगा॥पूरबीजोगीबादी॥पछिमीजोगीबालानो
ला॥पसिधजोगीउत्तराधी॥८५॥अवधूपूरबदिसाब्याधिकारो
ग॥पछिमदिसामृतिकासोग॥दषिणदिसामायाकाजोग॥
उत्तरदिसासिधांकाजोग॥८६॥जोगीसोजोमनजोगवै॥बिणबि
लाइतिराजभोगवै॥कनिककांमणीत्यागैदोइ॥सोजोगेस
रनिरंजनहोइ॥८७॥संन्यासीसोईकरैसरबनास॥गगनमंडलमैं
मांडैआसा॥अनहदसूंमनकेनमांनिरहै॥सोसंन्यासीअगम
कीकहै॥८८॥दरवेससोईजोदरकीजांणै॥पांचूंपवनअपूठा
आंणै॥सदासुचेतरहैदिनराती॥सोदरवेसअलेहकीजाती॥
८९॥डंडासोजोआपाडंडै॥आवतजातमनसापंडै॥पांचौंइंद्रीका
मरदैमांन॥सोडंडाकहियेततसमांन॥९०॥पाषंडीसोईजुकाया
पषालै॥उलटापवनअगनिपजालै॥ब्यंदनदेईस्तपिनैंजांन॥सो
पाषंडीकहियेततसमांन॥९१॥धूतारतेजोधूतैआपै॥मि
थ्यामोजैमनहीसंताप॥अकवपटणमैंमिथ्याकरै॥तेधूतारास
बपुरीसंचरै॥९२॥घरबारीसोघरकीजांणै॥बाहरिजांतांभी
तरिआंणै॥अबनिरंतरिकाटैमाया॥सोघरबारीनिरंजनकी
काया॥९३॥ग्रहीसोजोग्रहैकाया॥अभिअंतरकीत्यागैमा
या॥सहजसीलकाधरैसरीर॥सोग्रहीचरनौंकानीर॥९४॥
अवधूअमरात्रिमलपापनपुंनि॥सतरजतंबिबर्जितसुंनि
सोहंहंसासुमिरैबिधि॥तिहिंप्रमारथसंतसिधा॥९५॥म

सो गुरू हंमारा। गोरष कहै सुणौं रे पूता। नाद बिंद ले अहिनि
ता॥६९॥ अवधू ईस्वर हंमारा चेला ततणीजै। मछिंद्र बोलिये नाती
रा इथी मारि मारि जासी। अम्है उलटी सिष्टि करि थापी॥७०॥ सा
का सबद सोनां की रेष। निगुरा कौं चांणिक सुगरा कौं उपदे
नाथ कहै सति नहीं आती। जाति षवांणी लागै नाती॥७१॥ रोस
ता रोगी। नूंषा सिषि कतौला भोगी। गोरष कहै सरप वासे
जैसे निपजै नांहीं जोगी॥७२॥ घटि घटि गोरष बाहै क्यारी जो
जैसो होइ हंमारी। घटि घटि गोरष फिरै [illegible] कार्ये तांते
न पांणी॥७३॥ घटि घटि गोरष फिरै निरता। को घट जागै को
ट सूता। घटि घटि गोरष घटि घटि मीन। आपा परचै गुरमुषि
चीन्हा॥७४॥ केता आवैं केता जांहि। केता मांगैं केता षांहि। केत
रूष बृष तलि रहैं। गोरष अणभै कास्यों कहैं॥७५॥ अवधू
रुणं तें मूलणं नांही। नषो जंत अजांनी। सहीषो जीजीवै बा
दी मरै। रुपाधी कापंड पडै॥७६॥ प्रथम मिले तो बाडि बा अवधू
के सभै सउ रुदेस। मायां मछिता मोह फुनि। तजिबा सतगुर
के उपदेस॥७७॥ कोई निंदै कोई बिंदै कोई करै हंमारी आसा
गोरष कहै सुणौं रे अवधू। यहु पंथ षरा उदासा॥७८॥ जोगी
होइ परनिंद्या झषै। मद मांस अरु भांगि जे भषै। इकोतर सै पुरिया
नरकहि जाय। सत्य सत्य भाषंत श्री गोरष राय॥७९॥ अवधू मां
स भषंत दया धर्म कौ नास। मद पीवंत तहां प्रांण निरास। भांगि
भषंत ग्यांन ध्यांन षोवंत। जम दरबारी ते प्रांणी रोवंत॥८०॥ सू के कं
व अरु रूष बियापै। देह बिसरजन निंद्रा ब्यापै। बुधि बिणि ब
के बिकल है जाइ। तार्थे गोरष भांगि न षाइ॥८१॥ चढंतां नरे म
तरता बाई। तातें बिजिया सिधौं न षाई। नाथ कहै रे अमल

जाणी॥जोगीजोगअप्यांतेमबाणी॥८२॥सांवडियांपराफिर
लेअवधू॥सोहेवीजेकाया॥नागामूंनीदूधाधारी॥ऐताजोगी
पाया॥८३॥दूधाधारीअघरिचिंता॥नागालकडीचाहेनिर
मूंनीकरैमिंत्रकीआस॥बिनागूदडीनहीबिसवास॥८४॥प
यंणजोगीरंगाचंगा॥सूरबीजोगीबादी॥पछिंजोगीनालारो
लापसिधजोगीउतराधी॥८५॥अवधूपूरबदिसाब्याधिकारो
गापछिमदिसामृतिकाजोगा॥दषिणदिसामायाकाजोगा॥उ
त्रदिसासिधांकाजोगा॥८६॥जोगीसोजोमनजोगवे॥बिणिल
लाहतिराजतजावे॥कंनिककांमणीत्यागेंदोऊ॥सोजोगीज
रनिरंजनहोइ॥८७॥संन्यासीसोईकरैसरबनास॥गगनमंडलमां
मांडेआसा॥अनहदसूंमनकेनमांतिरहै॥सोसंन्यासीअगम
कीकहै॥८८॥दरवेससोईजोदरकीजांणै॥पांचूंपवनअपूठा
तांणै॥सदासचेतरहैदिनराती॥सोदरवेसअलेहकीजाति॥
८९॥डंडसोजोआपाडंडै॥आवतजातीमनसापंडै॥पांचोंइंद्रीप
मरदेमांन॥सोडंडीकहियेततसमांन॥९०॥पापंडीसोईअलप
पषालै॥उलटापवनअग्निप्रजालै॥बिंदनदेइथिरजानमो
पाषंडीकहियेततसमांन॥९१॥भूतागरतेजोधूतेंथापै॥प
प्यासोजेमनहीसंताप॥अकवपटणगोगिप्याचरै॥तेदूसराप
वपुरीमैचरै॥९२॥घरबारीसोघरकीजांणै॥बाहरिजांताना
तरिआंणै॥सबनिरंतरिकाटेमाया॥सोघरबारीनिरंजनकी
काया॥९३॥गहासोजोगहेकाया॥आनिअंतरकीत्यागैमा
या॥सहजसबदकावंदसगरगसोपवनवरंतौक
अवधूअमरनिमसनपापनपुनि॥अगम
सोहंहंसकैरविविवितिहिप्रमाप्रसंत

मांन अग्नि बिंद न जाई ।४७। उलटिया पवंन षट चक्र बेधि
या. तातें लोहे सोषिया पांणी। चंद्र सूर दोउ निज घरि राषै। अ
अलष बिनांणी ।४८। उलटी सक्ति चढै ब्रह्मंड। नष चष पव
रमें सरब अंड। उलटी सक्ति राह कौ गहे। सिध संकेत श्रीगोरष
हे ।४९। सूर मांही चंद चंद मांही सूर। पंच चेतन निहै कुं उनबा
ले तूरा। तणांत गोषि नाथ ऐ पद पूरा। ताजं तत हूंसा घंत सूरा।
५०। घर तर पवंन निरंतर रिबहे। बाजे काया पिंजर रहे। मन
वंन चंचल जिनि ग्रहिया। बोले नाथ निरंतर रहिया ।५१।
ईकटी बिकुटी त्रिकुटी संधि। पछिम द्वारे पवंनां बंधि। दूटे तेल
न बुझे दीवा। बोले नाथ निरंतर कीवा ।५२। नाद बिंद बजा
ले दोऊ पूरिले अनहद बाजा। इकंत का बासा सो धिले तर
री। कहै गोरष मंछिंद्र का दासा ।५३। नाद नाद सब कोई कहै
नाद हिले कोई बिरला रहे। नाद बिंद है फीकी सिला। जिभि
ध्या ते सिधां मिल्यां ।५४। नाद हमारे बावे कौंन। नाद बजायां
टेपौंन। अनहद नाद बाजता रहे। सिध संकेत जती गोरष क
।५५। पवंन ही जोग पवंन ही भोग। पवंन ही हरे चौसठ रोग
या पवंना का कोई जांणे भेव। सो आपे करता आपे देव ।५६।
अग्नि ही जोग अग्नि ही भोग। अग्नि ही हरे चौसठि रोग। या अ
का कोई जांणे भेव। सो आपे करता आपे देव ।५७। बिंद ही
ग बिंद ही भोग। बिंद ही हरे चौसठि रोग। या बिंद का कोई
भेव सो आपे करता आपे देव ।५८। लाल बोल लंक अ
तरिया मूंढ रहे उरवार। थिति बिहूंणा मूग जोगी
र न पार ।५९। पढि देषि पंडित रहि देषि सारं। आपणी
उतरिबा पारं। बदंत गोरषनाथ कहि धौं साषी। घटि घटि दी

।मणि पसूंन देषे आंषी ॥६२॥ आम आंचर है निहंकामा तंव
गुफा मांहि बिसरांमा। जुगति मन तौ बंजो गोरति मन काहू के
आवै हाथि ॥६३॥ मन मुष जोगी नीबक अहंकारा। सचिका
सबद उठै है। काया केवल आपसर बोलै। अंतरि तत कूं सेदै।
॥६४॥ सुस ह्वै हीरा बेधिले अवधू जिह्वा करिले टकसाला। जो
गुण मधे गुण करिलै तो चेला सकल संसारं ॥६५॥ गोरष कहै
सुणौ रे अवधू जुग मैं ऐसै रहणां। आंष्या देषिबा कांनां सुणि
बा पणि मुष तैं कछू न कहिणां ॥६६॥ गोरष कहै सुणौ रे अवधू
सूसयाल तैं डरियो। लिंग दुवार की सिरमै मेल्हो। तब बिणदी षूंद
मरियो ॥६७॥ हरिष समानबै सिबा रे अवधू पंडित सूं नकरि
बाबादां रु जा संयासै सूं ज्ञान करिबा। हेलै न षोड़बा नादा ॥६८॥
अंतीस मांन रु रिस सूं सूंनि। बाद बिबाद द्वै जतयौंन। जहां जे
सात हौ तैसा। गोरष बोलै अवधू पांन ऐसा ॥६९॥ मन महि रहणा
भेद न कहणां। बोलिबा अम्रतवाणी। आगिला अग्नि होइबा तौ

प्रवांणी। यौं सिधा सो तंत सुधि बुधि की बांणी ॥६९॥ बिरला जा
णंत भेदा न भेदं। बिरला जांणंत दोइ पष छेदं। बिरला जांणंत
अकथ कहांणी। बिरला जांणंत सुधि बुधि की बांणी ॥७०॥
अरियां। नीझर झरत रहियां। आंडा रे षुर
७१। ष्यंडे होय तौ ष
तब्य सारं ॥७२॥ कहणि सुहेली र
हणि दुहेली। कहणि रहणि बिन थोथी। पढ्या गुण्यां सूवा
७३। कथणी

दवूकि आसंणपवंनउपङ्हकैरै निसदिनि आरंत्नपचिप
चमेरै २०१ पुस्तकपैढनपढितहोइबा पवंनेनसीझतक
या बिंदरांषेतेंजतीनजांनिबा जबलगप्रेंमततनहीपाया
२०२ उंनमनिजोगीदसवैद्वार नाद बिंदलेधूधूकार दसवै
द्वारैदेइकपाट गोरषषोजीऔरैबाट २०३ बिंणिप्रचैही
जोगाबषांनैं पवंनसाधिप्रमारथमांनैं प्रेमतराकाहोइनम
रमी गोरषकहै सोमहाअधमी २०४ उंनमन्यरहिबानेदन
कहिबा पीबानीरैझरपांणी लंकाछाडिपलंकाजाइबा तब
गुरमुषिलेबाबांणी २०५ आरंभेजोगीकथीलाऐकसार षिं
णिजोगकरैसरीरबिचार ततबलब्यंदधरीबाइकतोले तब
जांणिबाजोगीआरंसकाबोले २०६ घटिहीरहिबामननजा
इबादूरि अहिंनिसिजोगीपीवैबांणीस्वरस्वाद बिस्वादबाइ
कात्तषिण तबजांणिबाअवधूघटकालषिण २०७ अचेजो
गीउंनमंनीकला अहिंनिसिंईछांदेवतांमिला षिंणिषिंणि
जोगीनांनांरूप तबजांणिबाजोगीप्रचैस्वरूप २०८ निस
पतीजोगीजांणिबाकैसा अग्निपांणीलोहनमांनैंजैसा राजाप
जासंमिकरिदेषै तबजांणिबाजोगीनिसपतीकानेषा २०
दिष्टिअग्रेदिष्टिलुकाइबा सुरतिलुकाइबाकांनं नासि
अग्रेपवंनलुकायबा तबरहिगयापदनिरबांणं २१०
मेंधूमेंज्वालाजोति सूरिजकलानछिपेछोति कंचनकम
लकिरंणिपसराय जलमलछुगंधसबसोष्याजाइ २११ नीझ
रझरणंअंमीरसपीवणं षटदलबेध्याजाइ चंद बिहूंणांचां
दिणां तहांदेष्यागोरषराय २१२ अरधउरधबिचिधरीउगा
य मधिसुंनिमंहिबैठाजाय मंतिवालाकीसंगतिआई कथ
तगोरषनाथजंमगतिपाई २१३ पायालैमलपायालै अ

षांमसहेतौ षितौ॥ रूपसहेतौ दीसंणां॥ तब प्यंड नई थ्र
ती॥२१४॥ अवधू मनसा हेमारी गेंद बोलिए सुरति बोलिए चौ
न॥ अनहद सबद ले षेलण लागा॥ तब गगन नि नयां में दांन॥२१
अवधू काया हेमारी नांलि बोलिये॥ दारू बोलिये पवंन॥ अगनि
दीता अनहद गरजै॥ बिंद गोला उडिया गगन॥२१६॥ सुणि गुण
ता सुणि बुधिवंता॥ अनंत सिधां की बांणी॥ सीस नवावत सत
गुर मिलिया॥ जागत रैंनि बिहांणी॥२१७॥ घटि घटि सुणियां पं
नत हिं होय॥ बनि बनि चंदन रूंष न कोय॥ रतन रिधि कंवण
क हिं होय॥ ऐ तत बूझै बिरला कोय॥२१८॥ गोरष कहै सुणौ रे
अवधू यह कलि आई षोटी॥ किंदा का भाव हां या देषिये॥
करवे हो द्रुम निकसे टूंटी॥२१९॥ देषो पूता कलि को नाव
भिष्या लीजै लिदे पाव॥ सत का भोजन अनभै छ्यावै गरै ले
पाव प्रमोध्यां तें आवै॥२२०॥ अणबष्या अम्रत सबद का पा॥
णी॥ षेद भेद गान करि जांणी॥ नाथ कहै येक पान अनूप दे
ष त द्रिष्टि नयदि ये कूप॥२२१॥ गगन सरपन पूरं काल
क जाय हू रं॥ नाथ का न डार सर पूरं॥ जती सती सेवा गस्रूरं
२२२॥ माया जरै ना वा फुरै॥ और की चिंता श्री अलेष पुरिस
को रे रहै निरासन करई आसा॥ यूं बदंत गोरषनाथ मछिं
द्र का दास॥२२३॥ थांन मांन गुर पांन बोधां नी बोध सिधा पा
रयांम॥ आस कों गमन स देषि बादेसं॥ अचिंत नाथ कों क
बा आदेस॥२२४॥ जहां सपड पना हां हरि षन सोग॥ अंसो त
णां न जाणं रूष न सोग॥ आं वणं न जांणं॥ अबोलन क
णं॥ नाथ कहै तहां ऐ कर सरहणं ॥ इती श्री गोरष
नाथजी को सबदी संपूरण॥१॥

ॐ॥ अहंकारै तूटी निद्रा मीथ्या पेषी नां सौरा॥ सति सति
भाषंत राजा भरथरी॥ पिंड का बैरा जोरा॥१॥ छषिया रोवंत
दुषिया हसंत॥ कीलकं रंत बरका मणी॥ सूरा मूकंत मूढ
भाजंति॥ सति सति भाषंति राजा भरथरी॥२॥ डषी राजा उ
भा परिजा॥ डुषी बांभन बांनियां॥ सदा सुषी राजा भरथरी॥ जि
नि गुर का सबद पछांणियां॥३॥ कागर बांनी गुजरी॥ देषि पड
डियां॥ सोला हसै मैमंतियां॥ मुकि घरि दीद तियां॥४॥ अने बि
रषा सफल फलंते॥ मुडि बैठे तेगायंदा॥ ते बिरषा सजडागा
या॥ चमदेष तो नरंदा॥५॥ चढैंगा सुपड़ैंगा॥ न पड़ैंगा तत बि
चारी॥ धंवंत लोगा बीजैंगा॥ तेरा क्या जाइगा भरथरी॥ निषारी
६॥ राजा भरथरी आसिन मूला॥ तलि करि डोरी बीज परि चूं
करि चूल्हा॥ वै दै वै लकरी जूगानि स्यूं जारि॥ जोगी भरथरी
जी वै जूगा चारी॥७॥ अवधू जल बिनि कवल॥ कवल बिनि
मधुकर॥ कोइल बोले कंठ बिनां॥ थल बिनि मछ घ मृघ बिनि
पारधी॥ येकसरि बेधे पंच जनां॥८॥ नव द्वारे जडि लेक पाट
दसवैं द्वारे सिव घरि बाट॥ दोइ लष चंदा येक लष भांन॥ बे
मृघ गगनि अस थांन॥ बे ध्यान मृघ न छाडै पास॥ तन त
भरथरी गोरष का दास॥९॥ तन निरास मन मांडै माया॥ मुंड
मुंडाइ न तडै सिकाया॥ मन निरास सकल रहै जोगी॥ कहै भ
रथरी तै नर जोगी॥१०॥ पंच पंडा अधिक बलिवंडा॥ मन राष
मैमंत गाजै॥ करडी लहरि कंद्रप की उठै॥ तब कोमूक कै कोमा
जै॥११॥ बैरागी जोगी बैराग न करनां॥ मन मनसा कवि बंदी अ
गम अगोचर सिध का बासा॥ तहां आसा त्रिस्नां षंडी॥१२॥ आ
सा षंडी मनसा षंडी॥ मन पवन दोय कजार॥ सति सति भाषंति गो

गी भरथरी॥ तन मन नहो दुखा पीरं॥१३॥ राज गये कों राजा रूंरै॥
बेद गये कों रोगी॥ रूप गये कों कांमणि झूरै॥ बिंद गये कों जोगी॥
१४॥ बीज नहीं अंकूर नहीं॥ नहीं रूप रेष अहंकार नहीं॥ वै
अस्तल हां कथ्या न जाई॥ तहां भरथरी रह्या समाई॥१५॥
रसैं का संसा नहीं॥ नहीं जीवन की आसा॥ सति सति भाषंति
जोगी भरथरी॥ हेम कूं नितही सोग बिलास॥१६॥ निरंधंन
कथ्या बहु बिस्तार॥ कथ्यो निरंजन रहै आकार॥ तो तन बि
कैम बांधंन बीर॥ कवन जे चेर हिबा पीया॥१७॥ तनि हो बिं
मब्रह्म गियांन देही बिबर्जित धरं धियांन॥ तदै अस्तल हं क
थ्या न जाई॥ वहां भरथरी रह्या समाई॥१८॥ आगें वहि नांपांचें
मोन निरति सुरति त्रिकुटी लिधांन॥ कथ्यो निरंजन रहै गव
सा॥ अजकं न छूटै आसापास॥१९॥ आय स वरं नीं न कार गरबं
नहीं धंन जोबन राज होइ सरवं॥ कनंक कांमनी सोग बिला
स॥ कहै भरथरी कंथ बिनास॥२०॥ साधिबा तो येक पवंन आ
रंन साधिबा॥ छाडिबा तो सकल विकारं॥ रहिबा तो निहं सब
द की बाया॥ सेईबा तो निरंजन निराकारं॥२१॥ नग्र स कांट
नग्र स बनचरा॥ भनसप जीव जलचरा॥ अज हं का चीन्हि
सि हो नरा॥ नहीं प्रसिधि जो गोरखु॥२२॥ अस्य स पुत्री कुलवं
ती नारी॥ धनिस्य रूप चित्र च॥ धन्निस्य देसस्य देवा॥ स्य संह
पदे स मूरिष जे गिनां॥२३॥ तिनो वस ज्या वेनो वक्यां॥ ज्य रि
अं वरवापु भरथरी मन निष्कलं॥ घोरे घोरिव रपिहो ईड
केपप॥ [illegible] स्यं माता ठ स्यं राता॥ जस्य पी वं वा व स्यं द दं॥
हैहै रे लोक हुरा चारी॥ वे रणीं हो व किं न जरवा॥२४॥ ज्य
माया व संज्या तास सूं कहूं [illegible] [illegible]

हीनहस्ती घोरा॥ सति सति भाषंति माता मैणावती॥ पूता कलि
मैं जीवन थोड़ा॥५॥ माता सोला है सै रांनी बारा है सै कंन्यां॥ अरु
बंगाल देस बड़ जोगी॥ बारह बरसै राज करण दे माता॥ पीछै
होंगा जोगी॥६॥ पूता राज नहीं रे पाट नहीं रे॥ नहीं यहु जल बिं
बकी काया॥ सति सति भाषंति माता मैणावती॥ जैसे मिरगलो
रे माया॥७॥ माता कहूं कै मैणावती॥ अरु बंगाले देस बड़ जो
गी॥ बारह बरस राज करण दे माता॥ पीछै होंगा जोगी॥८॥ पू
ता आज आज करंता रे॥ काल्हि काल्हि करंता॥ काया मेरे जूं
कलाल की माटी॥ रतन तौ फिरि परे गोरे बाला॥ ये कुजल बि
लि होइगी मसांन की मांटी॥९॥ माता तूं राजा कै घरि रांनी हो
ती हमारे हे माई सतषनै चौबारे रहती॥ माता यहु कण पांन
कहां तैं पाई॥१०॥ पूता गुरू हमारे गोरष कहिये॥ चरपट
है गुर भाई॥ एक सबद गुरू गोरषनाथ कहिया॥ सो सां
भल्यो मैणावती माई॥११॥ मरकौ भरि जाकौ॥ मसांना दे
हंगा फिरि छार॥ कवण एक अमृत चीन्हौं हो राजा गोपीचं
द अमृत तरो संसार भौ पार॥१२॥ माता कौन हमकूं जांनत
वे कौन पषालै पाई॥ कहां तुम्हरे मेडा मंदिर॥ कहां तुम्हैं
वती माई॥१३॥ पूता अलष उन्हौंनै जांनत वे॥ गंगा पषा
लै पाई॥ रूष बिष तेरे मेडा मंदिर॥ घरि घरि मैणावती माई॥१
४॥ मन राजा मन प्रजा॥ मन सकल का बंध॥ मन कूं चीन्हि पार
यो मा भये राजा गोपीचंद॥१५॥ माता कै उपदेस करि॥ तजी ला
देस बंगाले॥ गोपीचंद गुरू कै सरणै॥ जेटत भागा काल॥१६॥
छाड्या राज पाट परि छाड्या॥ छाड्या देस बंगालं॥ गोपीचंद धो
लागर सब ही छाडि गया बनवास॥१७॥ राणी सकल कंन्यं

सत्तसबही॥हाहाकार नईला॥रावतैरैत्तिनुरी॥जालबल
राजागोपीचंदकहांगईला॥१८॥जलंद्रीपावहाथिदेडीबी
गोपीचंदषेदाया॥मंदिरमहलपोलिजहांनीतषितहां॥
जाईअलेषजगाया॥१९॥माइबंहेनकहिभिष्यामांगी॥सूसा
सीगीनादं॥सांभलिस्वादमिलीसबरांणी॥आइकीयासंग्रा
दं॥२०॥श्रीरामजीसति॥श्रीचरपटनाथजीकी सबदीलिषते
॥अगंगालितेपलितंमुंडं॥जातदसानविहीनतुंडं॥विधे
जातिग्रिहाबड्डं॥तदपिनमुंचत्यसआसाप्यडं॥१॥काया
तरवरमांकहचित्त॥डालेपातेनरमेंनित्त॥कलपेफलये
दकेदिसिजाइ॥तिसिकारणिकोइसिधनयाइ॥२॥ढीलक
छोटीमनतंगाफिरै॥घरिघरिनैनपसाराकरै॥मायाजैरेन
बांचाफूरै॥ताकारंनिमूरुहरुफुरिमरै॥३॥मनचंचलप
वनचंचल॥चंचलबिंदुकीधारा॥अहिघटमधेतीन्यूचं
चल॥क्यूंराषिएकरतारा॥४॥नाथकहांवैसबकै
ननाथि॥चेलापांचचलांवैसाथि॥मोगेभिष्यासरिसरिषा
हि॥नाथकहावैंमरिमरिजाहिं॥५॥दरसनपहरैंनाथकहा
वैं॥मुषिबोलैंचतुराई॥आलेबांसेज्यूंघुणलागो॥डालमूल
घडिषाइ॥६॥टीकाटांमाटमकली॥बोलेचरूधरिबाणी
कहैचरपटसुंणिहोनागा॥अरजनायास्योरांकीसहिनांणी
७॥रंगाचंगाबकदीदारी॥जैसीपोटीम्हुहरमुलमांथारी॥च
रपटकहैसुंणोंकुरेलोई॥येपाषंडहैपरिजोगनहोई॥८
येकसेतपटायेकनीलपटा॥येकटसरकटीकालोबज
टा॥येकपंथवाडिमेंनजबटबोटा॥चरपटकहैयेपेटन
टा॥९॥रावकंथारापटरोल॥पगोंपावडीमुषांतंबोल॥षा

जैपाजे कीजै जोग ॥ चरपट कहै बिगोवै जोग ॥१०॥ पहरि
मूंदड़ी कंकन हाथि ॥ न कटी बूचा जोग न साथि ॥ अवतबे
वतकाऊ ण कार ॥ त जिन सक्या माया जार ॥११॥ जंजाल आ
गै जंजाल पाछै ॥ जंजाल कूं मारि कै मांडै ॥ सो जंजाल तजि जो
गी कूंवा ॥ सो जंजाल फिरि मांडै ॥१२॥ बाकर कूं कर कंचन
हाथि ॥ बाली भोली तरणी साथि ॥ दिन करि भिष्या रात्यूं
भोग ॥ चरपट कहै बिगोवै जोग ॥१३॥ गांध्या बिगांध्या मुता
षडा ॥ पसवा पड़ि पड़ि तोड़ै हाडा ॥ बोचिन सक्या आंगुली
च्यारि ॥ चरपट कहै ते माथै मारि ॥१४॥ जल की जोति पकं न
काथै भा ॥ देवल देषि नया अचेता ॥ बाहरि सीत रिां धबि
गांधा ॥ का है भूले पसवा अंधा ॥१५॥ आंषि की टगटगी नां
क की डांडी ॥ चरंम की चंदरिया रूध स्यूं मंडी ॥ मल पसे
द सु रचि ज हां सु हां ॥ अहार की कोथली न रक्त की कुंडी ॥१६॥
मन का बासा तहां मास का चूवा ॥ सिस्टि का बार वहां के
स का कूंचा ॥ गांध बिगांधा वहां जार बिजारी ॥ चरपट चाल्या
मात जुहारी ॥१७॥ चांम की कोथली चांम का सूवा ॥ ताम्की
प्रीति करि जगत सब मूवा ॥ देव गांधव सनि मानव जेता ॥
उबस्याये क को घरू सु षिचेता ॥१८॥ फोकट फाक टकथीं
गियांन ॥ कूटै चमड़ा धरैं धियांन ॥ सिध सु रस स्यूं करै उपा
धि ॥ चरपट कहै ते ब्याधि अ साधि ॥१९॥ सिध कहावै सु गा
तैं नगा ॥ ता का काला मुष नीला पगा ॥ कूटै चमड़ा धरैं धिया
न ॥ ता पकं सुवा मैं कहो गियांन ॥२०॥ चरपट कहै सुणि रे अ
व धू कां मणि संग न कीजे ॥ व्यंद ब्यंद नौ नाड़ा सो षै ॥ दिनि दि
नि काया छीजे ॥२१॥ जतन करंतां जाय सु जाव ॥ नगा देषि जि

निपालौघाव्रौ॥कोटिबरसलौंबाठे आव॥सति सति नाषे श्री चरपटराव॥२५॥ चिरकटचीरचक्रमनिकंथा॥ चितचमातकरणं॥ असीकरणीकरोरे अवधू जबकडि नहोईमरण॥ २६॥ दिढकरिमनबांधिथिरकरिचित॥कायापवंनपषालोनित॥ असरामरौ रूपथिरकवेकधं॥ कडैनहेसालोगोबंध २७॥ अवधू मलद्वारे दीजे बंध॥ बाईपैले चौसठिसंधि॥ जरापलटेषंडेरोग॥ बोलेचरपटधंनिधनिजोग॥ २८॥ वधिसिबंधिविषमकरिबंदो॥ तलिकरिरबिकपरिकरिचंद॥ रैनिदिवसरसचरपटपीया॥ छूटैतेलनबुझैदीया॥ २९॥ जोतुंरावलषरासयांनो॥ कसिकिंनबांधेटाटी॥ बारादआगुलयेसिगईले तबसोलहआंगुलफाटी॥ ३०॥ पवंनाकेंघा अनलेबास पिसंणनकोईआवेपास॥ मनस्थमहौगुरुगियांनबकरत चरपटकहैधंनि अवधूत॥ ३१॥ निसैनिसंकतेतततबेता॥ मनमांनविबर्जितइंद्रीजिता॥ सतफटकमनमांनरता॥ चरपटकहैतेसिधमेता॥ ३२॥ साधेमूलसकमोरैनिद्र सुपिनैंझरिबादेहनव्यंदा॥ पटैनाप्यंडन कंपैरोग॥ चरपटबोलेधनिजोग॥ ३०॥ मरथरचरपटगोपीचंद॥ बिदोमूरनपरमानंद॥ षारपांडनषितछाडेभोग॥ राषेआत्मसाधोजोग॥ ३४॥ तांबातेंबायेदोड्सच्चा॥ राजाहीयेजोगीकच्चा॥ तांबाहूंबेतनातिरे॥ जोगीबेजपारा जामरे॥ ३५॥ उजलकंथानगडेबास॥ कांमणिआगनमेलेपास॥ दिढिकरिराषेपांचूंइंद्रा॥ चरपटबोलेतेजोगिंद्रा॥ ३६॥ करपरितिष्याब्रिछतलिबास॥ दोइजनआगनमेल्हैपास॥ बंनषंडिरहैमसांणां भूत॥ चरपटबोलेते अवधूत॥ ३७॥ षिब्रिषिगिरिकंदलिबास॥ अहिनिसिरहिबाजोगअभ्यास॥ पलटैकायाषांडेरोग॥ चरपटबो ५ पा. ३५॥

तिसका करहु बिचारं ॥ ६२ ॥ पूजिबा तो आत्मादेव पूजिबा ॥
चढाइबा अनादि पाती ॥ चरपट कहै कडंतट किन मरणं ॥
घटि ही तीरथ जाती ॥ ६३ ॥ सुर मंदिर तरमूल निवास ॥ भिष्या
भोजन रहै उदास ॥ सकल पयूह सोगातियाग ॥ तो क्यूं न सु
ष करस्तबैराग ॥ ६४ ॥ बैसि न रहिबा दोहि न जाइबा ॥ फंदै दै
बा पावं ॥ आत्मा पमांणि भिष्या षाइबा ॥ देषिबा जती सती का
भावं ॥ ६५ ॥ गिरही होइ करि कथै गियांन ॥ अंबली होइ क
रि धरै धियांन ॥ बैरागी होइ करै आसा पास ॥ चरपट कहै
ते षासा फास ॥ ६६ ॥ मांन अभिमांन मैं लांदै फिरैं ॥ पुरस न पोजैं ।
सूरिष मरैं ॥ डंड कमंडल भगवां भेष ॥ पाथर पूजा बहु अपदेस ॥
६७ ॥ जीव हतैं अरु पूजा करैं ॥ जंत्र मंत्र ले मन मैं धरैं ॥ तीरथि
जाइ करैं सनांन ॥ बोले चरपट पंडित ग्यांन ॥ ६८ ॥ न्हावैं धो
वैं पषालैं अंग ॥ भीतरि मैला बाहरि चंग ॥ हैम जाप अ
ग्यारी करैं ॥ पारब्रह्म कूं सुधन धरैं ॥ ६९ ॥ दिन दिन हत्या करैं
अपार ॥ सतिग पातिग केलै भार ॥ ब्रह्म रूप उपासे सार ॥ चर
पट कहै यहु धूत बिचार ॥ ७० ॥ स्याह धंमसत चित्त न बैसे ॥
अतीत देषि निंद्या मन हसे ॥ कथे ग्यान अरूपो कट रहनि
पट कहै कल्हू का चिंहंन ॥ ७१ ॥ जिसका कांम तिसही कूं
छाजै ॥ और करैं तो डांगा बाजै ॥ चरपट कहै यहु अविरज दे
ष ॥ कंनिक कांमनी षाया भेष ॥ ७२ ॥ नाथ कहावैं सकैं तना
थि ॥ चेला पांच चलावैं साथि ॥ मांगें भिष्या तरि तरि षांहि ॥ नाथ
कहावैं मरि मरि जांहि ॥ ७३ ॥ किसका बेटा किसकी बहू ॥ आप
सुवारथि मिलिया सहू ॥ जेता पूला तेती फाल ॥ चरपट कहै ए
सबै जंजाल ॥ ७४ ॥ इति श्री चरपटनाथजी की सबदी संपूर्णं ॥

देवीपारबतीकीसबदीलिषते॥जलमलसरियानल॥अग्निनबलै
नाभिकेतलि॥अग्निनबलैनपसरैकिरणि॥ताकारंनिपारबती॥
जगतकामरण॥१॥अरूवहाथकंपरी॥जलमलभरी॥नासिका
कापवंननषेबैनाभिकीतली॥उलटैपवंनांनगगनिसमाइ॥
ताकारनिपारबतीयेपसूवामरिमरिजाइ॥२॥हंसब्रिषगिरकं
दलिबास॥निरघंनकंथारहैउदास॥भिष्यासोजनसहजेमे
फुरै॥ताकीसेवापारबतीकरै॥३॥कामद्रिष्टिबोधांनां॥बा
लअवस्थाभुवंगमअहारी॥सोअवधूतबैरागीपारबती॥हू
जाअबसेषधारी॥४॥धंनजोबंनकीकरैनआसा॥चितनराषै
कांमणिपासा॥नादबिंदजाकैघटिजरै॥ताकीसेवापारबतीक
रै॥५॥निरघंनकंथाबकबिसतार॥जुगतिनिरंतरिरहणिअ
पार॥नादबिंदजाकैघटिजरै॥ताकीसेवापारबतीकरै॥६॥
निसप्रेहीनिस्वादी॥कांमदगधीदिनेदिने॥तासभिक्ष्यादेदेवी
पारबती॥सोछिमुक्तितताछिने॥७॥जलंद्रीपावजीकीसबदीलि
षते॥सुंनिमंडलमेंमनकावासा॥जहांप्रमजोतिप्रकासा॥आपे
पूछेआपेकहै॥सतगुरमिलेतौप्रंमपदलहै॥१॥येकअचंना।
असाकूवा॥गगनिमंडिऊसाष्याकूवा॥वोबीलेजडोरिपकंचेना
हिं॥लोगपियास्यामरिमरिजांहिं॥२॥आसापासादूरिकरि॥पस
रंतानिवारि॥सिधसाधिकस्यूंसंगकरि॥सतगुरपांनाब्याधि॥
३॥धरतीआकासपवंनअरूपांनी॥चंदसूरजघटदरसंणजां
नी॥वोऊंकारकापावैभंत॥असासिधाअलषअनंत॥४॥गोपीच
दकहैहैस्वांमी॥पूछौदाषेअंतरजांमी॥बस्तीरहूंतौकंद्रपब्या
पै॥जंगलिरहूंतौभूषासंतापै॥आसणिरहूंतौलागैमाया॥यंथि
चलौंतौबीजैकाया॥ १

साधौ जोग॥ ५॥ सांच लि अवधू तत बिचारं। ये निज सकल सिरोम
निसारं॥ संजम अहार कंद्रप नहीं व्यापै बाई आरंत धुध्यानं स
वापै॥ सिध आसंण न हिलाऔ माया। नाद पयालैं न छीजे काया॥
जि स्वास्वादन कीजे भोग। मन पवंन लै साधो जोग॥ ६॥ मरदने
के सस्यां सिलै अवधू पवने स्यां सिलै काया॥ अत्त सेजुराम रं
ण स्यां सिलै बिचारि त्यागि लै माया॥ ७॥ सत्य सिधा म त्य पारं
न मेरे जोगी न लै अवतारं॥ तिसं मावे बाबै बीनां। अलेष पुरि
स च हां त्यो लीनां॥ ८॥ जोग न जोग पा भोग न तत रूपा॥ अ हिला गया
जम वारं॥ यो मे गद न्हा जंग लैं सु करं। फिरि फिरि लै अवतारं॥
९॥ यह संसार कुंबक की बारी॥ जब लग सरधा सकति सांसा
री॥ बोलिये हलां सो पाइये षलें॥ अब बोई ये ते आगें फले॥ १०॥
पहिलें कीया सु अब तुगतावै॥ जो अब करे सु आगें पावै॥ जे
सादीजे ते सालीजे॥ तातें तन धरि नीके कीजे॥ ११॥ अजपा जप
नां तप बिन तपनां॥ धुनि गहि धरिबा ध्यानं॥ जोग सहारं प
पत्र हार अैसा अदभुत गयांनं॥ १२॥ श्री गोरखनाथ जी की स
बी॥ मूलसी चो रे अवधू मूलसी चो। ज्यूं तरवर मेल्हं चडालं॥ अ
मी चो रंगी मूलसी चिया यों आंणी में ग तरिया पारं॥ १॥ माली लो
भाई माली लो। सींचे सहजि कियारी॥ उनमनी कला येक पक
पनि पाया। जो भंद आवागवंण निवारी॥ २॥ मारिबा तो मनम
स्त मारिबा। लूटिबा पवन भंडारं॥ साधिबा तो पंच तत साधि
बा॥ सेईबा तो निरंजन निराकारं॥ ३॥ आगनि सेती आगि निजा लि
बा॥ पांणी सेती सोषिबा पांणी॥ बाई सेती बाई फेरिबा॥ तब अ
का समझि बोलिबा बांणी॥ ४॥ ॥ श्री गोरखनाथ जी की सबदी
दो॥ स गो न हीं संसारि। चितिन हीं आवै बैरी॥ त्रिसै हो इ निसंक

हरिष में हस्या कंणेरी ॥ ए हस्यो कंणेरी हरष में ॥ येकलडो आ
रंणि ॥ जुरा बिछोहा ॥ जो मरंण स्युं ॥ मरंन बिछोहा ॥ मन ॥ ५ ॥ मन व
मेरा बीज बिजोवे ॥ पवंन बाडि लगाई ॥ चेत सिरावल पहिरे
बेम ॥ मिरघा षेत न स्याई ॥ ६ ॥ जोगी पसवा जो मत्ति ही नां ॥ ज्यां हं
न पाया नेवां ॥ काल बिकाले टाकर मारे ॥ सो वे कंणेर देवां ॥ ७ ॥
अकल कंणेर सकल बंधा ॥ बिणि प्रचे जोग बषांणे अंध ॥ बिं
णि प्रचे जोग न होइ रावला ॥ मुसकूट्यां कूंनि कसे चावला ॥
८ ॥ चोंस चंदा रा सूंसूर ॥ गिगनि मंडल में बाजे तूर ॥ सति का
सबद कंणेरी कहै ॥ त्रसहं स थिर का है न रहै ॥ ९ ॥ कहां सो
कैगै आंथवां ॥ कहां सो रैनि बिहाइ ॥ पूछै कणेरी स्वणि होना
ग अरजन ॥ पिंड छोडि प्रांण कहा समाइ ॥ १० ॥ सहजे आवं
नां सहजे गवंनां ॥ सहजे सहज न देप वंनां ॥ सहजे सहजे फिर
बाई सहजै सहजै चिरं काया ॥ ११ ॥ हालीपावजी की सबदी
लिष्यते ॥ अजपा जपो रे अवधू अजपा जपो ॥ सूंजो निरंजन
धांनां ॥ गगन मंडल में जो तिल षाई दे षि धरे वा ध्यांनं ॥ १ ॥ ल्यो की
आंषि चेतनि की पांषि ॥ दिवि रहे द्रिष्टि सूंनि कों फांकि ॥ आगम
अगोचर रहां ॥ ३ सूंनूं लहै ॥ एतत दे षि सिध हालीपाव कहे ॥
२ ॥ छोटा न मोटा चोडा न अकला ॥ हालीपाव बोलं वपांणी ज्यूं
पतला ॥ सूंनि सरूपी पवंन जैसे सलवा ॥ जो नो जावो अवधू फू
ल जैसे हलवा ॥ ३ ॥ अधर होता धरि करि आया ॥ धरि रहि कीया
विचारं ॥ निरंतर धुनि सूंनि हचानया ॥ हरि निरालंब निज सा
राध ॥ हंसा बरनो पहली होता ॥ सूषम धरे नै आया ॥ पिंड धरे नै
गुरू कों जांण्या तब आवागवंण मिटाया ॥ ५ ॥ हरि देषि आ
राधतो करते आसण मेदांनै डाही सिव पाइया जबलाधार

रमुषिसेदं ६ मन सा तो मेरे माता कहिये । पिता निरंजन निरा
कारं । गुरू हं मेरे गोरष कहिये । अतीत सबद ले ये पारं ॥ ७ ॥
॥ कीड की पाव जी की सबदी ॥ पिंड चलंता सब को देषे । प्राण च
लंता बिरला । प्राण चलंता जे नर देषे । ता सगुरू में चेला ॥ १ ॥
कहां बसे गुरू कहां बसे चेला । कौंण सुषेत्र कौंण स्थ मेला । अे
सा पंन कथो मेरा साई । गुर सिष की कौंण बोलषाई ॥ २ ॥ अर
धें बसे गुरू मध्ये बसे चेला । त्रिकुटी षेत्र अलाट तहां मेला ॥
अनहद सबद तहां उलषाई । गुरू मुषि जोति निरंजन पाई
३ । काया कंचन मन किस तूरी । सो ले गुर कूं दीजे । अपंअ
डल में मठी छवाई बा । जुरा मरण नहीं छीजे ॥ ४ ॥ पहले पह
रै सब कोई जागे । दूजे पहरै जोगी । तीजे पहरै तसकर जागे ॥
चौथे पहरै जोगी ॥ ५ ॥ सिधा गड बड छाडि दे । अनहद प्याला
झेलि । बूंद समानी समंद मे । सो बूंद ले षेलि ॥ ६ ॥ पीर संडारे त्र
षिये । मन से तूरं मचो । जती सती की पारिष्या लाने थिर रहं
ता ॥ ७ ॥ रात्रि गई अब राति गई । बालक ये कसु कोरे है कोई
नगर में सूरिवा । बालक कादु षनिवारे ॥ ८ ॥ श्री धुंधलि
मल जी की सबदी लिष्यते ॥ ढोरमी पाटण ओंघापड़ आति
[illegible] की सबदी ॥ आइस जी आवो । बाबा आवत जाचब
ऊत जुगादी गा । तब कछु न आया हाथं । अब का आवणं सफ
ल भया । पाया निरंजन सिध का साथं ॥ १ ॥ आइस जी जावो । बा
बा जे जाया ते जाइ रहेंगा । तामें कैसा हासा । बिछुरे न बेला मरण
ड हेला । को जाने कित बासा ॥ २ ॥ आइस जी बैठो । बाबा बैठा गभी
उवा बैठा । बैठि उठि जुगादी गा । घरि घरि रावल भिष्या मांगे । अमी
महारस पीवा ॥ ३ ॥ आइस जी उठो । बाबा जे उठे ते इकट गा उ

ना॥ स्यंन्नसे माधिलगा ॥ ऊभा रहै कौंण फाइदा॥ जे मन त्रै मैं
नाई॥४॥ आइसजी आभा॥ बाबा जे आभा तिनि॥ हए पंचगा॥
नौं दरवाजा ताली॥ जो गुरु गति करि स्यंन मंधिला॥ पंच पंची
सौं बाली॥५॥ आइसजी सोधौ जिं॥ बाबा जे सूवा तै षरा बिगूता
जन्मागया आस्वहास्या॥ काया हिरणी काल आहेडी॥ हम देषत
जुग मास्या॥६॥ आइसजी जागौ॥ बाबा जे जागे ते जुग जुग
जागे॥ कहां सूणां सो केसा॥ गगनि मंडल मैं ताली लागी॥ जो
गपंथ है ऐसा॥७॥ आइसजी मरौ॥ बाबा हंम तौ मरंणां रुम्ह
नी मरंणां॥ मरणं सब संसारं॥ सुरनर गंण गंध्रप पनी मरंणां॥
कोई बिरला उतरै पारं॥८॥ आइसजी जीवौ॥ बाबा जे जीया
ते निति ही जीया॥ मास्या ते सब मूवा॥ जो गुरु गति करि पवनां
साध्या॥ सो अजरावर हूवा॥९॥ आइसजी रमौ॥ बाबा रमिया
ते तौ मनवै रमिया॥ औरवि रमिया जम का ला॥ हम तौ जोगी निरंत
रि रहिया॥ तजीया माया जाला॥१०॥ आइसजी फेरौ॥ बाबा जे
फेरै तौ मन कौं फेरैं॥ दसवै दरवाजा घेरैं॥ अरध उरध बिचि ताली
लीलावै॥ नौ निधि अष्टसिधि मेरैं॥११॥ आइसजी धंधै लागौ॥ बा
बा गोरष धंधै आहि निसि॥ दूक मांवि॥ जो गुरु गति सूं जागौ॥ काय
ब्याल का सै हम देष्या॥ तातें नाथ निरंजन लागौ॥१२॥ आइसजी
६ देषौ॥ बाबा ऐहां सौ दीठा गहां सो दीठा॥ दीठा सकल पसारं॥ उल
टि पलटि निज तत्त चीन्हिबा॥ मनसूं करिबा बिचारं॥१३॥
चूंण कताथ जालो सवदी॥ काकडा करे मकरंदो आवधू॥ बाई
चले असमानं॥ सूंनें देवलि चोरपई सो॥ वे तौ रे वेचनहारं॥१॥ सा
धी सूधी कै पुर मेरे॥ बाई सूंषि दोगगनि मैं फेरे॥ मनका बाकुल चु
णि यां षेले॥ साधा उपरि क्यूं मन डोले॥२॥ बाई बंधा सयल जुग॥ बा

ई किंनकूं न बंध बाहरि कूंणां ठहि पडै जौ रै कोई न षध ३
नी चे षे ज्यों नीचा पाणी ऊंचै का ति सम्रूवा सद्गु बिचोरे व्ब
डक दियें दिनका बडा न हूवा ४ ॥२०॥ [illegible]
[illegible] देवल तयें दिसतरी सबकू आदेष्या जो र नादी बेदी
बकू मिलैं परि तेदा मिलैन को इ १ देवल निहं केवल त्या
स्मार्ति त्रिति ले बोलि पांन रतन की कोथली कारूं पारिषश्र
गैं षोलि २ देवल जिस्या बंध दै बकू बोल णां निवारि सिध
साधिक स्यूं संगा करि सतगुर पांन बिचारि ३ पारिष नरत
हां पटतरै सबदां मोल न तोल देवल देषि बिचारि करि तो
बोली जे बोल ४ [illegible] देस वज्रा
साहरातिरू संघ चढ्या बन मांहि हस्ती पाषर मेल्हि करि मन
स्यूं रूकूं णजाहिं १ सो कै तो हाथि न आवई जो गो तो ताग
जाय मन हांसै तो क्रूरणं ज्यूं घुणका ठहि सार २ राजा पा
ये राज मैं अरू पंडित कोटि अनंत मन का जीत्यां बाहिर
सबकूं आदेष्या जंत ३ पृथीनाथ जिं नि मन अपणां बसि कीया
तातैं बडा न कोइ अरूसवि तीरथ कोटि जिग जो के दरसंणि
फल होइ ४ लोहा कीकीमति नहीं जो कंचन कूं चाहै पोह
का जित पकैरे काटि गांडर कूं गाहै ५ निसपती कूं घर तजे
डिंत कारि दरसंणपै से गुरू सूं परहापरिव कूदि आगें होइ
बैसै ६ पृथीनाथ बिचार बिणि सब षोषै ही बूडंत सहज
सहज न बिंद ही ताकूं क्यूं मेटै जमवंत ७ कंमल दूवादस तरैं
अग्नि बकू प जलै रवि ससि गात तत्त सांण जागै रैंणि पहा
पडे काल सातीम्रिटे प्यंड कूं छोडि प्रांण कबकू नत्ता तो ८
असी घरणी धरै सहजि लै निसतरै नाक बक बार चे देह की

जे।।गुरुसाषीकहेसिषसोईगहै।।इंणिबिधिबांणीजीवंबिजा
जे।।९।।संनिमहिरिबसे।।त्रिचिकालहोइसे।।उलटिबो।बई
आपषाया।।ग्रझिरेसोजगीदेवआंगेषडा।।रहंसिरहंसिदेई
रैनादबाया।।१०।।नागआसंणकरैस्योपुरीसंचरै।।सुनिमेंधु
निरहंनादबाजे।।अषंडदीपकजोरै।।ब्रह्मगोटिकेरैपंच
जनबैंगयेकछाजे।।११।।पंचदलमोडिबाकायागढतोडिबा
अंहिंसारूफिबामारिमीरां।।आपकूंमेटिबाब्रह्मकूंत्तेटिबा
गगनिआसणकरिहोयथीरां।।१२।।प्रिथीनाथपारसअव
घटि।।घटहीसीतरिलोह।।बिमलगातिकूंउपजे।।जिनिहृ
बिषैकामोह।।१३।।प्रथीनाथघरकारंदमें।।आपणवायां
जांहि।।लादणहाराचलिगया।।गूंणिरहीघरमाही।।१४।।प्रि
थीनाथरंडाकेबांधेमरैहिं।।छाडिनसकंहीसाथ।।पालिबां
दरवैजेबडा।।ज्यूंबाजीगरकेहाथि।।१५।।जेसंमझैतेनिसतरे
आंणसंमझेबहिसंत।।अवसरिनीरथकोटिजिमध।।जहांबिलं
बहिसंत।।१६।।चौंडनाथजीकीसबदी।।धरंणिनबरसिआ
कासनभीजे।।बंचेवकालकायागढछीजे।।मूलबंधदेरोकै
बाइ।।ताजोगीकूंकालनषाइ।।१।।चालोअवधूनमिकीबा
ट।।मूलकंवलकोरोकोघाट।।दोस्यूंहंसयेककैरासि।।तोनप
डेसिधकालकीपासि।।२।।जबलगबाइनचढेआकास।।तब
लगसिधनहींप्रकास।।तबलगनादबिंदकीहांणि।।तौलैसी
कालसिधकूंजांणि।।३।।अवधूसोजोगीअहंकारिनछीजे
राषेबाईधरानहींबूझे।।नाईनीजलेगगनिसंमोवै।।सो
५ थासोइफिरिहोइवै।।४।।अवधूअहंआनिमेंहोमेंपंच

नाथ

जोगेस्वर साषे ॥ ५ ॥ सो अमर है बाइ थिर थापै ॥ लिपै नहीं ताहि
पुंनि न पापै ॥ अषंड मंडल मैं बाजे नाद ॥ करे कोंण संभू जोगी बा
द ॥ ६ ॥ अवधू बरिषे अगनि अषंडित धार ॥ निपजे हीरा अग
ण हजार ॥ नहीं तहां काल कर्म का लेस ॥ जोगी तहां अधात्म
देस ॥ ७ ॥ अवधू काया मांहीं कंचन देह ॥ तासु षिबरस संग व
नाऐ ह ॥ पलटि जाव ब्रह्म तहां होइ ॥ चंद्रनाथ तहां काल न
कोइ ॥ ८ ॥ पवन ही प्याला पवन अहार ॥ पवन बंध जोगी आ
चार ॥ रोकै मूल अगनि चंमंकै ॥ तो तोनि बंध का लेसु रस षे ॥
९ ॥ तो नि बंध का उतें मतांतं ॥ सो षेर क्त पीत अरू मांसं ॥ सो षे
तो नितला पंषाल ॥ जल बाई लै करे पषाल ॥ १० ॥ जब बाई लै
कै संजाल ॥ मूलबाइ का तोडे ताल ॥ तो निषिद्र लै ऊपरि ज
डे ॥ तो मूलबाइ आकास हि पडै ॥ ११ ॥ जो वेण पवन सुनि कूं
चरै ॥ मूल कें वज्र मटुकी मैं धरै ॥ तो मद अगनि की कूटे बाइ
थिरि है जोगी काल न षाइ ॥ १२ ॥ मूल कंवल ऊपरि होय
बाइ ॥ नीची जाइ न ऊपरि आइ ॥ तिहि आडी जल मल कौ
जाल ॥ सोषे बाई तौ बंचे काल ॥ १३ ॥ जिहि की पिसे न बाचा
बाई ॥ ऊंनमनि ताली गिगनि समाइ ॥ गिगनि मांहि जे जोगी
चढै ॥ तो चारि बेद बिन दे ष्यां पढै ॥ १४ ॥ आत्म जोगी पवन
अभ्यास ॥ चारि चक थिरि तेले स्वास ॥ चारि चक की घंटै न
इ ॥ चंद्रनाथ तो काल न षाइ ॥ १५ ॥ फूटै बाइ न आवै जोग
होइ अतीत हसावै लोग ॥ इसंण पहर्यो कंदर मांहि ॥ जोगी
निहंचल ऐक हूं नांहि ॥ १६ ॥ जोगी सदा मुक्ति की रासि ॥ अरु
काल को काठी पासि ॥ अकल पती षबि सास अधारी ॥ सहि
समाधि रहणि हमारी ॥ १७ ॥ साधै करौ कोटि जिग दांन ॥ करैषी

तीरथमंनां॥ सिधिबिनांनहीं मोषा है रे॥ सिधमनिषदेता
रे॥८॥ कायासोनेंसिधसुनार॥ आरत्नश्रेंमिजगावणहा
॥ताहिंश्रमिकोलागोपास॥ अमिनिजगाईचकेमंकस्यास
॥९॥ अथनृपषनृचाणजोगग्रंथलिष्यते॥ चौडेरहेनब
तीजोवे॥ चिंताकरेनचिंतामाकेसूषारहेनधायासोवे॥
कांमणिकरेनकांमंहिंमोवे॥१॥ बेगरहेनदिसंतरिडोले॥ सू
निगहे श्रेनबाहरिबोले॥ मायातजेनमायालागे॥ पोंडेसोच
नमंसो जागे॥२॥ त्रिगुणरहेनश्रुगुणचाले॥ सोगेनाहिन
हायहिघाले॥ नचबेरागनहीमग्रहजेला॥ सबसूंहरिसबनि
सूंमेला॥३॥ नतोदिनकूंदिनकरिदेषै॥ नतोरातिनहींतमपे
षै॥ नकहै सूरनहींनहींचंदा॥ नतोडमीनकरेआनंदा॥४॥ क
रेअजमासिनछाडेचेला॥ नतोतीडनरहैअकेला॥ दयाक
रेनअदयाआवे॥ देपदेसनसबदिढआवे॥५॥ नतोपापनपु
निबिचारे॥ नतोकीवतिनहीसोहारे॥ नकैअसीनडमदेको
ऊ॥ नतोसांवनकरेअताऊ॥ निमलरहेनकरमलगावे॥ ती
रथतजेनतीरथिआवे॥७॥ पषकूंतजेनपषकूंधारे॥ आो
चलेनआवेलारे॥ नतोलोभनहींनिलोभा॥ सोसासुषीनदु
षीअसोसा॥८॥ जंमकेजाइनसुरगसनेहा॥ अदिष्टिरहेनध
रैदेहा॥ सोवेमूलनमूलहिराषे॥ कुबचंनकहेनसबचत
नाषे॥९॥ नतोहींदूनतुरककहावे॥ अलहकहेनरांमसम
वे॥ मारैसूरनगाऊबिरोधो॥ नतोबोधनहीअनबोधे॥१०॥ नतोनिषि
लक्षोरहेनमारकबावे॥ नतोरोजनहासीसावे॥ ११॥ मुक्तारहै
हींआचार॥ बंछेमुक्तिनपारनउलेवार॥११॥ मुक्तारहै
धणिबोध

अजोगी॥ न सो जोग न हीं सो जोगी॥ १४॥ देवी तजे न देवी पूजे
सिणमें जाइ न रिण बिणि झूकै॥ कै अ सवार न पालो चालै स
बकूं है ते न घा वें हा घाले॥ १२॥ सो जोगी ईस्वुर की काया बंछे
घांम व बैसे छाया॥ ऐसे पुरिष निरंतर बासी॥ न हों धरा न ही
आकासी॥ १४॥ अ व धूं ओहि बिधि रहेणि हमारी॥ हलका
न हीं न हीं हम मारी॥ नां हंम अस रन काल पासे॥ नां हंम म
रि न ही हंम पासे॥ १५॥ ऐसी रहेणि पुरिस जे जांणे॥ चंदना
थ सो नाथ बषांणे॥ ऐसा गांन हमारा भाई॥ नां हंम संघ
हो हंम माई॥ १६॥ मुकंद नारथी जो कोसबदा लिष्यते॥ कहां
ससि कहां कमोदनी॥ कहां रवि कहां कमल॥ कहि मुकंद हा
रि नांव का लागा प्राण अमूल॥ १॥ जे बेधे ते चंदन भये॥ अनेब
घे भये भुवंग॥ कहै मुकंद ते न रंत्रि बिष भये॥ जिनि पाया
सीतल संग॥ २॥ लै लागी त्रिमल भया॥ मल बिष राले धोइ
कहै मुकंद गुर ग्यान स्यूं॥ कोई कोइ उजल होइ॥ ३॥ अंतरि
मिले स मिलि रि मिले॥ अंन मिलते न मिलां हि॥ कहै मुकंद म
न मधकर भया॥ अंन बंछित फल षांहि॥ ४॥ जे सजन अवां
णें सुणें सुनैंनें देषे आइ॥ कहै मुकंद आनंद भये॥ सो मा
दीपक ये क अटल संसार॥ बिनिबा
वी बिनि तेरा॥ चकं लोढूं णंदे तन भया॥ धनि मुकंद य कपेल
द॥ जे मुनि पंड अरबुद कष्या॥ सुबेद पुरानां हरि॥ मिलेस
माया काटि करि॥ रदेस कल नर पूरि॥ ७॥ काचा गाच को देक
रो॥ बिनि आंषिन को देव॥ कहै मुकंद सुगात्र मियूं देवस
अलष अभेव॥ ८॥ कंत जु चलै जिहाज चढि साइर पैला पा
र॥ कहै मुकंद सोई पाइ है जो बिधना लिष्या लिलार॥ ९॥ म

नसमुंद्रमनसालहरि।।बूडेबकरुतअचेत।।कहैमुकंदततहांखि
पक्षमेंतो।।जहांडबध्या।।केहेत।।२०।।येडबधाजाकेमनिबसै।।कि
तओरैमनिओर।।अंजेनमंजनबाडिकरि।।घरिघरिमांगें
कोर।।२१।।कोरजमांगेंबापुरो।।छोटेबाटैमांहि।।कहिमुकंद
पुरक्किपारो।।तेईहूंतरतिरांहि।।२२।।कहिमुकंदजगचाल
णी।।कंतकंतरायेबांनि।।तुसतुसरापेसेतिकरि।।ताथेंतनकी
हांनि।।२३।।साइरपारीकोनगनि।।नसकोरतंन।।कहिमु
कंदतेनरमले।।चलैजतनिजतनि।।२४।।मनसबटैसैंबलर
च्यो।।हेमिबडेबडेफूल।।कहैमुकंदगुरग्यांनबिणि।।मूकतेपि
रैंसमूल।।२५।।सवासयांनपसथा।।पढिगुणिअबसिहे।।क
हैमुकंदरग्यानमला।।पंजरिपडेनको।।२६।।कथनीहोतसक
थिगाये सुमिलीज्योसबको।।२७।।कहैमुकंदकरणीबिना।।क
थणीसिधिनहोइ।।२८।।कहैमुकंदकलिकेदरसणी।।मोटेमो
टेधीग।।केवलपानबलावंता।।फिरिफिरिमांडैसीग।।२९।।
रागरामकली।।बाकुडोनेंबांडोगोपीचंदराजा।।बहोबांकु
डिधेलागरिआवोजी।।अंथ्यानेंनेजनमनचंगयाराजा।।गा
वसागतिसूंपावोजी।।टेका।।मालकिनिडानावैरेरांणी।।म्हारेम
निराजननावैजी।।जोगजुगतिनोराजअंम्हारोरेअवेचल।
कंछूयावोजी।।१।।आगरचंदणनीमढीबंधाऊं।।सोनांनांदु
संनेदंनाजी।।कहोतोरूपानांपत्रघडाऊं।।सोनांनीसीगी
नांदेजी।।२।।मागनिमंडलमेंमढीअम्हारी।।चंदसूरनांदूवा
जी।।सहजसीलनांपत्रहमारे।।अनहदसींगीनादेंजी।।३।।
कूरकसरतुम्हेजीमताहोराजा।।सारडीकिंमघायेजी।।उप
रियानीनाबीडाअ।। नोपो ।।४।।

अजोगी न सो जोग न हीं सो जोगी ॥ १४ ॥ देवीत जे न देवी पूजे
रिणमे जाइ न रिण बिणि ॥ म्रे ॥ के असवार न पालो चाले
बकूं ह ते न घा वे हा घो ले ॥ १२ ॥ सो जोगी ईस्वर की काया ॥ बं
धं म बंबे से छाया ॥ ऐसे पुरिष निरंतर बासी न तो धरा न
आकासी ॥ १४ ॥ अवधू अहि बिधि रा हे णि हमारी ॥ हलका
न हीं न हीं हम भारी ॥ नो हम अ सरन काल पासे ॥ नो हम
रि न हीं हम पासे ॥ १५ ॥ ऐसी रहणि पुरिस जे जोणे ॥ चंद्र
य सो नाथ बषाणे ॥ ऐसा पाप न हमारा जाई ॥ नो हम संघ
हीं हम गाई ॥ १६ ॥ मुकंद ना र्थो जी की सबदी लिख्यते ॥ कहां
ससि कहां कमोदनी ॥ कहां रवि कहां कमल ॥ कहि मुकंद
रि नांबे का लागा पाण अमुल ॥ १ ॥ जे बेधे ते चंदन भये ॥ अनबे
धे भये भुवंग ॥ कहे मुकंद ते न रत्ति बिष भये ॥ जिनि पाया
सीतल संग ॥ २ ॥ लै लागी निर्मल भया ॥ मलबिष रालै धो
कहे मुकंद गुर ग्यान स्यूं ॥ कोई कोइ उजल हो ॥ ३ ॥ अंतरि
मिलै सो फिरि मिले ॥ अन मिलते न मिलांहि ॥ कहे मुकंद
नम धकर भया ॥ अनबंछित फल पांहि ॥ ४ ॥ जे सजन अवं
णे सुणे ॥ सुने नैनो देषे आइ ॥ कहे मुकंद आनंद भये ॥ सो म
मो कही न जाइ ॥ ५ ॥ दीपक ये क अटल संसार ॥ बिनि बा
ती बिनि तेल ॥ चकलो हूं ॥ णं उदे त भया ॥ घनि मुकंद यू छेल
॥ ६ ॥ जे मुं न्यंद अदबुद कथा ॥ सुं बेद पुरा नां हरि ॥ मिलस
माया का टिकरि ॥ रहे सकल भरपूरि ॥ ७ ॥ का चा गाच को देड
रे ॥ बिनि आंषिन को देव ॥ कहे मुकंद ज्ञातर मिंयूं देष स
कलष अभेव ॥ ८ ॥ कं तज चलै जिवा ज चढि ॥ साइर पेलै प
र कहे मुकंद सो ईपा इहै ॥ जो बिधना लिष्या लिलार ॥ ऐ

नसमुंद्रमनसा लद्दरि॥ बूडे बकु वच्छ बेरा॥ कहै मुकंद तहां लि
पक्कमंते॥ जहां डबध्या केहे ता॥१०॥ ये डबध्या जा के मनि बेरा॥ मि
तऔरैमनिऔरा॥ म्वजनमजनछाडिकरि॥ यरियरिमांगों
कोरा॥११॥ कोरज मांगो बापुरा॥ हाटै बाटै मांहि॥ कहि मुकुंद
पुरक्रिपा बिना॥ तेई हू चरतिरा दिा॥१२॥ कहि मुकुंद सुगा चाल
णी॥ केनकंचन रालै बांनि॥ कुसंग रचेसैति करि॥ ता थै चनकी
हानि॥१३॥ साइरषारो कोन गंनि॥ राषिन सक्यो रतंना॥ कहि मु
कंद ते नर भला॥ चलै जतनि जतनि॥१४॥ मन मस्त वटै सैबलर
च्यो॥ देषि बडे बडे फूला॥ कहै मुकंद गुरपांन बिणि॥ सुकतेफि
रे समूला॥१५॥ सत बासयां नप सबा॥ कोपढि गुणि अवसिहे थक
है मुकंद सांसा सला॥ पजरि पडे न को॥१६॥ कथनी हे ते सुक
पि गये सु मिली ज्यो सब को॥१७॥ कहै मुकंद करणी बिना॥ कि
यणी सिधिन होइ॥१८॥ कहै मुकंद कलि के दरसणी॥ मोटे मो
टे धीगा॥ केवल पान बना बंता॥ फिरि फिरि मांडे सीगा॥१९॥
राग रामकली॥ बाकुडो नैं बांडो गोपीचंद राजा॥ बहो बांकु
डि धेला रि आवो जी॥ सं ध्याने सो जनमन चंत्या राजा॥ सा
वत्ता तिसूं पावो जी॥ टेक॥ मालकि निंद्रा नावे रे राणी॥ म्हारे म
नि राजन भावे जी॥ जो गजु गति नो राज अम्हारो॥ अब चल
कं धूपावे जी॥१॥ अगार चंदण नी मढी बंधाऊं॥ सोना नां तु
मैं नैं द्यं बाजी॥ कहो तो रूपा नां पत्र घडाऊं॥ सोना नी सींगी
नां द्यं जी॥ गगन मिंडल मैं मढी अम्हारी॥ वेद सूरनां द्यं बा
जी॥ सहज सीलनां पत्र हमारै॥ अनहद सींगी नाद्यं जी॥३॥
कूर कसारत म्हे जी मत ताहो राजा॥ नारडा किं मषास्यो जी॥ त्र प
रिषा नी नाबीड अआरोगता॥ बेली नां पान किं मषास्यो जी॥४॥

कूस्कट्ठर म्हारै सास उसास कुरकट अम्हे तप्पा लाजी ॥ पांन
ध्यांन नां पांन अम्हारै सबु विधि मंई या पालजी ॥ ५ ॥ सोडि
तुजाई त म्हे पोट त्ता हो राजा साथ रहै किम सोस्यो जी ॥ गीद
उसी से नै सब दिसि सेवगा षाय रहै किम षास्यो जी ॥ ६ ॥ साय
रि सो सांते राणी षाप रिषा स्यां ई दउ सी से देस्यां जी सोडि तुल
ई म्हारै सतगुर बाणी सो मीसि ज्या करिस्यां जी ॥ ७ ॥ कोंण तु
म्हारा राजा चरण पषालिसी कोंण करैतत बातं जी कोंण
उ म्हारी सेज पथरिसी कोंण फुरविसी तांत जी ॥ ८ ॥ राणा
दे मारा राणी चरण पषालिसी मन सा करै तत बात्त जी कं
या अम्हारी सेज पथरिसी अलष पुरबिसे तातजी ॥ ९ ॥ सो
ला से राणी नैं बारा से कन्या ते न्है होंनि सास डे पड़ि ज्यो जी ॥
जे न्हैं म्हारा राजानो राज बुडायो सो जोगी मरि जाज्यो जी ॥ १० ॥
जलंध्री प्रसादे राजा गोपी चंद बोल्या म्हारा गुरनै गालि न दी
ज्यो जी सतगुर म्हारा मस्तक ऊपरि श्रौर सलेर डो की ज्यो जी
॥ ११ ॥ साध सुषी हो राजा नरथरी महा दुषी संसार अपार
हरि का साधवा प्रदुष काटणहार टेक कोंण दुषां सूं हो रा
थे नी सस्या अन धंन त्यागो तेडार मांता मंगल होद ।
ता लिखि मी दे दे कार ॥ १ ॥ राणी थारे पिंगुला हीरा मांडी पोलि
सो नैं ढोल्यो थारे पालिंगो चहु दिसि पवन झकोलि ॥ २ ॥ राणी
म्हारै सष मनां हीरा का या किरी टि गुर का सबदां बेधिया
हरिजी स्यूं संगत्ति जोडि ॥ ३ ॥ राणी जाणी सूली सार की त्रास्य
हीन नहीं जाइ ताता धेसलगाइ बोरही रांम ल्यो लाइ ॥ ४ ॥
ताता तोजन राजा जी कुमजी मता कर त्ता चंदण षोलि षास
मुल मुलपहरत्ता कैर सुषडं लाल लेमोल ॥ ५ ॥ कर मैं डोवी

गलमें मूदडी॥ कीया भिष्यारी का भेष॥ नांव निरंजन का रांणी
गरू गोरषनाथ दीयो उपदेस॥६॥१॥ ये करसा फिरि आवो रा
जा भरथरी॥ नाथ जी णों देष॥ सरसंग्राम में रांणी कूं फिरां सिरप
रिला॥ जैनाथ अलेष टेक॥ धा॥ हदे देरो वे धो लहरां ग्रगट पु कोरे
लेमा॥ कर मांडे रांणी बीनवे॥ थानें कोंणों सिषायो जोग॥१॥ आप
णां सवार थि रांणी सब कहे॥ मेरा समान को इ॥ संगी सिरजंनहा
र है॥ तातें फिर ण न्हो रा॥१॥ घोष अवासा रांणी सात से॥ सेजडी
संवारें रंग॥ केसरि किसतूरी चोवा॥ चंदना॥ वोलगडी चंवरक
रां॥२॥ घोम अवासा रांणी गिरकिं दरा॥ सेजडी सिला सुहाव
नो से चित चंदन लाये॥ वोलगडी अनंत सूनाथ॥३॥ धावो न्हो ता
जी अवलष बंधिया॥ मों नरकिल कें लाष॥ दीवांण न सो है राजाजी
तुम्ह बिनां॥ वी घडियां सत लाष॥४॥ चेत मितां जी रांणी हम च
ढि चल्या॥ नौ वरस गुण गाजे हाथी॥ दीवांण बिराजे रांणी म्हारो सं मि
में॥ चौ घडियां बकसाधि॥५॥ नौबति नबाजे राजाजी दरबार में
चौहटां चौबीसां हट ताला॥ व्योपारी विंणजे न ही॥ रूरवे साहू
कार॥६॥ नौबति निरंतरि रांणी बाजत रहै॥ चौहटां चौबीसां
व्योपार॥ साहूकारां री राबिणजिया॥ सिरसाटे व्यौहार॥७॥ नसं
दरि संघासणि राजाजी तुम्हे बेसता॥ मांयेणग वपु रा णा॥ माद
रि नां चेरम अलापिजे॥ बेणि बजावतदे हैं संजांण॥८॥ गिर चवि
सिष रांरांणी म्हारो बेसणों॥ मांडणपां च पचीस मौरा नां चें कोइ
ल सुर कैरे बेणि ऊंम कें नौ बीस॥९॥ सब अंश सपूरण राजा भ
रथरी॥ लागी प्रेम समाधि॥ सब मिलि राजा रांणयो कहें॥ यरांप
१८५॥ भावंत भंणि रांणी मेंसर कीयो॥ सेवा सि

हेमन्तु म्हमूरति राजा पेक थी। जीव पेक घट दोय। कहे नैक
हा विचारियो बात कहे तुम्ह जोइ। ।१३। श्रेण जातो बिषय
ईयो। जाणिर कियो तमालि। फिर पाछे पछि ताई ये। पाणी
पहली पालि। ।१४। श्रेति श्रतिमां ने राजाजी तुम्ह बोलिया
बह किन कीजे बात। सुंदरि सो है नौ जो बनो। श्रेग श्रेगी
श्रेमीच बात। ।१५। नगावेत नरों से राणी हंस बोलिया। नारि
त्रक की पानी। जंम की पासी सूली सार की। श्रेसी कहा हं
म जाणि। ।१६। होइ निरास सब बाकुडी। कुरखे है। दुष पाइ
ब्रह्म पितातु म्ह मावली। निष्या द्यो हु घरि जाइ। ।१७। जुग
ति जोगी लव राजा नरथरी। गोरष दया दत्त पाय। पूरण ब्र
ह्म का लिया। तहां रह्या लपोला इ। ।१८। ३। न्हैलो न्हैलो हो।
सिष [illegible] जोगी। चित्र नी पूतला बलिया जी। टेक। बारह
बरस [illegible] सणबैठो। षुध्या मिटाई त्रिषा नं सांई जी। जो
गा [illegible] सिधि पाई। नैणां नो दन श्राई जी। १। काली
नै [illegible] सवी। चलती नो चंचल चेला जी। जोगब्या
ड [illegible] जो मण मरण बिगोइला जी। २। बनषंडि
रहं [illegible] म परुरुनी श्रासा जी। नणंत गोर
षना [illegible] ।३।७। [illegible]
नग्री त्रलेषद
दारजी लिखा

बसेगढकाया॥३॥रहणिहमारी तषतसणंजो॥मनपवना दोउघोड़ा॥सबदहंमारा षरतरषांडा॥जिनिजमसूंकीया निबेड़ा॥४॥गगनिहमारा बाजा बाजें॥मूलमंत्रदोयहा थी॥संसाका बलगुरमुषिलोद्या॥पचगुरिषमेरेसाथी॥प जुगतिहमारी छत्र सिंघासंन॥महासक्तिरिणवासं॥कहै त्रथी नाथतेपुरुषबिचषण॥जिनिमंदिर रच्या प्रकासं॥६॥ वड़ामेवासाकासाजी ती॥मनसूंकरिहथियारी॥कहैप्रथी नाथमेरी लहोकटक री॥जिनि मुसिया सकलसंसारी॥७ गणंश्रपजिनिसबेसिंघारी॥दलबलकेअधिकारी॥सोहं दरहंमबसिकरिलीया॥जिनिजीत्याबलसारी॥८॥मनजी त्या जिनित्रिभुवनजीत्या॥जीतासुदरकाया॥सेपावदेजो राजीत्या॥नीतीऋ प्रबलमाया॥९॥उत्तपत्तिषलेदोउजी त्या॥कहैप्रथीनाथयेसारी॥निषमफूलकरिगुरिषप कंता॥तिसघरिरहणिहमारी॥१०॥जोपदकथ्याजोगबासि ष्ट घरि॥यहरामा ऋवता॥तिनती आयरगुरकीया॥तिरि बेकुंसंसार॥११॥संहस्रनामसकरिकथ्या॥ब्रह्मबोल्याहूंसा ब्रह्मापांनसुषदेवा॥कह्ह्यो गीताकथी॥नातिनजनके सेवा॥१२॥बेदहोयब्रह्माकथ्या॥नारदकथ्यासुकायं॥जि नउपदेसोधूसया॥सोजगत्रासबज्ञासाहि॥१३॥प्रथीना थनांमदेवकदिकाकथ्या॥क्याबोल्याहेपावंत्त॥जिसकं रणीथेपदस्या॥चिंनमेंपकुंत्तालंका॥१४॥राजाजनकस या जिनिकाकथ्या॥क्याप्रहलादकबीरा॥सोपदकाहेन षोजिये॥जिहिं उधरेसरीरा॥१५॥मारकंडेमुनिक्याकथ्या क्यापदगोरषनाथ्या॥जिसकरणीसूरणसया॥ताथेतत

हंमतुम्हम्रतिराजायेकथा॥जीवयेकघटदोय॥कहेनैंक
हाबिचारियो॥बातकहोतुम्हजोइ॥१३॥अंणजांणंबिषय
डूयो॥जांणिरकियोउभालि॥फिरिपांछेपछिताईये॥पांणि
पहलीपालि॥१४॥अंति आनिमांनेराजाजीतुम्हबोलिया
बहकिनकीजेबात॥सुंदरिसोहेनैजोबनो॥अंगिअंगी
अंमीचवात॥१५॥लगावंतसरीसेरांणीहंमबोलिया॥नारि
त्रककीषांनी॥जंमकीपासीसुखीसारकी॥औसीकहीहं
मजांणि॥१६॥होइनिरासससबबांकुडी॥कुरखेहोदुषपाइ
बहलपितातुम्हमावली॥तिष्पावोंहघरिजाइ॥१७॥जुग
तिजोगेस्वरराजानरषरी॥गोरषदयादस्तपाय॥सूरंणअ
सत्रकासिया॥तहांरखवालेपोलाइ॥१८॥३॥न्हैलो न्हलोहो॥
सिधचोरंगीजोगी॥चित्रनीवूतलाबलिया॥जी॥टेक॥बारह
बरसतुम्हआसंणबोलो॥षुध्यामिटाईत्रिषानंसांईजी॥जो
गतणीतुमसबसिधिपाई॥नेंणांनीदनआईजी॥१॥काल
नैगोरासुंदरिसांवली॥चलतीनांचंवलचेलाजी॥जोगबा
डतुम्हराजबिलंब्या॥जोमणमरणबिगोईलाजी॥२॥बनषंडि
रहंतासासघरिसोवंता॥अलषगुरुनीआसाजी॥सणनगोर
अम्हेगुरुनादासाजी॥३॥७॥अथ
[illegible]॥ध्यानबिनिनंगी॥अलेषद
रवाजा॥सतसंतोषरजीरं॥पंचचोरगाहिपडदारजीतिब
तेजोगीबलबीरं॥१॥बिचारमंत्रीबेबेकपायक॥चितवे
तनिक्कटवालं॥नवलषघाटीमनलेरूधिबा॥तबजी
तिलियाजमकालं॥२॥बिबेकलपनांपगदेचंपी॥
बंधिबदाया॥कहैपथीनाथतबअदलितणी

मनश्रायाहाथ ॥१६॥ यहैजगतिजगावंतबसि ॥ त्रिषमं
सबपार ॥ प्रथीनाथअनंतमुनि ॥ यंजमैंकिंनधौंकथ
संगार ॥१७॥ जिसकारणिथेंबूडिये ॥ यहमनतनथेंभ
गा ॥ कहिधौंगोबिंदकबकिया ॥ परनारीस्योंसंग ॥१८॥
तंगपाजमनादई ॥ जाकीबदैअप्रबलधार ॥ यहैजगा
करिमांनियें ॥ जोघरिघरिकथेंसंगार ॥१९॥ कुब्यामदन
प्रगटकीया ॥ स्त्रतासरपजगाय ॥ यंनबाततनजतसतवे
रहैं सुपिनेंहांडिगिजाय ॥२०॥ आप्यांकाआंधाज्युधार
हीनप्रषे ॥ कानांकाबहराजोसबदहीनदरसे ॥ क्रि
काअधाजोमुरिषहीनमांनैं ॥ जिकाकामुंगाजोस्वा
दहीनजांनैं ॥२१॥ बाहकाकूगादांनकरिछूटा ॥ पांवां
कालूलाजिनिसतनटूटा ॥ जगतिकाहीनजिनिरांमन
पाया ॥ जन्मवृथासंसारमैंआया ॥२२॥ प्रथीनाथतेयोंह
गये ॥ जिनिहिनपायातेव ॥ जेसमझ्यातेनिस्तऱ्या ॥ कूवा
निरंजनदेव ॥२३॥ चेलाजुषीतौगुरपारलाजा ॥ बांहकाम
गानसेईयेराजा ॥ सबदहीनबंटैतौपटिबाकाषोटा ॥
गविछेविनसकेतौकिसकांमेमोटा ॥२४॥ जेपरिमरजा
बा तौजरिजाकमाया ॥ आपनसमझ्यानहीतौवृथा
या ॥२५॥ प्रथीनाथचेकतसेईयें ॥ जिनिकेपा
सिगायेंसचनांहि ॥ रूपंथीपालापडे ॥ उजड़नंग्रामांहि
॥२६॥ जेयडुब्रह्मअषंडितपद ॥ तौमरिमरिकाहेजांहि
जेयहब्यापकसरबमैं ॥ तौक्यातपतीरथमांहि ॥२७॥ ब
निबनिहांडेमुक्तिके ॥ तौपसूपंषीसेंसार ॥ मायामैंजेबू
डिये ॥ तौजांनकरयाकूपार ॥२८॥ प्रथीनाथयतनीब

तनमंदहौ॥ तिनकौंकाउपदेस॥ कापुरिसांकीनारिज्यूं॥ घ
रहीमांहिबदेस॥ १९॥ मनमुनैतैंयहतनसया॥ तनमन
हरिसैंसोइ॥ २०॥ जबहोयहफिरि जलकरिलौजै॥ तबहीवे
राहोया॥ २१॥ मनन बसिहोयतौहरिस्यूंमेला॥ हरिसेटेंना॥ वं
ता॥ जिनयतमाबस्तबिचारीनांही॥ आयबूथाजेजंता॥ ग्र
जैसैंतिलमैंतेलबसतहै॥ काष्टमध्येआगि॥ इहंमथनकरि
दीपककीया॥ तबकछूसूंकैलागि॥ २२॥ गथीनाथकहै
तेबिरला॥ जेनिजजपैंसमान॥ मनमनसाजबयेककरै
गा॥ तबहरिनहींन्यारा॥ २३॥ गथीकागुणदेहा॥ प्राण
गुणस्वांसा॥ ईकागुणस्वासा॥ देहतिमनमूलं॥ २४॥ अनी
लकागोला॥ ताहिपांचततलागे॥ तिनहीबसिकीया॥ जे
गुरमुखमानो॥ २५॥ कंथतग्रोगथीनाथ॥ यकअकथ
कहौंगा॥ यकहुतिनहीपाईयो॥ जिनियहभेदबजांणा॥
२६॥ यहमनजीतिकैंयहमनथरिकैं॥ धोबाउपरिचित
मकरिकैं॥ ज्यूंज्यूंआवेत्यूंत्यूंलेहौ॥ इंद्रीप्राणपुरिसकौंजा
णनदेहै॥ २७॥ गथीनाथकहैसबसंता॥ यहविधिपुरिषा
सिवपुरिजैंता॥ २८॥ जनमनहीअंकूरबिना॥ सइयासजोति
नांहि॥ तिकमाजांमहिबापडा॥ जिनकेसदाकलपनांमां
हि॥ २९॥ जततनरहैतौनेडानिपजै॥ स्तूमरनलासपेतां॥ ग
थीनाथकेमरिकैंओतरै॥ जेअमरसदासवेतां॥ ३०॥ मनपरंना
सबजगतकथतहै॥ तबकथैसबकोईयेपांचूंआत्मा
पांचोंपैंईयनका॥ कहांबैसेरहोई॥ ३१॥ सहगानेकैकंथै
सकलसंसारी॥ बोलतहैघटबेस्या॥ ५३

जलथल [illegible] उपसबहिनको आई पथीनाथ
अचेतगाहि [illegible] उनजाई ७० साधपुरिषचीन्हो
न्हो तेनहि [illegible] उपबिकूणायहेगति ज्योंबलि
यापताहि [illegible] पथीनाथसाधपुरिषको [illegible] यपश्च
नमनजा [illegible] हे तो आपनी [illegible] ७२ आराधेकूं
थ बिरोधे [illegible] न्हो उपनकोडि आवटे कहुबी
नकीन्हो [illegible] जिसपैउपजीयहे तहां साधूउपपावे तिम
धोषाघण [illegible] तहां निस्फलकों आवे ७४ अतिमानीकों
न्यं जिति आत्मानजीती तबक्या बेदनहोत जबेबलि
क्षेहोयबीती ७५ पथीनाथउपबिनि पटिमतिगारबो
[illegible] जिसठाहर साधनसंचरे तहांस्वांतिक्हांथेहोय
७६ सोनाकी कातिमासोनाकरिसूके सबदमेंतत्तसबद
[illegible] धोकेसेंबूझे ७७ बाईमाहित तबाय कहे धोकेसेंजा
[illegible] पाणीमथिकरिघृत कहे धोकेसोबिधिआणे ७८
[illegible] बंदहोपाइये जबया अरपारि तहिंगावेकथे
अधिक दिनेदिनेसंक्याबाढे ७९ क
[illegible] कोधावे जा होय
वे ८० पथी जबगु
[illegible] नागाई
मिले [illegible] ईमुषि
[illegible] करिजांणी
[illegible] साधपुरिष
[illegible] केमिले धू
[illegible] किसाश्रे

तीरथकेन्हांये। यतनौ व्रतफलहोय॥ साधकौ दरसंणपाये॥८५॥ साधूबोहिथ औनेपद। दरसनदेषेंपार॥ त्रिपीनाथकुलंमहै। तंनसाधौंकादौद्वार॥८६॥ साधपुरिषकेमिलें नरमकीसंकाटूटे॥ साधपुरिषकेमिलें। नाहितसकरलौंलूटे॥८७॥ साधपुरिषकेमिलें। दिष्टिबाहरिनहींआणें॥ साधपुरिषकेमिलें। आपआपापहिचांणें॥८८॥ साधपुरिषकेमिलें। दुषदूदरतानागे॥ साधपुरिषकेमिलें। नरमकीसूलनलागे॥८९॥ साधपुरिषकेमिलें। कुमतिदूरिदेवेसी॥ साधपुरिषकेमिलें। कहैकुबधामतिकेसी॥९०॥ प्रथीनाथसंगतिफिरया। बिश्रांम्योयहचित॥ अंधकारधोयाभिया। तनमनभयापवित्र॥९१॥ प्रथीनाथसाधपुरिषकौतेकाजांणें। धोषामांहिमिलिरहें॥ औरकेबिसवासंनमांनें॥९२॥ कयाबकबिद्यापढें। कहांउपदेसहिदीन्हें॥ येसबमिथ्याजांनि। बिनासाधकेचीन्हें॥९३॥ सबजग्यकलपतफिरे। हरिसकाचितनडोलें। संसेसूलनरहें। जबेमुषअंम्रतबोलें॥ सैंधिसौंचतहीफलदेय। क्षषहोयतजेनछाया॥ तिसठौंपसाधूरमें। जहांबाचासतिपाया॥९५॥ दरसनतेंपदपाईये। जेयहसाधूहोत॥ तिसमंयेमनलेमेलकं। जहांजुगारहतउदोत॥९६॥ यतउतकीदोयमेलि। साधकेबचनहांवर्डे। साधपुरिषकहाकाकरें। वेआपआपनपोंतंडे॥९७॥ साधमिलेंतेंसाधहोय। जविकरिलागोंसंग॥ जेसमझैतौदीपक। जघविलिपरेपतंग॥९८॥ कितदेउपजीबिनासाधकौकैसेंजोवाहिं॥ मनकूंजोतिनसकें। सबेपिछलेदिनोवहिं॥९९॥ प्रथीनाथदरसनबहौ। अंत्रिसो

न गुरु गोरष चीन्हां नहीं ॥ ते सब संपे पषांन ॥ १०० ॥ पद
लैसं भक्ति न पडे ॥ धका लागे ते जांने ॥ बिगरी उपरि सबै
तांहि ई स्तुर करि मानें ॥ १०१ ॥ ये हैगा ति सब संसार ॥ स्त्रिब
काम रमन पावहिं ॥ जे हरि सं मन ज्या होय ॥ तौ ब ह्मा कूं ब
छा चुरावहिं ॥ १०२ ॥ साध सदा ही मिलें ॥ मुगध कूं क्या सम
झावें ॥ तब महिमां अति करें ॥ जब ही बीप्रीति दिषावें ॥ १०३ ॥
कलह कलपनां पाप तिधि ॥ साध संताये कोप ॥ चांपे तें आ
गे षडा ॥ जो पद रहत अलोप ॥ १०४ ॥ बकाम चत्त वैरागी पानी स्त
रता मो षिल मंते ॥ बकास्तु रत्तान जांनां मि ॥ इह यात स्पर्जी
वने २०५ [illegible]
[illegible]
राग धमाली ॥ आज नगर मैं एक जोगी देष्यो ॥ बीरा गोपीचंद रे उ
ण ही रे रे लो ॥ टेक ॥ इ स ड़ा जोगी नें जाण न दीज्यो ॥ आंगणि म
ढी बंधा कं रे लो ॥ सोना रूपा की ईंट पड़ा कं ॥ मोती इन षो
लि चरा कं रे लो ॥ १ ॥ मोती माणिक बाई घर का ॥ हीरा
अनंत अपार रे लो ॥ हसती घोड़ा म्हारे आंगणि बहोता ॥
रवाड़ी माया रे लौ ॥ २ ॥ कौंन इ षां रे जोगी कांन फड़ाया
इ षां रे जोगी मुद्रा पहरी रे लो ॥ कौंन इ षां रे जोगी राज
त्यागो ॥ कूंण इ षां सी नारी रे लो ॥ ३ ॥ सतगुरु सबदां कांन
फड़ाया ॥ दसन मुद्रा पहरी रे लो ॥ माता रा सबदां देस इ लो त्या
ग्यो ॥ अमर कूंण कूं नारी रे लो ॥ ४ ॥ कूंण तुमारे पिता नणी जे
कूंण तुमारे माई रे लो ॥ कूंन देस रो राज करंता ॥ कूंन बहन
रा माई रे लो ॥ ५ ॥ राजा बहलोचन पिता हमारे ॥ मेंणावं
ती माई रे लो ॥ देस बंगाला को राज करंता ॥ चंपा दे बहन
रा माई रे लो ॥ [illegible] ॥

गीजी सचु मारी॥ म्हारो बीरो जो॥ किम होसी
ण वतीरै अत्र अकेलो॥ श्रोरन बंधु को इलो॥
रे हस सीघोडा। चितरंग अनंत अपारस्येलो
यां स्यैं॥ निसदिसि डोलै बालो रेलो॥ ८॥ कछौ
जगा को॥ बिकल भई मेरी काया रेलो॥ देस बं
रैमगा वो॥ एक जोगी दे गयो धाहो रेलो॥ ९॥ रा
यप कुंवा॥ थे लागा रबिलषा नो रेलो॥ नरना
डोलै॥ माता रै मन हरषा रेलो॥ १०॥ दरसण प
रै आयो॥ मदन मगण जिन हि जाण्यो रे॥ श्री गोपी
चंद राजन घणेरो॥ मल्हिं वाहे जाई रेलो॥ ११॥ रतनारंगा क
रै बिस्तरणं हथले वो किम जो अ्यो रेलो॥ गोपीचंद नै जल
धरी मिलिया॥ बांधानै ट किस तो डीयो लो॥ १२॥ ५६॥ अभिरं
जनाय स्वामी नमः श्री दयालजी सहाय॥ साखी
॥ ४७॥ साध॥ अचा का अबा की लिखत॥ जनहरि दास
सुष अंगम है॥ सो पिलहै ते संत॥ आरहस उस आनंद
सदा॥ बारह मास बसंत॥ १॥ रंमत हासै घोस हुआ॥
बाजै राग अनंत॥ चंदन पक पगुलाल ले॥ षेलै संत ब
संत॥ २॥ जनहरीदास बसंत रुचि॥ फुल्यो सहज
बाग॥ बिरज मांहा कौ विगसया॥ हरिजन षेलै
फाग॥ ३॥ जनहरीदास तहां जाइए॥ जहां बारह
मास बसंत॥ पान पुहुप जहां काल हो॥ षेलै संत
बसंत॥ ४॥ जनहरीदास बसंत रुचि॥ षेलै गोपी
ग्वाल॥ हरि सनमुष जहां का तहां॥ करि पुहुपन
की माल॥ ५॥ जनहरीदास बसंत रुचि॥ प्रगटे रा
म अगाध॥ प्रेम जीति का पकपले॥ षेलै चरचै सा
ध॥ ६॥ जनहरीदास अचा पषे॥ कोडी का चीसा

न गुरु गोरष चीन्हां नहीं ॥ ते सब संपे पषांन ॥१००॥ पद
लै संमकिन पडै ॥ धका लागै ते जांनैं ॥ बिगरी ऊपरि सबै
सां हिं ईसुर करि मांनैं ॥१०१॥ यहै गति सब संसार ॥ दरिष
काम रमन पांवहिं ॥ जे हरि सम ज्या होय ॥ तौ ब साकूं ब
छा चुरां वहिं ॥१०२॥ साध सदा ही मिलै ॥ मुगध कूं क्यां सम
झावैं ॥ तब महिमां अति करैं ॥ जब ही बौद्या ति दिषावैं ॥१०३॥
कलह कलपनां पाप तिधि ॥ साध सताये कोप ॥ वां पैतै आ
गै षड़ा ॥ जो पद रहत अलोप ॥१०४॥ बकता च तवे रंपानी सु
रता मो षिलमंते ॥ बकता सुरतान जो नां मि ॥ छ्या तस्प जी
वनं ॥१०५॥ [illegible]
[illegible] ॥१॥
राग धनाश्री ॥ आज नगर मैं एक जोगी देष्यो ॥ बाराँ गोपीचंद रै रंग
लाग रह्यौ रे लो ॥ टेक ॥ इस ड़ा जोगी नैं जाण न दीज्यो ॥ आंगणि म
ढी बंधाऊं रे लो ॥ सोना रूपा की ईंट पड़ाऊं ॥ मोती झ्नषो
लि चराऊं रे लो ॥१॥ मोती माणिक बाई घर का ॥ हीरा
अनंत अपार रे लो ॥ हसती घोडा म्हारै आंगणि तहेता ॥
समझि र छाडी माया रे लौ ॥२॥ कौंन ड़ षां रे जोगी कांन फड़ाया
कौंन ड़ षां रे जोगी मुद्रा पहरी रे लो ॥ कौंन ड़ षां रे जोगी राज
ड़ लौ त्याग्यो ॥ कूंण ड़ षां सौं नारी रे लो ॥३॥ सतगुरु सबदां कांन
फड़ाया ॥ दसन मुद्रा पहरी रे लो ॥ माता रा सबदां देस ड़ लौ त्या
ग्यो ॥ अमर कुंण कूं नारी रे लो ॥४॥ कूंण तुमारै पिता सणीजे
कूंण तुमारै माई रे लो ॥ कूंण देस रो राज करंता ॥ कूंण बहन
रा नाई रे लो ॥५॥ राजा बह लो चन पिता हमारे ॥ ओरसे
तीमाई रे लो ॥ देस बंगाला को राज करंता ॥ कुमदी बहन
रा माई रे लो ॥६॥

कांटुंबाटुं जोगीजी सचु मारी म्हारो बीरो जोगी किम होसी
रे लो॥ मात भेणा वतीरे पत्र अकेलो॥ ओरन बंधु को इ लो
॥९॥ गाहा राधारी रे हसती घोडा॥ चितरंग अरंत अपारे रे लो
देसदेसरी कन्यां सेंधा॥ निसदिन टोले वालो रे लो ॥८॥ को
नेदासी रावणगावे॥ निकलना ई भेरी काया रे लो॥ देल
गालारीम बरिमगावे॥ येक जोगी दगया धाहा रे लो ॥६॥ रा
वचंद्रावत जायपकं वा॥ थोलागा रे बिलषा नो रे लो॥ नरबा
री सब बिलषा डोले॥ माता रे मन हरषा रे लो ॥१०॥ दरसणप
हस्यो हमघरि आयो॥ सदसाम गति नहि जाण्यो रे॥ ओ गोपी
चंदरो ड्रबघपेरो॥ म्हूं हिं वाले जाइ रे लो ॥११॥ जनी रांणीक
रे बिसूरणी हथले वो किम जोगी रे लो॥ गोपी चंदने जल
धरी मिलिया॥ बांधा लेह किम तोडी रे लो ॥१२॥ ...
जहां ... साथी
॥४१॥ साषी॥ सचा को अगा को लिषसो॥ जन हरीदास
सब अंगमहे॥ सो पिल है ते संत॥ ...
सदा॥ बारह मांस बसंत॥ १॥ ... बिले संत ब
बाजे राग अनंत॥ ... फल्या सब दी
संत॥ २॥ जन हरीदास बसंत ... हरि जन मेले
बाग॥ बिरज मांहा को ... जाइ ... जहां बारह
फाग॥ ३॥ जन हरीदास जहां जाइ ... बिले संत
मास बसंत॥ पांच ... जहां ... बिले गोपी
बसंत॥ ४॥ जन हरीदास बसंत ... करि ...
ग्वाल हरि ... जहां कान्ह ...
की माल॥ ५॥ जन हरीदास बसंत ... बिले चर ... स
म अगाध॥ ... पकपूलो ...
ध॥ ६॥ जन हरीदास ...

रि ॥ डारवपड्या छूटै नहीं ॥ कानै लीजै मारि ॥७॥ घरि
आई तिर सैन है ॥ उरवपड्या ऐसे होइ ॥ जनहरीदा
सत्तासार कूं ॥ पासाल गीन कोइ ॥८॥ परम जोति प्रग
टै नहीं ॥ कोटि करै जे कोइ ॥ लोहा कूं पारस मिलै सु
सिर कंचन होइ ॥९॥ जनहरीदास अंतरि आदि
दीपक एक अनूप ॥ जोति उजालै पेषलीये ॥ तहां सं
हड़ीन धूप ॥१०॥ बिबिधि पकूप पसेवा बिबिधि मा
धि मोतीयन की माल ॥ जनहरीदास पेलौ तहां ॥ जहां
गोपी गायन ग्वाल ॥११॥ आ छोड़ इक बीर का ॥ अंमा
पार नहीं पार ॥ हरीदास जन मिलि रह्या ॥ गहि गुर
ग्यान बिचार ॥१२॥ जनहरीदास अंतरि आदि प्रम
जोति प्रकास ॥ अगम घेड़ आनंद सदा ॥ मन का तहां
निवास ॥१३॥ तिरता तिरता तहां गया ॥ जहां अंचंभा
र ॥ चित कपट पकू चै नहीं ॥ तहां साधां की मौर ॥१४॥
मैं सागा निर तै मया ॥ हरि सकल बियापी एक ॥ हरीदा
स जन यौं कहै ॥ तासु पिपकूता पारिष अनेक ॥१५॥ पद
[illegible] ॥ आदि अंति गोबिंद सगा ॥ हूजा
सगा न कोइ ॥ जनहरीदास हूजा सगा ॥ सो फिरि बैरी है
इ ॥१॥ जनहरीदास संकट पड्या ॥ सगा न सनेही कोइ ॥
मसगा सो पर हस्या ॥ कंमलक होतै होइ ॥२॥ घट हू
० फाटै तिमर ॥ मन धरि सकै न धीर ॥ जनहरीदास है
व हरि सगा ॥ रषै बिसारै वीर ॥३॥ येक रासि का सोवण
जीवण ऐसा जांणि ॥ जनहरीदास हरि सजन बिणि
तांहूं माहै हांणि ॥४॥ मरणा है जीवण नहीं ॥ जीवत म
रै न कोइ ॥ जनहरीदास जीवत मरै ॥ सो अविनासी हो
इ ॥५॥ जामुषि राम न उचरै ॥ आन कथा मुषि चोल

जनहरीदासतेमांनई॥कागबिलाईकोल॥द्वाजा
सिंमनकचैरा[illegible]नी हाथि॥जनहरीदा[illegible]
मानई॥सूकरकी[illegible] ७ [illegible]
डिकपि॥सूमूला[illegible]जनहरीदास[illegible]
न्यायहलाहलषा[illegible] ८ जनहरीदासयाजा[illegible]
७ षसुषचालेसा[illegible] श्रवयावाकोसिंह[illegible]
नआईहाथि॥९॥ [illegible]
केसाथि॥जनह[illegible] [illegible]जीव
घि॥१०॥क्याज[illegible]कीया[illegible]
बाति॥जनहरीद[illegible]
मोति॥११॥काल[illegible]
जनहरीदास[illegible]
॥१२॥अहिपुर[illegible]दिन॥[illegible]
इ॥जनहरीदास[illegible]
१३॥जनहरीद[illegible]
स॥ अबगाति[illegible]
४॥मांहदेषित[illegible]
जनहरीदासपै[illegible]
१५॥रातिबसेदिनगठि[illegible]चले॥ यह संसार[illegible]
जनहरी दास[illegible]यासबै॥पैडेलागीजाइ
गहवाड़ा[illegible]जकू॥मिलेवटाऊआइ जन
रीदाससबजातहै॥दिनदशपापीविलमाइ ११
ईकाहुकानहीं[illegible]सबकोवीवाल॥साहकेहै
[illegible] ८॥जनह

रीदासमपारषपषै॥ बिणजनहैसनकोइ॥ फिरिपी
छैपछितातहिया॥ जबनाणांदेष्याषोइ॥१९॥ जनह
रीदासकचाअधिक त्रियाजपहरै स्वीर तैमी
आगलिजलादसी सोनांसुवासरीर॥२०॥ जनह
रीदाससंसारसूं प्रीतिकौ जनकोइ कालचोट
चुकैनही इवसुषमापे दोइ॥२१॥ जबहीकरि
कोटालगै तबहीधूजैमन हरीदासजनयोंकहै
ज्योंकिरपणकाधन॥२२॥ राजारांमबिसा
रिकरि जीवरसातलिजाइ जनहरीदासचो
रासीलषमंतफिरै फिरिफिरिषोटाषाइ॥२३॥
जनहरीदासगोबिंदसजो देहडरांणीबार क
हेकहांलौराषीये काचेमांडैनीर॥२४॥ अचिंता
सीसोंआतरे नरकहूंडिसोंहेत जनहरीदासअ
बसरनलौ चूकामलाअचेत॥२५॥ रामसमदत्या
रर ह्या पावापडाअजंजीर जनहरीदासनरस्थूला
फिरै मनचरिसकैनधीर॥२६॥ ८२
फूटेकुंतनजलरहै बहताकहैनराम जनहरी
सगोबिंदसजै जाकेमनिबिश्राम॥१॥ जनहरी
दासमनसाबता जहांबसैहरिनौ २ कनककटो
रैगढहै बाघणिबपकाषार॥२॥ सीसअमोलिक
अजबया दीन्हांसोघांगोड॥ जनहरीदासमनमस
करा मनकोउलटीछोड॥३॥ मनहीकूंमनफेरिस्कि
रि मनकातजैबिकार तबजनहरीदासयेउक
टे बाकीरहैनलार॥४॥ मनसाकोबैरीनही मनसा

म गानकोइ॥ जनह:
व, चनहोइ॥ ५॥ म.
तोराम॥ हरीदास:
६ जाकेनषसष:
सिकानाहि॥ श्रेम
७ मेरामास्यान
बकरूपकरि
मारिरे याकीवे
रि ज्यूमनमन
मकही॥ग्यानर
माय्यामिलैनमे
॥वगयामेजा
नहीयामुकल
सुबाधिचिला:
मनमेवासीभा
फेरिकहामन
तहातगोटीर
हरविदामणी॥
नहीश्रलेष जनह
टग्रजेश्राइ अपाणीमनह
रोलाइ॥ १५ दासनंदगाम
॥इ॥ जनहरि॥ दामदेदाजि
॥श्रवनिज १८ हरिमू
॥सीषेकोण जनहरीदास

कोहै। कहै मुकति क्यौं जाइ २३ काया मध्य
है साच न जांणी बार जनहरीदास कहि कोय
तागि त्रिषा षी मृग त्रिसना का नीर २४ ??
[illegible] कौरतन्याको चैमते जेपटके
वकताम जतां तहां नाचे नाचे फिरे माया बंधे मन
१ चोटी उपरि चोट केता गा किता लिया साहिब
की चोट तिनर तिरे ते जागिया २ मालासन काम
कर चोटी उपरि चोट जनहरीदास लिरते मते ॥
हरामकी चोट ३ इतीयां सो दिल दे सिले साधं
उरि और हरीदास जन यौं कहै पकूं चोर किम
वार ४ आप तजन कूं आपेल सो और कूं दे भाउ
जनहरीदास ते हरि सो बिमुष पहु पडे हरो भाइ
५ जनहरीदास हुप आगा सहै मायिका टलत
जल थाइ आयी पणि ऐसा पान अतत ६ मोंत
हि अंतर विया वोल मोवे साइ जनहरीदास
गुरातकी हिहे चेतिरको जाइ ७ गुणपो बनि
णकथा सुरचित लागी साचि जनहरीदास कों
ते वकुत गाया यो नाचि ८ गांनध्यान पो प्याकि
हि रदे स क्यान राषि जनहरीदास ता साधकी हि
वद सुणि न साषि ९ वाल्यो यापणि बाकुआ है
राबगा हारि जनहरीदास को डीरता ता का स्वामि
वारि १० जोरी करि चोरी करै बे सिरपांन को हरि
हरीदास जन यौं कहै ताको फूलो बाद ११ आप
की आवटी पडै दुषसुष व्याप दोइ जनहरीदा

चौ थी दसा॥चत्र नपङ्क्षैकोइ॥१३॥जहां आपो तह
आंतरो॥करणं सागरहूणि॥जन हरीदास आपो
यां॥ है हरि सदा हजूरि॥१३॥पेड एक आघा चले॥
दस सूवा जांहि॥जन हरीदास कहै णि कहा॥रज मां
णीमांहि॥१४॥मनसा का बादल भया॥का म क्रोध
तजै र॥जन हरीदास कहणि सरस॥रहणि बडा कं
इ॥१५॥आपे चौंटिक चा भया॥कोटिक रमते साथि
दौडया था हरि है मकुं॥कोडी आई हाथि॥१६॥सिंघ
स दा बन मैं बसै॥गीदड आजे आगा एक दिहाडै
पकी॥सहजै सिर मैं पाड़॥१७॥जन हरीदास के हरि
उजा॥जंबक लहै न जांण॥जबके हरि के हरि मिले॥
तब उज्यांपरवांण॥१८॥मोडा मा था मान इ॥ताल
जा वै तो अि॥जन हरीदास जन की संगति॥नाप कुंच
वै बोडि॥१९॥अरथ करै अनरथ नहीं बूटै॥तातै
फिरि फिरि सांडा फूटै॥हरीदास जन ऐसी कहै॥कोई
उलटा पेलि प्रमपद लूटै॥२०॥मोनी ना हं णि जोपति क
र॥ऊपरि बैगा साहा॥जन हरीदास या बिण जमै॥
कोटा घणा कला है॥२१॥भूष दुष संकट सहै॥सहै
बिड़णं सार॥जन हरीदास मोनी बूलधा॥कांसे
करै उकार॥२२॥उलटी नै सुलटी कहै॥कथी नै सू
॥जन हरीदास सांसै डसी॥डनी यां च कचुधा॥२३॥
रहै बुआला गीपवनं॥उद्या उद्या जात॥२४॥ ४/व
आधा कीया॥मन की मिटी न रेष॥जन हरीदास तर

सुतनल्या ऐसंगतिकागुण देषि ॥२५॥ पांन अगनि
मुषि कवरै ॥ गोला ताता होइ ॥ जनहरीदास साचीसं
गति ॥ जलतन देष्या कोइ ॥२६॥ हेम अगनि मुषि जा
लीऐ ॥ धातां संगि मिलाइ ॥ जनहरीदास कंचन तकौ
बिकै लोहकै साइ ॥२७॥ लोहा जलसुं धोइयै ॥ तबूल
गाकां टी षाइ ॥ जनहरीदास पारस मिल्यां ॥ सही मो
लि बिकाइ ॥२८॥ १५६ ॥ अथ [illegible] कौ अंग ॥
ओंमूरति ति हीसिला रांम सबसे सबमांहि ॥ जनहरी[illegible]
सत्तरण ब्रह्म ॥ घाटि बाधि कहुं नांहि ॥१॥ माणस
रमेसुर कीया ॥ सो तौ करता नांहि ॥ जनहरीदास क
रता पुरिष ॥ व्यापि रह्या सब मांहि ॥२॥ नही देवलसो
बैरता ॥ नहीं देवलसों प्रीति ॥ कृतम तजि गोबिंद सुं
जो ॥ या हरिसाधां की रीति ॥३॥ लोक दिष्या वा मति करै
हरि देषै त्यौं देषि ॥ जनहरीदास हरि अंग मै है ॥ पूर
ण ब्रह्म अलेष ॥४॥ जनहरीदास साची कहै ॥ साहि
बजी की सौंह ॥ पाहंण कूं करता कहै ॥ ताका काला
मोंह ॥५॥ जैन धरम माया सरूप ॥ परस्यां लागै पाप
जनहरीदास निरभै भये ॥ जपो निरंजन जाप ॥६॥
साची कथा सुणं वतां ॥ मत कोई मानौ रीस ॥ अल
ष निरंजन छाडि करि ॥ भजे धरम चौबीस ॥७॥ जैन
धरम सबतें बुरा ॥ जलाक है सो कोण ॥ जनहरीदा
स सुना घर मैं सरप है ॥ तहां मन कीजै गोण ॥८॥ जैन
धरम सो धासबै ॥ पांन सूप लै हाथि ॥ जनहरीदा
स फटकि फटकि फटकूं कहा ॥ कोई कण [illegible]नोन
हाथि ॥९॥

जैनधरमकीबातड़ी॥सातलिमनवाबीर॥ऊजड़
षोहउजाड़िमैं॥तहांछांहड़ीननीर॥१०॥जैनधरम
कीबातड़ी॥सुणतसुणतभयोसोर॥जनहरीदा
सजहांकावहां॥घरमैंमैंसैचोर॥११॥पांचतत्तका
पूतला॥रजबीरजकीबूंद॥येकैघाटीनासच्या॥
सणषित्रीसूद॥१२॥देवलमांहीदेवहै॥घटिघटि
धस्याबणाय॥जनहरीदासयाहच्यूंधिहै॥दरसण
गोबिंदकागाइ॥१३॥१६०॥भेषकोअंग॥भेषप
हरिलाड़ीकरी॥फेरिधरायानांव॥जनहरीदासस्यां
मीपणी॥बकंडिरोगमैंपांव॥१॥जनहरीदासगोबिंद
बिमुष॥तिनसिरिजमकाहाथ॥बाहरिमुंड़िच
ये॥भीतरिसिलवासाथ॥२॥जनहरीदासबादलबि
गति॥कूवाभ्यौराहोइ॥भेषभराबरिकरिमिल्या
मिरणकासुखदोइ॥३॥जनहरीदासकहैयाजु
एकअचंभाभारी॥हमटोपीकाहैकूंपहरी॥उलटीचा
लहंमारी॥४॥आगैंपहरसजैअबिनासी॥इहभेष
मनमांहा॥रूड़मुंडकहाटोपीपहर्या॥देहसरीसानां
हीं॥५॥सांगकाछिसोहराऊवा॥हीएनआयाहाथि॥
जनहरीदासतांडोलच्यो॥तबसबकुतासाथि॥६॥सांगि
तांडोसंमिहीकुता॥कबुनआयोहाथि॥जनहरीदास
भैंडोलच्यो॥तबसनकूतासाथि ७॥ ॥ ॥ ॥ ॥
निरभैपदगावैनहीं॥गाईजैरंगराग॥हरीदासजनयों
कहै॥सोअभलानकाग॥८॥१७८॥साचकोअंग॥
नबोलीये॥जन बोल
नां

बिरष लागे न ही पार जात के पान ॥१॥१७७॥ साध कौ अं
ग॥ तेल कडाहा जलत है ॥ कलि विष एक न बुझाइ ॥ ज
न हरीदास सीतल सया ॥ तब चंदन पकत आइ ॥१॥ का
म क्रोध चित सन नांत जो ॥ त्रिबिधि ताप का नास ॥ राम नाम
हिरदै सदा ॥ जन हरीदास यो दास ॥२॥ गूदडी ये आं छे मं
ते ॥ नजे चिरंजन राइ ॥ जन हरीदास ता साध की ॥ महिमा
कही न जाइ ॥३॥ चित मांहा बित लेर ह्या ॥ समरथ पि
रै नहीं ॥ जन हरीदास ता साध का ॥ मिलि की जे दीदा
र ॥४॥ पाव पलक छाडे नहीं ॥ हिरदै ते हरि नाव ॥ जन
हरीदास ता साध की ॥ मैं बलिहारी जांव ॥५॥ राम भजन
बिण मांनई ॥ बाद गंमावै देह ॥ नहीं का हूं सो बै
र ता मोह न बांधै साध ॥ जन हरीदास आगै पद र ॥ स
जिये राम अगाध ॥७॥ भाव भगति गोबिंद भजन ॥ जाके
हिरदै होइ ॥ जन हरीदास ता साध कूं ॥ गंजि न सके को
इ ॥८॥ भाव भगति गोबिंद भजन ॥ दया दिष्ट पण दाषि
जन हरीदास गुर ग्यान गहि ॥ ऐसा धी संगि राषि ॥९॥ प्र
म सनेही राम है ॥ कै राम कु म्हारे संत ॥ जन हरीदास हरि
भजन बिण ॥ पासी अवर अनंत ॥१०॥ अलष निरंजन
नाथ सति ॥ सति राम का साध ॥ जन हरीदास बरणों क
हा ॥ या हत्ती बात अगाध ॥११॥ मन उलटा च ब्रह्म अका
स कूं ॥ पवन सुरति लै हाथि ॥ जन हरीदास ता साध के
सदा निरंजन साथि ॥१२॥ च्यो पौ काल लागे नहीं ॥ भजीये
केवल राम ॥ जन हरीदास ता साध का ॥ निरभै पद बि
स्रांम ॥१३॥ नरक सरग सब परहस्या ॥ गहि गुर ग्यांन

बिचार॥जन हरीदास तासाधसूं॥सनमुष सिर जन हा
र॥१४॥जन हरीदास सोई जन भला॥तजे अषंडित राम
राग दोष मैं रैन ही॥जे मन मूल सौं काम॥१५॥अजब दु
रहण॥अजब॥अजब बात सो हेत॥जन हरीदास
षेलत है॥कोई कोई साधसु चेत॥मंदडी यो आहे मैं
चालत उलटी चाल॥जन हरीदास ता कौ संग हि॥जब त
क्क कै निहाल॥१॥१०३॥मधि कौ अंग॥बैरागी बि
रकत जे॥मधि के पैंडे जाइ॥जन हरीदास आपा रहि
त॥सुषमैं रहै समाइ॥१॥१९६॥उपदेस कौ अंग॥सी
ष मीष की बात है॥सांसलि मन बाबीर॥नीच न नीष
रही पडी॥होइ समंदा सीर॥१॥बालक ह्लतपै डायकै॥चे
लता होइ सहोइ॥जन हरीदास हरि धा मतलौं॥पहुंचै
बिरला कोइ॥२॥अजब माषिसा चासबद॥घरमै रहै
न सोइ॥जन हरीदास जो बिंदत जो॥पलानय कैई को
इ॥अपनावर नाविनत नलिछाडि दे॥मन साम रैल माहि॥ज
न हरीदास हीरा जनम॥कौडी सटै न हारि॥४॥जन ह
रीदास लाजै न हा॥कंचन बदलै कांच॥जो कुछि गयु
सजाण दे हा॥त्रहितासू राच॥५॥रहेता रमता राम है
दूजा कोई नांहि॥जन हरीदास यूं जांणि करि मनम
पात मांहि॥६॥आपा मोंजौं राम की॥आंमस तुराम
यों होइ॥हरीदास जन यौं कहै॥मूलि पडै मति कोइ
॥७॥२०१॥बिचार कौ अंग॥जन हरीदास कहा ये
कहां देष्या सोचि बिचारि॥कुवस्तु षसों लागि करि
इसि मैं चाल्या हारि॥१॥२०२॥बिसवास कौ अंग॥

पूरण हारा पूरि है। जन हरीदास सहरि राइ जल थलि की
टपतंगा लौं। जहां तहां रह्या समाइ ॥ १ ॥ सांई सब कौं देत
है। बकरि कब हूं न हालेत। हरीदास जन यों कहै। ब
कै देबे ही सौं हेत ॥ २ ॥ जन हरीदास दाता दई। दूजा को
ई नांहि। सब कुछि करि सब तें अगम। व्यापि रह्या
सब मांहि ॥ ३ ॥ ऐसा कोई एक है। बीस तीस तौ नांहि।
आतम मिला राम न सुचि रि। निरमै निज पद मांहि।
४। आतम लागा राम न चले। मागि र भिष्या षाइ। जन
हरीदास क उदिम अजब। न जे निरंजन राइ ॥ ५ ॥
इ जगा र उदिम करत है। आतम लागा दोइ। जन ह
री दास बैरागा बिरति। तहां कुछि उदिम न होइ।
६। इहै उदिम अबगति जे। गंग जमन मधि बास।
जन हरीदास तब देषीयै। प्रम जोति प्रकास ॥ ७ ॥ प
रापरै पूरण ब्रह्म। जहां मन रह्या समाइ। जन हरीदा
स ऐसा उदिम। और उदिम कौं षाइ ॥ ८ ॥ तन का उदि
म कहा करै। जब मन पिंगुल होइ। जन हरीदास म
न गापगा। चेतन नहैं याकोइ ॥ ९ ॥ जे कब हूं मन गंध
तौ बी चिबिंद बकोई और। जन हरीदास न वाप
न हो कुटब मैं गोर ॥ १० ॥ सत रज तम षट तेर मा मे
है मोह न जात मुष मोइ। जन हरीदास बिरयांन बिरति
तहां उदिम न हूं होइ ॥ ११ ॥ अथ [illegible] कौ अंग ॥
सेवग हाजर रि चाहीये। साहिब सदा हजूरि। सूर्य्य
चंद ज्यों जहां तहां भरिपूरि ॥ १ ॥ वार पार मति नि
ति अगम। आदि अंत मधि नांहि। जन हरीदास सो

नेदसदा॥प्राणबसैतामांहि॥३॥अ पांनबरतनी
दतां॥मलानकहैसाकोइ॥जनहरीदासएकबाडि
दूजामजै॥जेदूजासतिहोइ॥३॥दूजीपूजाकालकी
पकडिकाललेजाइ॥जनहरीदासरामबाडिदूजाम
जै॥तासोंमिलेनलाइ॥४॥जनहरीदासयाहीकोगि
ने॥सबकोचाहैमांवा॥केहिधोकेसेमानांयो॥बीद
बिहूंणीजांन॥५॥बीदक्रमसरवणिबरणतजि॥सुध
सिसुरतिनिवास॥पतिब्रतापतिकोमिलै॥केमि
सिदिनरहैउदास॥६॥बिरकताईकोअंग॥बेरा
गीमायातजै॥रामनजबसोंप्रीति॥जनहरीदासबै
लोकहूंदिहीकागुणजीति॥१॥हाटाबाटाहीरहै
मजैनिरंजननाथ॥आलकयामेंनही॥दि
गताकोसाथ॥२॥समरथाईकोअंग॥आगे
है रामजी॥पूरणब्रह्मअगाध॥हरीदासजनयों
तासुमिलागिरहैसबसाध॥१॥रामदयासनमु
सदाजेहरिजनसनमुखिहोइ॥कालजालले
हीपाइलगैनकोइ॥२॥सनमुखकोअंग॥
डारूपसवारहै॥हीरारूपसयारि॥लेगाकोई
री॥मेलैसीसउतारि॥१॥अगबिदहैउसपाइ
धिबलकछुनबसाइ॥योंकबासोंगिरिपडै॥
पसहबलाइ॥२॥वनकूटोकुटकाकुईरतीन
संका॥षिचिषरैमनाथारिरहीरेदोहणीनिसंक
नसुषिहोइसरवणांसुणी॥तेअपणासुबा
...षिमांरिदेहणीदयाहि॥४॥

साधास्यं पेह । आलानिजघरताकि । जनहरीदासयौ
जांणिऐ बंकडि म्रचढिसीचाकि ॥ ५ ॥ रामसनेही निर
सैय की । तकोनकाईवोट । लागाघण नाभी नहीं । ज
रिणहंणकीचोट ॥ ६ ॥ भागाका सोकोनहीं । अेमसम
हुंधीर । परबतसूतरसूबागिकरि । नीकांरापोनीर ।
॥ ७ ॥ लिषमीसूतां अरोगिरसूतां । आजमंडयो तारण
पिसणांमांहीपेसिकरि । मलादिषायाहथ ॥ ८ ॥ सू
रतहांधीरजसदा मनज्ञा चुरतानांहि । हेदलगैदल
देषिकरि । कीकेफौजमांहि ॥ ९ ॥ सूरबीरसाचेमते
नजैसनेहीसंम । जनहरीदासतासाधका । सरैसदै
सोकांम ॥ १० ॥ केमारेकैमरिमिटै । सिरदेलेनिजगौर ॥
जनहरीदाससूरातकौ । कायरकामतओर ॥ ११ ॥ का
यरटलिकानेचलै । डरतारहेडूरा । जनहरीदासता
पतितका । दरसनकैईबलाइ ॥ १२ ॥ सीसदेणकीगेह
दे । तबअपणांसिरदेह । जनहरीदाससिरकेसटैरा
मरतनधननलेह ॥ १३ ॥ जनहरीदासमसतगरह्या ।
हरिसूंष्यां जांणि । डूजामाघामिरिपडया । नलीषचा
॥ १४ ॥ जनहरीदासहरिमिलनकूं । अंतरिकी
बिचार । सिरसोंप्यांजेहरिमिलै । तौसिरसोंपौ
सोबार ॥ १५ ॥ सिरतेराष्ट्रसिरघणी । मऊसिरसोंक्या
कांम । सिरहैबिषका रूबडा । सुषका सागरर
म ॥ १६ ॥ जेगायंथपगमतघरो । घरेतोसामतेतारि
हरीदासजनयोंकहै । योंहीआरथबिचारि ॥ १७ ॥
अगमसिंघासणअगमिसामि । काचादिकेनकोइ

जनहरीदासप्रेमतहो।दिनदिनआनंदहोइ॥१९॥जन
हरीदासमैंदोनमैं।मेलनहैगोडारि।कौडाम्रधे
एकको।लीजैपैटैमारि॥१९॥सिंघसषोबिसहरउ
सो।सांविऊडैसुता॥जनहरीदासगोबिंदसजो।
तनटैसुरतिचुकाइ॥२०॥काइरसोंकायरमिलै।
सूरमिलैसतिसूर॥जनहरीदासआनंदसदा।नाजै
अनहदतूर॥२१॥मेरउलटिकसुधासषी॥परबल
प्रबलनांहि।बिणिपाषांकचाकूमुगा॥बसैआका
सांमांहि॥२४॥मेरआडिउलटागंगा॥आपैरत्या
सूर।जनहरीदासतबदेषीये।नेनामांहीनूर॥२३॥
पांचूंदूढ़ाफेरिकरि।रामभजनकरिसूर।जनहरी
दासकाइरघरां।कालबजावैतूर॥२४॥जनहरी
दासपीवप्रसीये।पांचपलटिप्योलाइ॥डाकोकन
मसतनधरो।सदारामसनमुषजाइ॥२५॥सीलसता
त्यासूरिवै।छाडीमनकीआस॥अंतरिगलाएकसों
परमजोतिप्रकास॥२६॥कालकौअंग॥रामदया
न्यारीरहौ।राषणहाराकोडि।जनहरीदासताजीव
कौं।कालगादेकंरतोडि॥१॥रामनामहतिछाडिक
रि।जहांतहांजीवजाइ॥जनहरीदासताजीवकौं॥
कालतहांहीषाइ॥२॥जनहरीदासगोबिंदसजोग
हिगुरमानबिचारि।करिकबांणकेबरेलीया॥
कालषडादरबारि॥३॥देहषेहहोइजाइगी॥मूडि
पडैगीमार॥जनहरीदासगोबिंदसजोगहिगुर
ग्यांनबिचार॥४॥हरिसुष परहस्या॥कीच

रह्यालपटाइ॥ जनहरीदास ताजीव कूं हिलायो हाडै
षाइ॥५॥ आसा कै घरि जम बसै॥ डार पडै तब षाइ॥ ह
रीदास जन यौं कहै॥ हरिजन तहां न जाइ॥६॥ पैलै ज
लिप कूं तानही॥ उलौ जल की आस॥ जनहरीदास
स्वर गुण कथा॥ तहां काल की पास॥७॥ जनहरीदा
स मोटी बिथा॥ करम काल जीव मांहि॥ एंमन जैसे
उबरै॥ इहजा बूटै नांहि॥८॥ काल दहै दिसि देषीये॥ ज
हां तहां भरिपूरि॥ जनहरीदास गोबिंद भजै॥ सो का
ल जाल सूं दूरि॥९॥ एकदिहाडै इंद्र कूं॥ पकडि प
छाडै काल॥ हरीदास जन यौं कहै॥ गापी रहै न गपाल
१०॥ सजीवनि कौ अंग॥ औषदि अजन बस्त्रन्न पचैज
रैतौ जुरा न षाइ॥ जनहरीदास टूटै बिथा॥ सुषमेर है सं
माइ॥१॥ गंगा कूं वोषदि दई॥ षायर कीयो न षाल॥ ज
नहरीदास ताजीव का॥ चूका नहीं जंजाल॥२॥ वोष
दि जरै तौ मन न मरै॥ षाइ रकरै उषाल॥ जनहरीदास
ताजीव कौं॥ अंति ग्रासै काल॥३॥ अथ निरबैरता कौ
अंग॥ चींटा मोटा होइ रह्या॥ रबीन मानै संक॥ पग तलै
दी मरै॥ माथै चढै कलंक॥१॥ अथ अनहिमांडौ अंग॥
जनहरीदास आनंद है॥ मन न आपणां परमोधि॥ क
रइ पंथ कबीर का॥ सोह मतौ सोधि॥१॥ पाषिंद ईसं
सार कूं॥ भ्रमै सुरसं प्रीति॥ जनहरीदास कबीर की
याहकु बिउलटी रीति॥२॥ उलटै पैडै परमसुष॥ परम
साध चलै जांहि॥ हरीजंदास जन यौं कहै॥ निगुरा पं
कं चैनांहि॥३॥ आगिन नं जालै जलि बूडै नहीं॥ कोडि कोडि

पड़ै जंजीर ॥ जन हरीदास निरसै मते ॥ गोब्यंद न जे कबीर ॥ ध
साकित सारि का जो करै ॥ कोटि अरब दै पाव ॥ जन हरीदास कबी
र कूं ॥ लगै न तांती बाव ॥५॥ राम बिणा हारा एक त्यूं ॥ मार णहा
को डि ॥ जन हरीदास कबीर का ॥ कोई मत ताका व्यान मो
डि ॥६॥ कसूणी को अंग ॥ रातिअंधारी मरपडै ॥ सबीव
सजन सूरि ॥ जन हरीदास हरिअंग महो करणा कीया
दूजारि ॥१॥ कांमी नर को अंग ॥ करम कडाही कांम
जल मिलै तुकटी मांहि ॥ जन हरीदास जीव जलत है नां
णी कोई नांहि ॥१॥ राम जाम न्यारा रह्या ॥ नमणी नारी साथि
जन हरीदास ता सुष को ॥ तिमत्तिअंगम ॥ सो सुष नाय
हाथि ॥२॥ साचा जोडा रामजी ॥ दूजा जोडा कूग ॥ दूजा जो
डा बिनसिसी ॥ काचो देह कवूग ॥३॥ राम रतन न्यारा रह्या
को डीलीया मारि ॥ जन हरीदास नर नारीयं ॥ नरा बिलंबा
नारि ॥४॥ डूंगर तैं पसु तंत रोस्या रणि दौई आ ॥ जन हरीदा
स नारी मतै ॥ मिलै सभोटा षाया ॥५॥ तन मन देस रव सली
या ॥ [illegible] भणि बाघ ॥ जन हरीदास नारी नरका बांह प
कडि लै जा ह्राधि ॥ जो गणि लेहु ई कूड़ी ॥ मैगा करणै सोंनेद
साहि मेसोंपा हा फिरै ॥ तहां कंधका छेद ॥७॥ जन हरीदास
परनारीयां ॥ रोपै न अरिगंवाव ॥ गिगा निवठ्या धरमै धरै ॥
बूडा काली धार ॥८॥ जन हरीदास नारी संगति ॥ साध करै य
मत को ॥ नारी घट संकर रवया ॥ कुसल कहां तै होइ ॥९॥
जन हरीदास गोब्यंद सजो ॥ करतिस हुजय घरिधारि ॥ ना
री हरि सजिह हिमिलै ॥ तो नीसंग निवारि ॥१०॥ जन हरीदास
नि लागा है ॥ नाहीं ग्यान उपाव ॥ स नारी संगति

॥ ॥ तौकं अंकापार ॥ १४ ॥ हरिसें सुरति उतारि करि पूचा बैसे आइ ॥ जनहरीदास या हौक विन महा मिहा होइ षाइ ॥ १५ ॥ जनहरीदास पर कामणी नैण बैण तरिषाइ ॥ सतगुर सबद संसालि करि ठौरे बाण चुकाइ ॥ १६ ॥ साधु पारिषको अंग ॥ जहां जल नहीं ज्वाला नहीं हरि तहां भैसे नाहि ॥ जनहरीदास के हरि कुरंग ॥ एकै बनि न बसाहि ॥ १ ॥ स्यांम बरण दोन्यूं उरिस ॥ ऐक अजब अणराग ॥ जनहरीदास बोल्यां बिगति ॥ कहां कोइल कहां काग ॥ २ ॥ जनहरीदास उदबुदकया ॥ दोन्यू जल मांहि देस अजब मोत्ती ज्यूं ॥ झाला मछी षाइ ॥ ३ ॥ जहां बुगला न हां हंस अरत ॥ जनहरीदास दुषदोइ ॥ बासां चूरि सरवरि लिगो ॥ वारे ब्यौरा होइ ॥ ४ ॥ सीतल द्रिष्टि चकोर की ॥ चंद बसै ता मांहि ॥ जनहरीदास ज्वा गंला ज्यूं देषौ दाके नांहि ॥ ५ ॥ उदरि समाइ सचुणि ले ॥ रहै निरत रिलागि ॥ जे कब हंसा चाकरै ॥ तो जालै जलती आगि ॥ ६ ॥ उदरि समाइ सचुणि ले ॥ अंतरि रहै उदास ॥ जे कब हंसा चाकरे ॥ तो या षा होइ बिणस ॥ ७ ॥ साधसंगतिको अंग ॥

॥ ॥ साधसंगत्ति निरमल दसा ॥ जे मन होवै मेल ॥ जनहरीदास तिल तेल का ॥ केसे न्यां फुलेल ॥ १ ॥ तिल फिरि षिल्य पहोपसौं ॥ अरस परस रस रूप ॥ जनहरीदास संगति सरस ॥ केसा न्या अनूप ॥ २ ॥ जनहरीदास चंदन संगति बयैस चंदन होइ ॥ बांस बास लेदै नहीं सक्या न आया षोइ ॥ ३ ॥ बांस सदा ही बसत है ॥ चंदन की जड़ मांहि ॥ जनहरीदास निरबांसयो ॥ तो तर भेया नांहि ॥ ४ ॥ ति

सिवासुरि गोबिंद भजे ॥ कन हूं बिसरै नांहि ॥ जनहरीदास
ता साध की ॥ मैं बलिहारी जांहि ॥ ५ ॥ जनहरीदास काचा सं
गति ॥ सारा फूटै मन ॥ जो रिप का सब क हिये कै ॥ जुं पाणी
मांहि रतन ॥ ६ ॥ जन नदी जल सौं काढीये ॥ तब हा करै प्रका
स ॥ जनहरीदास साचा संगति ॥ सोधि करै सो दास ॥ ७ ॥
हेतप्रीति को अंग ॥ स्वारज बेसि के बलका ॥ जनहरीदा
स मत जोय ॥ रिखि रिखि रास्यो रिंग से भलो ॥ असत रहै मुख मा
ह ॥ १ ॥ जनहरीदास कम मोदनी ॥ इस एक निस वासा ॥ सिस
किआरयां किआसे भलो ॥ न हित रहै ज दास ॥ २ ॥ जनहरी
दास सुत हेस का ॥ कलपि न करै अकाज ॥ मूख सहै कै
मोती चुगै ॥ कुल अपणां की लाज ॥ ३ ॥ निंद्या को अंग
॥ पर निंद्या पापा नीपजै ॥ सरटा मोटा होइ ॥ जनहरीदास
निंद्या नली ॥ अेक रिजाणै कोइ ॥ १ ॥ जनहरीदास कहै येक
हां सु ध धरमा ने मूरि ॥ अगम अरक आ का सिर था ॥ ष जि
पि जि डारे धूरि ॥ भुक्ति बांधे केदा हि ॥ ऐसे के पां न ह्वाण गा सि
लाय ॥ जनहरीदास गोबिंद भजे ॥ यि दहदि मकके रे सुका
र ॥ ३ ॥ भेष को अंग ॥ नेहर की बलटी पड़ी ॥ वो बदिलो गैन
का ॥ ४ ॥ जनहरीदास नी ने [illegible] ॥ जे नख सब रहे संमाइ
१ ॥ कै सबद को अंग ॥ इस्टक बचन कौडा क सरा कवि
मत राषै कोइ ॥ जनहरीदास यों जाणियां का हुं दीस
म होइ ॥ १ ॥ कुबिध्या को अंग ॥ आंब ईष किस मिस अंबि
दां म ॥ पो हार रस ना लेर ॥ जनहरीदास जल एक है ॥ कुवि
कुणं के का फेर ॥ १ ॥ जाण क कुण का करम ॥ पाप मुनि वि

॥

जेसाधकी ॥ जास्यौंराम दयाल ॥ अरसपरस आनंद सदा ॥ गाई
जे गोपाल ॥ गाई जे गोपाल ॥ प्राणपति प्राणपिआणे ॥ धस्यौं धस
कौं छाडि ॥ अधर आसिंघ्रत जाणें ॥ जनहरीदास सरस
सतां ॥ पलानपकडै काल ॥ संगतिकी जे साधकी ॥ जास्यूंरा
मदयाल ॥ २ ॥ साधमिल्यां सुषपाईये ॥ नजियेकेवलराम
नरन्यारा गोबिंद बिमुष ॥ तहां नहीं साधका काम ॥ तहां
नहीं साधका काम ॥ धस्या तेंडा जलमांही ॥ बाणि जे संष
सराफ ॥ हाटि हीरां की नाही ॥ जनहरीदास हरि षसकौं
लोचनदोइ सकांम ॥ साधमिल्यां सुषपाईये ॥ नजियेके
वलराम ॥ ३ ॥ रामसनेही साधवा ॥ बडा बेद जुगमांहि ॥ स
तजीव जगाइकरि ॥ औरदेस लेजांहि ॥ औरदेस लेजां
हि ॥ सबद राषे ज्यौं रहियै ॥ सबद कहे स्यूं करें ॥ सबदक
सणी सरिसहियै ॥ जनहरीदास तामुलकमें ॥ जुराकाल
सैनांहि ॥ रामसनेही साधवा ॥ बडाबेद जुगमांहि ॥ ४ ॥ सा
धसदा सैलारहैं ॥ कबहूं हारिनजांहि ॥ जिनकी जड ओं
डी ॥ ब्रह्मसोमिता मांहि ॥ ब्रह्मसोमिकामांहि ॥ सुरतिमि
ज जाइ समाई ॥ दरसे परसै प्रेम ॥ प्रमनिधि अंतरि पाई ॥ ज
नहां आरामफल ॥ हिलियाहरिजनषांहि ॥
धसदा सैलारहैं ॥ कबहूं हारिनजांहि ॥ ५ ॥ कोई आवो
प्रीतिले ॥ कोई आवो अरिभाइ ॥ साधदरू कौं पोषदे ॥ वो
वाकाफलषाइ ॥ वो वाका फलषाइ ॥ रूषतें सा फलदूसे
आंधीके मुषिधूलि ॥ घंटा मुषिपांणी बरसे ॥ जनहरीदा
स आर्हैंमतै ॥ सुषमें रहै समाइ ॥ कोई आवो प्रीतिले ॥ को
ई आवो अरिभाइ ॥ ६ ॥ आठपहरकी उनमनी ॥ आठपह

रकीप्रीति॥आपपहरसमनमुमिषडा॥साधसाधांकीरीति॥
याहसाधांकीरीति॥एकरसलागाजीवे॥आमपयालाह
पि॥रांमरसपावैपीवै॥जनहरीदासगोबिंदसजे॥आन
अस्तरअरिजीति॥आपपहरकीउनमनी॥आपपहरकी
प्रीति॥३॥२॥सुमिरणकौअंग॥हरिसजिभेदबिचारि॥
हरिमतिचालौलोइ॥एकैसाषीसाषिअवरसाषीनहीको
ई॥औरसाषीनहीकोइ॥जाणियाजीवमैसाची॥रसनारांमर
टरिरषमतिचाषैकाची॥जनहरीदासगोबिंदनिमषसौं
जसहसवरातिषोई॥हरिसजिभेदबिचारि॥हरिमतिच
लैलोइ॥१॥कहादिषावैऔरकौं॥उलटिआपकौंदेषि॥करि
११ लेषणिमसिकागदकहां॥लिषिएनहींअलेष॥लिषिएनहींअ
लेष॥सुतौलिषिकैकोहादीजे॥दिलकागदकरियाकसु
तौनिरमलकरिलीजे॥जनहरीदासहरिसुमरतां॥संच
ररहैनसेष॥कहादिषावैऔरकैं॥उलटिआपकौंदेषि॥२॥
गुरुगोबिंदगोबिंदजन॥गोबिंदहीसुप्रीति॥हरिदास
जनयौंकहैं॥यासाधांकीरीति॥यासाधांकीरीति॥आगम
गुरुगमिलैपाया॥निरमूलनिरसंधि॥कालसेजालैनका
या॥जनहरीदासतहांएकसुंनां॥नहीहारिनहजीति॥गु
रुगोबिंदगोबिंदजन॥गोब्यंदहीसुप्रीति॥३॥निसदिन
रांमसंभालि॥जागिनिरभैपदलहिये॥जहांतहांमनलाइ॥
प्राणपुरुषकौंसहिये॥प्राणपुरुषकौंसहिये॥सिरिजु

धकी ॥ जासों राम दयाल ॥ अरसपरस आनंद सदा गाइ
ोपाल ॥ गाइ जे गोपाल ॥ प्राणपति प्राण पिछाणें ॥ धसो धस
ाडि ॥ अधर अमिंत्र तर जाणें ॥ जन हरीदास हरि प्र
तां पलान पकड़े काल ॥ संगति कीजे साध की ॥ जासुं रा
दयाल ॥ ५ ॥ साध मिल्यां सुष पाइये ॥ न जियें केवल राम
र न्यारा गोबिंद बिमुष ॥ तहां नहीं साध का काम ॥ तहां
नहीं साध का कांम ॥ धस्या तेडा जल मांहीं ॥ बाणि जे संष
सराफ ॥ हाटि हीरां की नांहीं ॥ जन हरीदास हरि प्रसवे ॥
लोचन दोइ सकांम ॥ साध मिल्यां सुष पाइये ॥ न जियें के
वल रांम ॥ ३ ॥ रांम सनेही साधवा ॥ बडा बेद जुग मांहि ॥ स
ताजी कजगाइ करि ॥ और देस ले जांहि ॥ और देस ले जा
हि ॥ सबद राषे ज्यौं रहियै ॥ सबद कहै सूं करै ॥ सबद क
सरणा सरिस हियै ॥ जन हरीदास ता मलक में ॥ जुरा काल ॥
नैं नांहि ॥ रांम सनेही साधवा ॥ बडा बेद जुग मांहि ॥ धसा
धस दा मेला रहै ॥ कब हूं हरि न जांहि ॥ जिनकी जड औंडी
गडी ॥ ब्रह्म लोमिका मांहि ॥ ब्रह्म लोमिका मांहि ॥ सुरति नि
जजाइ समाई ॥ दरसे परसे प्रेम ॥ प्रम निधि अंतरि पाई ॥ ज
न हरीदास तहां अगम फल ॥ हिलियां हरिजन मांइं हि
साध सदा मेला रहै ॥ कब हूं हरि न जांहि ॥ प ॥ कोई आवो
पीतिले ॥ कोई आवो अरि नाइ ॥ साध दरस कौ पाषदो ॥ वै
वाका फल षाइ ॥ वो वा का फल षाइ ॥ रूष तैसा फल दूवै
आंधी के सुष धूलि ॥ पंटां सुषि पांणी बरसै ॥ जन हरीद
स आर्ते मते ॥ सुष मैं रहौ समाइ ॥ कोई आवो पातिले ॥
ई आवो अरि नाइ ॥ ६ ॥ आठ पहर को उनमनी ॥ आव

रकीप्रीति॥आठपहरसनमुषिषड्या॥साहसाधांकीरीति॥
याहसाधांकीरीति॥एकरसलागाजीवै॥आजपयालाह
पि॥रांमरसपावैपीवै॥जनहरीदासगोबिंदसजे॥आन
अस्तुरभरिजीति॥आठपहरकीउनमनी॥आठपहरकी
प्रीति॥७॥१॥अथकिरणकोअंग॥हरिसजिभेदविचारि॥
हरिमतिवाकोलोई॥एकैसाचीसाखिअवरसाचीनहीको
ई॥औरसाचीनहींकोई॥जोणियाजीवमेंसाची॥रसनारांमर
टरिरचेमतियापैकाची॥जनहरीदासगोबिंदबिमुषसों
अस्यांहसदगतिषोई॥हरिसजिभेदविचारि॥हरिमतिव
लेलोइ॥१॥कहादिषावैऔरकों॥उलटिआपकोंदेषि॥करि
लेषणिमसिकादकहां॥लिषिएतहांअलेष॥लिषिएतहांअ
लेष॥सुतोसिषिमकोहीदीजे॥दिलकागदकरिपाकसु
तोनिरमलकरिलीजे॥जनहरीदासहरिसुमरतां॥संच
ररहैनसेष॥कहादिषावैऔरकें॥उलटिआपकोंदेषि॥२॥
गुरुगोबिंदगोबिंदजन॥गोबिंदहीसुंप्रीति॥हरिदास
जनयोंकहैं॥यासाधांकीरीति॥यासाधांकीरीति॥आगेस
गुरुनमिनैपाया॥निरमूलनिरसंध॥कालमैजालैनका
या॥जनहरीदासनहांएकसुम्ब॥नहींदूसरनहींजोति॥गु
रुगोबिंदगोबिंदजन॥गोबिंदहीसुंप्रीति॥३॥निसदिन
रांमसंभालिजागिनिरभैपदलहिये॥जहांरहांमनलाइ
प्राणपडषकोंसहिये॥प्राणप्रडषकोंसहिये॥सिरिसु
रजमबोटनसूकै॥देहदेषतांजाइजीवअपणोंकरिचूकै॥
जनहरीदासअनंगनिजनाम॥फेरिमनतासुंफिरहिरै
निसदिनरांमसंभालि॥जागिनिरभैपदलहिए॥४॥१५॥

॥ बिरहकौ अंग ॥ सती होंण की हौंस धरि । तन जालन कौं जांहि । लोक लाज लै जलत है । असलि सती सो नांहि ॥ असलि सती सो नांहि । पीव कौ षबरि न लाधी । अरु जब स्यान लोक । बलीकुल कै पषि बांधी । जन हरीदास ऐसा बिरह । जहां तहां जुग मांहि । सती हूंण की हौंस धरि । तन जालन कौं जांहि ॥ १ ॥ अथ बिरह कौ अंग ॥ बात सुणै सुणि पीव की । सिर लै डारया चीर । लीया संदेश हाथ मैं । पैठै लागी बीर । देह सुत बित सब भूली । जीव गया तन हापीर । पैसि दावानलि झूली । जनहरीदास संसार की । लगी न काई सीर । बात सुणै सुणि पीव की । सिर लै डारया चीर ॥ २ ॥ बिरह मटी मैं पैसि करि । दह दिसि दीन्हीं आगि । जीव लगा पाप णि पीव कै । रही निरंतरि लागि । रही निरंतरि लागि । आंन चित ओट न धारी । प्रगट जली मैं दारि । लोक लज्या सब हारी । जनहरीदास पीव का बिरह । तन बसै धसि जागि । बिरह मटी मैं पैसि करि । दह दिसि दीन्हीं आगि ॥ ३ ॥ असलि सती आतुर कहा । अरु आलस भी नांहि । धीरे धीरै ऊगि चली । एक रेष मन मांहि । एक रेष मन मांहि । अवर कुं नियां सब षारी । जो गया तहां पीव देह षेह मैं लै डारी । जनहरीदास ऐसा बिरह । धव ... असलि सती आतुर कहा । अ आलस भी नांहि ॥ ४ ॥ १० ॥ अथ सती कौ अंग ॥ आदर ... ।

काया॥ कहूं काल चोट चूकै नही॥ जन हरीदास तिल
मात्रां। आइ संधा सरणै बैसत्ता॥ हसि हसि करता बात॥१
चौवा चंदन लाइ करि॥ करता बकुत संग्राम॥ जन हरी
दास ते मानई॥ जलि बलि हूवा छार॥ जलि बलि हूवा छा
र॥ नार अपणै सिर धास्या॥ या रसनां के स्वादि॥ जीव नांना
विधि मास्या॥ बकुड़ि बकुड़ि जामैं मरै॥ सु रुकाल मेल
र॥ चौवा चंदन लाइ करि॥ करता बकुत स्यंगार॥२॥ मा
ल मुलक हैंगे घणां॥ छत्र छांद मनि छाका॥ के मास्या के
मारिसी॥ काल करत है ताका॥ काल करत है ताका॥ अति
कोई छूटै नाही॥ सुर नर असुर अंनेत॥ सब लोक जम
का मुष मांही॥ जन हरीदास गोब्यंद सजो॥ अवर सवै
सुष पाका॥ माल मुलक हैंगे घणां॥ छत्र छांद मनि छा
का॥३॥ तन धरि धरि मरि मरि गया॥ हरि हरि सज्यान तेदास
द गति सब जाणै नही॥ तहां कंधका छेद॥ तहां कंधका छे
द॥ सो नन रवोट न छूटो॥ दस दरवाजा रोलि॥ काल काया
गढ लूटै॥ जनहरीदास अबगति अगम॥ स्तु ग्रंथ अवर
उमेद॥ तन धरि धरि मरि मरि गया॥ हरि हरि सज्यान
तेद॥४॥ जमोरे सो वो कहां॥ अवधि घटै घटि वीरसक
हो कहां लो रा षिपै॥ कूंवै मांडे नीर॥ कूंवै मांडे नीर॥ सक
गाफिल मसो वै॥ सजे नही माग वैरा बकुड़ि मलसो मत
धोवै॥ जन हरीदास सुर नर असुर॥ सब मंडली जम
की र॥ जमो रे सो वो कहां॥ अवधि घटै घटि वीर॥५॥ जं
न हरीदास निसदिन घड़ी॥ बाजैं बाकूं बार॥ घट तन घ
टत सब दिन घट्या॥ मरणं सही नयार॥ मरणं सही त

॥ बिरह कौ अंग ॥ सती होण की हौस धरि । तन जालन-
कौं जांहि । लोक लाज जलै जलत है । असलि सती सो नांहि ॥
असलि सती सो नांहि । पीव कौ षबरि न लाधी । चार जुग
स्या न लोइ । बली कुल कै पषि बांधी । जन हरीदास ऐ
सा बिरह । जहां तहां जुग मांहि । सती हूण की हौस धरि
तन जालन कौं जांहि ॥ १ ॥ १ ॥ अथ बिरह कौ अंग ॥
बात सुणे सुणि पीव की । सिर तै डारया चीर । लीया सिंदो
रा हाथ सों । पैड लागी बीर । देह सुत बित सब भूली । जीव
गया तहां पीव । पैसि दावानल फूली । जन हरीदास संसा
र की । लगी न काई सार । बात सुणे सुणि पीव की । सिर तैं
डारया चीर ॥ १ ॥ बिरह मटी मैं पैसि करि । दह दिसि दीन्ही अ
गि । जीव लग्या पणि पीव कै । रही निरंतरि लागि । रही निरं
तरि लागि । आन चित ओट न धारी । प्रगट जली मैदान
लोक लज्या सब हारी । जन हरीदास पीव का बिरह त
हां बसै धुसि लागि । बिरह मटी मैं पैसि करि । दह दिसि
दीन्ही आगि ॥ २ ॥ असलि सती आतुर कहा । अरु आल
स भी नांहि । धीरै धीरै उठि चली । एक रेष मन मांहि । एक
रेष मन मांहि । अवर कु नियां सब षारी । जीव गया तहां
व देह षेह मैं ले डारी । जन हरीदास ऐसा बिरह प
स्या बाडि कहा जांहि । असलि सती आतुर कहा । अ
रु आलस भी नांहि ॥ ३ ॥ १९ ॥ अथ चांणक कौ अंग ॥ आद
संघासण बैसता । हसि हसि करता बात । सुत बनिता
परिवार सूं । उठि गया करि घात । उठि गया करि घात । मा
त संगि तात न माया । साई संगि न मो मि । अंति सा पीव ह

काया॥ कहूं काल चोट चूकै नहीं॥ जनहरीदास तिल
मात्र॥ आइ संघास एंबै सता॥ हसि हसि करता बात॥ १
चौवा चंदन लाइ तनि॥ करता बहुत स्यंगार॥ जनहरी
दास ते मानई॥ जलि बलि हूवा छार॥ जलि बलि हूवा छा
र॥ मार अपणें सिर धारया॥ यारसनां के स्वादि॥ जीव नांना
बिधि मारया॥ बकुडि बकुडि जामें मरै॥ तुरंकाल मेला
र॥ चौवा चंदन लाइ तनि॥ करता बहुत स्यंगार॥ २॥ मा
ल मुलक कै हौ धणीं॥ छत्र धांहम निसांक॥ के मारया के
मारिसी॥ काल करत है ताक॥ काल करत है ताक॥ अंति
कोई बूटै नाही॥ सुर नर असुर अनेक॥ सब लोक जम
का मुष मांही॥ जनहरीदास गोब्यंद भजौ॥ अवर सबै
सुष पाक॥ माल मुलक कै हौ धणीं॥ छत्र धांहम निसां
क॥ ३॥ तन धरि धरि मरि मरि गया॥ हरि हरि सज्यान सेदास
र गति सष जाणें नहीं॥ तहां कंध का छेद॥ तहां कंध का छे
द॥ आंन न खोट न बूटा॥ दस दरवाजा रोलिया॥ काल काय
गढ लूटा॥ जनहरीदास अबगति आगमा॥ कूं गं अवर
उमेद॥ तन धरि धरि मरि मरि गया॥ हरि हरि सज्यान
सेद॥ ४॥ जगौ रे सो वौ कहा॥ अवधि घटै घटि बीर॥ क
हो कहां लौ रापिये॥ फूटै मांडै नीर॥ फूटै मांडै नीर॥ अव
गाफिल नर सोवै॥ सजै नहीं साहिब॥ बकुडि मल सों मुं
धोवै॥ जनहरीदास सुर नर असुर॥ सब मंछली जम
कीर॥ जागौ रे सोवौ कहा॥ अवधि घटै घटि बीर॥ ५॥ ज
नहरीदास निसदिन घड्या॥ बाजै बारूं बार॥ घटत घ
टत सब दिन घट्या॥ मरण सही तयार॥ मरण सही त

॥ बिरह कौ अंग ॥ सती होण की हौंस धरि । तन जालन
कौं जांहि । लोक लाज ले जलत है । अस लि सती सो नाहि ।
अस लि सती सो नांहि । पीव को षबरि न लाधी । चार ज्ध
स्या न लोइ । बली कुल कै पषि बांधी । जन हरी दास ऐ
सा बिरह । जहां तहां जु गमांहि । सती हूंण की हौंस धरि
तन जालन कौं जांहि ॥ १ ॥ २ ॥ अथ बिरह कौ अंग ॥
बात सुणें सुणि पीव की । सिर तैं डास्या चीर । लीया सिंदो
रा हाथ मैं । पैडै लागी बीर । देह सुत बित सब भूली । जीव
गया त हे पीव । पै सिदा वान छिकूली । जन हरी दास संसा
र की । लगी न कांई सार । बात सुणें सुणि पीव की । सिर तैं
डास्या चीर ॥ १ ॥ बिरह मटी मैं पैसि करि । दह दिसि दीन्हीं आ
गि । जीव लग्या पणि पीव कै । रह्या निरंतरि लागि । रह्या निरं
तरि लागि । आंन चित ओट न धारी । प्रगट जली मैदानि
लोक लज्या सब हारी । जन हरी दास पीव का बिरह । त
हां बसे धुसि जागि । बिरह मटी मैं पैसि करि । दह दिसि
दीन्हीं आगि ॥ २ ॥ अस लि सती आतुर कहा । अर आल
स भी नांहि । धीरै धीरै उठि चली । एक रेष मन मांहि । एक
रेष मन मांहि । अवर दुनियां सब षारी । जीव गया तहं
ह मैं लेडारी । जन हरी दास ऐसा बिरह । ष
स्यां छाडि कहां जांहि । अस लि सती आतुर कहा । अ
र आलस भी नांहि ॥ ३ ॥ १९ ॥ अथ आंदगी कौ अंग ॥ आइ
सं घास ण बैसता । हसि हसि करता बात । सुता बनिता
परिवार सुं । उठि गया करि घात । उठि गया करि घात । मा
त संगि ता तन माया । साई संगि न मोमि । अंति सा घी वल

काया॥कहूंकालचोटचूकैनही॥जनहरीदासतिल
मात्र॥आइस्यंघास्यणेबैसता॥हसिहसिकरता बात॥१
चौवा चंदनलाइकरि॥करताबहुतस्यंगार॥जनहरी
दासतेमानई॥जलिबलिहूवाछार॥जलिबलिहूवाछा
र॥मारअपणेसिरधास्या॥यारसनांकेस्वादि॥जीवनांस
विधिमास्या॥बहुडिबहुडिजामेंमरे॥स्तुरकालमेला
र॥चौवा चंदनलाइकरि॥करताबहुतस्यंगार॥२॥मा
लमुलकहैगैघणां॥छत्रछांदमनिछाक॥केमास्याके
मारिसी॥कालकरतहैताक॥कालकरतहैताक॥छांति
कोईछूटैनाही॥सुरनरअसुरछंनेचा॥सबलोकजम
कामुखमांही॥जनहरीदासगोब्यंदभजो॥अवरसबै
सुखपाक॥मालमुलकहैगैघणां॥छत्रछांदमनिछा
क॥३॥तनधरिधरिमरिमरिगया॥हरिहरिनज्यानभेदा॥स
दगतिसुखजाणेंनही॥तहांकंधकाछेद॥तहांकंधकाछे
द॥कोनतरबोटनछूटै॥दससहरवाजारोलि॥कालकाया
गढलूटै॥जनहरीदासअबगतिअगम॥भूगैअवर
तुमेव॥तनधरिधरिमरिमरिगया॥हरिहरिनज्यान
भेद॥४॥जागोरेसोवोकहा॥अवधिघटैघटिबीराक
होकहालोंराखिये॥फूटैमांडैनीर॥फूटैमांडैनीर॥पक
गाफिलनरसोवै॥सजैनहीसावंता॥बहुडिमतसोमत
धोवै॥जनहरीदाससुरनरअसुर॥सबमंछलीजम
कीर॥जागोरेसोवोकहां॥अवधिघटैघटिबीर॥५॥ज
नहरीदासनिसदिनिघड़ी॥बाजैनांद्वबार॥घटतघ
टतसबदिनघट्या॥मरणंसहीतयार॥मरणंसहीत

यारा॥ आपनि षट् कनरसो वै॥ मोह दोह सकिस का
न्ह लमायामधिषी बै॥ जन हरि मन्त्र मोलिक जात है॥ ए
निति करै सुकार॥ जनहरिदास निसदिनि षड़ा॥ बाजे
बा रूं बार॥ २॥ राजाराम नवो लगो॥ नाराइण निरसिंध
जनहरिदास ते मांन ही॥ जो हि अधोगति अंध॥ जो हि
अधोगति अंध॥ आनं आलस नरि लागा॥ त्रिबिधि अं
धारै बैसि॥ ग्यांन वो टण नही नागा॥ ग्यांन ध्यांन सुर
ग्यान बिणि॥ अवर अणेरा बंध॥ राजाराम नवो लगो॥ ना
राइण निरसंध॥ ३॥ २६॥ अथ चांको अंग॥ बिणि बादलि
बरिषा सदा॥ छह रुति बारह मांस॥ आनंद अंतरि दीपि
ये॥ परम जोति प्रकास॥ परम जोति प्रकास॥ प्राण सागर
मैं झूलै॥ अनहद सबद उचार॥ सुरति निज सावन झूलै
जनहरिदास आनंद भया॥ अरथि सम्माणी आस॥ बि
णि बादलि बरिषा सदा॥ छह रुति बारह मांस॥ १॥ पंष
पत्र मनसा सुगाति॥ निसदिन बैगा या हा॥ आसा रा षे अं
लष में॥ मर मत फिरे बलाइ॥ मर मत फिरे बलाइ॥ सं
घत बमहलि पधारै॥ सो या सेस सु सोसु ण हां कौं
रे॥ जनहरिदास अंद सुद कथा॥ तहां मन रहा सम
इ॥ पंष पत्र मनसा सुगाति॥ निसदिन बैगा चाइ॥ २॥ ष
गउड़ा आकास कौं॥ चीटी परांस माइ॥ जहां चींटी की
गमन षौ॥ तहां षग बेग जाइ॥ तहां षग बेग न जाइ॥ मु
ल क बोहत अवरै मां डै॥ सो तघूपर सरहे॥ करसि
सू छौ सुषदा ही॥ जनहरिदास चीटीतकौ॥ उलटि न पू
वी जाइ॥ षगगउडा आकास कौं॥ चीटीपरांस माइ॥ ३॥

ग्यांनगुफामैंपेसिकरि॥वैरागतालीलाई॥सुषपायासत
गुरुमिल्या॥सुतालीयाजगाइ॥सुतालीयाजगाई॥हृ
रिआपकौंआपबतावै॥घटघूंघटपटषोलि॥साध
तहांदरसणपावै॥जनहरीदासआनंदइहां॥तहांम
नरह्यासमाइ॥ग्यांनगुफामैंपेसिकरि॥वैरागताली
लाइ॥४॥परापरैपूरणब्रह्म॥परमजोतिप्रकास॥सक
लबियापीसंगिसदा॥सबतैंरहैउदास॥सबतैंरहैउ
दास॥वारनहींलाभैपारां॥निजतरैवरनिरसंध॥प्रांण
तहांबसैहमारे॥जनहरीदासआंतरिअगाद्य॥मनका
तहांनिवास॥परापरैपूरणब्रह्म॥परमजोतिप्रकास
॥५॥सबकौंसरबसदेतहै॥अपणीअपणीप्रीति॥
साहिबकौंसरबसदीया॥साकुछउलटीरीति॥याकु
छउलटीरीति॥जीतिगुणगोबिंदगावै॥सुंनिमंडलमैं
पेसि॥साचस्यौंसुरतिलगावै॥जनहरीदासआनंद
नया॥छूटीसबैअनीति॥सबकौंसरबसदेतहै॥अप
णीअपणीप्रीति॥६॥सहरअधरपैंडा॥अधर॥कसर
करमनहीकोरा॥दरमअधररह्यौ॥अधर॥अधरसब
दकीघोर॥अधरसबदकीघोर॥अधरबरिषाघणआ
या॥जहांतहांभरपूरि॥अधरगुरगमितैंपाया॥जनह
रीदासनिरसैंनगाइ॥तहांजमकारिसकैनजोर॥सह
रअधरपैंडअधर॥कसरकरमनहीकोर॥७॥निगम
अगममनतहांबसै॥जहांसाधांकीठौर॥प्रमानंदप
तिपरसतां॥छूटिगयाभरमओर॥छूटिगयाभरम
र॥रांमनिरंसैसुषपाया॥रूपरेषरसरह

लनकाया॥जनहरीदासअंतरिआगह॥पंकंचणका
पंथओर॥निरामआराममनतहांबसै॥जहांसाधांकीभै
र॥८॥सोअवृतसोव्रतसोइरह्या॥जागिजागिकहांजाइ
सोवणजाणतैंआराम॥तहांमनरह्यासमाइ॥तहांम
नरह्यासमाइ॥व्रपमअपणेघरिआया॥निरामूलनि
रसंध॥आरामगुरगमतैंपाया॥जनहरीदासअबगति
आराम॥तहांमनरह्यासमाइ॥सोव्रतसोव्रतसोइरह्या
जा जागिजागिकहांइ॥९॥मनचंचलनिहचलभया
त्रिबेणीतटिबास॥आपिअजबजंत्रजनपद्या॥प्रम
जोतिप्रकास॥प्रमजोतिप्रकास॥आगहिअघबिण
अघजारण॥सोतधूपरसरहता॥करमभ्रमसरमनिवा
रण॥जनहरीदासपतिप्रसता॥कांमक्रोधकानास॥
मनचंचलनिहचलभया॥त्रिबेणीतटिबास॥१०॥धु
निमांहीमुनिमवरच्या॥दहदिसिबाजैतूर॥जनहरी
दासआनंदभया॥सहजिप्रकास्यासूर॥सहजिप्रका
स्यासूर॥अजरनिरभैनिरधारं॥तहांमनरह्यासमा
इ॥वारनहिलाभैपारं॥जनहरीदासआनंदइहां॥जहांत
भरपूर॥धुनिमांहीमुनिमवरच्या॥दहदिसबाजै
॥११॥मनचंचलनिहचलभया॥अमनकोईन्नत
पहलीकापेंडाथक्या॥उलटिचल्याअवधूत॥उलटि
चल्याअवधूत॥निरषिनिरभैपदलागा॥कांमक्रोध
अभिमान॥आनअनरथआरिभागा॥जनहरीदास
आनंदभया॥उलटिसमूधासूत॥मनचंचलनिहच
लभया॥अरमनकोईन्नत॥१२॥२८॥मनकौअंग॥

अधरनीरआकासमैं॥राषै बिरला कोइ॥मनपांणी सुषि
सबदकै॥राष्यां हो थिर होय॥राष्यां हो थिर होइ॥हरि
नाव मनकै मधि धारै॥ब्रह्म अमि पुज लै॥मनपांणी यौ
मारै॥नार पलटि पाछै कहै॥जन हरीदास यछं दे
इ॥अधरनीर आकासमैं॥राषै बिरला कोइ॥१॥मन
कै मतै सब जीव है॥मन बसि करै स कोइ॥जन हरीदा
स मन राज है॥तहां राज निराजी होइ॥तहां राज निराजी
होइ॥नांच मन न बहोत न चावै॥तब हौ षुसी न आवै॥ब
कुरि तब हादु षण आवै॥ऐसमस जनका मैं नहीं॥पैंडा तजे
न देइ॥मनकै मतै सब जीव है॥मन बसि करै स कोइ
॥२॥मन बिस हरमु षपांच॥आपि आगि एंत नमासा॥
मैं बाद सडसमए अट नीसा॥सोहंबंन ई तहां बासा॥मोह
बेबई तहां बासा॥पूरब गाहि चिंता नाऐं॥दुह न्हैं तहां
जरहै रा जुगति कोइ जोगी जांणै॥जनहरीदास सुरपां
नजडी॥नाहिम षि कोलेआसा॥मन बिसहर मुषपां
च॥आंषि अगिण नतमासा॥३॥पांचौं इंद्री अपमन॥
चंता जहर मुषलोइ॥कील्या तब निर बिष भया॥डं
क सपि सकैन को ही॥जु गति जांणैं नजांणैं॥नाग दव
णि हरि नांव॥रहै मन कै मुष आगै॥जनहरीदास मन
उनमनि लागा रहै॥पवन सुरति संगि दोइ॥पांचौं इंद्री
अपमन॥चंता जहर मुषि लोइ॥४॥जनहरीदास कहि
ये कहां सूपो जै मन धारै॥काया बन मैं चोरै डरै न हि
डहकि न हारै॥डरै न हि डहकि न हारै॥चलै अपणी गं
गोडै मन रअसुरअनता सुतौ लिए

लन काया ॥ जन हरीदास अंतरि आगह ॥ पक्षे च एका
पंथ औरा ॥ निराम अगम मन तहां बसे ॥ जहां साधां की बै
र ॥ ८ ॥ सोवत सोवत सोइ रह्या ॥ जागि जागि कहां जाइ
सोवण जागण तैं अगम ॥ तहां मन रह्या समाइ ॥ तहां म
न रह्या समाइ ॥ प्रथम अपणें घरि आया ॥ निराम्ल नि
रसंध ॥ अगम अगम तैं पाया ॥ जन हरीदास अब गति
अगम ॥ तहां मन रह्या समाइ ॥ सोवत सोवत सोइ रह्या
जागि जागि कहां इ ॥ ९ ॥ मन चंचल निहचल भया
त्रिबेणी तटि बास ॥ आपि अजब जं ते जन पद्म ॥ प्रम
जोति प्रकास ॥ प्रम जोति प्रकास ॥ अगाह अघ बिण
अघ जारण ॥ सीत धूप रस रहता ॥ करम भेम रम निवा
रण ॥ जन हरीदास परिप्र सता ॥ कांम क्रोध कानास ॥
मन चंचल निहचल भया ॥ त्रिबेणी तटि बास ॥ १० ॥ धु
नि मांहीं मुनि मवरच्या ॥ दह दिसि बाजे तूर ॥ जन हरी
दास आनंद भया ॥ सहजि प्रकास्या सूर ॥ सहजि प्रका
स्या सूर ॥ अजर निरभै निरधारं ॥ तहां मन रह्या समा
इ ॥ वार न हिलाभै पारं ॥ जन हरीदास आनंद रहे ॥ जहां त
भरपूर ॥ धुनि मां । ही मुनि मवरच्या ॥ दह दिस बाजे
तूर ॥ ११ ॥ मन चंचल निहचल भया ॥ अ मन कोई न्हूत
पहली का पैंडा थका ॥ उलटि चिल्या अवधूत ॥ उलटि
चल्या अवधूत ॥ निरखि निरभै पद लागा ॥ कांम क्रोध
अभिमांन ॥ आन अनरथ भागा ॥ जन हरीदास
आनंद भया ॥ उलटि सत्पूधास्त ॥ मन चंचल निहच
ल भया ॥ अब मन कोई न्हूत ॥ १२ ॥ २८ ॥ मन को अंग ॥

अधरनी रु आकास मैं । राषै बिरला कोइ ॥ मन पांणी सुषि
सबद कै । राष्यां होथिर होय । राष्यां हीथिर होइ । हरि
नाव मन कै मधि धारै ॥ बल अघि पजलै ॥ मन पारा ये
मारै ॥ नारप लटिया इक तबै ॥ गन जन हरीदास यष पदे
इ ॥ अधरनी रु आकास मैं । राषै बिरला कोइ ॥ २ ॥ मन
कै मतै सब जीव है । मन बसि करै स कोइ ॥ जन हरीदा
स मन राज है । तहां राज बिराजी होइ ॥ तहां राज बिराजी
होइ ॥ नांव मन बहो तन चावै । टब हाथ सीउ ढाहा ॥ ब
कुरि तब हाइ मपावै । रांम जन का नै नहीं । पिंडा लजै
न दोइ ॥ मन कै मतै सब जीव है । मन बसि करै स कोइ
॥ ३ ॥ मन बिसहर मुष पांच ॥ आंषि अगिणं तन मासा ॥
मों हाद सड सण घट जीना ॥ मोहब बइ तहां बासा ॥ मोह
बे बई तहां बासा ॥ सू ग्रहि बिना ताणें इक तरै तहां
जरैं हैं ताजु गति कोइ जोगी जाणैं ॥ जन हरीदास गुर ग्यां
न जड़ी ॥ गहि मुषि की लै आसा ॥ मन बिसहर मुष पां
च ॥ आंषि अगिण तनमासा ॥ ४ ॥ पांचौं इंद्री अपमन ॥
चंता जहर मुष लोइ ॥ कौल्या तब निरबिष नर्या ॥ इ
क जीएस कैन को ही । जुगति जाणैं तब जागै ॥ नाग दव
णि हरि नांव । राषै मन कै मुष आगै ॥ जन हरीदास मन
उनमनि लागा रहै । पवन सुरति संगि दोइ ॥ पांचौं इंद्री
अपमन चंता जहर मुषि लोइ ॥ ५ ॥ जन हरीदास कहि
ये कहां । रूप गोज्यों मन धारै ॥ काया बन मैं चरै । डरै नहि
डह किन्हा रो । डरै नहि डह किन हारै ॥ चलै अष णी गा
गो जे मन र अस्पृश्य अनेता सुतै तिण का ज्यो तोडे.

बिबिधिदांतधरिन्चूरि॥सुतौसबसिहिसंघारे॥जन
हरीदासकहियेकहा॥रूपरौज्योंमनधारे॥५॥मनपं
षीकायासुबन॥डारिडारीचाव॥आयिअनंतहि
रमुषअनंत॥बिबिधिपंषबकुपाव॥बिबिधि
पंषबकुपाव॥सुतौसतिसबदनसाषे॥हरितरवर
सुषआराम॥जनहरीदासचंचलचपल॥फूलनरम
तहांसाव॥मनपंषीकायासुबन॥डारीडारीचाव॥
६॥ज्योंमनफेरैस्योंफिरै॥मनकौंफेरैनांहि॥निवाल
षजारकैं॥ब्याहबाहरजांहि॥ब्याहबाहरजांहि॥पा
हिअरुबिरकितगावें॥डाबीमांहादिहि॥ऐसधिरूप
कहावे॥जनहरीदासअैसाजती॥हमदेष्याजुगमां
हि॥ज्यूंमनफेरैत्योंफिरै॥मनकौंफेरैनांहि॥७॥नांव
तुम्हारोरांमजी॥लेतालोंनदांम॥मननिकमौबेगोरहै
करैअवरहीकांम॥करैअवरहीकांम॥गयानगरिअंतरि
नांही॥हरिसुषसागरछाडि॥बसैबिषकाबनमांही
जनहरीदासजामैंमरै॥हरिसोंइहहरांम॥नांवतुम्ह
रोरांमजी॥लेतालागैनदांम॥८॥४६॥मायाकौअंग
॥एकबीजताकाबिरष॥अनंतरूपबकुसाइ॥ता
फूलमें॥सबकोरह्यासमाइ॥सबकोरह्या
समाइ॥बकुलसूषाबकुधाया॥ताहीमैंउपजैषाये॥
आपहिआपबंधाया॥जनहरीदासहरिसुषआराम
तहांसाधएककोइजाइ॥एकबीजताकाबिरषअ
नंतरूपबकुसाइ॥१॥मायादरषतजहरफल॥अ
मदारनहिपार॥च्यारिषांनिकाजीवसब॥उकफर

कबिमतार॥अकफरकनिसतार॥सुसाधेलेंतामोंहु
जनहरीदासहरिलरनरस्तुषअगमा॥तसोतेपकुंसे
नोंही॥घटदसगनडिउहिथक्या॥बिलिघिपेसरी
सार॥मायादरषत्तजहरफल॥आमवारनतीपार
॥७॥कैजनसोंघीहिरै॥तहांनिरंजनपूरि॥अजरा
सेजनहोरमा॥जुराकालतेपुरि॥जुराकालसेंपूरि॥ज
नमअैसाक्योंहारैगी॥कोडीस्योंदेचा॥हाथलेंहाराउ
रै॥जनहरीदासगोबिंदनजो॥तजिमोमिनडाहेंमूरि
या॥जनस्योंप्रीतिहै॥तहांनिरंजनपूरि॥७॥सकल
बियापीसंगिबसै॥दुरंगदेहकीओट॥हजाअसुण॥
कोनही॥याअंजनकाघोट॥याहंअंजनैपोट॥जाणि
जोगीजुथकीजै॥मोनवडगलेहाथ्यि॥रिणजीतिका
पागरलीजे॥जनहरीदासहरिस्तुषसहो॥जमकरिम
केनचोट॥सकलबियापीसंगिवसै॥दुरंगदेहकीओ
ट॥४॥मातादेसेवाकरे॥देहपलटिकेनाहि॥पितापल
टिमीपूतहै॥देष्यासोचिविचाथिदेष्याविचा
रा॥वावयाकासोकहिये॥आपआपलोजांणि॥आप
तोन्यारारहिये॥जनहरीदासहरिस्तुमरतो॥ओरक
रिलोनमाहि॥मातोहेसेवाकरे॥देहपलटिकेनाहि॥
॥५॥५॥जोगीकोअंग॥चकलकमलप्रतिलखिमय
चलवलसतगयाहाथि॥कहतनकचवाकिवाकिनका
नवकोसक्यानमाथि॥जनकोसक्यानसमाथि॥स्वप
रसपरुपदारा॥जनहरीदासहरिस्तुअन
मनसक्यानवाथि॥चकलचकचवकिवकि॥थ
पारब्रह्मस्तुषहरि॥निरस्यालाअकलाकला॥

चलतमायाहरि ॥१॥ पढतपढतपढिपढिअपढ ॥ अरथ
करतनयेअंध ॥ हरिप्रहरिचाल्याकुपंद ॥ गलिमेंसैंदे
इफंध ॥ गलिमेंतेंदोयफंध ॥ नाउनस्यहरिनहीलीया ॥
पारब्रह्मपतिव्राडि ॥ अवरनानारसपीया ॥ जनहरीदास
नरनांमजे ॥ नारायंणनिरसंधं ॥ पढतपढतपढिपढि
अपढ ॥ अरथकरतनयेअंध ॥२॥ सुणतसुणतसुणि
सुणिअसुण ॥ कथतकथतगयाकोडि ॥ रहतरहतरहि
रहिबहता ॥ पालिगयामनफोडि ॥ पालिगयामनफोडि
रामतजिपारनकीया ॥ कांमक्रोधअभिमांन ॥ मोह
मायामदपीया ॥ जनहरीदासहरिसुषअगाम ॥ तहांम
नसक्यानजोडि ॥ सुणतसुणतसुणिसुणिअसुण ॥ कथ
तकथतआयाकोडि ॥३॥ ऐकादसगीतापढी ॥ अणसेअ
रथअनेक ॥ पेंडादोहदोहकरतहैं ॥ बातकहेतहैंएक ॥ बा
तकहैंतहैंएक ॥ सुरतितहांलागीनांही ॥ परापरैपतिव्रा
डि ॥ धस्यातंडजलमांही ॥ जनहरीदासनरबोलेदुरसि
बांणीबिबिधिबिबेक ॥ एकादसगीतापढी ॥ अणसेअ
रथअनेक ॥४॥ बेतदूलंमपटिआरबी ॥ सबकाकरेबै
न ॥ तीफिरिदुनीयांसोंमिलै ॥ इदबडमहरांन ॥ इहरांमु
रांन ॥ प्रेमसुषिपकंतानांही ॥ आपाकेअस्थानि ॥ बसे
बिषकाबनमांही ॥ जनहरीदासनिरबिषनही ॥ चि
तमांही ॥ बिनआंन ॥ बेदूलंमपढिआरबी ॥ सबकाक
रेबयांन ॥५॥ चारिबेदचास्योंपढ्या ॥ इलमआरबी
आयि ॥ मनचंचलनिहचलनही ॥ तोकछूनआ
याहाथि ॥ कछूनआयाहाथि ॥ बातकहेबौरादीय

हरिसमथ बिचि बोट॥ जनहरदू मिसतक रिपाया॥ जनह
रीदासकहियेकहा॥नरमनसक्यानताथि॥बारिबेद
चारयोंपट्या॥इलंमआरबीआथि॥६॥पाटपट्यासुमि
तसबे॥इलमआरबीआथि॥कहियेस्यौंरहियेनहो
तौकबूनआवेहाथि॥तौकबूनआवेहाथि॥अलब
गातिलषेनकोई॥पारब्रह्मपतिसाडि॥अबधिषएऐसै
नरषोई॥जनहरीदासकहियेकहां॥मनबसैबिड़ांके
साथि॥पाटपट्यासुमितसबै॥इलंमआरबीआथि
॥७॥सबसुमितश्रवणांसुणां॥सबदेष्याश्रवगाहि॥न
रथरसतकेसबदका॥अरथकरैबकनाह॥अरथ
करैबकनाह॥अरथश्रवणैसबजाणे॥अस्थलरैब
आगमअगमदृष्टांत॥कथामेंप्रसंगआणें॥जनहरीदा
सअबगुणइसा॥थिथिथितापतनिताहि॥सबसुमितश्र
वणांसुणां॥सबदेष्याश्रवगाहि॥८॥स्वांमीतौबेगास
हि॥मानिबांनिकीबांह॥मांनिबांनितडिजाइगी॥जब
जमपकड़ीबांह॥जबजमपकड़ीबांह॥पकड़िधरती
स्योंमारै॥जनहरीदासगोबिंद॥बिमुषनरकौंएदरबा
रिषुकारै॥मायावगिवगियावहै॥दुमतिजाणेंपांह॥
स्वांमीतौबेगासहि॥मांनिबांनिकीबांह॥९॥जनहरी
दाससबकौंस्युषी॥रागदोषरसहाथि॥अरसपरसहै
मिलिरह्या॥गुणइंद्र्याकेसाथि॥गुणइंद्र्याकेसाथि॥ज
हरदृमिसतकरिपाक्षी॥साधंबरजीबात॥तहांहीं॥
जीवै॥कोईजनजाणसोजाणेसी॥रांमनांम
जनहरीदाससबकौंस्युषी॥राग

सेषपहरिसांडीकरी॥हरिजातिस्योंहेत॥अरसपरस
बाह्वकजहर॥योंलाडूकरिलेत॥योंलाडूकरिलेत॥से
रसबांटेमारी॥अधिकप्रीतिप्रवेस॥मिलैजूंस्वांनस
जारी॥जनहरीदासकहियैकहा॥चेतैनहीअचेत॥से
षपहरिसांडाकरी॥हरिजातिस्योंहेत॥११॥लोगांसे
तीप्रीति॥साधदेष्यांदुषपावै॥बिकतदासेदूरियह
मोहिअचिरजआवै॥यहमोहिअचिरजआवै॥ज
हरवहारणादुषदाषे॥नीसांणाकीबात॥मूंमिठबधामें
राषे॥जनहरीदासअवगुणयह॥आपकाअवगुणबा
वै॥लोगांसेतीप्रीति॥साधदेष्यांदुषपावै॥१२॥तांमसगुण
रसबेरता॥राजसगुणअभिमांन॥स्वातिगगुणरसलुड
षडी॥तहांजीवतोडेतांन॥तहांजीवतोडैतांन॥घरसवो
ध्यानहीपाया॥सेषधस्योधरिछिप्पा॥जीवजीवांकीबा
या॥जनहरीदासकहियैकहा॥कहिकोंणनपूजेआंन
तांमसगुणरसबेरता॥राजसगुणअभिमांन॥१३॥स्वा
दीस्योंस्वादीमिलै॥जहांसमकितहांसाच॥मांनिअमांनि
स्वादनचावैतांत्रा॥पांच
॥

जनहरीदासहरिस्वादतजि॥ स्वा
दीस्योंस्वादीमिलै॥जहांसमकितहांसाच॥१४॥उपरवाडै
सेरियां॥कहैपावस्योंप्रीति॥यांहत्नांतासांहपरसिक
रि॥कूंणगयाजगजीति॥कूंणगयाजगजीति॥रांमसुष
लहैनक्योंही॥साषीसबदअरथ॥कहैकहिज्योंकास्यौं
ही॥जनहरीदासअवगुणइहर॥जाआंनरसरीति॥उप

रहाडै सैरियां॥ कहै पीव स्यों प्रीति॥५॥ पषापषी सबकौ मिलै॥ जहर नस्यामुष नाम॥ जनहरीदास कौ ल्या बिगाति॥ कहां कोइ लक हां काम॥ कहां कोइ लक हां काम॥ नषि नी भौरा नारी॥ वा श्रचवे रस श्रोबा॥ काम करै कांमि नचारी॥ बरण छाडि श्रबराग नजे॥ ताकै मसत मिला॥ पषापषी सबकौ मिलै॥ जहरनस्यामुषनाम॥ ६॥ नलि गया तांडी करी॥ प्रमसनेही राम॥ जहांतहां तेजी वसब न्यायसहै सिरि घांम॥ न्यायसहै सिरि घांम॥ नांव निरसे नहीपाया॥ स्रूक बिरष स्यों प्रीति॥ श्राम हरित रवरखा॥ जनहरीदास गोबिंद बिमुषा॥ कदे न रनि हकांम॥ नलिगया तांडी करी॥ प्रमसनेही रांम॥ ७॥ छंद॥ कांमी नरकौ श्रंग॥ कांमगाइंद गारजतफिरै पवनक्षजापहराइ जाजाघटिसंचरकरै॥ सो कांमसूपकै जाइ॥ सो कांमसूपकै जाइ॥ संक काहूकी नहीमांनै॥ असती मां हिवजा दिकौसवादसकी जानै॥ जनहरीदास॥ विमरि है शुधि बलकबूनबसाइ॥ कांमगाइंद गारजतफिरै॥ पवनप्रघजा फहराइ॥ १॥ सपांनतषैतैनतस्य॥ कुकाकरोषे श्राइ॥ देषिममनमन मोहनी॥ पीछै लागा धाइ॥ पीछै लागा धाइ॥ चोरि चंचल चित लीया॥ संकरसेंको इसबल॥ कां॥ जनहरीदासकै विये क हूं॥ वकुच

॥२॥ घटतघटनसबयोघट्या॥ ज्यौं किसाणकालोह॥ ज॥

मिरण गरि धारि ॥ श्रीनगरि दृष्टन आंणी ॥ जनहरीदास
हरिसूय आगम ॥ फेरितहे मन नलाइ ॥ जब घिघटे यासे
जुरा ॥ कालपकृता आइ ॥ २ ॥ मनसजन ऐक बात ॥ घा
तया ॥ तुम सौं कहियै ॥ तजि काम क्रौध अभिमान रां
म राषेत हार हियै ॥ राम राषेत हार हियै ॥ सिर जुरा जे
म चोट न लागै ॥ श्रा ॥ त्यु के अस्यानि ॥ जोगा जरणा ले
जागै ॥ जनहरीदास निरते बसत ॥ अगाहि श्रति अंत
रिल हियै ॥ मनसजन ये क बात ॥ घातया ॥ तुम सौं कहि
ये ॥ ३ ॥ पबआडि गोबिंद नजो ॥ तूं लिपडै मति कोइ ॥ जन
हरीदास हरि सी बसत ॥ तूं लागी नहोइ ॥ तूं लागी
न होइ ॥ फुनि गमणि बिणि कौं जावै ॥ जहर पयाला क
हर ॥ हाथि आपणै न रपीवै ॥ गरि श्रंतरि कांटा अके
गपानन जिरलै बाइ ॥ पबआडि गोब्यंद नजो ॥ तूं लिपडै
मति कोइ ॥ ४ ॥ आप आप कौं मारि करि ॥ आप आप कौं
घाइ ॥ आप आप कौं आडि करि ॥ आप आप रहाजा
इ ॥ आप आप रहा जाइ ॥ नांव निरले सुष जाणि ॥ ताख
बिरहै समाइ ॥ श्रीनगरि दृष्टन आंणि ॥ ता जनहरीदास
ब्यंद नजो ॥ मैं तै मोह चूकाइ ॥ आप आप कौं मारि
रि ॥ आप आप कौं जाइ ॥ ५ ॥ जनहरीदास सिर कै सटै
इ सौदा ल्योह ॥ सिर सौं प्पा संसार कौं ॥ यासाहिब कौं
दोह ॥ यासाहिब कौं दोह ॥ मूल यौ ही मत साचौ ॥ मद
न मोह मैं ते तजो ॥ एक सलामत योह ॥ जनहरीदास सि
र के सटै ॥ कोई सौदा ल्योह ॥ ५ ॥ जनहरीदास रचि मां
बरचि ॥ नांव निरंजन लेह ॥ जास्यौं तूं अपणी कहै सो
राम अघडित गाइ ॥ गहौ सतगुरु की बाचा ॥ २

तौ दूजी देह। सो तौ दूजी देह॥ कुण स्यौं न हन कीजे ग्रह।
टगौ ता मारि॥ आगम अनहद रस पीजे॥ पांच ततत
मिले॥ दुरै देष तां रोह॥ जन हरीदास रचि मांबिरचि
नांव निरंजन लेह॥६॥ जे टूचा है मुक कौं॥ तौ आंन
न धरिजे रि मावैं॥ मैं मा स्यौं मैं मिलौंगा॥ मैं न्यारी धरि
आव॥ मैं न्यारी धरि आवैं॥ जागि देषे नाहे लोई॥ अर
सप्रस रस एक॥ अवर संचर नहीं कोई॥ जन हरी
गोबिंद सजो॥ ऐ पासा यकडाव॥ जे टूचा है मुक
तौ आन न धरिजे रि माव॥७॥ आंन ओट उसा अजं॥ स
कह तैं पड दाडालि॥ त्यूं अमरूंवो साहिब के पड दान
ही॥ त्यूं आपणां बोड संनालि॥ त्यूं अपणां बोट संनालि
जागि नर जागि न सोई॥ नर नारायण देह॥ राम बिण
बादिन षोई॥ जन हरीदास अंतरि अगहे॥ आगम व
सतसंभालि॥ आंन ओट उसा अजं॥ स कह तैं पड द
डालि॥८॥ जहां जीव तहां जोर है॥ जोर जीव के साथि।
सहर मांहि बाजी मंडी॥ बाधली पासा हाथि॥ पाली पा
सा हाथि॥ साथि सब षोटा साथी॥ कांम क्रोध अति म
ना मोह मद दिवहत ता हाथी॥ जन हरीदास गोबिंद जो
हरि निरभै निज आथि॥ जहां जीव तहां जोर है॥ जोर जी
व के साथि॥९॥ बेर बिरष हिरदै बसै॥ दिन दिन बधतौ
जाइ॥ या बदन कौं हरि जडी॥ ताइ सकहतौ लाइ॥ ता
इ सकहतौ लाइ॥ रोग कौं दूर दहाणन पावै॥ जन हरीदास
तजि आन राम भजि राम दा गावै॥ [illegible] रितर वरसौ त
[illegible] सकौ जहर फल षाइ॥ बेर बिरष हिरदै व

रवलोनवे जस्तदोदिसव्हिवांनके पङवेविस
कोरु ७ छि [illegible] तवयोसमतिश्रवदो
त वतोनश्रवताहु वेर्थसवसोथांत्या चोरत्यु
सवसाहु चोरतयासवसाहु साकैसेदेताना तेवे
निरेजनदेव श्रोनश्रसत्यश्रोताना जनहोदिस
देसिङ्विरता सववटिसदाङ्गाहु तवेयीसोततिश्र
वक्ती तवेतानश्रदसाहु १ रागदेषविरेदत्वहु क
सोकेरतवोट तुयसिप्यावोततहो श्रवणास्तुयेन
वोट श्रवणस्तुरोग्योट नेव निरेतस्तुयपाया तास्तुयि
र्योसमाट कोडिसवजोटवाम्या जनहोदस्तहोरे
तुमिरवो ट्रोश्रोसववोट रागदोषविदेतहो कर
सोकरसवोट २ [illegible] साव सवदहो
रापरा रायेविरताकोड पथपडासामोसवहो योफिर
कोरहेर तोफिहिहोरहेव संसकेसादेवोजे जवहो
दसतोवकाडि कोसहोरकोकोजे जेस्याकिसदेस्यात्त
न छोपपडेसिरिताङ सोव सवदहोरापरा रायोविरत
३ [illegible] सितसन्यानिरछे
सा श्रतीश्रतिश्रणराग जवहोरादसतिजनिज
रयता वडोलहु सिवेराग वेडोलहु सिवेराग तिवी
जोनिजनदतश्रेव सनसुविदेवसाच सोतोवरिव
टिथोवे यायेसमंदश्रयाहु श्रोगतकाहोरत्यावे
भविपविधितिजपारङु द्यारवनदोरजिस जापति
कवोपावेय सितसिन्यानिरमुणदस [illegible]

रताकौ अंग॥ आप आपकौं मारि करि॥ [illegible]

इ॥ आप आपणां नास करि॥ [illegible]

रसा ल लिजा इ॥ आप आपकौं आपस्यां [illegible]

लिवसि स्यांन इ सेइ सिइ संण्णा॥ [illegible]

आत्मा एकरूप बक्ता इ॥ आप आपकैं [illegible]

प आपकौ याइ॥ १॥१०४॥ [illegible]

चैमहै साचा रोपे पाव॥ पेवा आरिद [illegible]

जनस्यूं न्यावै॥ राम न जनस्यूं न्याव॥ [illegible]

रागजमनमधि पेसि॥ पांच पाइ कपा [illegible]

ससा चैमहै तोर मैं न काचडा व [illegible]

रोपे पावै॥ १॥१०५॥ [illegible]

इ की पूंजा यो वै॥ [illegible]

वै॥ अमाति जागि व जौ है [illegible]

वित विपति नां [illegible]

रिलमी व कुरि सि [illegible]

की पूंजा योवै॥ [illegible]

जम की सुणि [illegible]

इ मिरतक [illegible]

रैनदी को [illegible]

हरीदम [illegible]

वकी [illegible]

व र जपत [illegible]

ये वि [illegible]

घासं ण छाडि सूलसज्यामैं सोवै। जनहरीदास
रांम डुष सदा रण डुष दाषै। चंदन बिरष उप
र खर जड राषै॥२॥१०८॥ हैरान कौ अंग॥ क
कहि कहि अकहि। सुणत सुणत सुष सार
लल हि लहि अलहि॥ अगम वार न दीपार॥ अ
पार नाव कहुं थस्यान जाई। निराकार नि
र्भै सुषदाई॥ जनहरीदास अरि चित अरत। हासम
रथ सिं जनहार। कहत कहत कहि कहि अकह। सु
णत सुणत सुष सार॥१॥१०९॥ हैतप्रीति कौ अंग॥ मे
रा मन हरि सौं लग्या। हरि मेरा मन मांहि। मैं हरि कौं छाडौं
नहीं। हरि मोहि छाडै नांहि। हरि मोहि छाडै नांहि। हरि अ
प कौं आप बचावै। निराकार निरलेप। साध कौं पेडै ला
वै। जनहरीदास हरि सुमिरतां। जुरा काल भै नांहि। मेरा
मन हरि सौं लग्या। हरि मेरा मनमांहि॥२॥११०॥ दयानिर्वै
रता कौ अंग॥ चीटी कौं दीजै धका। तब ही अनरथ हो
त। मंतका जाप जपि। बुरा करै मति कोइ। बुरा करै
जीव पेला दुष पावै। सबद जगावै बीर। बीर
भयि आवै। जनहरीदास साहिब सहित बेरपा
ड पंत है दोइ। चीटी कौं दीजे धका। तब ही अनरथ होइ
॥२॥१११॥ कुंडल्या संपूर्ण॥ अंग ५०॥ श्री दयालजी महाराजे
सकलसाधमहाराजे॥ श्री दयालजी हरीपुरुसजी का चंद्रायण
लिष्यते॥ गुरुदेव कौ अंग॥ गुरु समरथ सिरजनहार
सनेही रांम है। सजिकरणी निधि करतार सजन सौं कां

मेहै॥ बिलंमन कीजे नीरसैं निकाजा मैहै॥ हरिहां जन हरी
दास निरमल अंग अतंग अजब बिश्राम है॥१॥ सुमिरण
कौ अंग॥ वेद सूर रथ अटकि निरंजन पाईये॥ उलटी प
बसेवारि तहां मन लाईये॥ त्रिजि घट अवघट घाट अगम
तहां जाईये॥ हरिहां जन हरीदास गिगनि गुफा मैं बेसि
एक गुण गाईये॥१०॥ सील संतोष बिचार सपांन जगाईये
उलटी पवन संवारि अगम तहां जाईये॥ निगम अगम रस
एक तहां मन थाईये॥ हरिहां जन हरीदास हरि तरवर
मैं बास अगम फल षाईये॥१॥ ग्यान चक्र ले हाथि सबन
मंड मेलिये॥ परम जोति बिश्राम तहां मन मेलिये॥ बिषा
बाराह मांस तहां अमीरस केलिये॥ हरिहां जन हरीदास
आन धरम सब झूठ पाव सो पेलिये॥३॥ रांम नांम ब्रत धारि
बिषे बिष डारिये॥ सब मन पवनन संबाहि त्रिबिधि रस ट
रिये॥ पिंड करणं बीर दे सिर पाव धारिये॥ हरिहां जन हरी
दास उलटा पवन निरोधि सपार मारिये॥४॥ राजा रांम बि
सारि सजन मन हारिये॥ मोटा बैरी मोह महा रिपु मारिये
कांम क्रोध अभिमान आगि निमुषि जारिये॥ हरिहां जन ह
रीदास तजि रांम सकांम सवारिये॥५॥ पारब्रह्म सों प्रीति म
राति बिचारिये॥ हजारी ति अनी अति हाय पें डारिये॥ कांम
क्रोध मन मेल अगनि मुषि जारिये॥ हरिहां जन हरीदा
स अ सास अलष उरि धारिये॥६॥ अब तो एक अनूप
लषि प्रघरत है॥ सूनि मंडल मैं बेसि सआरंभ करत है॥ म
जि अलष निरंजन नाथ असम प्रम ष जरत है॥ हरिहां ज
निरभै नया निसंक साधन हो इ रहत है॥७॥

जीत्ति भ्रमसुष पाईये ॥ २ ॥ जोग पंथमें पैसि सूं विन
फेरिये ॥ ग्यांन षडग लेहाथि सबल घट घेरिये ॥ ल्यो डोरा
करि साथि तहां मन ज्योरिये ॥ हरि हां जन हरीदास अलष
निरंजन नाथ निरंजन हेरिये ॥ ३ ॥ ५५ ॥ सजीवनि कौ अं
ग ॥ हरि सुरण अगाध अषंडित रांम है ॥ साध बसै तां
देस मुलक निह कांम है ॥ जरा काल सैं नांहि सीत न हीं घां
म है ॥ हरि हां जन हरीदास परापरै पति एक अजब बिस्रां
म है ॥ १ ॥ ५६ ॥ पतिब्रता कौ अंग ॥ रजा तें हारी रांम कहो
मैं स्यों करूं ॥ मन गहि पवन सें बांधि उलटि कित लटा धरौं ॥
बसत अगनि मैं पेसि अगनि जराजरौं ॥ हरि हां जन हरी
दास रांम नां म व्रत धारि न आंन ब्रत उर धरौं ॥ १ ॥ पीव जी
व का जीव निरंजन राइ है ॥ उपाजै न बिनसै मूलि न आवै
जाइ है ॥ अमर धारि बड़ प्रकास साध मन लाइ है ॥ हरि हां जन ह
रीदास प्रगट घूंघट मांहि एक कौ पाइ है ॥ २ ॥ ५८ ॥ सा
ध कौ अंग ॥ बो बाकै रग मांन साध कैनां हिरे ॥ माइंबर
सैं मेहनंदी घर रां हिरे ॥ डीया उकलै नांहि सां मांहि समांहि
हरि हां जन हरीदास यौं साध देषि जग मांहि रे ॥ १ ॥ रांम
नेही साध महाबे मैदान मैं ॥ पहस्यासी लसनाहद यक गुरु
ग्यांन मैं ॥ बाजै अनहद तूर बसै धसि रांम मैं ॥ हरि हां जन
हरीदास धुनि ध्यांन सदा बिस्रांम मैं ॥ २ ॥ जहां जीव तहां
सीव एक कौ जांणि है ॥ मन कौ उलटा फेरि सहजि घरि आं
णि है ॥ जोग मूल की बात सघात पिछांणि है ॥ हरि हां जन
हरीदास मजिपूरण धसूतौ ॥ ३ ॥
चूरि
॥ ६ ॥ मन कौ अंग ॥

हरिकौ रूप इद फिरि आइ ॥ जडी सजीव
न बसाइ ॥ हरिहां जन हरीदास हरिराइ
॥ १ ॥ ६२ ॥ सेम्रथाई कौ अंग ॥ हरिजन
पाल हमारी करत है ॥ हरि आप आपणां धा
दे धरत है ॥ सब षलक राम सुष छाडि अर
हरिहां जन हरीदास मन कलट चव धा अ
नही मरत है ॥ ६३ ॥ कुबधी नर कौ अंग ॥
[illegible]टमांहि सदा ही घडत है ॥ कंचन हिरदा मां
हि काच ले जडत है ॥ कंकड चल्या जो हिस आगि पड
त है ॥ हरिहां जन हरीदास सब षलक दिवांनी देषि कहां
कौ घडत है ॥ १ ॥ बाद बिबाद निवारि बकुरि पछिता हि
गा ॥ हरि सौं नांही हेत रसातलि जाहिगा ॥ मदन मोह गुण
मांहि गरक लपटांहिगा ॥ हरिहां जन हरीदास राजा रो
म बिसारि समोटा मांहिगा ॥ २ ॥ ६४ ॥ चंद्रायणां संपूरण
अंग ॥ ४ ॥ रामाय नमः ॥ निरंजनाय नमः ॥ गुरस्यो नमः ॥ बा
बाजी दयालजी कौ रेषता लिष्यते ॥ सईयां ऊलटि देषि ह
जूरि ॥ औजूद मैं मोजूद मीरां ॥ कहा षोजे दूरि टेका ॥ निक
टि निज निधि तरण तारण ॥ निज सूरति तत सौं सारि ॥ दिल
मांहि मकाइ हम सुथरा ॥ पांच सब लजूरि ॥ १ ॥ मांहि सूरति
गरद गाफिल ॥ साहिब या सुलितांन ॥ हरदंम हजूरि सिरता
लि निस दिन ॥ चरचस्यों दीवांन ॥ २ ॥ चुसबव समां नरधझं
तरि पारबगा सत निवारि ॥ दैस हाजरि आगम यारा ॥ आफि
कां दीदार ॥ ३ ॥ दरबारि दोजिग यक ऊमरा ॥ मनी मारे
॥ ४ ॥ दिल
मीरां मेहरि का मकसूद ये

साषालिकदूरि॥२॥५॥ वेदेवेदगीकुसियार॥जो का
रिमीजैरहैइगा॥बक्तषाहिगामारा॥टेक॥म्है॥गाले
फूलिवैवा॥जहांसततहांजमत्रास॥कालनटकैहाथि
डोरी॥कंपिवंध्योकपिज्योंपास॥१॥पालैटेपुरिपिसं
णपकृता॥गुणयासिगोबिंदगा॥२॥हरिनांवलेनरबा
ड़िमेतैं॥जनमजूवाजाइ॥२॥सोरदहृदसिजोरिलागी
छूटिहैगटदेहा॥जनहरीदासजोगीजागिजुधकरि
रांमश्रावधलेह॥३॥ ॥अरिभक्तासंपूरण॥इकातजोहरी
दासजीकाकवितालिष्यते॥ गुरुदीरघज्योंमेरसमदज्यें
थाहनकोई॥मतिगंभीरज्योंगिगनिचंदज्योंसीतलसो
ई॥सब्दिष्टीज्योंसूरपवनज्योंलिपैनलोई॥वसुधाज्यों
मनधीरउमसंगीगुरुसोई॥जनहरीदासगुरुरामश्रग
मकहततनश्रावैक्याकहों॥गुरगोबिंदचरणांरबिंदना
रब्यंटिलागारहों॥१॥तुम्हसतीरथतुम्हसब्रत॥तुम्ह
सपोरषसबलाई॥तुम्हसबंधूतुम्हबाह॥श्रांनचित
श्रौरैनकाई॥तुम्हसमातपितापरिवार॥तुम्हसजनस
ई॥तुम्हसर्पानतुम्हध्यांन॥रांमजीरांमदुहाई॥श्र
बसतश्रंतरिश्रागह॥कलिबिषकाटणतापजी
नहरीदासकेएकतूं॥श्रांनतजाचोंबा
नश्रौसाजाचौंनहीं॥ममदिवांनसश्रौरहै
लितानांहि॥पवंनगिरउथमीना
ग॥बिघनकोचुहलनांही॥बपघ
मभैभरमैनांही॥रिबसिसदिवंस
णनांही॥व्यापैसीतंधूप॥गिगनिब

न

समबतैंअगम॥तासंगमिकोईबिरलालहै॥दि
साजाचीनही॥समदिष्टानसबओरहै॥३॥आवा
गतिकोलहै॥कौंणगौणइरमापै॥कौंणमेरकौंतोलि
पनांउलटीथापै॥कौंणसमंदजलतिरै॥कौंणगुरया
मतिआपै॥छसआगनिमैंबैसि॥कौंणसिधअंतरिता
॥जनहरीदाससरणअया॥नहीनेडानहीदूरि॥कौम
तैकहिकहिअकहा॥हरिजहांतहांभरपूरि॥४॥जोग
जोगअसूझिदि॥सीसगहिदेसचढावै॥पांचआगनितप
सिलाकरैउनातपमावै॥अबबिवरितनिसीता॥सुतौस
बतीरथन्हावै॥कासीछाडैदेस॥हेमबसिहाडगमावै
बिबिधिधरमतमस्याबिबिधि॥फलमुगतेपकुबसरै॥ज
नहरीदाससहरिनांवबिनि॥नरकहिकौंणवोटनिरसै
रहै॥५॥आगमतीरथगुरगामिसुगम॥आगमतपस्याजि
गजोगबिचारौ॥येकादसीआगंम॥आगमनरनांवहरि
नबिसारौ॥सतसूरातनआगम॥आगमगुरुपांनउरिधा
रौ॥गंगाजमनमधिपैसिकरि॥आगमबसतअंतरिलहै
जनहरीदासनिहैमेटै॥तहांउनमनिलागारहै॥६॥रामनामउरि
लोकलाजपषभेषतहां॥मिलिजनमननेहारौ॥घट
धरौपायउलिडनपसारौ॥भवसागरवारमधिनाहि॥हरिनिज
घाटतजिअघटबिचारौ॥प्रेमपांनप्रेमध्यांन॥
नाथंनरनिमषनबिसारौ॥जनहरीदासदंडौअटकि
पिसंणपलटिप्रेमगतिलहै॥तहांउनमनिलागारहै॥७॥
प्रेमपांनप्रेमध्यांन॥प्रेमगुरगमितैंगावौ॥कांमक्रोधअ
द्वधै
निमांन॥कूपहिकांटामतिलावौ॥

मरेहमरिमौंतचुकावै॥ जनहरीदासमनगाहिपवं
ब्रह्मअगिनिबिषबनदहौं॥ आगमबसततंतरिआ
ह॥ तहांउनमनिलागारहौ॥८॥ पूतकलितपरिवा
र॥ मालबहैमुलकबडाई॥ कंचामहैलआवासा॥ मे
लसजनसुषदाई॥ बोहसोंजीवहैपांन॥ सेजपासाद
रयाई॥ करधरिमुंबमरोडि॥ कहैमेरीजडहाई॥ हरि
सुमरणहिरदैनहीं॥ दहदसिमायाघेरि॥ जनहरीदास
योंजांणिये॥ याहसिलसुषदुषअसमेर॥९॥ जहांजी
वतहांसीवबिचिमायाकासरवर॥ गिरवरजंगड
तंग॥ बिबिधिबिषकाबनतरवर॥ आपसंघजबजु
रा॥ जीवधरिसकेनतहांधर॥ न्हावहैमेंमंतमंबमर
णंमघिडहडर॥ जनहरीदासहरितहांचलौ॥ ग्यांनआ
रितजिघर॥ जहांजीवतहांसीवबीचिमायाकासरव
र॥१०॥ गहरबागरंगराग॥ तहांध्यांनधरिजोगीबैगा॥
जबकिमासंपंघ॥ सूरसिसहरअंगबैगा॥ गयापाप
उदेसि॥ यक्रमतजिधूतरधेगा॥ गंगाचढीबहांडि॥ अ
वकरताहैगा॥ अरसंत्रसरसबमगाति॥ प्रमसे
निरसैलया॥ त्रिबिधितिमरगतयबगाति॥ जनहरी
दाससतगुरदया॥११॥ नाथमछंदुदेषिदेषिगोरषगु
रणरता॥ रह्याधणीसोंलागि॥ छाडिसबजगकामता॥
गोपीचंदभोजाणिये॥ जोगध्यांनसेंसेंगह्या॥ हैगोमेगोछा
डिकरि॥ मायातेंन्यारारह्या॥ सुषदेवसीमायातजी
बासछाडिबनमेंबस्या॥ जनहरीदासतेउबस्या॥ जगास
गलामायाडस्या॥१२॥ नाथनिरंजनदेषिअंतिसंगीसु

षदाई॥गोरषगोपीचंदेसहजसिधिनवनिधिपाई॥तामें
दासकबीररामभजतांरसपीया॥पीयेजनरैदासब
डेठकिलाहालीया॥अणेसेसबदसंतालिकाशि॥ज
नहरीदासलागातहां॥रामबिमुषडुबधाकेरीतेनि
रबलपडुंचेंनांही॥१४॥हैवरगैवरगाववरगढ॥फोजफ
रहरबकुंपाईका॥बहोजोधादरबारि॥पसेंआषूंतें
षाइका॥बैतरवास्यांतनतोलि॥चटैंअणियांमुहिला
इका॥त्रितिमालीकरिधरिबिबरिबकेंमुषबिक्रत
बाइका॥लोहचाकगोलीगिलें॥सदलजीतेंसुभुरां॥त
उजनहरीदासहरिनांवबिणि॥नरबिकटरूपदीसें
बुरा॥१४॥बीरघंटघरहरैंजुटैगैरिणमेंगाजैं॥पडेलो
हमैबाड॥सडंगाषसतांरिणभाजैं॥करवरकरसूं
तोलिपिसणांतबिपिसणअवताजें॥सूरबीरसनमुषि
चटैंषितजिकाइरभाजें॥सूरबीरसनमुषिचटैंषे
ततजिकाइरभाजें॥नीरवतस्योबीरनांवषत्रापणि
लाजें॥दोसौंपषनिरसेरतन॥स्यांमधरमअरठेण॥ह म
रीदासजनयोंकहै॥बालितिमांणोंमांण॥१५॥तजिक
रणांनिधिकरसार॥नांवनाराइंणलीजे॥तजितिराम
लमिरस्यंध॥कांमआरंभयुक्तकीजे॥तजिअलष
निरंजननाथ॥छाडिबिषइंचित्तपीजे॥तजिप्रमगु
दारअपार॥प्यांनगाहिध्यानधरीजे॥जनहरीदास
वारपारकौमतिनहीं॥रांमनांममोटोरतन॥उरिमंड
णउरिधारि॥प्रेमप्रीतिदीजेजतन॥१६॥दयासजीव
काकबित्तसंपूरण॥श्रीरांमायनमो॥निरंजनायनमो॥श्री

एक दिन तो योंही गया ॥ (स्थानक बक्र) स स्थान को दूं
कां मेवे ॥ परनिंद्या करि मैं बडा ॥ स्यानक बक्र रांम वे
स्यांनक बक्र रांम अहि ठा कि ॥ माया के ठा कि मिलि
रह्या ॥ हरि पति गति प्रवांण परहरि ॥ नीच जलि नीचा व
ह्या ॥ जहर फल जुगि आदय धा ॥ जीव सब प्रबासि नया
हरि प्रांण नाथ सनिकट न्यारा ॥ यक दिन तो योंही ग
या ॥ ३ ॥ आपणें आपणें मनि मते ॥ वाल तरे है सब लोइ
वे ॥ मरणां है जीवणां नहीं ॥ जीवत मरै न कोइ वे ॥ जीवत
मरे न कोइ प्रवासि ॥ मरणा हुआ सिर परि घणां ॥ मरे ह
जो मी मरण भी वा ॥ मरिस जो साहिब आपणां ॥ संसार
में कोई अमर नांही ॥ अमर हरि न जिमणा ते हरि व म
संगी जोणि मूला ॥ आपणें आपणें मन मते ॥ ४ ॥ आडा
डूंगर बन घणां ॥ नंदी यां गेडा नीर वे ॥ हरि दिसा वरिव
लणां ॥ मन धरि सके न धार वे ॥ मन धरि सके न धीर यक
हूवा ॥ सुघ मन नां फूटी बडे ॥ जैसा ना है तुणै तैसा ॥ नफा
तोटा सिरि सहे ॥ अवर कोय कु दोस नांही ॥ कीया पा
वे आपणां ॥ जन हरीदास डर लग सदा रणा ॥ आडा डूंग
र बन घणां ॥ ५ ॥ मन रे कूस्याणां नहीं अयांणां रे थो
डी राति बहोत क्या सोवे ॥ जागि र देषि दिवानां ॥ टेक
माया देषि कहां मन फूल्या ॥ देहा देषि मसतानां ॥ फू
ली काया फूली माया फूवे हे ति बंधानां ॥ १ ॥ हट वाडा
आवै जो बिछुडे ॥ समकि देषि ये बांनारे ॥ आजि नहीं
तो कालि हि न रहणां ॥ मरण नदी बहि जाणां ॥ २ ॥ सौप
ति बहोत कले माया में ॥ मीर मुलिक सुलतानां ॥ जन

टा॥ कांमबिसहरसेंगिडसै॥ कालकेकरिकेसमिसदि
न॥ नगरअबिद्यातहांनरबसै॥ ८॥ मोहमहलमेंमन
सोइवे॥ च्यंतासोइ॥ बिछाइवे॥ सांसेकीसिज्यासही॥ सब
साजहांतहांजाइवे॥ मनसाजहांतहांजाइदहदि
सि॥ त्रिबिधआरधसेंगिथटा॥ सुषसीलसाथीसा
थनांही॥ ऊंबधिकोटागरिअटा॥ हरिनांवनिरमल
नीरन्यारा॥ करिमसिलगीमसिस्यूंमसिधोवे॥ आपंन
अस्यलिपांचरसबसि॥ मोहमहेलमेंमनसोवे॥ ९॥ नव
सागरसूभरतस्या॥ तहांकूमारावासवे॥ बोहिथहरि
जीकानांवहै॥ तजीकूंतीआसवे॥ हूजीकूंतीआसहरि
बिणा॥ तहांक्योंमरबाइरी॥ रामतजिमवरायनिहव
ला॥ पारिंगतरिजाइये॥ अगहगहिा॥ अकहिहि॥ अमरत
जिअजांराजस्या॥ जनहरीदासहरिबिणपारनांही॥ स
वसागरसूभरतस्या॥ १०॥ जुगामेंअसासाजीवणं॥ सुप
नैकासाकांमवे॥ जाबधणीकोदीणं॥ अज्यानकबकूरा
मइकेलस॥ ऐकरसिलागारह्यो॥ संसारदुषसुषपाइवे
॥ कपहलैकसंगतिक्योंबहो॥ गोब्यदगावोग्रबबाडो॥
स्नपावणं॥ तबसंगितातमातनसगाबंधू॥
गमेंअसासाजीवणं॥ ११॥ यासुषकादुषअनंतहै
गिणितीग्यांननकोइवे॥ सोसुषपहलीखाइणं॥ पला
नपकडेकोइवे॥ पलानपकडेकोइस्तेरा॥ इहअरथबि
चारिये॥ जागियंथीकहासोवे॥ सोयांसरबसहारि॥
लटापंथसेंसालिपंथी॥ सतिसबदसतगुरुकेहै॥ बिसि
थि बिषबनमांहिबिसहर॥ यासुषकादुषअनंतहै॥ १२

यक दिन तोयों होगया ॥ तज्ञानकवङ्कसस्थानकोई
कोमहै ॥ प्रनियाकरिमैवडा ॥ तज्ञानकवङ्करांमवे
तज्ञानकवङ्करामश्रछैकि ॥ मायाकेछकिमिलि
रसा ॥ हरिषसगतिप्रवाणप्रहरि ॥ नीचजलिनावाव
हा ॥ जसरफलजुग ॥ आदषाधा ॥ जीवसबप्रवसिलया
हरिषांणनाघसनिकटिन्यारा ॥ यकदिनतोयोहोगा
या ॥ १३ ॥ अपणेअपणेमनिमहे ॥ चालतहेसबलोइ
वे ॥ मरणहैजीवणनही ॥ जीवतमरैनकोइवे ॥ जीवत
मरैनकोइसबसि ॥ मरणाइयसिरपरिषणसंगहू
जोगीमरणसीग ॥ मरिनजोसाहिबआपण ॥ संसार
मैकोईअमरनांही ॥ अमरहरिनजिसुणगतेहरिप्रस
संगीजाणिमूला ॥ अपणेअपणेमनमते ॥ १४ ॥ आडा
डूगरबनघणा ॥ नदीयाजडानीरवहरिटिमावरिवा
तणा ॥ मनधरिसिकेनधारवे ॥ मनधरियकेनधारयक
डुघासुघमनाफगीवहे ॥ जेसावाहेनूणेतया ॥ नफा
तोटासिरिसहै ॥ अवरकोयकदोसनांही ॥ कीयापा
वेआपणां ॥ जनहरीदासदरनघमदाराग ॥ आडाडूग
रबनघणा ॥ १५ ॥ नतीरकुनाकतहै ॥ ज्याणोरथो
डीरातिवहोतक्यासोव ॥ नाग ॥ हतयिहवाना ॥ हक
मायादीयिकाह्लोनलन्तलानाहतदयिनयसनाम
वीकायाकुवामाया ॥ जवहैनिवयत ॥ १ ॥ हरवाह्म
आवेगोविछुडे ॥ मनजिदवियानात ॥ आजितही
दोकालिनरत्नाग ॥ तरतदवाकरि ना ॥ १७ ॥ संप
तिवहोतकहेमायामै ॥ नीरसुनिकसुलतानोजम

हरीदासबिरलाजनकोइ॥ उलटीपंषगडानी॥ ३॥ १६
सजनसनेहराषे॥ प्राणहरिगुणगाइ॥ टेक॥ मनरज्यों
मनफिरेदहदसि॥ कालदस्यूंसिहेतही॥ जहांलोगोत
हांकोंटा॥ निजनांवबिणिनिरभेनही॥ १॥ अजकंजी
वड़ाकहांसोवे॥ जागतिजांणिनजागिही॥ आकजा
ड़क्यूंहृधेंसोवे॥ अंतिआंमननलागही॥ २॥ जांणिक्रै
सेंमनगोगोबिंद॥ प्रसिहरिरसपीजिए॥ जनहरीदा
सहरिगुणगाइनिसदिन॥ प्राणहरजीकोंदीजिए
॥ ३॥ १७॥ सोईदिनआवेगा॥ अपणरांमसंसालिवे॥ अ
नेकरावणसेजोधा॥ मारिमूंकातेगया॥ कालकलमें
सकलआया॥ जनसदावानिलिदहया॥ १॥ असुरसुर
षसिपकुमनपरि॥ षडगाकरगहितोलता॥ जुरासंध
बलिकहांबिक्रम॥ बोलअबलाबोलता॥ २॥ पांचपां
डोंकहांकैसं॥ एकगेलेसबबह्या॥ सिसपालसेस्पांकहां
जाहूं॥ कहोजेकोईरह्या॥ ३॥ हिरणांकुसहिरणाक्षिमधु
चकंद॥ करणसेदांनीनया॥ कहांछलबलकहांमाया
अंतिसबषालीगया॥ ४॥ धस्याधूंवांसकलबिनसे॥ का
लकांटालागिहे॥ अधंबसतअनूपअंतरि॥ कोईसाध
गुरगमिजागिहे॥ ५॥ पातिसाहसोपतिकहांस्रपति
जालसबपरिहारिहे॥ जनहरीदासस्वमिमहोच्छज
लज्यों॥ कोईचेवहरिजनटारिहे॥ ६॥ १८॥ जीवड़ाज
इकहांतूरहिसीवे॥ करणहारकरतारनआपणां॥ स
लिलमोहसंगिबदसीवे॥ टेक॥ काचीजषसरापकीपो
टी॥ तातेंप्रदषसहिसीवे॥ रांमनांमनिजसेदनआपणा

कालचटातैंगहिसीवे॥४॥हरिपीत्मसैंप्रीतनबांधी॥
फूवतहांजाइवहसीवे॥जबजंमआपाफूवबिलाया
रसमांतालवैफहसीवे॥३॥जबहुनिजीवडेकीयापु
याणं॥बकरिनयकूतनलहिसीवे॥जनहरीदासम
याअपराधणि॥बहोतमांतिकरिदहसीवे॥३॥१९॥
समफिदेमिक्कवनाहीरे॥त्वनाहीनांहींस्यूंलागा॥सा
चनस्यूंकैमांहीरे॥टेक॥प्रमसनेहीछाडिआपण॥बि
षइमितकरियाजेरे॥सूकरस्वांनस्यालककवागति
कालसदासिरगाजेरे॥१॥हंसबटाउप्रघरिबासा॥अ
बलसमकिसयांणारे॥पाचसातदिनएकआधमें॥उठि
अकेलाजाणारे॥२॥कालकहरकीचोटसकसिरिके
मास्याकेमारेरे॥जनहरीदासजिरामसंनेही॥सरणे
रामउबारेरे॥३॥२०॥तबहरिहमकोंजाणेंगे॥जाणेंहरे
हरिजांणेंगे॥टेक॥मातमातपरिवारसकलतजि॥सब
स्योंबलटीतांणेंगे॥हरिदेसाचअवरसबफूगावाद
रिसोंबांणिकबाणेंगे॥१॥आनदिसास्यूंजबमनयाको
करंम नरंमसंगिनाणेंगे॥रामरसांइणकामतिवाला
आहूजीतिपिछाणेंगे॥२॥सोकणिउलटिसयीजबकु
हिगी॥बलटीनंदीचलाणेंगे॥पाराबाधिप्रेमरसपीया॥
रोमिरोमिरंचिमाणेंगे॥३॥जनहरीदाससांसासबमा
गा॥रामरसांइणपीवेंगे॥आंनसकलसुखबिषसरिदे
ख्या॥हरिसमरथनजिजीवेंगे॥४॥२१॥तबहमहरिगु
णगावैंगे॥गांवेंगेगुणगावैंगे॥टेक॥कामक्रोधस्मासब
जीत्या॥मोहममतामुरझावैंगे॥पां

पै

ल्यें हो ग॥ बंकनालि रस पावैं गे ॥१॥ उषस्तु षड्गादि सह
ज घरि षेलें ॥ ऊबधि सुबधि ल्यों पावैं गे ॥ ककड्गादि सु
लटि मन उलटा ॥ येक दिसा कौं लावैं गे ॥२॥ सतगुर सब
द चानिणां मेरे ॥ अगम तहां हम जावैं गे ॥ तेज पुंज प्र
गट प्र पूरण ॥ सुंनि मंडल में पावैं गे ॥३॥ घटि घटि त्रि
घट घट तहरि नां ही ॥ सोई रमता रांम रमावैं गे ॥ जन
हरीदास दास हरि भजि भजि ॥ हरि ही मांहि समावैं
गे ॥४॥२२॥ समझि देषि मन मेरा रे ॥ या जुग मांहि जा
गि हंम चेष्या ॥ सगा न कोई तेरा रे ॥ टेक ॥ तात मात बनि
ता सुत बंधू ॥ जतन जीवत हां करि हां रे ॥ मूवां जालि
बालि घरि आवें ॥ ता मड़ हट तैं डरि हां रे ॥१॥ रांम बिसा
रि हारि मति चालो ॥ कहि समझावं लोई रे ॥ माया सां
चि संगि ले जांता ॥ देष्या सुप्यां न कोई रे ॥२॥ जामें मरे
मरै फुनि जांमे ॥ त्रिति लोक में आवैं रे ॥ जन हरीदास
देषि मति मदा ॥ गोबिंद कां हे न गावैं रे ॥३॥२३॥ मेरे गुर
गमि दीयो बताइ ॥ रांम नहि बिसरु रे ॥ टेक ॥ ज्यों नट
णी निरमेष थकी ॥ बरतैं लागी जाइ ॥ इत उत चित डोलै
नहीं ॥ चित बरतैं हां समाइ ॥१॥ मरजीवा समदा ध
से ॥ तन मन सुरति संबाहि ॥ बीचि कहीं अटकैं नहीं
निज सीप संभाले जाइ ॥२॥ गुर जि नालि गोला बंदे
घण क बांण सर सूर ॥ स्यांम काज सनमुष भिलहैं ॥ उल
टि न षेलैं सूर ॥३॥ ज्यों चात्रिग घण कौं रटै ॥ पाव पीव क
रत बिहाइ ॥ जन हरीदास हरि नांव में ॥ मन सहजां र
हा समाई ॥४॥२४॥ हां बलवंती माया ॥ लीयां षड़ गाय

कलसिरिषेलै॥आंणमतैतेषाया॥टेक॥मायात्रिगुन
रिष्कुनिमाया॥मायाआनसगाई मायास्वांमीमायासे
वग॥वहोतनांतिकरिआई॥१॥जोगीसगिजोगा
णिकैचाली॥जगतिणिजगलमनाया॥सोफीसगिसे
फणिकैचाली॥माथेमुकटबणाया॥२॥सीगीक्रम
मुश्रिमकैसोष्या॥नारदरूपफिराया॥सकरकामन
मांहीपैठी॥नांनांभांतिनचाया॥३॥अगिनरूपकैमतै
पैठे॥त्रसिघ्रसिघ्रचावे जनहरीदासबिरलाजनको
ई॥उलटिपरमपदपावे॥४॥२५॥जीवडाजागिरदेषै
लाईवे॥जमजागलहैक्यासोवे॥रामसुमरिमेरान
ईवे॥टेक॥निसदिनआवघटैतनछीजे ज्योंअंजुरी
कापांणीवे॥तजिआलसाकआलयहेजीवणा स
मकिदेषिअभिमांनीवे॥१॥मातपितासुतबनिता
नारी॥संगिनचालैकोईवे॥तासोंलागिबिकटमतिबो
रामनिपजनमनिघिषोईवे॥२॥बांभेबाहरछिप्यान
हीबूडे॥देहीजरांलुहांणीवे॥पदरकेसहाथनेणपरि
कालधजाफहिराणीवे॥३॥अवघटघाटबिचालेदरी
या॥तेरानांवमुरारीवे॥तहांलागितैंपासनकीया॥प्र
देसीअहंकारीवे॥४॥जहांतदैनअसस्तकालनहीका
या॥सोईपमसंनेहीतेरावे॥हरीदासजनटेरिकहैरे
हो॥तहांचलौजीवमेरावे॥५॥२६॥रामअसाढासाई
हो॥णमोवोरचोरकोलागो॥समझिपडे कुछनाही
हो॥टेक॥पांचपचीससदासंगिमेलो॥आंबिरकरेअ
पाईहो॥तुम्हअटकोतोबक व्हांमबलकं

बूनबसाईहो ॥ ७ ॥ तारणतिरणप्रमसुषदाता ॥ य
कतुमकासोंकहियेहो ॥ करमविपाकविघनहो
इ लागा ॥ तुमसरणोतोरहियेहो ॥ २ ॥ समदअथाह
अगमकरूणमें ॥ गोडिकेरेनितिगाजेहो ॥ तामेंमं
छकालसोषेले ॥ मंकिकुरेसोपाजेहो ॥ ३ ॥ येअघरूप
अनंतमोहिजारे ॥ अंधकूपमेंघेराहो ॥ जनहरीदास
कोंआसनहूजी ॥ रांमनरोसोतेराहो ॥ ४ ॥ २७ ॥ समकि
तषपाइयाहरे ॥ तासुषमेंरहासमाइ ॥ टेक ॥ समकितस
वाइतबपडी ॥ जबसतगुरलेयसहाइ ॥ गुरुकिपातें
हरिजन्या ॥ गुरदीयासाचाबताइ ॥ १ ॥ अगमपयाला
रूचिपीया ॥ तिस्नातपतिबुझाइ ॥ सूरेगुरुबिनबोहि
या ॥ सूराहोइसषाइ ॥ २ ॥ निसमूलादिनसमकितहो ॥ दि
नि मूलासमकेनांहि ॥ तुताकासंगछाडिदे ॥ काहेनव
जलिजाहि ॥ ३ ॥ जगसगलातनवजलपीवे ॥ हरिजनपीवे
नांहि ॥ जनहरीदासज्यांहरिजन्या ॥ तेषोटाअंतन
सांहि ॥ ४ ॥ २८ ॥ गाफिलनादनकरिऐरे ॥ जावणनहीम
रणसिरऊपरि ॥ तामरणेंसूंडरिऐरे ॥ टेक ॥ रजनीमोह
नीदसरिसूता ॥ प्रमभेदनहीपायारे ॥ अतिअभिमान
बहतनहीकाहू ॥ हारयाजनमगमायारे ॥ १ ॥ गाहगु
रग्यानजागिजीवजोगी ॥ कहैसरमिमुलाणेरे ॥ हरिसूं
बिमुषनांचिनानांविधि ॥ छाडिचलेसुलताणेरे ॥ २ ॥
आयाआनसाचासोटे ॥ कहैलागामाईरे ॥ हटवाडाहे
मबिछडनदेष्यो ॥ जागोरामदुहाईरे ॥ ३ ॥ अबलूसम
किदेषिनिसबीती ॥ पेंडाकरणीलोईरे ॥ तसकरबहोत

हरिघरतेरा॥माथामंगिनकोई२॥७॥जनहरीदासमा
मनजितनाई॥देषिदीयपराधरणारे॥हरिहरवारन
नही संवेै॥तिलतिलयानरणार॥५॥२८॥ मनेमा
निमोरडामारेरे॥दिनकमादाकणिचुणिषायाके
इमिरतगपद्या पुकारेरे॥टेक॥माधाकेमनगमन
हरिसोनीतोपालेरे॥आपचलाचटगटकावपावक
केडजालेरो॥१॥जनमानेववकोनानीन्यायपरदो
रापेरे॥हजासबचेवरकारवयारमनाआणायर॥२॥
आविरकैसकलजगउपार॥घटघटमाहीनागर॥
जनहरीदाससिरबाद्यामल॥ताकाबरणानारे॥३॥
॥३०॥निहमाहैपरकामनाम वारिचटमरनपारघत
साधाबरताणिघोमा॥टेक॥पटलानमवेमनानगन
चितनघरचुकाव॥पावपडी दाम्पफादा कोईज
छिटकावे॥१॥आविरकैरअकलर्कावेद॥आईन
त्योआवे॥तात्रागकोईजोगीजवक॥रजागलट
तालीलावै॥२॥आगमपयालानारनारपरलरतना
दवजावे॥जनहरीदासनिदाअपराधणगागनर
गदिषावै॥३॥३१॥मनजनदिरटनदांदन जना
दहीअपणंमनदेतो॥टेक॥मोहदोहमायामादमा
तावेदयोजीवजहरफलयाता॥१॥नारिजातिकाया
साहापि॥नरकिचलडरमतिलयाथि॥२॥जवनरा
जीवपंचकाचेरा तवलगकालनछांडेकेरा॥३॥जन
हरीदासनरनिहानजागो॥साचकहोकाटासानगा
ध॥३२॥संतोमनइहेपयपणि पांभ रांड२

यह नाहीं रे ॥ बाहरि साकार कार कहावै ॥ गांठी छोडा मां
हरि ॥ टेक ॥ दीसै सपंघ सपालतैं कापर ॥ जब लग जोगन
राधा ॥ सो सैपकड़ि आपबसि कीया ॥ कब धिकां मणी
बांधा ॥ १ ॥ पहरि सनाइ सांगि नहीं साही ॥ बटवा डांघर
रूंधा ॥ साहिब छाडि पेत बिसि चाले ॥ लूंण हरांमी स्वधा
॥ २ ॥ सां वें तत्त कों सूरसतिसोई ॥ जिनि मैं वासा मैं व कोया
जिनि रांम जन हरीदास सोई मति वाला ॥ जिनि रांम र
सांइ णपीया ॥ ३ ॥ २२ ॥ आऐसा धन पाउ दमोद ॥ जिनकै
नहीं बिषै रस बाद ॥ टेक ॥ मनका क्या बरणों बिसता
र ॥ रांम सनेही मेरे प्राण अधार ॥ १ ॥ सीतल कोमल संत
सधार ॥ जनम जनम की मेटी मेरी पीर ॥ २ ॥ जन हरीदा
स आनंद जस होइ ॥ साध मिल्या बिषडा सया धोइ ॥ ३ ॥ २४
रांम न जन बिनि जनम जुवारी ॥ चालत है अपणां सब
हारी ॥ टेक ॥ मैं तिहीण समझि नर लोई ॥ हरि बिणि स
गा न सूझै कोई ॥ १ ॥ जनम निलागि गिगनि रस पीवै ॥
अपणा जनम सफल करि जीवै ॥ २ ॥ जन हरीदास गो
बिंद गुण गावै ॥ सहज समाधि परम पद पावै ॥ ३ ॥ २५ ॥
पांडे कैसा भजन तुम्हारा ॥ मन कौं पकड़ि सहज घ
रि पैलो ॥ माया पड़ गडु धारा ॥ टेक ॥ मैं संति पूछूं तुम स
त्ति कहियो ॥ एषो कहाइ रया ॥ मन है ऐक कहां लावो
गे ॥ ऐक अलष जी माया ॥ १ ॥ कंचन कांड़ि काचे सो षेलो
तब लग काचो सारी ॥ माया गहो ब्रहा कै बे वा यकुतो
अचिरज सारी ॥ २ ॥ अरथ करै अनरथ नरि अंतरि प्र
म भेद नहीं पाया ॥ जन हरीदास ऐसा अपराधी स्वांमी

पणैसंताया॥२॥ राग१६॥ हंस अवतारें सोइ देसी॥ अवरां अ
वरच दावै॥ सो बाजीगर सत लोक नाही॥ इन कौं करि गा
मावै॥टेक॥ जम पुरिष का पार न पावै॥ पैसा सूरा म
ल्ल धा॥ सूधा रहस है जिहि खाड्या॥ तक झूडै पड्या अल्ल
धा॥१॥ निराकार निरंजन रंस तो॥ जो आकार सजावै॥
हाडागार हीडा कौं दौडे॥ सो कैंपो धणी कहावै॥२॥ न
रगस्यं धसी मी हरि नाही॥ निहचै जाया बलावै॥ जन
हरीदास अनिनासी न जता॥ नव जलनि कटि न आवै
॥३॥ राग१७॥ अवधू आसण बैसण कूगा॥ जे बल गमन विश्रा
म न पावै॥ पवत जिफि रैन पूगा॥ टेक॥ ग्यान बूझ्या नाहीं न
ही जोगी॥ आगम अर थक नावे कै॥ पाव अगनि समपाइ प
ड़ि दोझै॥ सीतल कोइ न सूझै॥१॥ बिवाध विकार वाल अ
रिहं धणी॥ धूंई ध्यान न धरि ब्रह्म अगनि आकास ने नट नौ
पारा कैसो मारे॥२॥ निगम अगम नहि लगे न आसण॥ पवना
द निति बाजै॥ नंगर रीमाहि लगानि वसि न थाम॥ नहा न दान
डि भाजे॥३॥ मन गहि पवन अटकि लेन लटा॥ एम जोगन
र धारै॥ जन हरीदास निरखा मन गमता जि निरगुण नमवि
सतारा॥४॥ राग१८॥ रामरस मीठौ रे॥ अवधी या मा सुपदाइ हका
मी जो ऐसा जाणि परे॥ पीवै नारद पैस मतिवाला गरयी
वा॥ सुचि रुचि पावै महेस॥१॥ सागीरिष वर्नन मयायं॥२॥ अ
ररस इक्षित धार॥ सुषदेव पीय निरंतर पया॥ ताकौ जा
णै सब संसार॥३॥ गोपी वद निरमल मयाव पवि हमवत
वीर॥ जोगी पावै मर रपयो॥ ताकौ अणतै नयासग॥ र २ मां
नक वीरा नितियावै रे॥ हरिरस बार बार॥ जन हरीदास न्या

यहनाहीरे॥ वाहरिसाऊंरकारकहीवे॥ गांठीछोडामां
हीरे॥ टेक॥ दीसेस्यंघसालतेंकापर॥ जबलगजोगन
लाधा॥ सांसेपकड़िआपबासिकीया॥ कबधिकांमणी
षांधा॥१॥ पहरिसनाहसांगिनहीसाही॥ बटवाडांघर
रूंधा॥ साहिब छाडिषेतषिसिचाले॥ लूंण हरांमीसूंधा
॥२॥ सांवेततकौसूरसतिसोई॥ जिनिमेंवासामंवकीया
जिनिरांमजनहरीदाससोईमतिवाला॥ जिनिरांमर
सांइंणपीया॥३॥ ३३॥ आयेसाधनयाउदमोद॥ जिनके
नहीबिषेरसबाद॥ टेक॥ तनकाक्याबरणौंबिसता
र॥ रांमसनेहीमेरेप्रांणअधार॥१॥ सीतलकोमलसंत
सधीर॥ जनमजनमकीमेटीमेरीपीर॥२॥ जनहरीदा
सआनंदजसहोइ॥ साधमिल्याबिछडस्याधोइ॥३॥ ३४॥
रांमतजनबिनिजनमजुवारी॥ चालतहेअपणांसब
हारी॥ टेक॥ रमंतिहीणसमकिनरलोई॥ हरिबिणस
गानसूझैकोई॥१॥ जनमनिलागिगिगनिरसपीवे॥
अपणजनमसुफलकरिजीवे॥२॥ जनहरीदासगो
बिंदगुणगावे॥ सहजसमाधिपरमपदपावे॥३॥ ३५॥ पं॥
पांडेकेसामजनतुम्हारा॥ मनकौपकडिसहजपा
रिषेलो॥ मायापहूंगाहुधारा॥ टेक॥ मैंसतिपूछूंतुमस
तिकहियो॥ रांमकहांइरांया॥ मनहैएककहांलावे
गो॥ एककबहूंजीमाया॥१॥ कंचनबाडिकाचसोषेलो
तबलगकाचीसारी॥ मायागहेबहालाक्षेबैनायकतो
अचिरजसारी॥२॥ अरथकरेअनरथनरिअंतरिप्र
मभेदनहीपाया॥ जनहरीदासऔसाअपराधी स्वामी

पणेसंतायाा।३॥२६ रामअवनारमोदना २

वरचटावे. सोबा जीगरमताज नाहा। इन

माहे. देकी प्रमग्रारथका पारनपाके तनामु

स्वधा। सुधारहमहांजहोछोदा। नक.रपरया

धा।१ निराकारनिरंतरमी जीश्रीकारमन

होडागरहोड्राकोतोह. सोक्योधामीव.हाव

रंगस्पधसोमोहारेनाही ।जहवैनाया।श्रेत।व

हरीदासश्रमिनामीमनतो मेवनलोनिकोटिनव

॥३। २७ अवधू

मनपावे पपतनिकैनपृत ते ... मसावश्र

हीजोगी॥श्रगमअनथकसाबा ... सका।जोगन

ड्रि.दामे॥सीतलतोर नम ... वेपृाा, सर्पाहप

रिईधण॥धूईध्यानमधार बेहा ... सन्तानि

पारकेयोमारे॥२ निगमअगमकीलगन ... मैंनद नो

दनितिबाजे॥नंगरमाहिजो नवामसता नगन

भिमाजे॥था॥मनगाइपवनश्रटोकनेनलटा प्रवना

रधोरे॥जनहरीदासनरश्रमतरमताज नहानहान

सतारा॥ध॥२८ ... मसीतरे ... पमजोगन

मीवश्रेसाजोगि ... पावनपटेयस निरर्गा।जसाव

वे॥रूचिरूचिपाव ... म । ... श्रवपायाहांस्यकोइ टक

रसइमितधार ... देव ... मानिजेला।गारबदं।

सबसंसार॥२ ... ीरप्रवनमयायोर व

रजोगीपावेसरपटी ताका-श्रमेसयासगरु ... तकोजा

कबीरनितियावर ... रपद्रारवार ... पीवहमवत

हरि तज्या ॥ ज्यौं हंस मानसरवर सार ॥४॥२०॥ रांम रस ऐसा
रे ॥ ऐसे बली बिणि पीया न जाय ॥ टेक ॥ सो फल कोइ पावै नहीं ॥ कु
पछि पड्या सब कोइ ॥ आरति सौं अमली पीवै पीय मैं ति
वाला होइ ॥१॥ सो फल सब न हटा पड्या रे ॥ अमली रस्या लु
णाय ॥ संवर गुफा का घाट में तन मन ति सो मन लाय ॥२॥
अमली सब संसार है रे रस्या बिषै मन लाय ॥ जनहरी
दास हरि रस पीया ॥ दूजा कछु न सुहाइ ॥३॥४०॥ कस्म
न रस का कीया क बेलवा ॥ संसा जल ज्यौं पीया ॥ ताती
सोली सहजि समांणी ॥ दूं मतौ उलटै पैडै जीया ॥ टेक ॥ सू
धारा हम सकल जुग चाले पसवा तहां बिलाया ॥ रसनां स्वा
दि सहत यौं बूडा वो है निरगुन नाहं न पाया ॥१॥ निरम
ल कथा जम पद नेडा ॥ अधर स्थ मरा निज साले सुलटी
सुरति अगम रस पीवै ॥ प्रगट पासा राले ॥२॥ सेली चग्या
सा चैरंगि रता ॥ काचै रंगि मति नाहीं ॥ जनहरीदास ऐसे
सा जन कोई ॥ बास करै हरि मांही ॥३॥४१॥ राग भैरुं
डूं ॥ ऐसा पराप रै पुम सेव ॥ गुरु बिना को देवै ॥ मसतक
परि हस्त राखे ॥ अपणां करि लेवै ॥ टेक ॥ अजब धन अ
जब मन अजब सरूप होवै ॥ अजब तेज अजब रूपा च
रसि तरसि जोवै ॥१॥ अगम गति अगम मंति ॥ अगम निधि
पावै ॥ अगम अगम गोर ॥ सतगुर लैलावै ॥२॥ अनंत सूर नि
कटि नूर जोति जोति लावै ॥ जन हरीदास निकटि बास
दास हैकेस पावै ॥३॥१॥ सकल आपी हो निरंजन दूसरे
हो साचा ॥ अवर सकल जागि देषे ॥ कहा जाचौं काचा
टेक ॥ जागि लागि प्रेम प्रीति आंन रीति नांही ॥ मन पवं

नत्रगमराकंन॥प्रेमस्पंधमांही॥१॥त्रगमप्यानत्रगमध्या
न॥त्रगमत्ररथछाया॥त्रगमजोगत्रगमसो॥त्रगम
त्रगमपाया॥२॥प्रमतेजप्रमजोति प्रमनेहत्रैसें जन
हरीदासत्रसप्रस मीरनीरजैसो॥३॥४३॥राग गम
श्री॥काईमनत्त्रघरिजाहि॥हरिजीसोसुषदाईको
ईनांहि॥टेक॥हरिहीराबिणजेक्योंनाहि॥ त्रजबधनि
तेराघटमांहि॥१॥इहसुबधिचिंतामणिमई॥कोडीकु
बधिसहजिहीगई॥२॥जनहरीदाससुषसागरराम
नितिसास्यासाधाकाम॥३॥४४॥ आवहमारेत्रगणि प्रिह
त्रिभवणराइ॥तुम्हबिणिमेंबिलषीफिरौ त्रवरसोंनजा
इ॥टेक॥कुलकरणीसगलीतजी॥हरित्रानरमाहि न
नतजिबेकीबेरहे॥मिलिएक्योंनाहि॥१॥त्रारतित्रणर
तिघणी॥मेरामनमांहि॥इसप्रसकीवेरहे पतिब्रताहोना
हि॥२॥सतीपिछाणिसाचाकों॥मनिनीणहान मनत्रा
लपएकेमेरै॥तुमसोंल्योलीन॥३॥जनहरीदासहरिसों
कहै॥तुमबिणितनछीजे॥प्रिमपयालापाइकरि॥त्रप
णकरिलीजे॥४॥४५॥बाजीगरबाजीरची॥मायाबिस
तारा॥बानीसोंबाजीरमे॥बाजीगरन्यारा॥टेक॥कामक्रो
धत्रभिमानका॥तेडेरुबाया॥जलिथलिजीवजहांत
हां बाजी [illegible] बासिसमिताचढी नवदोरि
जसारी॥[illegible]॥नांचैनरनारी॥२॥इहसुप
नैटाउछेले॥मायामदपीया॥ब्रह्माबिस्नमहेससो बाजी
बसिकीया॥३॥मनचचलनिहचलभया॥निरंतरघरित्र्या
या॥जनहरीदासबाजीतज्या॥बाजी ॥४६॥

मूरिषस्यौं मूरिष मिले मिलि बार बधारै समझ्या हरि
सुमिरण करै आपा सब डारै टेक कांम क्रोध त्रिष्णां त
जै संगति सुष पावै भव सागर हू तरि तिरै गोबिंद गुण
गावै १ संगति कीजे साध की सति साच बतावै मूला
स्यौं मति कौ मिलौ मूलौ अंतर मावै २ संग का बिमाया
महा हरि बिचि अंतर सारी जन हरीदास माया तजै ता
की बलिहारी ३ ॥४१॥ जागौ रे अब नींद न कीजै थोड़ी र
ति मसो वे कौड़ि कौड़ि लीणी दा हीरा कौड़ी सटै न षो
वौ टेक चेतनि रहौ रे षमत्ति चूकौ कांम क्रोध त्तर म
जारौ तारण हार यषे कौ ति रस्यौ मोटो जन मन हा
रै १ प्राणी काई काल नैं आपै दिनि दिनि नेड़ो आ
वै ज्यूं बालक नीं हाथा बाटी हाडै आइ छिनावै
२ जन हरीदास काल कर ऊपरि मेल्हि तिलांज्यौं जे
वै हरि तैं बिमुष दाट तलिद रडै मूलमधि मनी षो
वै ३ ॥४२॥ हींदू तुरक एक कल लाई राम रहीम दोइ
न ही भाई टेक दस ही बंन्नण उन्हा मुलण्णां बेद क
तेब कथैं बिश्रामा राम सभा लि हू रि करि मैं ते आ
परि एक अलाह सौं कांम १ काजी बैठे ओरन कर
णं साचा सबद सुणैं सति कौं निकर दस बाहि ग
ला कूं काटौ कन्ह तो डर साहिब का मांनि २ एस
ब जीव उपाये साहिब ताकौं मारि पड़ो कौं चूरि
जन हरीदास युक अरष बिचारौ तास्यौं षालिक स
दा हजूरि ३ ॥४३॥ संतो राम रजा मैं रहिये मन दे आ
णसी सद दे सद गाति राम राम यौं कहिये टेक ग्रेह

।मैमांननजेअबिनासी।

॥सोईकैमनिमावे॥पूरण

।तेहु

।चेतेमैं॥तासमिश्रौरनकोई॥अ॥जन

॥४॥५०॥

एकहरिऐकहरिऐकहरिसाचा॥श्रलषनजिश्रल
षनजिसुफलकरिबाचा॥टेक॥अबिनासीपूरण
ब्रहतहांमनदीजे॥रांमभजिरांमभजिष्रमातिल
जे॥१॥गोपालसतिस्वहरमनरांम॥काललागे
नहीसरेसबकांम॥२॥ऐकस्यूंऐकनिरंतेमतेरहि
ए॥जनहरीदासगुरुग्यांनगाहिश्रगाहियोगाहिए॥
३॥५१॥अवगुणमोहिअनंतकरणांमै॥कांमक्रोध
रसमावे॥तारसिलागिनीदनरिस्वताल्हमहूबिणिके
एजगावेमाधो॥टेक॥दारणदसमांसउपितग्रसत्र
केला॥जलमलमोजनकीया॥बहत्तासुलसुत्रना॥
सका॥उपरि॥उरधसासमैलीयामैमांधो॥१॥तपकरिके

रिग्रास्या॥ब्रहथिपांणबिकायांमा

मैरौ ॥ कालकहरकी छाया ॥ जनहरीदास अपणांक
रि राषो ॥ पतितसरणि आयामाधो ॥४॥५५॥ नाबाऊह
गरीबी हूवी ॥ मन अरूपकेन दौकरी फूवा ॥ मनसाफि
रैन सूवी ॥ टेक ॥ त्रिबिधितापकी कंथापहिरी ॥ मनी
टोपसिरजाकै ॥ रागदोषकी कानांमुद्रा ॥ कहांग
रीबी ताकै ॥१॥ पहिस्या भेषरेष ज्यौं कोल्यौं ॥ मोहम
ठीबसिजीवै ॥ तिनकै भेषरां मनहीरांकै ॥ बिषइं
मिरतकरिपीवै ॥२॥ पांचचोरषदेसियकूता ॥ मि
लिषेलैं तामांही ॥ मनमैंजोरमुषि गहगरीबी ॥
असलिगरीबी नांही ॥३॥ जनहरीदास आंनतजि
अनरथ ॥ मैंनिरांमनांमबरत धारै ॥ रागदोषका
कसौं नांही ॥ याह असलिगरीबीतारै ॥४॥१०॥५२॥
राग आसा लिष्यते ॥ अब धू ऐसा ग्यांन बिचार्या है ह
रि अकल सकल बिस व्यापी ॥ रहै सकलसैं न्यारा ॥
टेक ॥ ल्यौमैं अलष आहि अबिनासी ॥ सुरतिसुप
हमैं तिजागी ॥ गोरषगोपि त्रसिनिधिनिरषे ॥ अन
हद सींगीबागी ॥१॥ निजपुरिपाणबसैनिति निहच
ल ॥ पवनसुरतिसचिमाला ॥ ब्रह्म अगनि मैंफूलै षेलै
पीवै अगमपयाला ॥२॥ निकटिनाथनिजरूपनिरं
तरि ॥ नांव निरंजनराया ॥ जनहरीदासनिदैको
बंदौ ॥ मनफिरि मनही समाया ॥३॥११॥ संतौ सो जौ
गानिसतारै ॥ उलटी चाल सदा रस पीवै ॥ उलटा भेद
बिचारै ॥ टेक ॥ तब लगैं मांनि ग्यांन सब साचा ॥ रांम
रंम कहि जीवै ॥ उलट पलट का पेम पयाला ॥ ज्यौं ज
गे त्यौं पीवै ॥१॥

सोमंतिवालाजुगिजुगिजीवै॥सहजिसिंरमतीया
छाक्याफिरैसदाहीरावल॥गुरिपायातैनिपीया॥२॥
पीयपीयअवधुभयादिवांनां॥निजस्वरूपसोजांन्यां
जनहरीदासहरिकारसबिलसै॥सोजोगीमनिमान्यां
॥३॥२॥ अवधूमैंमेरामनसमझाया॥मनजायथाप
णजाणनदीया॥फेरिसहजघरिलाया॥टेक॥केवप
धरिवेकूंवविचारैं॥मिरतलोककामारया॥जोबेकूं
गधरयासोविनसे॥हंमकंछआगमविचारया॥१॥ नरक
स्वंरगदोउहंमतौल्या॥पांनतराजूमांहीं॥दोन्यांबिथ्या
बराबरिदीसै॥इनमैंघटैबधैकोनाहीं॥२॥तीरथबर
तजोगजिगतपस्या॥बडीबिथाजुगमाहीं॥जनहरी
दासयेमलकरिदेख्या॥इनकोंप्रसैंनाहीं॥३॥३॥संतौ
हैकोईजोगजुगतिगमजांणैं॥बरतीनदीपांनकै
पारे॥बांधिअग्रुंठीआंणै॥टेक॥राजसतामसस्वाति
गत्रासे॥सेसनागकोंपीवै॥अलखअधारीआसार
षे॥औसाजोगीजीवै॥१॥खेचिमगालीनिजरिमेंराषै
पांचचरणतलिचूरै॥प्रमजोतिकेप्रचैपैलै॥अ
नहदसींगीपूरै॥२॥सुरतिसबादहिसहघरिधारै
निरमलनेहनिवासा॥जनहरीदासअैसाजनकों
ईदेखेआमतमासा॥३॥४॥मनरेसोसाचोबेरा
गी॥त्रिकुटकोटऊपरितलआसंण॥सुरतिनिरं
जनलागी॥टेक॥पांनमडगलेबनमैंपेसै॥चेलापां
चबिवेरौ॥बसतगोपिसतगुरसोंप्रगट॥प्रेमसू
निरसमौगै॥१॥सागरसपतआठमंडलमें॥नदीनवा

सैताणें॥ उनमनिरहैएकरसिताणा॥ जोगमूलबंधज
रणे॥ ४॥ अरधकैरेकरिअरधैद्रसे॥ निजबिश्रांमन
ग्रहै॥ गुरगंम अवघटघाटीलांघै॥ त्रिबेणीसंगिज्हौ
॥३॥ मनकौंपकडि सहजघरिषेलै॥ सुरतिसहजघ
रिधारै॥ जनहरीदास अहरणिघणकसणी॥ तब
हरिहाथयसारै॥४॥५॥ मनरेयौसाचाजूवारी॥ जू
वैषेलिप्रमनिधिपवै॥ बककडि नरोपैसारी॥ टेक॥ पहै
लीषेलिबकतदिनहास्या॥ सतगुरसमकिनआई
॥१॥ तीनिपांचनवडावनषेलै॥ चलिदसवैंघरिआई
अबयाहसारिपहै नहींकाची॥ गेड अमोलिकपा
ई॥२॥ षडपसषडावचालचौरासी॥ त्रिबिधिरूपता
जयासा॥ सारीजांणप्रेमघरिरोपी॥ अरधिअलूधी
आसा॥३॥ चितचौपडि चेतनघरिचौथै॥ दोकमा
लिजुगहवा॥ षेलैसदासुरतिकेनांकै॥ फूटिनवा
तेजूवा॥४॥ उनमनिरहै निरंतरिनिसदिन॥ निज
तरवरकीछाया॥ जनहरीदाससतगुरकैसरणें
करमनआपेकाया॥५॥६॥ पांडेअपणीआगनिबु
झावौ॥ हंमतौआपणौंराहचलतहैं॥ तुमकाहेदु
षपावौ॥ टेक॥ पा॥ तुमकौंएकहांतैआया॥ अनं
तलोकफिरिआई॥ अबतौतुमब्राह्मणह्वैबैठा॥
चौरासीबिसराई॥१॥ प्रनवासिकंधेमुषिरहता॥
अपतधावतरसपीया॥ अबतौतुमचौकादेजीमौ॥
हांचौकाकिनदीया॥२॥ कलअभिमानआंन

बपघ्रजा॥ इहविधाकनाम तेथारमाति मत
पाडे। तौम्रबदेवकैा नागी ३ गमबिमाग्हा
मंतिचालौ आधिअन्तवनघाहा कौमविहातं
दासगियलौ ताकौमू नथाहौ ४ पाखेंतक
सकलपसारा प्राणतद्वाडमयार्ग्र गैनहशदास
बाह्मणमतिमोडै नलटाब्रह्मियमांवै ५ १ गम
मरिजननजलासया प्रमगनहौदेयणगाममांथिना।
या टेक सकलनघाडयकलनेनमाग मंदेहनाम
बसेचिनारा १ सकलनवाकौमानतीन क्या
व्रजालेदाससंतोष २ गैनहगदासप्रयागनहि
ऐसा जीवमोधसंगण केवामा ३
जुरेमनबिलमनेकौ
जै टेक॥ जेहा नहा
सागरयरणि नतार १ इसुनघनदीवहडाइमा
तामेरमाबिमुबफूलेअधिकारी २ गैनहशला
सओसरमलपाया ममितामहिनजोगमराया
३ ।५। सोसुलसुणियमतविनाणी वानेलस
कैबाबलगाजे वदाअसवाणी टेक गोगाग्गा
रतीमरितोडे वायदिश्रामबतावे आमणबाट
आनिमयेहि उलटीतालीलावे १ गगाजमनमाध
वननिरोधे ब्रिषतजिवमतपिआणी गिगागाणी
रअकलस्याआवे निरगुणकागुणजाणी २ हे
सहसइकीसोधाम आगमतहातेजोह निरंत
कोनिरंजनपाये तिलसाहनारनतोइ ३ ४

हैसबिहारहिबह्मा।।कोटिकोटिकसलावै।।सरि
तरिअगमपयालापीवै।।नागीचोकिचकावै।।ध
मेंढीअषंडितमाहीबैठा।।जोगीएकबिराजै।।जरणं
जडीजटमेंजांगे।।सुषमेंसींगीबाजै।।प।।बिणि
हीबैवाफालरिबाजाबाजै।।बिणिहीदेवलदेवा
सुंनिमंडलमेंध्यानहमारा।।बिणिहीमूरतिसेवा
६।।जनहरीदासअधरगतिचाहै।।ताकापलान
कोईतांणै।।बिणिधरनीवसहरएकदेख्याबिर
लाकोईजाणै।।७।।२०।।अवधूमांणिकचौकिमहीं
निधिलाधी।।कहांनकोपतियावै।।ताकामोलतौ
लमापकछुनाही।।सिरसौपैसोपावै।।टेक।।अध
रसधरनिरमलनिहकामी।।नांवनिरंजनराया।।
धैरेअधरसोपचाकीया।।सोफिरितहांसमाया।।
१।।अबरणबरणसकलसंगिरहता।।पतिमरता
पतिब्राजै।।भातसधारअधारहमारै।।चौकीचक्रमा
बिराजै।।२।।अरधउरधमधिअगमअधारी।।निज
ततनेडाइसे।।मनमतिवालामरितरिपीवै।।घट
बिनांघणबरसे।।३।।उलटीनदीगुणासोंन्यारी।।स
हजिनिरंजणमीना।।सेकारानारंगमपघास्या।।मंहलि
उजालादीना।।४।।मेडानियरनजाणैकोई।।करमक
टबकलागा।।जनहरीदाससतगुरुमिसागरियैगा।।सवप
गरनवमागा।।५।।११।।जोगियाअलषअनेवांरिआ
रंतकूंणकहोतेराआसंण।।कहूकिसीबिधिपेवा
र।।टेक।।सकलरूपरसरूपबिबरजत।।सकलरू

पकरिसबतैन्पारा साधावैं।स्यदौसा १ अनतना
हिप्रीतिनहीभघर मकलनिरनरिस्पार ग्रांह
श्ररूपश्रयाहश्रअंडित श्रगमश्रगनहीपार -
मैमेरावनमांनबिचाम्या करसकूपनजिताया ,
उलटीस्तरतिगिगनिमिमेग्रंना नहान।श्रमलस्रमता
या।२ याहरिसदासदाहरिरहना उपांनानबिन
सैसाई जनहरीदासश्रबगतिगतिश्र्मा मिांन।
मैल्यासुभदाई ४ १२ मुणिलेमैसाइसद्दमा माह
कहाइचोरसगिरसी जाबनराबमा २२ निर
नोऐकरहैघटिमीतर निजपदश्रटकनाई। कवनी
चकीमायाग्यावो सोपहरमोईमाहीं। मनवां
तचोरचिंतपेबा षटपटकरिकाय श्रानिश्रानि।
मांनकामबसिकाया करसकथाकगाय :
सोईसाहसाहसंगिमिले मनकाँवाहरजाँव अकेला।
लिइमरतरसपीवे रमहीमाहिसमावे ३ यह है।
राजमनकोतोल हरिडमिरतरमपीवे जनहरी
दाससाहसतिमोई यामावाकरिजीते ४ १३ हरिज
णिजांसिरिबोटायात रामनांस्योप्रीतिनाई। ग्रंट
हदिसिजात टक नजिनिरंजनमनराम [illegible]
श्ररिगाँजननाष्ठ श्रापणाकरिश्रापरांम मामय
रिभरिहाय १ कालकानबधनकाय जापत्र जपा
श्रापश्रापेरनमनिश्रस्यानिइमोदाताश्रवरनाई
श्रमेश्रापेदोन २ नरककामैकुडपाल कामचोर
नबकडिसाले जगग्रासेनाहिसामदेताई।

पैनरहरिबसतहैसबमांहि ॥३॥ भरमजलतैपारलहि
ये ॥ येलिउलटाऔगहगहिये ॥ हरिपूरणब्रह्मअगाध
जनहरीदासनिरसैध्यांननिरमल ॥ तहांबसतहैंस
बसाध ॥४॥ १४ ॥ संतोसहणौकैसुषलाधा ॥ महतो
पकडिआपबसिकीयो ॥ सतगुरसबदांबांधा ॥ टेक
महतोराक्यांउपरिमहती ॥ किलोकरैकलिनारीक
होकाहूकोमानैनांही ॥ तबगालिगोतोदेमारी ॥१॥
राजबलासहामतेआपणां ॥ फिरिफिरिकरैकुराई ॥
ताकोसिरजरनांसोंकूट्यौ ॥ यौंनांगौबडनाई ॥२॥
गांवसुहागणिमारगिराक्यो ॥ आडीआडीआवे ॥
जनहरीदाससोईनरबेत्ता ॥ जोयातैंपेलाबुडावे
॥३॥ १५ ॥ अवधूवेलीआंषिउफाणी ॥ पेलीआंषिसह
जमैंषूली ॥ यासतगुरकीसहनांणी ॥ टेक ॥ पाइक
पांचपोलिमैंअटक्या ॥ गुफासैंआया ॥ गिगनि
मंडलिआसणरेअवधू ॥ धूनिमैंध्यांनलगाया ॥१॥ कं
धाकंवलसूलटिकरिसूधा ॥ अनहदसबदउचार
गंगाजमनबिचिरिषिसिसमेला ॥ सहजितयामति
वाला ॥२॥ गमगामगमगामगमगमहै ॥ मनफिरिम
नहीसमांनां ॥ जनहरीदासकेअकहवचनआवे ॥
अबहैमसांयादिवानां ॥३॥ १६ ॥ मनरेसोसतगुरमे
चेला ॥ आनंदसहजआगमघरिषेले ॥ जमजोति
सोंमेला ॥ टेक ॥ मनगहिपवंनगावंनगुरगमतें ॥ प
छिमदेसपथंजाणें ॥ सुरतिसबाहिसंमदमैंपेसे ॥
बसतअमोलिकआणें ॥१॥ स्वारथसारअटकिअरि

अवधू॥ प्रसिध मनि थिर है॥ येन बनाथ हाथ मैं राखै॥
तब दिन लागै ले है॥२॥ पाड कपाल ब्रह्म कर सिर के॥
गोरष कही सल्के॥ जरणां जड्या जोग जत जाणे॥
सोया अरथ हि लूकै॥३॥ सुंनि मंडल मैं बैसि निरंत
रि श्रवण बोल्या निहिगावै॥ जन हरीदास सोई गुरु मे
रा॥ जो या अरथि समावै॥४॥१७॥ जागि न देषो रे हरि
नेरा॥ तजि बकू रूप धूप नही ब्यापे॥ सुष मेस रु जिव
सेरा॥ टेक॥ रमता राम परम सुष दाता सकल लोक
सो बाया॥ तासूं षिलागि साध अबिनासी॥ अमर लोक
फल पाया॥१॥ आनंद अनंत अनंत अघ जारण॥ अ
नंत वेद तै सेला॥ अनंत माण प्रकास परम पद॥ अ
नंत जोति का मेला॥२॥ आनंद रूप अगाहि अबिना
सी॥ आगम रहांगम कीया॥ जन हरीदास मिथि दे
षि निजरि मरि॥ जनम सुफल करि लीया॥३॥१८॥
निद्रा मारे मसता दिवांनी॥ राव रंक कऊ मराव चुणि मास्या
ऐसी है गैबांनी॥ टेक॥ जोगी जती सिध साधक॥ तिन दे
रहे न बांनी॥ आप निरंजन जुग मैं थापी॥ काल तणी
नीसाणी॥१॥ जुग मैं वै गोरष जन जागे॥ ऐसा प्रमनि
धांनी॥ जीव जंत सब ही बसि कीया॥ सब हिन के मनि
मांनी॥२॥ जोग जुगति गम जाणैं नांही॥ निद्रा के बसि प
ड्या॥ जन हरीदास ते ता ना नारी॥ माया मांही मस्ता॥३॥
१९॥ संतो ऐक अचंभा ऐसा देष्या॥ देष्यां तैं सुष पाया॥
उलटी नदी बिरष मैं पैठी॥ डाला मूल समाया॥ टेक॥
रैवा कि बकुतड मपाया॥ पकड्या तैं

ग्यांस्या लस्यंघ बन छाड्या ॥ सुसै बिलाई साधी ॥ १ ॥ जाएंत
कौ कहां सुष मांने ॥ समझि बिनां सुष नांही ॥ मंछ रिमी
ड कै मंगल भया ॥ यों फुस्या बन मांही ॥ ३ ॥ मह की बे
गम ह्वा बिरोले ॥ मरम ग्याएं कीया ॥ निरति नेत दे तीर
ण लागी ॥ यों निज तत्त मथि लीया ॥ ४ ॥ आमिल करत
चौथे चढि बैगा ॥ तसकर मारि मनाया ॥ जन हरीदास
ऐक अबिरज देष्या ॥ उलटा आबिर आया ॥ ५ ॥ २० ॥
[illegible] ॥ राग सोरठी लिख्यते ॥ पलपल
जाइ रे मन जाइ ॥ करं मिला गनर मिम्लै ॥ रे बौ काल
बुलाइ ॥ टेक ॥ ऐक सुवटो नलटि बैगो ॥ बिरष मांहे आ
इ ॥ सोई बिरष बौबो अस्य रमी नी ॥ घात लाधां बाइ ॥ १ ॥
कल सस्र दरिनी रसरोया ॥ नां पावै पणि हारि ॥ सो है
कै सफूटे छाडि चाली ॥ बडो अवसर हारि ॥ २ ॥ पड रवा
स्यों सह जिबी तो ॥ तयो मूल गमाइ ॥ गयो बासु रिरे निआ
ई ॥ चल्यो ओटा माइ ॥ ३ ॥ काल आयु जब फिस्यो दो ल्यों
समझि तपड ई काय ॥ जन हरीदास हरि का सजन
बिणि नर रह्यो जमपुरि छाय ॥ ४ ॥ १ ॥ मन तो स्यों कही
मन हो बा रूं बार रूणाय ॥ अध तजि अजि मान आपो
गलित हरि गुण गाइ ॥ टेक ॥ सार ज हरि सार स्यति गहि
आगम अरथ बिचारि ॥ हरि नां व बिणि त्रिबाद नांही
रबै चालै हारि ॥ १ ॥ ग्यांन दा रुधगा लि डारि अघ सह
ज सब सिधि होय ॥ सपत धात सुधात बसि करि ॥ स्व
त्ति निज नगा पोइ ॥ २ ॥ परम निधि हरि छाडि निसदिनि
बिषै फल रस चिषां हि ॥ तरं म जल पसू जाणि पीवै ॥ यक

दिनिदिनि जांहि ३ त्राणम्गीश्रमिपगाट नेसाः
तिलगा १ जनहरीदासरमना नमराटेना नगनें
रेयाइ ॥४॥ २॥ नजिमनस्त्रकालदेवमुरारि नावनांहरना
वाहि ॥ हरिलेहरतारबार टक निकाहिनानान
पवडनिधि सबसबवारनवार तामधमाहावंर्
हमा भेगेमोतीवार १ श्रागमश्रपारश्रगाधनरह
रि निरमंरदिलमांहि दासनिजनदासहासनराम
हिल्पाहीरापांहि २ नहांगांवनगांवहरागनहाब
डी मनपकारिगनिधि जोड जनहरीदासरसनाराम
रटिहो सदासंगीमाइ ३ ३ रामगडमागांन; जांरे
सांतिलमारी मोनाथिप्रिनापंनम्यारि नेक १
थिनमांगेंसिधिनरागा मुवनिनमांगांहैन आदि
श्रंतिलमसोमिलयहीं मुकुन्मारहायाहमेन्या १
निरमलपंनथां १ भूतनिरमल श्रमघांनप्रकामा
श्रासणश्रचलनहामननिहचल नमनकुरं नदासा
॥२॥ संजमसीलहानेसनिम्रांमहणा पालेमांजोनिस्त्र
णेरी ॥ जनहरीदासकोंश्रासनहनी श्रासहांनाहदन
री ॥३॥ ४ ॥ माथवंदन विनजलहमसीर हकेलीश्रायोंहा
संनेही ॥ करोकानिश्रमहीरे टेक जोगलेश्रायतमा
वेनबंडि रहोनालीलाय देखनासनजोंगांमो दन
धरिलेनाय १ पवनगाहलेगांगांनराया मेरदिन
राइ ॥ नाथहमानिलिरहपरदा हरिपहियनाव
॥२॥ वोटहारिविगाश्रोरनांही कालग्रासश्राय जन
हरीदासकदासनांनें श्रानकहूनसुहाइ ३ ५

देखो तो कौं बिड़द किसो दे ताकं जुग चारि बेदां बांधि
जै पैलो पार न पाकं ॥टेक॥ अगम अपार पार नहिं कोई
पार न काहू पाया। कहैं ऐक मांड सब तेरा सुणौं निरं
जनराया ॥१॥ सुरिज तपै सतै जस तुम्हारे घुरैं इंद्र घरि
बाजा। सकल अला पत्त मारे स्वांमी तुम जोगी तुम राजा
॥२॥ सात समंद इलि मूलि न लोपै तहां किस्न पाज बं
धाई। जै लोपै मरजाद तुम्हारी तौ नीर धूलि है जाई ॥३॥
ऐसो आप सकल घट भीतरि सब स्यों रहौ उदासा। ज
न हरीदास नैं चरणां राषौ मेटौ जम की त्रासा ॥४॥६॥
मन रे झूठा आसा पासा रा। सब तजि मन जि सिरजनहा
रा ॥टेक॥ धन जोबन सुत माया। यहु बादल की सी
छाया। जहां बैसि सुष पावै। ताकौं फिरि धूप जला
वै ॥१॥ हंस तौ घोड़ा घट पाया। अपणां करि मुलक ब
साया। चाल्या तब घड़ी यारोई। वाके संगि न चाल्या को
ई ॥२॥ साहब देस लतांनां मैं मेरी मांहि भुलांनां इह
काल का फंधा जीव जाणि न देषै अंधा ॥३॥ याह हटवा
ड़ा की बाजी जिनि गोमि असुनि का जी बट दूसण
विगाया। बाजी का मरम न पाया ॥४॥ मात पिता सुत
नाई सब स्वारथि मिलि सगाई। तहां लागि जीव लोई
चिंतामनि करतै षोई ॥५॥ तेल फुलेल सिरि डारैं नांना
विधि देह संवारैं। किसा कांम की काया बुस्या के आ
निजलाया ॥६॥ ऐ धाम महल अवासा नांनां विधि लील
बिलासा त्रिबिधि ताप अहंकारी। भूलो रे नर बाजी हा
री ॥७॥ सतगुर मिलि साच बतावै जन हरीदास हरि को

का॥हरिसकलधरंमसिरिटीका॥८॥७॥मनं
टसहजघरिनाया॥तबहमवादिबक्या बोराय
नातिकंवलमेपवंनानिरोधो॥तोसतगुरका चे
मनगहिपवंनआगमघरिमेलो॥करूआगमम्
॥२॥उलटाबेलिगिगनिमेपसू॥सुरतिसहजघ
रूपमजोतिस्योंहिलिमिलिखेलो॥ऐसाअरथबि
रो॥३॥जनहरीदासनिरभैनिधिपसी॥प्रमसधमे
न्हाकं॥जबरच्या॥निंमप्राणनहामू॥आवागवणचु
काकं॥४॥६॥अबमोहिदरसदियाइमाधवे॥यहअ
बसरलामैनहो॥दिनदिनिघटतोजाइमाधवे प्रीति
घटैतौजिनिमिलो॥तुमसुप्रमसनेहीरायमाधवे मेन
नवोंधोडोविस्यों॥टेक॥ऐकअंदेसोम्हारैमनिवसै
सोहेमबिसरैनाहिमाधवे॥निकटिवसोन्यागरहो
ऐकेंमंदिरमांहिमाधवे॥कैमिलिहोकेतननजो अ
वमोहिजीवणनाहिमाधवे॥प्राणनधारणतुमामिलो
॥२॥अबलामनिब्याकुलमेई॥तुमकोरहरिमाइमा
धवे॥तुमसुमिलिहौतौमिलिरहो॥नहीतरमिल्योनजा
यमाधवे॥अंतरजामीआंनरो॥जनमसिरांणा जाय
माधवे॥प्रमसनेहीतुमामिलो॥८॥२॥पाचसषीमन
मुषिमई॥सुषमनिसहजसमाइमाधव मनपव
नामेलामया॥तुमकबरमिलोगआइमाधवे आम
अंचरिआईये॥जनहरीदासबलिजाइमाधवे दरस
मदेहोदयालजी॥२॥१०॥आइबादेरंषाइ बांदःम्हा
मांहिलामनोरणसोइबादे॥टेका॥निरषणका

आया॥ तातैंजीवंडेउषपाया॥ अबयावबिलंमन
कीजे॥ जनउषियाकौंसुषदीजे॥ नैंनपलकक
रिजोइबाटे॥ १॥ बिरहनिकौंसुषदीजे॥ पाय
अपणीकरिराषीजे॥ पमपयालापावौ॥ मेरातन
कीतपतिबुझावौ॥ अरसपरसमिलसोइबाटे॥ २॥
निपटनिरंतरिनेरा॥ भवसंजनसंतसधीरा॥ जन
हरीदाससुषपाया॥ सुषसागरमांहिसमाया॥ ही
रैहीरायोइबाटे॥ ३॥ ११॥ दरसणदेहोदेवदरसणदे
नैंनपलकभरिवसंणदे॥ टेक॥ आवघटैतनछीजे
तुम्हहौतैसाकीजे॥ भवसागरवारनपारा॥ मेरेतु
महीराषणहारा॥ १॥ देवाबिलंमनकीजे॥ बिरह
णिकौंसुषदीजे॥ तुम्हबिणिपारनजाणैनकोई॥ पी
वपडदैसोतिनहोई॥ २॥ साहिबमेरासूरा॥ जाकै न
बाजैंअनहदतूरा॥ जोसेवैसोफलपावै॥ तातैंबिरहणि
बिलंमनलावै॥ ३॥ बिरहसंताईंसाई॥ मैंअबलाव
महीताई॥ जोधंणकौंतरसैमोरा॥ योंहरीदासज
नतोरा॥ ४॥ १२॥ आयौउलटिजाकैंनांहि॥ दयालहै
किपालमाधौ॥ मनमड्योचरणंमांहि॥ टेक॥ संसार
भारअपारप्रबल॥ तहांकाचारंग॥ आपथापीमहा
पापी॥ भगतिपाडैभंग॥ १॥ नरमजलमैंकत्साकेता
अजहूंकलिकलिजांहि॥ रामबिणिमेरैधणीनांही॥ न
हीबसैंकलिबिषमांहि॥ २॥ बासजुगमैंत्रासजमकी
अलपजीवनिमोहि॥ जनहरीदासकौंबिसवासतेरा
नहीछाडौंतोहि॥ ३॥ १३॥ संतौंकबधिकालसोंडरिये

भवसागर तिरिबेके तांई दियि दे सिषगाधरिए॥ टेक॥ लो
यां सड़ग द्वारि जंम गाढो॥ घाव न पड़े तन माथे॥ हरि
काजन कोई संक न माने॥ हरि हथियार संभे॥
॥१॥ सुणि सूरि जन सुत सबद है मारै॥ अैसा कैदेन है
डी॥ गोबिंद का जन जंम के द्वारे॥ जांन न देष्या कोई
२॥ मैं मेरा डर संगि करि लीया॥ काल निहां ज हां मा
डी॥ सा चाले हरि चरणां राष्या॥ सन्या कृष्ण कों घाई॥ ३
निस बासुरि निरभै गुण गावे॥ कहि कहि रांम सुका
॥ जन हरिदास भगत भै मेस्वर॥ ताका काज संवारे॥
॥४॥१४॥ मन पंषियां मैं तूं जाण्यों रे भाई॥ उलटे मेलि अम
निधि पाई॥ टेक॥ ग्रांम अगाहि अंतरि आनि नासी॥ मन
चल काया तन कासी॥१॥ अबरण बरण करम न
यां॥ सुषिम निरषसो सीतल छाया॥२॥ जन हरि
स निरमै नैनां ही॥ म्हारो प्राण बसै हरि तरवर मांही॥३
॥१५॥ अब मैं जाण्यों हो जांण्यों गोबिंदो महारै मनि व
॥टेक॥ अकल सेवा करो अहि निधि॥ मन हीं मन स
ईया॥ नाद निरगुण सेक आया॥ प्रसि सो पति पा
या॥१॥ साच गहि सद गति सदा संनमुषि॥ सबी सब से
वा कैरै॥ निकटि निस दिन प्रेम नरिषे॥ तहां चित चरणां
धरैं॥२॥ आतां अस्थांनि आनंद सबद अनाहद बाजि
॥ कोटि सूर जितेज दरसे॥ कोटि चंद बिराजिया॥३
आगम प्यासो इहां पाईया॥ प्राण पाव संगी लाईया॥ ज
हरीदास आसा अरपि लागी॥ मन हीं मगन मठ छाई
॥४॥१६॥ देवन जांणे तेरा भेव॥ हम कैसे सतिमां

गौसेव॥टेक॥सतगुरिमिलिसाचबताया॥अगमपु
षताकीयाहमाया॥ताहिभेदजाणैकोईनांहि॥सेक
सेकयोंटेजलमांही॥१॥जलहीमेंजलहोइसमाया॥
अगमजोगकाभेदनपाया॥भेदलहैसोईगुरमेरा॥
जनभिजननभिकूंताकाचेरा॥२॥इहबिचारपारन
हिकोई॥सालिगरांमसरांमनहोई॥सालिगरांमस
हजकादेवा॥मनमानैत्योंकीजेसेवा॥३॥मसतगि
धरैगलामेंराषे॥फूगेसदाफूठ..........बनमांहीं
हीत्ताषे॥घटैमेंहैआतमांही॥फूगाफूठयकसाहिब
नांही॥४॥अबदसमकिचेतिजीवमेरा॥हरिबिण
अवरकोंणहैतेरा॥हरिनिरबंधबंधणिनहीआवे॥सं
पटिजड्यासोहरिनकहावे॥५॥हरिप्रबसिपड़ैन
प्रसंगिआवे॥सबहिनेतेंन्यारोनिरदावे॥हरियबमां
हिसकलहरिमांही॥तासाहिबकौंचीन्हैनांही॥६॥
निराकारनिरंजनराय॥जनहरीदासताकासरणा
य॥वोहअबिनासीबिनसैनांही॥इजाबिनसैआवै
जांहि॥७॥१७॥मनसमकायलेरे॥मनगाहिगुरमां
नबिचार॥आनंदरूपअगाहिअबिनासी॥अगमका
रनहिपार॥टेक॥आलसआवैसाचनभावै॥बिषका
पीवणहार॥आसाबासिपड्याडस्याअपराधी॥जागैन
हीलगार॥१॥हरिनजिनावनहोतरिअंतरि॥समझै
नहींगंवार॥केतेगयजाहिंगे॥सलिलमोहकीधार॥२॥
यकुसंसारषारमोहैदीसै॥तामेंदाफेजीवअपार॥
जीवतथकेथकेनिजमारग॥मेंतैंमोहकिवार॥३॥त

अभिमांनआंनतजिसेवा॥नांनांनेहनिवारा॥हरिदास
जनहरिगुणगावै॥जाकैरांमअधारा॥४॥१८॥रांमबिस
मारेप्रांण॥कबधिपहरिसुमरिहरिहरि॥सुमरति
धनिधांनांटेका॥उदरअबलाजवरजलमैं॥तहांली
राषिपायहरि॥अभिमांनतजिनर॥आंनसबदनभाषि
॥१॥स्पंघस्यालपतंगकुंजर॥अपकीटीस्याज॥मंछकंछ
होयजलांहडोल्यौ॥तोकौंअजहूंनआईलाज॥२॥मांनिया
अवतारबहुनिधि॥पाईयेकहूंकालि॥जनहरीदाससम
झिबिचारिसगति॥रांमनांमसंभारि॥३॥२०॥जुगियेलाधे
भीतिपबैबरी॥तातैंमलनहीआवैनैरौ॥टेक॥बंचसूरसमि
कीया॥सतगुरसाबणदीया॥भकतजतनकरिधोवै॥तातै
बकंड्डितैमेलाहोवै॥१॥दादसआंगलबाई॥माहिसुषमनिस
हजिसमाई॥तरसिअगमरसचाषै॥मंमितासैमेलनराषै
॥२॥जनहरीदासहरिनेरा॥तहांजांणबिलैबामेरा॥हरिप्री
तिपछेवरादीया॥ताकौंहंमबोटतजीया॥३॥२०॥गोब्यंदा
कसोअबगुणमांहि॥सुषमनांवसागरछाडिहरिकौंडपीच
स्याजमगुरिजांहि॥टेक॥कहैजोगीरहतिरागी॥रोगकीय
रयांनि॥सोरोगदिनिदिनिडालमल्है॥बूडिगयाअभिमानि
॥१॥पहरिसुडामगानहूवा॥रहतिनाईहाथि पछेरावल
बाडिकावलावस्याजमकेसाथि॥२॥पांचरापिनपेमपी
या॥दसौंदसाकौंजांहि॥दीयिअवधुआकलिंबौधा॥अजहूं
चेतैनांहि॥३॥हरिनांवनिरमलनिकटिनांहि॥बिकटषेलै
बाय॥जनहरीदासजोगीछाडिआसण॥जेमलोकिआवै
जाय॥४॥२१॥मनरेजगतनलोजोया॥अवम

ज्ञोसेव॥टेक॥ सतगुरिमिलिसाचबताया॥ अगमपु
षताकीयाहमाया॥ ताहिभेदजांणैकोईनांहि॥ सेक
सेकयेढिकजलमांही॥१॥ जलहीभैजलहोइसमाया॥
अगमजोगकाभेदनपाया॥ भेदलहेसोईगुरमेरा॥
जनभिजनभिरूंताकाचेरा॥२॥ इहबिचारपारन
हिंकोई॥ सालिगरामसरांमनहोई॥ सालिगरांमस
दूजकादेवा॥ मनमानेसोंकीजेसेवा॥३॥ मसतगि
धरेगलामेराषे॥ फूगेसदाफूवसंग बमाही
हीत्ताषे॥ वोरेमेल्हेआलामांही॥ फूगफूयेउसाहिब
नांही॥४॥ अबतुसंमकिचेतिजीवमेरा॥ हरिबिण
अवरकोंणहैतेरा॥ हरिनिरबंधनंधणिनहीआवे॥ सं
पटिजडासोहरिनकहावे॥५॥ हरिपरबसिपडैनआ
प्रसंगिआवे॥ सबहिनतेंन्यारोनिरदावे॥ हरिसबमां
हिसकलहरिमांही॥ तासाहिबकोंचीन्हेंनांही॥६॥
निराकारनिरंजनराय॥ जनहरीदासताकेसरणा
य॥ वोहअभिनासीबिनसैनांही॥ इजाबिनसेंआवे
जांहि॥७॥१७॥ मनसंमकायलेरे॥ मनगाहिगुरगपा
नबिचार॥ आनंदरूपअगाहि अभिनासी॥ अगमवा
रनहिपार॥टेक॥ आलसआवेसाचनभावे॥ बिषक
पीवणहार॥ आसाबासिपडाडस्याअपराधी॥ जोगेन
हीलगार॥१॥ हरिनजिनांवनहीतरिअंतरि॥ संमके
नहीगंवार॥ केतेगयेजांहिंगि सलिलमोहकीधार॥२॥
यकुसंसारषारमोहेदीसे॥ तामेंदाफेंजीवअपार॥
जीवतत्तहकेघकेनिजमारग॥ मेलैमोहकिंवार॥३॥ ते

जिश्रभिमांनश्रांनतजिसवा॥नानानेहनिवा॥हरीदास
जनहरिगुणगावै॥जाकैरामश्रधार॥धा।१८॥रांमविसा
रिमोरेश्रांण॥क्रबधिपहरिसुमरिहरिहरि॥सुमरति
सिंधनिधांना॥टेक॥उदरश्रबलाजठरफलमे।तहांलो
योराखि॥गायहरिश्रभिमानतजिनर॥श्रांनसबदनमाखि
॥१॥स्पंघस्यालपतंगकुंजर॥अपकीटीस्याजे॥मछकछ
होयजलांहहोल्यौ॥तोकौश्रजकुनश्राईलाज॥२॥मानिया
श्रवतारबडनिधि॥पाईयकछुकालि॥जनहरीदासमम
झिबिचारिसदगति॥रामनामसमारि॥३॥१९॥जुगियेलाधी
डीछिपछैवैरी॥तातैमलनहीश्रोवनेरी॥टेक॥बदसूरसमि
कीया॥सतगुरसाबणदीया॥बकतजतनकरिधोवै॥तातै
बकुंडिनमेंलाहोवै॥१॥दादमश्रागलबाई॥माहिसुधमनिम
हजिसमाई॥वरसिश्रागमरमचांये॥ममिलासोंमेलनरांखे
॥२॥जनहरीदासहरिनेरा॥तहांप्राणबिलम्बोमेरा॥हरिपी
तिपछेवरदीया॥ताकोहमवोढतजीया॥३॥२०॥गोव्यदा
कसोश्रवगुणमांहि॥सुक्षनावसागरछाडिहरिकौ॥कुषीच
स्याजमछुरिजाहि॥टेक॥कहतेजोगीरहतिरोगी॥रोगकीध
रध्याहि॥सोरोगदिनदिनकालमेल्है॥बूडिगया॥श्रभिमानि
॥१॥पहरिसुद्धमगानकूवा॥रहतिनाईहाथि पछैरावल
छाडिकावला॥चल्याजमकेसाथि॥२॥पाचराषिनेपसयी
या॥दसौदसाकौंजाहि॥देषिश्रवधुश्राकलिश्रधा॥श्रजकु
चेतैनांहि॥३॥हरिनावनिरमलनिकटिनाहि॥बिकटथेले
बाय॥जनहरीदासजोगीछाडिश्रासण॥जमलोकिश्रावे
जाय॥४॥२१॥मनैजगतन्लौजोय॥अलषकीगतिलयेनाहे

ही॥ भेष॥ मगति न होय॥ टेक॥ तीरथ बरत सब मांड वेली
तहां प्यालया नांहि॥ झूठ सों संसार राज्यौ॥ साच देषे नांहि
॥१॥ नदी उलटी बहै निसि दिनि॥ संमद लागी जाइ॥ ता
संमद का कूल भेद हूजा॥ तहां ताली लाइ॥२॥ सो संमद
अंति सुषकू मन थ्यापै॥ जन थाह पावै नांहि॥ ता संमद मां
हीं बसै हंसा॥ हरि लाहि रामांहि॥३॥ मन रम जल जब आणि
पीवै॥ तब पार पावै नांहि॥ जन हरीदास कलिजुग बहै औ
रे॥ ता मैं बल्हा स्वामी जांहि॥४॥२१॥ अब कूं हरि बिणि
आन न आचौं॥ नाचि न गावै मगन होइ नाचौं॥ टेक॥ हरि
मेरा करता कूं हरि कीया॥ मैं मेरा मन हरि कौं दीया॥१॥ ग्या
न ध्यान प्रेम रहम पाया॥ तब पाया जब आप गमाया॥२॥
हरि रांम नांम बरत हिरदै धारूं॥ जम ठग दार निमष न बि
सारौं॥३॥ हरि गाइ गाइ गावै गाया॥ मन नृत्य संत गिगा
न मंठ छाया॥४॥ जन हरीदास आस तजि पास॥ हरि रिख खु
णि जनु रिनिवास॥५॥२२॥ सोई देवा सोई सिरजनहार
जाकै जोग ध्यान का बहु बिसतार॥ टेक॥ नाथ निरंजन वा
र न पार॥ निराकार निरमल तत सार॥ ताहि भेद जाणै नहीं
कोई॥ भेदी हरि सौं न्यारा न होई॥१॥ जाकी आप पवन च
लै दिन राति॥ माई बाप तस नांही जाति॥ सो ना कहा कही
जै जाकी॥ सकल मांड या दीसै ताकी॥२॥ जाके हुकमि इं
द्र मेघ बरसावै॥ जीव जंत सकल सुष पावै॥ करि अस्तुति मांन
इंद्र अलसावै॥ तौ वाकौं मेहि अवर कौं थापै॥३॥ जा मैं काल
सकल जुग षाय॥ निसि बासुर दोइ ता बिहाइ॥ जन वही
करै काल बिसवास॥ तब बही देषि काल का नास॥४॥

सभारसपतसुसीस्यौंधीर।उलटिसमावैतिनकानीर।उलटिनी
रवरैतैतिमिमांहि।हरिआपापनगामेटैनांहि।५॥गिरपरव
तमीरहिस्येनांहि।अनलपंथिज्यौंउड्राजांहि।थापाऊदि
उडावैसोगेवा।जोगी बिणजुगतिनहोई॥६॥सारअग
राकेसेंस्ही।दावानलउनहोंकोदहै।पावकसबलोबर
तैमांहि।सातौंसमदसूकताजांहि।७॥तारामंडलफूग
बिसवास॥निराकारनिरभैनिजदास।जोदीसैसोरहत
नांहि।हरिजनरलिमिलिस्योंहरिमांहि।८॥देषोधरतीक
हाआकास।रविससिकंकाकेगानास।उलटिसूंनिफि
रिस्येनिसंबाहि।अंबरधरबूडैजलमांहि।९॥पलैब्रह्मा
इडअनेक।सुरतेतीसौंचलेदेष।जोआकारसबिनस्य
जाव॥निरभैएकनिरंजनराव॥१०॥आनआसकालकी
पासि॥बिणिहरिजनफूगबिसवास।जनहरीदासन
जिरभैतारांम॥आदिअतिहरिस्योंकाम॥११॥ २४॥ह
रिरिसमिरतरसपायाहै॥वामीगस्योंमनलायाहै।टेक।उन
मानहीसदारसपावै।रांमजनबिनिकैसेंजीवै।उनथा
तैमायाकोदास॥रांमनजेपणिकुलकीआस।कांटादे
करासेयोइ।तौसहजैंहीआंनदहोइ॥१॥नरंमअधारा
भैनांहि।दूपणज्यौंदेषैघटमांहि।नरमसहीकुठबरतैअ
वर॥निसबासुरिमननाहीमेट।दूपणनरचाराउआघाड
तौतेंदरसणकीयानजाइ॥भगफड़चलैनपैडैनाइ।सूम
रहैनधपिनषाइ।जोकफडतौपूजैआंन।जौपेंडातौकुल
कैमांन।

३ जो उलटो हरि सौं हेत । जो धायातौ रहै सुचेत । जोगीय
चालै ऐसैं ताइ । हूं नि सहर की निष्या आइ । तन मन तौ लि
आकासां चढै । सो जोगी मरि है न हीं डरै ॥ ४ ॥ नांगि रहक
रै न बन मैं रहै । पांचौं कर मन सहजि होइ दहै । जो गिरही तै
चिंता उदार । बैरागी तो मन कौं मार । दोन्यों चालै ऐसैं साइ
तिन कौं काल न परसै आइ ॥ ५ ॥ मैला रहै न उजल होइ । आ
पा दोकरा डै खोइ । जो मैला तौ व्यापै कांम । जो निरमल तौ
दूजा रांम । तातैं रहिये मिरतग होइ । ताकी बात न बूझै को
इ ॥ ६ ॥ नां दुष गाहै न सुष कौं जाइ । ऐसैं खेलै सहज समा
इ । सुष जे वेइ अनंत अपार । तातैं न जियै सिरजनहार ।
रांम नांम कहि तासौं लावै । तब कछु भेद मरम का पावै ॥ ७ ॥
पापु तिन की आसा नांहि । रांम रटै ए राषे घट मांहि । माया
दिसा रहै जन सोइ । रांम सजन का आनंद होइ । जन हरी
दास तब सरै पिछांणि । जब मिटि गई कुटंब की कांणि ॥ ८ ॥
॥ २५ ॥ जोगियो लाधी जोति बिचारै । तातैं गर डि चढौ रियमारे
टेक । सहस कलि सिधि साधी । अब गति कौं आराधी । निरम
ल निज पांन बिचारं । निराकार निरधारं । आं आस बास रहै
पारं । तहां पाती पांच उतारं ॥ १ ॥ सहस हज तप करणं । तातैं
बैकौंडि न जांमण मरणं । ईनि माग्रि गा आंण सरणं । दोष देषिय
ग धरणं । त्यौ लागा जन जीवै । तहां सार अवारा पीवै ॥ २ ॥ सह
सकल सुष धारै । उलटि आप कौं मारै । निज तत निज पांन
बिचारं । बरिषा रस संमिरत धारं । तहां प्रसेंपां एक धारं ॥ ३ ॥
सह सकल दिट सेथं । उलटि आं रांम कौं देषं । करि अब गति दे

सीरां सांवक्षरियकोंनीरं॥गगजमनबिचिहीरां॥तहांपरसि
निरंजनपीयां॥४॥हरीदासजनसोई॥जाकेत्रिबिधतापंतै
नहोई॥याळकेपैरेलागे॥सदानिरंतरिजागे॥गडियांगा
हिगिगनिचढावै॥सुखसागरमांहिसमावै॥५॥२६॥
रागभैरूं लिख्यते॥नावदेनांवदेनावदेदेवा॥हरिनांवके
आसिरैनांवकीसेवा॥टेक॥नांवबिश्रांमद्योनांवकीब
या॥नावनिरबांणतैंरामजीपाया॥१॥मैनलौनजनद्यो
सुषहरितेरी॥बीनतीसांभलौबापजीमेरी॥२॥कालि
क्रिपालहूंबहोतबिबिधिधाया॥डस्याडरिदीनकेआसि
रैआया॥३॥सकलसंसारकास्वादसबकूडा॥जनहरी
दासकाभागमैंनांवहीरूडा॥४॥१॥नांवदेनावदेनांव
देराया॥नांवदेनाथमैंनांवसुणिआया॥टेक॥ग्यानदेध्या
नदेमजनद्यौदेवा॥ज्योंकरौरामज्योंमेंकरूंसेवा॥१॥
प्रेमस्योंप्रीतिद्यौंमजनद्योमांही॥सीसदेस्योंप्रीतिद्यौ
पाणिमेल्हिस्यूंनांही॥२॥जनहरीदासकीबीनतीसांभ
लौस्वांमी॥जागतेसोइमांजागिहरिनांमी॥३॥२॥रांम
भजैतौआनंदहोइ॥दीनांनाथदयालदयानिधिचिं
ताहरणसकलबिधिसोइ॥टेक॥प्रमउदारअपारअ
षंडित॥पूरणब्रह्मभजनकरिलोइ॥अवसरइसोबहु
रिनहीपावै॥हरिबिणिकबहूंभलानहोइ॥१॥आन
दरूपअषिलअबिनासी॥करणहारकरतारसजांणि
जहांतनधरैतहांहीसाथी॥प्रेमप्रीतिकरिताहिपिछां
णि॥२॥नाराइंणनिरबांणनिरंजनितागरबहरणगो

हरितेरा॥४॥ जाको चेरा ताके सोरे॥ दयल अवर कानाही॥ जि
म्हमारे माहिब वाजो॥ तो चित चरणां मांही॥२॥ तुम्ह साहिब
मेमुलां जादा॥ चोटी कटाल म्हारा॥ घरजाया की लाज व
हीजे॥ अवगुण कितां म्हारा॥३॥ कीजे आस आसंगा के
सा॥ करै जके पे मनि लावै॥ जनहरीदास चरणां के सरणे
मोजमेहरिसुषपावै॥४॥७॥ जागि मन बालकापंना गहि
सूत्या॥ काल का मुष मैं निडर होइ सूता॥टेक॥ जो रत जि
मो रत यै रांम न जिनाई॥ जुरा संन्या सहूत सीस परि आई
॥१॥ कि सप लद्यास तौ सित जहां कांत हो॥ काल सनमुषि ष
डो छिप्यां छूटै कहां॥२॥ जनहरीदास तां वंत न जिनो वध
रि लीजे॥ अवर आरंभ कहां कां मय कर कीजे॥३॥८॥ हरि
ही रा हरदै बसै॥ गोबिंद गुण गावै॥ आदि अंति संगी सदा
तासूं मन लावै॥टेक॥ अनलपंषि आकास मैं कैनी नही आ
वै॥ आनंद मैं कंचीदसा॥ आपणं न षयावै॥१॥ उजगार के स
चा किसा॥ काहूं हा एन सोयै॥ ताहि बिसन नर देत है अप
णं बरसायै॥२॥ लष चोरासी जीव हैं सबको हे साई हरि
जन के सांसा किसा॥ मन हरिपद माही॥३॥ रांम बिसार्यां
बिघन है॥ जेम ग्रासे माई॥ जनहरीदास गोबिंद तंजो त
जि आन सगाई॥४॥९॥ ऐसो हम बाड्या ज्या मोहार सुसंथा
डाइ तुम अनंत अपार॥टेक॥ माता सुत पिता नही कोइ स्या
रथ आइ मिल्या पष दोइ॥ बिछुरणइ ग्राहो मिलण नही
आगै॥ तातै मोहि बाजी सी लागै॥१॥ सासू सुसर नही को सा
रा॥ यक सबदी सै मोह पसारा॥ कांम है हि जल तै है जो रे त
का कसगा न हेरा कोई॥२॥ मन सा डो ड॥ग

हिरदै ग्यांन बसै निज गोइ ॥ जन हरीदास गोब्यंद गुण गा
इ सकल ब्यापी रांम सहाइ ॥ ३ ॥ १० ॥ काहे कौं अभिमान क
रीजे निसदिन आवै घटै तन छीजे ॥ टेक ॥ सिला बैसि सां
वण तप करै । सिया लै पांणी मैं मरै ॥ पांच अगनि न्हालै
धाइ ॥ फल त्यागै भी नरकां जाइ ॥ १ ॥ तीरथ ब्रत करै स
मि आइ ॥ संत मंत सोषै मन लाइ ॥ तुला बैसि कंचन दे का
टि । सिर चै बिकै बिराणै हाटि ॥ २ ॥ जैसा बिरष तैसा फल हो
इ ॥ पाप पुंनि अंत निफल दोइ ॥ यक फल छाडि अरांम फल गा
है । सो पंथी निरभै फेर है ॥ ३ ॥ जन हरीदास ऐमन का कांम
निरभै होइ तजै नहीं रांम ॥ आंन इष्ट संकट ब्रत करै ॥ नट
ज्यौं नाचि नाचि घट धरै ॥ ४ ॥ ११ ॥ लगाहि निस्यान सोइ रे ॥ कु
छ ग्यांन दिष्टि लै जोइ रे ॥ टेक ॥ अबद्ध चेति अचेत रे ॥ षोलि
ग्यांन का नेत रे ॥ हरिजी कै सुमिरण लागि रे ॥ अक लि अंध
यौं जागि रे ॥ १ ॥ करम हींण कछु जांणि रे ॥ पांचौं [illegible] तांणि
रे ॥ प्रेम प्याला पीव रे ॥ हरि भजि अैसै जीव रे ॥ २ ॥ हरि हीरा
कंठि राषि रे ॥ सुणि साधां की साषि रे ॥ जन हरी दास यौं जां
णि रे ॥ अंतरि अलष पिछांणि रे ॥ ३ ॥ १२ ॥ अब गति अगम अ
हरगति बाजी ॥ निद्रा आइ घंटा ज्यौं गाजी ॥ टेक ॥ हेत प्रीति
आ बिरक रै ॥ निद्रा संगि जीवत म्ही मरै ॥ १ ॥ घट घट मांहि डा
कणि बसै ॥ सांप रूप कै जीवत डसै ॥ २ ॥ जन हरी दास निद्रा
स्यौं नेह ॥ अंति कालि मौं हृ पड़ि सीष है ॥ ३ ॥ १३ ॥ हरिजन अनु
गति बिचारै जागे ॥ डरै न सोवै सांपणि लागे ॥ टेक ॥ लोचन ती
नि तरल तनि धारै ॥ षट दरसण दोइ ठंठ लि मारै ॥ १ ॥ सांसे मु
ष फैला यां आवै ॥ सकल जनंन लैता ल्ह लावै ॥ २ ॥ सुरनर अ

सुरअंधारैलाधा॥ चिंतामापणिचुणिचुणिषाधा॥४॥ को
मक्रोधडसंणिधरिवोषै॥ लालचदूतहाकेरोषै॥४॥ ज
नहरीदासरामभजिभाई॥ तूसापणिकेसंगिनजाई॥५॥
॥१४॥ हरिभजिहरिभजिहरिभजिभया॥ हरिबांणिजन
मअबिरथागया॥टेक॥ मावपिआणिआनतजिअनरथ
जंमजातहैजागिरे॥ आदिअंतिहरिसदासनेही॥ तूता
केसुमिरंणिलागिरे॥१॥ इंदीपांचरासिगरसोकैं॥ मणगो
बिंदकागाइरे॥ दीनदयालदेवकरणांमै हरिसकलभव
णपतिरायरे॥२॥ जनहरीदासहरिअमसनेही॥ गोनति
जरिनरदेषिरे॥ सतिमदलमैसकलबिआपी॥ हरिपूर
णभ्रमअलेषरे॥३॥१५॥ रामसुमरिनरहरिनजो॥ कामै
क्रोधबिषयाबिसनजो॥टेक॥ तजिअतिमानननौकूंन
संचा॥ भवसागरतिरणनावनगचेत॥१॥ काटोकोनकाल
काजाल॥ सुमरिसुमरिगोबिंदगोपाल॥ जैसेंअगनिकाटमै
रहै॥ काटीकटैनकाटैदहै॥२॥ जनहरीदासअबअैसीन
हीभजेतांरामबिघासबगई॥३॥१६॥ लेडाल्याडिहरिक
हांजांऊंपेडाअगमसुगमसाधायो॥ गोकलनग्रबिसंभर
तोकें॥टेक॥ सेवगजहांतहांहीस्वांमी॥ सबदबिचारिबस्य
भिनदोइ॥ चौंधीआंषिचपलमतिम्हारी॥ चितवततासमि
टीसबदोइ॥१॥ कायाकुंभप्रांणजलहरिका घटिघा
टअलषसल्लकाया॥ अबगतिअगंमनिरंतरिन्यारा॥ औ
दरपंणमैछाया॥२॥ मावपिआंणिपरसिअपरणवार
पारकुबनोई
सासबमांही॥३॥१७॥

मनसबकही मारी । निविवेकी पणि आपणु फूलै । उलटि
रामनहीं थाया । टेक । प्यास बहोत अंतर मैं लागी । ऐसी
कंदे न जीवे । कुपथि पडे ओखो पदि नहीं नेडी । मरण नं
दी जलपीवे । १ । कोडी बिणि जिअुसी हैं खेलै । नेडो साच न
लीयो । हरिहीरो घरमांही लहौ । करज बहोत सिरकीयो ।
२ । वेदब्यास बिकस्क रिहीगी । सोधजडी मनि मांनी ।
जनहरीदास तेनं मकै बौरे । महाषरिष बडगांनी । ३ ॥
१८ । चौका देवे चित दो होवे । रसनां के रसिलूधा । लागी वे
ट मरें ममायाकी । अरथ नआवे सूधा । टेक । पासी पसू आ
पणी तांणी । मोटी मीच नजोवे । दोस्यों अपिसवर थकी फूवी
नैण बैण करि धोवे । १ । कोई उलटे अैलि पर मपद परसे पै
डे चलै नजीवे । ताकी कहां कुसल ताक हिये । मरण नं
दी जल पावे । २ । जाकों कहूं समैकों मारे । माया के मदि मां
ता । जनहरीदास तिनकी गति जांणी । दीसे जंमपुरि जांता
३ । १९ । कहणी सरस निरस नार रहणी । माया मस्तो न जाई
क बिबांणी मांही मेवासो । हरि सौं करे लगाई । टेक । दीसे
कौ सब चित कौ चातुरां । मांही सूल सवाई । साधन हीकी
ई नपराधी । ढोका चोट बिलाई । १ । कालि मांन स्यौ सजन
कब करिसै । कबहूं निरमल नांही । पतरा बेधक सणी के
सैबेहे । यटै होता सन मांही । २ । मीठे नहीं नीब से प्यारे ।
जापैरं मर सांइण नाही । जनहरीदास अैसा अपराधी बू
डि रह्या मो मांही । ३ । २० । कहणी हंस कागकी रहणी । कु
बधि कौं करी कांवि धरे । एक चिंणगारयडे दावानल । केतो अं
न बलि हूक कैरे । टेक । बापा तिलक सौं जसंगि लीयो । सांभी

हे दौ जोर करै ॥ सुंणि सुणि बेद बाद कौं तौडै । कौ यो टीपू
जिसी मरै ॥२॥ कौ ही डारि सारि हरि हीरौ ॥ कर मंही णि कौंडै
असत न बोलि ॥ काल जाडि राम भजि केवल ॥ कंचन
सौं कां करै न तौलि ॥३॥ करणहार करतार समेल्यौ ॥ वा
करक रिकौ रिथापियौ आप ॥ जन हरीदास हरि सौं चो
री करी ॥ कोई दुरख न लोपक चौ पाप ॥४॥२१॥ नागि मन
मोह तजि भजन हरि की जै ॥ आदि बिस ध्यांन धरि रांम र
स पीजै ॥ टेक ॥ काल बांसि बहे नुरा नै दीसे ॥ रांम पैं बिमुष
नरजं मकेण घरट ज्यों पीसै ॥१॥ कांम तजि क्रोध तजि लोभ
तजि माया ॥ फेरि मनख आलस तजि जो तिगढ काया ॥२॥ जन
हरीदास साचै मतै जो तिनही हारै ॥ सोरं चक चूरि करि
काल नै मारै ॥३॥ २२॥ पद ॥ २३॥ राग ॥ ... ॥ आधा जी
वन मागीया ॥ सके कुछ नांही ॥ निसि दिन बाघणि या देहे
सूल्या मन मांही ॥ टेक ॥ रोम रोम मैं रमि रही ॥ स्वसिम हे पी
वे ॥ सा पणि सरबस लेत है ॥ ता दे मां जीवे ॥१॥ रोम समा सो
पर रह्या ॥ कुछ मुर की डारी ॥ डाकणि डसि डसि खात है ॥ बो
टी रै मारी ॥२॥ जन हरीदास कहिये कहां ॥ कुछ कहत न
आवै ॥ बिस कीड़ा बिस ही षसी ॥ ते मिरतन ही सोवै ॥३॥ १
हरिजन बाघणि देखि डरै ॥ सेवा करै प्राण तन सौंठो ॥ स्वसि
म आगनि चरै ॥ टेक ॥ अबला कहे पणि सबला यांवे ॥ नाणे
कोई नांही ॥ नष सिष सुधा मूल उपाडै ॥ मीठी दे दै मांही ॥१॥
त्रिया कहे पणि तुरत ग्रासे ॥ स्वसिम बीर चलावे ॥ काचा ॥४
कोट चोट सों तोडै ॥ पहली चोट सिकावै ॥२॥ जन हरीदा

सज्यांहहरिरसपीया। तेमत्तिवालामाता। तिनकेबाघ-
णिनिकटिनआवे। जमतेनरंगिराता। ३। २। रांमसनेही
साधांवा। तिनजनिरषतजीवे। अगंमपयालापेमका। अ
नहदरसपीवे। टेक। ब्रह्मकोलिअेसीबहे। गुणदेहबिसा
रै। सेवगचंदचकोरज्यों। निजसुरतिनटारै। १। रांमसरी
षाकेरहे। बिश्रांमनमेल्हे। मगनहुंवाहरिरसपीया।
प्पोलागोषेले। २। मनउनमनमिलागारहे। चरणांचितराषे।
जनहरीदाससोईजनभला। कुछआनननभाषे। ३। ३।
संमदनीरमांझलाबिरोले। सूषिमसीरांयीवे। पेलीकथा
प्रमपदसुणतां। मनमीडकानजीवे। टेक। जबहासुणे
तबेउषयावे। सुषरेस्वादिसुकारे। मायाकेंझायामेंबैठे
उलाअरथबिचारे। १। निरमेकहेरहैमेमांही। सरतिस
षहनहीजागी। नांवनिरूपनिकटिनहीस्यारा। करमज
तिकेंतिलागी। २। अंतरिनेतहांहरिनेरा। वेनिनआं
षितजांणी। जनहरीदासतांकासंगपरहरि। तेबूडेबिन
णिपांणी। ३। ४। गुरुकासबदसाचकरिपकडे। तेकाम
स्याजागैरे। तिनकाचितसाधांकाचरणां। दिनदिनहि
णांलागैरे। टेक। मजननेचलीयातेजीया। सोगरेगहेला
गारे। आगेभीकेईसोगीबूडा। तातेंसुषदेवसागारे। १। बि
रमलनहीतकेनितिबूडा। ताकाषोटाहेरूरे। अवरसक
लजवसागरबूडा। नांमांझीपातेरूरे। २। दासकबीरसक
लजगपरगट। पीपेअचापायारे। जोसागरकोंमेराबांधां
लागतासेदबतायारे। ३। जनहरीदासनीचकुलिजंच्या।

ताकौंतीनिलोकसबजांणैरे॥ जनहरीदासवेसिरमेंदेथ्यां
तोतैंजलटीतोणैरे॥४॥५॥घटिघटिगोपीघटिघटिकांन्ह
ओलदेंसकलघटिरांम टेक॥घटिघटिनारदघटिघटिसे
सोघटिघटिब्रह्माविसमहेस॥घटिघटिधूंदेथेंधरिध्यां
न॥घटिघटिजीवनरथ्यनमांन॥१॥घटिघटिमेमिता
घटिघटिमोह॥घटिघटिकेंचनघटिघटिलोह॥ घटिघ
टिआवेघटिघटिजाइ॥घटिघटिमेलेघटिघटियाइ॥२॥
घटिघटिरावणलंकद्वार॥ घटिघटिकेंरूसैनिआधा
र॥सुक्तागोरषलीयाजगाय॥जनहरीदासताकीबलि
जाइ॥३॥६॥मेरेमनकीचोरियां मैंजांणैरेनाई स्वयंम
होयघरसेंवलै॥ बिसहरहोयसाई॥टेक॥बिषियांकेब
निमनबसैसोकेसेंजीवे॥कामघटागरजैसदा नानार
सपीवे॥१॥बकध्याजांथलेधूसी॥बकस्यानिहारै रमनो
वैरसिरनरे॥जांणेंत्योमारे॥२॥ अवणांसुयलेगोदका प
मलस्वरनासा॥कुलधिकस्तालीकोमनो॥तहांछिलेपाया
॥३॥जनहरीदासबिषयातैंजे॥गोविंदगुणगावे जोजे
बैसेंगांनके॥तबहीसुषपावे॥४॥७॥जोलागीतोजागिये
स्तोकूंहोरे॥सतगुरकेसरिनेधिया॥कहिकोनपुकारे
टेक॥सबदसीरसाताबरा॥लागीतोमारे॥ कोड्यामधेएक
कोतनिचोटसहारे॥१॥अनिअंतरिमलकारह्या॥ सत
गुरुकालाया॥नषसषलोंसालेनही॥तोषालीबाला
॥४॥करैमकहाकाठीजड़ी॥ममितकेभागे॥जनहरी
दासजताजीवके॥तनिचोटनलागे॥३॥८॥जबलगमन

सज्यांहहरिरसप्यीया।तेमतिवालामाता।तिनकैबाघ
णिनिकटिनआवै।जमतेजरंगिराता।३।।२।रांमसंनेह
साधांवा।तिजनिरषतजीवै।अगमपयालापेमका।अ
नहदरसपीवै।टेक।अस्तोलिग्रैसीबहै।गुणदेहबिस
रै।सेवगचंदचकौरज्यौं।निजस्वरतिनटारै।१।रांमसरी
षाकैरहै।बिस्रांमननमेल्है।मगनकूंवाहरिरसपीया।
पोलागाषेलै।२।मनउनमनिलागारहै।चरणांचितराषै
जनहरीदाससोईजननला।कुछेआंननमाषै।३।३।अ
संमदनीरमांछलीबिरोलै।सूषिमसीरांयीवै।पेलीकथा
प्रमपदसुणतां।मनमीडकानजीवै।टेक।जबहासुणं
तबेडषपावै।दुषरैस्वादिप्रकारै।मायाकीछायामैबैठ
उलाअरथविचारै।१।निरमैकहेरहैमेमांही।सुरतिस
पहनहीजागी।नांवनिस्पनिकटिनहीस्पारा।करमभ
लिकैविलागी।२।अंतरिनेतवहांहरिनेरा।वेनिनआं
षिउफांणी।जनहरीदासतांकासंगपरहरि।लेबूडेबिन
णिपांणी।३।।४।गुरुकासबदसाचकरिपकड़ै।तेकाम
स्पाजागैरे।तिनकाचितसाधांकाचरणां।दिननिदिन
णांलागैरे।टेक।मजननेचलीयातेजीया।सोगरेगकैला
गारे।आगैमीकेईसोगीबूडा।तातैसुपदेवनागारे।१।
रमलनहीतकेनितिबूडा।ताकाषोटहेरूरे।अव
लजवसागरिबूडा।नांमांझीपातेरूरे।२।दासकबीरस
लजगपरगट।पीपैप्रचापायारे।सोसागरकौंमेराबो
नगतांभेदबतायारे।३।जनहरीदासनीचकुलिमे।।

रूप

ाकौंतीनिलोकसबजांणैं॥जनहरीदासवैनिरमैंदेष्यां
नातैंउलटीतांणैं॥४॥५॥घटिघटिगोपीघटिघटिकांन्ह
आंनदैंसकलघटिरांम॥टेक॥घटिघटिनारदघटिघटिसे
सो॥घटिघटिब्रह्मा बिस्नमहेस॥घटिघटिधूंदेषेधरिध्यां
न॥घटिघटिंसीवनरथउनमांन॥१॥घटिघटिमेंमिता
घटिघटिमोह॥घटिघटिकंचनघटिघटिलोह॥घटिघ
टिआवैघटिघटिजाइ॥घटिघटिषेलेघटिघटिथाइ॥२॥
घटिघटिरांवणलंकदुवार॥घटिघटिकैंरूंसैनिआधा
र॥सूतागोरषलीयाजगाय॥जनहरीदासताकीबलि
जाय॥३॥६॥मेरेमनकीचोरियां मैं जांणौरेमाधौस्यांम
होयघरहैंचले॥बिसहरहोयसाडी॥टेक॥बिषियांकेब
निमनबसै॥सोकैसैंजीवै॥कामघटागरजैसदा॥नानार
सपीवै॥१॥बकध्यानजांपेलेमुसी॥बकस्यांनिहोरै॥रसनां
केरसिउलरै॥नांणैंस्योमारै॥२॥स्रवणांसुषलेनादका॥त्रि
मलसुमनासा॥कुबधिकलालीकामनो॥तहांपैलेपासा
॥३॥जनहरीदासबिषयाठगे॥गोबिंदगुणगावै॥ओजे
वैसेपांनकेतबहींसुषपावै॥४॥७॥जोलागीतोजागिरे
ततोकूंहोय॥सतगुरकेसरिबेधिया॥कहिक्योंनसुकारे॥
टेक॥सबदतीरसालाषरा॥लागौतौमारै॥कोइआमधैएक
कौ॥तनिचोटसहारे॥१॥अंनिअंतरिजलकारहा॥सत
गुरुकालाया॥नयसयलोंसालेनही॥तौपालीवासा॥
॥२॥करमकडीकाठीजडी॥मंमिताकेधागो॥जनहरी
दासजताजीवकेतनिचोटनलागे॥३॥८॥जबलागमन

वाहरिफिरै मायाकीछाया अबलगातनदरसेनही सति
साचनपाया टेक बालकहैरूचिअगमकी षेलैगम
मांही उलटीसूंविपतालकौ सूझैकछूनांही १ अथ
मारगकी आपदा घुलगोविनषोलै बोगलाजिलाल
चिपड्यो निरयमूहोय बोले २ जनहरीदासआसाम
बी जीयाअणजायां हरिसुषसागरअहस्या मायाम
दपीया ३ ७ रूपैरेषघणोनही थोड़ो धरणिगगनि
फुनिनांही अकलसकलसंगारहै निरंतरि ज्योंचंद
जलमांही टेक आगमअथाहथाह नही कोई याह्न
कोईपावैरे जैसासजनतिसासबकोई मनउनमानि
बतावै १ सागरमेंकूंभकूंभमांहीजलहै निराकारबि
जऐसारे सकललोकऐसैहरिमांही वाकारूपकहो
योंकैसारे २ अचलअघटसबसुषकौसागर घटघर
सबवामांही जनहरीदासअविनासीऐसा कहैति
साहरिनांही ३ १० मीगलागैरांमजी हजासबबारा
प्रियनिरंतरिबोलियै संमज्यासोसारा टेक पछिमदसाम
नफिरिचल्या पूबेदिसिआया सहजिसदाकरहैतहै
मनमनहीसमाया १ सुनिसुधारसपीजियै पतिप्राण
अधारा झिलिमिलिझिलिमिलिहोत है बरिषाबकधार
२ गगचलीफिरिगिगनिकौ गिरवरगतछाया जनह
रीदासआनंदमया ततैंतहपाया २ ११ जिनिजिनि
जिनिहरिनांवगाह्यो उलटासोलिचल्यासुषसागरे ड
सहरीयाविसहरि गयो टेक धरिबिसवासकरमक

स्यौं॥तजि संसार धारै
॥१॥सुरति सं बाहि
प्रम निधि असे॥सके स्यौं लेला गिरह्यौ॥सहजि समाधि
वण बेगम भरि॥कोले गए रडम हरि दह्यौ॥२॥अब गुंम
न चरण तलि चूरया॥गरि अंतरि निजि नांव धरयौ॥जन
हरीदास सुष सागरि पैठा॥अघ अजरायल चेम किडस्यौ॥
॥३॥ १२॥अलष निरंजन निरगुण॥से राम मन मांही॥जग
सुष संसार का॥षोटा कुछ नांही॥टेक॥जीव जीव के आ
सिरै॥आसा धरि आवै॥अंति आस पूजै नही॥पाछै पछिता
वै॥१॥प्रांण नाथ पति छाडि करि॥माया जलि झूलै॥अंति
काल छाडै नही॥काहे कौं फूलै॥२॥जन हरीदास अैसी क
या॥जाणै सो जीवै॥सुंनि मंडल मैं पैसि करि॥निरभै रस पी
वै॥३॥१३॥तब लग कहां सुणां कुछ नांही॥जो वल्लभ
अघ जर तारै॥ज्यंन पति की गति कबहूं न जांनी॥ते गकहैं
पति बरतारै॥टेक॥रांम रसांइण बूंद न पीया॥सौ सै सूलन
चूकी रे॥अरस परस होय सेझ न षेली॥तब लग सुपनैं सू
ती रे॥१॥मन मैं पीव अपणै करि बेधी॥सकति सुहागन
दीया रे॥तिन तैं अजहूं परमपद लागौ॥ब्यचै पेम न पी
यो रे॥२॥त्रिबिधि ताप तजि निरषि परमपद॥उलटि तहां
ही राहियै रे॥जन हरीदास तब जागि सब झूगी॥कहौ कं वन
सौं कहियै रे॥३॥१४॥राग मारू जी॥सषी री अब पीव के मं
नि भाई॥छाडि छाडि जाय पूतं गरं गाब पडौ॥हरि रंम चढ्यौ न
जाई॥टेक॥ ...तकरी
सागरई॥सौ कणि सकल घेरती

रू १ रूपदरसमाये रहनाही तनिसिणगारनधा
सामाइहरिनिदिनिस्राये पीवकेयांआपादीया २ जे
हरीदासमसामासवमाता तबपीवआवेरेताई बाहप
कोइ हरिश्रतारतांय जमकीमिटीइहाई
ऐसें रामराय जागीला पांचोंरलटा तागीला टेक
अवघटघाटीपाईला हरिमजिऐसेंजोईला १ त्रिकु
टीकापद धोईला सबंरगुफामेंसोईला २ जोतिसरूपी
जोईला हरिमांजहरिसाहोईला ३ दीनदयालपिछाणी
ला जनहरीदासतिआणीला
रामसनेहीजीवणिमेरो तेरचरणकंवलपरिवारीफेरी
टेक हरिजनकेमदहरिदरिआवो मेंब्याकुलतुमदरस।
दिखावो १ बैदनबिरहबिथातनमांही। पडदाबोलिमि
लोंक्यानाहो २ जनहरीदासकोंआसतुम्हारी बिलम
कहांपतिंदलमलगारी) तुम्हबिणिमिट
तेनआणीयार धनकधारजोधासंगिमेरे मेंतासीबलबीर
टेक मेराकरमहलकालागू तकापरीतानमीर बेडी।
कठिनकहोंक्याजीवें रूनमरजादजजीर १ आवगुण
बहोतमजननहीकीया मनकामतामधीर सबजलब
पारकेठनाहो) कैंयाकरिपकडीतीर २ हैहरिअकलब
तोबिसव्यापी सकोंचेकरिसेनीर जनहरीदासचरणां
वैसे मरणिशखिरूपबीर ३ १ तुम्हहरिबिसोमंदिर
तैनजिसदिनिऊरतनोऊर प्राणपीवबिणिजाय टे
आत्माआप्यानिआतुर बिरहबिसहरयाइ मनर
आकुलनफबिमिलोगो सकलब्यापीराइ १ हरिमाघ

हैसं।आनंदपथनसुहाइ।पीउ-पीउकरउचरिकीजे॥
रसदियाइ॥३॥उमहजांणतेहोकहोंकासं।कहेवचन
औरैकाइ॥जनहरीदासकोंदीसरहीजो।प्रेमप्रीतिवधाइ
॥३॥२॥जिमनरांमसजीवनिमूरि।जिमप्रीतिअंतरिलीला
हरिसकलरहेभरपूरि।टेक।जुगस्योंप्रीतिकहौंलोंकी
जे।सकलेकालकीचोट।उलटीपेलिअनलकासुतस्योंप
कडिरांमकीवोट।१।हेहरिअकलसकलबिसव्यापी॥न्या
रवसोस्कदूरि।जनहरीदासनिजरूपनजांणे।तापस
रामुषिधूरि॥२॥३॥अबहंमरांमभजनसुषपाया।कांम
केंवाहीजेडीजतनस्योंमोहमतामुरझाया।टेक।निगम
तेकेंकलसबदसतिसुणिये।सुंनिमंडलमेंसाराअबसेधर
णिगिगनिरसमीजे।सदाअषंडितधारा।१।चंदसूरयेकेर
थिवेग।पवनबिरोलैबाई।गगजमननमधिहीरादरसै।सु
षमनिसहजिसमाई॥२॥स्योंघरिसकतिसकतिस्योंमेला।न
रमगयामनमाया।गिगनिमंडलमेंबसैज्यागराउंचआरं
भलागा॥३॥निराकारनिरलेपनिरंतरि।महलिमिलेवन
माली।सबमेंसीरअषिलअबिनासी।प्रमजोतिस्योंताली
॥४॥घटिघटिअघटअगहिअबिनासी।वंकनालिरसपीया।
पांचोंथकितभक्यारसपैले।आनंदअरथिसमाया॥५॥नव
गुणघंटागरिकयुणतीस्यों।रांमरचंनघननेरा।त्रूंगेमेंहपहम
रूतिपलटे।सुषमेंसहजिबसेरा॥६॥हेहरिअकलसकला
सोभा।जागिलहैसोजीवै।जनहरीदासतांचेरावलिया
अगमपयालापीवे॥७॥७॥जनमनमेंमेंमोहचुकावैजन

नारमासमाद १ बिणिश्रवणाधै: गासुणि पि
वाणपथहोय नोवाणमननाबहै जोणेबिरलाको
२ माथसकलतेसावतो मुसमेमतकमाद बिप्र
बाडीफलहोतहै गोजोणेमाबाद ३ नेणसमाणन्तर
से हरिनूगनितेतिश्याप जनहगैदासश्रानदसदा
बिक्करणबहेमतापु ४ १ श्रवधुगुरबिणिपानन
लोमे कहोनयग्रेहामणिदरया जलाबिणिबोलेश्रा
मे टेक जबलागनिजततानजाणनदरसे तबलापा
सनमाजे कहांनयोजेसतकैमाडे मालोबाईगाजे १
नवघटघटागारजिजबबरसे तबहांलीसमपावे ।
झारनकैसायकैसाम्हो कमकोरकेरजचुकावे ।
३ जनहरीदासप्रश्नमरजिडरनप रमरसाहणपावे ब्रू
गैमेहपदमसनिपलटै प्रश्नेलाणजोबै ५ ३ नवजल
कैडीकैमवे राहोकोणश्रधारि श्रजराजिहाजनाव
हीरतेरो बेलोबाहपसाथि टेक जमकैलोकिसदाङ्कर
हेती दहेतीजमकीलाय श्रबमेरामसजाणनिपायो
जमेपरोबूजाय १ कुबाधिमसबीबरि नाकूश्रापएि
सबाधिकहैकरजोडि मेपति नाहारबरपायो
जनादातोडि २ पानमसी रिटै नवमंत
जीत्रासश्रा नवे श्रा

गमिटीयाबतांई॥३॥ आनंदरूप अखिल अविनासी॥ स
हजोसुरति समांणी॥ जनहरीदास निरषि निज स्वांमि॥
घटि घटि अघट बिनांणी॥ ३॥ ४॥ अबला पीव बिणि॥
नां क्यों रहै॥ निसदिन तलफि तलफि जीव जाइ॥ टेक॥
स्वांति बूंद सहजो पीवै। नां पीवै ना डारे नीर॥ बिरह अ
गनि तन जारीयो॥ जिहिं आपै सो जांणै पीर॥ १॥ पेम प
याला चित चढ्या॥ अब पीव हो मोहि मैं पिलायौ॥ रामि रै पे
मि हरिरस पीया॥ तन बिछुरै तो पेम न जाइ॥ २॥ पतिब्रता
बिन चारणी॥ दोऊं अनेत न बैसें एकै साथि॥ फटक म
णि तब लग भली॥ जब लग हीरा न आवै हाथि॥ ३॥ अनं
त पुरी ओ बसी॥ रांम न जन बिणि चलें हैं रगाय॥ उतिम
पुरी ओं बिरनये॥ अब पीया पेम मगानरस पाइ॥ ४॥ प्या
रे हो अधिक दरद का स्योक है॥ आपठ है मेरा मन माहि
जनहरीदास तन मन सज्या॥ अब पीया हसि बोलो क्यों
नांहि॥ ५॥ ५॥ मन न ठन जाइ लोरे॥ सु षिर हियै कोण अ
थाधि॥ अनर जिहा जनां बहरि तेरो॥ बेली बांह पसारि
अब ठजि भरं मसरं मगा हिहरि निजि॥ साच वहां सुष
पाया॥ टेक॥ अबे कलणि कल्यो अपराधी॥ अकल पु
रिष केसै गाय हो रे॥ सकल सवं णपति गाइ सकल सु
ष॥ अगम अपार बिचार समतता हरि न मिलीजै पेम
न धाय हो रे॥ १॥ समझि समझि निज तत निज मन धरि
अरधं उर धंत जिन जिनि सबा सुरि॥ अ[illegible]पणो निज॥
तत नेम बिचारि॥ जनहरीदास सास धिरग हरि बिणि
कौडी सटै न हारि॥ २॥ ६॥ १५२॥ रागबसंत लिष्यते
पदं

कुम्हनजोनिरंजनजनमजाय॥ कूंणनीदस्तेअघाय॥
टेक॥ कालबांणगहितकतसोहि॥ जीवलागिरहेस
बमदनमोहि॥ रामभजनबिनिकोंणबात॥ जहांतहां
वे जमकरतघात॥१॥ रातिदिसतनहोतछीन॥ जैसेथो
डेपांणीमगनमीन॥ कालकीरनितिषरचबाइ॥ रा
मसंमदतहांकौंनजाइ॥२॥ प्रांणनायस्बूप्रीतिधारि
गुरग्यांनसबदहिरदैबिचारि॥ हरिअगाधभजितजि
अंजाल॥ जनहरीदासतहांकायानकाल॥३॥१॥ मन
मतिवालारांषिगौर॥ पलकपलकहरिनिकटिबौर॥
टेक॥ हतवतचितक्रतगाईबिहाइ॥ हरिहजूरिमन
तहांलाय॥ प्रेमप्रीतिकादेहबंध॥ जौंउलटिनपैलैम
नअंकंध॥१॥ नाभिकेवलनिजसुरतिवाइ॥ तहांब
सतहैरांमराइ॥ हरिसकलबियापीप्रमदेव॥ ताकूंब
होतभातिकतहांसेव॥२॥ जागिजागिरेजागिजाचि
त आंमआंमलैहांराचि॥ जनहरीदासहरिसकलस
च॥ हरिनिकटिनिकटिमनबिकटबाच॥३॥२॥ मति
वालीमालणिनांहिदूरि॥ हरिप्रमसंनेहीहैहजूरि॥
टेक॥ अरधउरधमधिकेवलमूल॥ आतमनिजफूले
बहुफूल॥ अजबबासकछुकहीनजाय॥ तहांमनसा
मालणिरहीलुभाय॥१॥ रिबसिसमेलापछिमघूरि॥
तहांनदीनवासैबहैपूरि॥ भरिभरिपीवैअगारसार॥
तहांबसुधामीजेअंषंडधार॥२॥ सकलबियापीसह
जभाय॥ मथुरायतिमहलांबसैहैंआइ॥ जनहरीदा
सतहांचरणलागि॥ जहांगोपिग्वालणीरमैंफागि॥४

सषी हो मांस बसंत बिराजै॥ गोपी ग्वाल घेरि गोकल में
बेणि मधुर धुनि बाजै॥ टेक॥ धांग स्वरति पांच नगर
थ्या॥ मन मोती मधि आया॥ निज सत के रलम मनि
धि प्रगटा हरि को हार बनाया॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
हं चलनो निरंभा ॥ एकांत हल नारी॥ जन हरी दास
आनंद निज नगरी॥ तहां मिले फाग मुरारी॥ ३॥ ध॥ ने
बैते नवं रिवागा निजिलाधो ताकी गति मबासले जो
वे॥ निरंजै डोरि निरति स्योलागी॥ मगन भयो रस पीवे
टेक॥ ब्रह्म फूल की बास स सत है॥ श्रमी महार सिलागा
रस रेवपीय मति वाला हुवा १॥ सुंनि मंडल की बाड़ी
बिलसे॥ सहजि सकल रसिलाधा॥ जन हरी दास हरि
जी का सेवग॥ जेम कै बधणि न बांधा २॥ प॥ मन मति
बाला सहज माय॥ जोग मूलगहि रह्या समाय॥ टेक॥ ब्रे
ह्म श्रगनि बरिषा अपार॥ निर्झरि पीवै श्रगरसार॥ गं
गजमन मधि बसंत राग॥ सेवरपं जा रैगहर बाग॥ १॥
बरस्त्र रथ फिस्या फाग॥ गांन ध्यांन स्यौ गिगानि लागि॥
प्रेम प्रीति का पक्र पहोथ्या॥ पांच सयी सब सौंज साथि
॥ हरि षसे गड षड ध्याटोया॥ याहागा तिजो णैसाधको
त्रिवेणी तटि ध्यांन धारि॥ प्रम जोति प्रगटे मुरारि॥ ३॥ स
कल बियापी राम राया॥ प्रम पुरिष्य गति लयी न जाया॥ जन
हरी दास श्रब गति श्रनंत॥ [illegible]
बसंत॥ धा॥ ६॥

तहांचलौसखीजहांरामराय रमनांमबिपिरहोन जाय टेक यकआलसकहालागोतौहि बातस बीआहकहौमोहि जनमअमोठिकचलोजाव नाकंतरवारिलेगोफिरिहूटिपात २ ऐकसहरमे बिबिधिराज हसतीपाइकबेमबाज कालबाण लेफिरतमोहि तहांबसोकवैनताहि २ पम उदारआनंदअछेहे सुततातमाततौवैनदेह जन हरिदासमनतहांलीन संमथबिछेहेमरेमीन २ १ तुमचलोसखीकरिबसंतराग जिसबनिबनिमे हरिरमतफाग टेक पांचसखीसबसोजहाथि मि लेलनचालीपीवसाथि तुमआगाधमेनक्योंजीव खेलिबसंतरंमरमोहपीव १ सोचकईमनिरहे रूतिबसतरंगरमोंहयीव १ ...चकईमनिरहे स्तिबसतरंगरमोहयीव पकपबासमे उदास औसेआत्मफूलीलेसुबास यकपबासमे रहीलुभाइ औसेबागबसोपीवरमकआइ २ जन हरीदासमनिअचितमगा औसालागापेमरंग पम हरिआगाधजनपीवतनाहि २ पयालाघटतनाहि हरिआगाधजनपीवतनाहि २ काहूओरकेकहेसईयांतुम जिनिहंमपेगोरकूढावो अबहमसोऔसेमनरायो अंतरिजोतिजगावो टेक तनसोंतनमनसोंमन मेला अंतरिअंतरिमेला अबरसकलसुखबिसन रिलागेतदमहलागतहौसेला १ नैननमेनैनबैन बैनमनमें संमफिसमफिसुखदीजे तुमहिबिनिपीव चातिगकौनाहौ तलफितलफितनछीजे २ तुम

...होछिगतदेर [illegible]

बिणिपीरनजांणेकोई॥ल्हसीबोरे [illegible]

सगुरसुरकीडारी॥बिरहनिनिरद [illegible]

पायेहोजागिलागि॥अबतोह [illegible]

हायेहो॥टेक॥मनहीसूमनमे [illegible]

निजघरिनैनसमायेहो॥ [illegible]

संनेहीआये॥आजमोमनि [illegible]

मनमेरा हरिलीया॥ [illegible]

हरीदासब्हांबास॥ [illegible]

किसुयगायेहो॥ [illegible]

रणजंमचोटविंदमरण॥ [illegible]

कागहरांगीस्सेमद [illegible]

जारणपारब्रह्म [illegible]

बासअरिश्वास निवारण [illegible]

॥हरिजनहरीदास [illegible]

[illegible]

तेरषिनिधिनिरखै॥ यासुमिअटकिञलटिनहीआवै
॥१॥ ज्यूंहूरिसुतअनलगिगनिकोंउलटै॥ ग्यांनप्रकास
पितापषजोवै॥ योंफिरिजीवसीवसंगिमेलै॥ जनमज
नमकाकलिबिषधोवै॥२॥ सलितागोडि·करेतबसा
री॥ संमदसेमाइसंमदिसंमहोवै॥ जनहरीदासयों।
अरसपरसमिलि॥ हरिजनहरिमैप्राणसमोवै॥३॥
साजिनिवाजिप्रमपदआपे॥ रामदयालअमरकरिथ
पेटेक॥ करताकरणसदासंगिजाके॥ चिंतवणिकं
कहांधोंताके॥२॥ करमकुगारबिथाहरिकाये॥ जनह
रीदासनरहरिनरजापे॥३॥ ॥६॥१८७॥ रागमारूलि
अबी॥ जगजागिनजोयारे॥ नरदेहीहरिनांमजायोंही
तनषोयारे॥टेक॥ स्वारथकासबकोसगा॥ बादलकी
छांहीरे॥ सुपनेकासुषछाडिदे॥ जागेक्योंनांहीरे॥
झूठसबसंसारका॥ साचाकरिलीयारे॥ मोहनदीमेब
हिगया॥ मायामदपीयारे॥२॥ मूरिषकोंसमझाइये॥ अ
वगुणकरिझूझेरे॥ आपाकीआंटीपडी॥ सतिसाचब
झूझेरे॥३॥ प्रेमसनेहीरांमजी॥ साचासबदाईरे॥ ज
हरीदासगोबिंदतजो॥ नरमोमतिनाइरे॥४॥ अ
हीराजनमनहारीरे॥ बारबारतोसूंकहों॥ तूयोंही
नबिचारीरे॥टेक॥ जागिजागिसोवैकहां॥ हरिस
णसाहीरे॥ अतिआसपूजेनही॥ तूकालरिबीजन
हीरे॥१॥ तूधनताजेसैनजो॥ जमकीमिटैनत्रासम
रीपेआपकों॥ अधआपनेपास॥२॥ जोआगपातोसे

जोसूताजोजागि॥जनमअमोलिकजातहै॥तूंत्र
ओरेमिलाणि॥आस्तरनरघरपावैनही॥पंडितलहै
जोण॥जहांआयोतहांआंतरो॥अजरावरकीआंण
धा॥रंमनजनसुखपहरै मायातहांमनजाय॥जाघ
टिसुबाधिनसंचरै॥मोहरत्यालपटाय॥५॥ तातमातत
धुसया॥सुतबनितासबलोइ॥सबकोस्वारथकामा
घटछूटंसमानकोइ॥६॥भ्रमसंनेहीरामहै॥अवरसमा
दिनिचारि॥जनहरीदासछूजातत्या॥तजिलीया॥रामसं
नारि॥७॥ २॥बेलीलैततबेलीलो॥ काटीबेलिबधेली॥
लो॥टेक॥मंदस्वरदीकसमिकरिराष्या॥ सासरबदसौं
तायालो॥गंगामूलतहांसरवलैटे॥बेलितकोरससाया
गो॥१॥निजनिरसंध॥आगहिअनिअंतरि॥ नरणबिब
रजितबाणीलो॥इलापिंगलासुखमनिमेला॥तासुषिबे
लिसमाणीलो॥२॥तेरवअगमअणीतहांलागी॥बेलि
कीयाबिसतारालो॥काटीबेलिअमरफललागा॥बि
(णिकाटीफलषारालो॥३॥बासाबिकटकोईपाननथ
डै॥मिरघबसैतामांहीलो॥पाइकपांचपहरवारारवा
तदैअसतदोउनांहीलो॥४॥गगनिमंडलमैबेलिबिलं
ली॥मूलमंतामैआयालो॥जनहरीदासआसकेअं
रि॥सतगुरिसाचबतायालो॥५॥ ३॥जीवड़ाजनम
रायोरे॥सोवतसोवतसोइगयो॥तूंनींदनधायोरे॥
का जनमअमोलिकजातहैं॥विसयारसमांहिरे
हीसोपांसोंजुरा॥जारैकौनांहीरे॥१

इनमैतेराकोनही तूलेबि
रीया अपणांकरिलीयारे जांणें सोजागेरे अ
पीयारे २ सूंतांसरबसजातहे मनलागेरे ३ धरेणि
हरीदासअत्रांमेते हरिसों हरिबिनिकछुनसुह
इदिनजाय सषीकैंक्याकरूं जलबिणिमीनकहोक्यांजी
न बिछोहैमेडरो टेक हरिबिणिझुपयाय
ते जाकेजीवणिपांणी अैसेहमहरिबिरहतन
तलफतरेणिबिहांणी १ पीवपीवकरतबिरहहरि
जास्यो चात्रिगघणकोटेरे योंममप्रांणइसितहरि
सुमबिणि मनसामाहिगहैरे २ जनकेजीवणिगेवि
णहरिकीजे बिलमकहांलुमआवो रमतारामस
कलबिसआपी होहरिदरसदिषावो ३ याहव
डबिथ्यारामसलजांणें बिरहबसेतनमांही जनह
रीदासहरिमहलिपधारो कैअबजीवणिनांही ध
प सेकसनेहीआवआवोहोदेवनरहरी टेक सुरतिसंबा
नईमनमांहिक्योंहोपीवप्रहरी चढीतलफित
हिमांघनितिहेरो चितवेर कवि अ
लफितनजाइ सुरकीसेप
मनिजअैती बलाचोः
पंथहेरोंह णप्रबि
णिबिरहड री
हाकरी २
डारिगयो
का मोहि

नाआगैरे॥४॥प्रेमसेनेहीप्रीतमां॥प्रांननतेप्यारेरे।
महलियधारीमाधवे॥मारासरिसारारे॥२॥बिरहनि
केरसएकल॥हूंजासबज्यालारे॥हरीदासजनवीन
वें॥गिरहेआवोबालारे॥३॥७॥रामरसपीयारे॥आ
कचनीसुधिबिसरी॥सिरिसांटाकीयारे॥टेक॥आं
॥पयालाप्रेमका॥सहजिपीयाधरिध्यान॥इतनवतचि
तवंणिमिटिगई॥अबबिबुडणमरणसमान॥१॥जि
निपीयासोजांणिहै॥आवरनजांणेकौय॥२॥मियारस
मेमिलिरह्या॥अबटलेनहूंजाहोइ॥२॥कह्वाकंरीअ
मनहरिलीयोचुराइ॥३॥८॥पीवमतिवालारेमें
अमतिवालारे॥सुरतिसमांणीसाचमें॥पीयाआराम
पयालारे॥टेक॥गोलीचाटीग्यानकी॥ममिताकसदाया
रे॥कांमक्रोधबालणिकस्या॥रामहीगुडकीयारे॥१॥गि
गनिमंडलमाठीचिवो॥अवेवकधारारे॥माचसर्यासनमु
षिसदा॥सरपांवणहारारे॥२॥रामरसायाणरातिहै॥
सांधाकौंसावेथ॥जोपीवेसोईलहै॥बकिमाहियमाव
राइ॥पेमपीयातबआंणिये॥मनमैमननावेरे॥जनह
रीदासआछेमते॥कुछआननभावेरे॥[illegible]
ह्को॥गोबिंदोज्योजाणैत्योगाय॥मनमअमाचिकेजो-
तहै॥दहहरिस्योहेतलगाय॥टेक॥अलखनिरंजनदेवहि
बसे॥रामनांमनिजतेथ॥रांमबिसास्योहोतहै॥सह
कधकाभेद॥१॥हरिसिसमिलेन
सीप्रीतिनहोइ॥करमकाट

या॥ अपणां करि लीयां रे॥ इन मैं तेरा को नहीं॥ तूं लेवि
यारे॥२॥ सूतां सरबस जात है॥ जागै सो जागै रे॥ ग
हरीदास अब मैं तो॥ हरि स्यों मन लागो रे॥३॥ धरैणि
दिन जाय॥ सखी मैं क्या करूं॥ हरि बिनि कछु न सुहा
बिछो है मैं डरो॥ टेक॥ जल बिणि मीन कहो क्यों जी
जाके जीवणि पाणी॥ ऐसे हम हरि बिणि क्यूं पाय
लफै रैणि बिहांणी॥२॥ पीव पीव करत बिरह तन
जास्यो॥ चात्रिग घण कोटै रै॥ यों मम प्राण डसित हरि
छम बिणि॥ मनसा मारि गहै रै॥३॥ जन के सवणि गांवं
ण हरि कीजे॥ बिलम कहा तुम आवो॥ रमता राम स
कल बिस आपी॥ हो हरि दरस दिखावो॥२॥ या हव
ड बिथा राम सलजाणे॥ बिरह बसे तन मांहीं॥ जन ह
रदास हरि महलि पधारो॥ के अब जीवणि नांहीं॥ ध
प॥ सेक सनेही आव आवो हो देव नरहरी॥ बिकल
सेई मन मांहि क्यों हो पीव प्रहरी॥ टेक॥ सुरति संबा
हिमां घनि तिहरी॥ चित चेतनि चौकी चढी॥ तलफित
लफित न जाइ॥ सुर की सेपड़ी॥१॥ य क बिसवास आ
सनिज अंतरि॥ अबला चौबारे पड़ी॥ मस्तागि दे दे हाथ
पंथ हेरौं हरी॥२॥ जांण प्रबीण प्रम सुष दाता॥ बिरह
णि बिरह प्रजरी॥ जन हरीदास बलि जाय॥ बिलमव
हा करी॥३॥६॥ बालम बिरह बिवोगी रे॥ सुर की सेप
डारि गयो॥ जेम मांडण जोगी रे॥ टेक॥ सारा सुष संसा
का॥ मो हियारा लागो रे॥ तू मेरे जीवणि जीवकी॥ रहो

नाआगैरे॥७॥प्रेमसनेही जीवमो॥जांनने तेप्यारारे॥
महलियधारोमाधवे॥प्यारासरिसारारे॥२॥बिरहनि
केरसएकत॥ह्नजासबज्यालारे॥हरीदासजनबीन
वे गिरहेआवेबालारे॥३॥७॥रामरसपीयारे॥आ
कवदीसुधिबिसरी॥सिरिसोदाकीयारे॥टेक॥आं
मपयालापेमका॥सहजिपीयाधरिध्यान॥इतवततचि
तवृणिमिटिगई॥अबबिछुडणमरणसमान॥१॥जि
निपीयासोजांणिहै॥अवरनजाणेकोय॥रसियारस
मेंमिलिरह्या॥अबटलेनदूजाहोइ॥२॥कहाकरौऐ
सीमईपद्याचरीवेजाइ॥जनहरीदासमतिवालमें
मनहरिलीयोचुराइ॥३॥८॥पीवमतिवालारे॥मेपी
वमतिवालारे॥सुरतिसमाणीसाचमें॥पीयाआराम
पयालारे॥टेक॥गोलीचाटीग्यानकी॥ममिताकसदीया
रे॥कांमक्रोधबालणिबल्या॥रामहीगुडकीयारे॥१॥गि
गनिमडलभाठीचिगे॥अवेबकधारारे॥पाचसखीसनमु
खिसदा॥भरपांवणहारारे॥२॥रामरसायांणरीतिहै॥
सांधाकैंनावेय॥जोपीवेसोईछकै॥छकिमाहिसमावे
रा॥३॥पेमपीयातबजाणिये॥तनमेंमननावेरे॥जनह
रीदासआछेमतै॥कुंजानननावेरे॥४॥ [illegible]
टेक॥गोबिंदोज्योजाणैत्योगाय॥जनमअमोलिकजा-
तहै॥हरिस्योहेतलगाय॥टेक॥अलखनिरंजनउरि
बसै॥रामनामनिजसेव॥रामबिसास्यांहोतहै॥सह
केंधकाछेद॥१॥रिवसिसमिलेनमुकतिफल॥पति
सौंप्रीतिनहोइ॥करमकाटभुरचागइ॥दूजो.

तिप्रकासमरण॥आगमबारमपार॥जनहरीदाससोसुष
णियैनैना॥निरषिबारूंबार॥४॥३॥मनरेगोबिदागुण
गाइ॥अबकजनकतबजमिचलैगो॥कहतहौंसमझ
इटेका॥अटकिअरिहरिध्यांनधरिमना॥सुरतिहरि
सौंलाइ॥मंजसिजगवंतसरमसेजना॥संतकरणस
हाइ॥१॥तरलतिसांत्रिबिधिरसबसि॥मलतगातहां
वंद जाइजोबनजुरागायो॥जागिरेमतिमंद॥२॥मोह
मनरिपयाहमैतौ॥गाहरजनगुणदेहा॥जनहरीदास
आजिसकाल्हिनांही॥हरिभजनकरिलेहा॥३॥१॥जा
गौरेअबनीदनकीजे॥जनमदिनआवघटेतनछीजे
टेका॥बक्कतदिनातैंयक्कबकपाया॥सोतौकौडीसटा
माया॥हीराथायेंणिहाथिनआया॥१॥कामक्रौधमाया
मदिमांचा॥निसदिनकालनटैसेनाचा॥रामनजौहरि
संमरथदाता॥२॥पांनप्रकासनजारिमिलएही॥फरि
फेरनरहैयादेही जनहरीदासभजिरामसनेही॥
॥३॥४॥१८१॥राग बिहागडो॥रातदिवसजातसिराणी
रे॥पाव बिणितरसितलफतहै॥मीमछलीबिणिपांणी
रे॥टेका॥अंतरिचोटबिरहकीलागी॥नमसषचोटसे
मांणी॥बिकलभई अजक्कनआये॥हरिजाणतहैमे
जांणी॥१॥आणसनीरणप्रमसनेहदाता॥निरगुणनाह
बिनांणी॥प्रीतिबिचारिमिलोप्रभानंदा॥अबलानही
बिनांणी॥२॥कहो
रहतलुजांणी॥जनहरी
श्रीतिस्तुवजांणी॥

स्यों बोलिये पीव स्यों अनांहि अंतर खोलियेरे टेक

रैंनि सवाई बहि गाई तन मन बेधी योइ हूं बकु कवि लकु दरसणी सक तिसहां गन होइ १ पीव केपा तन बरता घणी तहां रहे मन लाइ कूं तरसूं बोले नही अकुं दुष कहां समाइ २ अबला को बल को नही प्रीतम रहे रिसाइ सदा संगाती रांम यां मो हि पेसप यां न्हा पाइ ३ अंतरजांमी तुम्ह बिनां दूजा कछू न सुहाइ जन हरीदास हरि बिणि मिल्यां जन्म अमोलिक जाइ ४ २।१८४ [illegible]

रांम संनेह्रा हरि बिणि दूजा अलप सनेह दूजा देषत जांहि लारे ज्यूं धूंवरि का मेह टेक तन धन जोबन नार है इ बध्या इस णन होइ चौरासी चौपड़ि मंडी ता मैं चोट न बचै कोइ १ कुटंब कलित परिवार मैं सकल रह्या उरझाय सब को स्वारथ का सगा अंति अकेलो जाय २ संमकि पड़ी सतगुर मिल्या पैंडा दीया बताइ जन हरीदास आनंद भया तासुष मैं रह्या समाइ ३।१ प्रीतम प्राणीयां रांम सनेही जोइ रांम सनेही बिणि जग्यां तोकूं कबहू न त्रिपति होइ टेक जिनि जल तैं पैंदा कीया सगली सौंज बनाइ सो सदा संगाती गोबिंदो कहा सो ताली लाइ १ ज्यों बादल मिलि बीछुड़े आप आपको जांहि दिन दस का मेला भया निहचै रहणां नांहि २ बकरि बकरि ता स्नेह नही मनिष जनम अवतार अब के नरहरि नाम ज्यों तौ तो कूं कास्न पार ३ चढि संति बूड़े बापड़ा सलिल मो ह्की

धारा॥जनहरीदासहरि गायो॥जिनें वनायर [illegible]

२७॥२॥ अवधूअंगमपयालापीञे ॥ [illegible]

रैतौजीजेअसरदेसोमाकोञोटेकां [illegible]

पांचरहतिरस्या ताररसम्यूमनलागा॥ [illegible]

रमणोहै ॥१॥ मनराहिपवेनमदमटयपगो॥ [illegible]

[illegible] ॥२॥ केडोरि॥करमिलागा॥ [illegible]

[illegible] ॥३॥ निगसतकवलप्रमननरमन [illegible]

[illegible] ॥ जनहरीदाससधकरमीनल्यालागा [illegible]

[illegible] ॥ बाँदेमसनेहरा [illegible]

[illegible] रूपयारसवयागा॥ [illegible]

तयीसरंगरहता [illegible]

हेतहोदेषै [illegible]

मनवेवा [illegible]

[illegible] बातांवाटि [illegible]

[illegible] सोवावहोर [illegible]

[illegible] विणजीविण [illegible]

[illegible] हरिनाउ [illegible]

टेक ॥ [illegible]

सनेही [illegible]

[illegible]

कमनिरोकैंतार पंथनिहारैंपीवकौं मिटियैसिरजन॰
हार १ बिरहणिबिरहबियोगणी दरसणकारणिपीव
बिकवसर्ग बिलबेकहो तालाबेलीजीव २ आगमग
वणगमकोनहो चितवैतैरेनिबिहाय सुधदिष्यावोगो
बिंदा जनहरीदासबाविजाइ ३ १५ बसतबिराणीरे
जीवडाहरिसणो हरिसुमरैक्यौंनांहि टेक नरपतिमोप
तिचरैषडा डालधजाफहिरांहि अवधिबदीतीसाकौ
नहीं उठिअकेलौरेजांहि १ हैवदलगैदलसंगीचलै सद
लजीवैरांहि मालमुलकओकाल्यौरहै अतिचलेक
रझाडि २ सिरछत्रसिंघासणबेसणां ऊंचाऊंचामह
लआवास यासुषिहरिसुमबिसर्यो तातैंतेरैजमपुरा
रवास ३ प्रेमसनेहीरांमआपणो जीवनिजगतआ
धार जनहरीदासहरिगाइले हरिसकलसुखांसिरसा
र ४ १६ रांतडीसबाईहोरांमजीबहिगई पलपलछी
जेगात करणांसुणिकरणांमई महलिपधारौहैनाथ ।
टेक सबमतिवालाहोरांमजीसबछक्या नीदडीनआवै
मोहि मेरीबेदनरांमजीजांणिहै कैजिसबेदनिहोइ १
युकतनअैसैहोरांमजीजातहै हेमबलकछुनबसाय ।
प्रेमसनेहीहोरांमजीतुम मिलो हरिसकलसंतवंणपति
राइ २ चरणांचोकीहोरांमजीचितधरुं आतमसेझसं
वारि नैंनलुनाणांहोरांमजीप्रीतिस्यो दरसोदेवमुरा
रि ३ जनहरीदासहोरांमजीयोंबीनवैं मेरानैंनषंडेहो
धार दरसदियाकोहोरांमजीआपणो हरिसमरथसिर
जनहार ४ १७ आरतीजगजीवनदेवा आतमआगरि

श्वा॥टेक॥चितवौ की हरिचरणां धरि हौं॥आ
सिंघासंण करि हौं॥१॥दीपग ग्यांन सबद रुजि
चौंपुहुप सुरति की माला॥२॥प्रीति प्रसिल्पो चं
प्रेम कलस ले कलस बदा कें॥३॥सों धों सा वणां
गरी॥बहु बिधि चरचों देवम्रुरारी॥४॥निरमल
रकरि जनके॥पि गनि मंडल मैं जाल रिफुण के॥५
दास नयाम नमंजन॥आतम आरती करें हो नि
.... .जं॥१८॥पद॥२०७॥दयाल जी का पद संपूर
ण॥ श्री दयाल जी सा:नां॥दयान जी हरीदास जी का
कड घा लिष्यते॥राग सारंग॥बासुर जा है निस आइ॥
पकंती॥निह रोर हो निरदावें॥हरि जन जि सें ण बें ण सुणा
बक तां बलेनय कबक आवे॥टेक॥न जिति ण रूप थि जै
कोई मड चरा प्रहरि बिषै सगा॥धो घट कूटां डब सहिसी
फीटा॥रांम सुमरि सुष राई॥गोरे रिण मोड फिरे कांई रू
गे॥रूपां कैसें रंगरहिसी॥अब कोइ कर जन आपे का ल्हा
वले जय कडु षदहिसी॥२॥आईसा सबरचि मां घोटा:के
ण कंण कोई छिडा वे॥पांच पचीस प्रांण मन स न सा॥देले
कोइ न घरि आवे॥३॥सील संतोष सति दया स नूरी॥ह णि
औ सरिं मको जै॥जन हरी दास सति मनसा बाचा रसा
नां रांम रटी जै॥४॥१॥राम सी धू॥प्यारा बड रा जम नसा
हसा चे मते॥सुमरि हरि निडर निज नां व पाया॥आसिष
ण ग्या हम जि रांम जरणां जडी॥सो इं मांया सि है काल का
या॥टेक॥गाइ गोपाल त्रिपाल करणां म ई अ

ऐसी भेद अनेदी लहै मकोन ॥ ११ ॥ सोवंत सूदड़ सरस
तिसनमुषि रामतणां उहिणाणं ॥ आवघमारटीपसिरि
सुमिरण कोकड़ि आइमंडाणं ॥ टेक ॥ पेलीफौजघटाघ
णघरदर अरि आवैर नलहै डा ॥ साधमला रामसजितंजै
विकविकि टिकैंजघोड़ा ॥ १ ॥ पांचपचीसमोहदलमाया
कांमक्रोधदलषूरा ॥ सह कै सेलषडायड़ि मसतां बाजै
अनहदतूरा ॥ २ ॥ सुरजिनां लिगोला सरबूटैं कंमधजयाडैं
थाणं ॥ आगिषिवैं नैंसो अभेदोरामणं ॥ कायरकटकउडाणं
॥ ३ ॥ मनगाहिपवनपलटिपहिराचै ॥ आवाअमलचढेडै
जनहरीदासमानिमसिताततजि योमेवासातोडै ॥ ४ ॥ १२
गोरषनाथ वडे म्हारी गति मति ॥ कोई सुरनरमुनिनहीजा
णै ॥ जाणै सिधसाधिकै कै अलष निरंजन ॥ गोरषसबदिसुध
रस माणै ॥ टेक ॥ जी सा करंमजरंम करि कानैं ॥ गिगनि चढ्यौ
रसपीवै ॥ जा मांही मिलि कांटो डालै ॥ सो सिरस्ता सति जीवै ॥ १ ॥
जोणैं जोग भोग नहीं जाणै ॥ नाथ दूसौ बिधिषेलै ॥ जनहरी
दासगोरषसतिसनमुषि ॥ अमीमहारसझेलै ॥ २ ॥ १३ ॥ क
डु साषी संपूरण ॥ श्री रामजी के सा ॥ श्री गुरु गोविंद सा ॥ श्री कि
रतनाथ जी ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
गोरषनाथ जी [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ग्यांन ध्यांन अबोह अजाप अवत
अतनि मांई न बाप जगदीस अरास निकंप निधात ॥ १ ॥

कंठौजकठौजबिसेसरलाल॥१॥अमरीदअयार अहेतअ
नाथ॥अइयअसुयनिरंजननाथ॥२॥अहमेवनंदवअसे
वअदेव॥अबानअघानअस्पमअपेव॥३॥निरेतनि
साजनिहचौमनिहसोम. निहकामनिजामनिरजमनिरलो
म॥४॥निरमूलनिस्तूलनिरसधनिरबध॥अजीनअतोलअ
बेधअकंध॥५॥निबोहनिदोहनिमोहनिमास॥निईक
निसंकनिडंकनिरबास। निरकनिटकनिरबटान
तास॥अनंतसनंतअसेकास ॥६॥अमानअथानअक
तिअबान॥अचिंतअनंतअथितिअघार निदायनिया
यअरेहअघार॥गोपालगवालअमितअपार [illegible] दयाल
अकालअजालबिराट॥असालअपाल [illegible] निराट
मालूममालूमलतीफगुजार दकीमफहीममलार गबार
॥११॥बेचगूंनिबेचूंनिलहगकरीम [illegible] बयुत
रहीम॥१२॥बेसबहूबेनिबदबेनिगहबेतान वानमान
बेहूनियांनालपराब ॥ रबकुहअ [illegible] मइलान।
नांपेदनांकेदपुदिनअवान [illegible]
मार॥यालिकमालिकअयाहअपार [illegible]
रिसदहयाति॥ओजूदजद्दनजांवनजाति [illegible]
रिसनजेरखमांन॥मिरजनहारबिरधिनआर [illegible]
मालूमसबेमुलितांन।मालिकमांनिद [illegible]
जाहिरमाहिरसदइंयबसार [illegible]
मार॥१०॥अबदिमारनिरविका [illegible]
हिवकूंनानेंफनीव॥२०॥रागि

जोत अमान अखंडित नूर ॥३१॥ रजा न सजा ततो सन-
त्रास ॥ हवहारि न जोति अस्वास न नास ॥३२॥ बे रजां न बे-
रां न हैरां न मुकाम ॥ कलाम न तांम न सोठ न धांम ॥३३॥
उदार अपार अजार अरूप ॥ अयार अलार असार अधूप
॥३४॥ अनूप अदेह अघर अडर ॥ अखिर अपतिर अछेह
अमर ॥३५॥ अरेख अदेख अभेख निजोग ॥ अलेख अराक
अधी जिन सोग ॥३६॥ अबीज अनाथ अबाध निरोग ॥ अ-
लेख अजथ अजन्म अलोग ॥३७॥ अदृष्ट अरूप अपथ अचेष अबो-
ट अमूल अमाल अडोल अचोट ॥३८॥ अनंग अरंग असा-
ध असंग ॥ अजेर अजोर अफेर अजंग ॥३९॥ असोर अको-
र अमिल अमोट ॥ हरि न टसंनेटि अनंत अथोट ॥४०॥
असोच अपोच अतोल गंभीर ॥ अबाध न सिध धरा धरधी-
र ॥४१॥ असोस अदोख अलिप अगाध ॥ तो हिवार न पार न
अचेर असाध ॥४२॥ अहीन अदीन अनूप अयांन ॥ बिसं-
भर नाथ अनाथ सु दांन ॥४३॥ अहर अपर अचर निधाह
अमर अधर अजर अथाह ॥४४॥ अचड अपड सु रिपन-
नारि ॥ अकर अमार अधार बिचारि ॥४५॥ अपेर अनेर
नवेर निवेड ॥ नितोज नितोज रचयो ब्रहंड ॥४६॥ सरब-
गास महि बयंम बिथार ॥ जहां सरब ठांम सु करता दरबार ॥
४७॥ दलाम्बं बटेज न बाद ॥ अकास न बास ज्रुरान हिता-
हि ॥४८॥ अबीहड अजड अपड अघट ॥ अघड अनड अ-
नड अजट ॥४९॥ बिनां ण सवांण बयनां वनैं नेह ॥ अगि-
णत निहार सबाह अछेह ॥५०॥ अकाज न राज अगाबि

वॉरि॥गहरगनीरमे [illegible] माजअ
गहअमद॥अमलि [illegible]
नवाजममदनगाज [illegible]
[illegible] नयाननतूतअ [illegible] पिता
नहीहुत॥ मठमीनि [illegible]
दीहनकौधनहेत [illegible]
हतिकहतिजनमनउ [illegible]
त॥अगिरअतिरअम [illegible]
रूपनरूप॥रमराजन [illegible]
कतेबनरोजनरागन [illegible]
[illegible]॥निगमअगमत्रि [illegible]
तपकास॥ [illegible] ॥सुमअ [illegible]
रनचोटअजिगअजो [illegible]
नीच॥तनतेजनतापी [illegible]
अविपअनेव॥निरउ [illegible]
धनिरधारअरपन [illegible]
॥अनूपअरूपअ [illegible]
गनलाज॥ [illegible] ॥ततन [illegible]
जीवरगतनरेत [illegible]
धिअगाधदहअरदोस [illegible]
अपारविचारअधा [illegible]
तअनत॥गिणता॥पानजकोइ माधजागिणसुमिहुर [illegible]
मनिआलबनहोइ [illegible] ॥लेह [illegible]

मांगों चित घुनिमांही धनपाईये रांमसरीषा चित हजन
अनन्हीदासत्रैबगतित्रांम रहैसकलतें हरि सतगु
रुमिलैतौषांपमसपाईये हरिजनदासनहांमरष्पी
सरनरमुनिहिरापालदनि
रमसिधथिरिनांहि येकसकतिकीपलकमेंकितनो
आवेंजांहि १ अलमपलकलोगवहौ हरिसकबसकुंन
पतिराई अंणहूवासोरहेगा जोहूवासोजाइ २ पारब्रह्म
सूंप्रीतिप्रमनिजभेदविचारे पांनपडुगालेहाथि आंन
अनरषत्रैरमोरे साजिनिवाजिनिरनेकरण हरिह
रनरसबकाईसनाथनिरंजनसब्रबहरण जहांतहां
जगदीस उपजिनबिनसेएकरसि हाजरिनहांहजरि
पूरणब्रह्मआकासज्यो जहांतहांभरपूरि दक्क्षीका
टीकटनहें अगनिनकाटीजाइ अगविज्योप्रेमप
२ जहांतहांसेमिलाइ फूलबासतिलमेंकरी तिलकौ
तेलफुलेल हरिजनहीअैसेंमिल्या अरसपरसबहुमेल
वारपारमविनोहि रांमजिनेंदबताया जहांतहां
पलगाईज्योंआगेगाया नावांहरणसिरबांण तातिकौ
हेबिरलाजांणें धांगेलागाजाइ आपकौआपपिछांणें ऐ
हरिआविहरूसूपर निकटिनिअबसतनहुसे फवतेरे
जाहहूतै फिरैतोपारसपरसे निरसेसेतिरदंद ओरत
हीजेरतअरणां नांदबिंदनहींजांवे जनमनहीअवधि
नमरणां निराकारविहवबत्रैचल अजरातरणत्र
तत प्रसांपनपांनदे हरिहुपहिलापावेसंत दरहर

अगंम अरूति॥ बीज अंकूर नहीं आया॥ पंचतत महीं पै
या॥ फूल फल डाल न आया॥१४॥ निरालंब निरलेप॥ निहरनि
रंतै निहकांमी॥ निरामूल निहकरंम॥ सुतौ हरि अंतरजा
मी॥१४॥ अलख बिचार अपार अजीत॥ अखिलै गैन नरहरि॥
अमिल अथिर थिर सुथिर॥ गया न जनां सो पर हरि॥१५॥
प्रगट प्रमगति प्रमपति॥ प्रमनाथ प्रपोष॥ प्रमसनेही प्रम
सुष॥ अलह है आगे है निरदोष॥१६॥ अथिर अपरबेहदि सुथि
र॥ अजर अमर निज नाथ॥ अधर सुधर भी कामधुक॥ चिंता
हरणं न कोइ हाथ॥१७॥ अचल अमल अनहित अटल॥ अ
कल सकल बसि जोव॥ ऐसे बकरि सब तें अगम॥ अकहि अ
करता नाव॥१८॥ अधर गहर बिसन रअकर॥ तन धन सुत
बनिता नहीं प्रीति॥ न जिह कलम एक अनेक गत॥ रजात
हारस रीति॥१९॥ अलेपि अछिप जहां तहां छिप्या॥ काया पई
न कोह॥ सकलन वेण पतिस तिसदा॥ निरमोह निरदोह
॥२०॥ अहित अमंत अबगति अजत॥ अनंत अनंत मुरारि॥
चिंता नेह अरि चित अरत॥ चित मांहीं चितधारी॥२१॥ रस नो
गजो गीत हीं॥ निरादेह निरबास॥ बरण निबरजत कहि अ
कहि॥ उदरें स्वर नहीं सास॥२२॥ अघट सनट नहीं करम पर
भरंमन को ईनेष॥ घट घटि घट्या न अब घटे॥ आपर पार अले
ष॥ आप्राण नाथ अकरण॥ लैं अन धरणी धर॥ हरिहरि रंग ग
नों मंगो मंद न जौ॥ प्रपंच पर परहरि॥२३॥ मूल मंत्र सत सु
रदीया॥ इष सुम दोय कसा आप॥ आवय हेरकी गनमनी
अंतरि अजपा जाप॥२४॥ पान थान युक्त दांन॥ नो वनमा

निस्तंलीजे ॥ ग्रनकोड़िगोबिंदनजो ॥ नजिदेमिरतरसपी
जे ॥ ख्धा ॥ नावंध स्तोमेंदस्रं ॥ बकड़ि-मजनतहांनांव ॥ ज
नहरीदासकीबीनती ॥ बापरामबलिजांव ॥ २७ ॥ बेकाम
तिकीमतिकहो ॥ नजिनगावंतपषठजिदेस ॥ जनहरी
दासहरिसुमिरतां ॥ कोटालगेनकोइ ॥ २८ ॥ २ ॥ ग्रंथ
नांवमाला लिख्यते ॥ नजिकरणनिधिकरतार ॥ करमसे
नरमनिवारण ॥ समरथसिरजनहार ॥ बिबिधजमका
फंदजारण ॥ १ ॥ केसोरमतारांम ॥ हाथजनकेसिरिधारण
नारांइणगोपाल ॥ संतराषणरिपमारण ॥ २ ॥ प्रमसंनेही
नाथ ॥ त्रिबिधिगुणगाहरगदारण ॥ अबिनासीहरित्र
थिल ॥ करणनिरबिषेनोबिषउषदारण ॥ ३ ॥ इनकाक
रोषहार ॥ रघुनाथनिजस्वामिउधारण ॥ गोबलकरिगो
बिंद ॥ चिंताअरिबिरसग्यारण ॥ ४ ॥ अपरंपारअपार
पारसैसिंधउतारण ॥ तमनरहरिनिरंबस ॥ बंसतोहि
साधसुषकारण ॥ ५ ॥ निरसंसेसपीति ॥ ताछिसंसाकौ
गोसे ॥ जहांअजपातहांबेसि ॥ बातअपंनेअमायेदि
नटनिस्नैनिरनेष ॥ अराकहरिरीकेनाहो ॥ निरमलनि
हेअसिअंतरमांही ॥ ६ ॥ अमरीतपरप
॥ परमनिधिआपणस्वामी ॥ जराकालसेहरण ॥ कर
निरसैनिजनांमी ॥ ७ ॥ परमपुरिषप्रकास ॥ नहैकोईगुर
॥
॥ ८ ॥ परमतेजपरजोति ॥ परमउषसंजनसोई ॥ परमसरूनिपु
देव ॥ जीवजामिसुमिरैनहिलोई ॥ ९ ॥ परमग्यानपरधांन ॥

हरिपरमसुखसाचकतोठ परमजोगपरमोग हरिपरमा
निलेपकचावे ॥ निरालंबनिर्लप अचलचरणान्दिरथा
र हरिविरगुणनिरवेद गरनस्तिलोनेपार ॥ अकरअ
भेदअछेद विरूपविरंस घरपाया निराकार निरव
प्राणमनतहमपाया ॥ अवगतिअगमअलख रविदा
मैविरलापरेवे अजोनीअस्थिर अचनअतिअतीरहरोन
॥७॥ अदिदअखिलअहट अचारनिरमोहमस्यार ॥
ननिरधारनिकुलनिरपखनिजसार ॥ परमतत्व
दासकलजुगमंडणजोयो पारब्रह्मदरिअयिल
रसनांनहिनायो ॥ अधरअजरअमिनाउ जीवमवनंत
थलिपोषे अकलिहिनिरंजन माधवासिवमनिवे
॥९॥ अहकथईमनअरैक निगमनिरंजनमुक्यमार अक
भअरतअलोकअविकारपरमिरनधार ॥ नक्ंमकान
अरि॥ हरि तेईहिकहिके नग निरतंतरनिरमिथ ग्राम
हापंथमिरा ॥ अमरपदविरकमद सकनेमसांच
काया॥ जनहरीदासमदविअवट आपिगुरुगमेनपाया ॥
॥८०॥ जहहरिरायेअमरजो हरिपरवेवनदानाव नर
रीदासकीनितनंदनंदनदकोहादेरिनाव ॥
[illegible]
॥नावनिरूपण ॥ ॥ रामनिकेत मनहरदासमनाव
सेसो सबदहिरंदेर ॥ परमारथपूरणगुरु कोरनद
ननलाइ गरव ॥ ओंविनतजो ममभयमोमिकनाउ
॥ सबपुरुषनिजैनपांइव हरिपरममंनदानाम वहादि
वेदेहिजातिनहु जोअधमरनाम ३ ॥ मवाणमिरनमेवा

निसतरीजे। धनबाडि गोबिंद जी। भजि हे मिरतरस पी
जे। रघौ नांव धरतोमें दस बकड़ि भजन तहां नांव। ज
न हरीदास की बीनती। बाप रांम बलि जांव॥२७॥ बेकी
ति की भक्ति कहो। भजि भगवंत पषत जि दोस। जन हरी
दास हरि सुमिरतां। को टालै गौ न कोई॥२८॥३॥ अथ
नांव माला लिष्यते॥ भजि करण निधि करतार। करम
करम निवारण। समरथ सिरजनहार॥
फंदजारण॥१॥ केसो रांम तारांम। दास जन केसिरिधार
नारांइण गोपाल। संतरा षणरिपमारण॥२॥
नाथ॥ त्रिबिधि गुण गाहर गुचारण। अबिनासी हरि त्रि
षिला करण निरबिषे नो बिषअ ऊषदारण॥३॥
रोषहारा रघुनाथ निज आमिऊ घारण। गोबलक
बिंद। चिंता अरि बिरस अपारण॥४॥ अप
पारसै सिंधअतारण। दमन रहरि निरबेस। बेस
साधसुषकारण॥५॥ निरसंसे सषीति। ता
ग्रासे। जहां अजपा तहां बेसि। बात अपां नेअसा से
नट निरसै निरजेष। अराज हरिरीके नांही। निरमल
हजूरि। अगाह अगिअंतर मांही॥७॥ अमरीतप
परमनिधि आप णस्वामी। जराकाल ने हरण
नांमी॥८॥ परम पुरिष प्रकास। सहै कोई
सोय ब्रह्म सचांराचर। सकल बिस ब्यापीय
परम तेज न पर जोति। प्रमक्षम संजन सोई। परम स
जीव जागि सुमिरै न हि लोई॥१०॥ परम ग्यान परधं

हरिपरमसुखसाचबतावै परमजोगपरजोग हरिनृप्र:
तिलेपकचोवै॥१३॥निरालवनिरलेप अचलचरणचिंतधा
रे॥हरिविरगुणनिरछेद वारनहिलोनेपार अकलअ
भेदअछेद निरूपनिरसेघरपाया निराकारनिरवाण
प्राणमनतहांसमाया ॥अवगतिअगमअलेख नाहिंको
ईविरलाप्रखे॥अजोनीअस्थिर॥अचितअनितअतीरिदरसे
॥१५॥अदिष्टअमिरअरूप अथाहनिरमोहमन्यारं निरालं
बनिरधार निकुलनिरपखनिजसार परमततपरसे
द॥सकलजुगमंडणजोगी पारब्रह्महरिअखिल रमयो
रमनांनहिंनोगी॥१६॥अधरअजरसमिसाइ जीवसबजनि
पलिपोखै॥अकहिनिरंजनदेव साधसुमिरमनिचोखै
॥१७॥ अहलअवीजअनेक निरासनिरंनसुखसार अकर
मअरतअलोक॥वरियारसइमिरतधार॥ एकमेकसर
भ्रि॥हरितोहिकहीकनेरा निजततवरनिरसिंध प्राणत
हांपर्योमिरा॥१८॥अखंडखंडविरहमंड सकलमेसाचलु
काया॥जनहरीदासहरिअघट आधिगुरगमसेपाया।
॥२०॥जहांहरिरायेतहांमेरहो हरिपगलेतहांजाव॥ह
रीदासकीवीनती हरिनहीछाडोहरिनाव॥२१॥इतीश्री
मालाजोगग्रंथसंपूर्ण॥ [illegible] पृथालिख
॥नावनिरूपपरमसुख जोणविरलाकोइ जनहरीदासत
मैजोतवहीआनंदहोइ पराप्रेपूरणब्रह्म
मनलाइ गरवछाडिगोविंदसजो जनमअमोलिक
॥१॥सतगुरुमिलेतोपाईये हरिपरमसनेहीतान ब
हौडि लागैनहीं॥योओसरयाघात॥२॥ नेछाडोनिरसे

निसूंलीजे ॥ अनवाडि गोबिंदनजो ॥ भजिहै मिरतरसपी
जे ॥ २६ ॥ नाव्रंध सूतौ मैंहसूं ॥ बकडि भजन तहां नांव ॥ ज
नहरीदास की बीनती ॥ बापरांम बक्सि जांव ॥ २७ ॥ बेकीम
सि की भक्ति कहो ॥ भजि भगवंत पषठजि दोस ॥ जनहरी
दास हरि सुमिरतां ॥ कोटा लगै न कोई ॥ २८ ॥ ॥ ३ ॥ अथ
नांव माला लिख्यंते ॥ भजि करण निधि करतार ॥ करमते
नरंम निवारण ॥ समरथ सिरजनहार ॥ बिबिधि जंम का
फंदजारण ॥ १ ॥ केसो रंम तारंम ॥ हाथ जन के सिरि धारण
नारांइण गोपाल ॥ संत रावण रिपमारण ॥ २ ॥ भ्रम संनेही
नाथ ॥ त्रिबिधि गुणगाह रगुदारण ॥ अबिनासी हरि अ
षिल ॥ करण निरबिष नौबिधगुषदारण ॥ ३ ॥ दूनकाक
रैषहार ॥ रघुनाथ निज आमि उधारण ॥ गोबलकरि गो
बिंद ॥ चिंता अरि बिरयम्यारण ॥ ४ ॥ अपरंपार अपार
पारसै सिंधउतारण ॥ दमनरहरि निरबंस ॥ बंसतो हि
साधसुषकारण ॥ ५ ॥ निरसंसै सूंप्रीति ॥ ताछिसंसा कैसे
गासे ॥ जहां अजपा तहां बैसि ॥ बात अपंनै अस्मासे ॥ ६ ॥
निरनेष ॥ अराजहरि रीकै नांही ॥ निरमल नि
र आगाह अग्नि अंतर मांही ॥ ७ ॥ अमरांत परप
॥ परमनिधि आपण स्वामी ॥ ज्वरा काल से हरण ॥ कर
स्तै निज नामी ॥ ८ ॥ परम पुरिष प्रकास ॥ सदैहै को ईसुर
सूरा ॥ सोयं ब्रह्म सचांरा चर ॥ सकल बिस ब्यापी पूरा ॥
९ ॥ परमतेज परजोति ॥ परमपष संजन सो है ॥ परम सूं निपु
देव ॥ जीव जाणि सुमिरै न हिलोई ॥ १० ॥ परम ग्यान परधान ॥

हरिपरमसुखसाचबतावै॥परमजोगपरजोग॥हरिप्रभाग
तिलिपकंचोवे॥११॥निरालंबनिरलेप॥अचलचरणंन्धितधा
रं॥हरिविरंगुणनिरबेद॥वारनहिलोनेपार॥१२॥अकलअ
भेदअछेद॥निरूपनिरसेघरपाया॥निराकारनिरबांण॥
प्राणमनतहांसमाया॥१३॥अवगतिअगमअलेख॥ताहिको
ईबिरलापेखे॥अजोनीअस्थिर॥अचिंतअतिअंतरिदरसे
॥१४॥अदिष्टअमिरअरूप॥अथाहनिरमोहसम्पारं॥निराम्
लनिरधार॥निकुलनिरपखनिजसारं॥१५॥परंमततपरले
द॥सकलजुगमंडणजोगी॥पारब्रह्महरिअखिल॥रसवेस
रसनांनहिंजोगी॥१६॥अधरअजरसमिसाइ॥जीवसबनालि
पलिपोखे॥अकहिनिरंजनदेव॥साधसुमिरैमनिचोखे॥
१७॥अहतअबीजअनेक॥निरासनिरनेसुखसारं॥अकर
मअरतअलेक॥बरिसारसइमिरतधारं॥१८॥एकमेकतत
पूरि॥हरितोहिकहोंकनेरा॥निजतंतरनिरसिंध॥प्राणत
होपंथमिरा॥१९॥अखंडखंडबिरहमंड॥सकलमैंसाचलु
कायां॥जनहरीदासहरिअघट॥आदिगुरगमतैंपायां॥
॥२०॥जहांहरिरापैतहांमेरहौं॥हरियगवैतहांजांव॥जनह
रीदासकीबीनती॥हरिनहीछाडोहरिनांव॥२१॥इतीनावं
मालाजोगग्रथंसंपूरण॥॥अथनावंनिरूपनजोगग्रंथलिख्यते
॥नांवनिरूपपरमसुख॥जांणैबिरलाकोइ॥जनहरीदासतांहूं
मिलै॥तबहीआनंदहोइ॥१॥परापरैसूरणब्रह्म॥फेरितहां
मनलाइ॥गरबछाडिगोबिंदतजै॥जनमअमोलिकजाइ॥
२॥सतगुरमिलैतोपाइये॥हरिपरमसनेहीनाथ॥बहौ
बहौडिलाभैनही॥खोओसरयाघात॥३॥मैछाडोनिरमैजो

सणारहतगोपाल॥ अगमगोइ आनंदसदा॥ सुराजनमन
हीकाल॥३॥ ओंकारंनकामूलहै॥ हरिअबगतिअपरंपार॥
सुखसागरसमरथधणी॥ सबकासिरजनहार॥४॥ निर
भैपदनरककरिचटा॥ मनिअजनमनलदेह॥ निराकार
निसदिनजो॥ हरिअगिणंतअनंतअछेह॥६॥ मनिषज
नमयरचोरथे॥ हरिबिणिदूजीबोर॥ सासउसासांनांव
लै॥ नरहोरिसकैतौहोरि॥७॥ जागिजीवसोवैकहा॥ अथ
ममोहतजिमांण॥ साधसुलकतहांबासकरि॥ जमलेस
केनहांण॥८॥ जगतिकरैजगावंतको॥ मनदीन्हांसिधिहे
दू॥ मनखिणिदीन्हांमनलडू॥ यायांनधायाकोइ॥९॥ पाप
पुनिवेन्यांबिरथ॥ तहांकरैमनयांन॥ मनपेहोस्यांतरव
रतजे॥ तोपावैभगवांन॥१०॥ नरमकाडिनिरसैमतै॥ निरसै
बसतबिचारि॥ नरअथिरकरिबांणधरि॥ मोहमहारिपु
मारि॥११॥ करिधारणकेसोभजो॥ समकिनकीजेसोच॥ आयु
कूअवसरचलिजाइगा॥ बकडिनलोत्तेयोच॥१२॥ यांमंत
जोबिसयांतजो॥ घरमांहीघरएक॥ नाघरसूंलागारहौ
छाडौबारअनेक॥१३॥ हरिसुमिरणहिरदैधरौ॥ बियान
कूंचेबीर॥ कायरटलिकानैचल्यो॥ लम्पानसुषकीसीर
॥१४॥ परमसुरिषतेरियजजो॥ लत्तानलागैलोइ॥ अवधिघ
टैप्रासेसुरा॥ हरिभजताहोइसहोइ॥१५॥ नांवबिसंभरना
थजी॥ लखचौरासीप्रतिपाल॥ सबकाफिकीकरतहै॥ ता
तेरांमदयाल॥१६॥ मनसजनतौस्योंकहै॥ मानौंसाचहदै
सा॥ कालजाललागैनही॥ सुमिरताजगदीस॥१७॥ कंचनी
चनिरसैमतै॥ कोईसजोमुरारि॥ भवसागरतिरिबौकवि

ना॥हरिनांवग्रतारैपारि॥१८॥सुधरतैंबाजीरची॥बाजीमांहे
कलांम॥षटदूसणमोजतफिरै॥पयाषेषीबिसरांम॥१९॥
कालहरणकरताएहरिसा॥सुमिरतांगुणपेहा॥चितमांहि
बितलेरहो॥ज्योंषकेंडिनधरियेदेहा॥२०॥बनमालीसजत
नलो॥घटकछुराजेमतो॥हिमैंनहीछाडोंरांमको॥रांमन
छाडैमोहि॥२१॥बातहाथिरघुनाथके॥सदासाधकैसाथि
पैलेआगिछाडैनही॥जाकोयकडेहाथि॥२२॥नारायणका
नांवकी॥मैंबलिहारीजावं॥टेगीकीटपतंगज्योंडरैदूस
रानांव॥२३॥परमानंदकेआसिरै॥जाइपडेजबजीव॥हरि
मैंहरिनिजरिदेयैजबै॥तबैजीवस्योंसीव॥२४॥सकलबि
यापीसंगिबसै॥हरिसमरथसिरजनहार॥साहिबदीसैंप
ईयै॥साहिबकादीदार॥२५॥छानिनांमीआसंणअमर॥अज
रामरनगएक॥रांमदयातैंपाईये॥हरिसमिरणमनबिबेक
॥२६॥दुलेमपटेपढिआरनी॥चारिपटैसुमिबेद॥सदाति
मुषसबतैंआगंम॥सबकौंकरैंगभेद॥२७॥अबिलनमारीवं
दगी॥बकुतकैंवकमाग॥आंलादकिसनअरिहेतकहैं
कोईकहैंषुदाइ॥२८॥सबकोइच्यांहेतकौं॥तौसब
हीमांहि॥वेमहीतैंवमपाईये॥वेदतैंकुछनांहि॥२९॥पार
ब्रह्मपरब्रह्महरण॥प्रांणनाथमनलाइ॥जेरसहतमैरिय
मजो॥हरिगाईजैत्योंगाइ॥३०॥निहरिकहोमीरांकहो॥को
ईकहोअनंत॥निराधारनिरगुणकहो॥तथाकहोसा
वंत॥३१॥निरामूलनिरपयकहो॥कहोनिरंमरनांव॥नि
रमोहनिरदंदकहो॥वाअरिचितकीवलिजांव॥३२॥अल
षअगमअबगतिकहो॥कहोनिरंजननांम॥अरतकहो

अलष अरूपर॥ चलनही अचलनमे मारं॥ परमंग अपर
अपार अषंडित॥ रहि रमनो रहि रंकार॥१९॥ आगह
अकेहेगरे तें अघजारण॥ सूंनि मंडलमें सहज प्रका
से॥ जन हरीदास प्रति असिष मसतष॥ आरि दल जीत अ
नै ष्ट्रीरि बास॥२०॥ ७॥ ओ ग संग्राम जोग ग्रंथ लिष्यते॥
जोगी ग्यांन षड्ग करि धारै॥ मनसा जीति मनोरथ मारै॥
आसंण छाडि अनंत नही जाइ॥ तासंगिरमें निरंजन राइ
॥१॥ दीरघ रोग वियोग निवारै॥ कोडी सटै नहीं राहारै॥ अ
धन हेरै डरै नही लोई॥ आपा हारै सो योहै जोई॥२॥ बियया
त जीत न जोह रिबीर॥ सूंनि मंडलमें निरंसै नीर॥ कंचनी
च सब स्यो सब मिसाइ॥ मनब्रच करमत हां मन लाइ॥
॥३॥ निरसै निरबांण परमसुष सार॥ आदि अनादि वा
र नहीं पार॥ जुरा न ब्यापै काल न षाइ॥ हंसकौ सतगु
रि दीया बताइ॥४॥ अलष अभेद गाहर गुण ग्रांमी॥ प्रा
ण नाथ नाथ हरि अंतरजांमी॥ कोई ग्यांन ध्यान है ग्यांन
गुर और॥ षीर नीर ज्यों सब ही ठोर॥५॥ साजि सगा वंत अ
सुर अरि मारि॥ सूंनि मंडलमे मढी संवारि॥ ताली लागी बै
ठा मांहि॥ गगन मन जल पीवै नांहि॥६॥ मोह द्रोह में तें क
रि दूरि॥ रमता रांम रह्या भरपूरि॥ आप क अगनि बसै ता
मांहि॥ गुर बिणि गेला लाभै नांहि॥७॥ अषण वांण नि
ध अगंम बिचारै॥ आपा तिरै साथि संगि तारै॥ पवंन पया
ला उलटा धैरै॥ नरि तिरिया वे अजरा जरै॥८॥ ना यनिरं
जन निरसै जोगी॥ जुरा जन नं मन ताली नही रोगी॥ वर च्या घ
टै न दीया जाइ॥ सोई बित चित में रह्या समाइ॥९॥ घर

प्रपत्तिप्रांण॥ङरनषपडै नजेमेलेहांण॥काल
नहीनाह॥नटऔंघटधरैबघटिधरिश्राइ।
बैरागनबिरहबिजोगी॥पायप्रनिप्रवेसन।
टीसुरतिस्रुनिमेंधारि॥नबजाइदरसैदे
षैरनहीश्रथिरश्ररूपश्रछाया॥निरगुंण
रंतरिपाया॥पंजेगिगनिमगनमनलोई।
महारिसमिहोई॥१३॥षिस्नहीश्रम्रिरमरम
नहीसोग॥ब्यनहीबिष्याबेदनहीरोग॥जहांप्रगटै
हांश्रैसीकरै॥श्रबरण॥श्रगनिबिथाबनचरै॥१३॥श्रासन
दासमोहनहीमाया॥ग्यांनबिग्यांनधूपनहीछाया॥
मकिंवाडीकलस्योंयोग्रहैतोसहीलहैजोकोइ॥१४॥
संकटनहीसंरमतरमनहीभेद॥जवरानहीजुराकंथ
नहीछेद॥सकलबियापीसबतेंदूरि॥श्रबगतिजहां
त्ररपूरि॥१५॥बलनहीश्रछलचंतनहींचाहि॥घटपट
श्रघटतरमनहीताहि॥तजिश्रभिमानश्रागेहैयोंमहणं
जागिलागिमनत्रनमानिरहणं॥१६॥डरनहीनिडरनि
रगुणनिजरूप॥उदैनश्रसतसीतनहीधूप॥घरनहीश्र
घरपुरिषनहीनारि॥परपंचप्रीतिजीतिनहीहारि॥१
७॥नरहरिनरतनजनश्रहैनिसिकरै॥ताहिजोलेश्रगनि।
नमास्यामरै॥संकटियड्रांसाथिरघनाप॥जहांतहां।
नमकेसिरिहाघ॥१८॥जलटाछेलिश्रपूगाश्राव॥जेसीन्
षतिसाजरिजाव॥निरनैनिजनांवनिरंतरिरहणं॥साय
णिदसैनपलेनबहणं॥१९॥श्रनरथश्रनततहांजीव
१ ताकोंश्रपसदासंगिबांड़॥जहरदाटकंविलागीदोन्न

रांमतज्यांनरनिरबिषहोइ॥२०॥बेसिनिरंतरिअल
जगावै॥आसंणअमरआगमघरियावै॥तूयारहैनधा
नधाइ॥मनसाचलेनप्रघरिजाइ॥२१॥ब्रह्मअगनिमे
कायादहे॥मनचंचलनिहचलहोइरहे॥कांमक्रोध
काऊडैजंजीर॥प्रमसंधतहांजालनकीर॥२२॥बार
रनहीआगमअछेह॥धरतीबसेअमरतेह॥त्रिमल
रअपारअनंत॥तासषिलागिरहेसबसंत॥२३॥निगां
आगमअगरगमिगंमहोइ॥पवंननीरलेअमरथोइ॥रंमत
रांमनिरंजनगाइ॥राषीबसतसाहकैथाइ॥२४॥प्रम
दारअनंत॥आवरणबरणअगाहभगवंत॥उलटीगं
गजमनमेंआणि॥तौहिपिछांणैतौहिपिछाणि॥२५॥
गहबननहीतहांमनजाइ॥बंकनालिइंमिरतषाइ॥
ग्यांनगुफामेंआसंणकैरे॥जोगीजीवैजोरांमरै॥२६॥भव
सागरडैरअनंतअपार॥तातिरबेकोइहैबिचारि॥मन
बिषआडिबिसंभरतजो॥कांमक्रोधबिषयाबिसतजो
२७॥प्रमानंदप्रमसुषसार॥ताहितजोभजितजोबिकार
जांमणमरणजुरानेडरणं॥अबमरिसाहिबमारगसि
रधरणं॥२८॥काइमसूरबीरकाकांम॥कायरकदेकहै
नहीरांम॥मंडिसंग्रांमघावघटिसहै॥पदलजीतिप्रम
गतिलहै॥२९॥जुगमेंहदजोगसंग्राम॥कोइकरैआपणं
कांम॥ऐपासाचौपडिकेसारि॥अबकैजीतिजाकमावै
हारि॥३०॥जनहरिदासकहैमतएह॥बडनिधिहाथिव
हीनरदेह॥गोब्यंदभजोरांमकीआंण॥बकडिनलागोजं
मकाबांण॥३१॥८॥अष्टपदीजोगग्रंथलिष्यते॥रांमहैरे

हंमहैसूअवगतिकौहेरै॥जातांमनकूंउलटायफेरै॥मेहांदे
वकामतापिछांणै॥मैंनदसौंदिसातैंउलटातांणै॥मनस
देवीसबकूंपावै॥हंसकूंमनसासाचबतावै॥हंमजो
गीजोगजुगतिगमिजांणैं॥बहतीनदीअपूठीआंणैं॥प
वनगौटिकापाराबांधै॥उलटीसुरतिगिगनसूंसाधै॥का
मक्रोधकामूलउपाड़ै॥गिगनमंडलमैंआसंणधारै॥अगं
मपयालाभरिभरिपीवै॥रूपअरूपबिचारतजीवै॥ह
रिसुखसंधतहांनैंनांहीं॥हरिजनहैसबसैंनामांहीं॥अ
मजोतिअंतरिमतराखैं॥हरिहीरांबिणिचूणिनचाखैं
जनहरीदासनिजनिरभै॥मनकीमैरउठड्रूं॥सुरति
सुलटिउलटचलै॥तौअगमतहांचलिजाइ॥गालिहिरै
आमनियमतैंआगे॥अंतरिनीदनैतजबजोगे॥सिसहै
सकैघरिसुरमगावै॥उलटिकंवलकंवलापतिपावै॥स
बमैंरामहरिहरिनांहीं॥जंज्वालाकाइघिरतपैमांहीं
सकनिजस्वपजाणपासैजाणै॥सूताअरथकहांसूंआणै
अगमअथाहवारनहीपार॥ताकाकैसाभेदबिचार॥व
रणबिबोगारागनहीजानां॥प्रमभेदअस्यांनां॥सकल
समीपकैंसकलसहावा॥तीनिलोकत्रितवंनपतिरावा
सुषमनिउलटिगिगनिमैंआंणी॥संनिमंडलमैंपैलैप्रांणी
सुषमनिप्रमसंधमैंझूलै॥ताकूंतिकंवलकेतरीफूलै॥ना
मसरोवरिनिजजलनेरा॥संनमतिवालाफूलैमेरा॥ना
गाभरमभेदजबपावा॥तबमनउलटिसहजिघरिआवा
भिगानिग्रजिंबरियानर्द॥खीलरभयानिवांण॥जनहरीदा
सहरिस्पंधमैंमिलैसाधसजांण॥२॥सोअपणैजोगीनां

रे॥३॥ नेता॥ जटा न जूट पांच न दीठता॥ सकल समीप
अकल निज नामी॥ प्राण उधार गहर गुण ग्रामी॥ आदि
अंति हरि का हरि जाणै॥ स्वं निरूप बहो बांणि कबांणै॥
आदि न अंति ल है कोई सेवा॥ सुरति संबाहि प्रम सुष
लेवा॥ अगम अथाह थाह को पावा॥ तारू संमद तिरण
ब्रत धरि है॥ वार न पार कहां लौ तिर है॥ पंषी उलटि गि
गनि कौं धावै॥ ऊंचा अगम कौं णगम पावै॥ चेला पांच मि
लां वणि मेला॥ सो प्रम जोग का घर मैं षेला॥ अगम भेद
आगाल गत॥ हरि प्रम सनेही सोइ॥ अब मन तहां बिल
बिलास॥ उलटि न सूवा होइ॥४॥ तस नांव निरंजन अंमब
गति राया॥ प्रम उदार प्रम सुष गाया॥ तरवर अकल
बा अकंम फल हूवा॥ वेचा चोलर है तहां सूवा॥ कांमी का
गउ हां नहीं आवै॥ आसा कीच उलटि तहां जावै॥ सकल
समीप अकल निज पावा॥ अबरण बरण छिनि नहीं ता
वा॥ सब सूं एक रंक कहां राणा॥ दुष पावैं ते करम बंधा
णा॥ करम बंधाइ बहो त दुष पावैं॥ बंध्या विसा वरिषो
टा षोवै॥ षोटा आइ म्हल मति हारे॥ रष न बूडि ये कुल के
गारे॥ कुल करतति कहां लौं करि हौं॥ जामि जामि जामै
फुनि मरि हौं॥ प्रेम पंच प्रीति मोह नहीं देहा॥ सरणि उ
दार प्रम सुष सो हा॥ हरि सफ सफा गहगरा गंभीरं॥ न
ही सो षीर नहीं सो नीरं॥ निरभै निरगुण निराकारं॥ मी
व न हां न हीं सो थारं॥ न सपरिवार पिता नहीं माया॥ नाय
ह करै न काहू जाया॥ आदि अंति थाउ पजिन आया॥ जो
उपज्या सो सहजि बिलाया॥ सहजि बिलाइ तहां सतिनां

ऐसैं समझि देषि मन मांही॥ नहीं आवै नहीं जाइ॥१॥
आवै जाइ स और॥ वो है निराकार निज रूप है स आपिर
हा सब ठौर॥ ध॥ तहां सीत न धूप घांम नहीं गांमं॥ प्रम सने
ही मन विश्रांमं॥ दिष्टि अदिष्टि भेद अभेदं॥ तरवर मूल डा
ल नहीं छेदं॥ अजर अरीझ आस नहीं पासं॥ उतपति षयति
नांव नहीं नासं॥ आप कब्रह्म मोह नहीं माया॥ वेह दिपड अ
भेद न लपाया॥ अगाध अपत अपत गोपालं॥ संकर हू षका
ल का कालं॥ अगम अरूप संसो वही सोगं॥ नाव निरंभर
भोग न रोगं॥ हीर है मवार नहीं पारं॥ समद न गिगन अभेद
विचारं॥ मूल अमूल कर मन नहीं काया॥ अंतरि अगोह परम
सुष पाया॥ सकल समीप सकल सुष॥ सकल नवंण पति
राइ॥ अब मन तहां बिलंबिया॥ तासु अभै रहा समाइ॥
॥५॥ या॥ ओसरि हरि का होइ रहिये॥ लंवंण रच्या सो त्रूधर
कहिये॥ भांव बिसंभर विसपति राजा॥ सरणा ब्रह्म प्रति
पतिपाळा॥ करता करण चरण चित धारं॥ सांमणि दिष्टि
जोति उजारं॥ निज निरलेप निकटि निराकारं॥ अगम अ
षंडित अगम बिचारं॥ सिस प्रकास्या तिमर बिलाया॥ म
न रह्या मगन परम सुष पाया॥ देवारि देव तहां मन धरि है
हरि निरसंध निकुल निरधारं॥ अंतरि निरंतरि निकटि न
भारं॥ निधि पाई निरभै भया॥ निधि प्रम सनेही रांम॥ पांणी
मांहि पैसि करि॥ मन पाया बिश्रांम॥ हारा हि मन गया न अ
गम कौं धावे॥ कंचा आगम कों गमि पावे॥ घटि घटि अघ
ट सकल घटि सोई॥ सुरगांमि ता सल है जन कोई॥ उलटा पे
सि सहज घरि आवे॥ ध्रुनि सें ध्यांन तहां मन लावै॥ अवगति

प्रमतत्तप्रमग्यांनप्रमध्यांन॥प्रमतेजप्रमजोति॥प्रमधांम
प्रमबिश्रांम॥अधरअमरअहलअजर॥अतिरअथिरअ
थिरअपरअपारअधरमीगमुधर॥अरंगअसंगनिसंग
निमोहनिद्रोह॥निसोगनिजोगनिरतिनिरोग॥संजो
गबिवोगसंसानहीसोग॥ह्वानहोसीनआवैनआया
न॥जनमैनजीवैनमायानछायान॥जागैनसोवैनन्हाया
नधायान॥उठैनबैसैनरीझैनक्रोधंन॥जपहीनतपही
नध्यांनैनबोधंन॥हंडीनततहीनगोतैनधातैन॥बनि
मनस्तहीनजनमैंनतातैन॥अलषपुरिषकीआगै
हेर॥कैरैबंदनांकोइ॥जनहरीदासकालबांणलागै
ही॥हरिनजिनिरमलहोइ॥मनगनमैंनिलागारहै॥
होसक्याकहीप्रात॥जनहरीदासतासाधकौं॥जमक
रिसकैनघात॥सिधसाधिकबंदनाकरे॥ग्यांनध्यांनध
रिदेष॥जनहरीदासएकअमरफलकरिचल्या॥हरिअ
परंपारअलेष॥१॥छोटीबंदनोजोगग्रंथलिष्यते॥
निरंजनायनिमो निराकारकीबंदनो॥नमोनमोप्रब्रह्म
प्रमगुरआतमांआंस्पास॥प्रमात्मांआलोकना॥आनंद
प्रमानंद॥सकलसिधसाधिकांनमसकार॥न्मोन्मोरमंतो
रम॥नाराइंणनिरसिंधसकलनिरंतरिनरहरिनिरबा
णनिरबिग्रह॥न्मोन्मोनिरांमैनिरबिकार॥स्वयंब्रह्मप्र
कलबियापीनिरंजननिराकार॥जनहरीदासबंदते
कंकार॥अबिनासीअपरंपारउदार॥१०॥निरपषा॥
मूलजोगग्रंथलिष्यते॥

काम १ जन्ताम्बुसमारका कान्तेहकामारग
होइपइनाके तामजीवपतंग २ कानेकाप्रदक
है होयहे गाजाइ मीनयाजनमञ्जनपेहे मन
दनदरिमुणगाइ ३ कामक्रोधनिमनानेजो त्रिबि
नामगुणदह साइकामसमरणकेरा भमसयागपा
४ मनश्रपणाम्प्रकादनङ अपणजानबिचार गं
विदनजिनरमकहा धर्ममतिवृहेधार ५ विष
२ वेश्मरनकहे कनककटागमाहि यामरणकीस
जेहे पविमजीवनाहि ६ लिमबामग्यामजरा म
सोवकहागवार लालवतजिमतमनी नजिगमना
ततसार ७ पाचोइद्रीफिरिकरि सुरतिसहजघरि
धरि अननसाधआगवत्या मोईगहसमारि ८ मो
हहाइकीअगनिमुक्ति दाकवेहेजीवजाइ जलतजल
ननरमतपिरन यादीगयाविलाइ ९ सूतामध्वम
जातहे जामारकेराविचार हरियममनेहीभमसप
आगमवारनहीपार १० जोगीजोगजुगमावे साहम
हनेमजाइ साहमहलमेमरपहे जबमीवतवषाइ
११ सोवणकामुग्वआवहे नागणकामुखओर जव
जोपातबीकरणम् तहांसाधाकातार १२ जीवजोगी
जोगीमहा कवकमाइनजाइ आहिआरनिलागारहे
धुनिमेध्यानलगाइ १३ मायाकेरामिरयकेहे बात।
कहेतहेवाइ गमरसाइणअजवहे पावमरसिया
होइ १४ ककसांमीककुमवगी मायानापरिमुवि।
लइतगुडनयोहीकरत गयाकितानाजगि १५ मर

कटका करक बागहा॥ मृगि दई फंध मांहि॥ मृगी छाड्यो
बूटि है। घरि घरिनां चेनां हि॥ १६॥ कुंजर के से मेडरो॥ सोड
रस हान जा य॥ कांम हेति परवसि पड्या॥ वेडी लागी पाय
॥ १७॥ काकु केर सरहति का॥ काकु केर स कांम॥ काकु के
रस जीग का॥ हरिजन केर स रांम॥ १८॥ काकु केर स पांन
का॥ काकु केर स नाद॥ काकु केर स मांमणी॥ काकु केर स व
द॥ १९॥ काकु केर स मांनि का॥ काकु केर स नेय॥ काकु के ०
रस बेरता॥ सदा निरंतरि रेष॥ २०॥ केला जु तिका ला सया
कु डिक सो टीया हि॥ अगिनि दीयां तें प जलै॥ कसर रहि॥ कु
मांहि॥ २१॥ कसर मांमि जहां तहां बसे॥ जाणे विरला कोइ
सों घ्या आँटे लोंण ज्यों॥ कि सें मारी होइ॥ २२॥ जिनि स्यों हरि
कि पा करी॥ अपणें अंगि लगाइ॥ तिनके अंतरि हरि वसै हरि
बिणि कछु न सुहाइ॥ २३॥ तन मांही तीरथ घनां॥ न्हाम
न निरमल होइ॥ पांचों इंद्री फेरि करि॥ न्हावे विरला कोइ
॥ २४॥ काया मांही कंवल दल॥ तहां वसै करतार॥ अवरण
बरण अगह अकह॥ अगम वास हीपार॥ २५॥ काया मांही
कंवल दल॥ तहां बसै भगवंत॥ जनह री दास पेलै तहां॥
कोई कोई बिरला संत॥ २६॥ पवन पलटि निरंतन्या॥ मिम
मिप कुंता जाइ॥ काल चोट चूकें नहीं॥ अविय हूँते याइ
॥ २७॥ धर मन मतीर थवरत॥ अटपट पूजा थान॥ जो मजि
मतपस्या तेसा॥ ए जनके जहर समान॥ २८॥ [illegible]
[illegible] सो॥ एक सबद बिसतार॥ कुं वर्तांच बरबरण [illegible]
[illegible] विकार॥ २९॥ कंकं भिरतक कंकं [illegible]
[illegible] कुंमाद॥ कंकं मारे कंकं मारिये॥ कंकं [illegible]

३०॥ कहूं हीन कहूं घटि दरक॥ बाल बिरध कहूं कैद
कहूं नारी कहूं घरि पुरिष॥ कहूं रोगी कहूं बैद॥ ३१॥ कहूं
सूकर कहूं स्वांन गति॥ मोर मिरग उरग काग॥ कहूं जो
गी कहूं भोगीया॥ कहूं रोवै कहूं राग॥ ३२॥ सुद्ध बेस पत्री
बिष॥ कहूं मछली कहूं नीर॥ कहूं निरनै निरबैरता॥
कहूं जाली कहूं कीर॥ ३३॥ हैबर षर कुंजर गह्वर॥ कहूं
कायर कहूं सूर॥ कहूं राजा होइ रण मैं मड़ा॥ दह दिसि
बाजै तूर॥ ३४॥ सीत उष्ण बरिया कहूं॥ जड़ चेतन कहूं ज
ति॥ कहूं दिन कर अमर अरक॥ कहूं सिस हर कहूं राति
॥३५॥ करामाति दे ले कहूं॥ पैकंबर कहूं पीर॥ गुपत प्रग
ट बिचरत फिरत॥ करि दीरघ सूखम सरीर॥ ३६॥ अव
सिधि सो निधि सुन अमृत॥ कहूं कंचन कहूं काच॥ कहूं
धीर जहरि ध्यांन मैं॥ कहूं बिकलप बिटबाच॥ ३७॥ अरथ
गरथ आगम सुगाम॥ सिध साधैं गहि गोइ॥ राम भजन सुष
अगम है॥ ऐसब बेली दोइ॥ ३८॥ धर अंबर तारा तिमर॥
ग्रिसर समंद अथाह॥ कहूं दाता कहूं सो मिलै॥ कहूं टोटा
कहूं लाह॥ ३९॥ सबद सबद पैं नै चलै॥ सबद सबद कौं षा
इ॥ सह सह कौं पोषदे॥ सहै सह समाइ॥ ४०॥ दोइ सब्दी
सेंड रसि एक कहै सो कौंण॥ अषिर सबद अबगति मिलै
सिवर दसौं दिस गौंण॥ ४१॥ बेद सबद का भेद है॥ ब्रह्म स
बद सुध और॥ ब्रह्म सबद पैं बेद की॥ कहौ कहां लौं दौड॥
॥४२॥ बेद सबद की मृत मित॥ जहां तहां चलि जाइ॥ आगम
सबद सूं मन मिलै॥ तौ अटपट कबु न सुहाइ॥ ४३॥ सप
त पुरी भरमंत फिरै॥ नौ कंषर नर मैं और॥ राधा रस गोपी

चिरतै॥इहबेदकीदोइ॥४४॥अघटकहेतहैघटधस्या
घटिधरिअघटनहोइ॥बेदकथासरसंमझिमन॥इहक
हेंतहैंदोइ॥४५॥हुवआदिलकीहूरिकरि॥इहजोणिजे
नमांहि॥मायाकारंगअनंतहैं॥प्रमेसुरदोइनांहि॥४६॥
साधसुमरिसदगतिभया॥आपैरयतिऐक॥प्रमेसुरदोइ
कहैतहैंस॥मनअपणींकीटेक॥४७॥मनमजनतौस्योक
होंसमझिरकरौबिचार॥एकुकठकहुदहेसिये॥दोयु
कहैंकरतार॥४८॥नातिहैतिहरिबपधस्या॥नरंमकर
णकौंहरि॥तौकरतासबलकनरंमधौं॥नरंमरसानरा
रि॥४९॥इहदैतहुनियांदसे॥मारेमोसेयांहि॥समरथ
कीबाजीरची॥घटैबधैकछनांहि॥५०॥बाजीसूंबाजीर
ही॥करिकरिनांनांरूप॥कहुंगासेकहुयासिरैसहर
साहकहुंभूप॥५१॥नहींहींदूस्योबिरता॥नहींमुसलमां
नसौंप्रीति॥सबकुछकरिसबतेंअगम॥यासाहिबकीरी
ति॥५२॥नरककहैंमंकानला॥जहांसाहिबकीगोर॥हींदू
जाइमुघरामबस्या॥इहदंकीदोइ॥५३॥हींदूआपेदेहुंरा
मुसलमांनमसीति॥५४॥आपयौजुगपचरहै॥इहदंकीरी
ति॥५५॥मुसलमांनरोजाकरै॥हींदूग्यारसिन्यांन॥मैंबडमें
बहोतहै॥इहबडाहैरांन॥५६॥हींदूचास्याचीरथां॥नर
कयारतहांजांहि॥दिलमांहीदीदारथा॥गोतामोस्यानां
हि॥५६॥जिबहकीयांबकरीमिस्त॥लिषीकतेबांमांहि
तौअपणांगलाकटाइकरि॥भिस्तिनसोक्योंनांहि॥५७
अपणैकरिकांगचुभै॥तबकाआहीसुमहोइ॥यो
समेबेरानहै॥आतकहैतहैदोइ॥५

रै तबकाजीके उरियोर यौप्रमेसुर सबकापिता नह
नमांनैबोर पपि गाइग्निस्तिमुरगीनिस्ति जिबह्व
काजीवक्रोर एहैजिगमैंदुरतहैं नहीमिस्तिमैमेर
६० मनियमरैतबजालिऐ जालिरन्हावणजांहि
हीहूकीकरणीकहा मारिमड़ाकोंयांहि ६१ मैरूस
गैबाकरा सैसामारेजाइ चोवंड्यंताडाकणीमांही
बैठीखाइ ६२ पखापखीमनछाडिदे निरपखकैस्रषदे
ष निरपखस्रूं निरपखमिले तौपूरणब्रह्मश्लेष ६३
पखापखीमनछाडिदे निरपखमिल्यानजाइ जोकब
कु निरपखमिले तौनिरषषयखकोंखाइ ६४ नही
उपजैनहीषयेगा नहीश्रावैनहीजाइ सबकुछकरि
मबतैंश्रगम जहांतहांरह्यासमाइ ६५ मनसबकाश्र
सवारहै पैडाकरैश्रनेक मनउपरिश्रसवारहै बिं
रलाकोईयेक ६६ जनहरीदासमैदोनमै मनश्रप
णांदोड़ाइ दसोंदिसास्रूंफेरिकरि श्रगमतहांलेलाइ
६७ जनहरीदासमनमांबली मायाकाजलमांहि ज
बहीबिछूरैतबमरै तातैंबिछूरैनांहि ६८ जोइवा
सोरहै थासोरह्यासमाइ जनहरीदासश्राछैमतै त
हांरह्योल्योलाइ ६९ ११ जोगसिधिग्रंथजोगं
थमिध्यति श्रवधूजोगीजुगतैंन्यारा घटैनबधैसदान्यों
कान्यों रहैसकलतैंन्यारा १ पहलीहूवात्पार्छेबिन
से जागितहांमिलिरहिये जांमणमरणजुरहैजमडं
ड काहेकोंसिरसहिये २ तरवरसंसारबिबिधिफलला
गा जीवतहांसबजीवै उपजैषपैबसैताहीमैं मगनहूया

पीवै ॥३॥ कहिये काहि कौं एया ह मानैं ॥ पकरस सव कौ
ावै ॥ रोक श्राध सा पणि का स्तत ज्यौं ॥ श्रदिष्ट होइ स्तुषपा
॥४॥ पकस्तुषत जैन ता स्तुपिला गै ॥ जाग न जाइन जांणी
कं चै कहां मूरि बेगम पुरि ॥ बीविग हरस एा पांणी ॥५॥ स
ह दस्तुणें स्तुणि साच पिछांगे ॥ जोग मूल गाहि जांगे ॥ उलट
ालि प्रम स्तु पिय पकं चै ॥ माया नांण न लागै ॥६॥ सिरपस
बसत निज रि मैं रापै ॥ पय दो स्मों ज्र षो वै ॥ सरम सिलाग्र
रिवर तै मैसे ॥ अवला उदरि न सो वै ॥७॥ काया कर मसरम
करि कनै ॥ निज बिश्रां मून लहिपे ॥ श्रात्म के त्रास्यां नि नप
कुं चै ॥ तब लंगा प्रले ब दिए ॥८॥ पय स्की या सिप वत है सप
कौ ॥ सत पुरियां स्मों दुजा ॥ वा हरि नेय दसा त निमिर तग
वरश्राद रकी पूजा ॥९॥ नर श्रौ तार जात दे हरि बिगि ॥
संतो से कून सो ई ॥ यां ह नांता को ई पार्वि नय कं ता साध
कहैं सब कोई ॥१०॥ पकं स्तु ष श्र हिश्रो र स्तुप श्रा गो ॥ वा त
श्रांम की कहिए ॥ है हरि श्रगम निगं मतें न्यारः ॥ गुरिगम
कै तो स हिपे ॥११॥ जैसे कहै र है मांतै सैं ॥ चित तै न्य स त न्या
णैं ॥ पैंडा करे मरैन हां मास्या ॥ पंपषुरा त स्जाणैं ॥१२॥ पकं
चै क्षिथान बिषय ना निपैसे ॥ वपव जिवस च विचार ॥ जिर
भैना घ्रन जिम जि निरसै ॥ वाजो स्यं पे लिन हांरे ॥१३॥ वनि
दरवारि मरि सिमां हवकरि ॥ श्रयं मत हांस्न दनि श्रंमा
बिसारि सोई मांह रिसजि ॥ श्रवधि घटै तवन ठजि ॥१४॥ श्रं
तरि श्रौर कहै ऊक बश्रौ ॥ श्रयश्र यही वूके ॥ सब दक
हैताहि रा दिन चालै ॥ साच सब दन हि स्टके ॥१५॥
मारे न स्रम कौं सो धे ॥ श्रामश्र र पकरियौ

सोंनमोहत्तजिमैंतैं कांमक्रोधरिपमारै ।१६। सतगुरस
बदआधिसंगिसा धी कबै नरंमिनहारै नवषंडपक
मपलटिमनउनमनउनमनितिनां वनिरंजनलेजायै ।१७।
निरसेबसत्तसकलबिसव्यापी घटतजिअघटविचा
रै जोगीमरैतजौंराजीवै तौराजनमनहारै ।१८। आ
सणअचलमेरगिरउपरि मनहसतौगाहिबांधा ।उ
लटाचल्यासवेदिक्रपकुता पैंडेपारिनलाधा ।१९। सा
सउसासिअगमअरिजीत्या जागिप्रमगुरयाया अ
धरअरेषअथाहअषंडित नांवनिरंजनराया ।२०। ब
सधाजीतिबासहेमकीया षबरिषलककीजांणी ।
अरथबिचारिओकसरिउलटा सुषमैंसुरतिसमां
णी ।२१। जोगीजागिनसोवैनिसदिन रपांनगुफामेंआ
या सेरूकोलिकसरसबकाटी सूताबीरजगाया ।२२
रपांनगूदकीसहजिनिरालंब पिसणपवनगाहिबांधा
गंगजमनसधिआसंण अवधूचेलैसतगुरलाधा ।२३
अषिलअछेहनिरूपनिडरघर फेरितहांमनलाया
नहनीकोकासूवाकीनांई आपहीआपबंधाया ।२
४। नांबिषगहैनहिमिरतछाडै पापपुंनिदोइदूजा ।
साधधरमिसंचरनहीपाइ तौअबगतिकीपूजा ।२
५। आलसकैसेंआरंनिलागो ताकौंजमआइनहीमारै
अजराजरैअरीकरिकावै जीतणकौंयथेनहारै ।२६
निरसैसयांगयांडरडरतां साचसबदमेंपाया चेला
लेनाथगुफामेंबैठा तहांकुबअलषलषाया ।२७।
वेदसूरसंमिस्त्ररतिसहजिघरि अरथिअलूधाआ

सो प्रेम जोति प्रकास प्रेम सुष्या तहां हंमारा बासा॥२८॥म
नमिंहं चल निरतैं सषि लागा॥ रहै सकल तें न्यारा॥ गाम
ल ग्रमूल अधर घर॥ तहां पंडित सौ बिचारा॥२९॥ जहं
जहां बरण तहां बकबंधण॥ कालक हर की छाया॥ अ
बरण अगम संगम जब समझ्या॥ तन हीमें तत पाया॥३०॥
सत रज तम गुण रजा रहित रस॥ तहां बिलंब्या चीया॥
चेला पांच पसर ता घाका॥ रसहीमें रसपीयां॥३१॥ कहं
णसुण ण सुष तें सुष आयो॥ अगम सहर है सोई॥ तहां ब
सेत्याहि दोण न्ह लागो॥ पकं चे बिरला कोई॥३२॥ या मन तें
मन और अगम है॥ सकल बियापी सारा॥ प्रेम स्ंनिष
रोण न कोई॥ निज बिश्राम हमारा॥३३॥ साय सबाहि
सहज घरि रायें॥ बंकनालि रसपीवै॥ इला पिंगला सुषम
नि संमि करि॥ ग्रघेला या जीवे॥३४॥ राम दयाल देव करण
में॥ प्रेम तत पचिपूरा॥ अरस परस आनंद अति अंतरि॥
बाजै अनहंद तूरा॥३५॥ प्रेम जोति प्रकास प्रेम सुष॥ १
आत्म अंतरि लहिये॥ अंमक पाटन रंम करि कांनो॥ अ
गमतहां मिलि रहिये॥३६॥ आसण छांडि पांवि णि उडा
अलष बिरष घर पाया॥ रस फल पाइ बकुडि मन रसिया
रसही मांहि समाया॥३७॥ उलटा पवन अकासि पकेंता॥
अकर सहा करहीया॥ प्रमन दार अपार अषंडित॥ बास
तहां हम कीयां॥३८॥ आसा मेटि निरास निरंतरि॥ सुरंगां
मिले गैलाला धा॥ बादल बिणि बीज मोममे चिमके॥ घ
ण बरषा बनदा धा॥३९॥ इंद्री मन प्राण अरथ के
अंगम तहां फिरि लागा॥ धुनि में ध्यान प्रसिपद

मगसौं लागा ४० मन निहचल निरधारि निरंत
मंत्र सूं बिलि गयां णी पंच दोन्यौं पर लै मैं बूडा धुनि
धजा स मांणी ४१ आसंण अंब तंत फिरै थाकै मा गावै
सो गाया पासख असि नया निहकेवल निज बिस्रामै स
माया ४२ जोगानि सोभा तुरातै जोत्या लिपइ आसैना
सूंनि मंडल मैं सकल बियापी प्राण बसै ता मांही ४३ र
कट नहीं सरम करम नहीं अकरम धरै अधर घरस्या
ता सुषिया नि सहज समनमन बोलै नहीं बुलासा ४४
ध्यान धांन जोग नहीं सोगी नहीं नहि संग अकेला प
टैन बैठै सदा सौं का लै अरथ अनाथ अकेला ४५ पू
रण ब्रह्म अलप हरि अविचित रूप अरूप न काया ब
रतौ रज्यौं सकल निरंतरि नौ तसकाल न काया ४६
रागद्वेष रस मैं तैं नाही जीवन्मन मन नहीं जोगी अप
रंग न निरंग निरंबर नौ महि बेद न रोगी ४७ अस्ति
अथाह अपार अरिरिय सतगुरि साच बताया मि
नसा कल्है यक मन नछाडै प्राण नाथ पति पाया ४८
थपन नहीं बिथापन नहीं अवरण ध्यान धांन नहीं
दूजा नाथ निरंजन मिरसै जोगी नहीं दूमारी पूजा ४९
ग्यांन बिचार बिबेक अगाम गति वार पार नहीं लहिये
हरि दरिया सुष दे षि दरसौं दिसि तहां न ग्यासा रहियै
५० जलि थलि जहां तहां करणा मैं रहै सकल बैस्या
रा जन हरीदास मनि तन मनि बिलास्या सर गमि आंम बि
चारा ५१ सब देवां सिर देव दयानिधि छिपै न काहू छ
या जन हरीदास मन तास बिलास्या सतगुरि साच बता

थे॥५२॥१२॥जोगसमाधि जोग ग्रंथ लिष्यते॥ श्री धू जोगी
जुगतैं न्यारा॥यद निरबांण निरंतरि षेला॥चिंताकां करि
गे॥मनसाडा कणि मारतीमारे॥तो नगरी चोर न लागे॥२
इडी कसै धसै मन दह दिसि॥मन को श्रटकि न राषै तन
पाटण तहां मन मैवासी॥नाना बिधि रस चाषै॥३॥चिंता को
मनिरंतरि षेलै॥तब मन पडै न धोषै॥४॥तन जीतै ता को तत
दृसै तत्त रहै गुण तैं न्यारा॥जाणै गा कोई जोगेस्वर जाय॥
दिष्या कुवा॥५॥अधर अगम कोई बिरला पहुंचै॥सत गु
रि साच बताया॥जा सुष को हम न्यारा करते॥सो सुष ने
ड़ा पाया॥६॥दांणी मांरि दांण मेटीया॥अपणा मूल न हारे
पूंजी रहै बिणजै त्यों बिण जो पैडा अगम अपारै॥७॥नांग्र
ह करौं न बन न बसि नरमो॥घर माही घर पाया॥सो घर सक
ल घरां तैं न्यारा॥ता घरि डांण समाया॥८॥गगंन मंडल बधि
बधि कंण षूटा॥मरम गया ते हारे॥अजन माहि निरंजन दू
जे॥अण नेक था बिचारी॥९॥नीच करम न्यारा हम न्यारा
या अंबंस मारी॥थे उंचे लोन का टाला मैं॥उलटी पवन समवा
॥१०॥गुण मत गया मिल्या मोहि निरगुण॥निरगुण अप
रन पारा॥सहज समाधि पवन गहि पावो॥हम दक पयां
न्यारा॥११॥मैं मेरा मन अकलि उजाले॥अगम तहां लेला
उलटा चल्यां अनल का सुत ज्यों॥सहजै सुंनि समाया॥१२
वलै सपारि पहुंचै॥बेसिर है सो हारे॥अरथ की यां अ
यस बचूटे॥ऐसा अरथ बिचारे॥१३॥सील संतोष द

मगया सो नागा ॥ ४० ॥ मन निहचल निरधारि निरंतर
मंड मूका बिणि पांणी ॥ पच दो मोंपर ला मैं बूडा धुनि
धजा समांणी ॥ ४१ ॥ आसण अनंत फिरै थाके स्वा
सो गाया ॥ पारस परसि नया निह कंचन निज बिसां
माया ॥ ४२ ॥ जोगान जोग जुरा में जीत्या न्हलिपड
सूंनि मंडल मैं सकल बियापी प्रांण बसै ता मांही
कट न हो सर म कर मन हो अकरम ॥ धरे अ
ता सु थिर लागि सहज मन मूनी बोलै न ही
ग्पांन न ध्यांन जोग न ही भोगी ॥ न हीं त होग
टैन बधै सदा ज्यों का त्यों अरथ अनाथ
रण ब्रह्म अलय सही रि आरि चित रूप
रनीर ज्यों सकल निरंतरि ॥ नां त
राग द्वेष परस मैं लै नां ही ॥ जीव
नंगन निरंग निरंपर ॥ नां त
अथाह ज्पागर आरि रि
नसा चलै न यक मन
वपत न ही नि घा
दूजा ॥ नाथ निरं
ग्यांन बिचार
हरि दरिया
॥ ५० ॥ ज
राज
चारा
या जन हरी दास म

दमोतीफिरि सोष्यो॥मंडमूरा बिणिपांणी।गोपीतंजिकों
थापिडांणी॥२७

नैफलकै तौआधा॥२८

लोचनलाधा॥तरवरपानफूलफलडालो
।धूजैधणकउलटिसरलागा॥लोग

नेबकिस्पंघजणाया॥कूजरमें

।दो॥सुसाहंमारे
॥मांनिअमांनिआगनि
स्वरनरअस्वरसंघास्यां॥जोमारराजी नणकौ

हानउहोनिकटिनही॥
सोई निरंतैनिजनाथस

२७॥उपजिनबिनसेजुरानव्या
सोईनिरम

हमीरे॥२८॥नोतसमोहदोहपणिनाही
नोही.न.

छाया ॥ ३९ ॥ जोग न जोगनि कटि नहीं न्यारा । रहै असतै
इन्यों ही मैं तैं तजै तजै सोई आपि रह्या सब मांही ॥ ४०
घणां कक्कू तौ कहणां नावै थोड़ा कहौं समारा घटै न ब
धै सदा ज्यौं कास्यौं रहै सकल तैं न्यारा ॥ ४१ ॥ जन हरीदा
स यति प्रसिध मस्तुथ कड्या सहज मैं ताला जोग समा
धि ऊरा न ही आवै जा घटि अगम उजाला ॥ ४२ ॥ उराति
आवै जोगियां चिंताकाल न खाइ करं मस्तरंग धूई की
या तास्तु थमैं रह्या समाइ ॥ ४३ ॥ सब अगाध सबतैं अगा
म पङ्कचै बिरला कोइ ॥ जन हरीदास तहां थे लिये
तब ही आनंद होइ ॥ ४४ ॥ जोग नेय सतगुरि दीया आ
तम कौं उपदेस ॥ जन हरीदास मन तहां बसै जहां सं
तन का प्रवेस ॥ ४५ ॥ जोग समाधि अगाध बरत पारब्र
ह्म स्यौं प्रीति ॥ जन हरीदास तहां थे लिये तन मन तिस
नां जीति ॥ ४६ ॥ १ ॥ आ जोग ग्रं । जोग ग्रंथ लिख्यते ॥ हरि
दे सत हंसो दा मेरा सतगुरि आइ जगाया ॥ ये ईं चै लै न
काया लागी उलटा राह बताया ॥ १ ॥ मन थरि प्रांण प्राण
थरि मन सा बंकनालि मैं बाई ॥ अगम अरथ सोई कथा
कहै तहौं सतगुरि बसत बताई ॥ २ ॥ तन पाटण तहां
बास हमारा नौ दुवार जड़ाया ॥ सुंनि मंडल मैं जोति वि
मकै उलटा पवन चढ़ाया ॥ ३ ॥ आवध बिणि संग्राम करै म
बिणि आरंभ त्रिगुण सखी सत खाया ॥ जटा यंच पांणी मैं पै
ठी मीन सुंनि घर पाया ॥ ४ ॥ राजा न्यौ रै ति रैति न ईं राजा
उपरि आसण कीया ॥ सूति पछयौं रस फीका लागौ ऐ कै
रस बसि जीया ॥ ५ ॥ सी गाजै हां तहां मन लागा फल कंरि

कनषारा॥घरिघरिचैनराजरसऐकौ॥त्रिनेनंग्रहंमार
॥त्रिपुंएनिजन्नेदसकलसैंसारा॥सकलनिरंतरिइ
॥घटिघटिअघटकरंमपटलागा॥बिरलाकोईघसे
कंनिएंआद्यआकासयासा॥बिणिबरियारूतिश्र
॥ताकूतिसायसहजमेंनिपजे॥षेतीबिषबावूनलागे
काई॥ टीकाटीकई॥ आएकंएनिपजे॥बिणिप्रवेकंए
जे बूटेगदिकिंनअपिग्रासे॥श्रेसाआरंभकीजे॥ए
गिरमेधातधातमेंपिसर॥गिवरिधातनषाया॥तेषत्त
मतिकोईसूलो॥जनलगयकूमेतनआया॥१०॥चौ
॥दोइचात्रिगग्यास्या॥निरयवनिजरिसमाया॥सात
मदमोतीमेंनास्या॥मरजीवालेआया॥११॥नोघंएघट
वस्ती घा की॥नारआंवारायाओचिंतामिवणिगजन
आयो॥बसधागिगनिसमाई॥१२॥गागरिकापांणीकूवा
॥नया अचे तासारी॥उलटीलेजआंमसोलागी॥पटि
पणिहारी॥१३॥मेरडंडनाडिचढिवेद्या॥जलमलआनि
॥भिटियात्रिबधितिमरयातनतें॥प्रमस्तेनिप्रुका
॥१४॥सीहमृत्यसगलाजुगखेलि॥षडदापरहोनहोई
॥१५॥स
दिकंवलतहांअगनिबलतहे॥जागितदेषेकोई
अजतमगुणकांमकोधमद॥मोहदोहकसदीया॥प्याणी
॥ऐआनिजलसोषे॥ऐसाआरंभकीया॥१६॥मडासव
॥आनिकंविसीगी॥पांनचक्रकरिधारं॥चेलापांचजन
कर रणां॥आसंएस्सनिहमारं॥१७॥पेंडाअधरअंमर
अंतरि॥दरकूटकयाभेदं॥मिमांमडगलेअसेंपेलूं
॥मनमरणासिरछेदो॥१८॥अजपाजायमंत्रसेंसी

नलहरिसबकाडं ॥ कालीनांगणिडंसंणनपावै गिणि
गिणिडारत्याडं ॥ १९ ॥ पांणीमैंपैसिनउसोंपांणी अ
गनिबसिअगनिग्यासों ॥ गुणपैसिनिरगुणहोइ निर
सैं ॥ आसाबसिरहौंनिरासैं ॥ २० ॥ आरंतकरैंकरिरहै
निरारंत ॥ जीतणकौंषपैंनहारैं ॥ गाडेंसाधनसाधी
राषैं ॥ नामैंमरैंनमारैं ॥ २१ ॥ अटक्यांजेवांनआणंआ
कें ॥ चाल्यौंनहीचलाया ॥ सोकसहजिनहमकरिजांणें ॥
न्हपारहैंनधाया ॥ २२ ॥ ज्यौंआकाससहजगुणग्यासैं ॥
गुणकौव्यापैनांही ॥ औधुतनमनऐसैराषै ॥ ज्यौंचंदाज
लमांही ॥ २३ ॥ साहिबअघटसाधसबघटधर ॥ कीमतिक
हतनआवै ॥ वारपारकोईमधिनजाणैं ॥ सबकौअगमब
तावै ॥ २४ ॥ प्रमपुरिषप्रम्यांनप्रमसुष ॥ परापरैपतिपा
यां ॥ जनहरीदासमनिउनमनिलागा ॥ सहजैंसूंनिसमा
यां ॥ २५ ॥ पारब्रह्मपतिप्रमसनेही ॥ समंदरूपसबमांही
जनहरीदाससाधसुषिलागा ॥ वारपारकछुनांही ॥ २६ ॥
॥ ग्रंथ जोगमात्रा जोगग्रंथ लिख्यते ॥ ॐप्राणमात्रासुणौं
हौसाधौ हरिजनकाभेद ॥ कांमक्रोधकाकरिबाछेद
ऐकपहिराषिबापांचसाथी ॥ मनमैंमंतमारिबाहाथी
॥ १ ॥ मेटैंमोहदलजीतिबाजोगी ॥ जुरासैंमेटिबायंतरस
जोगी ॥ सबदकीगूदड़ीसासबधागा ॥ अचाहिकीसूई
लेसींवणैंलागा ॥ २ ॥ निरामैंमुद्रासीलसंतोषसंतिचेला ॥
ध्यांनकीधूंईतहांसिधांकामेला ॥ ३ ॥ दयाधीरजडंडसाचेक
रिगहिबा ॥ बिचारकेआसणिउनमनीरहिबा ॥ ४ ॥ सुबधि
कीसींगीसहजकीमाला ॥ जतकीकोपीनतहांजोगका
राला ॥ ५ ॥

निरमोहमढीनिहचलबासा॥जरणंकीजटासिरिदेषि
बातमासा॥६॥निरासनड्यांणीआकासकीबाया॥अधरन
भिक्षालिनातजिकोमक्रोधकाया॥७॥भेदसिरिटोपीतन
बाघंबर॥निरगुणजोगोटासूंनिवसतीतनघर॥८॥पा
तालकापांणीआकासकौंचढाइबा॥कलपनांअपणीप
वनमुषिषाइबा॥९॥सतगुरसबदअगहअगमगहिधा
रिबा॥ज्ञानकाचक्रलेकालकौंमारिबा॥१०॥बारहसोला
हकलाएकघरिआंणिबा॥जोगकामूल[illegible]जुगतिसबजा
णिबा॥११॥गुरकासबदलेसैरजगाइबा॥आपबेबईतजि
आमतहोजाइबा॥१२॥देषियापवधारिबारयापंथकरि
बा॥उदरतरिनसोइबाधातकरितधारिबा॥१३॥रहतास
नाईबहेसबहणं॥अवधुनलटागोतामारिआकासमेर
हणां॥१४॥अरणकीअधारीमिध्यानसाषिबा॥निरजन
मांत्राजतनस्यौंरषिबा॥१५॥डीबीसबूरीऔरकौनवेबम॥
आकासकीनिथ्यानावस्योंलेइबा॥१६॥बाईनकलकेतर
मस्बबाड्या॥प्रमतनप्रसचांमेरमधिगाड्या॥१७॥बेसिनि
रेतरिआरतनकरिबा॥कायाकमंडलअमीरसनरिबा॥
चिंताडाकणिफिरिगईलाजे॥अंनहदसींगीगिगनिसुरिबा
तामेरेसज्जुगेजुगीजीवै॥अगमकायपालाछ
अकलतर
परतसांवसेझांणनाथजोगी॥२०॥जनहरीदाससतगुर
सबरकहे
॥२२॥साधसबहीबसेतहांनैनांही॥जनह
प्राणबसेतामाही॥२३॥

सोवै॥ सोवैससोवै जागैसपावै॥२७॥१५॥ आस्ता श्री॥
[illegible]जोगग्रंथलिख्यते॥ जौमनहीबसधानही॥पवे
नजलतेजनलोई॥अगमबोइ करसंणं॥तहांचोरकरत
गैनकोई॥१॥पांणीबिणिपांणीअतिर॥हाथांबिणिति
रणं॥वारिनरहणंथाकिया॥रिजाइबकडिनफिरणं
॥२॥ऐकेसाथीसाथिगयासाथीगवदूजा॥देवलिदेवलि
चेसिपसरिमनकैरैनपूजा॥३॥हारिजीतिदोइदेस॥
तहांसबजीवकाबासा॥देषितमासाइस्या॥वकडि
मोहिआवैहासा॥४॥च्यांताकीलैगेनचोट॥चोटसतगर।
कीआया॥सतगुरसाव्हसधीर॥संतोसतगुरतैपाया
॥५॥पांनस्यूघासंणिबैसि॥ऐकआरंभहंमकीया॥ब्रह्म
अगनिप्रजले॥पवेनमुषिप्रबतपीया॥६॥गयापापसवं
ड॥त्रिबिधिमेंतेंनरमनागा॥उलटागोतामारिकांणनिर
सैसुषिलागा॥७॥पांचसषीलेसाथिप्रमसुषिसागरिकू
ल्या॥बिबिधिबेलिफलऊड्या॥कंवलबिणिपांणीफूल्या
॥८॥डालिसमायामूलि॥कंमयकुसतगुरिकीया॥त्रिबे
णीअस्यानि॥जडातैंपावकदीया॥९॥गंगाजमनमधि
बास॥चंदघरिसूरसमाया॥प्रमजोतिप्रकास॥अगम
गुरगमितैंपाया॥१०॥घेनिधांमप्रहस्या॥पसरियांणीन
हीपीवे॥प्रमसूंनिघरिघसै॥कुंपेहकेरडानजीवे॥११॥
अरिचितअरतअसंग॥नाथनिरंजनिजभेदे॥जहां
तहांनरपूरि॥पूरिलेआसगमेदे॥१२॥वारिपारमधि
नांहि॥छिपेनकाहूबाया॥आदिइअरिअरूपात्र
गहिअमिअंतरिपाया॥१३॥तहांसापणिनहीसंचरे॥

हकिदोइडंकनधोरे॥प्रथिमचेटेनजहर॥मंत्रगारडंन
मोरे॥१४॥सैरैंनेलगैनतोग॥सीसतोपीनहीतोले॥देव
लबिणिदेवअसेव॥तहोंकलफकोईजडेनषोले॥१५॥
अर्धबाडिनरषेचढ्या॥रागबिणिदेवरागनिवाजे॥ब्र
ह्मअगनिआसरण॥संबरबिणिसीगीबाजे॥१६॥च
लानहीतहोंचला॥विद्याबिणिबेदपाठाया॥जिगबि
नांअसहोम॥धुनिबिणिधुनिसमाया॥१७॥आरंभबि
णिआरंभ॥करमबिणिकरमसकीजे॥बिणितपस्या
तपतहो॥पाठबिणिपाठपढीजे॥१८॥ईधणबिणिईध
ण॥अगनिबिणिअगनिसजोरै॥बिणिहूनिहूनोद॥
धूपबिणिधूपसेनोरै॥१९॥नकेना थलेसाथि॥मेस्वादि
आसणधास्या॥जोगारंभबिणिजोग॥जोगबिणिजोगबि
चास्या॥२०॥सीरनकलके पारामास्या॥यकआरंभहंम
कीया॥वगताजकेसुतोगगवावा॥यकडिअगनिम
थिदीया॥२१॥जनहरीदाससतगुरका चेला॥डेरेनषो
वेजमो॥जनमनिरहैनिरंतरिनिसदिनि॥नगारीचोरन
लागे॥२२॥१६॥उत्पतिहेतजोगग्रंथलिप्यते॥मोमन
हीनसधानही॥पवंनजलतेजनपांणी॥ज्योंसनहीजदि
राति॥तदिकहिकोणबिनांणी॥१॥सागरसमदमरजाद
नही॥गिरतारअगारा॥चोरासीलषजाति॥नहीजनदिमं
डितारा॥२॥आदिसकतिस्योंमेस॥बिसनब्रह्मानहीआ
या॥जनमजुरानहीमोत॥जीवनहीकालनकाया॥३
पुरिषनारिरसपांच॥हाटपाटणनपसारा॥दामणि
गनिनगाजा॥नहीबरियाघणधारा॥४॥गारड

नागा॥मंत्रगारडू नगाहरं॥ उसंणनही अहिडंकि॥नहीइ
मिरतनहीजहरं॥५॥बीरबिदोषनपोष॥ऋतडाकणि
नहीभेदं॥सैरोजेमानलोगा॥रसरोगरसनो॥नहीकंथन
छेदं॥६॥सातबारऋतितीनि॥घडीमकूरतिनहीलुइ
पहरदिनपषमास॥बरसजुगनरणनकोई॥७॥सु
षात्रियानननीद॥सेजसुषसोननघरही॥नहीबेरान
हीमंत्र॥नहीनिरसैनहीडरही॥८॥ग्रहबेसषत्रीबिद
बिद्याबिसतारनबादं॥नहीहीन्ननहीतुरक॥सरानन
हीसबदनस्वादं॥९॥नहीचेदनहीसूर॥हारिहरजीति
नमननही॥मुकतिसिधिनवनिधि॥चिंतनचाहिनधननही
॥१०॥सिधसाधिकजोगीजती॥पीरननहीपैकबर॥नही
कुटंबनहीगोस॥दतनहीदेवडिगंबर॥११॥नहीतप
स्यानिगजाप॥नहीकरतानहीकीया॥नहीजोरनही
जेर॥जोगगोरषनहीलीया॥१२॥नहीसूरनहीगाड्र॥
जिबहतनजेगनछूटा॥नहीहेतमुषहाथ॥तदिस्वा
दकलंलीयानबूटा॥१३॥नहीपायनहीपुनि॥दयानि
रदैनहीमाया॥नहीमोहनहीदोह॥कतडसहनहीउ
षसुषछाया॥१४॥नहीसीलसंतोष॥गाहरमंत्रिगारून
चेला॥नहीग्यांननहीध्यांन॥आपतदिअलषअकेला
॥१५॥नहीबिरहबैराग॥नहीसेवगनहीस्वांमी॥षटड
संणपवनही॥तहिआदिअरिचितनकुनांमी॥१६॥मह
लदरगाहसेजसुष॥नहीनकनारीछेदा॥नहीजोरजर
कंबर॥नहीगंगोडिकरंदा॥१७॥नहीपाइकनहीफोज
चूकनहीचालनधरही॥सं गदातार॥

रही॥१८॥रैतिनहीराजानही॥दैंतनहीदेवाइर
त्रीनहीखडग॥स्वरिणलूरनकादश॥१९॥नही
ीसांण॥देनबहतागेबावल॥नहीसावतनहीस
खरिणहीकनकावल॥२०॥तदिसअखंडितरांम॥
थअबसाथीसोई॥सबजीवाकाजीव॥तासगतिलखै
ोई॥२१॥नहींतहांगोपाल॥गोपिसबमैगोपालिका॥
ीजोगनहीग्यांन॥नहीबूढानहीबालिक॥२२॥सिर
नहारअपार॥नाबनिरंजणलीजे॥निरमूलनिरस
तहांकिरिसरबसदीजे॥२३॥ऐसबकरिसबतेअग॥
॥हरिहरीदासनिरंजननिडर॥प्राणहसमोतीचुगै॥मा
नसरोवरमंझिघर॥२४॥जनहरीदासउदबुदकथा॥इ
मानिरगुरगमितैंलहिये॥घरबनेगिरतरकिदरां॥रां
रावेतहांरहियै॥२५॥१७॥सबदअष्टाजोगग्रंथ॥ने
ष्टे॥नगनजंगमजोगीजती॥सोफीकहीस्यांन्यास॥माया
कीछायाछक्या॥निरंजनगोडनिरास॥१॥बादकीयांबित
दतहो॥अपतपरमदतजाइ॥मनेमजनमधरिहरिजो
नफिरिमनहीसमाइ॥२॥रागदोषमैतैंमनी॥जहांतहां
मनदेता॥प्राणनाथपतिछाडिकरि॥नारसोगेसिरिलेत॥
३॥आपांनआखिमायाछदिता॥जागिसकेतोजागि॥अपण
पलाछुडाइकरि॥पतितप्रमसुखलागि॥४॥बिप्रबेदकी
जीइलंम॥दंडपखांदोइहाता॥बीचिसमदउतोइथा॥क
हेतहांकीबाता॥५॥जैनधरमकोटाकरम॥नरमकरिस
किनदूरि॥चिदानंदसबतेंअगम॥जहांतहांसरदूरि

नाग।।मंत्र गारडू न गाहरं।। डसंण नहीं अहिडंकि।। नहीं
मिरत नहीं जहरं।।५।। बीर बिदो षन पोष।। न तडाकण
नहीं भेदं भैरो जोग न भोग।। रस रोग रसनां नहीं कंथ न
छेदं।।६।। सात बार रुति तीनि।। घडी मकूरत नहीं लु
पहर दिन पष मास।। बरस जुग गनरण न कोई।।७।। सु
ष्यातियान न नींद।। सेज सुष सोन न घर ही।। नहीं बैरा
ही मंत्र।। नहीं निरसै नहीं डर ही।।८।। रुद्र बेस षत्री बिप्र
बिद्या बिसतार न बादं।। नहीं हींदू न हीं तुरक।। सरा न न
ही सबद न स्वादं।।९।। नहीं बेद नहीं सूर।। हारि ह्व जीति
न मन नहीं।। मुकति सिधि नव निधि।। चिंत न चाहि न धन नही
।।१०।। सिध साधिक जोगी जती।। पीर नहीं पैकंबर।। नहीं
कुटंब नहीं गोरस।। दत नहीं देव डिगंबर।।११।। नहीं तप
स्या जिग जाप।। नहीं करता नहीं कीया।। नहीं जोर नहीं
जेर।। जोग गोरष नहीं लीया।।१२।। नहीं सूर नहीं गाढ।।
जिव हतन जोगा न छूटा।। नहीं हेत मुष हाथ।। तदिस्वा
द कंकलीया न छूटा।।१३।। नहीं पाप नहीं पुनि।। दया नि
रदै नहीं माया।। नहीं मोह नहीं दोह।। हतं उसह नहीं उ
षसुष छाया।।१४।। नहीं सील संतोष।। गहर मंति गरु न
चेला।। नहीं ग्यांन नहीं ध्यांन।। आपतदि अलष अकेला
।।१५।। नहीं बिरह बैराग।। नहीं सवगा नहीं स्वामी।। षटद
संण पष नहीं।। तदि आदि अरिचित अकुनांमी।।१६।। मह
ल दरगाह सेज सुष।। नहीं बक नारी छेदा।। नहीं जोर जर
कंबर।। नहीं गंगोडि करंदा।।१७।। नहीं पाइक नहीं फोज
चूक नहीं चाल न धरही।। संमजा चिरादातार।। नहीं कोडा

करहीं॥१८॥रैतिनहीराजानहीं॥ दैंतनहीदेवाइर
क्षत्रीनहीषडग॥स्तरणिरणसूरनकाइथ॥१९॥नहीं
नीसांण॥हेनवहत्तागेबावल॥नहीसांवतनहीसू
॥बरिणहाकनकावल॥२०॥तदिसअषंडितराम॥
थिअबसाथासोई॥सबजीवांकाजीव॥तासगतिलषै
कोई॥२१॥नहांतहांगोपाल॥गोपिसबमैंगोपालिका॥
हीजोगनहीज्वांन॥नहीवूढानहीबालिक॥२२॥सिर
नहारअपार॥नांवनिरंइणलीजे॥निरमूलनिरसं
॥तहांफिरिसरबसदीजे॥२३॥ऐसबकरिसबतैंअग॥
॥हरिहरीदासनिरसैनिडर॥प्रांणहंसमोतीचुगैमां
नसरोवरमंझिघर॥२४॥जनहरीदासउरसुदकथा॥प
रमातिमरागमिटेलहिये॥घरबनेगिरत्तरकिंदरां॥रांम
रांवैतहारहिये॥२५॥१७॥सबदप्रछ्या॥जोगंग्रेथलि
षते॥नगतजंगमजोगीजती॥सोफीकहांस्यांन्यास्या॥माया
हीछायाछया॥निरसैवोडनिरास॥१॥बादकीयांबिच
घटतहै॥अपतपरमदत्तजाइ॥मनैबजनमधरिहरिमजो
मनफिरिमनहीसमांइ॥२॥रागदोषमैंतैंमनी॥जहांतहां
मनदेत॥प्रांणनांथपविवाडिकरि॥नारसोगोसिरिलेत॥
३॥अपांनआविमायाछदित॥नागिसकेतौजागि॥अपण
पलाबुडाइकरि॥पतितप्रमसुयलागि॥४॥विप्रवेदक
डूलंम॥दऊंपषांदोइलातां॥बीचिसमदउतोइथा॥क
हेतहांकीबात॥५॥जैनधरमकांटाकरम॥तरमकरिस
कैनहूरि॥चिदानंदसबतैंअगम॥जहांतहांसरपूरि
॥६॥च्यारिबरणकामूलकहा॥प्रमसनेहीपाव॥हीं

जीतिनूरकीपड़ी। तहांअलूधाजीव ॥ ७ ॥ षटदरसण
सोध्यासबै। सुतौऔरहीरीति। उलामालाजहांसतहो।
पथापथीबिपरीति ॥ ८ ॥ गांवणस्योंरोवणभला। रोवणगा
वणमांहि। रामबिरोगीपीवकेबिरोगि। तैलफितलफि
मरिजांहि ॥ ९ ॥ लाषग्रंथकाअरथहै। कोटिपृदापदसे
षि। साहिबतौसनमुषिसदा। तूसनमुषिह्वैदेषि
॥ १० ॥ अनंतसाषिसाधांकही। मांहिरतनपतिरांम।
उलटागोतामारिकरि। करोआपणांकांम ॥ ११ ॥ तनिसुध
चोवाचंदनां। सोधोसबैअगिहीराहैमउजास। सुतौसिं
गारकोईऔरहै। जहांमिटैकालकीत्रास ॥ १२ ॥ सिलाबे
सितपस्याकरै। कंदमूलषणिषाइ। वाहतपस्याकोई
औरहै। जहांत्रिबिधितापसबजाइ ॥ १३ ॥ बहुबिधिलो
जनलेतहै। इस्यादेहकीवोट। वोहतोजनकोईऔरहै
जहांमिटैकालकीचोट ॥ १४ ॥ धरमनेमतीरथबरतप्री
तिहैतिमनमांहि। सुतौतीरथकोईऔरहै। जहांसबैप
पकड़िजांहि ॥ १५ ॥ चारतलैदैहीदड़ै। अंनआविलकीर
षात। सुतौचारनकोईऔरहै। जहांबिबिधिपांतापसब
जात ॥ १६ ॥ पांचअग्निसाधैसुतौ। फलताकेतहांजाइ। बा
सअगिनप्रगटीनहीस। डालमूलसबषाइ ॥ १७ ॥ देहषेहनि
रगुणदसा। अंनफासनिरगुणलेत। निरसेपदिपकंतानही
लषाकौणसूंहेत ॥ १८ ॥ बिबिधिधरमतपस्याबिबिधि। चल
तदेहकेनाई। सुतौपंथकोईऔरहैजा। सातसमंदलंघिजा
इ ॥ १९ ॥ सतगुरसबदांमनघड्या। घाटिउतास्याआथि।
हूजालाड़ूकुरिगया। ऐकेलाडूहाथि ॥ २० ॥ चिंतामणिदरवे

वही॥ सुतौ सबै सुष लेत॥ वाह चिंतामणि को ईश्वोर है॥
प्रगट परम पद देत॥ २१॥ था ह अगनि मुषि परजैले॥ ता वाली
पावाइ॥ सुतौ तांबा कंचन सया॥ पारस परस्या जाइ॥ २२॥
सा ह लाल जरदा सुपेद॥ गिरवर षत हा थि हाजूरि॥ लोह
पलटि कंचन करै॥ सो पारस कंकूरि॥ २३॥ हीरा की सोन
कहा॥ सुतौ चोर ले जाइ॥ वो हदीरा को ईश्वोर है न॥ पलटि
चोर कौं षाइ॥ २४॥ मोनि अमा नि मान गरब गात॥ प्रगट परम
पद हाथि॥ कांमधेनि सुर ही सबै॥ सुतौ कामधेनि तहां सा
थि॥ २५॥ मन मर जीवा तन समंद॥ पलटा गोता षाइ॥ हीर
लेन्या रारसा॥ षारा जलन समाइ॥ २६॥ चंदन तरवर की
स्याति॥ बसे सचंदन होइ॥ अरस परस गाती एक है॥ नां वेध
ण कौं दोइ॥ २७॥ चंदन तरवर बिबिध बन॥ चंदन मिले
न का फूरीग॥ और बिरष चंदन भया॥ मिलि चंदन के संगि
॥ २८॥ कलप बिरष सबतें अगम॥ सतगुरि दीया बताइ॥
आप परस्या दोजिग टरै॥ कांम क्रोध सर मजाइ॥ २९॥ दत अ
पेदा लिवगामें॥ मन का टोटा दूरि॥ सुतौ दातसबतें अगं
म॥ जहां तहां भरपूरि॥ ३०॥ जातलगी जोगी वपा॥ सजन
करत सब साध॥ सब देवां सिरि देव है॥ हरि अपरंपार अ
गाध॥ ३१॥ सुयसीतल इंमिरतसुधा॥ मन करत पेम धरिया
न॥ सुतौ चंद को ईश्वोर है॥ प्रगट हरे अभिमान॥ ३२॥ कंव
ल बिगासि उगटी किरणि॥ घट में अघट उजास॥ पछिम दे
स भया अरक॥ नयस सयन सप्रकास॥ ३३॥ ७ हरइंमि
रतसुधा॥ अरस परस एक॥ सुतौ इं
आइ हूअनेक॥ ३४॥ जनमजुराघ

नगाज। स्तौराजाकोईऔरहै। जाकासबपरिराज
३५ सबदेवांसिरदेवहै सबसाहांसिरिसाह सबस
लतानांसिरिसुलतानहै हरिपूरणब्रह्मअथाह ३
६ जीवचौरासीलषजहांसतहां षरतिनांनांबिधि
दीदार ऐसबककरिसबतेंअगम अनंतजोगबिसता
र ३७ बसैकहांनांहीकहां कौणसकैअवगाहि वा
रपारकीमतिनहीं नांवधरतहैंनाहि ३८ नांवधरे
तौमैंडरौं हरिअपरंपारअछेह सुतनातमातबनि
तानहीं गांवदेसनहीं देह ३९ जनहरीदासपतिका
बरत अपणैंहिरदैधारि अपांणीलागैनहीं उलटीपंथ
सेवारि ४० अमसंधपवांणकहो बककीमतिकरिगए
हारि जनहरीदासनिरसैमरे हरिनिरसैबसतबिचा
रि ४० ॥ २८ ॥ कौरासनौराग जोनाजे थाहियहे ॥ क्या
कहियेकहिणीकहो रजमांरहणीमांहि सोसाहिबके
साथिहै देतौअचिरजनांहि १ रहणीतौजोहरितें
रहैनिरंतरिलागि बलताक्रुजेंअंगारसब बकडिनजल
केआगि २ कोचरचैकोबंदिजाइ कोनिंदैगहिवार षे
हैसाधसमाधिमें कलपैनाहिलगार ३ जेकलपैतौकस
रहै कछकिरचीमनमांहि आगमतांपड दाइहै तिन
तवपरस्यानांहि ४ ज्योंहमदेषैत्योंकहैं नचीकरिकरि
बांह कैरगसंचवैसैंनहीं ऐकबिरहकी बांह ५ उनि
यांस्योंबांईदई प्रेमसरस्योंप्रीति साधांकासुषअगमहै
याहैकछलटारीति ६ करमकठिनरहणीकठिन ॥
कठिनसाधकीटेक ज्योंहबांतासांईमिले सोकोईकवि

।बिरहचोटलागीनही॥साधसबदसुषदूरि
कांमक्रोधमैंतैंमनी॥यगादेसक्यानचूरि॥८॥दयावैरनिके
टिबोकविनजांणैंबिरलाकोइ॥दयातहांआरंभनही।
आरंभिदयानहोइ॥९॥दयादेसतहांबासकरि॥निरसे
पदनिजिरांम॥धीरजमैंधनमिलैगा॥आहिंस्रोसरियऊका
म॥१०॥मनचंचलनिस्चलनया॥गडआपांनकीपालि।
जाम्पासोनरमैंनही॥सतापड़जंजालि॥११॥पांणीमांहीपे
सिकरि॥धरैनिरंतरिधांन॥मनमंबलीचितवतरहै॥बडी
बिपतियकैंयांन॥१२॥अगमतहांपकंतानही॥सुणइं।
ग्यांकाप्रतिपाल॥गउरकींरवरसियमांबली॥तकितकिमे
लैजाल॥१३॥साधतहांसुरनयमदा॥हरिसिंभिरणस्यो
हेत॥ष्यालिपड्यावरयातहै॥जाकासूनांषेत॥१४॥प्रांण
सनेहीसोइमां॥सुमरिसनेहीरांम॥अलपआवआलस
करै॥सुपनाकासाकाम॥१५॥बारबारतोस्योंकहौं॥क
रैनअपणांकाज॥गोबिंदनजिजीवणइसा॥जिसाबीज
कारज॥१६॥कालकहरचितवतरहै॥तकितकिरोके
डाण॥डावपड्यांकहिक्याकरै॥अज्यासंघस्योंमाण॥१७॥
गोरूग्वालहिछाडिकरि॥चितबिराणांबाइ॥मारसदेस
कटिपडे॥संकटिपडिपछिताइ॥१८॥आपसरहैआपको
चाहैमांनिसुहाग॥साहिबसाधनआदरै॥योंहीबहुतअ
नाग॥१९॥साधतहांनिरबैरता॥जहांबैरतहांप्रेत॥प्र
मिसरपतिछाडिकरि॥नरकिजांणस्योहेत॥२०॥मननमरक
भगतिछाडैनही॥कूरममतिसोहरि॥कलंचांपिस्रवोप
रैतोदोसकहाकहिसूर॥२१॥चिंताकीडालीनई॥

नौ यश्रो भ्रात्रय ...
नौ दिसा आइ प ...
... किनकिमारैसी र २३ मोह
... सबसंसार मिरयतहांपामा
... वारि २४ रांवण स्यो मनमाहिमै
... हसाकाबरबाडिदे संकरकाव
... केणकी वै सकी औवंणवेसा
... हमरिमन ... रतिसहजघरि आणि
... लोकनकडै सोकलगि गई होइ
... कोटिकैजोकोइ २७ ... बाडि
... तकविनविनबात ... है
... रकापात २८ नियपेल्ही निर ... ने
... उलटाबेलि ... नमै ... ने
... जारंजनहो
... रदेआतहे द
... ही हेरसितहो
... चार २९ रांमर
... तकोंहरि
... ही न्याराने
... मांहि
... र मर्ना
... र ३० सबरा

गमाकं जीवकौं। कालबिधूंसै आइ॥२६॥ मायादीपग्रवेष्‍ये। रामनरू कैंपीव॥ आपऋधीरैं आपकौ। पड्यिपड्ि दाझै जीव॥२७॥ धरमनेमतीरथब्रत्त॥ द्वलाकुलत्तहै जाइ॥ छाजबजावै डोकरी॥ कंटयेतकौंयाइ॥२८॥ राजाकी चोरी करै। डरैरंककीवोट॥ रंकचोरकहिकौंटलै॥ कहरुकाल की चोट॥ २९॥ पाटगाइकरिवारऐ॥ सुषीनदेष्या कोइ॥ लातमारिचलिजात हैं॥ संजनका संग होइ॥४०॥ अलमाया जीवमां छली। छुसीबसैतामांहि॥ कालकीरबासैबहै॥ निद्र्वेछाडैनांहि॥४१॥ लोकलाजसिरदेतहै॥ देतनलावैबार॥ सिरसाहिबकौसौंपत्तां॥ हकौंकरैबिचार॥४२॥ सतीज लेस्‍त्रमैरै॥ कविनबात्तपलकाम॥ निसप्रेहीनिरंजसाध कै॥ एतिद्योससंग्राम॥४३॥ अजबबात्तपैडा अगम॥ जीव जागिसकैहत्तोजागि॥ मनसजनत्तोसोकहौ॥ एकबीएरसंबैरग॥४४॥ कजलीबनस्वांनंदी॥ गसैरायेमनमांहि॥ ऐसैंहरि सौंमनमिलै। तौफिरिबिछरैनांहि॥४५॥ पैंडैमरैतौप्रमस्‍थपकंताहरिसमिहोइ॥ जनहरीदासहरिसजनकौ॥ घागलसैबकोइ॥४६॥ जनहरीदासकहिकौंडरै॥ रामत्त अनरसरीति॥ चकुटीमांहीदेषिये॥ जाकेजेसीप्रीति॥४७॥ ॥१७॥ समैंबिछोसजोगग्रंथलिष्यते॥ अलेमयलकज्ज्पपरेषालिक॥ करताकरणबरणबिसतार॥ बसधात्तुयाअग्नित्तबाइ॥ रिबसिससोतासारआंवार॥१॥ चोदात्तत्रंणगयेण गुणगीमी॥ तारामंडलरचण॥ त्रियलोका॥ ५ गिरप्रवत्त॥ नंदीनवासैबहैंअलोप॥२॥ ː ː

बिधिवाणी घटि घटि अरु हैं मंडाण सेर ३ सुर नर असु
र थसे आप बूझे माया चढी समझि ताजे र थे लिय स्यावे
अजरू पे लिसे माया घटे न समझि ता फेर ४ ब्रह्मा के कु
सिक्ष तें चजुगा बीचें सो ईब साडे रे बिच न ब प काल अ
वी आव आए रासोटा ए छू वेसु सिद्धू वा तापाल ५ वा
णी कवि नक्क बधि कारि को ते सुरति सुमरि अंतरि निज
सार निज पीरि निरषि सिरषि निज नेरा जन हरि दास स
रिष मउदार ६ हैं वर गै वर गाव राट स है लमरा नर स
राज छत्र सिंघासण सेकरू प बाजा रा हरि राज ७ न
४ रपति सोपति ब रिषड़ा सिज रात ब तौ लेत आदि सें
पैसा न से के कारे को लेत ८ नरपति पड़ा को ड्राछुसी रा
कां वेर चि अरक आ गानि में उजला वो है हरि हरानह
री ९ माल मुलक मुगडा पड़ा स बग पति बर ता
रि करें जो हया आ पो पड़ी अरस ब स थो दार १० राग क
लो वेर कड कणी काजी मिस्र ब कैक आगम रक अंत
रि नहीं वे तो क या अनेक ११ ब कु बिधि बा गा ब कु स
या ब कु सो चो बकु पोत ब कु बिधि तो जन ब कु र तं
ही राज कु न फल ताए १२ है म जड़ तह पिसंक ला गलि
सो तो इन की माल या जल से बूड़ा पणी डंडो अन्त अन्त
त १३ हस्ति जिप की रति रत्ता सा च न मा नै को इ के
धा केदा कि से या दी वा की लोइ १४ पंच कडि कड के
सदा त्रिबिधि ताप का जाल के मा स्या के मारि सी कोभ्र
सो काल १५ लंका पति रावण कहां कुंभ करण कहां
वे स हिरणाकुस हिरणायक कहां महिका सुर कहां के

जुरासंधसिसपालकहां॥ इसा संणकहां मीत॥ केरूं रलप
डोंकहां॥ अगोपड तौसींव॥१७॥ ऋचक वेमुचनकेदकहां
कहां बिकरमकहां भोज॥ सो वतधिथी चौहांणकहां॥ क
हां अकबर नौरोज॥१८॥ ऐतीमनतोसौंकहो॥ स्रणिसति
सीताकौंनि॥ मैं तैं तजिदूरांमभजि॥ कहों हंमारोमानि॥१९॥
सूणि वेवाक्याकरे॥ करि क्रि क्षबे गितपाइ॥ अलषपुरिषके
प्रासिरे॥ चौडै मडैनआइ॥२०॥ इषदारण डरमतिहरण
सैं हरणअमांन॥ त्रिविधितापतिसनांहरण॥ भजिनूंध
लागवांन॥२१॥ अबगांनीरआपोहरण॥ तारणतिरणमुरा
रे सो ओमन पूरोकरण॥ हरितजिसेद बिचार॥२२॥ कांम
क्रोधपांचौंपिसण॥ डमसमनदीबिकार॥ ऐदौरघवोछ
करण॥ भजिसोतंजनहार॥२३॥ साचकहूं तोमैंडरौं॥ कू
ष्यौरह्या न जाइ॥ रांमसंतोष्यांसकलसुष॥ दुनियांरहो
खाइ॥२४॥ रांमरिसकदूहरिरसभुसी॥ आनरिसकरिसां
हरीदासजनयौंकहै॥ मैं हरि छाडौं नांहि॥२५॥ रांमन
हींमेंडरौं॥ कैंडेधरसेबसेबलाइ॥ पतिब्रतापतिकौंन
लब हीं मोटायाइ॥२६॥ प्यास्याजबहीजलपीवै॥ तबही
नंदहोइ॥ बिषकीकिरचीमेल्हिकरि॥ पीपांनजीवैको
॥२७॥ आलवालकरनाफिरे॥ साधहोणकी सोस॥ पेलै
देषेपतिता॥ भनअपणांकी धोस॥२८॥ जनहरीदास
सांनरकि॥ रांमभजनकीटेक॥ लागिरह्या तेजबस्या
औरअनेक॥२९॥ जनहरीदासदुनियांनरकि॥ बि
षयबिषजाल॥ साचकहौं तोलड़िपडै॥ मिलिये तो
॥३०॥ ३०॥ चितावणीउपदेसजोगग्रंथ॥

आंनधांनगुरगांनबिणि बलतदेहकेसाइ अपणंषोट
हीयरा करियोटोषोटाषाइ १ मनमेंछलीकरिकोरकें
गिएंपांनरतहैसास लोनजालियागारहै बिपतिनदी
मैंबास २ अपरिअघिरघरकरतहै चिरस्तुघपलनस्र
हात इत्तवतचितकेचबिबिधिरस अलपस्तुषछिनम
त ३ बालककालेनाडैरैं देतअपमुषिहाय केचाल्या
केचलेगा नरिअनरघउरिनाघ ४ छायाछबिकाय
गेदे देहदीवासाहोइजाव बडाकुवादीवाछुग्या बिप
तिबडाईबात ५ कटकिपटकिआसाअटकि नटकि
धरतउरकाच त्रिबिधितापमेंसोइरह्या समछिनदेषा
साच ६ चेवलचपलचितजेमचोवसमिरि इस्यादेहकी
कोट आवपहरअचवतजहर कहिकोंणजनमकाये
ट ७ घटमदछकउदमाटछेक छकमायाछकआंन
पावधरतछायातकत पषद्दवतजतनपांन ८ छिन
स्यनइडीअटकि चालेलहैगाहिलोन लहैगाहेगाहि
मिहिरहै हैहरिसबसंतनकीसाज ए तमकिधमकि
ततगातिपतिच कालवगतवगतोहि मोहमदीमेंसोइ
रह्या इहअचेतामोहि १० अयाअकलिकहियेकहां
सुतोकोंणउपदेस मनिषजनमनगाउमदत कुपहिक
रतक्योंपेस ११ दूबीतजिसतिपतिगजत लजतबल्व
लघलोस तिरततकतबिचिहीषक्या अयाचटतहैसो
स १२ चेसकिचेतिचिकतनया जहांतहांजलपूरि ।
आसाबसिचिंताइस्या सुतोघाटकहोंहूरि १३ हरिकेरी
दयाछोहमिहरपर गीरधारिकेडोंआज पीवजीवमरिगा

हिया। सुणत समद की गाज॥१४॥ बिबिधि अवधि गति म
तिजाई है वाकी सो जात। चिंता चिंत चित मै बसै। चित
मैं नी चिंता की बात॥१५॥ जगत जगत करा जगिगया॥
भुग अजल बै जाड़ाइ। जत जोबन जीती जुरा। चलत दे
ह बिलाइ॥१६॥ तन जीरण धूजत उरत। मस्त महि
त अभिमान। लोक लाज सब छिनु थिगाई। पसरि करत प
यांन॥१७॥ धम किन धर पाव धरि सके। नैण करत धुनि
सीस। करकं केपे श्रवणां सुणि। अजकं तन जतन नही देस
१८ बारोडा बैगार है। बोलै तो मुख बिकार। कुटक बच
न सब सिरि सहै। बसा मोह की धार॥१९॥ सबद कहु
तरस नां अटत। नटत घटत नही घाट। लुटकि लुटत ल
टिलुटि भवत। तकत तटी हत थात॥२०॥ जीव हल बल
बस्ती धस्या। मरत कुटंब स्यो हेत। यो करियो यो म त्रिक
रे। सी घर अजकं यादे त॥२१॥ यह बिरति सब जीव की। दे
खकाव संसि है मे। जीव कायात रवर तजि यै बी चल्या
वक डि कुटंब स्यो पेम॥२२॥ आन भ्यांन गोबिंद बिमुख
ईबांह॥२३॥ जा णि बूझि बोरा नया। देत सिला तलि हाथ
जन हरीदास निरसै मंते। भजो निरंजन नाथ॥२४॥
॥२५॥ मन चिरत जोग ग्रंथ लिख्यते॥ राम ग्रर को जे कुब
ग्यान कौं। सत ग्रर ग्यान बताइ। कहिं बिधि निरसै आत्मा
निज तत मसै जाइ॥१॥ सत ग्रर चरणां सिर धरों। मैं सति
पूछौं तोहि। प्रम सैं नेही कहैं
२। कोमुरी रमाला कहो

ऐकहागाईऐ सतगुरभेदबताइ ३ मनमुरीदमाला मतो सुरतिसहजघरिलाइ आतमकेअस्थांनिरहो अणबोल्यातुम्हगाइ ४ मनहीचिरतमनसालहरि केतालीयालुडाइ मनऊंडेलेअणसरे सतगुरभेद बताइ ५ मनकोपालिबाअगमकोचालिबा आंम केआसिरैप्रांणलावै रूपबिणिराचिबामंदबिणमां चिबा तोकालकीचोटमेंकोंणआवै ६ मनहैसफू वेनांडेकानीरहै फूसकीआगिहै स्वांनरूपीरूपक रताफटकमणिज्योंफूटिजावे मनकेमतेनषेलिबोरे अवधु मनकेमतेषेलेसषोटापावै ७ सतिकासब दबिचारिबास्वांमीजी फूटेनांडेकानीरतेकोंणमन बोलिये फूसकीआगितेकोंणमनबोलिऐ कूंणमन फटकमणिज्योंफूटिजावे स्वांनरूपीकोंणमनबोलि कूंणमनपांअभेदीनोभेदपावे ८ अवधुफूटेनांडेका नीरबोलिएज पांचचूराचरैफूसकीआगिबोलिऐजद सोंदसाफिरै स्वांनरूपीरूपकरतापमझाईपड़े फ टकमणिज्योंफूटिजावे उलटेगमनमनफोबेथेगा नबयोहीमनहीराकहावै ९ स्वांमीजीमनकेकोंण राहकोंणचाल कूंणमूलकूंणडाल प्रमभेदतेकोंण मनलहे सतगुरह्नोइसमूझाकहे १० अवधुमन केमनयाराह अनंतचालधीरजमूलमोहडाल उलटा येलिमनमनकोगहे तौमनकेआगरिप्रमनिधिलहै ११ स्वांमीजीमनकेकोंणरूपकोंणचाल कोंणरंग कोंणकाल कोंणअस्थांनिमनउनमनिरहै कोंणअस

थांनिमनश्रगहागहे॥१३॥अवधुमनकेबहतरिरू
पवोइचाल॥तीविरंगसहजकाल॥गिगनिश्रस्थांनि
मनउनमनिरहे॥नासिश्रस्थांनिमनश्रगहागहे॥१४
स्वांमीजी कोणसमैगलकोणसनोई॥कोणमहावत
कोणसबोई॥बेडीकोणप्रमिमनजीवै॥बासाकहामन कह
पवि॥१४॥अवधुमनसमैगलधोरजनोई॥ग्यांनमहावत
ध्यानसबोई॥बेडीप्रेमप्रसिमनजीवै॥बासाप्रमस्थनि
स्थ्यीवै॥१५॥स्वांमीजी कोणकोराषिबाकूंसाकोंग्राषि
बा॥कूंणकरिबानवषंड॥कूंणसबदलेनिरंतरिषेलिबा
कूंणसबदलेमिलिबाश्विचंदे॥१६॥अवधुमनकोराषि
बामनसाग्रासिबा॥त्रिबिधिकरिबानवषंड॥सतगुरस
बदलेनिरंतरिषेलिबा॥ग्यानषडगलेमिलिबारिवचंद॥१
७॥स्वांमीजीकोणकूंमारिबाकूंणघरिश्रोणिबा॥कूंणवि
ध्यायबानारी॥कूंणकेपहिरैजागिबा॥कूंणश्रस्थांनिमि
लेषेलिबासारी॥१८॥अवधुमनकोंमारिबासहजघरिश्रो
णिबा॥कायावनराषिबानारी॥सीलसंतोषलेपहिरेजा
गिबा॥गिगनिश्रस्थांनिमिलिषेलिबासारी॥१९॥स्वांमी
जीकूंणकूंपकडिबाकूंणकोंचूरिबा॥कूंणकाभेटिबा
पगरा॥कूंणसबदलेनिरंसैषेलिबा॥कूंणसबदलेगहि
बंधिबारा॥२०॥अवधुमनकोंपकडिबासेसकोंचूरिबा
तीरकाभेटिबापांसागवोहनिरपखसबदलेनिरसैषे
लिबा॥मनपवंनगहिबंधिबापारा॥२१॥स्वांमीजीकूंणगया
बा॥कूंणजांतारायणां॥उलटीस्वरतिकूंणर
रसपीवैगामजीवैगा॥कूंणरूपलेणांकूं

रिखाडणाय इंमिरत्तकरिनपीवणं २२ अवधुमन
गयासगाया जोलाराखणं उलटी सुरतिअगमरसचा
एणं पीवेगायजीवेगातत रूपलेणं पांचौंदुद्वारसि
थकरिछांडिबास इंमिरतकरिअपीवणं २३ स्वांम
जीबिषरूपी तेकौंणबोलिये अगनिरूपी तेकौंणबा
सुषरूपी तेकौंणबोलिए प्रमतेदत्तेकूंणबोलिये तहां
यानमाया २४ अवधुबिषरूपी ग्यानदगधी अगनि
रूपीतेकांमक्रोध्या सुषरूपीतेप्रमसंगी प्रमतेदतेनि
जनराया २५ स्वांमीजीकौंणततपलटिबा कूंणघरि
आंणिबा कौंणपुरिषलेबापाली कौंणअस्यांनि उनम
नीरहिबा कूंणअस्यांनिलाइबाताली २६ अवधुपं
ततपलटिबा सहजघरिआंणिबा प्रांणपुरषलेबाप
ली अरधअस्यांनिउनमनीरहिबा प्रमअस्यांनिलाइ
ताली २७ अवधुतरंमका तांडातांजिबा त्रिबिधिता
मेटिबा इलापिंगलारापिबानारी लोसत्दूटालिबा
कनालिबालिबा तहांदेषिबाकिलिमिलिजोतिजाली
२८ स्वांमीजीतरंमकातांडातेकौंणबोलिये त्रिबिधि
तापतेकौंणबोलिए कौंणबोलिए इलापिंगलानारी
लोसत्दूकौंणबोलिये बंकनालिकौंणबोलिये जहांदेषि
बाकिलिमिलिजोतिजाली २९ अवधुतरंमकातांडा
तेचकबोलिये त्रिबिधितापतीनिगुणबोलिये सवपवं
बोलिये इलापिंगलानारी लोसत्दूकंनककामणीबोलिये
बंकनालिसुषमनांबोलिये उलटैगासुषमनाप्रमस्थ
नेदेषी तहांदेषिबाकिलिमिलिजोतिजाली ३० अवधु

ऊपसुषमेटिबासंतोषघरिरहिबा॥सहजिसमाइबाते
जोगी॥हंसस्वंप्रमहंसमिलाइबा॥तहांलागिकाटिबा॥
कालरोगं॥२१॥स्वांमीजीऊपसुषकाघरकौंणबोलिये
संतोषकाघरकूंणबोलिए॥सहजिसमाइबातेजोगं॥प्र
महंसतेकूंणबोलिये॥तहांलागिकाटिबाकालरोगं॥२२
अवधूऊपसुषकाघरअकंमेत्रबोलिए॥संतोषकाघरसं
ताबोलिये॥सहजिसमाइबाप्रमजोगं॥प्रमहंसपारब्रह
बोलिए॥तहांलागिकाटिबाकालरोगं॥२३॥स्वांमीजीपान
इंद्रीपंचप्रकृति॥कूंणअस्थांनिरापिबा॥कूंणअस्थांनिरा
पिबाबाई॥कूंणअस्थांनिमनकौंरापिबा॥कूंणअस्थांनि
रहिबासमाई॥२४॥ज्यौंकंवलजलमैंतैसाजलमाहि॥अब
अंतरिनिरंतरिनीरलाया॥यौंनरंमिसलाप्रमानंदपाअ
सी॥सकलब्यापीकहैरांमराया॥२५॥स्वांमीजीकूंणफूलनि
फुनिखिरे॥कूंणनरंमताफिरै॥कूंणकैआपिंरकौंपत्र
पावै॥सतिकासबदविचारोस्वांमीजी॥कालकीचंपनमंड
वंणआवै॥२६॥अवधूकायाफुनिफूलनिखिरै [illegible]
फिरै॥हंसिप्रमहंसनहीपाया॥ [illegible]
नतरमैंजबसाचआया॥२७॥स्वांमीजी [illegible]
याहंअजरसबदविकारं॥मायामै [illegible]
है॥कहांलागितरिबापारं॥२८॥ [illegible]
मघररहिबा॥अजरसबद [illegible]
पैसिबा॥अनमंनीलागितवीर [illegible]
म्हारीजातिबोलिए॥कूंण [illegible]
मैमा [illegible] कूंणदेसकूंणद [illegible]

सकावासं ४० अवधुअनीलपुरिसहमाराजातिकोलिऐ
करत्वतिकुलबोलिऐ असापांनलेत्याउदासं दयादे
सऐकदसा अमस्तुतिनहांहेमा राप्राणपुरिसकावासं
४१ स्वांमीजी कूंणतरवरकूंणछाया कुंणकहांकेपं
षीकहांआया कूंणउडांणिकहांसमाया ४२ अवधु
अकलतरवरसकलछाया हमेपरमस्तुतिकेपंषीअध
रस्तुतिआया उलटेउडाणिपरमस्तुतिसमाया ४३ स्वां
मीजी कूंणअपेडित कूंणअरूप कूंणसीतलकूंणधूप
कूंणकलपेकूंणवहे कूंणविनसेकूंणरहे कूंणअस्थ
निमनउलटाजाइ कूंणअस्थांनिमनरहेसमाइ ४४
अवधुब्रह्मअपेडितमनअरूप मनसीतलपवनधूप
केतकल्पेमनसावहे दिष्टिविनसेआदिहरिरहे प्रा
निअस्थांनिमनउलटाजाइ सहजस्तुनिमनरहेसमाइ
४५ स्वांमीजी कौंणअंधारा कौंणउजास कौंणअस्थां
ननिजकिरणिप्रकास कौंणअस्थांनिमनरहेसमाइ
कौंणअस्थांनिमनत्रूपाजाइ ४६ अवधुत्रिविधिअंध
रापांनउजास नासिकवलिनिजकिरणिप्रकास ताअस
थांनिमनरहेसमाइ इंद्रस्थांअस्थांनिमनत्रूपाजाइ
४७ कूंणसत्तरवरकूंपासछाया पंषीप्राणकहोविलंबा
या पंषीतकौकूंणफलषाइ सतिसतिस्वांमीजी कहेंस
मझाइ ४८ अवधुअकलतरवरसकलछाया पंषी
प्रांणकहांविलंबाया पंषीतकौंअगंमफललागेहे सत
गुरसबदांनिरभेरहे ४९ स्वांमीजी कुंणसेअगंमभेदक
वारपार आतमअरथकअंनपार दयादरगाहेकत्रुमे

हरिदसंत।निग्यांनपैवेकग्यांनगुरु॥ जुराजीतीकदद्य
धारं।उरधफूटाकऊ्ाताले।५०॥अवधुहेमेअनंत
रेरंअजबस्वादं।समदिष्टिअगंमनांदं॥दयावरगहेमे
हरिदसंत।बिग्यानपैवेग्यांनगुरं॥जुराजीतीदसंघ
रं।उरधफूटाकड्योताले॥५१॥स्वांमीजीहेमेकोंणगाहे
कहांसीधा॥कूंणमोतीकहांबीधा।कूंणउलटियेल्याकूं
वणपीया।सेसकैमुषिकोंणदीया॥कूंणमेलाकहांन
वेग।पांचजोगीकंहांयेगा॥५२॥अवधुहेमेसारग्याहीस
नदसीधा।मनमोतीनिजअरथिवीधा।मनउलटियेल्या
पवनपीया।सेसकैमुषिसंघदीया।शिवसिसमेला चोक
वेग।पांचजोगीउपायेग।नोनाघनिहंचेदेयिताई।गंग
अटीगिगनिआई।५३।स्वांमीजीकोंणधागाकहांलगा।
कोंणनिहचेउरमनागा।कोंणजोगीअवधूतवाला।कों
णासणकोंणमिरगछाला।५४।अवधुसुरतिधागासहं
लागा।नेहचाया उरमनागा।प्रांणजोगीअवधूतवाला
कांनिआसंणमनमिरगछाला॥५५।स्वांमीजीकोंणटो
कोंणकंथा।कोंणचेलाकोंणपंथा।कोंणकालकों
णसिष्या।कोंणडीवीकोंणसिप्या।कोंणआपकोंणमाला
जोगीकोंणपयाला।५६।अवधुचत्तटोपीवर्वारिकं
पांचचेलाआगमपंथा।उरधकालसबदसिष्या।ला
अजरसिष्या।अजपाजापमनमाला।प्रांमदेरयप
पयाला।५७।स्वांमीजीकोंणधूंईकोंणपरवत।कोंणु
निकोंणवरीता।कोंणचोपडिकोंणसारी।क.
धारी।५८।अवधुधुनिधूंईपेमपरवता।अ

सकाबासं ॥ ४० ॥ अवधु अनाल पुरिस हमारी जाति कौ लिए
कर ह्वै तिकुल बौलिये ॥ असापांन ले सया उदास ॥ दयादे
स ऐकदेसा ॥ अमस्तुनि तहां हे मा रा प्रांण पुरिस का बास
॥ ४१ ॥ स्वांमीजी कूंण तरवर कूंण छाया ॥ कूंण कहां के पं
षी कहां आया ॥ कूंण उड्डांणि कहां समाया ॥ ४२ ॥ अवधु
अकल तरवर सकल छाया ॥ हम प्रमस्तुनि के पंषी अध
रस्तुनि आया ॥ उलटै उड्डांणि प्रमस्तुनि समाया ॥ ४३ ॥ स्वां
मीजी कूंण अषंडित कूंण अरूप ॥ कूंण सीतल कूंण धूप
कूंण कलपै कूंण बहै ॥ कूंण बिनसै कूंण रहै ॥ कूंण अस्थ
नि मन उलटा जाइ ॥ कूंण अस्थांनि मन रहै समाइ ॥ ४४
अवधु ब्रह्म अषंडित मन अरूप ॥ मन सीतल पवन धूप
के तन कलपे मन सा बहै ॥ दिष्टि बिनसै आदिष्टि रहै ॥ माग
नि अस्थांनि मन उलटा जाइ ॥ सहज स्थांनि मन रहै समाइ
॥ ४५ ॥ स्वांमीजी कौंण अंधारा कौंण उजास ॥ कौंण अस्थां
न निज किरणि प्रकास ॥ कौंण अस्थांनि मन रहै समाइ
कौंण अस्थांनि मन लूंपा जाइ ॥ ४६ ॥ अवधु त्रिबिधि अंध
रा पांन उजास ॥ नासिक वलि निज किरणि प्रकास ॥ ता अस
थांनि मन रहै समाइ ॥ इंदस्यो अस्थांनि मन लूंपा जाइ ॥
॥ ४७ ॥ कूंण सुतर तरवर कूं पास छाया ॥ पंषी प्रांण कहो बिलंबा
या ॥ पंषीत कौ कूंण फल षाइ ॥ सति सति स्वांमी [illegible] हो सं
मकाइ ॥ ४८ ॥ अवधु अकल तरवर सकल [illegible]
प्रांण कहो बिलंबाया ॥ पंषीत कौ अगम फ[illegible]
[illegible]रस बदां निरंत्तर रहै ॥ ४९ ॥ स्वांमीजी [illegible]से
वारयारे ॥ आगम अर घकआंन धारं दया

पैडै चलै न कांटा लागै॥ धूंई ध्यान ग्यान की छाया॥ मुद्रा सब
द निरंतरि पाया॥११॥ या वतन की मेढी संवारै॥ सतगुर कहे
सबद ऊंमै॥ मिरतग होइ काल कौं मारै॥ अगम गाइ घरि हूकौ॥
॥१२॥ अलष निरंजन साषी मेरे॥ प्रम जोग पद सूरा॥ काइ
र उलटि जात जहां कातरा॥ पंडु बैठे को ई सूरा॥१३॥ ग्यान
गादलि मन कौं मारै॥ ब्रह्म अगनि लै लंका जारै॥ होम जिग
अंतरि धुनि होइ॥ पाप पुनि तहां लकडी दोइ॥१४॥ अवतौ
ऐको ऐक रूपो लष्या॥ जब लागि यौं बमनि मन वष्या॥ दीन दया
ल सतगुर की छाया॥ सहज समाधि प्रम पद पाया॥१५॥ पै
डा अधर उलटि पर धरै॥ नदी घाटी कंटक कहा करै॥ तारा
मंडल चंद अरसूर तजि उचा जाइ॥ प्रम जोति मैं रहै समाइ
॥१६॥ मूलि मूलि मिमता सब गई॥ अब तौ बात अरहीं भई॥
प्रम उदार अबगति की दया॥ कर ता राजै रति सो नया॥१७॥
जो गमूल का जांणै भेद॥ जनम जुरा कं ध तहां छेद॥ छिपी ना
तथा भिअंतरि लहै॥ सबद विचारि उनमनी रहै॥१८॥ मन मा
रि पवंन मेरा गिर चूरै॥ त्रिवर गुफा मैं आसंण पूरै॥ सिसहर
के घरि ल्याणै सूर॥ सबद अनाहद बाजै तूर॥१९॥ मन सया
माल प्रम सुष मांहि॥ ग्यान गुफा पाणिछाडै नांहि॥ अरस प
रस आनंद रस ऐक॥ हरिजी ति की रही न ऐक॥२०॥ त्रिबे
णी तटि ताली लागी॥ मन थिर पवंन सुषमनां जागी॥ दस
वैं द्वारि बस्या मन जाइ॥ बंकनालि इंमि रत रसषाइ॥२१॥
सूंनि मंडल मैं सीगी बाजै॥ मानौं घटा दसौं दिसि गाजै॥ स
हजि पयाला सरिसरि पीवै॥ मनमति वाला जोगी जीवै॥२२॥
वेल अगनि मन हां बंनदह्या॥ तरवर एक अषंडित रह्या

कांम क्रोध बलीला । चित चौपटि पचीस सारी । आंण बैठे
ग्यांन धारी । पण । मन चिरत निज प्यांन है । सत गुरदीया
बताइ । जन हरी दास दरि अघट देस । घरि घरि रह्या
समाइ । ६ । ११ । अजमद बिशोद जोग ग्रंथ लिष्यते । सत
गुरु के चरणा सा आरंभ करि हूं । अलष निरंजन हरि देष्या
हरि षसो गा चिंता सब जाइ । निरषीप कहि स्यंघ को षाइ
। १ । मन अस्थाघं गया हद जल पूरि । चेला पांच अगानि मधि
चूरि । पांणी जले मीन मरे । असा आरंभ जोगी करे । २ । आ
सा नदी अपूठी बहे । इंम्रित करे ग्यान निरमर हे । नो मेन
दीनि वासी निहचल रहइ । आसा लिह्यां छूषी गई । ३ । आ
संण अधर पवन मन हाथि । सुरति जो गणी जागे साथि ।
प्रम जोग आनंद अभ्यास । निरंतेन या कालका नास । ४ ।
आसा के घरि चिंता बसे । कालरूपणी जीव हो डसे । गगज
मन मधि बेस जाइ । तब जोगी चिंता को षाइ । ५ । सत रज
तिमर मोह तजि माया । मन निहचल निरंजन घरि आया । मु
गाफिस्या वाडि घट घाट । ग्यांन ध्यांन गढि लणा कयांट । ६ ।
त्रिकुट कोट में आसंण मांडे । राजा सी निडंड दे षांडे । षोलि
कपाट घाट घरि लहे । प्रदरि डाल मूल निज गहे । ७ । इंद्रीपां
च ष पंच करि घेरे । जोग मूल के धागे जेरे । जुगति बिचारे
अजरा जरे । गुरगमि ध्यांन निरंतरि धरे । ८ । असलि मारे
आया डोरे । मारण हारक हो लेमारे । स्त्री ने घरि बिसर हरके
हो षाइ । मन हूं जे घरिर ह्या समाइ । दौ हारि जीति काया साह
स्या । बाजी जीती डाव बिचास्या । मेल न हार गया मुषि गोष
ता का पला न पकडे कोइ । १० । जोग मूल गाहि जो गी जोगे

पैडैचसेनकांटालागै॥थूंईआनपानकीछाया॥मुद्रासब
दनिरंतरिपाया॥११॥पाचततकौमढीसंवारै॥सतगुरकहे
सब्दजिमिरतराहोइकालकौमारै॥अगमगाढघरिदढजे॥
१२॥अलषनिरंजनसाषीमेरे॥षमजोगपदपूरा॥काइ
रउलटिआतजहांकातहा॥पंकुंचेकोईसूरा॥१३॥पांन

अंतरिधुनिहोइ॥पापपुनितहांलकडीदोइ॥१४॥अबत्तो
एकोएकरयोलपा॥जबलागातबमनिमनवपा॥दीनदया
लसतगुरकीछाया॥सहजसमाधिअभयदपाया॥१५॥पैं
डाअधरउलटिपरधरै॥नदीघाटीकंटककहांकरै॥तारा
मंडलचंदअरसूरतजितेचाजाद्य॥षमजोतिमेंरहेसमाइ
१६॥त्रिलिलिमिमंत्तासबगाई॥अबतोवातअोरहीभई
षमउदारअबगतिकीदया॥करतारजेरेतिसोनया॥१७॥
जोगमूलकाजाणैभेद॥जनमजुराकंधनहीछेद॥छिपीना
तत्रभित्रेतरिलहै॥सबदनिवारिजिनमनीरहै॥१८मनग
हिपवंनमेरगिरचूरै॥तंबरगुफामेंआसणपूरै॥सिसहर
कैघरिआणैसूर॥सबदअनाहदबाजेतूर॥१९॥मनमय
अरसप
रसआनंदरसऐक॥हारिजीतिकीरहीनरेक॥२०॥त्रिबेम
णीतटितालीलागी॥मनथिरिपवंनसुषमनांजागी॥दस
वैंद्वारिबस्यामनजाइ॥बंकनालिहेंमिरतरसषाइ॥२१॥
संनिमंडलमेंसींगीबाजे॥मानौघटादसौदिसिगाजे॥स
हजिपयालानरितरिपीवै॥मनमतिवालाजोगीजीवै॥२२॥

तातर कर मैं मेरा बासा । म जोति स्वरूप प्रकासा ॥ २३ ॥ त
कांम न क्रोध जोग न ही सोग । मां निज मां नि ह्रष न ही
सोग ॥ राज नरीति जंग न ही संग । गिरह परिवार सुत ब
नित्य न ही संग ॥ २४ ॥ अलय निरंजन निरंसै नाथ । राग दो
हेत न ही हाथ । ता दरबारि लेख क को रहै । दिल मालिक
सब दिल की लहै ॥ २५ ॥ सब मैं बसै सब की लहै । स्रष्टै
फेरि जाबन न ही कहै । वार पार न ही आग म अगाध । तहां
क आधको इप कंचे साध ॥ २६ ॥ रसनां मुष सी स हाथ न
पाव । घट न ही अघट बेर न ही जावे । रूप अरूप तेष न ही
जहं । माया अगनि न ब्यापै तहो ॥ २७ ॥ काल न जुरा दे
ही दीन । जीव जन म स्रष्ट न हा कीन । ताकी की मति को
इ कैसे लहै । कहत वकहत बौरा स्रो इ रहै ॥ २८ ॥ जन ह्री
दास काल न ही जाल । पूरण ब्रह्म अनंत प्रतिपाल । रम
ता रांम निरंजन राइ । अब तो मन त हां रसा स माइ ॥ २
दिल मालिक षालिक साहिब मेरा । जन ह्रीदास घरि
जाया चेरा । पकडि हाथ जिनि छाडो मेरा । पड्यार हो
चरणां तेरा । काल जाल ले करै न केरा ॥ ३० ॥ ३१ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ बांण पकडि उचार ह्या । मन फिरि
गा रुधि । नी सांण न्यारा रह्या । मंडी औ रही मूंधि ॥ १ ॥ साच स
ब्द मानै न ही । रूवत हां चलि जाइ । मन सा बाचा करम
गनिका को बरत ताहि ॥ २ ॥ मन ह्म स्यों घडि कूल स्यो
रिषे दिया वै छेह । नाई का गुण छाडि दे । बसधा का गुण
लेह ॥ ३ ॥ अगम तहां पकं तान ही । रही मरम की रेष । मन
का मास्या मरेगा । करि करि नां नां भेष ॥ ४ ॥ माया का कादो

अगमसबदसुयदेवसुभणो । संकरे कह्यासुणाइ
तनदीयाराष्यासबद यौमनहवतेघरजाइ २० इंदुरी
कतेगतरी रत्नाकरतसिंगार तबसुयदेवमारारया
धस्थानबहतीधार २१ जनकजनकसबकोकहे अम
रलोकस्योंबाथ जनकमताकुबश्रोरथा उयसुयरहव
अवाष २२ पावअगानिमुषिनवरे जनककहेवसो
इ दुहादाधावहोदाफिहे इहनरोसासोहि २३ जोइम
छिद्रपहिरस्या मायाचरकीछांह गोरषकुबतेलान
या जिनिरुरकाब्यागहिबांह २४ राजपाटतजिमंद
घरी कीयाअपणाकाज जोमायाननराजालहे तौवे
क्यौंछाडेराज २५ हसतीघोडागावगाढ सुतबिनताया
रिवार कहैमातामेणावती तजिगोपीचंद यकुयार २
६ यकुसुयबियसंमिटेषिये लाधीसोजनन्हारि अम
बसतअंतरिबसै नरसगोतासारि २७ बलषाङ्मानिर
बलसया गोपीचंदगाहिपांन संनिमडलमेरमिरस्या अ
रामबोरअस्थान २८ छत्रसिंघासण छाडिगया अैसीब
पीआइ मायासंगिसांईमिले तोबलषछाडिक्योंजाइ २
९ सेकतुलाईगीदवा इहरंककेईद यघरतलेबिछा
इकरि सांईमजाफरीद ३० रतनपारखुमनहम्की
या कोज्यासबहीसेय तबकाकोगोरषमिल्या ऐमनव्ह
कागुणदेषि ३१ गंधनावमनहवसतो मनकेमनहवदे
इ एकैमनहविहरिमिले येकेयइदादोइ ३२ कामक्रो
धमैतेमनी पराहेसक्यानचूरि यामनहविमनबूझिये
हरिसोंपडिहोइहरि ३३ रुणजीतेगोबिंदसजे निरतेनिज

रिजाइ।यामनहरिमननीपजै।जाइपडेनकाइ॥३४॥
कालकहरगारजतफिरै॥दिनिदिनिब्यापैरोग॥जनह
रीदासहरिभजनबिनि॥जहांतहांबिपत्तिबियोग॥३५
जनहरीदासडरमयतहां॥जहांनहरिस्यौंहेत॥तेनर
हरिलागानह्वै॥जंमघारेडंडदेत॥३६॥जनहरीदासगो
बिंदभजो॥भूलानहीनहोइ॥अबभूलातेफिरैहगा॥उ
ठइपैडादोइ॥३७॥२४॥मन [illegible]
ते॥मनबसंगसुणौहोसाधो॥तमस्यांकहूंसुणाइ॥कब
हूंमनबिषयांतजै॥कबहूंबिषफलखाइ॥१॥मनसाको
लाहूकरै॥कबहूंनआवैहाथि॥मनभूवोनरमंतफिरै॥गु
णइदेस्यांकेसाथि॥२॥यामनकीयारीतिहै॥जहांतहां
चलिजाइ॥कबहूंलौटैगारमे॥कबहूंमलिमलिन्हाइ॥
३॥यकमनधुरिमनारिस्तनमात यकमनबंधुयकभौ
मनतात॥यकमनमूरियकमनदेव यामनकालहे
ननेव॥४॥यकमनसन्निस्पकैजाइ॥यकमनभंजैनि
रंजनराइ॥चलाबैसिकंचनदेकाटि॥यकमनबिकैबिरा
णैहाटि॥५॥यकमनदाताहोइदेतकरै॥यकमनभूसोमां
गोमरै॥आरंभकरैरहैनिरदद यकमनमुक्तायकमनबं
द॥६॥यकमनबादसपेंडाकरै॥पसुज्योयेतबिरांणचरै॥
रोपैआपआपकोपास यकमनकरैआपकानास॥७॥यै
कंमनसाहहैबेद॥लखचोरासीघरयकमनधरै॥पलकप
लकसैंजामैमरै॥कबहूंभूवाकबहूधाया॥मनहीकोम
नचेटकलाया॥८॥यकमनसाहहैबेदगराज॥स्तक
नसिंघगोबाज॥स्याहलालपीलीमधिरेय॥यक

क्रिकटासेय ॥९॥ यक मन तरवर यक मन छाया यक
मन बिरकत यक मन माया राति दिवस मन रहै उदास
यक मन करै गुफा मैं बास ॥१०॥ यक मन सुर नर असुर
अतीत जर मरो छिमि रघा सेसीत सत गुर कदे सयक
मन करै छाडे कुपह सु पह पग धरै ॥११॥ साध सबद मा
नै सुख सार या मन का कुछ अगम बिचार यक मन रं
न बन यक मन सहर यक मन ईसिर तयक मन जहर
॥१२॥ तीरथ बरत करै समिलाइ यक मन अगम तहां च
लि जाइ यक मन अंबरी बजराज रै सबद पुरण कोया
बिधि करै ॥१३॥ पैंडा अनंत न आवै वोड कहो कहां लो दी
जै जोड जोग ध्यान धुनि यक मन धरै यक मन सेष बहत
रि करै ॥१४॥ जन हरीदास कै या ही रीति अरस परस हरि
ही सो प्रीति जन हरीदास या मन सो डरै राति दिवस हरि
सुमिरण करै ॥१५॥ २५॥ मन ग्रंथ लिख्यते ॥
फिटि फिटि रे सन बिकट बहो तनाटिक कहां नाचै कबहू
दाता होइ देइ क बहू जाचिग होइ जाचै ॥१॥ मन जोगी ज
गम सेय मन बहु भेष बणावै इधाधारी होइ फिरै सर मैं
दुख पावै ॥२॥ मन गाहिबे से मूनि निज सूनि की षबरि
वे माथा सूंछ मुडाइ छापा बहो तिलक बणावै ॥३॥ चोका
देवै चाहि रसना के हाथि बंधावै मन बिषया संगि रमैं
मन माया स्यों लागै मन सूरा तण सबल मन मुषि मोड़ि
भागै ॥४॥ मन बहो जोधा बलिवंत मन हीं रंग बिरंगा म
न रूप देषि प्रजलै दीप ज्यों जलै पतंगा ॥५॥ मन गिरवर म
न कूप मन गंभीर मन गंदा मन आधा घोर अंधार मन सी

तलमनचंदा ॥६॥ मननकीमननीच। मनफाले मनफले।
मनफिरिमरैपियासा। मनग्रमस्तुयमागरिफले। ७ म
नतारेमनतिरे। मनलेपारिउतारे. मनचौरायीकाजी
व।फेरिउंडेदहिमारे।८. मनजबकमनगिरफ कउवा
कौरूपवणावै। मनस्तूकरमनस्वान महायरलेनाद्दि
जावै।९। मनपांणीमनलाड मनकौडीमनदार मन
कचनमनकाच। मनमुरीदमनपीर १० मनमेना
मननिरमलो। मनसाचौमनझूठो मननकौमननीच
मनउतिममनकंचो। ११ मनमांनामनयाप मनदरदी
पदियावै। मनमीलत्यामनस्यथ मनफिरिमनदामन्ने
।१२। स्यमनिउलटीफेरि याचमनीनकटिवनाये व
कनालिबिस्राम। फेरिनानीस्यान्नाव १३ पाणीमाहीप
सिअगिमकाहीचलावे मनफिरियांमकाम कोधकोवा
डउगावै। १४। मैतैप्रवगुमान निमयनदारझगनयावे।
गिगनिमंडलेमंख्याइ अगमस्यांमुरतिनगावे-१५ आग
अणैमेसीर। गिगनिरमउनटाव्याव जनहरीदायमनवि
कटहै। बहोवरूपकरिजाइ मकड़ीजैसायरमनुष दो
लोगोडांयाइ।१६॥ ... मनउपदेसजोगराग ... क
वकफाडेकवकजोडे क्रवकमांयेकवकतोडे १ कवक
मीसैकवकज्ञोगे, कवक जोगाध्यानस्योलांगे २. कवकजुग
मैहारीघोड़ायाइ कवकउकालेडयघाइ ३. कवक.वन
वीतिअंणरावी, कवक सुरतिनिरंजनलागी ४. कवक.न्व
नीकेघरिबेह, कवक अरकिशारचारदं ५ कवक.मार
मानउरिधोरे. कवक उलटिझांणिकोमारे।६ कवकजरमा

अजराजरै ॥ कबकुसबदकसांमिजिमरै ॥७॥ कबकुपां
चौंडूडीदवै ॥ कबकुमेरतेरलेंचाखसैं ॥८॥ कबकुमोहवि
रयफलखाइ ॥ कबकुसाधसंगतिचलिजाइ ॥९॥ कबकुत्रि
विधितापमैंबसै ॥ कबकुंबयरुअगनिमेंधसै ॥१०॥ कबकु
हरितरवतहांजाइ ॥ कबकुबैसेपूगआइ ॥११॥ कबकुल्यो
केपेडेजीवै ॥ कबकुअगमप्यालापीवै ॥१२॥ कबकुहारि
जीतिरसरीति ॥ कबकुरांमभजनस्योंप्रीति ॥१३॥ कबकु
कायाकांमणिकसै ॥ कबकुकायास्योंमिलिमेलेंहसै ॥१४
कबकुंचंदसूरसंमिकरै ॥ कबकुध्यांनअलषकाधरै ॥१५
कबकुत्रिबेणीसंगिन्हावै ॥ गुरगमिबसतअगोचरपावै
॥१६॥ उलटाषेलिकायासबसोधै ॥ सुंनिमंडलमेंपवंननि
रोधै ॥१७॥ हदकरिमरैनबैसैहारि ॥ अरांमध्यांनधरिसहजि
विचारि ॥१८॥ षटचक्रमैंऐकेडोरि ॥ सतगुरसबदगयाम
नचोरि ॥१९॥ ऐकमेकअंतरकछुनांहि ॥ हरणबसबसैम
नमांहि ॥२०॥ बंकनालिइंमिरतरसखाइ ॥ मनमायाकाया
बसैनजाइ ॥२१॥ मेरडंडमधिडोरीलहै ॥ ब्रह्मअगनिकाया
बनदहै ॥२२॥ दसवैंवारिबसैमनराजा ॥ सबदअनाहदबा
जैबाजा ॥२३॥ जनहरीदासमनबसिभया ॥ गयाभरमसब
भोर ॥ ऐकऐकस्योंमिलिरह्या ॥ तबपाईनिरभैठोर ॥२४॥
॥ग्रंथ २७॥ अथहठजोगग्रंथलिख्यते ॥ दियणदेससहरकुं
दनपुर ॥ पंवंणिबतीससुधारी ॥ राजासलोलोगनिरभैकै
स्यांराजकंवारी ॥१॥ रांणीकहैसुणौराजाजी ॥ बिलंमनकी
जेकाई ॥ बाईबडाबडोबरहैरी ॥ आदूआदिसगाई ॥२॥ नि
जांकुरिनगरिबसैकंवुलापति ॥ सकलसरोवंणिस्वांमी ॥ ब

रवेआरि बिघन नहीं वेगांम॥ घटि घटि अंतरजांमी ३. घेटे
नवधे सदा ज्यों को त्यों॥ बिरचि न बुरो लयावे रांम नरत्ता॥
रस्त्रमरस्थ दाता॥ सो म्हारे मनि भावे ॥४ सकल भवण कर
ता करणमें॥ बि घाने आये काई॥ राजा कहै सुणो रुक
मईया॥ नहीं दीजै रैबाई॥५, रुकमईयो काइ का सेनमा
ने॥ आंन समाई है रे॥ राजा कहै देखि बरबरस्यो अटकि॥
अपूता फेरै॥६॥ चेदेरी सिसपाल असुर आरि॥ लगन तहा
लिखि दीया॥ हैवर गैवर पाइक पाला॥ वहां जो धोसं गाली
या॥७॥ केहरि कहो घास कयो चारि है॥ आंणा असुर बुलाई
जीवूंण नहीं मरण सिर ऊपरि जीनयांऊ बिसघाई ८.९
सासो सिसपाल चंदेरी चिता॥ सो बर तहां न भाजे ग्रबपु
मान दैत बकुतेरा॥ भिमता कौ रसयाजे ९ प्रभ सनेही
प्राणनाथ हरि॥ सदगति सदा सभाई॥ अलख पुरिस अब
गति बर सिर ऊपरि॥ क्रितम बस्या न जाई॥१० क्रितम तको
सकल सक्ति बिनसे॥ अबिनासी महलो माई॥ आदि अति
हरि सदा सनेही॥ प्राण बसे तामांही ११ बिप्र बुलाइ अ॥
बला पाइ लागी॥ रांम नहीं चलि जाई॥ मीव नलो काई दास
नहीं ज्यों॥ रुकमईयो दुख दाई॥१२॥ अब हरि रये साथ तेडा
डो॥ पति महारा कुं प्यारी॥ व्याकुल नई माघा निति दिन॥ दर
सो देवमुरारी॥१३॥ बांग्रण बिरह मोव ने म्हारे कहा तको॥
मनि भावे॥ रुकमईयो रामकहै सोनमाने॥ न्हैंडो नरम नहां वे
॥१४॥ घड़ीमकु रत आदि सु दिनि दिनि॥ पतिवरता यो नांखे
चोरी लियी बिप्र ने दीन्हो॥ रयो बिप्र बिचि रायो॥ १५ मनमध
बिप्र आया बेगे म पुरि॥ सिख्या सीलेप कुं चाया॥ देखि देखि द

रिका गादनांच्या चलो बिप्रम्हे आया १६ साचा सबद
रांयि सिरउपरि आंनंद अंगिन मावे बांम्हण हरिसुय
देरिब धाई मांगे नेडा जांन बतावे १७ अनंत कोटि
बरह्म मंड सोंज सब इंद्र कुंमेर घणेरा ब्रह्मा अनंत मह
देव अगिणित चंद सूर बकतेरा १८ ऐ नौ नाथ सि
ध चौरासी सुर तेतीस सबाया नारद मुनिजन साध स
कल संगि इसा भेद सौं आया १९ सील संतोष सति
या सबूरी करम कपूर उडाया ऐसे कवि सौं हेले दौ
डा पवंन छुरी चिटकाया २० आरती करि करि च
रण पलोटे के चरचे के गावे पेम प्रीति चंदन घसि अ
हिं बिधि प्रसिप सिरसुषपावे २१ साथि सषी लेयेलण
कै मिसि निज बर हेरण आई बड कंवरि हरि देषि न
जरि नृंपि नष सष र सास माई २२ बड बिस्रांम तहां
हरि उतरे आतम अंतरि नेरा सषी सहेली मंगल गावे म
न साचा वरि फेरा २३ नैणां राम बसे हरि बैणां सकल स
यां सुय लाधा सुर तेतीस घेरि घरि आया सतगुरु डोरा
बांधा २४ जर थेजर थे चोरी चरचे तहां हथलेवा दाया
अंति उछाह अ बलासंनि आंनंद हरि संगि फेरा लाया
२५ रली रंग राग नानां बिधि सूंनि मंडल के बाजे पति
ष्योंप्रीति जी ति गुण दूजा बेणि गिगानि मे बाजे २६ प्यांन
गुलाल केसरि बकुकरणां अरथ अबीर पिंडाया आजि
सषी हरि महेलि पधास्या तलम्हारै मनि भाया २७ सेंद
रसे कसा च उरि अंतार संमिता सो डि. बिछाई राम राइ
तहां आइ बिराज्या सो सुष कह्या न जाई २८ गातम्म

मैंगमकरिराषोंसेऊसंनेही आया॥बिणिदीपकदकंदि
सिउजियाला॥आंगणिचौकिपुराया॥२॥घरिघरिमंग
लचारसदासुष॥नरनारूबनमाली॥सुषमैंसीरअषिल
अनिनासी॥प्रमजोतिसेताली॥३॥प्रणिप्रसिद्दरिसंगि
करिलीन्ही॥पतिकोंपलीनमेल्हीं॥जनहरिदासनिसिदि
निअंतिआनंद॥ताआनंदमेंषेलो॥३॥तोडरमल॥अन
हदबेणिबजाइ॥टोडरमलजीतो॥हरिमजितत्तरैपार॥
टोडरमलजीतो॥१॥मनगाहिपवनअंगमगंमकीया॥प्रं
मसंनेहीपाया॥पांचसषीमिलिमंगलगावें॥आंगणिचौ
कपुराया॥२॥चित्तचोकीहरिचरणांराष्या॥कंवलसि
घासंणदीसेया॥इलापिंगलाकरैआरती॥प्रेमकलसठ
रीलीया॥३॥गिगनिमंडलमेरचौमांडहो॥पांचतणीत्यौ
तोणी॥आतमप्रमात्तमहथलेवो॥पीवसंगिमेलेजाणी॥४॥जं
न्हरीदासहरिअरसप्रसहोइ॥नेणानेहबधाया॥जाकी
षासोमहलिपधास्या॥मेरेरामसंनेही आया॥५॥२८॥
इमिरतफलजोमग्रंथलियांते॥असलिमावजनअंतरि
आवें॥ग्यानबिचारबिबेकबतावें॥१॥दयासबूरीजरण
जोग॥त्रिबिधितापकालगेनरोग॥२॥सीलसंतोषकु
निअजपाजाप॥सहरिघरगयापुरातमपाप॥३॥सतअ
रसहजपवंनमनहाथि॥मनसापाचौंचेलासाथि॥४॥
इववतकोईसकेनफूरि॥ल्लगयामिताकादूटि॥प
सुभितासबधिबियामनसाथि॥सगतिजोगदोइलाइ
हाथि॥६॥कामक्रेगाईदचौटीफिरिघेरया॥पकडिसील
संतलसोजेस्या॥७॥निरभैनयानंगरमेराजा॥तीनरकै

मुषि देष्या बाज ॥८॥ पवन पया लाइ मिरतपांन एकाद
सी अषंडित ध्यान ॥९॥ हेत सा पेम का बंध मन का छू
टि गया सब द्वंद ॥१०॥ सतगुरि एक अमर फल दी
या सो है म हेत सौं तिस्यौं षीया ॥११॥ मीठा अजब अकल
संमि ताइ ता की फंक बिथा सब जाइ ॥१२॥ यक इंमिरत
फल जा पै होइ ता का पलान पकडै कोइ ॥१३॥ पेडा अधर
अद्दवी चाल अब कै सतगुरि कीया निहाल ॥१४॥ हारि
जीति का पासा गया उजल निरमल निरभै भया ॥१५॥ जा
णि बूझ नागो सो जीवै सहजि समाधि सदा रस पीवै ॥१६॥
अजपा जाप जगन बलि जावै ऊक डगाया बस्या फिरि गा
वै ॥१७॥ सोइं मिरतफल हिरदै धारया हिरदै धारि काल से
मारया ॥१८॥ माया दीन्हां मो लिन लहिऐ सरबस चेता का
होइ रहिऐ ॥१९॥ या से जुग अवधि तन छीजै तन मन दे ला
हे लो लीजै ॥२०॥ रूप रेष बार नहीं पार या फल का कुछ
अगम बिचार ॥२१॥ तरवर डाल फूल फल नाहि सापमू
त बसै सब मांहि ॥२२॥ मात पिता गाव न हि गाव अलष नि
रंजन ता का नांव ॥२३॥ बिद्या नगरि बसै सब लोग मन
का छूटि गया सब संसै सोग ॥२४॥ जन हरीदास अब औसी
सई मनसा दौडि अगम तहां गई ॥२५॥ सो की डोरि सुर
ति मधि धागा मन निहचल निरभै सुष लागा ॥२६॥ ग्रंथ
२७॥ ग्रंथ जन उपदेस जोग ग्रंथ लिष्यते ॥ पांच तत्त गुण तीनि
घा तत रहां सात सम होई जाग्रित स्वप्न षपति सुपन पांच मान कं
दूषी पचीस प्रक्रति लोई ॥१॥ हेत अहेत अलसा क निद्रा चित
चंचल निहचल नाहीं पांच क मैं दूरि कम स्तुष मन प्राण ब

सेमनसातामांही॥२॥रागदोषअभिमांन॥डिंभपाषंडअ
हंकारा॥कांमक्रोधमरममोह॥आसाहवलोभअमांन
अधारा॥३॥सीतउस्नछुधात्रिषा॥मानिअमांनियषयोषे
मेभितांमनोरथसोचपोच॥संगिसांसैसोषे॥४॥कुबधिअ
बिद्याकलपना॥चितिविभ्रांतहांसहिऐ॥च्यारिअवसथा
षटचक्र॥घटसोअवघटयोंकहिऐ॥५॥घटमेगोरषग्यं
ना॥ब्रह्माबिचार॥हंणवंतहेत॥बिष्नबमेकासरथरीना
व॥महादेवमन॥जलंधरीपावजोग॥नारदनेहालछमणांक
वारलषणबतीस॥सुषदेवसंतोष॥गोपीचंदआनंदासी
गोरिषसील॥चरपटचिंत॥भेमझहला॥दषमगुरषकास॥
धूधुनि॥अजैपालअरथ॥जनकजांणपणें॥चौरंगीनाथचौ
पीदसा॥अमरीषअचा॥हिसतीकणेरसाच॥सनकसति
मया॥अरजनन्याव॥सनंदनसहज॥हवतालीहग॥कंवार
निस्करम॥हालीपावहोतिव॥निहकंपकबीर॥मीडकीपा
पपमोध॥नांमदेवसिंह॥धूंधलीमलध्यान॥रहेतिरेदासअ
वघड॥नाथअघट॥पणपीपे॥सुघीनाथप्रांण॥समकिसे
को॥स्हणीरांमचंद॥दत्तदया॥मछधजमूनि॥जडभरथ॥
भेद॥गोरषसबघटमांहि॥सुतोसबघटकीदेषै॥स्याकरै
ताहिकहै॥ओरकेपढेवलेये॥नाथपाकडेहाथ॥एक
इ॥हरिचरणंरायै॥भजोनिरंजननाथ॥सबदसतगुरये
भावै॥पंडबिरहमंढदोइसिध॥पांनअरगोरषलहि
॥जनहरीदासभ्रमछाडि॥पांनगोरषतहांरहिऐ॥६॥
॥ग्रंथ २०॥ बारजोगग्रंथलिष्यते॥बारबारमनकोंप्रमो
धौंमनमांहिपवनसहरसबसोधौं॥१॥ अरंमपांन

तस्कर मारि मनावै आसंण अचल तहां मन निहचल
निरंतर बसत बतावै १२ स्वांमीजी दोरघ घटा कूंण मुषि
सोषै बादल बिघन बिठो है सात समंद जल तिरणक
बिन है कैसें प्रचा होवै १३ मन सा घंटा पवंन मुषि
पीवै सोहं मनो रथ मारै मन गाहि पवंन गावं णंबो गम
पुर सुरति सहज घरि धारै १४ स्वांमीजी कूंण बसत
कर स्यंग हिडोरे कोण कहां सुष पावै मन कूंण कहां क
सै कंचन ज्यौं सो लाह कला दिखावै १५ अवधू पवन बसु मां
न चरण तलि चूरै अरघ अबीर सिंडावै मन को ब्रह्म अ
गनि मैं होमैं सब धि स्हाग गलावै १६ कूंण घट तत कूं
ण प्रकासै नो धा न्याति न न्यावै सीतल कोइ सद्वारस पी
वै निरंतर निज घरि आवै १७ अवधू रजनी घट तत देस
या सूर दोइ दोइ च रनडु रया ये ले प्राण निरंतर मैं आ
नि अंतर घर की आया १८ स्वांमीजी जोगी कहो कूंण र
स खाई कूंण जड़ी ले जीवै कूंण गुफा मैं निसदिन बैले
कूंण पयाला पीवै १९ अवधू बिरले नीदर बास न जावै
षिमां जड़ी ले जीवै ग्यांन गुफा मैं निसदिन षेले आ
तम पयाला पीवै २० सो जिस मांही सही बिराजै सुरति तास
पिछांणो चांवंड के सिरि चोट लगावै जैसा राषै यांणो २१
सो पाछ कौ ता रनता रै मे रूका मेन्यारा अनहद सबद पे
क्सि अंतरि आदि गाया सू जारा २२ त्रिबिधि ताप ति
रषूल तत काकि ततजि मूल कंवल दल फूलै ग्यांन चक्र केत्र
रिद वजीते त्रिबेणी संगि कूलै २३ स्वांमीजी कौण जोगजा
में स्वनिरंतर रैसे रंग रवी तरि तो है आसंण कौण कहां सो बैठा

सुरतिकहांलेजोडे।२४।अवधुमननिहचलनिजवसत
बतावेरोगपलटिकैजोगी॥पांनतषतिबेकारसपावे
प्रमसूंनिरसतोगी।२५।स्वांमीजीआनंदरबाडिअगंमघरि
पैसे अंबरिअलषलषावे।ताकारूपकहोधोकेसा।संम
झिबिनांसुमनावे।२६।अवधुहरिप्रस्यातबहोमनन
रैतोकैहरिप्रस्यानांहो।तेनमनिलागियामनहीरा।
वकुडिनआपेझांई।२७।सतगुरसबदसाचकरिमां
नेसतगुरसाचबताया।अइसजीवकाज्योंहैमेला।त्योंसत
गुरिसमझाया।२८।जलमेंअगनिअगनिमेंजलहै।सब
मेंहीसेपांणी।प्रगटीझालअगनिजलसेआ।तबअ
गनिअगनिमेंसमांणी।।२९।स्वांमीजीयाहतोअजरक
हीकोजरेगेसुधाबिनांकोंजावे।मांणीअगनिकिसीबि
धिसोवेमनप्रतीतिनआवे।३०।सतगुरसबदअगम
कीपेड़ी।सोचढिलांघैपारा।काठ्याकाष्टअगनिमेंडा
ल्या।तबजलिबलिभयाअंगारा।३१।स्वांमीजीसंजमकूं
एकहांधसिकहोधोतीकूंणमंगावे।निरतैडोरिकहां
लेरापैकूंणकलसभरिआवे।३२।अवधुसंजमसीलपांन
धसिकहोधोतीध्यानलगावे।सुषमनिडोरिगिगनिलेरापै
बिमांकलसभरिआवे।३३।स्वांमीजीकूंणबसतजासूं
मनप्रेमोकैसेचोकोदेवे।कूंणबसतलेआगेअरपैकूंण
जतनस्योंसेवे।३४।अवधुआत्मपमात्मपतिप्रेमेमनसा
चोकोदेवे।प्रेमपातिलेआगेअरपेमकरतजतनस्यूंसेवे
।३५।स्वांमीजीदेवलकूंणकहांसोमूरतिसेवगकैसेसुष
पावे।चोकीकूंणकहांलेराषेपातीकूंणचढावे।२ दो अ

वधुकंधाकंवलसुलटिकरिस्धा। बटवैबसंतसंतोलेवि
टवैकी हरिचरणाराये। तनमननपातीवाटै।३७। स्वांमी
जीपंडाकूंणकिसीबिधिचालिबो। निरधिनिरासबिचारै
रूपकिरचेनघरिघरिनांचे। जुरा जोगणीहारै।३८। पेंडा
अधरपगांबिणिचालिबौ। आंषिअनूपउघारै। आनंद
सहतसदारसपीवै। करमकणूंकाडारै।३९। स्वांमीजी
अबलाकूंणअगामघरिषेलै। सूतपरोषतजाया। जनम
वसबेसकलकुलसनमुषि। प्रमसूंनिस्पोलाया।४०। अ
वधुबांझनईतबबेटाजाया। बेटैबंनवहजारा। रसना
पषैपरमसुषबिलसै। प्रचैपांणअधारा।४१। तीनिलो
कनांनांरसबिलसै। अतिकालिदुषदाई। तीनिलोक
आगोसुषस्वांमी। सोसुषद्यो हबताई।४२। दिष्टिमुष्टि
नआवनगाथा। रहैसकलतैंन्यारा। तीनिलोकआगोत्रि
सासुष। ताकावारनपारा।४३। सोसुषकहोकिसीबि
धिलाहै। करमनव्यापैकाया। जनहरीदाससतगुरकौंपू
छै समझावौगुरराया।४४। अषधुआत्मकेअस्थांनि
लहीजे मनथिरह्वैतोपावै। असतसवांचैह्वतनत्यागौ पी
वमैंप्रांणसमावै।४५। आत्मकाअस्थानकहांहै जामैंअ
लषलुकांणां। मैंस्वांमीसतगुरसतिसूंवौं। तुम्ह हौबहोत
सयांणां।४६। सबदजहांतैंउठिचलै उलटायवंनसमाइ
सौंजसहतसुषमनांनदी। तहांमिलैजोजाइ।४७। मंत
मैंतिवालाप्रेमका। पावैप्रेमअघाइ। रोमरोमतनमनबि
षै। ऐकमेकसुषथाइ।४८। अंतरकुंडदीसैनहीं। ज्यूंज
लजलहिसमाइ। तबहरिहरिजनऐकहैं। जनहरीदासस
वजाइ।४९।

॥२२॥ सोला तिथि जोग ग्रंथ लिष्यते ॥ ग्यांन सबद सति अ
रथ बिचारै। माव समन का मेल उतारै॥ सुरति संबादि ब
से निरदावै॥ साच नबाहै झूठ न भावै॥ मैतैं मुस्ता मोटा मं
हीं॥ तिल तिल काटे राषै नांहीं॥ सोला कला संम कियरि
आवै॥ अरधे उरधें ताली लावै॥ करम कलांण कांनें करै॥
व्रह्म अगनि मैं जारि॥ जन हरीदास मारू सब रटा कोई क
रसी साध बिचारि॥१॥ पड़िवा पलटि सु पदहय थ जाणैं मू
लमता मैं मन सा आणैं॥ नर मन नेदे मन न डुलावै॥ गुर स
सादि परम पद पावै॥ सत सुगा आजि जागि जब जोवै॥ प्य
बुन निरोधे अमर धोवै॥ सुरान आपे सुगि सुगि जीवै॥
महा जिसं माधि सदा रस पीवै॥ पड़ता पासा छाडि दो वै
से ब्रजर जिहाजा॥ जन हरीदास पड़िवा सु पेहै सकल
तिष्यां सिरि ताज॥२॥ बीज बिबिधि बिष बांण चुकावै॥ म
न गहि पवन गिगन मठ छावै॥ यक पण साहि पिसण प
ड़ि पेलै॥ अगम उजास तहां मिलि षेलै॥ हरि सुं षहै रिह
अ बिबताकै॥ आनंद मैं गोबिंद गुण गावै॥ कांमन क्रलकै
कलपि न जाणैं॥ ऐनो नाथ हाथ मैं आंणैं॥ बीज इसी बिधि
कीजिये॥ सूंसति मांनै साहा साहिब सौं मिलि षेलिये॥ अ
गें बसत अथाह॥३॥ तीज सति सांति तिल तिल षांडे॥ तीनयु
णं आगें पग मांडे॥ इला पिंगला सुषमन मेलै॥ बेसि निर
तरि चौपड़ि षेलै॥ साध मंडली साषि बिराजै॥ अनहद

चौथिजचास्यौंचोटचुकावे मकिसुदेसिबसेसुषपावे करजनकादेमूलनव्हावे आंननजाचेरामजुव्हावे आ ईसायसमकिघरिआवे यकुसुयसाहिसदासुषपावे करमकपाटकड्यासबताला आत्मआंतरिजोतिउजा ला चौथिजाचौपडिमेलिऐ दोइदोइचोटचुकाइ तीतजि सारीमेल्हिऐ चौथाघरमेंजाइ ५ पांचेपांचपचटिपहि लावे बेसिकुलीचेलोगबुलावे साजणसेणपिसंणकौन ही अरथअबीरपड्यासबमांही पांनगुलालकेसरि बहुकरण आगिवदाइचली हरिचरण सुकडिसमि तावरिघसिलाई सषीसहेलीसाथिबुलाई पांचेंपीवप्र संणनया नेटमहत्तव्याते रासमंडलमेंहोतहेघरि घरिरागबसंत ६ छठिछक्याछकिलाघामारी महेसिघ धारेदेवमुरारी गंगाउलटिजमनमेंआणी बाहरिनीवरि एकेपाणी गिरवरसारकरायाता मांही आगमअथाह थाहकुछनांही रूपअरूपमोहननहीमाया निजनिर लेपनिरंजनराया चोदणिछठिआईसभी मिटिगयामोह अंधार आरसपरससमिलिषेलिऐ अबयकुओसरयावार ७ सातैसंमकिपडीसुषपाया आनंदमहत्तअरथमें आया निरमैसीरनीरनिजनेरा तासुषिलागिरहामनमे रा बहुतदिनोतैंयारूतिआई बसतअथाहनजाइछिप ई जाणिबूझिअसाकछुकीया अबहरिहंमअपणांकरि लीया सातेंसाहूंसिमिसदा निजपुरिनगरनिवास बिणि बादलेबरिषासदा छहरूतिबारहमास ८ आठैआठ काठकरिकानैं छलबलछाडिहरिमानें जबकिसवांन

संघदोइ मास्या हिरणी आगै चौताह्यो ॥ सुसा के मुषि
चरी मंजारी ॥ तीतर बाज करी बिधि धारी ॥ पंघ सेबाहि
समंद मैं पैठी ॥ आला अटल तहां जाइ बैठी ॥ आवै अरथ
बिचारि ऐ ॥ फूली सब बनराइ ॥ तेवर कंवल रस्या तहैं
पर दोइ दई उडाइ ॥ ९ ॥ आज सखी नैं नीद न आवै ॥ जागि
न सो के कतरि सावै ॥ बंक नालि मैं गारजै बाई ॥ सेक सुहा
ग मिलै सुषदाई ॥ बरसै धरणि गिगानि रस आवै ॥ रोमरो
रतार तज्यौ मोहि सावै ॥ प्रमउदार सकल सुषरासी ॥ अ
गम अलेष अगाह अबिनासी ॥ नौ द्वारां मन नांव है ॥ द
सवैं रह्या समाइ ॥ जन हरीदास आतुर मिटी आनंद मैं
दिन जाइ ॥ १० ॥ दसमी देव दया करि आया ॥ सीतल नैंण
सेण सुषपाया ॥ जल मैं कुंभ कुंभ मैं पांणी ॥ सकल बिया
पीवै सति जाणी ॥ अकलि उजाले मेर उडाया ॥ तौरा कार स
वैली पाया ॥ ग्यांन न जिर नरि दैयो लोई ॥ सब घटि रांम अव
र नहीं कोई ॥ दसमी हरि दरसण दीया ॥ हरि परमसनेही
पीव ॥ सब सेकां सांई बसै ॥ जागि न देषै जीव ॥ ११ ॥ ग्यारसि
करत बहोत दिन बीता ॥ एकादसी न जानै रीता ॥ अब लगा
निज तत्त न जारि न आवै ॥ डब भावै लिव होत उपावै ॥ कंव
म बाडि कांच बसि कांचा ॥ ग्यडं चर थिमां नहीं सति बाचा
वास्तु थि अंतर नारी ॥ कहां दिन कर कहां राति अं
धारी ॥ अंतरि धुनि ऐकादसी ॥ बंक नालि रस पाइ ॥ मन उ
लगा रहै ॥ नांनां नेह चुकाइ ॥ १२ ॥ बारसि दांनसु
निक्यौं कीजै ॥ मनियजन मधरि यक सुषलीजै ॥ अब सुमा
न परचिनर दीवै ॥ अगम अगाध सहज सुषि आवै ॥ स

तरजतमगुणमोहपसारा। ईतद्योहननरजागिसंवारा।
पतसूंप्रीतिजोतिगुणदूजा। हाथपसारिकरीयेंपूजा।
हरिसुमिरणह्विरदैसदा। पायसुनिदोषदान। बारसि
जहांमिलियेछिपै। जहांनदूजोग्यान। १२। तेरसितहां
बसेमनमेरा। जहांसोहूरिनहींसोनेरा। नांकोकल्हे
नकाकूलाधा। हीनचुरकदोऊपषबाधा। बेदककेब
कथेंसूचिमांनी। यकूपणसाहिरहेंअतिमांनी। अप
णेंअपणीरसिमतिवाला। सबजुगछक्याबिरधिकरहै
बाला। तेरसिताहिपिछाणिरे। निकटिनिरंजनराइ।
प्रेमसनेहीसंगिबसे। आंणनहींमनआइ। १४। चवदसि
रामचरणनहीछाडौं। ज्वाराज्वैतनमनवाडौं। दूसंण
देषिरैयतजिराई। जहांपडदातहांआंनसमाई। रट
तारांमअटाअरिहास्या। मूवाजीयाजीवनमास्या। म
ननिह्चलनिरमैनिधिमांही। जहांतहांरांमहरिहरि
नांही। चवदसिचित्तवृणिसबमिटी। आणबोल्याकछुमा
इ। जनहरीदाससबंचलगाया। निह्चलरसासमाइ। १५
स्वरहैतीसघेरिघरिआया। पून्योंमनफिरिमनदासमा
या। सकलसमीपसकलतैंन्यारा। पूरणब्रह्मानंदपियारा
इरमेतिहरिदूरिहरिनांही। सबतेंआगमबसेसबमां
हीं। प्रमसंधसुषवारनपारा। तासुमिलागाजांणहंमा
रा। जनहरीदाससोलाहसुतिथि। सदगतिसुपहलागार
पून्योंपारब्रह्मसंणत्या। अंतरजांमीआइ। १६।
मावसमनउलटावन्या। क
लासंवारेचंद। फिरिलागाउनमनिस्यों। छूटिगयासबदं

पड़िवा पय प्रसन्न तूजी।।अनतौ अन रह्यौ बाट।।गिगा नि संड
लिश्यां संग कीया।।ला ध्यान घट घाम।।२।।बीज सबीज
न थोई रे।।रायौ बीज अबीज।।जन हरीदास गारजै गिगा नि
तहां सहजि चिमं कै बीज।।३।।तीज त्रिगुण रस थो लिक रि
ब्रह्म अगानि मैं जारि।।दीं लागी दरीया जलै।।तरीया सेद बि
चारि।।४।।चौथि चाहि चि क्रित नया।।उलटी ताली लाइ।।
गंगा जमन मधि पैसि करि।।मीन मगार गई याइ।।५।।पांचैं
पाचौं फेरि मन।।सुरति सहजि घरि धारि।।मन तारा मंडल
छै दिगाया।।उलटौ पंथ संवारि।।६।।छठि अछिप घट मैं छिप्य
पूरण आनंद।।असि प्रसि पावंन नया।।जहां तहां आनं
द।।७।।सातैं सरउ सरस नया।।पक्रम पलटि गाति नीर मंछली
बसै अकास मैं।।लागि पेम की सीर।।८।।आवैं अरिउ हरि गाय
असलि उदै नया मपांन।।आवय हरदं मि रत सुधा।।बाजय
पालै पांन।।९।।नौंमी नवैं समरीए।।अनड़ नमोड़ै अग।।मन
फेर्यां तन फेरत है।।मनिष जनम का संग।।१०।।दसमी देह ड
रंगाड।।दह दिसि सुरंग लगाइ।।मेला सो किरसा भया।।मि
ल्यौ रति कै आइ।।११।।एकादसी अचं गा है।।जहां डुब धा तहां
दोष।।जन हरीदास ऐसा बरत।।जो ऐ बिरला कोइ।।१२।।
दोइराज तजि द्वादसी।।जोगी देष्या जागि।।ब्रह्म अगानि मैं
घर कीया।।रह्या निरंतर लागि।।१३।।तेरसि तन मैं प्रमतत
पो च तत ते और।।बसै कहां नां हां कहां।।जहां तहां सब ठा
र।।१४।।चवदसि मन चौ पा दसा।।गया लोग अजि लाज।।च
वमि ल्या आनंद स्यों।।अनहद सबद अवाज।।१५।।पून्यं पय प
र नया।।सहजि सप्या सब कां मैं।।जन हरीदास आचा अंतरि

ी करसि प्रभसैने हीराम १६ ३४ राग बिलावल की चौपाई
राग बिलावलो आतमग्वालनी है सषी हरिभजि बिलमन
लाइ सिरसै नांव निरंजन नां छूता स्यौं ताली लाइ १ अब
गतिकी गति लषै न कोई साधां सुष कौं गाया गिगनिमं
डलमें गुफा सोधि लै तहां निरंजन राया २ मछरूपक
रि बेद उधास्या ऐसा अचिरज कीया जगति हेति हरि
आपपधास्या लेब्रह्मा कौं दीया ३ कूला तौ लै कूपसप ध
स्यौं कूप सपं धक्या कीजे कूप कहै सागर अबिनासी
अबिनासी रसपीजे ४ कूरम रूप मिथ्या मैं णारैस म
थिमधि कीटक मास्या अकल आप अबिनासी आया
जनका कारिज सास्या ५ अबिनासी कहैं आइ न जा
वै हंम देष्या सब मांही जठर आगनि तैं रहै निराला लि
पता जाण्यां नांही ६ जगति हेति बाराह बिधौंसे धरणि
दाढ धरि राषी हरि आपण आप निवाजे स्योंसनकादिक
साषी ७ स्योंसनकादिक अपणां सुष कौं अनमतै ताल
लावैं मरजीवा हीरा लै आवैं वारपार नही पावै ८ अन
प्रहलाद बहो तदुष पाया बूटी नाही ताली तबहरि
नरहरिरूप बणाया जन प्रतेग पापाली ९ नरहरिरू
पकहो कौं हरिका तेजपुंज प्रकासा माई बापकै उ
नांही वाकै स्तनिमंडलमें बासा १० बलिराजा पूराजि
गकीया तबकूंड है तिदरि आया पावपतालिसी सच्च
समानां लबतडाग कहाया ११ कहण सुणण कीया वि
धिनांही कहांसु रांम बणि नावै हरि अपारपार कौनं
ही अगाहगाहण क्यौं आवै १२ प्रसराम षत्री जब आया

तबबैंताबल कीया॥ असुर बिधौंसि हरि बिडनिवाज्या॥ ल
गतांकौं सुम दीया॥१४॥ भगतमला जोपीति पिछांणें॥ म
नपर फूलित नांचे॥ हरि हीरा हरदा में राषे॥ को दास्यपि
नराचै॥१५॥ रांम चंद्र बांण जबलीया॥ सुर तेतीस छुडा
या॥ रांवण मारि लंका गढ तोड्या॥ राज बभीषण पाया॥
॥१६॥ रांमता रांम श्रोर है नाई॥ सेमकि देषि मन मांहीं॥ षु
शातिर षारोगन श्रायो॥ वारपार कछु नांहीं॥१७॥ हरि गो
कल में ग्वाल नचाया॥ निरषिष कीया काली॥ कंस केस
चाण्र पछाड्या॥ मंथ रांमें बनमाली॥१८॥ नाव निबूसें न
सुषुरा श्रावे॥ अवबल थ्यो नहीं जाई॥ अबरण बरण कं
चकानी चा॥ जपूरण सब मांही॥१९॥ बुध अवतारि महा
बलकीया॥ अघासे निंदल मार्या॥ नग विह्रि श्रैसें आया॥ ग
न्हका भार उतार्या॥२०॥ कूं भारन जाण्यां को जी जाणें के

ए॥ बेस्क है हरिसन लिश्रावें सुरजसंकटनि

रश्राग॥ थश्रैसें करि देयो॥ बांवें दाहिणें पीछे आगै
॥२१॥ निराकार आकार ऐक ही॥ जबधा जांणी नांही॥ हरि
थोड़ा करि के से देयो॥ है साहिब सब मांही॥२२॥ उम्हसू
डी॥ निराकार कौ सा

सबजीव कहां लेराषे॥२४॥ निरमल देव सदा निहकांमी

नाव निरंजन राया। यौं ही यान कयो ही यर लौ सब याही मांही समाया। २५ साहिब अधर धस्या सब हूजा तिय वजो एणे नांही। हंमकूं कहो य ढो सम भावो। या संक्या मन मांही २६ ववदा लोक रच्या जिनि बाजी। सो बाजी गरन ही पाया। उतपत्ति पावक पलो ही वै। तब सागरि जाइ समाया २७ अलोक कहो क हां है स्वांमी। याह आसंक्या क्यों भो घटि घटि जवर अगनि का बासा। घर घट मांहि जाणो २८ घट तो पांच तत्त का मेला। रहता जाणें नांही जवर अगनि का बासा बोरा। याह संक्या मन मांही २९ जब स्वामि नि पाणी मैं राषी। ऊबर जम जुग मांही तार जै संसारा जुग बीजे रहता जाणे नांही ३० बीजे जे सा ऊपजे ते सघट ता जाणें नांही तुम्ह अगाध वो बो मति मेरी। याह सआसंक्या मन मांही ३१ मैं सब मांहि सकल तें न्यारा जे कोई सतगुर सरणें आवै। आपो मां नि तहां मैं नांही मरता कै सि पावै ३२ आपा नडा क ता तुम स्वामी आपे म पसे कीया। बाजी सबै तुमारी दीसै तुम्ह ही आपा दीया ३३ कहेण सुणण कीया बिधि नांही कस्या सुणें बणै नावै। पीर जती अवतार थलीया ऐसा रूप दिषावै ३४ रूप कहो कैसा है स्वांमी हम तो देष्या नांही अबकै को रूप दिषावो दरसण यो ह गुसांई ३५ प्रहथिप जाप जपि अजपा। नांव निरंतर लीजै त्रिबेणी तटि ताली लावै तो आनंद मनि षीजै ३६ आनंद कहो कि सी बिधि लागै बंक कुटि न सांसा सौ षे ब्रह्म अगनि मैं बैसि सहजि घरि आतम तत्व रपोषै ३७ घट ही मांही दृस

अघटहै।कोईगा फिलयोटायाइ॥ध०॥३५॥चवदापदा॥
जोगगुंथलियाहै॥सतगुरकाचरणचितधरिहौ॥अनि
नलगतिसोईभेकरिहौ॥गुरबिणपानलपावेकोई॥जोया
हैतोनिरमलनहोई॥धा॥धा॥करिगुरस्वलफाके॥गुरकी
स्वलफिजलफिनहीआवे॥पारक्रिपातैंहरिनिधिपाई।जिनि
पाईतिनिबहोतछिपाई॥प्रगटकरैसप्रगटपेडा॥प्रगटअ
इपकूंचेनेरा॥पारिषकूंताजलटालाहै॥महापुरषतातैंब
नबाहै॥रनिबनिरहैजगतंतैंन्यारा॥राम॥जैसारांयिरि॥
नांहि॥बाल
चलावैस्वरगकी॥येहैनरकामांहि॥१॥गुरगमिनहीउनी
नरमावै॥निजसाहिबकीषबरिनयावै॥आपेचढ्यांकरम
सकलकालकीपासा॥करमहीणअ
येरूथकितनयाहामांही॥नांतिनांतिकरिआ
एकसमेस्योंजीइहकाया
बांसेलागादोउ॥आया॥मायाकाबलअनंतहै॥बचणन
रेमनकोडामतिगहै॥यकहीरूपनहोअ
॥सबैहरिहीराजोंहरीपिछांणे॥कोडीरूपनिकटिनहीन
॥आणे॥रामरसांयणसनसूंमीनी॥सोतोजुगियारकरिहै
यामांही

माया मीठी नेडा आणें बांद्ह पकडि नरकां कौं ताणें रांमत
जत्त बिणि बिधि ब्योहारा तेतौ सकल काल की मारा नरसि
बला सबली है माया धाई नही सकल चुणि माया रांगब
ध्या दारू घणी लावे कोई नां हि तातै रोगी बापड़ा ह्सत
नरकां जांहि ३ ये तौ नेता रोग कै आवै जेसा करे स तेसा
पावै आपे चढ्या आरथ नही आवै सोई मरै जके बिषय
षै मूलमंत्र जांणें कुछ नांही बिस हर ले मेल्है गल मांही
जेसा कुनि गतिसी है माया जे खाया ते बकु डि न आया मा
या कलणि कल्पा ज्ञ्यासारा है कोई साच बक्ता नेणहारा ह
रिइ मिरत रस छाडि करि बिष कौं दौड्या जांहि कूबै
रा तामी डका समद समकि कुछ नांहि ४ गुर गंमि सम
कि असी परि आई औ सा अकल सकल पति राई नोवनि
रंजन अंतरि जांमी हरि निरमल परपूरण स्वांमी त बस
त समद नही ता र आंगरा त बथा अबसोई सिरजन
हारा सिरप्रब तन ही मंडलि तारा समकि नही कुछ वा
र न पारा निराकार आकार बिणि अं नंत नवं न के राव
ताकूं नजिरे यांणीयां कलं नइ सोमी डाव ५ जोग ध्यांन
स्यों जब धु निलाई तब हरि ऐक ऐक रे साई पवन नयां
णी धरणि अकासा चंद न सूर देव नहि दासा दिवस नय
ति जाति नही कोई अब या जाति ज्योति ले ब्याई ज्योति ज्यो
ति करि जगत भुलाया तातें निज कं णन्हा थिन आया पर
पंच रा चोया णीयां हरि स्यों नां ही हेत पर बसि पड्या बिस
बिसे अब क्यू चेति अचेत ६ मन प्रपंच करि बहोत भ्र
या ज्ञलक्या ता र पा रि न ही पाया पकड्या कूड़ सा च नही न्ह
ले आप जले अवरां कौं जाले पारगा है कोई जन सूरा पूर्ण

रकामेवगसरा सूरा मनकी सौंज संवारै। काम क्रोध तिस
नां मन मारै। मन की तरंग सकल चुणि षावै। उलटै अर
हे ठिबाडी पावै। ता बाडी में परकासा। तहां निज सेवक
रै निज दासा। सौंज संवारी मजन कौं। अब केय कथ्या
कार। कोडी गहि हीरा तजै। ताकौं वार न पार।७। जब अ
कारन या अवतारा। ब्रह्मा नसि षिउपारंणहारा। स्यों स
नकादिक नारद नांही। समकि समकि देष्या मन मांही। द
रिषणि और न देई देवा। सालिगरांम न कोई सेवा। जलथ्वा
साप्रवेस न कीया। बिलबेद पछै करि लीया। ता बाजी ग
रकौ षबरि न पाई। सब बाजी मांहि रही समाई। कव
वाकौं मोती चुगै। हंसा तजि कहां जांहि। मांनसरोवर प्रम
सुष मैं वाकै लिक पाहि।८। तब दुयस्वथन या गरुड़ न चेला
पांच तत का रूप गमेला। सीत न धूप राग रंग नांही। जो मैं म
रै न आवै जांही। तब कोई बिपन पान परेला। तब वा द्वय
काएकौ रमैं अकेला। वाकै नांही रूप न रेषा। अब कछु सू
पत समसा देषा। रूप रूपकौं रसि रसि आवै। रूप बल्यो ताकौं
सुधि न पावै। निराकार हरि निरमला। नांव निरंजन देव।।
अब जिनि भूले प्राणीयां। तर हत्ता कौं सेवै। एथ भूला बहो
त समझि न ही काई। घनी च की बात चलाई। आवें जांहि
सकै च कनी चा। तामें लेले डोरे सीचा। आड दे दे चोका दा
रे सम स्वाप रे कौं न संमारै। कौण कंच कूंण हे सदा। जामें ७
रैसपे कै उड़ा। घबनाम मैं जब ले दीया। दीया संकट रूहे
चिपाया। पापी रूहीर हाद समासा। अब कछु ऐसा कहै
समासा। कहणी रहणी दूरि करि। अंतरि पोट न राषि।।

माया मोरी नेड़ा आणैं। बांझपकडि नरकां कौं तांणैं। रामत
जतत विणि विधि व्यौहारा। तेतौ सकल सरको लकी मारा। नरनि
वला सबलो है माया। धाई नहीं सकल चुणि खाया। रामब
धा दासस्य पणी। लोवैकोई नांहि। तातैं रांया वा पड़ा। हुसता
नरकां जांहि ३ योवुनोत्तारा राम कै आवे। जेसा करेस तेसा
पावे। आपे च ब्या अरस्य म्हीं आवे। सोई मेरे जको बिषय
वे। मूलमंत्र जांणै कुछ नांही। बिस हर लेमेल्हे गलमांही
जैसा कृति रातिसी है माया। जेया यांत बकडि नआया मा
या कलणि कस्या ज्ञ संसारा। हे कोई साच बता वणहारा। ह
रिइ मिरतर स छाडि करि। बिषको दोड्या जांहि कूवै।
रातामोड़का। समदस मकि कुछ नांहि ४ गरगमिसम
कि असोप रि आई। ओसा अकल सकल पति राई। नोव नि
रंजन अंतरि जांमी। हरि निरमल परपूरण स्वांमी। तब स्रा
व समद नहीं सारओगरा। तबया अवसो ई सिरजन
हारा। सिरपब तनहीं संडसितारा। समकि नहीं कुछ वा
रनपार। निराकार आकार बिणि। अनंत सबंन कै राव।
ताकूं सजिरे प्रांणीयां। डलेसड सोनीडाव। ५ जोग ध्यान
स्योंजब बुधि लाई। तब हरि ऐक ऐकर साई। पवन नयां
णी धरणि अकासा। चंद न सूर देव नहिं दासा। द्विसन्य
चिजा तिव्र हो काई अबयाजा तिधोतिले आई। धोतिधो
तिकी रिजरात सूलाया। तातें निजकं पाहा थिन आया। पर
पविरा दोदा प्रांणीयां। हरिस्यों नांहीं हेत। परबसि पड्यो बिय
चिसै। अब दूचे चित्र चेत। ६ मन परपंच करि बहीत क्रमा
याः उत्तरख्या तार पारि न हो पाया। पकड्या मंगसा च नहीं न्हा
ले। आपजले अवरांको जाले। पारस है कोई जन पूरा। सूरण

रकासेवगसूरा सूरा मनकी सोज संवारै॥ काम क्रोध तिस
नां मन मारै॥ मन की तरंग सकल चुणि पावै॥ उलटै अर
हं ढिंबाडी पावै॥ ता बाडी मैं परकासा॥ तहां निज सेवक
रैं निज दासा॥ सोज संवारी मजन कों॥ अब कै यक कथा
कार॥ कोडी मांहि हीरा तजै॥ ताकों वार न पार॥७॥ जब अ
कासन था अवतारा॥ ब्रह्मा न सिष्टि पावण हारा॥ स्यों स
नकादिक नारद नांही॥ समझि समझि देष्या मन मांही॥ ह
रि बिणि और न देई देवा॥ सालिगरांम न कोई सेवा॥ जल अ
लाप प्रवेस न कीया॥ बिसन बेद पढै करि लीया॥ ता बाजीग
र की षबरि न पाई॥ सब बाजी मांहि रसाजरकाई॥ क
वा कौं मोती चुगै॥ हंसा तजि कहां जांहि॥ मांनसरोवर प्रम
सुध मैं वाकै लिक पांहि॥८॥ तब इस सब मन था गुरू न चेला
पांच तत का रूप वा मेला॥ सीत न धूप राग रंग नांही॥ आमें म
रै न आवै जांही॥ तब कोई बिपन था न परेला॥ तब वाहे ए
का एकी रमैं अकेला॥ वाकै नांही रूप न रेषा॥ अब कछु रू
प तसां सा देषा॥ रूप रूप कौं रसि रसि पावै॥ रूप चल्यां ताकी
सुधि न पावै॥ निराकार हरि निरमला॥ नांव निरंजन देव॥
अब जिनि भूले प्राणीयां॥ नरहसा कों सेवै॥ ए भूला बहे
त समझि न ही काई॥ ऊंच नीच की बात चलाई॥ आवें जा हि
सकै च कनीचा॥ तामैं ले ले डोरै सींचा॥ आड दे दे चोका टा
रै पस वा परो कौं न संवारै॥ कौण ऊंच कूंण है सूद्रा॥ जा मैं ब
रैस ऐके उद्रा॥ ए बबास मैं जब लै दीया॥ दीया संकट रूही
चिपीया॥ पायी रूही रह्या दस मासा॥ अब कछु ऐसा कहै
त मासा॥ कहणी सुणणी दूरि करि॥ अंतरि षोट न राषि॥

ऊहरि भजि रे प्रांणीयां सुणि सांधा की साषि १० कहै
सुणें पणि रहणी कूंग जम स्यों रजू रांम स्यों रूवा उधैम
मिदस मांस फुलाया सजन वो रवे बाहिर आया कलि
की वात नषी सुषपाया आवत्त सभैं यस मवि सरायां
वाचा वे देश आयो साईं सो बा चा क्यों भूलेलाई जोर करे भ
स कीन सं तावे जरर आगनि दिन चोलन आवे जब कूष
ले की टपत्त गा तब यह कुग्र ब कहा योगंदा गरब मुभ
न सब दूरि करि वा निज साहिब कों जांणि वा निज सा
हिब कों बिणि सज्या मनिष जनम की हांणि ११ होणि
क सो कोई न पतीजे निरचै मिरघ बधिक कों धीजे न
मनित्ति बधिक सदा नर हिरणां चोरासी में चोड्या फिरणं
क ब कूष रूप स कीट पत्तंगा मो रमि रघ गति नांनां रंगा
कब कूस्त करस्वांन सियारा कब कुंकन वा गति बिचा
रा कब कूइ जिग रिपषी गो हो यों दुष पावे हरि सों द्रो
हा प्रलामांही आ वै जावे आं धाप सब हो तक दुष पावे
रांम तजे तो सकल दुष नहीं तरस बदुष साथि यो टोप
टालियाई यां परान आया हाथि १२ नाई सुब धिक्ति
बधि सों काला साध नही कोई बिष की ज्वाला सजन
वजांणे कुठंना कु बधि भडीयां का धामांही ष्यापात्ति
लक नरम की पूजा अंतरि करम का तरी दूजा मनस
मन के मतै चलाणों अंतर की साहिब सब जांणे अंतरि
मोटत हां हरि नांही तातें बूडा प्रलामांही करम सरम
सब दूरि करि हंस रहे सिरु गण गाइ ऊहरि भजि रे प्रांणी
यां नहीं तरका लम चूंको मांइ १३ मासी काल सही सों म

कोईजनज्याप्यासोंजांहिं॥सूलाजांणेंनांहि॥४१॥अथारो
माया कोदजोगग्रंथलिष्यते॥फूहडि धूहडि धावंती॥ डं
कमरेलरियावंती॥रामबिमुषतहांजावंती॥मोहनदं
मेंन्हांवंती॥आपणेंअगिलगावंती॥करणहारकरता
रजगतगुरा॥दीनदयालभुलावंती॥कबहूंमांमणिक
बहूमाता॥आपणेंयोवेरागिमिलावंती॥कबहूंस्से
कबहूंत्तैसे॥नेहमरदेगाबजावंती॥कबहूंतातीकब
हूंसीली॥जीवांजेरजांरावंती॥जोगणिहोइजगत्रउजा
वे॥जहरपयालायावंती॥सूंडेम्होहैडाकणिडोसी॥स्सू
नेंन्हावंती॥कंचनीवसबसोंमिलिमेले॥नांनांभेषब
णंवंती॥डाकणीपापणी॥संषणीसायणी॥आमणीजोग
णीभेददेरमाणी॥जोगणीजागणीत्तृतणीलागणी॥स्व
करीसूकरी॥कागणीमूकरीआछणी॥ताछणी॥नरककी
टोकणी॥जरजरीजहरणी॥कालगतिकहरणी॥त्रिवि
धितनधारणी॥हेतदेमारणी॥आवंणीजावंणी॥डहकि
डहकावणी॥साधभेषरहैघटमारीमरै॥पोवपा
बांधैरे॥आगनिमेंपैसत्ताधसैपाणीपडै॥जनहरीदास
मायामतैं॥मिलैसमायाहोइ॥हरिसाचैसोंसाचाभि
लै॥तौपलानपकडैकोइ॥ग्रंथ॥४२॥जोगमूलस्तुपजा
गग्रंथलिष्यते॥नीचेडालमूलतयांउपरि॥अज्यासिंघ
मोंजूझै॥मकडीकोंमाषीनहीगडै॥आंधाकोंसूझै॥१॥
मूसैचोडि बिलाईपकडी॥चिंटेसिंघांणोंपायो॥साष
बकैपागिलागो॥समंदबूंदमेंपायो॥२॥पिंगलेपागम्र

रदा वै महिमा करै स्यंगार भेतस रषो एण न पावै २६ मूस
के डरि सेस उलटि जल मांही पैवा कुंजर चर्या अकासि
मंडकूं मा षलि बैठा २७ पिसण गाया पग गहि काढि नरम
कातालाभागा तरवर ऐक अनूप प्राण तहि तरवरि
लागा २८ बसधा स्यों जड नांहि गौटत्त तरवर नहीं पाया
दू मिरत्त रस रूप महा सुष सीतल छाया २९ तातर
वर मैं बास मोह नहीं व्यापै माया निरालंब निरलेप
अगम गुर गम तैं पाया ३० असि निरंजन देव तेदला
धा भरम भागा आनंद अगाम अथाह मन मनसा तहां
लागा ३१ प्रसग पान परम ध्यान आनरस प्रसिन पीवै प्र
मसूनि प्रदेव जागि लागे सो जीवै ३२ परम तेज परम जो
ति जोति मैं जोति निवासा उलटा चर्या अकासि सूनि
मंडल मैं बासा ३३ ब्रह्म बोलि मैं वक्या लोगन की लाइ
उ कांणी ब्रह्मा बिसन महेस सेस नागा बिणि प्यांणी ३
४ नारद सेती नेह पान गोरष जब ध्यांनी आनंद सब
द उचार सूरति निज सबद समांनी ३५ पांवौ पांव फे
रि घेरि अपणौं घरि आया चावड के सिर चोट भेद तै
रूं का पाया ३६ केरूं ये नि अपार झटकि अरि फोन
उडाई चंद सूर समि कीया तत्त स्यों ताली लाई ३७ न
वसे जोगणी साथि फेरि जा ताम न लीया अनंत सिधां
सौं प्रीति सहज मैं सो रस पीया ३८ नऊं नाथ निज गो
र अकल तरवर की छाया पान सिंघासणि बैसि रा
मरट ता पति पाया ३९ ज्यों तिलां मैं तेल काष्ट मैं अग
नि निवासं ज्यों गाइ दूध मैं घिरत यहूप मैं प्रमल बासं ४०
यौं जन हरीदास अभ्याति अगम व्यापि रह्या सब मांहि

कोईजनजाण्यासोजांहिं॥सूताजांणेनांहि॥४१॥ धणुरा
माया छंदजोगग्रंथलिष्यते॥फूहड़ि धूहड़ि धावंती॥ डं
कमेरेमरियावंती॥रामबिमुषतहांजावंती॥मोहनदी
मेंन्हांवंती॥अपणेंअंगिलगावंती॥करणहारकरता
रजातघर॥दीनदयालम्हुलावंती॥कबहूंसांमणिक
बहूमाता॥अपणेंयालेरागिमिलावंती॥कबहूं रूसे
कबहूंतूसे॥नेहमरदेगबजावंती॥कबहूंताती कब
हूंसीली॥जीवांजेरजांरावंती॥जोगणिहोइजगत्रउड्जा
वे॥जहरपयालापावंती॥सूंडेम्हेहीइडाकणिडोसी॥म्हल
हेंन्हमावंती॥ऊंचनीचसबसोमिलिषेले॥नांनांभेषब
णवंती॥डाकणीपापणी॥संषणीसायणी॥भ्रमणीजोग
णीनेदेरमाणी॥जोगणीजागणीमृतणीलागणी॥म्हू
करीस्वकरी॥कागणीमूकरीआछणी॥लाछणी॥नरकको
टोकणी॥जरजरीजहरणी॥कालगतिकहरणी॥त्रिवि
धितनधारणी॥देत्तदेमारणी॥आवंणीजावणी॥डहकि
डहकावणी॥साधमेंथररहैंप्रगटमारीमरे॥पांवपा
बांधेरे॥अगनिमेंपेसत्तोधसेपाछोपडे॥जनहरीदास
मायामरेतें॥मिलैसमाया होइ॥हरिसाचेस्योंसाचाभि
डै॥तोपलानपकडैकोइ॥ग्रंथ४२॥जोगमूलसुषजो
गग्रंथलिष्यते॥नीचेडालमूलतयाउपरि॥अज्यासिंघ
मोम्हूजै॥मकडीकोंमांषीनहीछाडे॥आंधाकोंसूझै॥१॥
मूसेदोड़िबिलाईपकडी॥चिड़ेसिचांणांषाया॥साम
ब झैपागिलागो॥समंदबूंदमेंपाया॥२॥पिंगलेपगाअ
गमकालाधा॥बहिरेसबकुछ्छसुणिया॥म्हूरियपंडित

कीगतिपाई सतिसुलाहाबुणियां ३ मीनमगर
कौंषावणलागी दादुरिभरगपचाया पांणीमांह्री
अगनिप्रगटी तिलमैंमेरसमाया ४ सींचतबाडी
सबकुमिलावै काटतबफलूलागा चोरसाह
कैअंदरियैवा साहगिरहतजिनागा ५ यारसुरि
अपरिसोवणलागी होंडीअनमैंरांधी मिरतगजेम
कौंदईसासनां गाडबाल्हडेबांधी ६ फूलकलीमैंमा
यासमाई सोकबहूनहीफूलै तनपांणीमैंनीजैनां
ही बिणिपांणीनितिझूलै ७ पचैंमिलिमैंतनलोन
पायो बैरैपंथिनहीजांही निसदिनिग्यांनगुफामैं
पांचौं बाहिरनिकसैनांही ८ सातौंसंमदसुषाया
चौडै जलकीबौहरषोई बेरीआइमिल्याचाकर
कै गिरवरहासादोई ९ सतगुरथितिसंमझाई अं
तरि ताचैंनिसदिनिजागा तीनतापतनकीतबभ
ागी सीतलसुषजबलागा १० लेताहांणजगाची
हेडा सबअपणैबसिकीया गहिगुरग्यांनध्यानधरि
अंतरि साहकौंसबैसदीया ११ सुकबिरषतजिब
कुसषपाया तरवरिअकलिबैसेरा सोततूपहोकन
हिब्यापै पकड्यानिहचलनेरा १२ मोहआकदोय
दकौंतेन्यारा सुषमैंजाइसमाया सतगुरिसरणि
नलीमतिउपजी सांचासोईपाया १३ मनसाबाचा
आरंभतजियो करमकरैनहिकाया सुमिरैअलष
अबिनासी प्रहरिबोटीबाया १४ उपजीअकलिबद्धि
ईलागी असलिगरीबीआई नजोनिरंजनप्रहरिद्रष

सुधा छाडी आंन सगाई ॥१५॥ निरंजन सदा सहाइ हमारे ॥ कोमन तजडे को ऐसा ॥ तिसनां बाडि मनो थे ॥ मन को दुबधा खोई ॥१६॥ पाक पीर स्यों नेटा सेत जि ॥ सब सब कु ब सम झाया ॥ ऐसलि ऐकलि हिरदा में मेल्ही ॥ साध संग ति सुषपाया ॥१७॥ पाकपाक में जाइ समावै ॥ गाइ मेल कों नाही ॥ मेल मेल को जाइ गाय कुंचे ॥ संसकि दे षि मन मांही ॥१८॥ माया मेल सकल जुग मेला ॥ निरमल साधू को ऐ ॥ पांच स्वाद तजि भजे निरंजन ॥ सकल मेल तजि नि धोई ॥१९॥ हिरदै मेल रती न हीराखे ॥ तजे सदा अभिना सी ॥ ग्रन वासि सो कब हू न आवे ॥ पडे न जंम की पासी ॥२० ॥ तन मैं कंवल तहां मन मेरा ॥ जल बिन बाहि र आवे ॥ स्वाद बसत का सार लाधा ॥ निसदिन निश मिरत घावे ॥२१ ॥ जैसे सीप समद मैं कंडै ॥ स्वांदे वि बूंद लेपैवी ॥ षारो पांमी पीवे नांही ॥ इमटि अपणें पो बैवी ॥२२॥ जैसे निज रिव को रन षांडै ॥ सातल सुष कोली डै ॥ अंगार चुग पर चकै नाही न जिर चंद सों जोडै ॥२३॥ चात्रिग नी र नी च नही पीवे ॥ के च बुंद कों चाहे ॥ तन सोवे प्राण छाडे नही ॥ ऐसे सदा निबाहे ॥२४॥ हंस समुद्र का हल निसदिन चूगे ॥ कर कका गते सारा ॥ काग कुबधि सों नहन बाघे ॥ ऐसा गाढे ॥२५॥ कीटी भ्रिंग गाहि लीटी दे ॥ भ्रिंग होत न हि बारा ॥ का या का गुण सब हि त्यागे ॥ तब जाइ पकं चे पारा ॥२६॥ रंग नाद स्यों सुरति लगावे ॥ देह बिसरि सब जाई ॥ धीर ज पक डि गहै पण का गे ॥ बांण बधिक का यांई ॥२७॥ मरे पांणी जब त्यांगे ॥ बिण पांणी न हि जीवै ॥

भगता ॥ १५॥ भौ ॥ १६॥ कुंडाई गोविंदा ॥ १७॥ ग्रंथ ॥
कौषित सोला ॥ १८॥ पहैयला कडया ॥ सब हेड्हैं
२ ईसा ॥ २३॥ राग ॥ ... चे नामीमा ॥ ... ॥ श्रुबली
श्री नाभाजी श्री द्यालजी हरी रामजी दोसदूणी ॥
लिष्यते स्वामी जी श्री नानकदासजी रचना श्री परि
नमो राम जी के साखिया इसन ... अवंत साथ्र
के ... ॥ साखी लिषाते ... रामकुंडे ...
... ॥ ... ॥
... ॥ ... ॥
... ॥ ... ॥
हरदास जी की ... लिखितं ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री
श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री परमात्मने नमः ॥ श्री गुरु
अंशी जन ॥ श्री रामाय नमः ॥ श्री गोविंदाय नमः ॥ अथ
श्री कबीर जी की साखी लिष्यते ॥ गुरदेव को अंग ॥ ॥
कबीर सतगुर सवान को सगा ॥ सोधी सई न दाति ॥ हरजी
सवान को हितू ॥ हरिजन सई न जाति ॥ १॥ कबीर जाति
हमारा आत्मा ॥ प्राण हमारा नांव ॥ अलष हमारे इष्ट है
गिगनि हमारा गांव ॥ २॥ कबीर जाति हमारी जगतगु
र ॥ परमेश्वर परिवार ॥ सगा हमारे संतजन ॥ सिर परि
सिरजनहार ॥ ३॥ कबीर सतगुर की महिमा अनंत
अनंत कीया उपगार ॥ लोचन अनंत उघाडिया ॥ अ
नंत दिषावणहार ॥ ४॥ कबीर भली भई जो गुर मिल्या ॥
नहीं तर होती हाँणि ॥ दीपक जोति पतंग ज्यों ॥ पडता
पूरी जाणि ॥ ५॥ क लीसई ल्या तिन

घटहीमांहीचौंतरा।घटहीमांहिदिवांन
मायादीपगनरपतंग।।भ्रमिभ्रमिमां
होईएकगुरग्यांनतैं।ऐकआधउबरंत।
प्रबजुग।त्रमपायौंफिरै।ज्यौंरामांकारोझ
क्रिपालई।तबपायाहरिकाषोज।८।
गुरुमिल्या।मिटिगयाआटैलौंण।जाति
मिटिगया।तबनांवधरैगाकौंण।९।कबी
रसीगुरमिल्या।सोजिनबिसरिजाइ।जि
क्रिपालई।तबगुरमिलियाआइ।१०।क
बीरगुरगोबिंदतौऐकहै।दूजासबआकार।आप
मेटिहरिभजै।तौपावैकरतार।११।कबीरथापणि
थापतिमढू।सतगुरदीन्हीधीर।कबीरहीराबि
मानसरोवरतीर।१२।कबीरपिरतिपाईम
नथिरिलया।सतगुरलयासहाइ।अनिन्पकथाजी
वआचरी।हिरदैरमताराइ।१३।कबीरचेतनिचो
करि।सतगुरदीन्हीधीर।निरभैहोइनिसंक
भजि।केवलकहैकबीर।१४।कबीरसासैयायासक
लजुग।सोसाकिनकनयधा।जेबीधेररअबिरा।सास
चुणिचुणिमधा।१५।कबीरपीछैचाल्याजाइथा।लो
कबेदकीसाथि।आगातैंसतगुरमिल्या।दीपगदी
हाथि।१६।कबीरदीपगदीयातेलभरि।बातीद
ईअघट।पूराकीयाबिसाहणा।बहोड़िनआवैह
ट।१७।कबीरनिहचलतंतमिलाइनिधि।सतगुर
सधीर।निपजोमैं मांहिकबीर

॥१८॥ कबीर सतगुर हंम सौं रीझि करि ॥ एक कह्या प्रसं
ग ॥ बरस्या बादल प्रेम का ॥ भीजि गया सब अंग ॥ १९ ॥ क
बीर चौपड़ि मांडी चौहटै ॥ सारी कीया सरीर ॥ सतगु
र डाव बताईया ॥ खेलै दास कबीर ॥ २० ॥ कबीर खूंदे थे
पाणी नवेरे ॥ गुर की लहरि चमकि ॥ भेरा देख्या जरज
रा ॥ तब उतरि पड्या फरकि ॥ २१ ॥ कबीर सतगुर कै स
दकै गया ॥ अपणी दिल की साच ॥ कलिजुग हंम स्यौं लड़ि
पड्या ॥ मोहकम मेरा बाच ॥ २२ ॥ कबीर बलिहारी गुर आ
पणे ॥ घड़ी घड़ी कै बारि ॥ मनिष न कौ देवता कीया ॥ क
रत न लाई बार ॥ २३ ॥ कबीर रांम नांम के पटंतरै ॥ देबे
कौं कछु नांहि ॥ कह लै गुर संतोषीए ॥ हौस रही मन
मांहि ॥ २४ ॥ कबीर मन दीया तिन सब दीया ॥ मन की
गैल सरीर ॥ अब देबे कौं कछु नही ॥ यौं कहै दास कबी
र ॥ २५ ॥ कबीर सतगुर मेरा सूरिवां ॥ सबद ज बाह्या
एक ॥ लागत ही तै मिटि गया ॥ पड्या कलेजे छेक ॥ २६ ॥ क
बीर सतगुर सबद कबांण लै ॥ बांहण लागा तीर ॥ एक ज
बाह्या प्रीति स्यौं ॥ भीतरि रह्या सरीर ॥ २७ ॥ कबीर सतगुर
मास्यां बांण भरि ॥ धरि करि सूधी मूठि ॥ अंगि उघाड़ै लागि
गई ॥ दुवा सूं फूटि ॥ २८ ॥ कबीर हसै न बोलै उनमनी ॥
लै मैल्या मारि ॥ कहै कबीर अंतर भिद्या ॥ सतगु
र का हथियार ॥ २९ ॥ कबीर गूंगा हूवा बावरा ॥ बहि
रा हूवा कांनि ॥ पावां तै पिंगला हूवा ॥ सतगुरि मास्यां बां
णि ॥ ३० ॥ कबीर लोग सबद्दाई नर मी ॥ याजुग का व्यौहा
र दास गरीबी बंदगी ॥ यक सतगुर का उपगार ॥ ३१ ॥

कबीरदिलहीमेंदीदारहै।बादिनवैसंसार।सतगुरसबद
दकामसकला।मोकिंदिषांवणहार।३२।कबीरगुरत्तो
ऐसाकीजिऐ।जैसासिकलीगुरहोइ।सबदमसकलाफे
रिकरि।दिलदरपणकरिसोइ।३३।कबीरदारकमेंप
वकबसे।तोघुणकाजरिकिनजाइ।योंहरिसंगिगुर
बिमुषतें।कालग्रास्यांषाइ।३४।कबीरसतगुरमेरासू
रिवां।सेध्यासकलसरीर।बांणडुवासूफूटिगया।क्यों
जीवैदासकबीर।।३५।कबीरसतगुरसाचासूरिवां।नष
सषमार्याषूरि।बाहरिघावदीसई।भीतरिचूराचूरि।३
६।कबीरजोदीसेसोबिनससी।नांवधरयासोजाइ।कबी
रसोईततगहि।सतगुरदीयाबताइ।३७।कबीरसत
गुरमार्याबांणभरि।निरषिनिरषिनिजवोड।रामअके
लारमिरहा।चितनऔरैऔर।३८।कबीरकुदरतिपा
याषबरिस्यों।सतगुरदीयाबताइ।भवंरबिलंब्याकंव
लस्यों।अबकैसेंउडिजाइ।३९।कबीररांमनांमछाडौं
नहीं।सतगुरसीषदई।अबिनासीकोंपरसिकरि।आ
तमअमरभई।४०।कबीरचोसठिदीवाजोइकरि।चोद
हचंदामांहि।तिसघटिकिसकाचांदिणां।जाघटिगो
बिंदनांहि।।४१।कबीरकोटिऐकचंदाउगिया।सूरिज
कोटिहजार।तोऊतिमरनजाजिसी।गुरबिनिघोरअंध
धार।४२।कबीरगुरगोबिंददोऊषडा।लागूकिसपाइ।
बलिहारीगुरआपणो।जिनिगोबिंददीयाबताइ।४३।
।।अरपारिषकोअंग।।कबीरनांगुरमिल्यानशिषमिल्या।
लालचषेल्याडाव।दोन्योंबूडाधारमें।चढि
प २।

थोजे रांम रमाइ ॥ ता रांम डल छोड़ि कीर ॥ जहां के सोत तहां जा
इ ॥ ८ ॥ कबीर लूटि सकै तौ लूटिए रांम नांम की लूटि पी
छै भी पछिताइसी ॥ जब तन जासी छूटि ॥ ९ ॥ कबीर ऐसी
बांणी बोलिए ॥ तन का आपा खोइ ॥ और न कों सीतल क
रे ॥ आपण कों सुष होइ ॥ १० ॥ कबीर निरभै रांम जपि ॥ जब
लग दिवले बाति ॥ तेल घट्या बाती बुझी ॥ तब सोवैगो दिन
राति ॥ ११ ॥ कबीर बंदा करि ले बंदगी ॥ ज्यों पावै दीदार ॥ औ
सर मनिषा जनम कों ॥ बहोरि न बारंबार ॥ १२ ॥ कबीर पछि
तावैगो सही ॥ कहां न माना रांम ॥ जहि मारग सांई मिले
जहि चल्या न एकौ कोस ॥ १३ ॥ कबीर हरि का नांव ले ॥ तजि
माया बिषै चोज ॥ बकुड़ि बकुड़ि लासे नहीं ॥ मनिषा जनम की
मोज ॥ १४ ॥ कबीर हरि कां जो बन सिकदारी तजी ॥ वस्यों नि
सांण बजाइ ॥ सिर परि सत्त सराइचा ॥ दीया बुनांपें आइ ॥ १५
कबीर जुरा आइ जो रोकीया ॥ नोतन दीन्हा पीवि ॥ आंष्यां
परि आंमुली ॥ बीष तरै यांणि नीव ॥ १६ ॥ १०७ ॥ बिरह कौ अं
ग ॥ कबीर आंबड़ि यां काई पड़ी ॥ पंथ निहारि निहारि ॥ जी
डीयां छाला पड्या ॥ रांम पुकारि पुकारि ॥ १ ॥ कबीर नैणां नी
झर लाइया ॥ अरहट बहै निसजांम ॥ पपीहा ज्यों पीव पीव
बकै ॥ कब रे मिलैगो रांम ॥ २ ॥ कबीर रात्यों रूनी बिरहनी

कबीरा अंतर पजल्या ॥ प्रगट्या बिरह

पेजे ॥ ३ ॥ कबीर बिरह निज मोजंप सिरि ॥ पंथी बूझे आइ
एक सबद कहो पीव का ॥ कब रे मिलैगे आइ ॥ ४ ॥ कबीर
बहोत दिनन की जोवती ॥ बाट तुम्हारी रांम ॥ जीव तरसे तु
झ मिलन कों ॥ मन नांही बिश्रांम ॥ ५ ॥ कबीर बिरह नि

वेनीपडै। दरसणिकारणिरांम॥ मूवांपीछै दीजै ग। सोदर
सणकहिंकांम॥ ६॥ मूवांपीछैमतिमिलै। कहैकबीरारांम
लोहातीपाथरघस्या॥ पीछैपारसकोणिकांम॥ ७॥ कबीरसू
विंतीश्रारत्तिकरै। रामसनेही श्रौवै॥ सुरतिकीयांसांइंमि
लै। तौबिरहनिकाभाव॥ ८॥ कबीरश्रैदेसोनाजिसी॥ सं
देसोकहियांकेहरिश्रायांभाजिसीकेहरियासिधाय॥ ९॥
कबीरश्राइनसकौंतुझपै। सकौंनतुझिबुलाइ॥ जीवडायों
हीत्योहरौ। बिरहतपाइतपाइ॥ १०॥ कबीरयोतनजासू
मसिकरूं॥ धूवाजाइसरगि॥ मनिवेरामदयाकरै। वरसि
बुझावैश्रगि॥ ११॥ कबीरयातनजारूंमसिकरूं। लिषेराम
कानांम॥ लेषणिकरूंकरककी॥ लिषिलिषिरांमपगांव॥
१२॥ कबीरपीरपरांवनी॥ पंजरिपीरनजाइ॥ एकजपीरप्री
तिकी॥ रहीकलेजेछाइ॥ १३॥ कबीरबिरहनवगमतनव
सिमंत्रनलागैकोइ॥ बिरहीजनजीवेनजीवेतोबौराइ हो
१४॥ कबीरबिरहनवगमैपैस्यकरि॥ कीयाकलेजैघा
व॥ बिरहीश्रंगमोडेनहीं॥ ज्योंभावेसोयाव॥ १५॥ कबीर
बिरहाश्रायादरदसो॥ कडवालागाकांम॥ कायालागीका
लकेमीठालागारांम॥ १६॥ कबीरयातनकादीवाकरू।
बातीमेल्हौंजीव॥ लोहीसीचौतेलज्यों॥ कबमुषदेषौंपीव
॥ १७॥ कबीरबिरहाबुरामतिकहो॥ बिरहाहैसुलितांन
जाघटिबिरहनिसंचरै॥ सोघटिसदामसांण॥ १८॥ कबीर
बिरहारांमपगाईया॥ कहोसाधांनेपमोधि॥ जाघटितारू
लाबेलीया॥ ताकौंलाईसोधि॥ १९॥ कबीरश्रावडीयापेम

रोइ र तडीयां ॥२०॥ कबीर सो ई आसू सजनां ॥ सोई लोग ॥
बिडां ॥ जे लोइण लोहू चवे ॥ तौ जाणों हेत हीया ॥ २१ क
बीर हसणा दूरि करि ॥ रोवणस्यों करि चित ॥ बिन रोयां क्यों
पाइये ॥ प्रेम पियारा मित ॥ २२ ॥ कबीर हसों तो दुष न हिबी
सरूं ॥ रोऊं तो बलि घटि जाइ ॥ मन ही मांहि बिसूरणां ॥ ज्यों
घुण काठहि षाइ ॥ २३ ॥ कबीर कीडे काठ जु षाईया ॥ षात
किनजंन दीठ ॥ छोलत पाडि र देषीया ॥ भीतर जाम्या चौ
ठ ॥ २४ ॥ कबीर चौठ जु जांम्या चूंन का ॥ बेरी बिरहा सध
बान्हडीया हो सजणां ॥ बैद निकिन कतलध ॥ २५ ॥ कबीर
हसि हसि किन कन पाईया ॥ जिनि पाया तिनि रोइ ॥
हांसे हेलि जि हरि मिले ॥ तो कोंण दुहागणि होइ ॥ २६ ॥ कबी
र हांसे षेले हरि मिले ॥ तो कोंण सहे षुरसांण ॥ काम क्रोध
त्रिसनां तजे ॥ ताहि मिले भगवान ॥ २७ ॥ कबीर मो चितहि
लां हन बीसरौ ॥ दुमच हरि दूरि थयां ॥ आहि आगि औलूंता
गिसी ॥ जब तब तुम मिलियांह ॥ २८ ॥ कबीर नैंण अंतरि
आव तूं ॥ निस दिन निरषों तोहि ॥ कब हरि दरसण द्यों हि
गे ॥ सो दिन आवे मोहि ॥ २९ ॥ कबीर देषत दिन गया ॥ नि
स भी निरषत जाइ ॥ बिरहनि पाव न पावे नही ॥ जीव डोर
रसे माइ ॥ ३० ॥ कबीर मो बिरहनि को मीच दे ॥ के आपा
दिषलाइ ॥ आठ पहर का दाझणां ॥ मोपे सह्या न जाइ ॥ ३१
कबीर बिरहनि थी तो क्यों रही ॥ जली न पीव कि लार ॥ ग
हली मुगध कबावली ॥ प्रेम न लाजी मारि ॥ ३२ ॥ कबीर हो जं
बिरह की लकडी ॥ सिलगि सिलगि धूंधाइ ॥ छूटि पडों इस
बिरह तें ॥ जे सारी हाजरि जाइ ॥ ३३ ॥ कबीर तन मन यौं ज
ल्या ॥ बिरह अगनि सों लागि ॥ मिरतक पीर न जांणसी ॥ जा

णें वाम्राणि ॥ ३४ ॥ कबीर प्रेम बिनां धीरज नहीं ॥ बिरह बिनां
बैराग ॥ नांव बिनां पाइसी नहीं ॥ मन मनसा का याघ ॥ ३५ ॥
कबीर नैंन हमारे बावरे ॥ छिन छिन लोडैं तुझ का ॥ नां तू मिलै
नैं मैं सुखी ॥ ऐसी बेदनि मुझ का ॥ ३६ ॥ कबीर प्रबति प्रबति मै
फिरी ॥ नैंन गमाये रोइ ॥ सो बूंटी पाऊं नहीं ॥ जाते जीवनि
होइ ॥ ३७ ॥ कबीर गालो तुम्हारा नांव मैं ॥ ज्यों पांणी मैं लूण
ऐसा बिरहा मेल्हि करि ॥ नित दुख पावै कौंण ॥ ३८ ॥ कबी
र छिन मैं चढै रु उतरै ॥ सो तौ पेम न होइ ॥ अघट प्रेम पिंज
रि बसै ॥ बिरह कहावै सोइ ॥ ३९ ॥ कबीर आपा पेम कहां
गया ॥ देखै था सब कोइ ॥ पल मैं रोवै पल हसै ॥ सो तौ पेम
न होइ ॥ ४० ॥ कबीर बिरह बंधा कछू आइया ॥ मुझ बिरही
की लूघ ॥ छोहन बैसों डरपती ॥ मति जलि ज्वै रूघ ॥ ४१ ॥
कबीर मो बिरहनि का पीव मूवा ॥ दागा न दीया जाइ ॥ मांस
गले गलि गलि पड्या ॥ करंक रह्या गलि लाइ ॥ ४२ ॥ कबीर ककु
वै करंक ढंढोलिया ॥ मुझि एक पाया हड ॥ जा पंजरि बिरहु
बसै ॥ मांस कहां रे रड ॥ ४३ ॥ कबीर हम मन हम को ढूंढत फिरै
मिलै पियारे रांम ॥ हिरदा माहि सो तिहि मिलै ॥ ऐसकल कु
मोस्कांम ॥ ४४ ॥ कबीर तन मन जाल्या जिनका ॥ बिरह टं
ढोलै छार ॥ मति कोइ कोइला न्हबरै ॥ तौ जालौ दूजी बार ॥
॥ ४५ ॥ कबीर तन मन जोबन जारि करि ॥ भसम करीया देह
उठि कबीरा बिरहनी ॥ अजौं टटोलै येह ॥ ४६ ॥ कबीर बिरह
सेतमति छडौ ॥ रे मन मूढ अजांण ॥ हाड मांस रगतै रहै ॥
जीवत करै मसांण ॥ ४७ ॥ कबीर मो दिन कै साहोइगा ॥ रांम
गहैगो बांह ॥ अपणां करि बैसाहिसी ॥ चरण कंवल की छांह

रोइ रतडीयां ॥२०॥ कबीर सोई आसतू सजनां ॥ सोई लोगा ॥
बिडां ॥ जे लोइण लोचा चंवै ॥ तो जाणें हेत हीया ॥२१॥ क
बीर हसणा हरि कारि ॥ रोवणा स्यों करि चित ॥ बिन रूना क्यों
पाईऐ ॥ पेम पियारा मिंत ॥२२॥ कबीर हसों तो दुष नहीं बी
सरूं ॥ रोऊं तो बलि घटि जाइ ॥ मन हीं मांहि बिसूरणां ॥ ज्यों
घुण काठहि षाइ ॥२३॥ कबीर कीडै काठ जु षाईया ॥ षात
किनहूं न दीठ ॥ छोतउ पाडि र देषीया ॥ भीतर जांमा ची
ठ ॥२४॥ कबीर चीवडू जांमण चूंन का ॥ बैरी बिरहा षध
बाल्हडीया ही सजणां ॥ बेदनि किनहू न लध ॥२५॥ कबीर
हसि हसि किनहू न पाईया ॥ जिनि पाया तिनि रोइ ॥
हासे हसि जे हरि मिलै ॥ तो कोंण दुहागणि होइ ॥२६॥ कबी
र हासे षेलै हरि मिलै ॥ तो कोंण सहै षुरसांण ॥ कांम क्रोध
त्रिसनां तजै ॥ ताहि मिलै भगवांन ॥२७॥ कबीर मो चित ति
सांह न बीसरौं ॥ तुम हरि दूरि थयां ॥ अहिनिसि अंगि अंगोल्हसा
गिसी ॥ जब तब तुम मिलियांह ॥२८॥ कबीर नैंणा अंतरि
आवतू ॥ निस दिन निरषों तोहि ॥ कब हरि दरसंण यों दे
गे ॥ सो दिन आवै मोहि ॥२९॥ कबीर देषत दिन गया ॥ नि
सी निरषत जाइ ॥ बिरहनि पीव पावै नहीं ॥ जीवडो त
रसै माइ ॥३०॥ कबीर मो बिरहनि कों मीच दे ॥ कै आपा ॥
दिषलाइ ॥ आठ पहर का दाझणां ॥ मोपैं सह्या न जाइ ॥३१॥
कबीर बिरहनि थी तो क्यों रही ॥ जली न पीव की लार ॥ र
ही मुगध कबावली ॥ पेमन लाजों मारि ॥३२॥ कबीर हौं
बिरह की लकडी ॥ सिलगि सिलगि धूंधाइ ॥ छूटि पडौं
बिरह तैं ॥ जे सारी ही जरि जाइ ॥३३॥ कबीर तन मन यौं ज
ल्या ॥ बिरह अगनि सों लागि ॥ मिरतग पीर न जांणसी ॥ ज

कबीरजालीजलिगई॥थागाऐकनदथा॥घरसेस्योपादेनार।
स्यो॥पड्याकदूबेबंध॥१०॥कबीरमैघरजाल्याआपणा॥ला
यामुरीडाहाथि॥औरांकालीजालिस्यो॥जोचलेहमारैसा॥थ
॥११॥कबीरघरजालोघरउबरै॥घरराख्याघरजाइ॥ऐक
चंसोमैसुपणा॥मडाकालकोंपाइ॥१२॥मोरटा॥कबीरमेरा
दंलागीलाइनदीयांजलिकोइलागई॥देखिकबीराजाग
मंछीतरवरैचटिगई॥१३॥साष॥कबीरआगेआगेदोंबलै
पीछेंहरीयाहोइ॥बलिहारीताबिरषकी॥जडकाटयांफल
होइ॥१४॥कबीरबिरहहूकहाडीतनवहे॥घावनबंध
रोइ॥मरणेकासंसामिटा॥छूटिगयासरममांह॥१५॥कबी
रखपनैरैनिकैं॥पड्याकलेछेक॥जवसांकनबंदाइजना
अवजागत्तबयेक॥१६॥कबीरसेरायायायामरयमा॥यांसे
सागरमांहि॥जेढाडोलौडूबसौं॥पासोलौडमिकेवाद॥१७
कबीरपांणीमांहीपजली॥कडेअपरबलआगि॥बमनना
हवीरहिगाई॥मीनरहीजलत्यागि॥१८॥कबीरबरचयगान
तनमनजल्या॥लागिरहास्ततजीव॥केवाजाणैविरहनी॥
केजांहिंसेदयापीव॥१९॥कबीरपावककरूपाराममंद॥सबघटि
रह्यासमाइ॥चितचकमककेचकूंटैनहीं॥धूवांहाइहाइ जा
इ॥२०॥कबीरकपमकाया॥चितचकमकाकाडी॥बारूबार
चीसिबारधूवांकुवां॥चोपापडाआंगार॥२१॥कबीरपछत
पेमचमाइकरि॥मुक्तिनिरासीआइ॥पछितनमनज्याथिंत
गैचंमकालाइ॥२२॥कबीरविरहादमस्यायांकद॥काता
पकडमेहि॥चरणकंवलकीमाजेमे॥लपटरार
३॥कबीरअमिवांणीआयामना॥...

दिनरामपधारिसी सगलीसौंजसहेत २५ १८५ लप्र
चाको अंग ११ कवीरतेजअनंतका मान्हुंगपास्रजर्ये
नि पतिसंगिजागी सुंदरी कौतिग देष्यातेणि १ कबीर
पारब्रसकैतेजका कहौकेसाउनमान कहिबेकीसोत
नही देष्याहीपरवांण २ कबीरअगमअगोचरगमनहीं
तहाँझिलमिलेजोति तहाँकबीराबंदगी पापपुंनिनहीं
छोति ३ कबीरमनमधककरत्या कीयानिरंतरिबास
कंवलजोफूल्यानीरबिनि कोनिरषैनिजदास ४ कबी
रसाइरनांहीसीपबिनि स्वातिबूंदभीनांहि कबीरमोती
निपजैं सुंनिसिषरगढमांहि ५ कबीर घटमैऔघटपा
ईया औघटमांहीघाट कहैकबीरापरचात्तया तबगुरु
दिषाईबाट ६ कबीरसूरसमानांचंदमैं दहूंकीयाघर
ऐक मनकाचित्याचबत्तया कछुपूरबलालेष ७ कबी
रप्रेमभकासीया अंतरित्तयाउजास मुषिकस्तूरीम
हिमही तबबांणीफूटीबास ८ कबीरजकलपीजो
गीकुवा मिटिगइअैचातांणि उलटिसमानांआपमैं हु
वाब्रह्मसमांनि ९ कबीरदेषोकरमकबीरका कछूपू
रबलालेष जाकामहैलनमुनिलहै सोदोसतकीयाअ
लेष १० कबीरमनलागाउनमनिसो गिगनिपहूंताजा
इ देष्याचंदबिहूणांचांदिणां तहाँनिरंजनराइ ११ क
बीरमनलागाउनमनिसों उनमनैमनहिबिलंग लूंणबि
लंगापाणीयां पांणीलूंणबिलंग १२ कबीरपांणीहीतैहे
मत्तया हेमहैगयाबिलाइ कबीराजोथासोभया अबक
छुकह्यानजाइ १३ कबीरजिसकारनिमैंजाइया सोती

मिलिया आइ॥ सांईं तो सनमुष भया॥ लागि कबीरा पा
इ॥१४॥ कबीर सली सँई जो मोपस्या॥ गाई दसा सब भू
लि॥ पाला गलि पांणी भया॥ ढुलि मिल्या उस कूलि॥१५॥
कबीर चिंतामणि पाई चोहटै॥ हाडी मारत हाथि॥ मी
रां मुझ स्यों मेहरि करी॥ अब मिलौं न काहू साथि॥१६॥
कबीर आया था संसार मैं॥ देषण कौं रंग रूप॥ कहै क
बीरा संत हो॥ पड़ि गया नजरि अनूप॥१७॥ कबीर पं
षिनड़ा णीं गगन कौं॥ पिंड रह्या परदेसि॥ पांणी पीया
चंच बिणि॥ भूलि गाई वह देस॥१८॥ कबीर सुच पाया सु
ष उपना॥ दिल दरीया भरपूरि॥ सकल पाप सहजैं गया॥
तब सांई मिल्या हजूरि॥१९॥ कबीर हरि संगि सीतल भ
या॥ मिटी मोह तन ताप॥ निसबासुरि सुष निधि लह्या॥
तब अंतरि प्रगटे आप॥२०॥ कबीर तन मैं तारि मन मां
गयां॥ बाहरि कहीं न जाइ॥ ज्वाला तैं फिरि जल भया॥ बुझी
जलंती लाइ॥२१॥ कबीर तत पाया तन बीसर्या॥ मन धरि
ध्याया ध्यांन॥ तपति मिटी सीतल भया॥ तब सूंनि कीया अ
स्नांन॥२२॥ कबीर पाया तिनि सूगह गह्या॥ रसनां लागी
स्वादि॥ रतन निराला पाईया॥ जगत ढंढोल्या बादि॥२३॥
कबीर दिल साबत भया॥ फल पाया समरथ॥ सायर मा
हिं ढंढोलतां॥ हीरा चढ़ि गया हाथ॥२४॥ कबीर जब मैं
था तब हरि नहीं॥ अब हरि है मैं नांहि॥ सबै अंधारा मि
टि गया॥ दीपग देष्या मांहि॥२५॥ कबीर जा कारणि मैं जा
इ था॥ सो मैं पाया ठौर॥
हत्ता और।

नजाइ॥ तेजपुंजपरसा धणी॥ नैणारह्यासमाइ॥ २७॥ कबीर गिगानिग्रजिहं मिरतचवै॥ कदलीकंवलप्रकास॥ तहांकबी रांबंदगी॥ कैकोइनिजदास॥ २८॥ कबीरहंमबासीउस देसका॥ जहां जातिबरणकुलनांहि॥ सबदमिलावाहो रह्या॥ देहमिलावानांहे॥ २९॥ कबीरहंमबासीउसदेसका जहांबसकापेल॥ दीपगदेष्यागैबका॥ बिणिबातीबिणि तेल॥ ३०॥ कबीरहंमबासीउसदेसका॥ जहांबारहमासबि लास॥ प्रेमझरैबिगसैकंवल॥ तेजपुंजपरकास॥ ३१॥ कबीर हंमबासीउसदेसका॥ जहांअबिनासीकीआंन॥ दुषसुष कोब्यापैनहि॥ सबदनएकसमांन॥ ३२॥ धरतीपवंनगिग नि नहीहोता॥ नहीतुयानहीतारा॥ तबहरिहरिकाजनहो ता॥ कहैकबीरबिचारा॥ ३३॥ कबीरजबपैक्रतमयानही॥ नहोताहटनपाट॥ तदिका कबीरारांमजन॥ देषैअवघट घाट॥ ३४॥ कबीरदिलदरीयानया॥ हरिदरगहबेगाआर जीवब्रह्मसेलानया॥ अबजीवकहांनजाइ॥ ३५॥ कबीरअं तरप्रेमप्रकासीया॥ हीरेलीया बिगास॥ चंदसूरकीगमिन ही॥ तहांदरसणपावैदास॥ ३६॥ कबीरसुरतिसमांणीनिरति मैं॥ निरतिरहीनिरधार॥ निरतिसुरतिपरचानया॥ तबषूले सिंघदुवार॥ ३७॥ कबीरजबदिलमिलीदयालस्यों॥ तबकछु अंतरनांहि॥ पालागलिपानीनया॥ योंहरिजनहरिहांमांहि॥ ३८॥ कबीरमिमताभेरीकाकरै॥ प्रेमउघाडीपोलि॥ दूसंण नयादयालका॥ सूलनईसुषसोडि॥ ३९॥ कबीरधरेअध रपिछांणीयां॥ अधरधरेहांमांहि॥ धरेअधरमेलानया॥ तबकछुअंतरनांहि॥ ४०॥ कबीरदीपगजूतापांनका॥ पेष्या

अलषध्रपरंपरदेव॥ चारिबेदकीगमनहीं॥ तहांकबीरासे
वा॥४१॥ कबीरजबहमगावता॥ तबहरिजांण्यांनांहि॥ अब
हमदिलमैंपेषीया॥ गांवणकौंकुछनांहि॥४२॥ कबीरपोष
स्योमिल्यारंगरह्या॥ नगामांनगुमांन॥ हियलेवोहरिस्योंजु
डो॥ बिछरणमरणसमांन॥४३॥ कबीररांमसरोवरसुभर
जल॥ हंसाकेलिकरांहि॥ मुकताहलमोतीचुगैं॥ अबउडिक
अनंतनजांहि॥४४॥ सुरनरथकेदेवता॥ ब्रह्माबिष्नमहेस॥
ऊंचामहेलकबीरका॥ तहांपारनपावेसेस॥४५॥ नीवबिहूंण
देहुरा॥ देहबिहूंणदेव॥ तहांकबीराबंदगी॥ अलषपुरसकी
सेव॥४६॥ कबीरसंगीतौसोईकीया॥ जाकेदुषसुषनांहीको
इ॥ हिलिमिलिकेकरिमेलिस्यां॥ कदेनबिछोहाहोइ॥४७॥ क
बीरअनलपंषिकाचीटला॥ पडतांकीयाबिचार॥ सुरतिसां
धिचेतनभया॥ जाइमिल्याप्रवार॥४८॥ कबीरकंवलप्रकासी
या॥ बसबासतहांहोइ॥ मनभवंरातहांलुबधिया॥ जांणेंगा
जनकोइ॥४९॥ कबीरकंवलप्रकासीया॥ ऊग्यानिरमलसूर॥
निसिअंधियारामिटिगया॥ बाजेअनहदतूर॥५०॥ कबीरसुं
निसरोवरमीनमन॥ नीरनिरंजनदेव॥ सदासाधुसुषबिल
सणां॥ कोईबिरलाजांणेंभेव॥५१॥ कबीरमेलागाउसएकस्यो
एकत्यासबमांहि॥ सबमेरामैंएकका॥ अबदूजाकोइनांहि
॥५२॥ कबीरअगहगहिअकहिकहि॥ भेदाभेदलहाअ
पणेबांणीअगमकी॥ लेगईसंगिलगाइ॥५३॥ कबीरआणंसका
टेरोमकौं॥ अनहदउपजेआइ॥ सेझाकाजलनिरमला॥ कोइ
पीवेगारुचिलाइ॥५४॥ कबीरअनहदबाजेनीझरझरैउपजे
॥५५॥

कबीरताकायांणीहंसापीवै बिरलाआदिबिचारि आका
सेमुषिकंधाकूवा पातालेपणिहारि ५६ कबीरपांणीमैंमि
घघरकरे मंडलीचैठेषिज्यूरि शिवशक्तिदसाकोंजोवै
पछिमतवैधूरि ५७ ऊंमिरतवरसेहीरानिपजे घंटापडै
र टकसार तहांकबीरजुलाहापारषु अणभेऊतस्यापार ५
८ कबीरसेसाकरूंनलेइ रूं सबडपदीयानिवारि सह
जसुंनिमैमिलिगया तबपायासदमुरारि ५९ कबीरलू
णगल्यापांणीमिल्या बकरिनतरसागूणि हरिजनहरिसों
मलिरह्या कालचल्यासिरधूणि ६० कबीरजाफरहेरसु
निमैंबाजैतबलनिसान तकीयातोरसत्तनका सतीहैमै
दांन ६१ कबीरजांहपावांनेकतरी हांद्यादेसबिदेस त
हपावांथितिपाकडी आगाणमयाबदेस ६२ कबीरपूरबि
पचाससया ऊपस्तुथमैज्योगरि ज्यंगासौबाकीकटस्या नव
सांईमिल्याहज्यूरि ६३ कबीरगुणइंद्रीसहजेगई सत्त
रत्नएसहाइ घटिसीचरिब्रसपकासीया बकिबकिमरेव
लाइ ६४ कबीरकहिणांथासोकहिरह्या अबकछुकहणके
सानजाइ ऐकरहीसबहीगई तबपैवादरीयामांहि ६
५ कबीरअगमअगोचरराखिया करिकरिब्रह्मतजतन
कबीरछानांक्योंरहे जाघटिरांमरतन ६६ कबीरफाटे
दीदैमेंफिरूं मेरीनिजरिनआवैकोइ जाघटिमेरासांईया
तेक्योंछानांहोइ ६७ रसकोअंग १२७ ० कबीरप्याल
पीयापेमका अंतरल्योलगाइ रोमरोमैंरमिरह्या अवर
अमलकहायाइ १ कबीरहरिरसयोंपीया बाकीरहीन
थाकि पाकाकलसकुम्हारका बकंडिने चढईचाकि २ ||

रांमरसांइणअजबहै। पीवतअधिकरसाल। कबीरापीवण
दुलभहै। मांगैसीसकलाल।३। कबीरभाठीप्रेमकी। बहोत
कबैठेआइ। सिरसौंपैसोईपीवै। नांतरपीयानजाइ।४।
कबीरहरिरसमहिंगा। जिनिपीयेतेसीसकलालादिल
ढौठीघरडूबला। बीचैगीनकुमार।५। कबीरहरिरसमहि
गापीवस्यां। छाडिजीवकीबांणि। मायासांईहरिमिलेतब
ऊगासोंघाजाणि।६। कबीरप्रेमंताअवगतिरता। अकलप
आसाजीति। रांमअमलमांतारहै। जीवनमुकतिअतीत।७
कबीरसातंगांबिकोपीनकै। साधनमानैसंक। रांमअमलि
मातारहै। गिणैंइद्रसौंरंक।८। कबीरहरिरसपीयाकोंजां
णियेफतरैनहिखुमार। मतिवालाघुमतफिरै। नाहीतन
कीसार।९। कबीरप्रेमंताणिनाचवैसालैचित्तासमेत्
बांभांनारिजप्रेमकै। डारिरह्यासिरथेह।१०। कबीरजास
रिघडनडूबसा। अबमंगालमलिमलिन्हांहि। देवलकूडा
कलससौं। पंषितिसाईजांहि।११। कबीरसबैरसांइणहंम
कीयाहरिसमिनांहीकोइ। रचेकतनमैंसंचरै। तौसबतन
कंचनहोइ।१२। कबीरछोडमाकीया। मांडापीयाधोइ। कू
लपयालाजिनिपीया। रहेकलालांसोइ।१३। कहत्तसुणत
सबजातहै। विषैनसूझैकाल। कबीरकहैरेप्राणीयां। बांणि
अरसंभालि।१४। कबीरराताभातानांवका। मदकामाता
नांहि। मदकामाताजेफिरै। तेमतिवालानांहि।१५। कबीर
रांमभातानांवका। पीयाप्रेमअघाइ। साध्रमविन्नालादीदार
कामांमोमुकतिबलाइ।१६। कबीरप्रेमंताघुमतफिरैरोमि
रोमिसपूरि। छाडेआससरीरकी। तबदेषेरांमहजूरि।१७
कबीरप्रेमपयालानरियीया। जरणाकराजतन।

कबीरताकायांणीहंसापीवै ॥ बिरलाआदिबिचारि ॥ आक
सेमुषिकंधाकूवा ॥ पातालेपणिहारि ॥ ५६ ॥ कबीरपांणीमैंरि
घघरकरै ॥ मंछलीचवैढेषिजूरि ॥ शिवशक्तिदसाकोंजोवै ॥
पछिमतेंवैधूरि ॥ ५७ ॥ कंमिरतबरसैहीरानीपजै ॥ घंटापडैं
टकसार ॥ तहांकबीरजुलाहापारषु ॥ आणसेउतस्यापार ॥ ५
८ ॥ कबीरसंसाकरूंनसेइसूं ॥ सबडषदीयानिवारि ॥ सह
जसूंनिमैमिलिगया ॥ तबपायापेदमुरारि ॥ ५९ ॥ कबीरलू
णगल्पापांणीमिल्या ॥ बकुरितनरसागूणि ॥ हरिजनहरिसों
मलिरह्या ॥ कालचव्योसिरधूणि ॥ ६० ॥ कबीरजाफरहेरसा
निमैं ॥ बाजेतबलनिसान ॥ तकीयाटोइसतनका ॥ मठीहेम
दांन ॥ ६१ ॥ कबीरजांहपावांतेकतरा ॥ हांड्यादेसबिदेस ॥ ष
हपावांथितिपाकड्या ॥ आंगणभयाबदेस ॥ ६२ ॥ कबीरष्वरासै
मचातया ॥ ड्यसडषमैल्याइरि ॥ जुगसैबाकीकटम्या ॥ तब
सांईमिल्याहजूरि ॥ ६३ ॥ कबीरगुराइंद्रीसहजैगई ॥ सतगु
रतेएसहाइ ॥ घटिमैचरिबिरयपकासीया ॥ बकिबकिमरैब
लाइ ॥ ६४ ॥ कबीरकहिणांथासोकहिरया ॥ अबकछुकहक
ह्यानजाइ ॥ एकरह्यासबहागई ॥ तबपैठादरीयामांहि ॥ ६
५ ॥ कबीरअगमअगोचरराषिया ॥ करिकरिबहोतजतन ॥
कबीरषानांक्योंरहै ॥ जाघटिरांमरतन ॥ ६६ ॥ कबीरफाटै
दीदैमैफिरूं ॥ मेरीनिजरिनआवैकोइ ॥ जाघटिमेरासांईया
तेक्योंछानांहोइ ॥ ६७ ॥ रसकोअंग ॥ १२७ ॥ ए ॥ कबीरप्याल
पीयापेमका ॥ अंतरलैपोलगाइ ॥ रोमरोममैंरमिरह्या ॥ अव
अमलकहायाइ ॥ १ ॥ कबीरहरिरसयोंपीया ॥ बाकीरहीन
याकि ॥ पाकाकलसकुंम्हारका ॥ बकोडूंचढिईचाकि ॥ २ ॥ रां
न

ऊंजाणिसी॥राकाघरांरतन॥१८॥हरिसागरतेंहरिमत्या
कोइनपीवैनीर॥नागिबडेसोपावसी॥नरिसरिपीवैकबी
र॥१७॥कबीरतेरैबाडीपहरा॥मेवैबिलंब्याजाइ॥बांवनें
घेदनघरकीया॥तबस्तूलिगईबणराइ॥२०॥३५७॥१७॥
साषिकौअंग॥कबीरकायाकमडलभरिलीया॥उजला
निरमलनीर॥पीवततृषानभाजिसी॥तृषावंतकबीर
॥१॥कबीरमनउलटादरीयामिल्या॥लागामलिमलिन्हा
ण॥थाहतथाहनआवई॥तूपूरारहिमांण॥३५७॥१०॥
हैरानकौअंग॥कबीरपंडितसेतीकहिरह्या॥कह्यांन
मानेंकोइ॥वोहअगाधएककहांकहौं॥भारीअचिरजमोहि
॥१॥कबीरबसेअपंडीपिंडमै॥ताकागतिलषैनकोइ॥कहैकबी
रासंतहो॥बडाअचरजमोहि॥२॥३५९॥११॥हैरतकौअंग
॥कबीरहेरतहेरतहेरीया॥हेरतरहेहिराइ॥बूंदसमा
नीसमदमें॥सोकितहेरीजाइ॥१॥हेरतहेरतहेसषी॥र
ह्याकबीरहिराइ॥समदसमानाबूंदमें॥सोकितहेर्‍याजा
इ॥२॥३६२॥१२॥जरणाकौअंग॥कबीरभारीकहौंतोमै
डरौं॥हलकाकहौंतोझूठ॥मैंतोजाणौंरामकौं॥नैणांअंतरि
दीठ॥१॥कबीरदीठाहैतौकसकहौं॥कह्यांनकोपतियाय॥
हरिजैसाकातैसारहौ॥तूहरषिहरषिगुणगाइ॥२॥क
बीरऐसीअदबुदजिनिकथै॥अदबुदराषिलुकाइ॥बेदकु
तेबांनांलिष्या॥कह्यांनकोपतियाय॥३॥कबीरकहताकीप
तिअगमहै॥तूचलिअपणैंअनमानि॥धीरैधीरैपावदै॥प
हुंचैगेपरवांनि॥४॥कबीरपहुंचैगेतबकहैंगे॥अमरडैंगे
उसठाइ॥अजहूंबेरासमदमें॥बोलिबिगूचैकांहि॥५॥क
बीरजांणिबूझिजडहोइरह्या॥बलतजिनिरबलहोइ॥क

है कबीर ता दास कौं ॥ जिन सके कोइ ॥ ६ ॥ कबीर बाद बि
वादं विषघणां ॥ बोल्यां तो तत्त्पाधि ॥ मौनि गह्यां हरि सम
रीए ॥ जे कोई जांणै साधि ॥ ७ ॥ साषी ॥ २६० ॥ अंग ॥ १३ ॥ ल्यो को
अंग ॥ कबीर सुरति ढींकली लेज ल्यौ ॥ मन चित्त ढोलण हा
रा ॥ कंवल कूवा मैं प्रेम रस पीवै बारंबार ॥ १ ॥ कबीर गंग
जमन के अंतरै ॥ सहज सुंनि ल्यो घाट ॥ तहां कबीर मठ
रच्या ॥ मुनि जन जोवैं बाट ॥ २ ॥ कबीर जहिं बनिसी हंस
चरे रांय पीगडि नहीं जाइ ॥ मोटा मागा कबीर का ॥ तहां रहे
लौ लाइ ॥ ३ ॥ कबीर ल्यौ लागी तब जांणिए ॥ कबहू छूटि
न जाइ ॥ जीवत तौ लागी रहै ॥ मूवां मांहि समांहि ॥ ४ ॥ कबी
र जब लगा कथणी हम कथी ॥ दूरि रहा जगदीस ॥ ल्यो ला
गी कल ना पडै ॥ अब बोलण हदीस ॥ ५ ॥ कबीर अरथ मां
हि गरथ पाईया ॥ ग्रंथ मांही निज मूल ॥ ल्यो लागी निरम
ल मया ॥ मिटि गई संसै सूल ॥ ६ ॥ २६६ ॥ १४ ॥ सूरातन को
अंग लिष्यते ॥ कबीर सूरा सोई जांणिए ॥ लडै धणी के हेत
पुरजा पुरजा होइ पडै ॥ तऊ न छाडै षेत ॥ १ ॥ कबीर षेत न
छाडै सूरिवां ॥ झूझै दोइ दल मांहि ॥ आसा जीवण मरण की
मन मैं राषै नांहि ॥ २ ॥ कबीर कायर हूवां न छूटिए ॥ कछू सू
रातन साहि ॥ भरम भलका छाडि दे ॥ सुमरण सेल सबां
हि ॥ ३ ॥ कबीर सोई सूरिवां ॥ मन स्यों मांडै झूझ ॥ पांच पयां
दा पकडि करि ॥ दूजि करै सब दूरि ॥ ४ ॥ कबीर सूरा झूझै
गिरदस्यो ॥ एक दिसि सूर न होइ ॥ पौरिबि कुंण सूरिवां ॥ ना
म न कहै सी कोइ ॥ ५ ॥ कबीर आरणि पैसि करि,

[illegible]नि दमामा बाजीया ॥ ५ ॥

त ऐता निकसि न बाऊडें जे जुग जाइ अनंत ६५ कबी
र यांच अगनि सहणी सुगम सुगम सहणी षडगधार
नेह निबांहणए करसि महाकठिन ब्योहार ६६ क
बीर नेह निबाहा हीबणे सो च्यांबणे न आन तन दे म
दे सीस दे प्रेम न दीजे जाण ६७ कबीर नावमलकसू
रतिमर घर धीरज करि तोणि मन की मूगी जहा मडी
चोट तहां ही जांणि ६८ कबीर सूरा लडे कमध होइ
धड स्यों सीस उतारि कहै कबीर मास्या मूवा कहै तउ
मारो ही मार ६९ कबीर बिणि पावां का पंथ है मझि
मझर असमान बिषम घा अवघट घणा कोइ पहुंचे
संत सुजांण ७० कबीर यांच आस मन मैं लीयां जब
रिण बाजे तूर दिल मोड्या सिर उबस्या मुजरो स्वाम
हजूरि ७१ कबीर रिण धसी या तेउ बस्या आया नगर
निवास घर बधावा बाजीया और उ जेहु की आस ७२
कबीर जब लगा धड स्यों सीस है सूर कहावे सोइ माथो
तूटां धड लडे कमध कहावे सोइ ७३ कबीर षेल जम
ड्या षिलार सों आनंद बढ्यो अघाइ अब पासा क्यों हीप
डो पेम बध्यो जुग जाइ ७४ कबीर सूर न सेरी तकवै जे
घाले घाव सबद लपाबा मोडि कै मांकी सेती चाव ७५
कबीर सूरै तो साचां पगा सहै सनमुषी धार गादड अ
चूका इकरि पाछे कषे अपार ७६ कबीर ढोल दमा
मा गडगाडी सहनाई अर तूर तीन्यो निकसि न बाऊडे
साध सती अर सूर ७७ कबीर देया देषी सब चल्या बां
नां पहरि अनेक साहिब आप रणि मरि बिरला
ऐक ७८ कबीर ऐती न्यो

साधसौंतीअरसूरका। दईनमोडैमौंह॥७९॥ कबीरका
रकौंकोतिमासला। काहैकसेसनाहै॥ नीडपडग्रास
जोदिणा॥ पीवैकौंएजबाहेबाहै॥८०॥ कबीरसाधस
तीअरसूरिवां। कदेनफेरैपीव॥ तीन्योंनिक
डैनाकामौंहनदीव॥८१॥ कबीरसाधसतीअरसूर.
रायारहैनवोट॥ माथौबांधिपताषसौं। नेजैपाडै
॥८२॥ भाजिकहांलौंजाईए॥ मैंनारीघरदूरि॥ बाकडिका
बारायेतरका। हलआऐनरसूरि॥८३॥ कबीरएकमरिबो
एकमारिबो॥ याही बिषमीसधिनांकाकाइरलडेंगो॥
तरकसबंधि॥८४॥ कबीरकाइरनागाकाढिका॥ सूर
रह्यारिणमांहि॥ पटालियायारेमका॥ मराछजीनांपो
॥८५॥ कबीरिरिणरह्यारानाकुवा॥ सजनमेल्या
धराधरामहिस्या॥ भाजगाईनकसूरि॥८६॥ कबीरज
बलाआससरीरकी॥ निरनैकुवानजाइ॥ मायाकाया
मानिवजि॥ चौडैरहैवजाइ॥८७॥ कबीरचौडैहीआनं
हैनांवधस्यारिणजीत॥ साहिबसतीमिलिरह्या॥ अ
गतिकीप्रीति॥८८॥ कबीरसाधसतीअरसूरिवां॥ इनसे
कोईनांहि॥ अगंमपंथकौंपगधरै॥ गिरैतौकहांसमांहि
॥८९॥ कबीरसाधसतीअरसूरिवां॥ मनकामताअगा
आसाबाडैदेहकी॥ तिनमैंअधिकासाध॥९०॥ सतीसू
रातनएकपल॥ सूरैसूरातनपलच्यारि॥ साधसूरातणनि
तिमरण॥ कहैकबीरबिचारि॥९१॥ कबी   राघोडहीन
लासतकारोपेपावै॥ घंणांहवाकिस
सवास॥९२॥ कबीरसबको
धेकोस॥ भागांपाछैबाकडै॥

बारसातीयांबाजक्कमतीयां जलेमड़ाकीलार सती
जसोईजांणिए बलेसंसालिसेसालि ७४ कबीरस्र
सनाहनपद्दरई जबरिणबाजेतूर माथोकाबांध
डलडे जबजांणीजेसूर ७५ कबीरआपामेरीलाडली
पगांठहोलेनीर तिरणमतेडूबणडेरे बांधिनसकेधी
र ७६ कबीरकहांमुसलाकहांतसबी कहांहारया
कतेब कबीरमाल्याबांणजरि तूटिगयासबजेब ७
१ उदेस्या ग्यानविरहकोआंगलिष्यते कबीरप्रीतडी
तौतुझिसौं मेरेबहुगुणयालेकंत जेहसिबोलोंओरसौं
तौनीलरंगाइदेत १ कबीरनैणअंतरिआवतूं ज्यौंहौं
नैणझंपेउ नांहूदेषोंअवरकौं नांतुदेषणदेउ २
कबीरसांईमेराएकहै औरनदूजाकोइ दूजासां
ईजेकरूं जेसिरदूजाहोइ ३ कबीरबारबारकाआषि
ए मेरामनकासोइ कलितोउथलजबतबहोतदेसां
ईअवरनहोइ ४ कबीरस्योसिंदूरको कजरादीय
नजाइ रोकरमईयारमिरह्या दूजाकहांसमाइ ५
कबीरसीपसंमदमै रटैपीयापीयास ससकलसंम
दतिणकापडे तबस्वांतिबूंदकीआस ६ कबीर
देजिनतौहमअंगिया बहुडरनाहांमकिंचिसत
निमैरैचाहिए बाजपियारेतुक ७ कबीरचितचो
डांल्योंलगडा सुधिबुधिसाथबरात प्रेममांडहोए
तिकौ योतोराणबंदेतात ८ कबीरचितचौरमन
माडहो गातनादररणध्यान हथलेवौहरिस्योंजुडो
जामणमरणसमान ९ कबीर जिनिहरिएकोजांणीयां
जिनिजांणपासबजांण १ केजाणाबाहिरासबहीजी

ए॥अंाएण॥१०॥कबीरऐकनजाणीयां॥तोबहोजांएंं
काहोइ॥एकैतैंसबहोतहै॥सबतैंएकनहोइ॥११॥
कबीरआसाकीजैरांमकी॥दूजीआसनिरास॥पां
णीमांहीघरकरै॥तोतीमरैपयास॥१२॥कबीरआस
एकअलयकी॥दूजीआसनिवारि॥दूजीआसामारि
बी॥ज्यौंचौपडिकीसारि॥१३॥कबीरपतिबरताहेहूंल
कालीकुचिलकरूप॥वाकाऐकेरूपयरि॥वारूंकोटि
सोरासिरिन्नूप॥१४ कबीरपतिबरतातोजांणिऐ॥रती
नमंडेनैण॥अंतरतौरतचीरहे॥बौलेइमिरतबैण॥१५
कबीरपतिबरतासोजांणिऐ॥सदाजसुमरैएक॥मन
मेंतौबिभचारणी॥वाकेयसमअनेक॥१६॥कबीरपति
बरताकेएकहे॥बिभचारणीकेदोइ॥पतिबरताबि
भचारणी॥क्योंकरिमेलाहोइ॥१७॥कबीरलोहेत्तूलीप

शि॥सबसोंक
धरैसोघरकडी॥अघरधरैसोनारि॥

॥सदासुहागणिहोइ॥२०॥कबीरमनदीय॥
अंतरजांमीलिषियाय॥बाचक

॥जामीसिंदरी॥सांईदीयासहेमा॥२२॥क
मटरस

ईतेजोड़ा ॥ पतिब्रता अरु बेसनो ये जुग मैं योड़ा २५॥
कबीर ऊंची जाति पपीहरी नवै न नीचे नीर ॥ कै जाचै स
र पति कौ कै दुष सहै सरीर ॥ २६ ॥ कबीर मैं अबला पीव
पाऊं कहूं निरगुण मेरा पीव सुनि सनेही राम बिनि
अवर न देषो जीव ॥ २७ ॥ कबीर पतिब्रता पति कौ न
जे पति सजि धरै बिसास आंन दसा चित वै नहीं स
अपी क्के पास ॥ २८ ॥ कबीर पतिब्रता कौ बिड़दे
नारि करै बिभचार अवरि पड़दा कपट का क्यौं रि
झै भरतार ॥ २९ ॥ ३५४ ॥ १६ ॥ चिंतावणी कौ अंग ॥ कबी
र नौबति आपणी दिन दस लेहु बजाइ ए पुर पटण ए
गली बहुरि न देषे आइ ॥ १ ॥ कबीर जिनके नौबति ब
जती मैंगल बंधते बारि ऐकै हरि का नाम बिणि ज
नम गये सब हारि ॥ २ ॥ कबीर जिन घरि नौबति बाजती
और बती सौ राग ते मंदर षाली पड़्या बैसण लागा काग
३ कबीर ढोल दमामा गड़गड़ी सहनाई संगि भेरि औ
सर चले बजाइ करि है कोई ल्यावै फेरि ॥ ४ ॥ कबीर षं
डा जीवणा मांडै मोत मंडाण सब ही उतरा षोडि गया
स्वर क सुलतान ॥ ५ ॥ कबीर येक दिन अैसा होइगा स
बस्यौं पड़ै बिछोह राजा राणा छत्रपति सावधान
क न होइ ॥ ६ ॥ कबीर ऊजड़ षेड़े ठीकरी घड़ि घड़ि
या कुम्हार रावण सरीषा चलि गया लंका का सिक
दार ॥ ७ ॥ कबीर ऊंचा मंदिर मालीया चूने कली दुलाइ
एकै हरि का नाम बिणि जदि तदि परलै जाइ ॥ ८ ॥ कबी
र कहा गरबीयो इस जोबन की आस कैसू फूल्या दिवि
स दोइ षषर भये पलास ॥ ९ ॥ कबीर काहे गरबीयो दे

हीदेषिसुरंगा॥वीबडीयांमेलोनहि॥ओकांचलीनवां
॥१०॥कबीरजिसघटिप्रीतिनप्रेमरस॥फुनिरसनांन
हिरांम॥तेनरयासंसारमें॥उपजिषयेबेकांम॥११॥क
बीरकहाग्रबीयो॥चामलपेटेहड॥हैसतीउपरिछत्र
पति॥तेभीदेबायड॥१२॥कबीरयोऐसासंसारहै॥जै
सासैंबलफूल॥दोसच्यारिकापेषणां॥झूठेरंगनभू
लि॥१३॥कबीरधूलिसकेलिकरि॥पुडीजबांधीयेह
दोसच्यारिकापेषणां॥अंतिषेहकीषेह॥१४॥कबी
रराति(?)मामाईसोइकरि॥दोसगमायोआइ॥हीराका
साजनमथा॥कौडीबदलेजाइ॥१५॥कबीरमंदिरला
षका॥जडीयाहीरेंलाल॥दोसच्यारिकापेषणां॥विन
सिजाइगाकाल्हि॥१६॥कबीरस्वपनेरैंनिकेउघडि
आऐनैन॥जीवपड्याबहोलूटिमें॥जागौतोलैंननदेंन
॥१७॥कबीरआजिककाल्हिकपंचदिन॥जंगलहोइगा
बास॥उपरिउपरिफिरैंहंगे॥ढोरचरेंहंगेघास॥१८॥क
बीरमरैंगेमरिजांहिगे॥कोइनलेगानांव॥ऊजडीजाति(?)
बसांहिगे॥छाडिबसंतागांव॥१९॥कबीरहाडबलेज्यौं
लकडी॥केसबलेज्यौंघास॥सबजगजलतादेषिकबि
भयाकबीरउदास॥२०॥कबीरकूकेहाराबाहिरो॥चिडी ए
आयायोषेत॥आधोउधोउबरे॥चेतिसकेतौचेति॥२१॥
कबीरज्यांरहंमजांणतेमुए॥हंमभीचलणहारा॥हंमनें
पीछेंपुंगडे॥तिनभीबांध्याभार॥२२॥कबीरमाइबिडो
पीबापबिडे॥हंमभीलोगबिडोहा॥दरीयांकेरीनांवज्यौं
संजोगेमिलीयांहा॥२३॥कबीरदेवलहाडका॥मांटीतणां
बंधाण॥षडहडीयांपावैनही॥देवलतणांनीसांण॥२४॥

डै तेजोडा॥ पतिबरताअरबेसनौ॥ये जुगामें थोडा॥ २५
कबीर तें चीजातिपपीहरी॥ नवैननीचैनीर॥ केजा चैस
रपतिको॥ केद्रुषसहैसरीर॥ २६॥ कबीरमें अबलापी
पावकरूं॥ निरगुरणमेरापीव॥ सुनिसंनेहारामबि
अवरनदेषोजीव॥ २७॥ कबीरपतिबरतापतिकोन
जे पतिसजिधरैबिसास॥ आंनंदसाचितवैनही स
जपीवकेपास॥ २८॥ कबीरपतिबरताकोबिडदले
नारिकरेबित्तचार॥ अंतरिपडदाकपटका क्यौं
केभरतार॥ २९॥ ॥ २५१॥ १६॥ चिंतावणीकोअंग॥ कबी
रनौनत्तिआपणी॥ दिनदसलेऊबजाइ॥ एपुरपटणए
गली॥ बहेरिनदेषैआइ॥ १॥ कबीर जिनके नौबतिबा
जती॥ मैगलबंधतेबारि॥ ऐकेंहरिकानामबिणि॥ ज
मगयेसबहारि॥ २॥ कबीरजिनघरिनौबतिबाजती॥
औरछतीसौंराग॥ तेमंदरषालीपड्या॥ बेसणलागेका
३॥ कबीरढोलदमांमागडगडी॥ सहनाईसंगिभेरि॥ अ
सरचलेबजाइकरि॥ हैकोइल्यावेफेरि॥ ४॥ कबीरषे
डाजीवणा॥ मांडेमोचमंडाण॥ सबहीउतनाछोडिगया॥
रावरंकसुलतांन॥ ५॥ कबीरयेकदिनअैसाहोइगा॥ स
बस्यौंपडेबिछोह॥ राजाराणाछत्रपति॥ सावधांना
कनहोइ॥ ६॥ कबीरऊजडषेडैठीकरी॥ घडिघडि
याकुंम्हार॥ रावणसरीषाचलिगया॥ लंकाकासिक
दार॥ ७॥ कबीरऊंचामंदिरमालीया॥ चूनेकलीढुलाइ॥
एकेंहरिकानामबिणि॥ जदितदिपरलेजाइ॥ ८॥
रकहागरबीयो॥ इसजोबनकीआस॥ केसूफूल्याद्विवै
सदोइ॥ षंषरभयेपलास॥ ९॥ कबीरकाहेगरबीयो॥

हीदीयसुरंग बांबंडीयामलीनांहे आकीचलीनवीं
१० कबीरजिसघटिप्रीतिनप्रेमरस फुनिरसनानं
हिराम तेनरयासंसारमें उपजिषयंअकाम ११ क
बीरकहागुबीयो चामलपेटेहड दमतीउपरिछत्र
पति तेनदिवायड १२ कबीरयोअैसासंसारहै जे
साँसेबलफूल योसच्यारिकापषणा कूवेरंगनंन
ि १३ कबीरधूलिसकेलिकरि पुडीजबा धोयरू
योसच्यारिकापयणा अंतिषहकीयिरू १४ कबी
ररातिगमाईसोइकरि योसांमायोंबाड हागका
साजनमथा कोडीबदलेजाड १५ कबीरमंदिरलो
षकाजडीयाहीरेलाल योसच्यारिकापखणा विन
सिजाइगाकाल्हि १६ कबीरस्वपनेरनिके उघडि
अंएनेन जीवपड्याबहोलूटिमें जागोतोलेननदेन
१७ कबीरआजिककाल्हिकपचदिन जंगलहोइगा
बास उपरिउपरिफिरैहंगे ढोरचरेंहंगे घास १८ क
बीरमरैंगेमरिजाहिंगे कोइनलेगानांव ऊकडीजा
वसांहिंगे छाडिबसंतागाव १९ कबीरहाडबलेज्यों
लकडी केसबलेज्यों घास सबजगजलता देषिकरि
भयाकबीरउदास २० कबीरकूकेंहारबाहिरै चिडी मु
यांघायोषेत आधोपधोउबरे चेतिसकैतोचेति २१
कबीरज्यारहमजाएतेमुए हमभीचलणहार हमभी
पाछेपुगडे तिनभीबांध्याभार २२ कबीरमाइबिडा
णीबापबिड हमभीलोगबिडाह दरीयाकेरी नावज्यों
संजोगेमिलीयांह २३ कबीरदेवलहाडका माटीतणा
बंधाण यहहडीयांपावैनही देवलतणानीसाण २४

कबीर देवल ढहि पड्या ईट भई सैंवार । कोई चेजारा चु
णि गया । सो मिल्या न दूजी बार ॥ २५ ॥ कबीर रांम पियारा छा
डि करि करै आंन का जाप । बेसां केरा पूत ज्यौं कहै कौण
सौं बाप ॥ २६ ॥ कबीर जिन हरि की चोरी करी गए रांम गु
ण भूलि । ते बिधनां बागुल रचे रहे अरध मुष झूलि ॥
२७ ॥ कबीर रांम नांम जांण्यां नहीं पाल्या कटुक कुटुंब
धंधा ही मैं बहि गया बाहरि हुई न बंब ॥ २८ ॥ कबीर रांम
हि जिन पिवे छाडि जीव की बांणि । पाडोसी मैं बाचिवा ई सो
आपण मैं जांणि ॥ २९ ॥ कबीर रांम नांम जांण्यां नहीं कै दिन
होत अकाज । बूडेलो रे बापडा बडा बूंग की लाज ॥ ३० ॥ क
बीर रांम नांम जांण्यां नहीं मेल्ह्यो चित्त बिसारि । ते नर हा
लाल दी सदा परे बारि ॥ ३१ ॥ कबीर अहिं औसर चेत्यो
नहि पसु ज्यौं पाली देह । रांम नांम जांण्यां नहीं अंति पडी
मुषि षेह ॥ ३२ ॥ कबीर रांम नांम जांण्यां नहीं बात बिनंठी
मूलि । हरि तो रहा हरि यो ईयां पडंत पड्या मुष धूलि ॥ ३३ ॥
कबीर रांम नांम जांण्यां नहीं लागी मोटी षोडि । काया हांडी
काठ की ना ऊ चढै बहोडि ॥ ३४ ॥ कबीर या संसार मैं घ
णां मनिष मतिहीण । रांम नांम जांण्यां नहीं आए टापा दी
ण ॥ ३५ ॥ कबीर आया आण आया ऊवा ऐबउरता संस
र पारे भूला जोगा फिला गया कुबधी हारि ॥ ३६ ॥ कबीर
कहा कीयो हम आइ करि कहा करैगे जाइ । इत के भए न
उत के चाले मूल गमाइ ॥ ३७ ॥ कबीर जगत ठूठ में रचि
रहा फल्गु जनम की लाज । तन बूटां कुल बिनसि सी रटो
रांम जिहाज ॥ ३८ ॥ कबीर हरि की भगति बिन ध्रिग जीव
ण संसार । धूंवां केरा धौलहर जात न लावै बार ॥ ३९ ॥ कबी

कहै॥ सुणितरवरबणराइ॥ अबको
डकबमिलै॥ नरियडैगाजाइ॥ ४०॥ कबीरतरवरसोवं
सुणोपातीकेबाता॥ हमछमयेहपटतरा॥ रीकआवर
कजात॥ ४१॥ कबीरमनियाजनमदुलंभहै॥ देहनबा
रंबार॥ तरवरसोफलझडिपडै॥ बहोरिनलागैडार॥ ४२
कबीरयातनकाचाकूंभहै॥ चोटचऊंदिसमाइ॥ ऐकेह
रिकानांवबिणि॥ जैहिचेदिपलेजाइ॥ ४३॥ कबीरतनचो
काचाकूंभहै॥ लीयाफिरैथासाथि॥ टबकालागाफूटि
गया॥ कछुनआयाहाथि॥ ४४॥ कबीरयोतनकाचाकूंभ
हैमांहिकरमांकीयोबास॥ कबीरैनैणनिहारीया॥ नही
जीवणकीआस॥ ४५॥ कबीरयांणीहोदका॥ देषतगया
बिलाइ॥ योंहीजीवडाजाहिगा॥ दिनदसगैरीलाइ॥ ४६
कबीरयऊतनजातहै॥ सकहृतौवोहृरलाइ॥ कैसेवार
कसाधकी॥ कैगुणगोबिंदकागाइ॥ ४७॥ कबीरयऊत
नजातहै॥ सकहृतौलेऊबहोडि॥ नागोपावोतेसूवा॥
जिनकैलाषकिरोडि॥ ४८॥ कबीरबासरिसुषनरैनिसुष
नासुषस्वपनांमांहि॥ जेनररबिछडेरांमसेतौ॥ नासुषधूपनछां
हि॥ ४९॥ कबीरस्तातक्याकरै॥ काहेनदेषैजागि॥ जाका
संगतैबीछड्या॥ ताहीकैसंगिलागि॥ ५०॥ कबीरअंतरिकू
नकुरलीया॥ गारजितस्यासबताल॥ जिनतैगोबिंदबीछ
ड्या॥ तिनकाकौणहैवाल॥ ५१॥ कबीरचकवैबिछडीरैनि
कीआइमिलीप्रभाति॥ जेनरबिछडेरांमस्योंतेदोसमि
लैनराति॥ ५२॥ कबीररहीनाआयाहनीस्यों॥ तूनीनचाली
साथि॥ पाइकुहाडामारीया॥ ग्राफिलअपणैहाथि॥ ५३
वातनवतमया॥ करमजमया

॥३॥कबीरखोंमैनबड़कूंटेबा
अपनमास्याजाइ॥म्रियबेबड़ेनोंडस्या॥अपस
॥४॥कबीरसोमणइधका॥टपकेकीया
बिनास॥इधफाटिकाजीक्वा॥नयाघिरसकानास
॥५॥कबीरदैनिपडेबासरिघटे॥बनिअधियाराहोइ
ला॥गिरहेफलोफला॥पघनकाटैकोइ॥६॥८०७॥२९॥
साधकोअंग॥कबीरनिरबेरीनिहकामता॥सांईसेती
नेह॥बिषयासोंन्यारारहे॥साधूकागुणएह॥१॥कबीर
मतनछाडेसतरी॥तोवैकोटेकमिलेअसंत॥चंदनसव
गांबेधया॥तोऊसीतलतानतजंत॥२॥कबीरसाधतजा
रीकपडो॥तामेमलनघटाइ॥सावितकालीकामली॥
जांपैतहांबिछाइ॥३॥कबीरहासाधैछहरामहै॥जेज
नतारामभायामंदरअसततरी॥तहांनहीसाधकाका
म॥४॥कबीरसाचिनरौसेरामकै॥निधडकतेचीरीमि
जिनकोंकालनलागहीं॥रामगस्यानिजपीमा॥५॥कबी
रदीनगरीबीदीनकौ॥दंदरकोंअभिमान॥दंदरदोजि
गजाहिगो॥दीनगरीबीराम॥६॥कबीरहरिजनअैसा
चाहिये॥जाकेहिदेमांनबिचारबिबेक॥बाहिरमिल
तासौमिले॥अंतरिसबसोंऐक॥७॥कबीरहमसोस्वामी
मतिकहे॥हमहैजीवबिचारा॥स्वामीकहिऐतासकौं
जाकाचीनिलोकबिसतारा॥८॥कबीरहरिजनकेइ
रमतिरची॥जेतीजलमेंमाट॥पलकऐकन्पारार
बैबोहीघाट॥९॥८१६॥२९॥देषादेषीकोअंग
रदेषादेषीमगतिका॥कदेनचदईरंग॥
योथाहिमी॥ओक...

रिजांणीए मारी षांसेंसंग ॥ नारलीर लोई थई
काढेरंग ॥२॥ कबीर यक मन दोजे ता सकै । जो समरथ
साधू होइ ॥ सिर उपरि आरा सहै । कदे न दूजा होइ ॥३॥
कबीर या हंणटांकन तो लिए ॥ छाडन कौ जे बेह ॥ माया
रात मान डूइ ॥ तासौं किसा सनेह ॥४॥ कबीर जासौं प्रीति
करि ॥ सो निरबाहै कौ डि ॥ बिनता बिबिधन रचीए
देयत लागै षोडि ॥५॥ कबीर देषादेषी पाकडी ॥ गई
अपचै बूटि ॥ चाल्या था हरि मिलण कौं ॥ बीचि ही लाय
लूटि ॥६॥ कबीर ऐक कनक अरु कामनी ॥ ऐ लबी तख
रि ॥ चाल्या था हरि मिलण कौ ॥ बीचि ही लाया मारि ॥७॥
८२३ ॥ ३० ॥ साध साषी सूरतिकौ अंग ॥ कबीर का जल केरी
कोबरी ते साय हसे सार ॥ बलिहारी ता दास की ये सिर
निकसण हार ॥१॥ कबीर काजल ही की कोटड़ी ॥ का
जल ही का कोट ॥ बलिहारी ता दास की ॥ जेर है राम की
वोट ॥२॥ कबीर या चबल दिया पिर कडी ॥ उजड उज
डु जाहि ॥ बलिहारी ता दा यक हि ज आणो माहि ॥
३॥ कबीर हरि कासांव दीसं
न जन मनो
झीणं रे
सा प
र
टि

बिरोगी बिकलतन ॥ ता दिन ची न्हैं कोइ ॥ [illegible]
पानज्यौ ॥ दिन दिन पीला होइ ॥ ९ ॥ कबीर संग [illegible] ॥
सब मिलै ॥ [illegible] सगलो ही जांणि ॥ निरपिख [illegible]
र करै ॥ सो हरि की [illegible] पिछांणि ॥ १० ॥ कबीर [illegible]
ये सब मिलै ॥ कडवै मिलै सकोइ ॥ नीचपा [illegible]
तरै ॥ पांडपीया कफ होइ ॥ ११ ॥ कबीर सब घट [illegible]
सांईयां ॥ सूनी सेक न कोइ ॥ ता [illegible] ॥
घटि प्रगट होइ ॥ १२ ॥ कबीर सब जग [illegible] ॥
नां ही कोइ ॥ के जागे बिषया विय सब्या ॥ [illegible]
होइ ॥ १३ ॥ कबीर सूता ते निरफल [illegible]
[illegible] सांई हक न मेटई ॥ जे वंदा सके [illegible] १४ ॥ कबी
र दोरै ता जाण होत है ॥ निरदावै [illegible]
दोवरहै ॥ गिणे इड कौ रंका ॥ १५ ॥ कबीर [illegible]
[illegible] पकडे चामोट [illegible]
[illegible] करै बैकुंठ ॥ १६ ॥ कबीर जावट [illegible]
टि [illegible] जोइ ॥ [illegible]
इ ॥ १७ ॥ कबीर स्वार [illegible]
[illegible] सोइ जांणि ॥ [illegible]
[illegible] घणी ॥ सन [illegible]
[illegible] १८ ॥ कबीर [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ १९ ॥ कबीर [illegible]
[illegible] २० ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] १ ॥ कबीर [illegible]

कीसेवानांहि तेघरमरहटसारिया नृतबसैंतामांहि २ कबीरहैगैगैसघनघन छत्रधजाफहराइ तामु घेतेंभिष्यासली हरिसुमरतदिनजाइ ३ कबीरधनि माताम्हंदरी जिनिजायाबैसनौपूत वेरामसुमरिसदा तिभया सबजगाऱ्यागयाअकृत ४ कबीरकुलतोसोइल ला जाकुलिजपजेदास जाकुलदासनऊपजे सोकुल नाकपलास ५ कबीरसवीसइजोसोमिद्या सूटीकु सकीलाज बेपवाहीहोइरह्या बैवेरामजिहाज ६ कबीरहरिजीकेत्तगी संवरनेऐसबदास जहांजहं संगतिनिरमली तहांतहांरामनिवास ७ कबीरोएक ोकसौंआगला साधूजनअपार कबीराकूंजाप्रेमका बोलेबारंबार ८ कबीरस्वपनेंहूबरडाइकरि तेरक हैंगारांम ताकापगाकीपांनही मेरातनकाचांम ९ कबीररांमकहैतेसबभला अपणीअपणीगोर जिबि ोपांचोंबसिकीऐ तेमायाकेमोर १० कबीरसाधूसिंथ गतिमांहिरचनपरिराइ मदसागीमूंगीसेरे कंकरवा रचतिजाइ ११ क[illegible]रसाषितबांसणमति मिलोंबैस नोमिलोचिंडाल [illegible] जांणिकमिलै गोपाल १२ कब [illegible] गिरहीकेबे [illegible] हीदासात [illegible] सा [illegible] १४

[illegible]

ती

मरी नांवबूलनकी अमराव साधांकी छपरी सली ना
यतका गांव॥१७॥ कबीरसाधांकी छपरी सली नांय

नांम॥१८॥ कबीर हैगी गैंवरसघनघन॥ छत्रपतीकीनां
॥हरिजनकीपणिहारि॥१९॥ कबी

कबीररांणीहोती

२

८८५॥२२॥मध्यकौ अंग॥ कबीरमध्यअं
लभारहे॥ तौ तिरत न लागैबार॥ दोउअंगां सौं लागि क
॥बूडतहैसंसार॥१॥ कबीरदुब

कबीरअनलअकासांघरकीया॥ मधिनिरवरिबास बस
धामें मबिगतारहे॥ बिणिगाहरबिसवास॥२॥ कबीर
वासरांमनरें निगाम॥ नांखपनांतरिांम॥ कबीरातहां

गरकैपसादि घर एकं तलकी मौजमैं रहिंसांस्रारिवरि
आदि॥६॥ कबीरहाकूकहौं तौ कुडरौं॥ मुसलमानतौत
शि॥नाचततका पूतला॥ कोई गैबी येलेमांहि॥७॥ कबीर
हिंदूसवारामकहि॥ मुसलमानषुदाइ॥ कबीरासोइजी
सवारकैसंगि नजाइ॥८॥ कबीर हूलदीपीवडी चूना

वचूंनमैंदासया। बेगिकबीराजीमा।१०। कबीर
आकासबिचि। दोइचू बद्राअबध।
डा। अरु चौरासी सिध।११। कबीरनिरतिसुरतिदोइ
चूबडी। जांमणमरणअबध। षटदरसं
जेसमझ्यातेसिध।१२। कबीरघरबनदोऊरीति
रचिनयाकेरंग। कबीरानांइबिलमीया। रया
दंग।१३। कबीरनगरीचैंनतब। जबएकराजीहोइ
उराजीदुषदूंदमैं। षुसीनदेष्याकोइ।१४। कबीर
नलागैऐकसौं। तोनिरवास्याजाइ। दूकंमदु
णां न्याइतमाचाषाइ।१५।८८०।२३। बिचारकौ
कबीररांमरांमसबकोकहै तामैंबडूतबिचार। सोई
रांमसतीकहै। सोईकौतिगहार।१। कबीररांमरांमस
बकोकहै। तांमैंबडूतबबेक। ऐकअनेक
ऐकांप्रस्पांएक।२। कबीरआगिकस्यांदाझैनहि। पाव
नदीजैमांहि। जेपरभेदनजांणीयां। रांमकस्यौतोकां
हि।३। कबीरसोचिबिचारीया। दूजाकोईनांहि। आ
पापरजबचेटीया। उलटिसमांणमांहि।४। कबीरपांण
केरासूतला। राष्यापवंनसंचारि। नांनांबांणीबोलता। जै
तिधरीकरतार।५। कबीरआधीसाषीसिरकटै। जेरबिचा
रीजाइ। मनपरतीतिनऊपजै। तोबेरातियोंसदूरिगाइ।६।
कबीराएकसबदमेंसबककह्या। सबद्दीअरथबिचार। त
जिऐकेवलरांमकों। तजिऐबिषेबिकार।७। कबीरसोई
आषिरसोईबयंण। जनजूवाजूवाचवंत। कोईकोभलेहुवै
लवणि। अमीमहारसकूंत।८। कबीरदूवादंगामैं। लोग
कहैंमलमूल। कैसमझावैरामजी। नहातरदूजैमूलण।

कबीर बौमणस्त तन्नल जिया। कबीरा घरि घरि बाधि अं
ह सुलजा यां बापडां॥ जिनि जांणी सगा तिसुं राशि॥१०॥ क
बीर रांम न जो मन बसि करे। सब का इह अरथ। का हे
कौं पढि पचि मरै। कोटिक ग्यान ग्रंथ॥११॥ कबीर के
वै कोरा तिल न ला। केती जे तेल कढाइ॥ बिचि का गह म
रक बन ही॥ रडं बांतां योजाइ॥१२॥ कबीर जीवं ग्रा
स का॥ जम सुखि निकसैं राम। यौ थे सब छडि जो हिंगे। न
हसि हीसी कांम॥१३॥ ८०३॥ २४॥ सारग्राही कौ अंग॥॥
कबीर साषित को नही॥ सबै बैसनौं जांणि॥ ता तन निरदया
न रांम मुखि। तौ ही तन की हांणि॥१॥ कबीर वहां तौ स
बौ कहै। पड दादीया सेय॥ भरम करम सब दूरि करि।
सब ही मांहि अलेष॥२॥ कबीर घट सिव धिक ऊन देषिये
ब्रह्म सकल भरपूरि। जिनि जांण्यां तिनि निकटि हैं। दूरि
कहैं ते दूरि॥३॥ कबीर पारब्रह्म सस्न नरतस्या। लहै सो वा
र न पार। साधिक बिणिया लीन हो॥ सुई जितना संचार॥४
॥८०७॥१५॥ पीव पिछांणन कौ अंग॥ कबीर सो पट
मांहि संमाइयां। सो साहिब नहीं होइ॥ सकल मांड मैं
रमि रह्या। साहिब कहिये सोइ॥१॥ कबीर रहै निराला मं
डसीं सकल मांड ता मांहि। कबीरा सेवे तास कौं। दूजा से
वै नांहि॥२॥ कबीर जाके मौंह माथा नहिं। नांही रूप अ
रूप। यक पवास तें पतला। ऐसा तत्त अनूप॥३॥ कबीर
साहिब मैं कहा। दूजा नाही आइ॥ दूजा साहिब जे कहै
तो वार बिटंब्या जाइ॥४॥ कबीर साहिब कहिये एक कूं
दूजा कहिये नांहि॥ दूजा साहिब जे कहै। ते पा
र स मांहि॥५॥ ८०१॥ २६॥ बिसवास कौ अंग॥

कबीरनिर्भै निनरहरिपिद्धपगटकाया मिरजप्रवांणि
गगनगदास गिस्मानीवमुयनामदीया उरधपावत्र
गमाम १ कबीरस्यास्थाकाकरि कह्मस्मणिबेलो
ग्ग मादावाडि जानिमुपदीया माई मरणजोग २ कबी
रस्मणहारकौ वान्नकरि माबकेंकरीम दिलां
र्गंगायास्मकरि नांगिपके वृद्यामाइ ३ कबीररांमनां
मकीरनोहदा बादीवोजस्रधाइ प्रवनेकस्मकाप
इ नाइनानिरपकलजाइ ४ कबीरचिंतामणिचितौ
नेम माईचितसमथाणि बिणचिंतार्चितांकरै स्हय
मकांवाणि ५ कबीरमक्याचितकै मुरानिलानदे
इ मगंनेंकांनारकरै मामुकचिंतनहोइ ६ कबी
रकरमकरीमानिमगाया अबक्रमसनिधानहोइ मा
साघटनतिनवध जेमिरकूटकोइ ७ कबीरकरम
कांमानिमरस्या नगमिरनागमगा जेबकचित
चितन नाइस्रामस्राग ८ कबीरविनाछाडिस्रचिंत
रहो माईहसमरप्प पसुपषमजीवनाते तिनकीगां
ठीकिसागप्प १० कबीरहरिजनगाविनवाधइ उडु
समानानेइ आगपारिहरिमक्ता जलमागेतवदेइ १०
कबीरस्रहायानिकाठिनी अणिथणिलावेपाय यांक
रनामपकाकरि पानेनानेनोक ११ कबीरपकफाटीप
गोहने नामनाना निमगि मवकाहकोदरने बांध
मगगांनि १२ कबीररांमनांमसोविद्यामिली जेम
मांगेसिरनाय माहिवरामाइएका बंदानरकिनजा
इ १३ कबीरमबमोमनीमधूकरी नानिमांनिकानां
न दानांकिसकूकानहीं बिनिबिजानवइरान १४

है कबीर अहलागया॥
भागण मरण समान है॥ बिरला बचै कोइ॥ कहै कबीर
राम स्यौं मति रमगावै मोहि॥ १६॥ कबीर कंवल पिंजर
मन भंवरा॥ अरथ अनूपम बास॥ राम नाम अंमी सीं
चो॥ फल लागो बिसवास॥ १७॥ कबीर पद गावै लैली
न कै कटी न संसै पास॥ सबै पिछोड़ा थोथरा॥ बिना
एक बिसवास॥ १८॥ कबीर जाकै हिरदै हरि बसै सो
जन कलपै काइ॥ एकै लहर समंद की॥ दुख दालिद्र स
ब जांहि॥ १९॥ कबीर गावण ही मैं रोवणा॥ रोवण ही मैं
राग॥ एक बन मैं घर कीया॥ एक घर ही मैं बैराग॥ २०
कबीर गाया तिनि पाया नहीं॥ अणगायै तै दूरि॥ ज्या हरि
गाया बिसवास स्यौं॥ ता स्यौं राम हजूरि॥ २१॥ कबीर आगे पी
छै हरि खड़ा॥ आप संभालै भार॥ जन कौं दुखी क्यौं करै
साहिब सिरजणहार॥ २२॥ कबीर आसा कोई धण क
रूं मनसा करूं न भूति॥ जोगी फेरी फिल करूं यौं बणि
ना बैसूत॥ २३॥ कबीर सब जग निरधना॥ धनवंता नहीं
कोइ॥ धनवंता सोइ जो णिणे॥ जाकै राम पदारथ होइ
॥ २४॥ कबीर सांई दीया सहज मैं॥ पोई रिजक हवाल॥ है
वासब दराम है॥ तजि संसै जीव साल॥ २५॥ कबीर बिसवा
सा होइ हरि तजै॥ तौ लोहा कंचन होइ॥ राम तजै अनुरा
गस्यूं॥ हाणि हरष कौं षोइ॥ २६॥ कबीर डोरी लागी नाम
या॥ मनि पाया बिश्रांम॥ मन चढ्या रांम सौं॥ योहा के
वल म्यान॥ २७॥ कबीर खोदा की जे राम स्यौं॥ सराग्रण द

बीरदा णांपां णंरांमका पोषोसब संसार जिनोत्र
पणांजांणीयां तिनिसिरिबंध्यासार २० ॥ ७० ॥ ३१
श्रीरजांकौ अंग ॥ कबीरचूका हेडरै सिरपरि सिर
जनहार हसती चाढ करि ढोलिसे कूकर ठुसोस्
र १ कबीर सेरै बैसिकरि लोचकमनाहनजोइ कूं
णाका सेब्राडिदे कर ताकरैसहोइ २ कबीरहसती
चढि ऐं जांनके सहज दुली चाडारि कूकरस्यूं जग
त है मूंकि जावो ऊषमारि ३ कबीरधारा होइ धंम
कसाहि ज्यों अहरणि अयरिघाव पेमप्रवत्त होइ रहै
तो पाषै काल बनयाव ४ ॥ ७ ३४ ॥ २८ ॥ विरकताकौ
अंग ॥ पासिबिनगा कापडा कदेन सुरंगा होइ क
बीरै त्यागी ज्ञव करि कनककांमणी दोइ १ कबीर
चितचेतन भैंगकरहो जागिन देषी मित्त कित कि
तकी सालि पाडीये गलबलसहर अनेत २ कबी
रबाज णदेवजंचडी कलिजंतडीन छेडि तुकि बि
णीक्या पडी तू आपणी नि बेडि ३ कबीर जाता हैसो
जांणदे तेरी दसा न जाइ दरीयाकेरी नांव ज्यों घ
णां मिलेगा आइ ४ कबीर नीरपिआवतकाफरै
सायर घरिघरि बारि जो त्रिषावंत होइगा पीवेगा
झषमारि ५ कबीर सब जग देषीया मंदलकं धि चड
इ कोई काहू का नहीं सब देष्या ठोकि बजाइ ६ क
बीर मैंदुनीयां के कुछ नहीं दुनियां मेरे अकथ सा
हिब दरि देषों षडा दुनीयां दोजिग जत ७ कबीर
नयस्यापणि बिसस्यानही तोनी सरणां का हि पदे
लाषाइ ग्लानियां सो फिरिबांणां नांहि ८ कबीर

राम बिना बैकाम है॥ अपन भोग बिलास॥ कहा इन्द्र
बैसणौं॥ कहा बैकूंठ बास॥ ९॥ कबीर मेरा मन नै प
डि गई ऐसी एक दराड़॥ फाटा फटक पषाण ज्यौं॥ मि
ल्यान दूजी बार॥ १०॥ कबीर मन फाटा बाइ कै बुरा मि
टा सगाई साक॥ जौ पै दूध बिनास का॥ उकटि हूवा आ
क॥ ११॥ कबीर चंदण लागा गुण करै॥ जैसे चोली पान॥
दोइ जन लागा नां मिले॥ एक मोती अरु मान॥ १२॥ क
बीर मोती लागा जो बीधतां॥ कोई मन मैं स्याक बोल॥ ब
हीत सयाणय बिगाया॥ पड़ि गई गांठि न षोलि॥ १३॥
कबीर चींटी चावल लै चली॥ बिचि मैं मिलि गई दारि॥
दोइ योंक देन चालिसी॥ एकै लेरै क डारि॥ १४॥ एपरा॥
॥ अथ समरथाई कौ अंग॥ कबीर ना कछु कीया न करि स
क्या॥ नां करणी जोगि सरीर॥ जो कुछ कीया साहिर कीया॥
तातै भया कबीर कबीर॥ १॥ कबीर कीया कछू न होत है
अणकीया ही होइ॥ जो कुछ कीया होत है॥ ताका कर
ता औरै कोइ॥ २॥ कबीर जिस मैं न कोई तिस मैं॥ जिस मैं
तिस सब कोइ॥ दरगह तेरा सांईयां॥ नाम हरू न हो
इ॥ ३॥ कबीर एक षडा ही नाल है॥ एक षडा ही बिल
गाइ॥ समरथ मेरा सांईयां॥ सूतां देइ जगाइ॥ ४॥ क
बीर अंबर धरती के कागद करूं॥ लेषणि सब बनराइ॥
सात समंद की मसि करूं॥ तौ हरि गुण लिख्या न
जाइ॥ ५॥ कबीर अबरण कौ क्या बरणिए॥
अनजाइ॥ अबरण बरणौ बाहिरो॥ करि कि
थाइ॥ ६॥ कबीर मुझ मैं इतनी क्या सकति॥
पसारि॥ बंदा नैं इतनी घणीय

डिरचडैअसमान जहिंसरमंडल नेदीया सोसरलागे
कोंति ॥१०॥ कबीरलागीखागीक्याकरै लागीनहीलागा
र लागीजबहीजांणिये नासरिजाइकुसार ॥११॥ ॥७७॥
॥७७३॥ करमकोअंग ॥ कबीरकरमकहीसजदीजइ
पडिगईफाटअपार अनेकलुहारायचिगया जका
नांहिलगार ॥१॥ कबीरकायाषेतीकिसांणजीव पापपु
निदोइबीवबासौलुणिजेआपणौं कोइकसकैजी
व ॥२॥ कबीरदेहषेतीदिनकंमरा सुकृतबीजसुफाल
जहिजहींकरकाँमैकीयो तहांतहांरहिगईमल ॥३॥
कबीरमोहकूटीमैजगजडया करमकिंवाडबारि
कोईएककहरिजनजबस्या छूटारांमपुकारि ॥४॥१००
२॥४२॥ कालकोअंग लिष्यते ॥ कबीरकहागरबीयो का
लगहेकरकेस कहाजाणौंकहांमारिसी केघरकेप
देसि ॥१॥ कबीरकूवासुषकोसुषकहै मानैहैमनमो
द जगतचबीणांकालका कछुमुषमैंकछुगोद ॥२॥ क
बीरआजककाल्हिकपंचदिन मारगमाल्हंतो काल
सिचाणोंनरचिडो औचकहीचंपसी ॥३॥ कबीरकाल
सचाणोंनरचिडो तूजागिपियारेमिंत रामसनेहीबा
हिरी तूकोंसोवैनचिंत ॥४॥ कबीरसबजगसूतानी
दभरि जुकिनआवैनीद कालषडासिरउपरै ज्योंतो
रणजाबींद ॥५॥ कबीरपावपलककोसुधिनही का
रैकालिहकासाज कालअचानकमारिसी ज्योंतीतर
कोंबाज ॥६॥ कबीरहाटगादेषतां पलपलगई
जावजेजालापडिगया जमदीयादमामाआइ ॥७॥
कबीरसूताक्याकरै गणगोबिंदकागाइ तेरै

नेमपडा।। पर चक दे काया इ।। ८।। कबीर लूटि सके तो लू
टि।। राम नाम भंडार।। काल कंठ तें गहैगा।। रोकैगा दसौ
द्वार।। ९।। कबीर मैं अकेला वे दोइ जन।। छेती नांही काइ
जे जम आगे उबरूं।। तौ जुरा पकडैगा आइ।। १०।। कबीर जु
रा कुती जोबन ससौ।। काल अहेडी लार।। अब के छिन मैं
पकडिहै।। गरब्यो कहां गंवार।। ११।। कबीर काल हमा
रे संगि रहे।। किसी जीवण की आस।। दिन दस राम सं
भालिले।। अब लग पिंजरि सास।। १२।। कबीर बार बार
आपणी।। चले पियारे मित।। तेरी बारी जीवडा।। नेडी आ
वै नित।। १३।। कबीर आठ पहर यौ ही गया।। मोह के आ
जिलि जंजाल।। राम नाम हिरदै नहीं।। जीत्या जम का
लि।। १४।। कबीर पंथी ऊना पंथ सिरि।। बुरा चावो थापी व
सणांम कुं आगै पडा।। जीवण का सब रूष।। १५।। कबी
र माली आवंत देषि करि।। कलीयां करी पुकार।। फूली
फूली चुणि लई।। काल्हि हमारी बार।। १६।। कबीर देषि
कबाडा आवंता।। तरवर डोलण लग।। हमें पडिया तौ कु
छ नहीं।। पंषेरू घर संग।। १७।। कबीर फागण आवत देषि
करि।। बन रूंनौ मन मांहि।। ऊंची डाली पात है।। दिनि दि
न पीले थांहि।। १८।। कबीर निधडक बैठा राम बिन।।
चेतिक करो पुकार।। यहु तन जल का बुदबुदा।। जात
न लागै बार।। १९।। कबीर पाणी केरा बुदबुदा।। ऐसी है
मारी जाति।। देषत ही छिप जांहिगा।। ज्यौं तारा

बायापारधी।। लेगया सबै उडाइ।। ३४।। कबी
[illegible]कली।। [illegible]की सी जोति

क्रोधै घर की छोति ॥ २२ ॥ कबीर पडदै रहती पदम
णी करती कुल की काणि ॥ छडाय कहतौ राम की तब
आई सबै टाणि ॥ २३ ॥ कबीर कहा चिणावै मालीया
लांबी भीति उसारि ॥ घर तौ साढा तीनि हाथ ॥ घणें तौ
पौणा च्यारि ॥ २४ ॥ कबीर पांच तत्त का पूतला ॥ माणस
धरीया नांव ॥ दिनां रक के कारणे ॥ फिरि फिरि रोकें
गांव ॥ २५ ॥ कबीर मछली रहै छूटै नही ॥ धीवर म्हारा का
ल ॥ जहिं जहिं डाबरि घर करूं ॥ तहिं तहिं रोपै जाल ॥ २६ ॥
कबीर पांणी मांहली मछली ॥ क्यो तें पकडी तीर ॥ की
छुड की काल की ॥ आइ पकडा कीर ॥ २७ ॥ कबीर देहमि
हीणी मछली ॥ व्याधि न सकी सरीर ॥ पौसर रहे सोया
नही ॥ जहा जाल न काल न कीर ॥ २८ ॥ दिन दिन छोडा
जात है ॥ तासौं किसा संनेह ॥ जन कबीर डहक्या घा
गुण माया गंदी देह ॥ २९ ॥ कबीर मछली छम रिजा हि
पांणी तणे पयालि ॥ बीधि पडे गा बाहिरा ॥ सकहतो
मद संचालि ॥ ३० ॥ कबीर इहन्नि लागी मछली ॥ छीलर मं
डी आलि ॥ डाबरीयां छूटै नही ॥ सकहतो राम संभालि ॥
३१ ॥ कबीर मछलि बिकंता देषीया ॥ धीवर के दरबारि
आंषडीयां रतनालीयां ॥ तुम क्यों बंधी जालि ॥ ३२ ॥ कबी
र सूकण लागी केवडी ॥ तूटी अरहट माल ॥ पांणी की क
लि जाणिता ॥ गउ जसी च णाहार ॥ ३३ ॥ कबीर घरणि घ
वेती रह गई ॥ जब उगि गई लुहार ॥
कइआ ॥ चबकू किता आगार ॥ ३४ ॥ कबीर
हणा हरियाले मारे ॥ लायअ हडी एक जीव कि
तोसा लि ॥ ३५ ॥ कबीर राम कसाचि नि क हीलीया ॥

बकाटणानजा।
।कबीरबिरीयांबीतीबलघट्या।केसपलटित्त
याओर।बिगड्याकाजनसुधरे।करबूटांकिविरो
।३७।कबीरहरिस्योहेतकरि।कूडाचित्तनलाव।
बांधांबारिकदीकके।त्योहपसुकितेकआव।।३८
कबीरकाचीकायामनअथिर।थिरथिरकांमकरं
त।जिमजिमनरनिधडकफिरे।तिमतिमकालहसं
त।३९।कबीरसबसुखरामहे।अवरसबदुखकीरा
सि।सुरनरमुनिजनअसुरअहि।सबैकालकीपास
।४०।कबीरकाल्हिकरिसो आजिकरि।आजिकरंतो
ताअब।आजिकाल्हिकरंतड़ां।आइपहुंतोकाल।४१
कबीरजालणहारितोमुएमुएजलावणहाराहाहा
करंतेतेमुए।कास्योंकरैपुकार।४२।कबीरढले
ढलेदिनगया।आजवधतोजाइ।नांहरितूंभावन
सकत्या।जुरापहुंतीआइ।४३।कबीरजोकोलीवेजो
बुणैबुणतांआवेवोड।ऐसानरेरासामीचका।जीव
डादोड़िसकेतोदोड़ि।४४।कबीरपगडादूरिहै।
बीचपड़ीहैराति।नांजाणोंकाहोइगा।उगंतैप्रभाति
।४५।कबीरसूताक्याकरै।सूतांहोइअकाज।ब्रह्मा
काआसणडिग्या।सुणतकालकीगाज।४६।कबीर
मैंजाण्यांथापाकंगा।भोवजिमीकामार्ग।जहांका
थातहांहीरह्या।पकडिलेगयाकाल।४७।कबीरम
यासांवेसंग्रहकरै।वोहदिनजाणेंनांहि।सेहंसबर
सकीसोजकरि।सरैमक्करविमांहि।४८।कबीरच
कंदिसिवपकाकोटथा।मंदरकोटमझारि।पिड

कीपिंडकीपाहसूं॥गजबेधेदरबारि॥४ए॥कबीरच
होदिसिजोधावड्या॥हाथिलीयांहथियार॥जामेंस्ट
नांदेषतां॥पकडिलेगयाकाल॥५०॥कबीरदौंकी
धीलकडी॥ऊटीकरैपुकार॥मतिबसिपडौंलुहार
केमोहिजालैदूजीबार॥५१॥कबीरमेराबीरलुहा
रीया॥तमतिजालैमोहि॥ऐकादिनऐसाहोइगा॥हौंप
रिजालौंतोहि॥५२॥कबीरकुलचींटीकानालज्यौं॥
पड्याकैरीमाहि॥कोइगुरक्रियायोनबैरै॥ताकोंका
लनषाइ॥५३॥१०५६॥४२॥सजीवनिकोअंग॥जुरा
मीचब्यापैनहि॥मुवानसुणिऐकोई॥चलिकबीरउ
सदेसडै॥जहांबैदबिधाताहोइ॥१॥कबीरजोयागै
योरहे॥मोजलतेंकदमनिराल॥मनवांतहांसेरा
षिऐ॥जहांजुरामीचनहिकाल॥२॥कबीरजेमी
बनिबस्या॥षणियायाकेदमूल॥नांजांणौंकिसज
डीतें॥अमरत्तयाअस्थूल॥३॥कबीरहरिचरणांचि
तचकूंटीया॥मायास्योंमनटूटि॥गिगनिमंडलआस
णकीया॥कालचल्यासिरिकूटि॥४॥कबीरमनतौ
याकीया॥बिरहलीयाषुरसांण॥चित्तचरणांसोंच
कूंटीया॥तबनहीकालकापांण॥५॥कबीरकाचीका
रीमतिकरै॥दिनदिनबधैबियाधि॥रांमकबीरारुचि
नई॥याही औषधिसाधि॥६॥कबीररांमनांमकीवोष
दी॥कोटिककटेबिकार॥बिषबाधाबिरकतरहै॥
तोकायाकंचनसार॥७॥कबीररांमनांमकीवोषदी॥
सतगुरदईबताइ॥औषदियाइरोपिछिरहै॥ताकीबे
दनिजाइ॥८॥कबीरयावोषदिआगालमूं॥अनेकन

धरीदेह। कोईऐकफेरकपन्थका॥ नहीतरओषदिये ह ॥ ९॥ कबीरबेदबुलाईया॥ पकडि दिषाईबांह॥ बे दनिबेदनजांणही॥ करककलेजामांहि॥ १०॥ कबीर बेदजाकुघरिआपणे॥ तेराकीयानहोइ॥ जिनयाबे दनिदिरमई॥ नलाकरैगासोइ॥ ११॥ कबीरमनवा नयादिसंतरी॥ बोलेबचनरसालि॥ जासदसाग्रकी करे॥ जहांनहींजमकाल॥ १२॥ कबीरऐसीतोषी खरतिहै॥ फोडिगईब्रहंड॥ अलषनिरालायेथीया॥ सातदीपनवषंड॥ १३॥ कबीरसूलीउपघरकीया॥ बि षकाकरूअहार॥ जमबिचाराक्याकरै॥ आवपहस सीसार॥ १४॥ २०७०॥ ४४॥ साषीसूतकोअंग॥ कबीर षटैरामकौ॥ सकलसबदनपतिराइ॥ सबहीकरिअल गारहै॥ सोबिधिदीहदनताइ॥ १॥ कबीरजहिबिरीयां साईमिले॥ तासनिजाणेओर॥ सबकूंसुपदेसब्दक रि॥ अपणीअपणीठोर॥ २॥ कबीरपारसरूपीरामहै॥ लोहारूपीजीव॥ जबजाइपारससेटीया॥ तबजाईहो सीसीव॥ ३॥ कबीरदयाकोणपरकीजिए॥ कापेनिरदै होइ॥ हमतोसयातमासगीं॥ नाटिकबाजीजोइ॥ ४॥ ॥२०७४॥ ४५॥ चितकपटीकोअंग॥ कबीरजहांनजा रे॥ जहांकपटकाहेत॥ बासूकलीकनीरकी॥ तनरतो मनसेत॥ १॥ कबीरनवणीनयातोकासया॥ सूधाचि त्तनताह॥ पारधियांदूणीनवणि॥ मिरघाटूकेदाह॥ २॥ कबीरसंसारीसाषितभला॥ कंवारीकेसाग॥ बेस नोअरुबिसचारणी॥ हरिजननाकेनिकटिनजाइ॥ ३॥ कबीरजहांनजाइए॥ जहांनचोषाचित्त॥ षपग

अवगुण घणां ॥ मक्कं गांउ परि मिरग ॥ ४ ॥ कबीर तहां म
जाईये ॥ जहां कपट का हेत ॥ आगौ तलै पीछे बुरा ॥ ति
का त्यागी संग ॥ ५ ॥ कबीर तहां न जाईये ॥ जहां कपट
का हेत ॥ नौमण बीधे वीरीया ॥ सूकार हि गया खेत
॥ ६ ॥ कबीर जहां न जाईये ॥ तहां जनां ना साव ॥ लागो
ही फल झडि पड़े ॥ बाजे कोई कुबाव ॥ ७ ॥ १०८१ ॥ छंद ॥
गुर सिष हेरा कौ अंग ॥ कबीर ऐसा कोई ना मिलै ज
सो रहीये लागि ॥ सब जग दीसै दाझता ॥ अपणी अप
आगि ॥ १ ॥ कबीर ऐसा कोई ना मिलै ॥ हंम कौं देउ पदे
स ॥ भवसागर मैं डूबतां ॥ कर गहि काढे केस ॥ २ ॥ कबीर ऐ
सा कोई ना मिलै ॥ राम सगति का मीत ॥ तन मन सौंपै
मिरघ ज्यौं ॥ सुणै बधिक का गीत ॥ ३ ॥ कबीर ऐसा कोई
ना मिलै ॥ हंम कौं लेइ पिछांणि ॥ अपणां करि कै पाकडै
लेउतारै मंदानि ॥ ४ ॥ कबीर ऐसा कोई ना मिलै ॥ सम मैं
सैण सुजाण ॥ ढोल बाजंतां ना सुणैं ॥ सुरति बिहूणां कान
॥ ५ ॥ कबीर ऐसा कोई ना मिलै ॥ अपणां घर देय जलाइ
पांचौ लडि का पटकि करि ॥ रहै राम स्यौं ल्याइ ॥ ६ ॥ कबी
र ऐसा कोई ना मिलै ॥ जासौं कहौं निसंक ॥ जासौं हिरदै
की कहौं ॥ सो फिरि मांडै कंक ॥ ७ ॥ कबीर ऐसा कोई ना मि
लै ॥ सब बिधि देइ बताइ ॥ सुंनि मंडल मैं पुरष है ॥ तांहि
रहै लौ लाइ ॥ ८ ॥ कबीर ती निसनेही बहु मिलै ॥ चौ थामि
लै न कोइ ॥ सबै पियारे राम के ॥ सबै पियारे राम के बैठे
परबसि होइ ॥ ९ ॥ कबीर जग देषत हंम आहि गे ॥ हंम
देषत जग जांहि ॥ ऐसा कोई ना मिलै ॥ पकडि छुडावै
हिं ॥ १० ॥ कबीर स्यारा सूरा बहु मिलै ॥ घाइल मिलै न कै

॥घा [illegible] मिले [illegible]

॥कबीर [illegible] हूट [illegible]

माकोप्रेमामिले । बबसब [illegible]

कबीरप्रेपेदूधपिताइरै ॥ सोहो [illegible]

कोइनांमिले । स्योंप्रेपे बियमाइ [illegible]

आषेकूडा बेण [illegible]

मिले । साई हदासेण ॥१४॥ कबी [illegible]

तेसामिलेनकोइ ॥ तीनिसनेहा [illegible]

नकोइ ॥१५॥ कबीरजेसा [illegible]

कोइ ॥ सबेता त्रिगुनरहित ॥ [illegible]

॥१६॥ १०७१॥ ६७॥ हेत प्रीति कौ अंग ॥ [illegible]

कमोदनी ॥ चंदा बसे अकासि ॥ [illegible]

ताहीकेपास ॥१॥ कबीर जे गुर [illegible]

[illegible]

णरमेसुरसघूबी । बी [illegible]

[illegible]

४ कबी [illegible]

[illegible]

श्रेमक [illegible]

अमर [illegible]

[illegible]

कबीर किसतूरी कुंडल बसे मिर घट है बन माहि
ऐसे घटि घटि रामजी दुनियां देषे नाहि १ कबीर
देषे कोई संतजन पांचौं जाके हाथि पांचौं जाके
बसि नही ता हरि संगि न साथि २ कबीर सो धन
धन सूरिवा जिनि पांचौं राष्या चूरि जिनका पांच
मोकल्या तिनसो साहिब दूरि ३ कबीर सो साहि
ब मन मे बसे नर मन जाणे तास किसतूरया का मि
रघ ज्यो फिरि फिरि सूंघे घास ४ कबीर ज्यो नैनां मै
पूतली त्यो याखिक घट माहि मूरिष लोग न जाण
ही बाहरि टूंटण जाहि ५ कबीर सोजी राम का गा
या जसि घलदीप राम तो घट मे रह्या जे मनि आवै
तीति ६ कबीर मैं जाण्या हरि दूरि है हरि सकल रह्या
नरपूरि आपा जाण्या बाहिरा नेडा ही ते दूरि ७ क
बीर बहोत नर मोया मन मे सोत बिराम टूंढत टूंढत
जुग फिस्या चन के वोल्हे राम ८ कबीर तन के वोल्हे
राम है पवन मेरे नाइ सतगुर मिलि परचा हुवा त
ब पाया घट ही माहि ९ कबीर राम नाम तिहू लोक
मे सकल रह्या भरपूरि जिनि जाण्या तिनि निकट है
दूरि कहै ते दूरि १० कबीर मेरा साई मुझ मे ज्यो फूल
न मे बास मूरष लोक न जाणही फिरि फिरि टूंटै घा
स ११ कबीर किसतूरी कुंडल बसे नांति कंवल है
रि नांव नर टूंढे पावै नही गुर बिनि निज ठांव १२
कबीर जाकारणि जग टूंढिया सो तो घट ही माहि प
डदा दीया भरम का ताते सूझे नाहि १३ कबीर समझ
ते घट मे रह्या पडदा पलक दिवाइ तेरा सांई तुझ मे

नेतका देकौंजाइ॥२४॥२११०॥४०॥बीनती कौं
ग॥कबीर मूलि बिगाडीया॥करिकरि मेला चित्त
॥ खिमा वा चाहीए नफर बिगाडै निति॥१॥कबीर औ
गुणकीया तो बहु कीया॥करत न मानी हारि॥भावै ब
दा बकसीए॥भावै गरदनि मारि॥२॥कबीर औगुण
हे कीया॥तुम हि न कर नो रोस॥साहिब समाई का ध
॥ बंदा मैं सब दोस॥३॥कबीर साईं केरा बहोत गुण॥औ
गुण कोई नाहि॥जे दिल षोजौं आपणी॥तो सब औगुण
मुझ मांहि॥४॥कबीर औसर बीता अलपतन॥पीव
रह्या परदेसि॥कलंक उतारो रामजी॥भानौं सरम अंदे
सा॥५॥कबीर करै नैं बीनती॥भो सागर के तांइ॥बंदे ऊप
रि जोर होत है॥जम कौं बरजि गुसांइ॥६॥कबीर तेर जै
र न तुप मैं है॥मेरा है इ अकाज॥बिड द तुमारो रामजी
सरणि पड्या की लाज॥७॥कबीर मेरा मन है तुझ सौं जे
तेरा मुझ सौं होइ॥अहरणि ताता लोह ज्यौं॥संधि न लप
ई कोइ॥८॥कबीर मुझि औगुण तुझ गुण॥तुझ गुण औ
गुण मुझ॥जे हूं बिसारूं तुझ कौं॥तौ तूं न बिसार मुझ॥
९॥कबीर तुझ कि बिसास क्यौ न बणै॥मैं का सरणाई जाव
सो बिरंचि मुनि नारदादि॥इन के हिरदै न समावा॥१०॥
कबीर तैं न हमारे लोचीया॥ छिन छिन चाहै तुझ कौं है
म सेवम कौं न होत हैं॥तुम सेंदेम कौं किति॥११॥कबीर
हम अपराधी जनम के॥नष सष भरे बिकार॥दयाकर
उ रामजी॥तो हे भव तरैं पार॥१२॥कबीर साईं मेरा सा
धान मैं हाल एं अचेत॥मन बच क्रम न हरि भज्या॥तातें
निरफल षेत॥१३॥कबीर नांप्रची बिन प्रमरस

सी

तनमैंटंगा॥ नांजाणौंजसपीवसौं क्यौंकरिरहैंरंग॥
१४॥कबीरअंतरजांमीएकतूं॥आतमकेआधार॥जे
तूमछाडोहाथसौं॥तोकौंणउतारैपार॥१५॥कबीर
जबसंमझ्यातबसुलकिया॥सुलकिसमाणांमांहि॥
जबलगकछुकहोवता॥तबलगसंमझ्यानांहि॥१६
॥११२५॥५०॥जीवनमृतककोअंग॥कबीरजीवतमृत
गह्वैरहै॥तजैजगतकीआस॥संगिलागासांईफिरै
मतिदुखपावैदास॥१॥कबीरकसोटीरांमकी॥झू
टिकैनकोइ॥रांमकसोटीजोटिकै॥जोमरजीवाहोइ
॥२॥मरतामरतासबमूवा॥औसरिमूवानकोइ॥दास
कबीरायोंमूवा॥ज्योंबहुरिनमरणांहोइ॥३॥कबीर
जीवैणसोंमरणांभला॥जेमरिजाणैंकोइ॥मरणेंपह
लीजेमरै॥तौकलिअजरावरहोइ॥४॥कबीरमन
मनसामूई॥आकंगाईसबछूटि॥गगनिमंडलआसण
कीया॥कालचत्योसिरकूटि॥५॥कबीरआपामेट्यांहरि
मिलै॥हरिमेट्यांसबजाइ॥अकथकहांणीप्रेमकी॥क
ह्यांनकोपतियाय॥६॥कबीरजामरणैंसौंजगडरै
सोमेरैआनंद॥कदिमरिहौंकदिदेखिहौं॥पूरणपर
मांनंद॥७॥कबीरचेरासंतका॥दासांकापरदास॥अब
ऐसैहोइरहौ॥ज्योंपावांतलिघास॥८॥कबीरनि
सांनांबहिजाहिंगे॥जाकैपासीनांहीकोइ॥दांतग
बीबंदगी॥करताहौइसहोइ॥९॥कबीरजेरनवेंसो
पकोंपकोनवैनकोइ॥घालिनराजूतोलिए॥नवैं
भारयाहोइ॥१०॥कबीरनीचाह्वैबानिरानका॥नं
बिरलाकोइ॥हरिहीरानाजरिषका॥वंदेसनीचा

इ॥१४॥कबीर रोड़ा होइ रहौ बाट का॥ तजि या पंड अ
भिमांन॥ कांम क्रोध तिसूं नां तजै॥ ताहि

॥जिसी जिमी की षेह॥१३॥

भया तो क्या भया॥ तां तासी ला होइ॥ हरिजन ऐसा च
हिये॥ जैसा हरि ही होइ॥१५॥ कबीर हरि भया तो क्या
भया॥ हरि सैं सब कछु होइ॥ हरिजन ऐसा चाहिये॥ ह
रि जिनि निरमल होइ॥१६॥ कबीर मोती नीपजै॥ सीप
समंद मांहि॥ कोई मरजीवा काढ़िसी॥ दूजा को गम नां
हि॥१७॥ कबीर हरि हीरा कौं पाइये॥ जीवण जीवं की
आस॥ ररी या मांसौं का ढ़िसी॥ कोई मरजीवा दास॥१८
कबीर ऊंचा तरवर गिगन फल॥ बिरला पंषी खाइ॥ इ
सफल कौं सोई लषै॥ जीवत हा मरि जाइ॥१९॥ कबीर ज
बलग आस सरीर की॥ निरभै हूवा न जाइ॥ काया माया
मो ति तजि॥ चौडै रहे लजाइ॥२०॥ कबीर मो मरणें का
चाव है॥ मरूं तौ राम दुवारि॥ मति हरि पूछै बा तडी॥ को
ई दास मूवा दरबारि॥२१॥ कबीर मो मरणें का चाव है
मरूं तौ राम दुवारि॥ कै तनका कूट का करूं॥ कै लेउ ह
रू पारि॥२२॥ कबीर मूवा कौं क्या रोइये॥ जो आपणें घ
रि जाइ॥ बे दिपडे कौं रोइये॥ जो हाटौं हाटि बिकाइ॥
२३॥ कबीर सूंनि सहैज मैं पाइये॥ तहां मरजीवा मन
कबीरा चुणि चुणि ले गया॥ मोती रांम रतन॥२४॥
कबीर मरि मड हट बासा कीया॥ कहूं न ढ़ीसार॥

इभिरत्तसहं अपार । गाहिक बिनां न नी सरै । मांणक कनकभंगार ॥ ९ ॥ कबीर हरि हीरा मन मडहटा प टण पांणस घट । गाहिक बिना नषोलीए हीरा केरा हट ॥ १० ॥ कबीर एक बार पषीयं । नांम बार बार वास्ते कि रकरी । जे बांणे सो बार ॥ ११ ॥ कबीर राम रतन धन की थैली । गाहिक बिनां न बोलि । जब र मिले गा पारषू तो गाम हिगै मोलि ॥ १२ ॥ कबीर हरि मोतिनकी माल है पोई काचे धागि । जतन करो कीटाचणां टूटैगी कहीं लागि ॥ १३ ॥ कबीर हंसा तो मसराण को गडि बेगयथि यां है । बुगलोक रिकरि मारीयो । मां ऊन जाणें पोत्यू है ॥ १४ ॥ कबीर हंस बुगां के पाऊं णा । कहो दिनां के फेरि बुगला कहो गरबीयो । बेमें पांयबिषेरि ॥ १५ ॥ ११ ॥
७३ ॥ पष ॥ निद्रक कौ अंग ॥ कबीर लोग बिचार निंद हो । जिनि ऊंनपाया गर्यान । रांम नांम जाणें नहीं । ते बैसा नहीं आन हीं ॥ १ ॥ कबीर दोष पराये देषि करि चले हं सत्त हसंत । अपणां चित्त न आवही । जाकी आदि न अंति ॥ २ ॥ कबीर घास न नींदए जो पावांतलि होइ । उडिर पडै गा आंषि में षरा दुहेला होइ ॥ ३ ॥ कबीर आ पणपौ न सराहिये । पर निंदीए न कोइ । अजहूं लांबी हडा । कहा जाणों कहा होइ ॥ ४ ॥ कबीर आपण पौन सराहिए । और न कहिये रंक । कहा जाणों किस रूष तलि । कूडा होइ करंक ॥ ५ ॥ कबीर आप ठगाईये । और न ठगीए कोइ । आप ठगा पास षल पजे । अवर ठगं पा दुष होइ ॥ ६ ॥ कबीर बुरा बुरा सब को कहै । बुरा न सूझे कोइ । जे दिल षोजै आपणा । मझ सा बुरा न कोइ ॥ ७ ॥ क

॥११७०॥ पद॥४॥ जिवन्म्रितक कौ अंग॥ कबीर हरीया
पजल्यां दोंक जलथलकोंल बसनाहि गोपाल सौं॥
दोके रतन अमोल॥१॥ कबीर दाधकलापीसबडयी॥
हयीन देष्या कोइ॥ कोपूतो कोबधवा॥ कोधन हाणें हो
इ॥२॥ कबीर दाधकलायीसबडमी॥ हयी नदेष्या को
इ॥ जहां जहां सरति गोपाल की॥ तहां तहां कबीर रजहोइ
॥३॥ कबीर होरोके संसार कों॥ मुजन रोवे कोइ॥ मोकों
इवादली॥ बरसण लागे अंगार॥ उठि कबीरा दाहदे॥ दा
झतहै संसार॥५॥ कबीर नागनि बूटो मिरघले॥ ति
निमतिमारो कोइ॥ आये हामरिजाहिगा डारां डूला
होइ॥६॥१२०६॥ पद॥ ५२॥ दरी कौ अंग॥ कबीर सुंदरि
यों कहे सुणिहो कंतसुजाण॥ बेगि मिलौ तुम आइ कै॥१॥
णि मछी क्यों जीवै॥ पाणी हाकाजीव॥२॥ कबीर जेक
सुंदरी जाणि करे बिभचार॥ ताहि कदे क्यो आदरे
प्रेम पुरष भरतार॥३॥ कबीर सुंदरि तो सांई नजे॥ त
जे प्राण की आस॥ ताहि नकबहु पहरो॥ पलक नछा
डे पास॥४॥ कबीर या मन का मेंदा करूं॥ नान्हा करि
करियास॥ जब सुष पावै सुंदरी॥ पदम कलकेसीस
॥५॥ कबीर चढी अषाडे सुंदरी॥ पड़ा पीव सों षेलि
दीपा जूझा ज्ञान का॥ काम जले ज्यों तेल॥६॥ कबीर
मेरा सांकडा॥ माती चूरा चूरि॥ कारण बतीस सुंद
री रहै धका सोंदूरि॥७॥१२१३॥ ५३॥ रूप जणि कौ अं
ग॥ कबीर नाव न जा

काहिजकांटामाजिसी पहलीकौनबुझाव १ कबी
रीयसतईसंसारसौं चत्यारामकैसाथि अबिनासी
मोहिलेचल्या पूरीमेरीआस २ कबीरहूडलोकम
चिरजल्या असापकाबिचार कबीराचाल्यां
मेपेकोतिगाहारअपार ३ सदपांणीरपताल्का
काटिकबीरापीवे बासीपाकजलिमूवा बिषै
संग्याजीव ४ कबीरहरिकाडरपत्ता उन्हाधांत
नयाव हिरदासीतुरिहरि बसे दाकेणेतेरकहा
व ५ कबीरगोबिंदकेरासोत्तरगुण लिष्याजहि
रदामांहि पांणीपानडरपता मत्तिवेधोयाजांहि ६
कबीरअबतोअसात्तया निरमोलिकोनिजनांव
पहलीकाचककाथारया फिरतावंककंनांव ७ कबी
रसोसायसुसरनस्या मननहिबंधेधार सबल
नेहीहरिमिल्या उतस्यापारकबीर ८ कबीरक
ासहेलोतनस्या हरामेरासाग रामनांमनौका
गहि पांणीपंकनलागा ९ कबीरसुपनासांध
मिल्या सूतालीयाजगाइ आषिनषोलौंडरता
मत्तिसुपनांकेजाइ १० कबीरहरिकीदयात
इ सांयामेल्हाषोइ जोदिनहरिसमाति बिना
गइ सोदिनसालेमांहि ११ कबीरजाचणजा
इथा आगेमिल्याअजच आपसरीषाकरिली
या मैंसलप्याथासाच १२ कबीरजबभ्रामसम
करथा करताकीतबिकार सूधाहोइरपेडेचला
हरिआगेमेंसार १३ १२२६ ५८
कबीरहारीयाजाणेसूषका पा

नेह सुकाका मन जांणही॥ कबकूकबूग मेरु॥१॥ क
बीर कि रिमिरिवर सीया॥ पाहण ऊपरि मेह॥ धरती
ताहि सजल भई॥ पांहण ऊपरि बो नहीं तेह॥२॥ कबी
र पारब्रह्म सूग मोतीयां॥ घटि बंधी सिघ राह ग्राम
गरां चुणि लीया॥ चूक पडी निगुराह॥३॥ कबीर ह
रिरस बरषीया॥ डूंगर डूंगर मिम गह॥ नीर निवाणा
गहरे॥ नां के छाप रहो॥४॥ कबीर मूड करमीया॥
नयसयपाम रज्यांह॥ बांहण हा गक्यांकेर बाांन
लागे त्यां ह॥५॥ कबीर पसवा पापानापडया रुकन ड
हीया मयी जि॥ ऊसर बीयो न नीपजे नांवे न न्वं॥ति
ह॥ कबीर जा लो इह ह बडपणां॥ नांवपडी मजा॥७॥ ऊ
हन कोई बीसरे॥ फल लागा मीं दूरि॥९॥ कबीर च
कलके कारणे॥ बासव थों अम गल गम नास जांण्या
नहीं॥ जांसों सबपरिवार॥८॥ कबीर चंदन के निकटि
नीब भी चंदन होइ॥ बूडा बांस बडाइयां यौं जिन
बूडो कोइ॥९॥ कबीर सा लि बिचारीया केर जेहि
रदानयाकमर॥ नै न जापारपी बैठ नमन नीनकं
र॥१०॥ कबीर चंदन बांस ने॥ बिषमका न जनक
बोचाले गुण आपणें॥ कन्हां के यन भरा॥११॥ कबी
र लह रिसमंद की॥ मोती बिथरा आइ॥
र न जांणही॥ हंस चुणि चुणि षाइ॥१२॥ कबीर
गरेकरा॥ एकै तालि चुगाहि॥ गकटडे
पकमु कौ हलवांहि॥१३॥ कबीर
ता॥ गुरशिषकौ समकाइ॥ समकायाय
फेरि फिरि बूके आइ॥१४॥ बेकामी कोमन

तीरछा॥ नाहींतनकीहांनि॥ मनमुसक्ककौंवूझिदेषि
नीक्कीहोइनिदान॥२॥कवीरषेडेदीसेवीकरीमूक्षीपा
टीनजोइ॥ वारवारेआपणेचठिचढिगाईरसोइ॥३॥कवी
रमेरामुक्षमेकछुनहीं॥जोकछुहैसोतेरा॥तेरातुकको
सौंपतांक्यालागेमेरा॥४॥कवीरचाकीचलतीदेषिक
रिदीयाकवीररोइ॥दोकंपाटाबिचिआइकरिसाव
तगयानकोइ॥५॥कवीरऊबषिकनांणवटीरहेवि
षितापकातीर॥मनमायासोमिलिरह्या॥क्यौंरमिलै
रघुवीर॥६॥कवीरआजसपोपाहीरह्या॥मनलागोगा
वणेह॥जेसजनसुपनेनहीदेषता॥तेदेष्यानेणेह॥७॥
कवीरआसाछूटेमनमरे॥छूटेजगमोहार॥कहैकवी
रतवजांणीये॥वूझलीसोअवतार॥८॥कवीरकदि
यामैमैजाइगी॥कवआवेगीआर॥कवऐसुछिम
होइगा॥कवपावेगाचोर॥९॥कवीरसाहवसेरूप
ष्मरीया॥वारीहोतीआज॥मंदभागणपडदरहीते
वूडीकलताज॥१०॥कवीरपरीथीपीदररहीनि
जरिनदेष्यानार॥मोहिसुहभागिमतकहो॥तोजम
रूंलीरिमार॥११॥कवीरहथलेवाहोंसालीया॥मुर
कलपडीपिछांणि॥जवलगपीवचवीनही॥लकन
गकवारीजांण॥१२॥कवीरवलकमिल्यापालीरा
स्यानहोलकीयानकवार॥वांकरलावेपालणे
तामकौंनस्वाद॥१३॥कवीरछुरीकटारीतरगस
षडगअरुतुपककवांण॥अणीमिल्यांमनरज
तोवांभ्रमषवांण॥१४॥सोरठा॥ कवीरमालीमि
टगपानहे॥ग्यानरैजेदुकतरजरैकार

जनसोईपगियहै॥१५॥साय॥कबीरसांईमेरासकबे
रूआलयबेर॥स्वारथआपणकारणे॥जणजणलाग
रा॥१६॥कबीरसीपसंमदकी॥खारासीवानांहि॥बाधी
असौबसै॥मनचित्तजनस्यौनांहि॥१७ कबीरमाइव
हैमेरापूतहै॥बहैणाकहैमेराबीर इमअंधियाराघ
मैं॥नहीकिसीकासीर॥१८॥कबीरअमृतबरस्याघे
रघोशि॥सरीयाजलथलकोल॥अभिमांनीरीतारस्या
औप्रबतकाढोल॥१९॥कबीरएकपलकजेमनरहै
नोनिरंजनपासि ॥चिचिकाकृत्याकूंबला कांनेरहि
पईरासि॥२०॥कबीरजेअबकेसांईमिलै तोमबडय
आयोरेश॥चरणांसीमनवाइकरि॥कहौजकहैणांही
॥२१॥कबीरसाख्यातूमांनिजे॥समधामेतीपाचि॥
रिजनदेष्यांजालिमरै याबूडणकीरीति॥२२॥कबीर
गाहामला॥जैदिलमचाहोइ॥तजलबेमुगमै का
रिजमरैनकोइ॥२३॥कबीरसबदेणउमर्टा॥ दू
स्किरणअपराध॥कहैकबीरवैकदिमिलै प्रमेस्वर
कसाधा॥२४॥कबीरमनवांतोचलेचलेकरै चित्तक
हैचरिजांव॥कोटिजुगचलतांभया॥तीनिपैडपरि
गांव॥२५॥कबीरनिसअंधियारीकारणे॥चौरासीलख
चंद॥अंतिआउदरदेकीया॥तेकदिष्टिजुमंद॥२६॥कं
बारहरिकानांवस्यौ सरीतिरहैयकतार॥तोमुखते
मोतीझड़ै॥हीराअनंतअपार॥२७॥कबीरकस्तकवा
समसाधिकरि॥तेचिरमास्यामांहि॥भीतरिमिध्या
मारकै॥जीवैकजीवैनांहि॥२८॥
किकरि॥तबमैपाईजांणि॥ग्यामीजे

ईकलेजोखाणि २७ कबीरदौंउमासाय रजाणया षीबैठे दाधीदेहनपालहै सतगुरगाऐलगाइ ३० कबीरपंजरिप्रेमप्रकासीया जागपांजोगअनंत संसाकूटासुषसया मिल्यापियारोकंत ३१ कबीर देवलमांहीदेहुरी तिलजेहुहै बिसतार मांहापात मांहिजल मांहीपूजणहार ३२ कबीरसिरदीन्हांजे पाईऐ तोदेत्तनकीजेवाणि सिरकेसाटेपाईऐ तक गासोंघाजाणि ३३ कबीरसुषकोजाइथा आगेंमिलिया दुष जाहुसुषघरिआपणें हमजाणांअरुदुष ३४ कबी रकलिजुगआइकरि कीयाबहोतकामित्त जिनिमन बांध्यांरोकसी लेसुषसोवैनचिंत्त ३५ कबीरकुंचारांम का मोतीयामेरानांव गलिसांहिबकीजेवडी जित पांचेंतितजांव ३६ कबीरकलकुलकरेंतोनाकुं डरिहुरिकोरतजांव ज्योंहरिराषेत्योंरहौं जोहरिदेस षांव ३७ कबीरअपनैांजीवते ऐदोइबातांघोर लोलबड ईकारनें अहदयामूलनषोर ३८ कबीरदुनियांदांडाकु बधिका सरीमहांमुहित्रष रांमनांमजांणेनहिं उरल कंणीकूषि ३९ कबीरमेरामेराजिनिकरै मेरामूलवि नास मेरापगाकोपैबडेउहे मेरागलेकौपास ४० कबी रबडाबडासबकोकहै बडाबडामेफेर दीपराकोबडा कहै मदरमांहिअंधेर ४१ कबीरमननहीसास्याम नकरि सक्यानपंचप्रहारि सीलसाचस्रधानही ई याअजहुंउधारि ४२ कबीरकरत्ताथातौकोरह्या अ बक्योंकरिपछताइ बोवैबिरषबंबूलका आंमकहां तेषाइ ४३ कबीरसंसाजीवमें कौनकहैसमझाइ

नानांबांणीबोलता॥सोकितागयाबिलाइ॥४४॥क
यादासीसंतकी॥तीनोदेइअसीस॥बिलसीअरत्यातात
ऊमरिखुमरिजगदीस॥४५॥कबीरअहिसमारका
मायामोहा॥जहिंघरिजिताबधावणा तिहघरितिन
हा॥४६॥कबीरपाडोसीसोंरूसणां॥तिलतिलसुख
होणि॥पंडितभएसरावगी॥पांणीपीवैछांणि॥४७॥कबी
साक्तिकैभगवंतकी॥सबजगरह्यासिमाइ॥सांईसतग
रसेईये॥ब्रांमणकाघरजाइ॥४८॥कबीरज्ञानीतौनिडर
या॥मोनैनांहीसंक॥इंद्रीकेरैबसिपड्या॥भुगतैबिषै
संक॥४९॥कबीरजगतजहांगमगचाया॥कूवंकुलकी
नार॥अलषबिसास्यानैषसै॥बूडाकालीधार॥५०॥क
रमांबीभइ॥मेंगाडिमुई॥पषरहीलपटाइ॥हाथमरोडै
रधुनै॥मीचै बोइमाइ॥५१॥कबीरकांमनिष्यांग॥अनर
तभया॥रतभयाहरिनांइ॥तेनरगोरषनाथज्यों॥अमर
भयाकलिमांहि॥५२॥कबीरजाहिहिरदैहरिआइया॥सो
क्योंछांनांहोइ॥प्रगटतीसोंलोकमें॥जतनतजालाकोइ
॥५३॥कबीरषालिकजागीया॥अवरनजोगेकोइ॥केजोगी
बिषईबिषभस्या॥केदासबंदगीहोइ॥५४॥कबीररांमजं
पतहालिदमलो॥टूटीघरकीछांनि॥ऊंचामंदरजालिदे॥
जहांनहींसारंगप्रांणि॥५५॥कबीरदुखीयासूवादुषक
सुषीयासुषकोंझूरि॥सदाआनंदीरांमका॥जिनिदु
सुषमेल्हयादूरि॥५६॥सोरठा॥कबीरमननहीछाडै बि
॥बिषैनछाडैमनकों॥इनकोइहैसुभाव॥पूरीलागी
जनकों॥षंडितमूलबिनास ह
जलमैंप्रतिबिंब॥त्यौंसकलरांमहीजाणिजे

सोमनसोबिषे। सोत्रिसवनपतिकहौंकस। कहै कबीर
दोहूनरा। ज्योंजलबूंदृत्यासकलरस। ५७ कबीरकोईकर
थेसंतधंन। चेत्तनपरैरैजागि। बसत्तनबासणेतेंकिये
चोरनसकईलागि। ५८ कबीरमोत्तीयोमत्तविगस्या
नोपायरभ्याईराइ। साजनसेरानिकल्या। जांणिबटा
जाइ। ५९ कबीरजदिकामाईजनमयां। कडूंनपाया
सुष। डालीडालीमेंफिरया। पात्तंपात्तंदुष। ६० कबीरजो
है जाकामांवत्ता। जदित्तदिमिलिसीआइ। जाकोंत्तनमन
सौंपाया। जाकोंछाडिनजाइ। ६१ कबीरसिरसाटैहरि
सेईए। छाडिजीवकीबांणि। जेसिरदीयांहरिमिलै तब
लगहांणिनजांणि। ६२ कबीरमषकसनांहांकरे।
ज्योंसूरादलमांहि। आरणिकत्ताएकपग। बालीछकैनां
हि। ६३ कबीरजोऊगपासोआथीयां। फूलेसोकमलाइ।
जोचिणीयांसोढहिपडे। जोजायासोजाइ। ६४ कबीर
यहूजगकछ्वनहीं। षिणषाराषिणमीठ। कालिजबैठ्य
मेंडायां। आजिमसाणांदीठ। ६५ कबीरमंदरआपणे।
बैठाकरत्ताआलि। मडहटदेष्याहरपत्ता। चौडेदीनांजा
लि। ६६ कबीरबिरीयांबीत्तीबलगया। अरुबुराकमा
कोंम। हरिजनबाडोहाथत्तें। छिननेडाआया। ६७ कबीर
गाफिलक्याफिरे। सोवेकहांनिचिंत। ऐवडमाहोलेच
ल्यों। अज्यापकडिअचिंत। ६८ कबीरबिषकेबनमें
घरकीया। जहांअपरहेलपटाइ। तबत्तेंजीवडेडरा
ण्या। जागत्तरैनिबिहाइ। ६९ कबीरत्तरवरत्तासबि
लबीए। बारांमासफलंत। सीतलछायागहरफल। पं
केलिकरंत। ७० कबीरदात्तात्तूंवरदयाफल। उपगारी

॥ पंथ चले दिसावरा॥ बिरया सफल फलंत॥७१॥
रखु गला हे समनाइ ले॥ नेडा पकाव हो हि॥ ज्यां हे वे
॥ स्पां हसी यां चिनत्तो डि॥७२॥ कबीर दर
रहे डोलनी॥ मेल्ला कंत मंचाइ॥ सोई नारि सुलप
मैं॥ सकल रह्या भरपूरि॥ यऊ चतुराई जाऊ जलि॥
तडो लेहूरि॥७४॥ ९२४१॥ श्री मे कल्या के अंग॥ कबीर
नछम मेरे राम कौ॥ मे राम न रांम ह्रियांहि॥ मे राम न रां
सीस न वा ऊ का हि॥ कबीर नि गया वांव
॥ जाके यांनी नां ही को ॥२॥ शनगारी बांदरी॥
वां हौ इस महो ३॥ २॥ कबीदी नगरी बांदानु कें॥ दूद स्को
॥ राम॥ अ॥ न्द
मधुर मेरा सूखा॥ जौ वांसे लो हलु हो र॥ कस नां ह
कीया॥ वाइली या तत मार॥ ४॥ कबीर गुरु पत्रा
॥ तो च्यास्यां या ड ॥ त्र
॥ पन्त
मति रक कूपा नै पडे॥ ननल्य बिन्दो
॥ नक वांण वि नि. माम्दा
नयसयसा लेसा प
॥ आंन द्वि वांल नां दि
के आंहि॥ कबीर रन्त्र
जलतौ जलि हीरजाप॥ लबदा मा न्ह
कवीर जा कार नि
॥ ७४४
॥१०१

रनांगेदलमुहे सूरांलांगेसेल ४० कबीरसोवनमालि
जरकसा सतगुरकीयासार बागनमोडे सूरवां दलबं
असवार ४१ कबीरऋसा बिहाई सौमुई बीसासोरह
पेटि सगोस्नुसरपांवांपड्या जबनई सतगुरसौ भेट ४२
कबीरगागरिउपरिगागरी चोलीउपरिहार सूवोः
परिसाथरी नहांबुलावेयार ४३ कबीरपांणपयांणां
गया मांटी धरामसांणि जालणहारादेषिकरि चेतेनदी
अजांण ४४ कबीरसूरचाहे साथकों सतीलगावेबा
र साधूडरपेलोकते सहीजमाजणहार ४५ कबीर
ऊरीनरीऊकोलिकरि नीरनहलाई पांणीउपरिपाव
आगनिरिलाई ४६ कबीरसाहिबहाथउपारीया है
कोईजाचणहार मागतिनों दाउघड्या जेमांटेदरबारि
४७ माईऐसा पूतजणि जैसादासकबीर मागतिथंन
गोबिंदकहे डिगपांबंधावे धीर ४८ नांवकाजिलिति
लसया बडाजोधरिणमांहि आटीदासकबीरकी ऐस
साधूषांहि ४९ ॥ रूप० ॥ अंग ६४ ॥ साषेकाजिंअंग
पूरणं ॥ इतिश्रीकबीरजीकीसाषीसंपूर्णं ॥ श्रीराम
॥ श्रीरामायनमः श्रीगणेशायनमः ॥ श्री श्री श्री